राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक – जितेन्द्रकुमार जैन, एम.ए.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

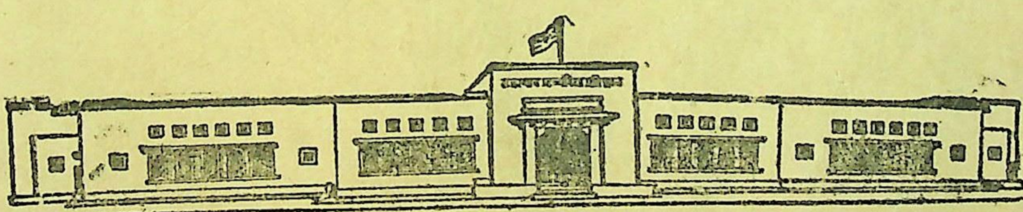
ग्रन्थांक १२२

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

## भाग ३

सम्पादक

ओंकारलाल मेनारिया, एम.ए. (इतिहास, हिन्दी)
वरिष्ठ शोध सहायक



प्रकाशक

राजस्थान - राज्य - संस्थापित

**राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.

1974

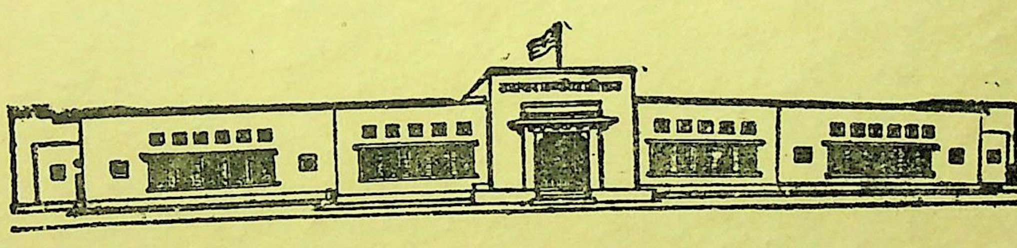
प्रबन्ध सम्पादक – **जितेन्द्रकुमार जैन**, एम.ए.
[ निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ]

**ग्रन्थांक १२२**

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

**भाग ३**

सम्पादक
**ओंकारलाल मेनारिया**, एम. ए. ( इतिहास, हिन्दी )
वरिष्ठ शोध सहायक



प्रकाशक
राजस्थान - राज्य - संस्थापित
**राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**
**जोधपुर (राजस्थान)**

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
**1974**

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक : **जितेन्द्रकुमार जैन**, एम.ए.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक १२२

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

## भाग ३

सम्पादक

**ओंकारलाल मेनारिया**, एम.ए. ( इतिहास, हिन्दी )
वरिष्ठ शोध सहायक

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)
१९७४ ई०

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
1974

मूल्य रु. १४.५०

प्रथमावृत्ति १०००

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान - राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान-प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रबन्ध सम्पादक

**जितेन्द्रकुमार जैन, एम.ए.**

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थांक १२२

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

## भाग ३

प्रकाशक

**राजस्थान-राज्य-संस्थापित**

**राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

**जोधपुर (राजस्थान)**

मुद्रक : कलमघर प्रिण्टर्स एवं जितेन्द्र प्रिण्टर्स, जोधपुर

वि. सं. २०३१ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९६

# प्रकाशकीय

प्रतिष्ठान में सुरक्षित हिन्दी और राजस्थानी की कोई तीन हजार कृतियों का यह सूचीपत्र प्रकाशित किया गया है। इसका संकलन विभाग के वरिष्ठ शोध सहायक श्री ओंकारलाल मेनारिया ने किया है। अपने सम्पादकीय कथन में इन्होंने इस सूचीपत्र की विशेषताओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। जिज्ञासु पाठकों के लिए परिशिष्ट भाग में महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के उद्धरण भी दिए गये हैं। श्री मेनारिया ने बड़े परिश्रम के साथ यह सूचीपत्र तैयार किया है। आगे भी इन सूचीपत्रों को प्राथमिकता देते हुए प्रतिष्ठान की इस विपुल ग्रन्थ-सम्पदा को बाहर लाने का हमारा प्रयत्न जारी रहेगा। शोधार्थी इन सूचीपत्रों से लाभान्वित होंगे—इसमें दो राय नहीं।

**जितेन्द्रकुमार जैन**
निदेशक

# अनुक्रम



---

**नोट:—** कृपया परिशिष्ट १ के पत्र संख्या १४७ की पाद टिप्पणी को निम्न प्रकार पढ़ें— रूपनगर के राजा जीवराज सोलंकी के साथ ठिकाणा धरियावद की सिशोदणी राणी कुशालकँवर के संवत् १७४८ में भादवा सुद १२ को, सती होने पर, उक्त मरसिये रूपास (रूपावास) के बारठ एजनजी द्वारा रचे गए हैं।

# सम्पादकीय निवेदन

प्रस्तुत सूचीपत्र में मुख्यालय में संगृहीत ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १२६१२ तक के राजस्थानी-हिन्दी भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थों में संकलित ३०२० कृतियों के विवरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यह सूचीपत्र मुख्यतः सूचनात्मक उद्देश्य की ही पूर्त्ति करता है, क्योंकि सभी ग्रन्थों के सूचीपत्र शीघ्र प्रकाशित करने के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए वर्त्तमान पद्धति को अपनाया गया तथा विवरणात्मक सूचीपत्र की प्रक्रिया को नहीं अपनाया जा सका; फिर भी ग्रन्थों के सम्बन्ध में अधिक से अधिक ज्ञातव्य प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

सूचीपत्र निर्माण का कार्य प्रतिष्ठान के संस्थापक एवं सम्मान्य संचालक पद्मश्री मुनि जिनविजयजी के निर्देशन में सन् १९६५ में प्रारम्भ किया गया था। उस समय भाषा-ग्रन्थों में गुटकों की बहुलता को देखते हुए जिल्दवार ब्यौरों का आकलन किया गया तथा उसी रूप में मुद्रणार्थ प्रेस को भी दे दिया गया। किन्तु, बाद में अन्यान्य कारणों से उक्त प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका। अन्त में सभी कृतियों को अकाराद्यनुक्रम से प्रकाशित करने को ही अधिक उपयोगी समझकर वर्त्तमान प्रारूप के अनुरूप पुनः प्रेसकापी बनाई गई तथा मुद्रण प्रारम्भ करवाया गया। यह हर्ष का विषय है कि सूचीपत्र का प्रकाशन-कार्य पूर्ण होकर विद्वानों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग २ में ग्रन्थाङ्क १०६८८ तक के हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है। उक्त सूचीपत्र में राजस्थानी के अतिरिक्त ब्रजभाषा तथा अन्य भाषा ग्रन्थों को छोड़ दिया गया था। उन सभी अवशिष्ट ग्रन्थों के विवरण भी प्रस्तुत सूचीपत्र में पृ० ३७७ से ४९६ में समाहित किये गये हैं।

संकलित ग्रन्थों में भाषा की दृष्टि से प्राचीन राजस्थानी (जिसमें अपभ्रंश एवं गुर्जर-भाषा के शब्दों का भी जमकर प्रयोग किया जाता था) तथा ब्रजभाषा के ग्रन्थों की प्रधानता है। प्रतिष्ठान के संग्रह में ब्रजभाषा-साहित्य का भी अपूर्व संग्रह है। वस्तुतः प्रत्येक भाषा का अपना समय रहा है और इसी कारण समग्र उत्तरी

भारत में एक समय साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रज को अपनाया गया था। बाद में जैनाचार्यों के प्रयास से यह स्थान राजस्थान में राजस्थानी भाषा को प्राप्त हुआ तथा इस भाषा में प्राचीन ग्रन्थों के अनेक अनुवाद-कार्य प्रस्तुत किये गये। भाषा की प्रारम्भिक अवस्था में अनुवाद ही उस भाषा को अपना साहित्यिक स्थान बनाने में सहायता देते हैं। यही कारण है कि राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रन्थों में रामायण, महाभारत, भागवत्, गीता, हितोपदेश-पंचाख्यान, रीति-ग्रन्थ, काव्य-ग्रन्थ तथा ज्योतिष और आयुर्वेद के ग्रन्थों के अनुवादों के साथ ही साथ भारतीय ज्ञानराशि के अक्षयवट-रूपी पुराण साहित्य के अनेक अनुवाद हमें उपलब्ध होते हैं। इन अनुवाद कार्यों से भाषा का रूप जब स्थिर हो गया तो सभी विषयों की मौलिक कृतियों का प्रणयन भी प्रारम्भ हुआ और मौलिक एवं छाया-ग्रन्थों के रूप में राजस्थानी भाषा के साहित्य की श्रीवृद्धि होती रही। संकलन में नरहरिदास बारहठ, माधोदास, सांदु खेतसी, लालदास, भगवानदास निरंजनी, मधुसूदनदास, चैनकवि, दामोदर, आनन्दराम नाजर, किशोर अलि, आदि अनेक कवि, अनुवादक के रूप में हमारे सामने आते हैं।

संकलन में अनुवाद कार्यों के अतिरिक्त अनेक अल्पज्ञात कवियों के नाम तथा उनकी कृतियां भी देखने को मिलेंगी। जैन कवियों के अनेक स्तुति-सज्झाय, चौपई-काव्य तो रचनाकालीन उपलब्ध हुए हैं। सभी ऐसी कृतियों का उल्लेख आठवें कोष्ठक में कर दिया गया है। कुछ-एक संग्रह जो कवि-वंशजों के घरानों से प्रतिष्ठान को प्राप्त हुए थे, उनमें उन कवियों की स्वलिखित पाण्डु-लिपियां सुरक्षित हैं। ऐसे कवियों में कवि भोलानाथ तथा अमृतराम राय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कवि भोलानाथ ने जाट नरेश नवलसिंह के दरबार में रहते हुए अनेक मौलिक एवं अनुवाद-कार्य सम्पन्न किये। इस संकलन में उनकी १८ कृतियों का विवरण संकलित है, जो संवत् १८२० से १८४० तक रची गई हैं। इसी प्रकार के दूसरे कवि अमृतराम राय हैं, जिनकी अमृतपद-मुक्तावली नामक वृहत्काय पद-रचना के अतिरिक्त अन्य अनेक अनूदित एवं मौलिक कृतियों के रूप में १५ कृतियां संकलन में उपलब्ध हैं। इनका रचनाकाल संवत् १८४० से १८६९ के बीच का है। अनेक कृतियों के अन्त में संवत् १८६९ दिया गया है, जिसे रचनाकाल मान लिया गया है, क्योंकि संग्रह ग्रन्थकर्त्ता के वंशजों से ही प्राप्त हुआ है।

संकलन में कुछ अप्रसिद्ध एवं अल्प-ज्ञात कवियों के नाम भी ज्ञात हुए हैं। जिनमें कवि चैन, कवि दौलत, कवि चन्द ( जवाहरचन्द ), कवि मल्ह ( मथुरादास ), कवि केसो, कालूराम बोहरा, चम्पालाल दीवान, जीवनलाल नागर, देवकृष्ण दर्जी, नन्दराम पंचोली, नीलकंठ पंचोली, पन्नालाल जोशी, रामलाल जोशी, शम्भुदत्त जोशी, भगतराम पंचोली, शोभाराम तिवाड़ी, सुख सारण आदि प्रमुख हैं।

प्राप्त संग्रह में कुछ-एक गुटके अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं, जैसे ग्रन्थाङ्क १२५८५। इस गुटके में भक्त-कवियों तथा कवियित्रियों के पर्ची-साहित्य का सुन्दर संकलन किया गया है। पर्ची-साहित्यकार के रूप में अनन्तदास का नाम तो प्रसिद्ध ही है। इनके अतिरिक्त सुखसारण नामक एक नये कवि का नाम हमारे सम्मुख आता है, जिन्होंने ७ महिला भक्त-कवियित्रियों की पर्चियों का प्रणयन किया है। इसी प्रकार से दूसरा गुटका ग्रन्थाङ्क ११६४८ का है, जिसमें नाथ एवं सिद्ध-साहित्य का सुन्दर संग्रह किया गया है। साथ ही साथ जनतुरसी की समस्त कृतियों का भी संकलन इस गुटके में उपलब्ध है, इस प्रकार से अनेक गुटकों की, विषय की दृष्टि से, लेखन कला की दृष्टि से, लिपि-समय की दीर्घ-परम्परा के कारण तथा बीच-बीच में लिखी गई याददाश्तों, टिप्पणियों, स्फुट-नुस्खों आदि की दृष्टि से विशिष्ट उपादेयता है।

गुटकों की कृतियों को देखने से गुटके के स्वामी की साहित्यिक अभिरुचियों का स्पष्ट परिचय मिलता है। किसी में मात्र काव्य-ग्रन्थों का संकलन है, तो किसी में संत-साहित्य का और किसी में ज्योतिष, आयुर्वेद, स्तुति, स्तोत्र, आदि विषय हैं। ये गुटके वस्तुतः संग्रहकर्त्ता की साहित्यिक डायरी के रूप में लिखे जाते थे, अथवा लिखवाये जाते थे। कतिपय गुटकों का लेखन काल तो १००-१५० वर्षों तक निरन्तर रहने का भी पता चलता है। इन गुटकों में संकलित साहित्य से हमें तत्कालीन साहित्यिक अभिरुचि तथा विद्वानों और रसिकों का ध्यान आकृष्ट करने वाली बहुचर्चित कृतियों एवं विषयों का भी परिचय मिलता है, जो तत्कालीन सामाजिक-इतिहास-लेखन में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। गुटकों की तथा हस्तलिखित-ग्रन्थों के अन्त की पुष्पिकाओं का भी अपना विशिष्ट महत्व है क्योंकि उनमें कहीं-कहीं पूर्व प्रति का उल्लेख, तो कहीं गुरु-परम्परा, लिपि-कर्त्ता एवं लिपि-स्थान आदि का पूर्ण ब्यौरा उपलब्ध होता है।

लिपिकाल की दृष्टि से संकलन में १६ वीं शताब्दी में लिखी गई प्रतियों की संख्या अधिक है। लिपिकाल की दृष्टि से रचनाकाल के समीपतम होती गई प्रतियों का महत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है, फिर भी इसे सार्वभौम सिद्धान्त के रूप में नहीं स्वीकारा जा सकता है तथा इसी के आधार पर किसी भी कृति के सम्बन्ध में यह धारणा नहीं बना लेनी चाहिए कि अमुक प्रति रचनाकाल से काफी बाद की होने से महत्वहीन है। क्योंकि हो सकता है, उक्त प्रति की प्रतिलिपि जिस प्रति से की गई है, वह अति प्राचीन प्रति रही हो और उसका पाठ कवि-कृत-पाठ के समीपतम रहा हो। अतः जब तक पाठालोचन की क्लिष्ट प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक प्रति का वंशवृक्ष तैयार कर प्रतियों का परिवार निश्चित् नहीं कर लिया जाता, उक्त प्रति के महत्व के सम्बन्ध में निर्णय नहीं दिया जा सकता। अतः संकलन में आई सभी प्रतियों का अपना निजी वैशिष्ट्य है। उपर्युक्त सिद्धान्त की पुष्टि अनेक प्रतियों की पुष्पिकाओं से भी होती है, जिसमें पूर्व प्रति का सम्वत् तथा ग्रन्थ-स्वामी आदि का ब्यौरा दिया गया है। आशा है, विद्वानों द्वारा संकलित कृतियों की प्रतियों का इसी रूप में अध्ययन किया जायगा।

ग्रन्थाङ्क वाले कोष्ठक में ग्रन्थाङ्क के साथ ही साथ ब्रेकिट में उसी गुटके में उपलब्ध कृति संख्या का संकेत किया गया है। ब्रेकिट के बाद में जो संख्या दी गई है वह समान शीर्षक लघु कृतियों के कर्त्ता की संख्या की द्योतक है। उदाहरणार्थ - १२२१०(२८)१ अक्षय तृतीया के पद कृष्णदास– का तात्पर्य है कि ग्रन्थाङ्क १२२१० पर २८ वीं कृति के रूप में पद-संग्रह प्रारम्भ किया गया है, जिसमें प्रथम कर्त्ता का नाम कृष्णदास है। सूचीपत्र में संकलित ग्रन्थों में प्रायः सभी विषयों के ग्रन्थ हैं। प्रत्येक कृति का विषयवार वर्गीकरण नहीं किया गया है क्योंकि अधिकांश कृतियों के नाम से ही विषय स्वयम् स्पष्ट हो जाता है।

आठवें कोष्ठक में लिपिकर्त्ता, लिपिस्थान, रचनाकाल, रचना-स्थान, ग्रन्थ की दशा तथा अप्राप्त पत्र संख्या का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ के सम्बन्ध में अन्य विशेष ज्ञातव्य, जैसा कि प्रारम्भिक कुछ पत्रों में दिया गया है, स्थानाभाव के कारण छोड़ देना पड़ा है।

राजस्थानी एवं प्राचीन हिन्दी की भाषा कृतियों के साथ ही साथ ग्रन्थों में संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश तथा मराठी भाषा की कृतियां भी उपलब्ध हुई हैं, ऐसी कृतियों के बारे में आठवें कोष्ठक में उल्लेख कर दिया गया है।

सभी कृतियों को यद्यपि अकाराद्यनुक्रम से व्यवस्थित कर प्रकाशित किया गया है, फिर भी कुछ कृतियों का कल्पित नामकरण कर उन्हें एक स्थान पर करने का प्रयत्न किया गया है जैसे – कवित्त-संग्रह, गीत-संग्रह, पद-संग्रह, दोहा-संग्रह आदि। कृतियों के तथा कवियों के नाम उसी प्रकार दिए गए हैं जैसे कि ग्रन्थ में उपलब्ध हुए हैं, अतः एक ही कृति की वर्तनी में थोड़ा अन्तर होने के कारण पाठकों को वे नाम ऊपर नीचे उपलब्ध होंगे। गुटकों में उपलब्ध स्फुट पदों, दोहों आदि को स्फुट-पद-संग्रह, स्फुट-कवित्त-संग्रह, आदि के अन्तर्गत रखा गया है।

प्रस्तुत संकलन में संत-साहित्य तथा जैन-साहित्य की कृतियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। वस्तुतः निर्गुण ब्रह्म के उपासक संतों तथा सगुण ब्रह्म के लीलामय रूप का भक्त कवियों ने जो गुणगान किया है, वह भूगोल और काल के बन्धन को तोड़कर निर्बाध रूप से समस्त भारत में ज्ञान और भक्ति का प्रसार करने वाला सिद्ध हुआ है। संतों की वाणियों तथा भक्त कवियों की रचनाओं से जिस भक्ति-रस-धारा का अटूट प्रवाह जन-जीवन में हुआ है, उससे समस्त भारतीय जन-मानस एक सूत्र में बंधा-सा नजर आता है। अतः ये महात्मा तथा इनके औपदेशिक ग्रन्थ हमारी सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं।

संतों की वाणियाँ उनके श्रीमुख से उच्चरित होती रहीं और शिष्य प्रशिष्यों के मस्तिष्क रूपी प्राकृतिक टेप-रिकार्ड में संगृहीत होती रहीं। कभी-कभी किसी योग्य शिष्य द्वारा उस स्मृति को लिपिबद्ध कर अपने गुरू के प्रति श्रद्धा-प्रसून चढ़ाए गए। सभी संतों की वाणियों के वचनामृतों को किस-किस जिज्ञासु शिष्य द्वारा लिपिबद्ध कर उन्हें व्यवस्थित रूप प्रदान किया गया, यह प्रश्न आज भी प्रचुर अन्वेषण का बना हुआ है। हस्तलिखित ग्रन्थों के आलोड़न से रामस्नेही सम्प्रदाय के संतों की वाणियों के संकलनकर्त्ताओं के कुछ उल्लेख हमें उपलब्ध होते हैं। ऐसी वाणियों के आद्यन्त परिशिष्ट १ में दिए गये हैं। इन संकलनकर्त्ताओं में प्रमुख रामजन, नवलराम, कासीराम एवं हरीराम हैं। ये सभी संत भीलवाड़ा अथवा शाहपुरा रामद्वारा से संबंधित हैं।

परिशिष्ट १ में संत-वाणी के संकलनकर्त्ताओं के उल्लेखों के साथ ही साथ ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों के आद्यन्त भी दिए गए हैं, जिनमें कवि-परिचय, कवि-वंश-परिचय, आश्रयदाता का वंशवर्णन तथा रचना में सहायक आधार ग्रन्थों के

उल्लेख उपलब्ध हुए हैं। ऐसे ग्रन्थों में भारत-भाषा-सार-चन्द्रिका, भारत भाषा, अलंकारनिधि, अलंकार-रत्नाकर, छंद-सुधाधर, जगत-विनोद, संग्राम-सार, सभा-विनोद, सुन्दर-शृङ्गार, कोकशास्त्र, रामविनोद, आदि ग्रन्थ हैं।

परिशिष्ट १ में कुछ ऐसी कृतियों के उद्धरण भी दिए गए हैं, जिनसे मध्यकालीन ऐतिहासिक घटनाओं पर कुछ प्रकाश पड़ता है। ऐसी ऐतिह्य कृतियों में महाराजा अभयसिंहजी रा कवित्त, दवावेत महाराजा अजीतसिंहजी री, संभरि युद्ध तथा स्फुट रूप से प्राप्त कवित्त, छन्द आदि हैं। इनके अतिरिक्त संग्रह में उपलब्ध ग्रन्थों में प्राचीनता तथा प्रतिष्ठान में प्राप्त प्राचीन प्रतियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थों के आद्यन्त भी दिये गये हैं।

प्रतिष्ठान में संगृहीत सभी ग्रन्थ प्रायः राजस्थान एवं गुजरात में बिखरी हुई ग्रन्थ-सम्पदा के रूप में क्रय करके एकत्र किये गये हैं। इनमें जैन-साहित्य का, संख्या की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान है। जैन-साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि जैनाचार्यों ने लोक व्यवहृत भाषा में अपनी कृतियों को प्रस्तुत किया है। संस्कृत के बाद प्राकृत में तथा प्राकृत के बाद अपभ्रंश में और फिर जन-भाषाओं में अपनी औपदेशिक कृतियों का प्रणयन करते रहना ही इनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। प्रतिष्ठान में जैन-साहित्य के रूप में प्रायः सभी गच्छों के ग्रन्थ उपलब्ध हैं। पदों और ढालों को राग-रागनियों तथा देशी तर्जों में बांधा जाता रहा है। जन-मानस को उन्हीं की भाषा और उन्हीं के लोक-संगीत में निबद्ध कर उपदेश देने में जिस मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ का परिचय जैनाचार्यों ने दिया है, वह वस्तुतः उनकी सामाजिक अन्तर्दृष्टि का परिचायक है। केवल एक ग्रन्थ में संगृहीत ढालों की प्रथम पंक्ति तथा देशी तर्ज का उल्लेख करते हुए बानगी रूप में परिशिष्ट १ में विवरण दिया गया है। वैसे-तो सभी संतों की वाणियों के साथ तथा वल्लभकुलीय भक्तों के पद भी राग-रागनियों में निबद्ध हैं, किन्तु ये सभी परम्परागत रूप से निश्चित शास्त्रीय रागों तक ही सीमित हैं। लोक-गीतों की तर्जों का इनमें अभाव है। सभी पदों के साथ-साथ स्थानाभाव के कारण रागों का उल्लेख नहीं किया जा सका है।

परिशिष्ट १ में उपर्युक्त ग्रन्थों के साथ ही साथ कुछ लघु-कृतियों को भी अविकल रूप से प्रकाशित कर दिया गया है। ऐसी लघु-कृतियों में मनोरंजनात्मक तथा मनोरम कल्पनाओं से युक्त कृतियों को चुना गया है।

पनघट रो झगड़ो, प्रत्युत्तरा, तिलशतक, जलवय-शहनशाह-इश्क आदि ऐसी ही कृतियां हैं।

आशा है, परिशिष्ट १ के रूप में जिन ग्रन्थों के आद्यन्त प्रस्तुत किये गये हैं, वे जिज्ञासु शोधार्थियों के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे। यदि इस परिशिष्ट के आधार पर अनुसन्धित्सुओं का ध्यान हस्तलिखित ग्रन्थों के रूप में उपलब्ध प्राचीन वाङ्मय की ओर आकृष्ट हो सका तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

परिशिष्ट २ के रूप में संग्रह में उपलब्ध कृतियों के रचनाकारों की नामावली, कर्त्तानुक्रमणिका के रूप में दी गई है, जिससे कि कर्त्ता-विशेष की विभिन्न कृतियों को संकलन में आसानी से ढूंढा जा सके।

जैसा कि प्रारम्भ में ही निवेदन किया जा चुका है कि प्रस्तुत कार्य प्रतिष्ठान के संस्थापक एवं भूतपूर्व सम्मान्य संचालक पद्मश्री मुनि जिनविजयजी द्वारा मुझे सौंपा गया था। उन्हीं के चरणों में बैठकर हस्तलिखित ग्रन्थों का प्रथम दर्शन तथा पठन-पाठन का कार्य मैंने प्रारम्भ किया और जिनके आशीर्वाद से उक्त कार्य सम्पन्न हुआ, उन्हें, तथा प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उप-निदेशक आदरणीय श्री गोपालनारायणजी बहुरा, जिनका मुझे इस कार्य में सतत निर्देशन और प्रोत्साहन ही नहीं मिला, अपितु जिन्होंने सूचीपत्र को आद्यन्त पढ़कर शुद्ध करने का भी अनुग्रह किया; इन दोनों ही महानुभावों के प्रति औपचारिक रूप से धन्यवाद अथवा आभार प्रकट करना मेरे लिए बहुत बड़ी धृष्टता होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्य को प्रकाशित रूप में देखकर दोनों ही सज्जनों को हार्दिक आत्मीय प्रसन्नता होगी और उनकी यह प्रसन्नता ही मेरे लिए सबसे बड़ा आत्मतोष का विषय होगा।

सूचीपत्र के प्रकाशन को महत्व देते हुए इस अवरुद्ध कार्य को डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, उप-निदेशक ने मुद्रणार्थ प्रेस में दिया, उसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।

जैन साहित्यकारों और कृतियों के सम्बन्ध में मेरे सहयोगी विद्वान् श्री विनयसागर का यथास्थल सहयोग प्राप्त, हुआ उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। प्रकाशन-अनुभाग के कुशल कार्यकर्त्ता श्री गिरधरवल्लभ दाधीच, प्रतिलिपिकर्त्ता का भी इसके प्रकाशन में निरन्तर सक्रिय सहयोग मिलता रहा, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

मुद्रण कार्य यद्यपि "कलमघर प्रेस" में प्रारम्भ करवाया गया था, किन्तु वहाँ यह कार्य पूर्ण नहीं हो सका और शेष कार्य "जितेन्द्र-प्रिण्टर्स" को सौंपा गया। "जितेन्द्र-प्रिण्टर्स" द्वारा इस कार्य को जिस तत्परतापूर्वक सम्पन्न किया गया, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। प्रूफ-रीडिंग में यद्यपि पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी दृष्टि-दोष के कारण अथवा प्रेस में छपने के दौरान हुई सभी त्रुटियों के लिये मैं पाठकों का, क्षमा-प्रार्थी हूँ।

आशा है, सूचीपत्र में रही कमियों की ओर ध्यान आकर्षित कर विद्वान् पाठक मुझे उपकृत करेंगे, जिससे उनका प्रतीकार अगले सूचीपत्र में किया जा सके क्योंकि सूचीपत्र के चौथे भाग का कार्य भी पूर्ण कर लिया गया है और आशा है वह भी विद्वानों को अगले वर्ष तक अवश्य उपलब्ध हो सकेगा।

निवेदक
ओंकारलाल मेनारिया
वरिष्ठ - शोध - सहायक,
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

२३ अगस्त, १९७४

# शुद्धि-पत्र

## ( विवरण-तालिका )

| क्रमाङ्क | पृ० सं० | कोष्ठक सं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| ७ | २ | ५ | १९९९ | १८८८ |
| ४२ | ६ | ४ | शांतिहर्ष | शांतिहर्ष शिष्य |
| १३० | १६ | ३ | आलवण | आलोयणा |
| १५४ | १९ | ४ | फरौदजी | फरीद |
| १७३ | २२ | २ | १२२९३(५)(५) | १२२९३(५) |
| ४४० | ५३ | ३ | गसाईं | गुसाईं |
| ५२२ | ६२ | ८ | – | अपूर्ण |
| ५२२ | ६२ | ४ | – | हंस कवि (रसिक कविराय) |
| ५२३ | ६२ | २ | ११५८५(८)५५ | ११५८५(८) |
| ६०० | ७१ | ३ | वणन | वर्णन |
| ६६० | ७९ | २ | ११२८३(१) | ११२८३(२) |
| ७०३ | ८४ | ३ | ज्ञात | ज्ञान |
| ७४१ | ८९ | ४ | कृशलहेम | कुशलहेम |
| ८२२ | ९९ | ४ | आणद | आणंद (आनन्द) |
| ९०३ | १०८ | ३ | सवाद | संवाद |
| ९०८ | १०९ | ३ | मेहतान | मेहतानी |
| १०१७ | १२२ | ४ | हृषकुशल | हर्षकुशल |
| १३७२ | १८९ | ४ | भय्या रत्नपाल | भय्या रत्नपालहित ( देवीदास ) |
| १३७४ | १९० | ७ | ५७५४-७५ | ५७४-५७५ |
| १४४२ | २०२ | ८ | र.का. मूल १७६९ | र. का. टीका १७६९ |

| क्रमाङ्क | पृ० सं० | कोष्ठक सं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| १४५२ | २०४ | ४ | लालदास शिष्य द्वारकादास शिष्य प्रपन्नगैसानन्द | प्रपन्न गैसानन्द |
| १४७६ | २०८ | ४ | टी ; सतदास | टी०; संतदास |
| १४८८ | २१० | ४ | जरणादास(चरणदास) ( नाथपंथी ) | जरणादास( नाथपंथी ) |
| १५१९ | २१६ | ३ | भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | भागवत भाषा पद्यानुवाद |
| १५१९ | २१६ | ७ | १–२९ | १–२९; १–२४ |
| १५९२ | २२९ | १ | १५९२ | * १५९२ |
| १७०६ | २४८ | ७ | १–२५ | १–७२७ |
| १९५१ | २९४ | ४ | मतिसार शिष्य जिनसिंह सूरि | जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि |
| १९७४ | २९८ | ३ | शेषसिंहजी | शेरसिंहजी |
| २०५२ | ३१५ | ७ | — | १–६० |
| २१५४ | ३३५ | ३ | सुमतिनथ | सुमतिनाथ |
| २३०५ | ३६६ | ३ | ह।चंद | हरचन्द |
| २४०२ | ३८७ | ७ | २९९–३०० | २९९ वां |
| २४०६ | ३८८ | ४ | कविचन्द | कविचन्द (जवाहरचन्द) |
| २४२२ | ३९१ | १ | *२४२२ | *२४२३ |
| २४५० | ३९६ | ३ | गुरुचार | गुराचार |
| २४८९ | ४०३ | ४ | रसराशि | अज्ञात |
| २६५६ | ४३२ | २ | ९०८७ (१) (१) (१) १–७ | ९०८७ (१) १–७ |
| २७५९ | ४५१ | ४ | पद्म ।कज | पद्मपंकज |
| २९२२ | ४७९ | १ | ९२२२ | २९२२ |
| २९२२ | ४७९ | २ | ८७५९ | ७८५९ |
| २९५४ | ४८५ | २;८ | (२) | (२) "रामसहस्रनाम" (आठवें कोष्ठक के साथ) |

## ( परिशिष्ट १ )

| पृष्ठ सं० | पंक्ति सं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४७ | १५ | जिसमें | जिससे |
| ७६ | ११ | चंद छंदं ।।३।। | कुंद कुंदं ।।३।। |
| ९६ | ८ | २५०७ | १२५०७ |
| ११२ | फुटनोट ३ | मानमा | मानना |
| ११४ | ७ | ग्रहसंयुक्ति | युक्तिसंग्रह |
| १३९ | ६ | टाकाकार | टीकाकार |
| १४७ | फुटनोट १ | प्रथस्ति-परक | प्रशस्ति-परक |
| १९५ | ९ | रासक रत्नावली | रसिक-रत्नावली |
| १९८ | ११ | राधाधिराज | राजाधिराज |

# संकेत-तालिका

| | | |
|---|---|---|
| (१) | र० का० | रचना काल |
| (२) | र० स्था० | रचना स्थान |
| (३) | टी० | टीकाकार; टीका |
| (४) | सं० क० | संकलन कर्त्ता |
| (५) | सं० का० | संकलन काल |
| (६) | लि० क० | लिपिकर्त्ता |
| (७) | लि० स्था० | लिपि स्थान |
| (८) | गु० | गुटका |
| (९) | मू० | मूल ग्रन्थ |
| (१०) | * (फूल) | चिह्नित ग्रन्थ के आद्यन्त परिशिष्ट–१ में दिए गए हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १०६५४(१) | अखर (अक्षर) बत्तीसी | गुण विजय | १६वीं.श. | २४x१६.५ | ४ था | प्रारम्भ के ३ पत्र अप्राप्त, कृति २६ वें दोहे से प्रारम्भ है। पीछे की ओर मेहता जी फतैचन्दजी के पुत्र का जन्मलग्न वि.सं. १८६७ का है। पत्र ५ से ८ तक ५ चित्र बने हुए हैं (१) ऋषभ देवजी (२) पारसनाथजी (३) महावीरजी (४) संतनाथजी (५) नेमीनाथ जी। पत्र ६ से २३ के प्रारम्भ में दादूजी का दोहा है व आगे २० तक के पहाड़े हैं। पत्र २४ से ३८ में 'लघु-चाणक्य राजनीति' संस्कृत में है तथा राजस्थानी में टिप्पण दिये गये हैं। गुटका संवत् १८७४, लि. क. रणजीत लि.स्था. पाली |
| २ | १२३८० (२४) | अग्रदास के पद | अग्रदास | १८वीं श. | २०x१४ | २७८-२८६ | अंत में स्फुट पद हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १२५९२ (६)८ | अजब ख्याल अष्टक | सुन्दरदास | १९वीं श. | १४x१०.५ | १६६-१६८ | |
| ४ | १२३७० (९) | अजित गीतं | जस विजय वाचक शिष्य नय विजय | १९वीं श. | १६x११.५ | ९८ वां | |
| ५ | १२३२० (१७) | अजित जिन गीतं | | १८वीं.श. | २१.५x१४.५ | २५-२६ | |
| ६ | १२२०५ (२९) ३ | अजितनाथ स्तवन | जिनराज | १७५५ | १७x११ | १०९-११० | लि.क. विद्याप्रमोद, लि.स्था. रूपनगर |
| ७ | १२०६८ (७) | अजितशांति जिनस्तवन | | १९९९ | २३.५x१५.५ | ४६-४८ | लि.क.जति वीर वैताल, लि.स्था. कलकत्ता |
| ८ | १२५५१ (८) | अजितशांति स्तवन | मेरुनन्दन उपाध्याय | १७वीं श. | १३x११ | ९७-१०० | |
| ९ | १२१३२ | अजीर्ण मंजरी | काशीनाथ | १९८ (१८९८) | २५x११ | १-१४ | |
| १० | ११०८७ (४) | अजीतसिंघजी रो कवित्त | राव बुधसिंह | १८वीं श. | २१.५x१५.५ | ११३ वां | |
| ११ | १०८९८ (१) | अणभैवांणी | संतदास | १९२९ | १३x८.५ | १-४७ | |
| १२ | १२३७० (२३) १ | अणुवरत थुलादि | | १९वीं श. | १६x११.५ | २०८-२१६ | |
| १३ | १२२१८ (१३६) | अतीत अनागत चौवीसनाम वीस विहरमान नाम | | १८वीं श. | २६.५x१२ | १४२ वां | पत्र १४२क पर कई रचनाओं के नाम दिए हैं जो इस गुटके में आई हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (.सेंमी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४ | १२४२० (१२) | अद्भुत प्रकास | मोतीराम शिष्य रामदास | | १६x१४ | ३०८-३१२ | |
| १५ | १०८७४ | अद्वैतानुभव प्रकाश | हरिसिंह संधिक-साधु | २० वीं. | २८x१५ | १-६६ | सप्तम प्रकाशान्त |
| १६ | १०९९८ | अदोष निरूपण (वृहत् कविवल्लभ गत) | हरिचरणदास | | २९x१३.५ | १-२१ | अपूर्ण 'व्यंजन' विचार शीर्षक देकर अंत में छोड़ दिया है। |
| १७ | १०९३८ (८) | अध्यातम प्रकास | सुखदेव मिश्र | १८८५ | १६.५x८.५ | ५२४-५६१ | र.का. १७५५ संवत् सत्रह सैवरष,पचपन-अश्वन मास। एकादस बुधिकौ भयौ, पूरन यह प्रकास ।।३६।। |
| १८ | १०८४८ (६) | अध्यात्म प्रकाश | सुखदेव मिश्र | १९वीं श. | १५.५x८ | ५८१-६०७ | र.का. १७५५ |
| १९ | १२२०५ (१०) | अध्यात्म फाग | | १७५५ | १७x११ | ८-११ | लि.क. विद्याप्रमोद, लि.स्था. रूपनगर |
| २० | १२३७७ | अध्यात्म रामायण भाषा पद्यानुवाद | माधोदास शिष्य दामोदर | १८७० | १०x१६.५ | ९३१ | कीटविद्ध है। |
| २१ | ११६३० | अध्यात्म रामायण भाषा पद्यानुवाद | माधोदास शिष्य दामोदर | १९०० | ३०.५x१५ | २३८ | र.का. १६८१ |
| २२ | १०९५० (१) | अन-पाणी री वारता | | १९२२ | १४.५x८ | १-१० | अंत में 'अंन पुराण' शीर्षक है। |
| २३ | १२२२० (२०) | अन्नकूट के पद | सूरदास | १९वीं श. | १९x१६.५ | ७९-८१ | लि.स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४ | १२३७१ (६) | अनेकार्थ नांममाला | नंददास | १८३५ | १८.५x१६.५ | २६१-२६७ | लि.क. भीखनदास, लि.स्था. अहिपुर |
| २५ | १२३३० (१) | अनेकार्थ मंजरी | नंददास | | २०.५x१४.५ | १-१८ | |
| २६ | १०८६४ (४) | अनेकार्थ मंजरी | नंददास | १८६७ | १०.५x७ | ६०-१२१ | लि. क. संतदरियावजी की शिष्य परम्परा में है। लि.क. खानाजाद निरमल दास, लि.स्था. अजमेर-रामद्वारा |
| २७ | १२५६७ (३) | अनंतजी री कथा | | १८३० | २१x१५.५ | २१-२७ | लि.क. चेला केसरचंद |
| २८ | १२२१८ (१०५) | अनाथी मुनि सज्झाय | समयसुन्दर | १८वीं.श. | २६.५x१२ | १२० वां | |
| २९ | १०८४५ (६) | अपरोछि सिद्धान्त (अपरोक्ष सिद्धान्त) | म० जसवन्तसिंह | १८८६ | १५.५x१०.५ | ८५०-८५७ | लि.क. जेरामनारायण, लि.स्था. पोकरण |
| ३० | १०८६२ (४) | अबजदी पाशाकेवली | | १८९८ | १७x१४ | १-१६ | लि.स्था. जोधपुर |
| ३१ | १२३२० (१९) | अभिनन्दन गीतं | | १८वीं.श. | २१.५x१४.५ | २६ वां | |
| ३२ | १२२०५ (२९)५ | अभिनन्दन गीतं | जिनराज | १७५५ | १७x११ | ११० वां | लि.क. विद्या प्रमोद, लि.स्था. रूपनगर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | १२३२० (४४) | अभैनन्दन स्तवन | | गु.१८२७ | २१.५x१४.५ | ५० वां | |
| ३४ | १२४२२ (३)३ | अभै मात्रा | गोरखनाथ | १८३१ | १५x१०.५ | २११ वां | लि.क. ऊगमदास लि.स्था. डीडवांणा |
| ३५ | १२५६१ (६) | अमृतधारा | भगवानदास निरंजनी | १८५५ | २३.५x१७ | ३०८-३३० | लि.क. नंदराम लि.स्था.ककोड़ ग्राम पत्र जीर्ण |
| ३६ | १०८६७ (६) | अमृतधुनिछंद | | १९वीं.श. | १८x११ | ८६-८७ | र.का.(१७२८, र.स्था. मऊ में |
| ३७ | १०८४९ (७) | अमर बोध | रामदास | १९३१ | १७x११ | १४-१७ | गुटका सजिल्द लि.क. साधु छूछमराम |
| ३८ | १०८६६ (४) | अमरबोध | रामदास | १९१० | ७.५x७.५ | ७७-९७ | ८९ वां पत्ररिक्त |
| ३९ | १०९७३ (१) | अमरसेरग री चौपई | कुसालचन्द | १९१४ | २५.५x११.८ | १-७ | र.का. १८९८ र.स्था.महापुरा। |
| ४० | १०९०७ (१) | अयवंतीनो चोढालियो | जैमल | १९ वीं.श. | २५.५x१२ | १-३ | र.का. १८५०,र.स्था. नागोर |
| ४१ | १२५६८ (२) | अयवंती सुकमालरी चउपई | जिनहर्ष | १९वीं.श. | १८.५x१२.५ | १९-२९ | पत्रांक १ से १२ अप्राप्त, १३ से १८ "लघुचारगक्य राजनीति" र.का. १७४१ र.स्था. राजनगर लि.स्था. ग्राममांडावास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४२ | ११५८५ (२) | अयवंती सुकमालरी चउपई | शांति हर्ष | १८७६ | १६.५x११.५ | २५-३४ | र.का १७४१, र.स्था.राजनगर लि.क. महात्मा भांनी |
| ४३ | ११६६२ (२) | अयवंती सुकुमालरी चोपी (चौपाई) | जिनहर्ष | १८७६ | २५x१०.५ | ५-७ | र.का.१७४१,लि.क.लीखमीचंद शिष्य भैरूदास, लि.स्था.वगरी |
| ४४ | १०८४१ (२) | अरजन (अर्जुन) गीता | धर्मदास | १६०० | २८x१६.५ | १-२ | लि.क. मुरलीधर पुरोहित, लि.स्था. जोधपुर |
| ४५ | १२४४६ (२) | अरजणमालिका चउढालियो | ऋषि रतीराम | १६वीं.श. | २५x११ | ३-४ | र.का. १८७० |
| ४६ | १२३७० (२६) | अरणिक मुनि-सज्झाय | रूपविजय | १६वीं.श. | १६x११.५ | १ | पत्रांक २५५ के बाद पुनःइस कृति से पत्रांक १ से प्रारम्भ हैं। |
| ४७ | ११५८५ (८) ३० | अरणिक मुनि-सज्झाय | रूपविजय | १६०३ | १६.५x११.५ | १६५-१६६ | |
| ४८ | १०८६७ (४) | अरथ तत्तसार (तत्त्वसार ग्रन्थ का अर्थ) | टी. रामदास साध | २०वीं.श. | १२x११ | १५१-१७२ | |
| ४६ | १०८५० | अरथ सिद्धान्त | परसराम शिष्य रामदास | १८६६ | १७x१०.५ | ७२-६० | चरण १०३, दूहा १३, सोरठा २२, छंद २६ लि.क. खण्डूराम |
| ५० | १०६०० (८) | अरदासबत्तीसी | द्यालबाल शिष्य रामदास | २०वीं.श. | १२x८.५ | ७०-७७ | |
| ५१ | १२३२० (३७) | अरनाथ (अर्हन्नाथ) जिनस्तवन | लक्ष्मीविजय शिष्य गुणविजय | १८वीं.श. | २१.५x१४.५ | ४६वां | लि.क.भाव विजय, लि.स्था. मेड़ता |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५२ | ११५८४ (३२) | अरहंनारिषि चउढालियो | हर्षउदय वाचक शिष्य सोम | १८वीं श. | १९.५x१६ | २२४-२२५ | र.का. १७२६<br>लि.क. पं. केशवदास<br>शिष्य हरषउदयगणि |
| ५३ | १०६०२ (१) | अरिल (अरिल्ल) | वाजीद | १८०९ | १५.५x१२.५ | १-५ | पत्र बड़कने हैं।<br>लि.क. भीखनदास |
| ५४ | १२५६१ (१६) | अरिल (अरिल्ल) | वाजीद | १८५५ | २३.५x१७ | ३६८-३६९ | लि.क. नंदराम<br>लि.स्था. ककोड़ ग्राम |
| ५५ | १२५५१ (२२) | अरिहंत-गुण वर्णन | | १७वीं श. | १३x११ | १४८-१४९ | |
| ५६ | ❀१२३०३ | अवतार चरित्र भाषा सचित्र | नरहरिदास वारहठ | १९१७ | ३०x२८.५ | १-३२८ | चित्र सं. ३३, र.का. १७३३<br>लि.क. बंशीधर<br>लि.स्था. इयारीआ गांव |
| ५७ | १०९६२ | अश्वमेध भाषा पद्यानुवाद (महाभारतगत) | भगवानदास निरंजनी | १९१४ | २५x१२.५ | १-७६ | ६६ अध्यायों तक।<br>र.का. १७५५<br>लि.क. बुधरांम,<br>लि.स्था. पीपरा।<br>"ग्रंथ समापति यह भयौ,<br>मास एक कृत सार। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | पूरन कीनौं पीपरा<br>सो हरि कैं दरबार ।।१४।।<br>संमत्त सत्रहसै सही,<br>पचपन कहैं सुलोग ।<br>दुतीये जेठ पूरन सवै,<br>हं बरखा को जोग ।।१५।।<br>भगवानदास निरंजनी,<br>भाषा करी सुग्रैंन ।<br>यामैं कछु दूषन नहीं,<br>है निज इंमृत वैंन ।।१६।।" |
| ५८ | ११०८७ (२) | अश्वमेध यज्ञरी कथा | | १७९३ | २१.५x१५.५ | ६३-११२ | जालोर के मुंहता रायचंद जी की पौथी से प्रतिलिपि की गई हं । पत्र ११३ पर 'सूरज' स्तवन दिया है । लि.क. मुंहता सोभागचंद तथा हरजी पढीयार, लि.स्था. जोधपुर । |
| ५९ | १०८६९ (१८) ३ | अस्तुति (स्तुति) | | गु. १९२७ | ८.५x७ | ६६५-६७० | लि.क. केवलराम, लि.स्था. जयपुर में रावजी का वाग |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६० | १२५७५ (६) | असज्झाय सज्झाय | गुणसागर का शिष्य | १९वीं.श. | १३.५x१४ | १३-१५ | |
| ६१ | १२५७० (४२)१ | अष्टप्रकारी पूजा | | १८६९ | १६x११.५ | १०१-१०७ | पत्रांक १०१ त्रुटित |
| ६२ | १२३७० (२) | अष्टप्रकारी पूजा | देवचन्द्र शिष्य ज्ञानसागर | १९वीं.श. | १६x११.५ | ९-११ | र.का. १७४३ गुण युग अचल इंदु |
| ६३ | १२५६५ (२) | अष्टप्रकारी पूजा | | १९३७ | १६x१२ | ८-९ | लि.क. दीपसागर, लि.स्था. फलोदी |
| ६४ | १२३७० (१७)५ | अष्टमीस्तुति | | १९वीं.श. | १६x११.५ | १४५-१४६ | |
| ६५ | १२४२२ (३)९ | अष्टमुद्रा | गोरखनाथ | १८३१ | १५x१०.५ | २१५-२१६ | लि.क. ऊगमदास, लि.स्था. डीडवांणा |
| ६६ | १२५६४ (२) | अष्टावक्र भाषा | | १९वीं.श. | १४.५x१०.५ | १५-५० | अंत में स्फुट श्लोक व सवैया हैं। |
| ६७ | १०९४६ (१) | अष्टाक्षरनिरूपण भाषा टीका सह | टी० विट्ठलेश्वर | १९वीं.श. | १४.५x७.५ | १-१९ | |
| ६८ | १२५४८ (३) | अहिल्या-सत | नरहर | १८९० | १६x१२.५ | ३४-३७ | |
| ६९ | १२२१० (२८)१ | अक्षयतृतीया के पद | कृष्णदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६९-१७० | |
| ७० | १२२१० (२८)२ | अक्षयतृतीया के पद | चत्रभुज | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६९-७० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७१ | १२२१० (२८)३ | अक्षयतृतीया के पद | गोविन्द प्रभु | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १७१वां | |
| ७२ | १२२१० (२८)४ | अक्षयतृतीया के पद | विट्ठल | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १७१-१७२ | |
| ७३ | १२२१० (२८)५ | अक्षयतृतीया के पद | कुंभनदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १७१वां | |
| ७४ | १२१९६ | अक्षयतृतीया व्याख्यान | | १९०१ | २५x११.५ | १-६ | प्रथम दो पत्र कीटविद्ध लि.क.पूनमचंद लि.स्था. फलोदी |
| ७५ | १२१९९ (६) | आखातीज रो वखांण | | १९७५ | २७x१४ | ३५-३७ | |
| ७६ | १०८०७ | आगमसारोद्धारबालावबोध | देवचन्द्र मुनि | १९२४ | २५.५x१३ | १-२८ | लि.क. सवाईसागर, लि.स्था. देपालपुर नगरे |
| ७७ | १२२१० (२७)१ | आचार्यजी की बधाई के पद | | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६१-१६२ | |
| ७८ | १२२१० (२७)२ | आचार्यजी की बधाई के पद | रसिकदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६३वां | |
| ७९ | १२२१० (२७)३ | आचार्यजी की बधाई के पद | गोपालदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६४-१६८ | |
| ८० | १२२१० (२७)४ | आचार्यजी की बधाई के पद | वल्लभ | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६४वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८१ | १२२१० (२७)५ | आचार्यजी की बधाई के पद | मानिकचन्द्र | १९वीं.श. | १३x१३.५ | १६६-१६७ | |
| ८२ | १२२१० (२७)६ | आचार्यजी की बधाई के पद | विष्णुदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६७वां | |
| ८३ | १२२१० (२७)७ | आचार्यजी की बधाई के पद | सगुनदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | १६८-१६९ | |
| ८४ | १२४१२ (१) | आचार्यजी की वार्त्ता (वल्लभकुली) | | १९वीं.श. | २१x१६.५ | १-१५ | प्रारम्भ के पत्र अप्राप्त |
| ८५ | १२४१२ (४) | आचार्यजी की सेवकों की वार्त्ता (वल्लभकुली) | | १९वीं.श. | २१x१६.५ | १-१४७ | अंत में सभी सेवकों की सूची दी हुई है। इसमें १६ सेवकों की बातें हैं। |
| ८६ | १२२१८ (५७) | आणंदसंधि | श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष वाचक | १७६६ | २५.x१० | ६९-८० | लि.स्था. डीडवाणा र.का १६८४ |
| ८७ | १२१८० | आणंद संधि | श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष वाचक | १९३३ | २५.५x११.५ | १-१० | र.का. १६८४ लि.क. सवाईसागर शिष्य विजयसागर लि.स्था. पोहकरण |
| ८८ | ११०२७ | आत्मप्रकाश (वैद्यक) | आत्माराम शिष्य दोलतराम | १९७० | १८x९ | १-१२५ | पत्र १-८६ तक पुराना कागज है व बाद में नया कागज है। साथ में एक खरड़े पर 'निघण्ट' भैषज्य- |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (.सेंमी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | भाषा भी हैं। विषयनामानुक्रमणिका सहित। लि.क. रामचतुर शिष्य दीर्घराम, लि.स्था. जोधपुर। |
| ८९ | ११०८१ | आत्मप्रकाश (वैद्यक) | आत्माराम शिष्य दोलतराम | १९०१ | १७x१२ | ३-७४ | प्रारम्भ के दो पत्र अप्राप्त। |
| ९० | १२०६२ | आत्मप्रकाश (वैद्यक) | आत्माराम शिष्य दोलतराम | १९०३ | ३२x१४ | १-१६६ | प्रारम्भ का पत्र जलग्रस्त लि.क. राजमल मोहतो लि.स्था. नागोर |
| ९१ | १२२०९ | आत्मप्रतिवोध | | १८वीं.श. | २५x१८.५ | ७०-७१ | |
| ९२ | १२२१८ (५५) | आत्मसज्झाय | हर्षकुशल | १८वीं.श. | २६.५x१२ | ६७-६८ | |
| ९३ | १२३७२ (३) | आत्मां अचल अष्टक (सुन्दराष्टक) | सुन्दरदास | १९वीं.श. | २४x१६.५ | ८०-८७ | |
| ९४ | १२५९२ (६) ४ | आत्मां अचल अष्टक | सुन्दरदास | १९वीं.श. | १४x१०.५ | १५९-१६१ | |
| ९५ | १२५७५ (७) | आतमशिक्षा सज्झाय | पार्श्वचंद | १९वीं.श. | १३.५x१४ | १५-१७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९६ | १२२१८ (८२) | आतम सज्झाय | सहजसुंदर | १८वीं.श. | २६.५x१० | १३०वां | |
| ९७ | १२३२० (२७) | आतम सज्झाय | | १८वीं.श. | २१.५x१४.५ | ३३वां | |
| ९८ | १२५५१ (१८) | आदिजिन आलोयणा स्तवन | समयसुन्दर | १७वीं.श. | १३x११ | १३१-१३४ | |
| ९९ | ११५८५ (८)२१ | आदि जिनस्तवन | | १९०३ | १९.५x११.५ | १५४वां | |
| १०० | १२०६८ (११) | आदिजिनस्तवन | समयसुन्दर | १८८८ | २३.५x५१ | ५३-५४ | लि.क. जती वीर वैताल लि.स्था. कलकत्ता |
| १०१ | १२२१८ (५०) | आदिजिनस्तवन | धर्मसुन्दरगणि | १८वीं.श. | २६.५x१२ | ६५-६६ | |
| १०२ | १२५७५ (११) | आदिजिनस्तवन | | १९वीं.श. | १३.५x१४ | २९वां | |
| १०३ | ११५८४ (२७) | आदिनाथस्तवन | सहजसुंदर | १८वीं. श. | १९.५x१६ | २१३-२१४ | लि.क. पं. तेजसी |
| १०४ | ११.५८५ (८)१५ | आदिनाथस्तवन | हर्षचंद | १९०३ | १९.५x११.५ | १४८वां | लि.क. लीखमीचंद कोचर लि.स्था. वालाहेड़ा |
| १०५ | ११५८५ (८)२९ | आदिनाथ स्तवन | जसविजय | १९०३ | १९.५x११.५ | १६४ वां | |
| १०६ | १२२१४ (५) | आदिबोध | ध्यानदास | १९वीं.श. | २१.५x१३ | ६९-७१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०७ | १२२१८ (५८) | आर्द्रकुमार सज्झाय | मानसागर शिष्य जीतसागर | १८वीं.श. | २६.५x१० | ८०-८१ | |
| १०८ | १२०६८ (१) | आनन्दघन चोबीसी | आनन्दघन | १८८८ | २३.५x१५ | १-१० | लि.क. वीर वैताल लि.स्था. कलकत्ता |
| १०९ | १२३७० (७) | आनन्दघन चौबीसी | आनन्दघन | १९वीं.श. | १६x११.५ | ५६-७२ | |
| ११० | १०७९१ | आनन्दघन चोबीसी सटबार्थ | आनन्दघन, टब्बा-ज्ञानविमल | १९०३ | २७.५x१३ | १-४१ | लि.क. हमीर विजय लि.स्था. हरिदुर्ग |
| १११ | १२३६७ (५) | आनदरीसंधि रो गीत | | १९वीं.श. | २५.५x१६.५ | ७६वां | |
| ११२ | १२५७५ (१६) | आलोयणागीतं | मतिशेखर वाचक | १९वीं.श. | १३.५x१४ | ५६-५७ | |
| ११३ | १२२१८ (१०६) | आलोयणा छतीसी | समयसुंदर | १८वीं.श. | २६.५x१० | १२०-१२१ | |
| ११४ | १०९०० (६) | आरती | सेवगराम | २०वीं.श. | १२x८.५ | ७७-७९ | |
| ११५ | ११५८५ (८)४९ | आरती | | १९वीं.श. | १९.५x११.५ | १८८वां | |
| ११६ | १२२१८ (२०) | आरती | मीराँ | १८वीं.श. | २६.५x१० | ३५ वां | |
| ११७ | १२२२० (२०) | आरती | नांमदेव | १९वीं.श. | ९.५x६.५ | ३९-४० | |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११८ | १२५७४ (२)४ | आरती | रामचरण | २०वीं.श. | १७x१०.५ | ८१ वां | लि.क. बक्षीराम |
| ११९ | १२५७४ (७) १ | आरती | संतदास | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १६७ वां | |
| १२० | १२५७४ (७)२ | आरती | रामचरण | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १६८,१७० १७१वें | |
| १२१ | १२५७४ (७) ३ | आरती | रामजन | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १६८वां | |
| १२२ | १२५७४ (७)४ | आरती | दुलहराम | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १६८वां | |
| १२३ | १२५७४ (७)५ | आरती | चत्रदास | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १६९वां | |
| १२४ | १२५७४ (७)६ | आरती | नारायणदास | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १६९वां | |
| १२५ | १२५७४ (७)७ | आरती | हरदास | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १६९वां | |
| १२६ | १२५७४ (७)८ | आरती | कबीरदास | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १७०,१७१, १७२ वें | |
| १२७ | १२५७४ (७)९ | आरती | नामदेव | २०वीं.श. | १७x१०.५ | १७० वां | |
| १२८ | १२६१२ | आरती | | १८३६ | २५.x१५ | ४४ वां | लि.क. सिंघवी हिमतराम लि.स्था. दिल्ली में यमुनातीरे |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२९ | १२३२० (४०) | आलोयणा सज्झाय | | १८वीं.श. | २१.५x१४.५ | ४८वां | |
| १३० | १२२१८ (६०) | आलवणा सज्झाय | ज्ञानउदोत शिष्य जिनहर्ष | १८वीं.श. | २६.५x१० | ८२-८३ | |
| १३१ | १२४४६ (३) | आषाढभूत चउढालियो | ऋषि रायचंद | १९वीं.श. | २५x११ | ५-७ | र.का. १८२६, र.स्था. पाली |
| १३२ | १२२१८ (११३) | आषाढभूत धमाल | कनकसोम | १८वीं.श. | २६.५x१० | १२४-१२६ | र.का. १६३८ |
| १३३ | १२२०८ (३) | आहार-अणाहार विचार | | १८वीं.श. | २५x१८:५ | ६९वां | |
| १३४ | ११३१४ (२) | इक़लाकमहसनीन (हिंन्दुगी ज़बान में) | | | १७.५x१४ | २७-१४६, १-३६ | अनेक किस्सों का संग्रह है। अपूर्ण। जलाभिषिक्त होने से पत्र चिपके हुए हैं। |
| १३५ | १२०७३ | इतिहाससार समुच्चय | लालदास पुत्र उधौदास | १८८७ | ३०.५x१५.५ | १-४३ | लि.क. जैतराम, लि.स्था. मूंडवा (नागोर) |
| १३६ | १२५२५ | इतिहाससार समुच्चय | लालदास पुत्र उधौदास | १८५७ | ३३.५x१६ | १-१९ | लि.क. के नाम-स्थान पर स्याई फेरी हुई है। आद्य-अन्तिम पत्र शोभन। |
| १३७ | ❋१२३५५ | इतिहाससार समुच्चय भाषा | मुकंददास निरंजनी | १९०३ | ३१.५x१५.५ | १-७२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३८ | १२२०६ | इनजुलपुरान वेदशास्त्र | हकीम फरासिसुत | १९३३ | २१.५x१६.५ | १-१०८ | चमड़े की जिल्दबन्धी। यूनानी दवाइयों के नुस्के व रोग निदान। लि.क. पुजारी रामप्रसाद लि.स्था. रूपनगर |
| १३९ | १२५८१ (११) | इला-पुत्र सज्झाय | लब्धिविजय | १९वीं.श. | १६x१०.५ | ७५-७६ | |
| १४० | १२२१० (१७)१ | इंद्र को पद | कृष्णदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | ९५ वां | |
| १४१ | १२२१० (१७)२ | इंद्र को पद | परमानन्द | १९वीं.श. | १८x१३.५ | ९५-९७ | |
| १४२ | १२२१० (१७)३ | इंद्र को पद | चत्रभुज | १९वीं.श. | १८x१३.५ | ९६ वां | |
| १४३ | १२२१० (१७)४ | इंद्र को पद | गोविंद | १९वीं.श. | १८x१३.५ | ९६वां | |
| १४४ | १२२१० (१७)५ | इंद्र को पद | सूरदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | ९७वां | |
| १४५ | १२२१० (१७)६ | इंद्र को पद | कुंभनदास | १९वीं.श. | १८x१३.५ | ९८ वां | |
| १४६ | १२२२० (२१) | इंद्रकोप के पद | कृष्णदास | १९वीं.श. | १६.५x१९ | ८१ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४७ | १२२०५ (१२) | इंद्रजाल | | १७५५ | १७x११ | १२-१३ | लि.क. विद्याप्रमोद, लि.स्था. रूपनगर |
| १४८ | १०८४५ (३) | इंम्रतधारा (अमृतधारा) | भगवानदास निरंजनी | १८८६ | १५.५x१०.५ | ७६२-८२० | ग्रन्थ १४ प्रभावों में विभक्त है। र.का. १७२८, र.स्था. क्षेत्रवास लि.क. जेरामनारायण, लि.स्था. पोकरण |
| १४९ | १२३२० (४८) | उत्पत्ति सज्झाय | श्रीसार शिष्य रत्नहर्षवाचक | १८१६ | २१.५x१४.५ | ७-१० | लि.क. खेमचन्द्र |
| १५० | ११५७७ | उत्तम चरित सानुवाद | मू. चारुचन्द्र शिष्य भक्तिलाभ टी०चारित्र्यसागरगणि | १८४६ | २६x११ | १-३६ | लि.स्था. वगड़ी नगर |
| १५१ | १२५८५ (७) | (१) उदैगिरिजी किस्तुरां बाई री परची | सुखसागर शिष्य दरियाव | १९२७ | १९.५x१५ | २४४-२५३ | बीकानेर के आगासर गांव की। लि.क आरतराम शिष्य सुलभराम, लि.स्था. बदनोर |
| १५२ | १२००२ T | उपदेशबत्तीसी (बालचन्द-बत्तीसी) | बालचंद शिष्य गंगदास | १९वीं.श. | २५.५x१२ | १-३ | र.का. १६८५, र.स्था. अहमदाबाद |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में | माप (सं.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॐ १५३ | १०९८३ | उपदेशी ढाल संग्रह | अनेक कर्तृक | १९३७ | २५x१२ | १-१३१ | विभिन्न जैन कवियों के पद व ढालें संगृहीत हैं । विवरणात्मक सूची परिशिष्ट में देखें । |
| १५४ | १०८४९ (१५) | उपदेस दिढावणि | फरीदजी | १९३१ | १७x१० | ८७-८९ | |
| १५५ | १०९३७ (२) | उपदेस बावनी | किसनदास वाचक | १९२२ | १४.५x७.५ | १-४० | र.का. १७०८<br>लि.क. रामलाल,<br>लि.स्था. बदनोर-रामद्वारा<br>श्री ये संग राज लोक<br>गज सिरताज गुरु,<br>तिनकी क्रिपा जू<br>कबताई पाई पावनी ।<br>संमत सतरैसत<br>आठै विजैदसमी कौं,<br>ग्रंथ की समापति<br>भई है मनभावनी ।।<br>साधवी सुग्यांन मा की<br>जाई श्री रतनबाई,<br>तज्यौ देह तातै<br>ऐह रची परिचावनी । |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | मते कीन मत लीन तत्त्व ही पैं रुचि दीनीं, वाचक किसन कीनी उपदेस बावनी ।। |
| ❀ १५६ | ११००८ (२) | उपमा-संग्रह | हीराचंद कानजी | २०वीं.श. | २६x१३ | १४-२२ | र.का. १९२२ प्रति समाकालीन प्रतीत होती है । पत्र-१५-१६ पर उपमाओं के वर्गीकरण की सारणी है । |
| १५७ | १२०६८ (८) | उल्लासकम् | | १८८८ | २३.५x१५ | ४८-४९ | लि.क. जती वीर वैताल, लि.स्था. कलकत्ता १४ कवित्त हैं । |
| १५८ | १०८४२ (१) | ऊमादे भटियाणीरा कवित्त | आशा बारठ | १९०० | २४.५x७.५ | १-२ | |
| १५९ | ११४७७ (१) | ऊषाहरण | परमानन्द भट्ट | | २३.५x१७ | १-५१ | |
| १६० | १२६१२ (१६) | ऋषभकुमार-गीत | | १९वीं.श. | २५x१५ | ५७-५८ | लि.क. सिंघवी हिम्मतराम लि.स्था. जैपुर |
| १६१ | १२३२० (१६) | ऋषभगीत | | १८वीं श. | २१.५x१४.५ | २५वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६२ | १२३७० (६)अ | ऋषभगीत | जसविजय वाचकशिष्य नयविजय | १६वीं.श. | १६x११.५ | ६८वां | |
| १६३ | १२४४० | ऋषभ-चरित्र | ऋषि रायचन्द | १८४५ | २६x११.५ | १-१६ | १८वां पत्र अप्राप्त।<br>र.का. १८४०,<br>र.स्था. पीपाड़<br>लि.स्था. गागराणा |
| १६४ | १२३६७ (३) | ऋषभजिन-गीत | विनीतविमल | १६वीं.श. | २५.५x१६.५ | ६७वां | |
| १६५ | १२३७० (६) ३ | ऋषभजिन-स्तवन | क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म | १६वीं.श. | १६x११.५ | ५१-५४ | र.का. १८६८,<br>र.स्था. मंडोवर |
| १६६ | १२३७० (१७) १ | (१) ऋषभजिन-स्तुति<br>(२) द्वितीया स्तुति | | १६वीं.श. | १६x११.५ | १४०-१४१ | |
| १६७ | १२५५१ (१) | ऋषभदेव धवल | | गु०१६३२ -१६८० | १३x११ | ५८-७७ | पत्र १ से ५७ तक अप्राप्त।<br>कीटविद्ध।<br>पत्र चिपके हुए। |
| १६८ | ११५८५ (८)१७ | ऋषभदेव-पंचस्तवन | | गु०१६०२ | १६.५x११.५ | १४६वां | लि.क. लिखमीचंद कोचर<br>लि.स्था. बालाहेड़ा |
| १६९ | १२३२० (४१) | ऋषभदेव-स्तवन | | गु०१७६७ | २१.५x१४.५ | ४६वां | |
| १७० | ११५८५ (८)३७ | ऋषभदेव-स्तवन | देवचन्द्र | गु०१६०२ | १६.५x११.५ | १७१वां | लि.क. लिखमीचंद<br>लि.स्था. बालाहेड़ा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७१ | १२२०५ (२९)२ | ऋषभनाथ-स्तवन | जिनराजसूरि | गु०१७५० | १७x१२ | १०८-१०९ | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| १७२ | १२५७७ | एकताबोध | संतदास | १९वीं.श. | २१x१५.५ | ७८-७९ | लि.क. विट्ठलदास, |
| | १२२९३ | एक सिलोकी(श्लोकी)भागवत | | १९वीं.श. | २२ ५x१६ | १०-१४ | लि.स्था. जोधपुर |
| १७३ | (५) (५) | श्रीकिसन-लीला भाषा-टीका | | | | | |
| १७४ | १२२२५ (५) | एक सिलोकी भागवत श्री किसन लीला भाषा | | १९वीं.श. | २४.५x१६.५ | १७१-२७४ | |
| १७५ | १२२२५ (४) | एक सिलोकी रामायण भाषा-टीका | | १९वीं.श. | २४ ५x१६.५ | १६६-१७० | |
| १७६ | १२२९३ (४) | एक सिलोकी रामायण भाषा-टीका | | १९वीं.श. | २२.५x१६ | ६-१० | लि.क. विट्ठलदास, लि.स्था जोधपुर |
| १७७ | ११६४८ (१) | एक सिलोकी रामायण | | १८वीं.श. | २७x१६.५ | १-४ | जीर्ण-शीर्ण |
| १७८ | १२०१९ (१) | एकादशी कथा माहात्म्य-भाषा | नागरदास | १९०४ | ३१x१४ | १-३२ | |
| १७९ | १२४७६ | एकादशी कथा माहात्म्य-भाषा | ध्यानदास | १८१९ | २९.५x१४ | ३० | जीर्ण-शीर्ण एवं जलाभिषिक्त। लि.क. सुखराम, लि.स्था. नागपुर। |
| १८० | १२४८३ | एकादशी कथा माहात्म्य-भाषा | ध्यानदास | १८९९ | ३१x१४.५ | १-४५ | लि.क. वैष्णव पोकरदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८१ | ११५७४ | एकादशी माहात्म्य (बृह्माण्ड पुराणगत) | | १८६२ | २८.५x१५ | १-२१ | ७ वां पत्र खण्डित। पत्र जलाभिषिक्त। लि.क.नरसिंघदास सुन्दरदास लि.स्था. नागोर। |
| १८२ | १२५६६ (१) | एकादशी-व्रत-कथा-माहात्म्य | | १९वीं.श. | १६.५x११ | १-११ | प्रारम्भ के पत्र अप्राप्त। पत्रांक १०, ११, १२ पर गो० तुलसीदास कृत तथा अन्य स्फुट कवित्त |
| १८३ | १२३८० (२) | एकादसलीला (कृष्ण-उद्धव संवाद) | | १८वीं.श. | २०x१४ | १०६-१०९ | |
| १८४ | १०९३८ (२) | एकादस (स्कन्ध भागवत) भाषा | चतुरदास शिष्य संतदास | १८८५ | १६.५x८.५ | ३-४६० | र.का. १६९२ जेठ शुल्ला ९ मंगलवार। |
| १८५ | १०९३१ (१) | एकादस (स्कन्ध भागवत) भाषा | चतुरदास शिष्य संतदास | १९वीं.श. | १४x१०.५ | १-३०७ | चौपाई २३९४, दुहा ४४ र.का. १६९२ |
| १८६ | १२२१८ (१४६) | एकादसी स्तवन | जिनलब्धिसूरि | १८वीं.श. | २६.५x१२ | १६१ वां | |
| १८७ | १०८६२ (५)३० | ओखद आँख्यां दूखे जींके देवाकी | | १८९८ | १७x१४ | ३५ वां | लि.स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (.सेंमी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८८ | १०८६२ (५) २४ | ओखद नजला की | | १८९८ | १७x१४ | | गुटकान्तर्गत- लि.स्था. जोधपुर |
| १८९ | १०८६२ (५) १५ | ओखद बाल बधवा की | | १८९८ | १७x१४ | २४-२५ | गुटकान्तर्गत- लि.स्था. जोधपुर |
| १९० | १२०६६ (६) | अंक प्रश्न विचार | | १६६९ | १५.५x१४ | ११० वां | |
| १९१ | १०८८० | अंजना-चरित्र | | १९वीं.श. | २५.५x११.५ | १८ | |
| १९२ | १२३०४ | अंजनारास सचित्र | | १९वीं.श. | २४x११ | १-३१ | चित्र सं. ४६। पत्र सं. २,१२,१३,१६ व २८ वें अप्राप्त। |
| १९३ | १२४२१ (१५) | अंजना वाइक्य (वाक्य) | | १९वीं.श. | १७x१२ | २४३वां | |
| १९४ | १०८०२ | अंजनासती को रास | | १९३९ | २७x१२.५ | १-१२ | लि.क. रामकृष्ण महेशदास का शिष्य, लि. स्था. जगरामनगर |
| १९५ | १२१४७ | अंजनासुंदरी रास (हनुमत्चरित) | भुवनकीर्ति शिष्य ज्ञाननंदी | १९वीं.श. | २५.५x१३.५ | १-३८ | र.का. १७०६, महाराणा जगतसिंहजी के राज्यकाल में र.स्था. उदयपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९६ | १२२१८ (१४५) | अंतरीक पार्श्वनाथ-स्तवन | सुमतिहंस | १७६६ | २६ ५x९.५ | १५९-१६१ | |
| १९७ | १२३७० (४२) १२ | अंतरीक पार्श्वनाथ-स्तवन | रंगहीर | १९वीं.श. | १६x११.५ | १२९-१३० | कर्ता खरतरगच्छीय र. का. १८५५ |
| १९८ | १२२०५ (६) | अंतरीक पार्श्वनाथ स्तवन (२) कापड़हेड़ा पार्श्वनाथ-स्तवन आदि | कीर्तिवर्द्धन | १७५५ | १७x११ | १-४ | लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रूपनगर |
| १९९ | १२२०५ (१९)५ | अंतरीक पार्श्वनाथ स्तवन | | १७५५ | १७x११ | ४८वां | लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रूपनगर |
| २०० | १२३११ (४) | कक्का-बत्तीसो | सदाराम | १९४० | १७.५x८.५ | ११९-१२८ | लि. क. साधु गंगाराम लि. स्था. कोटा-रामद्वारा |
| २०१ | १०८९२ (१) | कक्का-बारखड़ी | सुदामा | १८९८ | १७x१४ | १-१० | गुटका सजिल्द। लि. स्था. जोधपुर |
| २०२ | १२४२२ (१२) | कणेरी पावजी को पद | कणेरीपाव | गु. १८३१ | १५x१०.५ | २४९-२५० | लि. क. ऊगमदास लि. स्था. डीडवाना |
| २०३ | १२३७० (३५) | कपाट बावनी | रतनचन्द | १९ वीं.श. | १६x११.५ | ३३-४४ | र. का. १८६०, र. स्था. पीपाड़ (जोधपुर) |
| २०४ | ११६४८ (६) | कबीरदास-जन्मबोध पत्रिका की रमेणी | कबीरदास | १८५३ | २७x१६.५ | ३४७-३५२ | लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया |
| २०५ | १२४२६ (७) | कबीरदास-जन्मबोधपत्रिका की रमेणी | कबीरदास | २० वीं.श. | १६.५x१३ | १४-४३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०६ | १२४२२ (२२) | कबीरजी अरु रैंदासजी को संवाद | | गु. १८३१ | १५x१०.५ | ४४३-४४८ | लि. क. ऊगमदास लि. स्था. डीडवाना |
| २०७ | १२४२१ (६) | कबीरजी का रेखता | कबीरदास | गु. १८६३ | १७x१२ | ११६-१२७ | लि. क. बालदास लि. स्था. जोधपुर |
| २०८ | १२२२६ (६) | कबीरजी की परचई | अनन्तदास | १६वीं.श. | १४x१२.५ | ३७-५६ | लि. क. बीरमदास निरंजनी लि. स्था. कैरूं (जोधपुर) |
| २०६ | ११५८३ (१०) | कबीरजी की परचई | अनन्तदास | १६६३ | १८x१५ | ६६-११५ | लि. क. उधवदास |
| २१० | ११०६२ (२) | कबीरजी की परचई | अनन्तद स | १८३६ | १८x१०.५ | ६७-१४६ | लि.क. सेवादास शिष्य आत्माराम लि. स्था. बुलुंदा |
| २११ | १२४२२ (१६) | कबीरजी की परचई | अनन्तदास | गु.१८३१ | १५x१०.५ | ४१२-४२६ | लि. क. ऊगमदास लि. स्था. डीडवाना |
| २१२ | १२४२० (१६) | कबीरजी की परची | अनन्तदास | गु.१६३२ | १६x१४ | ४०८-४३० | लि. क. जमनादास लि. स्था. रतनगढ़-भरथिया की धर्मशाला |
| २१३ | १२५८५ (२) | कबीरजी की परची | अनन्तदास | १६२७ | १६.५x१५ | ११६-१५० | लि. क. आरतराम लि. स्था. बदनोर |
| २१४ | १२३८० (३) | कबीरजी की रमेणी | कबीरदास | गु. १७२४ | २०x१४ | ११० वां. | |
| २१५ | १२३७४ (२) | कबीरजी की वाणी | कबीरदास | १८वीं.श. | ११x१६.५ | १८७-१९५ | अपूर्ण । आगे के पत्र रिक्त हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१६ | १०८९८ (६) | कबीरजी की साखी | कबीरदास | १९२९ | १३x८.५ | ९५-१७७ | अंग ११, साखी २९३ |
| २१७ | ११९८९ (३) | कबीरजी की साखी | कबीरदास | १९०६ | २३.५x१६ | ७-९ | सं. १८९९ वाली प्रति से प्रतिलिपिकृत। लि.क. वसंतीराम पूरबिया ब्राह्मण लि. स्था. जोधपुर |
| २१८ | १२४२० (१८) | कबीरजी की साखी | कबीरदास | गु.१९३२ | १६x१४ | ३८१-४०७ | लि. क. जमनादास लि. स्था. रतनगढ़-भरथिया की धर्मशाला |
| २१९ | १२५९१ (२७) | कबीरजी की स्फुट वाणी | कबीरदास | २०वीं.श. | १५.५x१० | १७४-१८३ | |
| २२० | ११५८३ (२१) | कबीरजी के पद | कबीरदास | १६९३ | १८x१५ | १६६-१७१ | लि. क. अमरदास |
| २२१ | १२५६१ (२) | कबीरजी को कृत (वांणी संग्रह) | कबीरदास | गु.१८५५ | २३.५x१७ | १२२-१४७ | अँग ४९, साखी ८४५ लि. क. नंदराम लि. स्था. ककोड़ ग्राम |
| २२२ | १२३६९ (२) | कबीरजी को कृत (वाँणी संग्रह) | कबीरदास | गु.१७८६ | २४x१७.५ | १६६-१८९ | लि. स्था. नारनोल |
| २२३ | ११०८८ (१) | कबीरदासजी की वांणी | कबीरदास | १९वीं श. | १५.५x१३ | १२७३ | प्रारम्भ के १७ पत्रों में गुरूवावली या 'दया' लिखित हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२४ | ११६४८ (५) | कबीरदासजी की वांणी | कबीरदास | १८५३ | २७x१६.५ | ७८-१६६ | लि. क. गोपालदास<br>लि. स्था. कोलिया |
| २२५ | १०६०२ (५) | कबीरदासजी की वांणी | कबीरदास | १८०६ | १५.५x१२.५ | २४-३३ | |
| २२६ | १२५७७ (२) | कबीरदासजी की साखियाँ (अंगबद्ध) | कबीरदास | १९वीं.श. | १४.५x१०.५ | ३०-७२ | लि. क. साधुराम नागर<br>लि. स्था. उज्जैन |
| २२७ | १२५८४ (१) | कबीरदासजी की साखियां (अंगबद्ध) | कबीरदास | १७२० | १६.५x१४.५ | १-१८० | प्रथम पत्र त्रुटित। जल ग्रस्त एवं स्याही फैली हुई है। कबीरदासजी की वाणी के प्राप्त गुटकों में से प्राचीनतम गुटका है। |
| २२८ | १०८६६ (१८) ७ | कबीर साहब का स्फुट अंग | कबीरदास | १९२७ | ८.५x७ | ६८६-७०३ | लि. क. केवलराम<br>लि. स्था. रावजी का बाग, जयपुर |
| २२९ | १२४२२ (१) | कबीर साहब को कृत | कबीरदास | १८३१ | १५x१०.५ | १-११० | गुटके की सिलाई टूट कर पत्र पृथक हो गये हैं व किनारे खण्डित हैं।<br>लि. क. ऊगमदास<br>लि. स्था. डीडवाना |
| २३० | १२२६ (१७) | कबीर साहिबजी की स्फुट वांणी एवं पद संग्रह | कबीरदास | १९वीं.श. | १४x१२.५ | ४७४-५९७ | लि. क. बीरमदास निरंजनी<br>लि. स्था. कैरू (जोधपुर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३१ | ११५८४ (२६) | कमल वंध कवित्त | पं० नैणसी | १८वीं.श. | १९.५x१६ | २१२वां | |
| २३२ | ११६४८ (७)२ | कमालजी का पद | कमाल | १८५३ | २७x१६.५ | ३२७-३२८ | लि. क. गोपालदास<br>लि. स्था. कोलिया |
| २३३ | ११०५८ | कयवन्ना नी चौपई | जयरंग जैतसी शिष्य पुण्य कलश | १७८१ | २५.५x१७ | १-२१ | र. का. १७२१<br>र. स्था. बीकानेर<br>लि. क. उदयकुशल गणि<br>लि. स्था. डूंगला |
| २३४ | ११५८५ (८)३६ | करणी-स्तुति | | १९वीं.श. | १९.५x११.५ | १७०वां | |
| २३५ | ११५८४ (४) | करम उदिम (कर्म-उद्यम) संवाद रास | हेमराज ऋषि शिष्य मुनि संग्राम | १७०० | १९.५x१६ | २५-२८ | र. का. १६७७<br>र. स्था. गढ़ वैराठ-वधनौर<br>लि. क. चेला नरसिंघ<br>लि. स्था. चीतामां ग्राम |
| २३६ | १२५८५ (११) | करमांबाई री परची | सुखसारण | १९२७ | १९.५x१५ | २९२-२९८ | लि. क. आरतराम<br>लि. स्था. बदनोर |
| २३७ | १२५८५ (१०) | करमेतीबाई री परची | सुखसारण | १९२७ | १९.५x१५ | २८२-२९२ | नगर खंडेलो देस. ढूँढाड़ (जयपुर) पुरोहित जिनको परिवार।<br>लि. क. आरतराम<br>लि. स्था. बदनोर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३८ | १०८६९ (१६) | करुणा छत्तीसी | पूरणदास शिष्य दयालदास | १९२७ | ८.५x७ | ५५८-५७१ | लि. क. केवलराम लि. स्था. रावजी का बाग, जयपुर |
| २३९ | १२३७१ (११) | करुणा छत्तीसी | माधोराम | १८३६ | १८.५x१६.५ | ३२१-३२६ | ग्रन्त में 'जीभड़ी' पर कवित्त है। लि. क. भीखनदास गौड़ लि. स्था नागपुर (नागोर) |
| २४० | १२५९१ (३६) | करुणा-बावनी | मलूकदास | २०वीं.श. | १५.५x१० | २२६-२३९ | |
| २४१ | १०८९७ (३) | करुणा सागर | दयालदास | २०वीं.श. | १२x११ | ११९-१५१ | |
| २४२ | १०९०० (३) | करुणा सागर | दयालदास | २०वीं.श. | १२x८.५ | ४-२५ | बीच के पत्र जले हुए हैं, ग्रक्षर खण्डित हैं। |
| २४३ | १२४२० (२१) | करुणा सागर | दयालदास | गु.१९३४ | १६x१४ | ४३८-४४८ | लि. क. साधु उदोतराम लि. स्था. वीदासर-रामद्वारा |
| २४४ | १२२१८ (९१) | कर्म ग्रन्थ स्तवन | | १७९२ | २६.५x१० | १०९-११२ | लि. क. गुणरूप विजय लि. स्था. ईडवा पत्तन |
| २४५ | १२२१८ (११८) | कर्म छत्तीसी | राजसमुद्र (जिनराज सूरी) | १८वीं.श. | २६.५x१० | १३१-१३२ | |
| २४६ | १०८४३ (६) | कर्म प्रकृति विधान | बनारसीदास | १९वीं.श. | २५.५x२० | २८-३९ | लि. क. मुनि गंगराज लि. स्था. रतनपुरी |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४७ | १२१८५ (४) | कर्म बत्तीसी | | १८६७ | २१x११.५ | ६-८ | लि. क. रंगसागर लि. स्था. जैतारण |
| २४८ | १०८४६ (१२) | कर्म विपाक गीता | | १६३१ | १७x११ | ११-१४ | गुटका सजिल्द लि. क. मनोरथराम |
| २४६ | १०८६१ (४) | कर्म विपाक गीता | | २०वीं.श. | १६x१२ | ७७-८१ | गुटका सजिल्द |
| २५० | ११५८५ (८)२३ | कर्म सज्झाय | | १६वीं.श. | १६.५x११.५ | १५५वां | अपूर्ण |
| २५१ | १२५६१ (७) | कलजुग का कवित्त | | २०वीं.श. | १५.५x१० | १६-१८ | |
| २५२ | १२२२६ (७)४ | कलजुगी मित्र का कवित्त | कवि व्यास | गु.१८७६ | १४x१२.५ | ४३-४४ | |
| २५३ | १०८४३ (२) | कल्याणमंदिर-भाषा | बनारसीदास | १८६५ | २५.५x२० | १-३० | अपूर्ण। सुवाच्य लिपि। महाराज बलवंतसिंहजी के समय में लिपिकृत। लि. क. मुनि गंगराज लि. स्था. रतनपुरी |
| २५४ | १२२१८ (५) | कल्याणमन्दिर-भाषा | बनारसीदास | गु.१७५५-६७ | २६.५x१० | २७-२६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५५ | १२३५४ | कवितावली | गोस्वामी तुलसीदास | १९१९ | ३१.५x१४.५ | १-३९ | लि. क. वैष्णव लालदास लि. स्था. बीकानेर, बगीची श्री-गंगाजी की । |
| २५६ | १२३५७ | कवितावली | गोस्वामी तुलसीदास | १८६७ | ३१.५x१४.५ | २-२९ | प्रथम पत्र अप्राप्त । लि. क. उधौदास |
| २५७ | १२२१७ (४)११ | कवित्त-गंगाजी का | कवि गंग | १९वीं श. | २१.५x१२ | ८१-८२ | |
| २५८ | १२२१७ (४)२ | कवित्त-गंगाजू (जी) के | रामकृष्ण | १९वींश. | २१.५x१२ | ७२-७३ | |
| २५९ | ११५८४ (२१) | कवित्त-डूगरसी निवाज का | | १८वीं | १९.५x१६ | १३७वां | |
| २६० | १२३७१ (१४) ३ | कवित्त-नवग्रहां रो | कल्याण | १८३९ | १८.५x१६,५ | १५वां | लि. क. भीखनदास लि. स्था. नागोर |
| २६१ | १२३७१ (१४)५ | कवित्त-भवानीजी रो | कल्याण | १८३९ | १८.५x१६.५ | १५वां | लि. क. भीखनदास लि. स्था. नागोर |
| २६२ | ११५८४ (२८) | कवित्त-मदिरा का | | १८वीं | १९.५x१६ | २१६वां | |
| २६३ | १२२१७ (४)१० | कवित्त-महादेवजी रा | कवि गंग | १९वीं श. | २१.५x१२ | १८वां | |
| २६४ | १२३७१ (१४)२ | कवित्त-महादेवजी रो | जगदीश | १८३९ | १८.५x१६.५ | १५वां | |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६५ | १२३७१ (१४)६ | कवित्त-वर्षा ऋतुरो | कल्याण | १८३९ | १८.५x१६.५ | १५वां | लि. क. भीखनदास<br>लि. स्था. नागोर |
| २६६ | १२३७१ (१४)४ | कवित्त-शनिश्चरजीरो | कल्याण | १८३९ | १८.५x१६.५ | १५वां | लि. क. भीखनदास<br>लि- स्था. नागोर |
| २६७ | ११०८५ (११) | कवित्त-व्रजाधीश का | | १९वीं. श. | १६.५x१३.५ | ६९-७१ | |
| २६८ | १०८६६ (९१)६ | कवित्त सवैयादि | जगन्नाथ | १९२७ | ८.५x७ | | लि. क. केवलराम<br>लि. स्था. रावजी का बाग, जयपुर |
| २६९ | १०९०७ (७) | कानड़ कठियारा नी चौपई | मानसागर | १९वीं.श. | २५.५x१२ | १३-७१ | अपूर्ण। |
| २७० | १२२१८ (६५) | कापरहेड़ा पार्श्वनाथ सज्झाय | ग्यांनउदोत | गु. १७५५से १७६७ | २६.५x१० | ८७-८८ | |
| २७१ | १२२०५ (१) | कापरहेड़ा-पार्श्वनाथ-स्तवन | जिनहर्ष | गु. १७४८से १७५५ | १७x११ | १ला | पत्र २ पर संस्कृत-प्राकृत में स्तुति है।<br>लि.क. विद्याप्रमोद<br>लि. स्था. रूपनगर |
| २७२ | १२२०५ (१९) ६ | कापरहेड़ा-पार्श्वनाथ-स्तवन | कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न | गु. १७४८से १७५५ | १७x११ | ४८-५० | लि. क. वीद्याप्रमोद<br>लि. स्था. रूपनगर |
| २७३ | १२२०५ (३०) | कापरहेड़ा-पार्श्वनाथ-स्तवन | हर्षकुशल | गु. १७४८से १७५५ | १७x११ | ११३वां | लि. क. विद्याप्रमोद<br>लि. स्था, रूपनगर |
| २७४ | १२२१८ (६८) | कापरहेड़ा-पार्श्वनाथ स्तवन | सुमतिहर्ष | गु. १७५५से १७६७ | २६.५x१० | ८९-९० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७५ | १२५८६ (३) | कामी-नर को अंग | कबीरदास | १९वीं. श. | १२x९.५ | ३३-४१ | कबीर-वाणी के अन्तर्गत। लि. क. विहारीदास |
| २७६ | १२५४१ | कायावेली अर्थ संजुत | दादूदयाल | १९वीं. श. | २८x१३.५ | १-१० | |
| २७७ | १२४२६ (१०) | कायामूल | कबीरदास | २०वीं. श. | १६.५x१३ | ७-८ | |
| २७८ | १०९५४ (११) | काया सज्झाय | रत्नतिलक सेवक | १८७४ | २४x१६.५ | ११०वां | लि. क. रणजीत लि. स्था. पाली |
| २७९ | १२१९९ (२) | कार्तिक पूनम रो बखांण (व्याख्यान) | | १९७५ | २७x१४ | २३-२६ | लि. क. पं. केशरीसागर लि. स्था. फलौदी |
| २८० | ११५४८ | कार्तिक महातम (माहात्म्य) (भाषापद्यानुवाद) पद्मपुराणगत | भगवानदास निरंजनी | १९वीं. श. | २५x१४.५ | १-९८ | र. का. १७४३ लि. क. साध लछीराम |
| २८१ | १०९४३ (१) | कार्तिक माहात्म्य | | १८८४ | १८x१४ | १-७१ | |
| २८२ | ११५५१ | कार्तिक माहात्म्य-भाषा (पद्ममपुराणगत) | भगवानदास निरंजनी | १८९१ | ३०.८x१४ | १-४९ | र. का. १७४३ लि.स्था. नागोर-बखतसागर लि. क. बरकत निरंजनी |
| २८३ | १०६०९ (१) | कालज्ञान (वैद्यक) | लक्ष्मीवल्लभ गणि | १७८८ | १५.५x१० | १-१० | लि. स्था. तिलियासर (बीकानेर) |
| २८४ | १२३६६ | कालज्ञान स्वरोदय | | गु.१७८६ | २४x१७.५ | १९०वां | लि. स्था. नारनोल |
| २८५ | १२५९९ | किष्किन्धाकाण्ड (रामचरितमानस गत) | गो० तुलसीदास | १९वीं. श. | ३०x१५.५ | ११वां | पत्रों के कोंण खण्डित। |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८६ | १२३२० (४६) | किसनजीरो विवाहलो | | १८२३ | २१.५x१४.५ | ११-१६ | |
| २८७ | ११०७३ | कीर्तिधर मुनि-कथा | चोथमल शिष्य नथमल | | २३.५x१२ | १-२ | र. स्था. सोजत |
| २८८ | १०८६६ (५२) | कुण्डलिया | मगराम | २०वीं. श. | १४x११.५ | ४५-५३ | गुटका अपूर्ण है। |
| २८९ | ११६४८ (५०) | कुण्डलिया (अंगबद्ध) | | १८५३ | २७x१६.५ | ६२-७८ | लि. क. गोपालदास लि. स्था कोलिया |
| २९० | १०६३६ (७०) | कुण्डलियादि | संग्रामसिंह | १९३४ | १२.५x८.५ | ३७५-४१४ | संग्रामसिंहजी के पदों का सुन्दर संकलन है। लि. क. चोकसराम लि. स्था. जोधपुर |
| २९१ | १२०६६ (४) | कुतुबसत | | १६६२ | १५.५x१४ | ५५-६० | |
| २९२ | १२२०५ (२०) | कुशल गुरू-गीत (जिनकुशल) | कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न | गु. १७४८से १७५५ | १७x११ | ५१वां | लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रूपनगर |
| २९३ | १२५५१ (३०) | कुशलसूरिगीतं (जिनकुशल) | लखमीचन्द | १६८० | १३x११ | १७१वां | लि. क. समयकीर्त्ति |
| २९४ | १२५६७ (२) | कुसलसिंघ चांपावतरो सिलोको | बखतो साह | १८३० | २१x१५.५ | ९-२० | आउवा के ठाकुर राठौड़ कुशलसिंह के साहसिक कार्यों का वर्णन। बखतसिंह को गद्दी पर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | बिठाने में इन का पूरा हाथ था। लि.क. चेला केसरचन्द लि.स्था. कंटालिया ग्राम |
| २९५ | १२५६८ (८) | कुसलसिंघजी राठौड़रो सिलोको | बखतो साह | १८४४ | १८.५x१२.५ | ८-१२ | |
| २९६ | १२३८० (२०) | कृष्ण-उद्धव-संवाद | | | २०x१४ | २२६-२२९ | |
| २९७ | १२३२१ | कृष्णचन्द्र चन्द्रिका (भागवतदशमस्कन्ध-भाषा) | विष्णुदास | १८०० | १९.५x१३.५ | १-९६ १-८५ | लि.क. नृसिंहदास लि.स्था. फतेपुर |
| २९८ | ११४४१ | कृष्णचरित (रामगीतावलीगत) | तुलसीदास | १८९७ | ३०.५x१५.५ | १-१३ | लि.क. लूणकर्ण |
| २९९ | ११९९७ (४) | कृष्ण चरित्र (नेमजी का सवैया) | | २०वीं. श. | | २५-२६ | |
| ३०० | १२४४८ (१) | कृष्ण-बावनी | वाचक किसन | १९०९ | २८x१३ | १-९ | र.क. १७६० विजया दशमी |
| ३०१ | १२४११ (६) | कृष्णचन्द्रस्य विविध नामानि | | १९वीं.श. | २१x१४ | ११५वां | पुष्टि मार्गीय मतानुसार श्री कृष्ण-५४ नामाली |
| ३०२ | १२३८० (१४) | कृष्ण-रुकमनी-विवाह | | | २०x१४ | १९०-१९६ | अपूर्ण। पत्र १९७ से १९९ तक अप्राप्त। पत्र २०० से २०७ तक रिक्त। |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३०३ | ११०८६ (४) | कृष्ण रुक्मिणीरी वेली सटीक | पृथ्वीराज राठौड़ | १८१६ | २१.५x१५ | ६८-१५२ | पत्र १५३ से १५६ तक में स्फुट ५ कृतिया अष्टकादि संस्कृत में हैं। लि. क. गुलाबगिरि |
| ३०४ | ११५८४ (१६) | कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली | पृथ्वीराज राठौड़ | १८वीं.श. | १६.५x१६ | ५६-७७ | र. का. १६४४ |
| ३०५ | १२०६६ (१) | कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली | पृथ्वीराज राठौड़ | १६६६ | १५.५x१४ | १६-३१ | पत्र सं. १ से १५ व २१वां अप्राप्त। १२० वें छन्द से प्रारम्भ। पत्र सं. ३२-३३ पर आयुर्वेदिक नुस्के हैं। |
| ३०६ | १२२१५ (४) | कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली (सबालाव बोध) | पृथ्वीराज राठौड़ | १९वीं.श. | २२x१६ | ३८-७३ | अपूर्ण। ८३ छन्दों तक ही है। |
| ३०७ | ११०६० | कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली (सबालाव बोध) | पृथ्वीराज राठौड़ | १७६६ | २८x१२ | १-३० | पत्र चिपके हुए हैं एवं बीच में कुछ अंश फट गया है। र. का. १६३८ (वरसि अचल गुण अंग ससि) लि.स्था. सत्यपुर (सोजत) लि.क. कल्याणचन्द्र सूरि |
| ३०८ | १०८३९ (७) | केरड़ावाली चोथ माताजीरी कथा | | १९०६ | ३२x१७.५ | ४०-४३ | सजिल्द गुटका लि.स्था. जोधपुर |
| ३०९ | १०९०२ (१०) | केहरिजीरी साखी | केहरि | १८०९ | १५.५x१२.५ | ५४-६३ | लि.क. साधु भीखनदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१० | १२४१४ | कोक चोपई भाषा | नर्बदाचार्य | १९वीं.श. | २३x१६.५ | २-६३ | अपूर्ण। प्रथम पत्र अप्राप्त। पत्र १ से १७ तक खण्डित। |
| *३११ | १२१५३ | कोक-शास्त्र | नर्बदाचार्य | १९वीं.श. | २५.५x११.५ | १-८४ | बीच-बीच में संस्कृत के श्लोक भी हैं। ग्रन्थकार ने पुष्पिका में अपनी गुरू-परम्परा के अन्तर्गत अपने को तपा-गच्छीय कमल कलश-शाखा से सम्बन्धित बताया है। र.का. १६५६ र.स्था. बुरहान-पुर-असीरगढ़; मीर दल्लशाह के समय में। लि.क. ठकरलाल |
| ३१२ | १०९५५ (३) | कोकसार | आनन्द कवि | १९०५ | १७.५x२३.५ | १-२१ | लि.क. उदैचन्द लि.स्था. चौपासनी (जोधपुर) |
| ३१३ | ११०८० (२) | कोकसार | आनन्द कवि | २०वीं.श. | २२x१४.५ | ४१-७३ | |
| ३१४ | ११०९० | कोकसार | आनन्द कवि | १९वीं.श. | १४.५x११ | २-६९ | कीट विद्ध एवं जलाभिषिक्त। पत्रांक १, ३, ४ अप्राप्त। |
| ३१५ | ११३१३ (२) | कोकसार | आनन्द कवि | १७९९ | १५x१४ | १-२४ | लि.क. निहालचन्द लि.स्था. जिहानाबाद |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१६ | १२४४६ (५) | कोणकरी चौपई | | १९वीं. श. | २५x११ | १४-२० | लि.क. विहारीलाल<br>लि.स्था. रायकोट |
| ३१७ | १२३२० (२४) | क्षमा छत्तीसी | समयसुन्दर | गु. १७६२ से १८४७ | २१.५x१४.५ | ३०-३१ | |
| ३१८ | १०९०७ (५) | खंदक मुनि चउढालियो | जैमल | १९वीं. श. | २५.५x१२ | ८-११ | र.का. १८७१ |
| ३१९ | ११०१३ (१६) | खींमड़ारा दूहा | खींमड़ा | १८१८ | २३x१५ | १३१-१३२ | पत्रांक १३९ पर स्याई फैली हुई है।<br>लि.क. ऋषि सुजांण<br>लि.स्था. चांणोद (जोधपुर) |
| ३२० | ११६४८ (२६) | खेमदासजी की चितांवणी | खेमदास | १८५३ | २७x१६.५ | ५७३-५७४ | लि.क. गोपालदास<br>लि.स्था. कोलिया |
| ३२१ | ११५८३ (४) | खेमदासजी की चितावनी | खेमदास | १९९३ | १८x१५ | ६-११ | लि.क. लिखमीदास |
| ३२२ | १२३६८ | १. खोड़िया क्षेत्रपाल स्तुति<br>२. औषध<br>३. काला भैरव-मन्त्र-तन्त्र<br>४. स्फुट मंत्रोक्त औषध-नस्के | | गु. १९४३से १९९४ | २१x११.५ | १-१९९ | तान्त्रिक विद्या व विभिन्न गुप्त रोगों के नुस्कों की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण ह। बीच के पत्रों में कालरात्रिपद्धति है।<br>लि.क. लक्ष्मीचन्द, चंनणमल लुंका<br>लि.स्था. पाली, पारा |

T

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३२३ | १२४२१ (१४)५ | गज चरित्र | सुन्दरदास | गु.१८९३ | १७x१२ | २३१-२३५ | लि.क. बालदास लि.स्था. जोधपुर |
| ३२४ | १२३७८ (६) | गजन्नामों | जनतुरसी | १८वीं. श. | २२x१५.५ | ३७वां | पत्र ३८ से ९१ तक चतुः-श्लोकी गीता, विष्णुपुरी कृत भगवद्भक्ति रत्नावली व भगवद्गीता आदि हैं। लि.क. रामचन्द दादूपंथी लि.स्था. फतेपुर |
| ३२५ | १२३७८ (१८) | गज मुख नामौ | वाजीद | १७७४ | २२x१५.५ | ११७-१३५ | लि.क. रामचन्द दादूपंथी लि.स्था. फतेपुर |
| ३२६ | १२४४६ (४) | गजसुकमाल-चौपई | | १९वीं. श. | २५x११ | ७-१४ | लि.क. विहारीलाल लि.स्था. रायकोट |
| ३२७ | १०८७९ | गजसुकमाल चतुष्पदी | जिनराज सूरि शिष्य जिनसिंह सूरि | १८९८ | २५x१२ | १-२९ | लि.क. सवाई सागर शिष्य विजय सागर-तपागच्छी लि.स्था. जैसलमेर |
| ३२८ | १२३२० (२) | गजसुकमाल सज्झाय | भावसागर | १८वीं. श. | २१.५x१४.५ | १५वां | |
| ३२९ | १२२१५ (२) | गणेश-चोथ माता री कथा | | १९वीं. श. | २२x१६ | २१-२६ | |
| ३३० | ११५८५ T (८)३५ | गणेशजी का गीत | | १९वीं. श. | १९.५x११.५ | १६९वां | अपूर्ण। |

| क्रमांक | ग्रन्थांक | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३१ | ११०१३ (४७) | गणेशजी का छंद | कवि हेम | १९वीं. श. | २३x१५ | ३२३-३२४ | लि.क. ऋषिसुजांण |
| ३३२ | १२५४७ (१) | गणेशजीरा पंचरत्न | | २०वीं. श. | १६.५x१२ | १-२ | |
| ३३३ | १०६०३ (१) | गरभ चितावणी | रामदास | १९वीं. श. | १३x८ | १-१३ | गुटका अपूर्ण है। |
| ३३४ | १२५७१ (४)३ | गरभ चितावणी | रामदास | १९वीं. श. | १०.५x८ | २०२-२२९ | |
| ३३५ | १२५९१ (४०) | गरभ चितावणी | नरिया (नारायण) | २०वीं. श. | १५.५x१० | २५८-२६४ | गुटके के अन्तिम पत्रों में तुरसीदास के दो पद हैं। |
| ३३६ | ११०१३ (१८) | गहगट रा दूहा | | १८१८ | २३x१५ | १३२वां | लि.क. ऋषि सुजांण लि.स्था. चांणोद (जोधपुर) |
| ३३७ | १२२२० (१८) | गाइ खिलाइवे के पद (गऊ को भोजन देने सम्बन्धी) | चत्रभुज, छीत स्वामी | १९वीं. श. | १९x१६.५ | ७९वां | |
| ३३८ | १२२१७ (५) | गाइ-नाहर-संवाद | | १९वीं. श. | २१.५x१२ | ११०-१११ | |
| ३३९ | १२२१७ (४)१९ | गाथा दूहा-लक्षण | | १९वीं. श. | २१.५x१२ | १००वां | |
| ३४० | १२३७० (६)२ | गिरनार मंडन-नेमिजिन स्तवन | साधु क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म | १९वीं. श. | १६x११.५ | ५०-५१ | र. का. १७६६ |
| ३४१ | १५८५ | गीत-अभैसिंहजीरो | | १९वीं. श. | १६.५x१३.५ | ६३वां. | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३४२ | १०८६२ (८) | गीत (कंवर किसोरीजी रै बाग, साथण मोरी हींदण चालां हो राज) | | १९वीं. श. | १७x१४ | १०वां | लि.स्था. जोधपुर |
| ३४३ | १०८४२ (१०) | गीत (करणाकर अकरण करण कहावै) | | १९वीं. श. | २४.५x१६.५ | ९०वां | लि.क. खिड़यौ हरसुख व वणसूर फत्तौ लि.स्था. जोधपुर |
| ३४४ | १०८६२ (१९) | गीत (कलाली म्हेही भर देस्यां मारुड़ाजी, म्हेही भर देस्यां दारुड़ाजी) | | १९वीं. श. | १७x१४ | २०वां | लि.स्था. जोधपुर |
| ३४५ | १०८६२ (३) | गीत-गणगौर को | | १९वीं. श. | १७x१४ | १७वां | लि.स्था. जोधपुर |
| ३४६ | १०८६२ (१३) | गीत (गांठया मारूड़ा भाग नहीं भावैं....) | | १९वीं. श. | १७x१४ | १३वां | लि.स्था. जोधपुर |
| ३४७ | ११०९१ (१) | गीतगोविन्द सार्थ | मू० जयदेव | १९वीं. श. | १६.५x१२ | १-१२१ | अर्थकर्ता का नाम अज्ञात है लि.क. विट्ठलदास जोशी |
| ३४८ | १२४९४ (१) | गीतगोविन्द सटिप्पण | मू० जयदेव | १९२३ | ३३x२१ | १-४ | प्रथम पत्र खण्डित। अपूर्ण। लि.क. मूरतराम |
| ३४९ | १२५७० (१) | गीत-छोटो सांणोर | | २०वीं. श. | ९.५x६.५ | २-५ | लि.स्था. सिकन्दरावाद की छावनी |
| ३५० | १२०६६ (७) | गीत-जगमालजीरो | | १७वीं. श. | १५.५x१४ | ११०वां | प्रारम्भ में स्फुट छन्द हैं। |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३५१ | १०८६२ (१०) | गीत (जागोजी अलबेली नार) | | १९वीं. श. | १७x१४ | ११वां | लि. स्था. जोधपुर |
| ३५२ | १२२१८ (१३) | गीत—जिनचंद सूरिरो | | गु. १७५५से १७६७ | २६.५x१० | ३३वां | |
| ३५३ | १०८६२ (२६) | गीत—ढ़ोला का | | १९वीं. श. | १७x१४ | २९वां | लि. स्था. जोधपुर |
| ३५४ | १०८६७ (३) | गीत—त्रिगुटबंध | कवि मुरार | १९वीं. श. | १८x११ | ७०-७२ | गुटका सजिल्द |
| ३५५ | १०८६२ (१४) | गीत (प्यारी थारा नैना में बतावै जादूड़ा....) | | १९वीं. श. | १७x१४ | १४वां | लि. स्था. जोधपुर |
| ३५६ | १०८६२ (३) | गीत (प्यारी रा लुभाया लोभी पावणा) | | १९वीं. श. | १७x१४ | १७वां | लि. स्था. जोधपुर |
| ३५७ | १२५७० (१ ३ | गीत—भरथरीजी को | मलूकदास | २०वीं.श. | ९.५x६.५ | ७-१६ | ९ वां. पत्र अप्राप्त। |
| ३५८ | १०८६२ (१५). | गीत (म्हाने प्यारी लागे छै माराज आपरी गुलाली अखियाँ) | | १९वीं.श. | १७x१४ | १५वां | लि. स्था. जोधपुर |
| ३५९ | १२५७० (१)२ | गीत—सपंखरो | | २०वीं.श. | ९.५x६.५ | ५-७ | |
| ३६० | १२५९१ (३९)१ | गीत—सपंखरो | मलियादास | २०वीं. श. | २५.५x१० | २५६-२५७ | र. का. १९५५ |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३६१ | ११०८५ (४) | गीत-सपंखरो | उदयराज | १९वीं. श. | १६.५x१३.५ | ६२वां | |
| ३६२ | ११०१३ (७)१ | गीत-साणोर (श्री कृष्णजीरो) | | १९वीं. श. | २३x१५ | ८३-८४ | कृष्ण-सुदामा के मिलन प्रसंग पर<br>लि. क. ऋषि सुजांण<br>लि. स्था. चांणोद (जोधपुर) |
| ३६३ | १२५७० (१९) | गीत-साणोर | तुलसी | २०वीं. श. | ९.५x६.५ | १२८वां | |
| ३६४ | ११०८५ (६) | गीत-सिंघवी भींवराजरो | आखाडसिंघ | १९वीं. श. | १६.५x१३.५ | ६४वां | पत्रांक ६५ वां रिक्त है। |
| ३६५ | १०८४२ (१४) | गीत-बड़ो साणोर (हवेली झगड़ो हुवो जिण भाव रो) | आसियो बुधौ | १९वीं. श. | २४.५x१६.५ | ९५-९६ | ठा० सगतीदानजी ने आसियो बुधौ कहै<br>लि.क. खिडियौ हरसुख व वणसूर फत्तौ<br>लि.स्था. जोधपुर |
| ३६६ | १०८६२ (७) | गीत-(हींदोले हेलोरंग रह्यो सरसाय) | रसिक बिहारी | १९वीं.श. | १७x१४ | ९वां | लि.स्था. जोधपुर |
| ३६७ | १२५५३ (१०) | गीता-अठारवां अध्याय मधुबन भाषा | भगवतदास | १८९७ | १४.५x१३.५ | १३३-१६७ | रामानुजाचार्य के भाष्य पर भगवतदास की मधुबन-भाषा<br>लि.क. ब्राह्मण श्रीधर<br>लि.स्था. भागनगर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३६८ | १२५७४ (१७) | गीता की भाषा टीका | | २०वीं. श. | १७x१०.५ | ३१८-३३५ | अपूर्ण, पांचवें अध्याय तक। |
| ३६९ | ११५६६ | गीतामहातम (माहात्म्य) की कथा | | १८६३ | ३१x१८.५ | १-२३ | लि.क. रणछोड़दास लि.स्था. ठठौरा गांव |
| ३७० | १०६३९ | गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत) | | १९वीं. श. | १५.५x११ | ११-७५ | पत्र १-१० अप्राप्त। चतुर्थ अध्याय से अष्टादश अध्याय तक। |
| ३७१ | १२४११ (७) | गीतामाहात्म्य-भाषा टीका (पद्मपुराणगत) | आनन्दराम नाजर | १९वीं. श. | २१x९४ | ११७-११८ | अपूर्ण। आगे के पत्र रिक्त। अन्तिम १८ पत्रों में संस्कृत में स्वरोदय है। |
| ३७२ | १२४७८ | गीतामाहात्म्य-भाषा (आनन्द विलास) | आनन्दराम नाजर | २०वीं. श. | ३०x१५ | १-४४ | पत्र सं० ९,४२वें अप्राप्त। र.का. १७६१ (धरनी रस नीरधी मयंक) |
| ३७३ | १२५५३ (१) | गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत) | आनन्दराम नाजर | १८९७ | १४.५x१३.५ | ९-८१ | पत्र १-८ अप्राप्त। ९वां पत्र खण्डित। पत्र गुटके से पृथक् हो गये हैं। र.का. १७५४ (वेद वान मुनि विध वर्षें) लि.क. ब्राह्मण श्रीधर लि.स्था. भागनगर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३७४ | १२५२६ | गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत) | | १८५७ | ३५x१६.५ | १-११ | अन्त में जगजीवणदास व कवीर की साखी है। |
| ३७५ | १२२६३ (२) | गीता-माहतम (माहात्म्य) भाषा टीका सचित्र (पद्मपुराणगत) | | १९वीं.श. | २२.५x१६ | ८४-१५७ | चित्र सं०–५७ लिपि एवं चित्रकार–विट्ठलदास लि.स्था. जोधपुर |
| ३७६ | ११५५४ | गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत) | जसवन्तसिंह पुत्र गजसिंह | १८२० | २९.५x१३.५ | १-२९ | लि.क. बलरामदास लि.स्था. नागोर-बालकदास जी का अस्थल |
| ३७७ | ११५५५ | गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत) | जसवन्तसिंह पुत्र गजसिंह | १८२० | २९.५x१३ | २-२३ | प्रथम पत्र अप्राप्त। लि.क. नरसिंघदास लि.स्था. नागौर |
| ३७८ | १०९३९ | गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत) | | १९वीं. श. | १५.५x११ | ११-७५ | चतुर्थ से अठारवें अध्याय पर्यन्त। पत्रांक १ से १० अप्राप्त। |
| ३७९ | १२००८ | गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत) | | १९वीं. श. | ३१x१४.५ | १-३२ | पत्रांक १७-२० खण्डित। |
| ३८० | १२२२५ (२) | गीतामाहात्म्य-भाषा टीका सचित्र | | १९वीं. श. | २४.५x१६.५ | ८७-१६० | चित्र सं०-४९ पद्मपुराणगत। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३८१ | १२३७२ (६) | गीतासार | | १९वीं.श. | २४x१६.५ | १२३-१२८ | लि.क. चरनदास |
| ३८२ | १०९३६ (५७) | गीतासार | | १९३४ | १२.५x८.५ | ५६३-६६ | लि.क. चोकसराम<br>लि.स्था. जोधपुर |
| ३८३ | १२६१२ (१७) | गुण-अक्षर-माला | | १८१९ | २५x१५ | ५८-६१ | लि.क. सिंघ्वी हिम्मतराम<br>लि.स्था. जयपुर |
| ३८४ | ११५८३ (१८) | गुण-अजबनामों | वाजीद | १९९३ | १८x१५ | १५७-१६० | लि.क. अमरदास |
| ३८५ | १२३७८ (१४) | गुणउत्पत्तिनामों | वाजीद | १८वीं. श. | २२x१५.५ | १०९-१११ | लि.क. रामचन्द दादूपंथी<br>लि.स्था. फतेपुर |
| ३८६ | १२३६६ | गुणकरंड गुणावलीरी चौपई | ऋषिदीप | १८६३ | २५x१६.५ | ४-६१ | पत्र १ से ३ अप्राप्त ।<br>र.का. १७५७ दशहरा दिने<br>लि.क. लिखमीचन्द गुजराती<br>लि.स्था. भावी (जोधपुर) |
| ३८७ | १०८८१ | गुणकरंड गुणावली चतुष्पदी | जिनहर्ष शिष्य शान्ति हर्ष | १९वीं.श. | २५x१२ | १-२० | र. का. १७५१<br>अन्तिम चार पत्र कीटविद्ध |
| ३८८ | १२००१ | गुणठांणा २८ द्वार | | १८९६ | २४.५x१२ | १-७ | प्रतिलिपिकार के नाम पर रंग पोता हुआ है । |
| ३८९ | १२३७१ (४) | गुणप्रास्ताविक दूहा | | १८३५ | १८.५x१६.५ | १४६-२५० | लि.क. भीखनदास गौड़<br>लि.स्था. अहिपुर, नागोर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३९० | १२३७१ (३) | गुरण प्रास्ताविक (लधमल शतक) | लधमल | १८३५ | १८.५x१६.५ | १४२-१४५ | र.का. १७३० लि.क. भीखनदास गोड़ लि.स्था. अहिपुर, नागोर |
| ३९१ | १०९५४ (१०) | गुरण-वत्तीसी सज्झाय | रघुपति पाठक | १८७४ | २४x१६.५ | १०८-११० | लि.क. रणजीत लि.स्था. पाली |
| ३९२ | ११२८३ (५) | गुरण-भंवर-गीता | मोहनदास | १७८६ | १६x१४.५ | ५९-७२ | उद्धव द्वारा कृष्ण को सन्देश लि.क. सीताराम सागर |
| ३९३ | १२२१४ (४) | गुरणमाया-संवाद | ध्यानदास | १९वीं. श. | २१.५x१३ | ६५-६९ | |
| ३९४ | १२२१७ (१८) | गुरण-रूप-संवाद आदि | समन | १९वीं. श. | २१.५x१२ | ६४-६९ | |
| ३९५ | ११०८७ (७) | गुरण–हरिरस | ईसरदास बारहठ | १७९३ | २१.५x१५.५ | १२२-१२८ | अपूर्ण। गुटके में आगे के पत्र नहीं। पत्र बिखरे हुए हैं। लि.क. खुस्यालचन्द |
| ३९६ | १२३७९ (१) | गुरण-हरिरस | ईसरदास बारहठ | गु.१८६९ | २०.५x१४.५ | १-१४ | |
| ३९७ | १८१५३ (५) | गुनहित उपदेश | | गु. १६९३ | १८x१५ | ११-३४ | लि.क. लिखमीदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३६८ | १२०६७ (५)१ | गुर रचना प्रकाश | लिछमन गिरि | २०वीं. श. | २३.५x१७ | १-५ | |
| ३९९ | ११०१३ (८) | गुराचार | | १९वीं. श. | २३x१५ | ८४-८५ | सभी राशियों का फल वृहस्पति से बताया गया है। लि.क. ऋषि सुजाण लि स्था. चाणोद (जोधपुर) |
| ४०० | १२२२६ (१६) | गुरु-उपदेश महिमा जोग ग्रन्थ | रामचरण | १९वीं. श. | १४x१२.५ | ६०८-६१४ | लि.क. बीरमदास लि.स्था. कैरू (जोधपुर) |
| ४०१ | १२२०५ (३२) | गुरु-चेला-संवाद | | (गु.) १७४८-१७५५ | १७x११ | ११६-११७ | पत्र ११५ में दाढ़ दूखने का नुस्का। लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ४०२ | १२५६२ (६) | गुरुदया आदि ६ अष्टक-संग्रह | सुन्दरदास | २०वीं. श. | १४x१०.५ | १४६-१७० | |
| ४०३ | १२३७८ (३) | गुरुदेव को अंग | सुन्दरदास | १८वीं. श. | २२x१५.५ | २६-२७ | अन्त में संस्कृत के सुभाषित श्लोक हैं। लि.क. रामचन्द दादूपंथी लि.स्था. फतेपुर |
| ४०४ | १२५९१ (३१) | गुरुदेव को अंग आदि | रामदास | २०वीं. श. | १५.५x१० | १९९-२०७ | अपूर्ण। आगे के पत्र रिक्त। |
| ४०५ | १२५६२ (६)२ | गुरु-पद | पूरणदास | २०वीं. श. | १४x१०.५ | १८०-१८३ | |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४०६ | १०६०२ (१२) | गुरु-परचावली | | १८०६ | १५.५x१२.५ | ८०-८२ | पत्र चिपके हुए व वड़कने हैं। |
| ४०७ | २५६११ (४) | गुरु-पारख को अंग | द्याल (दयाल) बाल | २०वीं. श. | १५.५x१० | ३१-३४ | |
| ४०८ | १०६३८ (३) | गुरुमहिमा | रामचरण | १८८५ | १६.५x८.५ | ४६०-४६५ | |
| ४०६ | १०७६७ (६) | गुरुमहिमा | | २०वीं. श. | १२x११ | २१६-२३७ | आगे के दो पत्रों में भड्डली के दोहे हैं। |
| ४१० | १०८६६ (१०) | गुरुमहिमा | सेवगराम | १६१० | ७.५x६.५ | ३६६-४२७ | गुटका सजिल्द । लि.क. रामसजन शिष्य सेवगराम |
| ४११ | १०८६५ (४) | गुरुमहिमा | परसोतम | २०वीं श. | १२.५x८ | ११-१६ | लि.क. साधु रामस्वरुप लि.स्था. सूरसागर-रामद्वारा, जोधपुर |
| ४१२ | १०६५२ (१) | गुरुमहिमा पद आदि | रामचरण शिष्य कृपाराम | १६०५ | ७.५x६ | १-१२४ | गुटके के पत्र कहीं-कहीं पृथक् हो गये हैं। लि.क. रामनरांन लि.स्था. देवगढ़–रामद्वारा |
| ४१३ | ११०६२ (४) | गुरुमहिमा | रामचरण | १६३६ | १८x१०.३ | १७१-१७६ | लि.क. सेवादास लि.स्था. बुलुन्दा |
| ४१४ | १२४२६ (२) | गुरुमहिमा | पूरणदास | २०वीं. श. | १६.५x१३ | १-४० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४१५ | १२४२६ (६) | गुरुमहिमा | धीरमदास शिष्य दोलतराम | २०वीं. श. | १६.५x१३ | १-१३ | १३वें पत्र पर हरजस के रूप में ७ पद भी हैं। |
| ४१६ | १२५७१ (४२) | गुरुमहिमा | रामदास | १९वीं. श. | १०.५x८ | १४७-१९२ | |
| ४१७ | १२५७७ (३) | गुरुमहिमा | तुलसीदास | १९वीं. श. | १४.५x१०.५ | ७२-७५ | लि.क. साधुराम नागर लि.स्था. उज्जैन |
| ४१८ | १२५७८ | गुरुमहिमा आदि ११ कृतियां | जनसिम्भूराम शिष्य दयालदास | १९वीं. श. | १४x१० | १-१४९ | संपूर्ण कृतियां शम्भुराम की हैं। कर्ता रामदास की परम्परा में आता हैं। |
| ४१९ | १२५९१ (३०) | गुरुमहिमा | जन तुरसी | २०वीं. श. | १५.५x१० | १९०-१९९ | |
| ४२० | १२५९१ (१३) | गुरुमहिमा | रामदास | २०वीं. श. | १५.५x१० | ७०-८० | |
| ४२१ | १२५९१ (२९) | गुरुवंदन-सार | जन तुरसी | २०वीं. श. | १५.५x१० | १८७-१९० | |
| ४२२ | १०९०० (१४) | गुरु-शिष्य-संवाद | परसराम | २०वीं. श. | १२x८.५ | ९६-९९ | |
| ४२३ | ११६२६ (१०)७ | गुरु-सम्प्रदाय | सुन्दरदास | १९वीं. श. | ३२x१५ | ८-११ | |
| ४२४ | १२५६१ (१४) | गुरु-सम्प्रदाय | सुन्दरदास | गु. १८५५ | २३.५x१७ | ३६६-३६७ | लि.क. नन्दराम लि.स्था. ककोड़ ग्राम |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४२५ | १२५५१ (४) | गुरुस्तुति | अनंतहंस शिष्य कुलतिलक | १७वीं. श. | १३x११ | ६२वां | |
| ४२६ | १२५७२ (३) | गुरुस्तोत्र | रामानन्द | १६वीं. श. | १०.५x८.५ | ६-१० | |
| ४२७ | १२५७२ (६) | गुरुस्तोत्र-मंत्र | द्याल (दयाल) दास | १६वीं. श. | १०.५x८.५ | ११३-११६ | |
| ४२८ | ११०१३ (१२)२ | गुर्जर भाषा आदि के कवित्त-सवैये | | १६वीं. श. | २३x१५ | ११६-१२० | लि.क. ऋषि सुजांण लि स्था. चांगोद (जोधपुर) पत्रांक १-१२ अप्राप्त । |
| ४२९ | ११३१४ (१) | गुलेबकावली | | १६वीं. श. | १७.५x१७ | १३-२६ | अपूर्ण । पत्र जलाभिषिक्त । |
| ४३० | १२२१० (२१)१ | गुसाईंजी की बधाई | मानिकचन्द | १६वीं. श. | १८x१३.५ | १०२वां | |
| ४३१ | १२२१० (२१)२ | गुसाईंजी की बधाई | छीत स्वामी | १६वीं. श. | १८x१३.५ | १०३वां | |
| ४३२ | १२२१० (२१)३ | गुसाईंजी की बधाई | गोविन्द स्वामी | १६वीं. श. | १८x१३.५ | १०३वां | |
| ४३३ | १२२१० (२१)४ | गुसाईंजी की बधाई | चतुर्भुज | १६वीं. श. | १८x१३.५ | १०४वां | |
| ४३४ | १२२१० (२१)५ | गुसाईंजी की बधाई | कृष्णदास | १६वीं. श. | १८x१३.५ | १०४वां | |
| ४३५ | १२२२० (२५)१ | गुसाईंजी के जन्मोत्सव के पद | केसोदास | १६वीं. श. | १६x१६.५ | ८३वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४३६ | १२२२० (२५)२ | गुसाईंजी के जन्मोत्सव के पद | जन भगवान | १९वीं. श. | १९x१६.५ | ८३वां | |
| ४३७ | १२२२० (२५)३ | गुसाईंजी के जन्मोत्सव के पद | गोविन्द प्रभु | १९वीं. श. | १९x१६.५ | ८३वां | |
| ४३८ | १२२२० (२५)४ | गुसाईंजी के जन्मोत्सव के पद | चत्रभुज | १९वीं. श. | १९x१६.५ | ८४वां | |
| ४३९ | १२४१२ (३) | गुसाईंजी के सेवक नन्ददास की वार्ता | | १९वीं. श. | २१x१६.५ | १-६ | अष्टछाप से सम्बन्धित। अपूर्ण। |
| ४४० | १२२२६ (१८) | गसाईं तुरसीदासजी के स्फुट पद | जनतुरसी | १९वीं. श. | १४x१२.५ | ५९७-६०७ | लि.क. बीरमदास निरंजनी लि.स्था. कैरूं (जोधपुर) |
| ४४१ | १२३७१ (१४)७ | गुसाईंजी ने कागद लिखण री पैठ | | १८३९ | १८.५x१६.५ | १६वां | लि.क. भीखनदास लि.स्था. नागोर |
| ४४२ | १२४११ (३) | गुसाईंजीरै सेवकांरी वार्ता | | १९वीं. श. | २१x१४ | ८४-९८ | |
| ४४३ | ११६२६ (१०)२२ | गूढार्थ | सुन्दरदास | १९वीं. श. | ३२x१५ | २९-३० | |
| ४४४ | १२२२६ (१४) | गूढ़ार्थ | केशवदास आदि | १९वीं. श. | १४x१२.५ | ५७वां | लि.क. बीरमदास निरंजनी लि.स्था. कैरूं (जोधपुर) |
| ४४५ | ११०१३ (४) | गूढ़ा-हियालियाँ | | १८२५ | २३x१५ | ७६-८० | प्रथम दो पत्रों में शब्दार्थ हैं। लि.क. ऋषि सुजांण लि.स्था. चांणोद (जोधपुर) |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४४६ | १०६२२ (२) | गोतराचार (गोत्राचार) | | १६वीं. श. | २६.५x१६.५ | २२५-२२८ | इस से पूर्व की कृति सचित्र लि.क. वोरा पुष्करणा है हीरालाल, पुस्तक प्रकाश वाले, जोधपुर |
| ४४७ | १०८४२ (२) | गोपालदासजीरा कवित्त | गोपालदास | १६वीं. श. | २४.५x१६.५ | २-४ | अपूर्ण । ११ कवित्त हैं । कामदारी जिल्द । |
| ४४८ | १२२२० (२३) | गोपाष्टमी के पद | परमानन्द | १६वीं. श. | १६x१६.५ | ८२वां | |
| ४४६ | १२२१० (१६) | गोपाष्टमी के पद | परमानन्द | १६वीं. श. | १८x१३.५ | ६६-१०० | |
| ४५० | १२४२८ (६) | गोपियांरी बारखड़ी | सन्तदास | गु. १६१२ | २१x१५.५ | २१-२४ | लि.क. वैष्णव मोतीराम लि.स्था. जोधपुर |
| ४५१ | १०६४४ (६)२४ | गोपीचन्द | | २०वीं. श. | ८ x ५ | ३७१-३७२ | लि.क. वालकराम लि.स्था. जोधपुर |
| ४५२ | १२५८६ (२) | गोपीचन्द-भरतरी | कानड़ कन्नोजिया शिष्य माधोदास | १६६६ | १७x१३ | ३-१७४ | लि.क. मंगलदास लि.स्था. कुचेरा-रामद्वारा |
| ४५३ | १०८६१ (२) | गोपीचन्द | | २०वीं. श. | १६x१२ | २-६,२७-२६ | गुटका सजिल्द । |
| ४५४ | १०८६६ (५) | गोपीचन्द | | २०वीं. श. | १४x११.५ | ६७वां | गुटका अपूर्ण है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४५५ | १०६३६ (१८) | गोपीचन्द का गीत | | १६३४ | १२.५x८.५ | ८२-८३ | लि. क. चोकसराम<br>लि. स्था. जोधपुर |
| ४५६ | १०६३६ (६२) | गोपीचन्द का गीत | | १६३८ | १२.५x८.५ | २८८-३१४ | लि. क. चोकसराम<br>लि. स्था. जोधपुर |
| ४५७ | ११०६२ (६) | गोपीचन्द का गीत | | १६३६ | १८x१०.५ | १८७-१८६ | लि. क. सेवादास शिष्य आत्माराम<br>लि. स्था. बुलुंदा |
| ४५८ | १२५७४ (५) | गोपीचन्द का पद | | २०वीं. श. | १७x१०.५ | १५६-१६४ | |
| ४५६ | १२५६२ (४) | गोपीचन्द की कथा | महीपत | २०वीं. श. | १४x१०.५ | ११०-१२७ | |
| ४६० | १०८४७ (२७) | गोपीचन्द की कथा (पद्यात्मक) | | २०वीं. श. | १७x८ | ६४३-६५७ | लि. स्था. महामन्दिर, जोधपुर |
| ४६१ | १०८५१ (२) | गोपीचन्द की कथा | | १८६६ | १५.५x१० | ५०-५७ | लि. क. खण्डूराम शिष्य परसराम<br>लि. स्था. कोटा |
| ४६२ | १०६३३ (६) | गोपीचन्द की चौपई | | १६४० | १३.५x८.५ | ६६६-६६३ | लि. क. विलासीराम<br>लि. स्था. शाहपुर (मेवाड़) |
| ४६३ | १०६४२ (२) | गोपीचन्द की चौपई | | १६५२ | १३x६ | १७३-२११ | लि. क. बालकराम<br>लि.स्था. महामंदिर, जोधपुर |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४६४ | १०६४२ (११)१४ | गोपीचन्द की चौपई | | १९५२ | १३x६ | ३१३-३१४, ३७२-३७५ | |
| ४६५ | १०६४४ (६) १३ | गोपीचन्द की चौपई | | २०वीं. श. | ८ x ५ | २७५-२९५ | लि. क. बालकराम लि. स्था. जोधपुर |
| ४६६ | १२५७४ (४) | गोपीचन्दजी को बैराग बोध | दास कवि | २०वीं. श. | १७x१०.५ | १४०-१५९ | लि. क. बक्षीराम |
| ४६७ | ११६४८ (७)५१ | गोपीचन्दजी की महिमा के पद | | १८५३ | २७x१६.५ | ३४३-३४४ | लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया |
| ४६८ | १२२२६ (२६)१४ | गोपीचन्दजी की महिमा के पद | | १८७७ | १४x१२.५ | ६६९-६७१ | लि. क. बीरमदास निरंजनी लि. स्था. कैरु (जोधपुर) |
| ४६९ | १२५९१ (१६) | गोपीचन्दजी री लौय | | २०वीं. श. | १५.५x१० | ८८-९४ | |
| ४७० | ११६४८ (१२)४ | गोपीचन्द की सबदी | गोपीचन्द | १८५३ | २७x१६.५ | ३९०वां | लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया |
| ४७१ | १२२२६ (२३) | गोपीचन्दजी की सबदी | | १९वीं. श. | १४x१२.५ | ६३८-६४० | लि. क. बीरमदास निरंजनी लि. स्था. कैरु (जोधपुर) |
| ४७२ | १०८६९ (१३) | गोबिन्दजी का झूलणा | गुरु गोविन्द | १९२७ | ८.५x७ | ५४२-५४९ | कृति पंजाबी में है। लि. क. केवलराम लि. स्था. रावजी का बाग, जयपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४७३ | १२२२६ (२१)२ | गोरख-गणेश गोष्ठी आदि | गोरखनाथ | १९वीं. श. | १४x१२.५ | ६२१-६३४ | लि. क. बीरमदास निरंजनी लि. स्था. कैरु (जोधपुर) |
| ४७४ | १०८९८ (४) | गोरख छन्द | किसनदास | १९२९ | १३x८.५ | ८०-८९ | |
| ४७५ | १२३८० (१६) | गोरख ज्ञानतिलक | गोरखनाथ | गु० १७२४ | २०x१४ | २१६-२१८ | |
| ४७६ | ११०८५ (७) | गोरखनाथजी का छपै | | १९वीं. श. | १६.५x१३.५ | ६६-६७ | |
| ४७७ | १०८९९ (५)२४ | गोरखनाथ का पद | गोरखनाथ | २०वीं. श. | १४x११.५ | ९६वां | गुटका अपूर्ण है। |
| ४७८ | १२५९१ (६)५ | गोरखनाथजी का व्रत | | २०वीं. श. | १५.५x१० | ४३-४४ | |
| ४७९ | ११६४८ (२९) | गोरखनाथजी का व्रत | | १८५३ | २७x१६.५ | ५७६वां | लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया |
| ४८० | १२४२२ (३) | गोरखनाथजी की फुटकर वांणी (गोरखबोध) | गोरखनाथ | गु० १८३१ | १५x१०.५ | १९३-२४२ | लि. क. ऊगमदास लि. स्था. डीडवाना |
| ४८१ | ११६४८ (१२)१ | गोरखनाथजी की सबदी | गोरखनाथ | १८५३ | २७x१६.५ | ३८२-३८८ | लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया |
| ४८२ | ११६४८ (११) | गोरखनाथजी को कृत | गोरखनाथ | १८५३ | २७x१६.५ | ३५३-३८२ | लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया |
| ४८३ | १२५६७ (९) | गोरखनाथजी को सिलोको | पीपल चारण | गु० १८३० | २१x१५.५ | ५६वां | लि. क. चेला केसरचंद लि. स्था. कंटालिया ग्राम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४८४ | ११५८३ (७) | गोरखबोध | गोरखनाथ | १६६३ | १८x१५ | ५०-६३ | लि.क. ऊधवदास |
| ४८५ | १२२०४ (४) | गोरखनाथजीरो स्वरोदय | गोरखनाथ | गु० १८५८-१८६३ | १७x१५.५ | ४०-४२ | लि.क. फतेचन्द<br>लि.स्था. अवन्तिका |
| ४८६ | १०८४७ (२६) | गोरल (मीराँ व ननदबाई ऊदा का सम्वाद) | मीरांबाई | २०वीं. श. | १७x८ | ६६०-६६१ | लि.स्था.महामन्दिर, जोधपुर। |
| ४८७ | ११५८५ (१) | गोरा-बादल की कथा | जटमल नाहर पुत्र धरमसी | १८७६ | १६.५x११.५ | १०-२४ | प्रारम्भ के ६ पत्र अप्राप्त।<br>र.का. १६६५<br>लि.क. भांनीदास महात्मा<br>लि.स्था. रिणी |
| ४८८ | १२५८० (४) | गोरा-बादल की वारता | जटमल नाहर पुत्र धरमसी | १८६६ | १५x१०.५ | ८५-११४ | र.का. १६८६<br>लि.क. वैष्णव भगतराम<br>लि.स्था. रामगढ़ |
| ४८९ | १२२१० (१४)६ | गोवर्द्धन पूजा के पद | छीतस्वामी | १६वीं. श. | १८x१३.५ | ६०वां | |
| ४९० | १२२१० (१४)८ | गोवर्द्धन पूजा के पद | कुंभनदास | १६वीं. श. | १८x१३.५ | ८६-८७ | |
| ४९१ | १२२१० (१४)७ | गोवर्द्धन पूजा के पद | लालदास | १६वीं. श. | १८x१३.५ | ८६वां | |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४९२ | १२२१० (१४)६ | गोवर्द्धन पूजा के पद | चतुर्भुज | १९वीं. श. | १८x१३.५ | ८५-८६, ८९ | |
| ४९३ | १२२१० (१४)५ | गोवर्द्धन पूजा के पद | हरिदास | १९वीं. श. | १८x१३.५ | ८५वां | |
| ४९४ | १२२१० (१४)४ | गोवर्द्धन पूजा के पद | परमानन्द | १९वीं. श. | १८x१३.५ | ८४, ८७, ९१-९२ | |
| ४९५ | १२२१० (१४)३ | गोवर्द्धन पूजा के पद | विट्ठल | १९वीं. श. | १८x१३.५ | ८१वां | |
| ४९६ | १२२१० (१४)२ | गोवर्द्धन पूजा के पद | | १९वीं. श. | १८x१३ ५ | ७२-८१ | |
| ४९७ | १२२१० (१४)१ | गोवर्द्धन पूज़ा के पद | सूरदास | १९वीं. श. | १८x१३.५ | ६९-७२,८१, ८२-८४, ८७-८९ | |
| ४९८ | १२२२० (१९) | गोवर्द्धन पूजा के पद | सूरदास, चत्रभुज | १९वीं. श. | १९x१६.५ | ७९वां | |
| ४९९ | ११५८४ (१६) | गौड़ी पार्श्वनाथ लघु-स्तवन | जिनराज़ सूरि | १८वीं. श. | १९.५x१६ | ५०वां | |
| ५०० | १२२१८ (४९) | गौड़ी पार्श्वनाथ स्तवन | जिनराज सूरि | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ६५वां | |
| ५०१ | १२२०५ (२९)१ | गौड़ी पार्श्वनाथ-स्तवन | जिनराज सूरि | गु० १७४८-१७५५ | १७x११ | १०८वां | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५०२ | १२२०५ (१५) | गौड़ी पार्श्वनाथ-स्तवन | भुवनकीर्ति | गु० १७४८-१७५५ | १७x११ | १९वां | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ५०३ | १२२०५ (७) | गौड़ी पार्श्वनाथ-स्तवन | कीर्तिवर्द्धन | गु० १७४८-१७५५ | १७x११ | ४-५ | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ५०४ | १२२०५ (८) | गौड़ी पार्श्वनाथ-स्तवन | जगरूप | गु० १७४८-१७५५ | १७x११ | ५-६ | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ५०५ | ११५८५ (८) २७ | गौड़ी पार्श्वनाथ-स्तवन | ऋषि हर्ष | १९वीं. श. | १९.५x११.५ | १६०-१६३ | |
| ५०६ | १२५६८ (११) | गौड़ी पार्श्वनाथ-स्तवन | कनकविमल शिष्य हीरविमल | १८५० | १८.५x१२.५ | १६-१७ | पत्र १७वें पर राजा मानसिंह जी ने जलंधरनाथ को राज्य दिया उस समय उनकी राणियों की ओर से लिखी गई पत्री । लि.क. हरखचन्द मुंहता लि.स्था. धवलेड़ीयावास |
| ५०७ | १२२१८ (७७) | गौतम ऋषि-सज्झाय | लावण्यसमय | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ९६-९७ | |
| ५०८ | ११५८४ (१२) | गौतम गीत | उदयहर्ष | १८वीं. श. | १९.५x१६ | ३९ वां | |
| ५०९ | १२३२० (२६) | गौतम पृच्छा | | १८वीं. श. | २१.५x१४.५ | ३२-३३ | |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५१० | १०९५४ (६) | गौतमरासो | विनयप्रभ उपाध्याय | १८७४ | २४x१६.५ | ८१-८७ | र.का. १४१२ लि.क. रणजीत लि.स्था. पाली |
| ५११ | १२३२० (३९) | गौतम-सज्झाय | समयसुन्दर | १८वीं. श. | २१.५x१४.५ | ४७ वां | |
| ५१२ | १२२१८ (११४) | गौतम स्वामी नो रास | विनयप्रभ उपाध्याय | १८वीं. श. | २६.५x१० | १२६-१२९ | |
| ५१३ | ११५८५ (८)४३ | गौतम स्वामी-स्तवन | | १९वीं. श. | १९.५x११.५ | १७७-१७८ | |
| ५१४ | १२३७० (४२) ७ | गौतम स्वामी-स्तवन | समयसुन्दर | १९वीं. श. | १६x११.५ | १२४-१२५ | |
| ५१५ | १२३७० (२८) | गौतम स्वामी-स्तवन | ऋषि रायचन्द | १९वीं. श. | १६x११.५ | २५२-२५५ | |
| ५१६ | १२५९१ (७) | ग्रन्थ चौअक्षरी आदि जोग ग्रन्थ | जन तुरसी | २०वीं श. | १५.५x१० | ४५-५१ | |
| ५१७ | ११६४८ (१०) | ग्रन्थबत्तीसी | कबीरदास | १८५३ | २७x१६.५ | ३५२ वां | लि.क. गोपालदास लि.स्था. कोलिया |
| ५१८ | ११६२६ (१०) १० | ग्रन्थ बावनी | सुन्दरदास | १९वीं. श. | ३२x१५ | १२-१५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५१९ | ११०८२ | ग्रहचिंतामणि | | १८४३ | १८x१०.५ | १-४ | गुटका महाजनी लिपी में है। रागों के नाम, बेला-विचार व अन्य स्फुट दोहे आदि। लि.क. मेघराज बक्ताई लि.स्था. पाली |
| ५२० | १८८६६ (३) | घट परचो | हरिरामदास | १९१० | ७.५x६.५ | १५-७७ | गुटका सजिल्द। लि.क. रामसजन शिष्य सेवगराम |
| ५२१ | १०९५४ (१५) | चंदकंवरीरी वात | हंसकवि | १८७४ | २४.x१६.५ | ११३-१२२ | प्रतापसिंह पुत्र सूरतसिंह (जोधपुर) की आज्ञां से रचित। र. का. १७४० |
| ५२२ | ११५८५ (७) | चंदकुमाररी वार्ता | | १९वीं. श. | १९.५x११.५ | १२०-१२७ | |
| ❀५२३ | ११५८५ (८) ५५ | चंदकुंवररी वात | हंसकवि | १८५७ | १९.५x११.५ | २००-२११ | प्रतापसिंह की आज्ञा से रचित। अन्त में 'पोथी रो दूहौ' है। र. का. १७४० लि. क. लालविजय लि स्था. बीकानेर |
| ५२४ | १०७३५ | चंदचरित-चौपई | मोहनविजय | १८५६ | २३.५x१५ | १-१२७ | लि. क. पं. मान लि.स्था. महेवा देशे आसाढा ग्राम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता आदि ज्ञातव्य | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५२५ | ११५८१ | चंदचरित-चौपई | मोहनविजय गणि | १८३९ | २४.५x११ | १-८१ | अन्त में गुरुवावली है। गुण वसु संजम वर्षे। र. का. १७८३ र. स्था राजनगर लि. क. दीपसागर लि. स्था कंटालिया ग्राम |
| ५२६ | १२०८६ | चंदचरित-चौपई | मोहनविजय गणि | १८८१ | २५.५x१२.५ | १-८० | सर्व ढालें १०८ लि. क. कीरत लि. स्था. नागोर |
| ५२७ | १२१४२ | चंदचरित-चौपई | मोहनविजय गणि | १९वीं. श. | २२.५x११ | १-७५ | |
| ५२८ | १२३२६ | चंदचरित-चौपई | मोहनविजय गणि | १९वीं. श. | २७x१२.५ | १-८४ | पुष्पिका अपूर्ण। र. का. १७८३ [गुण वसु संयम वर्षे] र. स्था. राजनगर |
| ५२९ | १२२१८ (१३९) | चंदनमलयागिरि-चौपई | सुमतिहंस | १७६४ | २६.५x१० | १४७-१५५ | र. का. १७११ र. स्था. बुरहानपुर लि. क. अमीचन्द लि. स्था. वड़लू |
| ५३० | १२२०५ | चंद्रगुप्त राजा सोलह स्वप्नारी-सज्झाय | | १८वीं. श. | १७x११ | १४६-१४८ | पत्र खण्डित, लिपि भ्रष्ट, गुटका कीटविद्ध। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३१ | ११५८५ (८) ७ | चंद्रप्रभु-स्तवन | | १९वीं. श. | १९.५x११.५ | १३९ वां | |
| ५३२ | १२२१८ (१४१) | चंद्रप्रभु-स्तवन | ऋषभ | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | १५७वां | |
| ५३३ | १२३६७ (६) | चंद्रलेहा-चौपई | मतिकुशल शिष्य रत्नवल्लभ | १९वीं. श. | २५.५x१६.५ | ७६-१०६ | र.का. १७२८ (सिद्धि कर मुनि शशि वर्षे) खरतर गच्छीय |
| ५३४ | ११०५४ | चंद्रलेहा चौपई | मतिकुशल शिष्य रत्नवल्लभ | १९१७ | २६.५x१२ | १-१८ | लि. क. उत्तमचन्द लि. स्था. हेमाबास अपूर्ण |
| ५३५ | १०९०३ (५) | चन्द्रायणा | वाजीद | १९वीं. श. | १३x८ | २९-३० | |
| ५३६ | १२५७७ | चउदे-कलप की कथा | पेमदयाल | १९वीं. श. | २१x१५.५ | ११६-१२५ | लि. क. साधुराम नागर लि. स्था. उज्जैन |
| ५३७ | १२०६८ (१०) | चउदे गुण-ठाणा-स्तवन | धर्मवर्द्धन शिष्य विजयहर्ष वाचक | गु० १८८८ | २३.५x१५.५ | ५१-५३ | लि. क. जति वीरचैताल लि. स्था. कलकत्ता |
| ५३८ | १२२१८ (३२) | चउसरण-पइन्ना | वीरभद्र | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ४४-४६ | कृति प्राकृत में हैं। अन्त में 'वीर स्तुति' है। पृष्ठ भाग पर 'पात्र-वन्दना' संस्कृत में हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३६ | १२२१८ (६६) | चतुरनर-सज्झाय | हर्षकुशल | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ११८ वा | |
| ५४० | १२२०२ | चतुर्मासिक-व्याख्यान | | १६०१ | २४.५x१२ | १-२१ | लि.क. पं० सुखसागर लि. स्था. पोकरण |
| ५४१ | १०७५६ | चम्पक सेठ-चरित्र | चौथमल | १६६२ | २६x११.५ | १-१२ | र. का. १८६१ र.स्था. सादड़ी-मारवाड़ लि.क. जेठमल लि.स्था. नागोर |
| ५४२ | १०६७४ | चम्पक सेठनी चोपई | समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द | १६४० | २०x११ | १-११ | र. का. १६६५ र. स्था. जालोर |
| ५४३ | ११६४८ (१२) ३ | चरपटजी की सबदो | चरपटनाथ | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ३८६-३६० | लि. क. साध गोपालदास लि. स्था. कोलिया |
| ५४४ | १२५५६ (५) | चार-जुगां को ब्योरो | | गु० १८५६ | २२.४x१६ | ११०-११२ | ग्रंत में स्फुट पद हैं। |
| ५४५ | १२५८१ (१४) | चार-जुगां को व्योरो | | १७ वीं.श. | १६x१०.५ | ६०-६३ | |
| ५४६ | ११५८४ (३८) | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | सिद्धसूरि | १८वीं. श. | १६.५x१६ | २३४वां | अपूर्ण। पत्र खण्डित। |
| ५४७ | १२५६८ (७) | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द | १६ वीं. श. | | ७वां | पत्र ८ वें तक स्फुट दोहे हैं। |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५४८ | १२३२० (६) | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | कुशलसिंह शिष्य रामसिंह | गु० १७६२-८४७ | २१.५x१४.५ | १६वा | लुंका-गच्छीय। |
| ५४९ | ११५८५ (८)३३ | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | जिनचंद्र सूरि | २०वीं. श. | १९.५x११.५ | १६८वां | |
| ५५० | ११५८५ (८)२ | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | जिनचंद्र सूरि | १९वीं. श. | १९.५x११.५ | १३५-१३६ | |
| ५५१ | १२२१८ (१२६) | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | १३७वां | |
| ५५२ | १२५७५ (३०) | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | राजसमुद्र (जिनराज सूरि) | १७वीं. श. | १३.५x१४ | ९१-९२ | |
| ५५३ | १२३७० (४२)११ | चिंतामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन | जिनलाभ सूरि | १९वीं. श. | १६x११.५ | १२८वां | |
| ५५४ | ११८२१ | चिह्न-चिंतामणि-भाषा (सामुद्रिक शास्त्र) | जोजार (उपनाम) नागेतात्मज | १९वीं. श. | १९x११ | १-३२ | |
| ५५५ | ११६२५ | चिकित्सासार | धीरजराम | २०वीं. श. | २३.५x१६ | १-७१ | र.का. १८१७ (श्रुति चंद्र गज चंद्र वरष) |
| ५५६ | १२३११ (५) | चितानन्दजी महाराज के कुंडलिया, कवित्त आदि | चेतन | गु० १९४० | १७५.x८.५ | १२९-३०२ | अंगबद्ध। लि.क. साधु गंगाराम लि.स्था. कोटा-रामद्वारा |
| ५५७ | १२५७० (७) | चितावणी को अंग | सुन्दरदास | १९वीं. श. | ९.५x६.५ | २२-२५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५५८ | ११०६२ (३) | चितावणी को अंग | रामचरण | गु० १८३६ | १८x१०.५ | १४६-१७० | 'संवत् छत्तीसो' लि.क. सेवादास लि.स्था. बलुंदा |
| ५५६ | १२५८८ (२) | चितावणी को अंग | रामचरण | १६वीं. श. | १२.५x८ | १६-३७ | दूल्हैराम के भी दो पद हैं। |
| ५६० | १०६३८ (५) | चितावणी को अंग | रामचरण | गु० १८८४ | १६.५x८.५ | ४८१-५०२ | |
| ५६१ | १२५८४ (२) | चितावणी को अंग | जीवणदास | गु० १७२० | १६.५x१४.५ | १-७ | |
| ५६२ | १२४२१ (४) | चितावणी को अंग | हरखाराम | १६वीं. श. | १७x१२ | १०२-११४ | |
| ५६३ | १२३११ (३) | चितावणी को अंग | रामवल्लभ | गु० १६४० | १७,५x८.५ | १०२-११६ | लि.क. साधु गंगाराम लि.स्था. कोटा-रामद्वारा |
| ५६४ | १२५६१ (२०) | चितावणी को अंग | रामदास | २०वीं. श. | १५.५x१० | १०६-११६ | |
| ५६५ | १०६२४ (१७) | चितावणी को अंग | कबीरदास | १८४४ | २३x१२.५ | ५८७-५८६ | |
| ५६६ | १०६०० (१०) | चितावणी को कवित्त | सेवगराम | २०वीं. श. | १२x८.५ | ७८-७६ | |
| ५६७ | १२२१८ (६२) | चित्तभ्रम-सज्भाय | कवियण | १७६२ | २६.५x१० | ११४वां | पत्र ११३वें पर 'नवकार-अनुपूर्ति' है। लि.क. गुणरूपविजय। |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५६८ | ११०१३ (४६) | चित्तोड़ की गज़ल | कवि खेतल | १६वीं. श. | २३x१५ | ३२५-३२७ | अंत में कलश-पद व शिक्षा रूप में ११ दोहे हैं। र.का. १७४८ (संवत्(स)ततरेसै अडतालाक) |
| ५६९ | १२३२० (१५) | चित्रसंभूत-सज्झाय | मनहर राय ? | गु० १७९२-१८४७ | २१.५x१४.५ | २५वां | |
| ५७० | १०९८१ | चित्रसेण-पद्मावती-चतुष्पदी | रामविजय उपाध्याय शिष्य दयासिंह | २०वीं. श. | २५.५x१२ | १-१७ | खरतर-गच्छीय। र.का. १८५४ र.स्था. बीकानेर |
| ५७१ | १०८४२ (५) | चुगलमुख चपेटिका | बाँकीदास कविराज | गु० १८९५ | २४.५x१६.५ | ७२-७३ | लि.क. खिड़ियौ हरसुख, वरणसूर-फत्तौ लि.स्था. जोधपुर, ठाकुरां भेरूदानजीरी हवेली |
| ५७२ | १२५६५ (७) | चेतन और कर्मों के झगड़े की अरजी | | २०वीं. श. | १६x१२ | ५६x५८ | र.का. १९२८ |
| ५७३ | १०९०७ (६) | चेलणारो चोढालियो | ऋषि रायचन्द | १९वीं. श. | २५.५x१२ | ११-१३ | र.का. १८३७ र.स्था. रीयाँ गाँव |
| ५७४ | १२२१८ (६१) | चेलणा-सज्झाय | समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ८३वां | |
| ५७५ | १२५५१ (१५) | चैत्यपरिपाटी-स्तोत्र | | १७वीं. श. | १३x११ | १०९-१११ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५७६ | १२३७० (३३)१ | चैत्यवंदन | वृद्धिकुशल नो शिष्य | १९वीं. श. | १६x११.५ | १८-२० | |
| ५७७ | १२२१८ (८७) | चैत्यवंदन | सिद्धिविजय | १७६७ | २६.५x१० | १०६वां | |
| ५७८ | १२५७५ (२०) | चैत्यवंदन-चौवीसी | | १७वीं. श. | १३.५x१४ | ६४-६७ | अन्त में १६६३ की जन्म-पत्रिका लिखी । |
| ५७९ | १२५६५ (१२) | चैत्यवंदन-विधि | | २०वीं. श. | १६x१२ | ७६-७८ | |
| ५८० | १२१९९ (५) | चैत्री पूनमरी कथा | | १९७५ | २७x१४ | ३२-३४ | तपागच्छीय । लि.क. पं० केशरीसागर लि स्था. फलौदी |
| ५८१ | ११५८४ (१७) | चोथमाताजीरो छंद | कवि कान्ह | १७१५ | १९.५x१६ | ५१-५६ | पत्र सं. ५७ पर तान्त्रिक यन्त्र है । लि.क. थिरपाल लि.स्था. लांबिया |
| ५८२ | ११०१३ (५) | चोथमातारी वार्त्ता | केसरीसिंह सामलदासोत | १९वीं. श. | २३x१५ | ८१-८२ | पद्यात्मक |
| ५८३ | १२५६८ (६) | चोथमातारे व्रतरी कथा | | १९वीं. श. | १८.५x१२.५ | १-६ | कामदारी लिपि में । अन्त में आनन्दघन कृत 'पार्श्वनाथ' स्तुति आदि हैं । |
| ५८४ | १०९४४ (६)२२ | चौक, लावणी के पद | सूरदास | २०वीं. श. | ८x५ | ३४६-३७० | |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५८५ | १२२०८ (१) | चौदह गुण ठाणा-वर्णन | | १७७४ | २५x१८.५ | १-६६ | लेखनशैली-द्विपाठ लि.क. मुनि आसकरण |
| ५८६ | १२५५७ (१) | चौबुधीरी वारता | | १८७८ | २०x१५.५ | १-१० | अन्त में सुभाषित पद तथा 'दिशाशूल-ज्ञान' है। लि.क. पं० बखतचन्द लि स्था. अजमेर |
| ५८७ | १०९३३ (५) | चौरासी-बोल | जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी | गु० १९४० | १३.५x८.५ | ६९५-७०० | लि.क. विलासीराम लि.स्था. शाहपुरा |
| ५८८ | १०९२४ (३१) | चौरासी-बोल | जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी | १९३० | २३x१२.५ | ६३९वां | |
| ५८९ | १२५९१ (१५) | चौरासी-बोल | जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी | २०वीं. श. | १५.५x१० | ८४-८८ | |
| ५९० | १०८४७ (६) | चौरासी-बोल | जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी | गु० १९९९ | १७x८ | ७३२-७३५ | लि.स्था. जोधपुर |
| ५९१ | १०८४९ (२४) | चौरासी-बोल | जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी | गु० १९३१-१९३४ | १७x११ | १८२-१८४ | लि.क. छूछमराम |
| ५९२ | १०९०३ (३) | चौरासी-बोल | जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी | १९वीं. श. | १३x८ | २१-२६ | |
| ५९३ | १२३११ (७) | चौरासी-बोल | जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी | गु० १९४० | १७.५x८.५ | ४६४-४७१ | लि.क. साधु गंगाराम लि.स्था. कोटा-रामद्वारा |
| ५९५ | १२४११ (२) | चौरासी-वैष्णवों की वार्त्ता (आचार्यजीरा सेवकांरी) | | १९वीं. श. | २१x१४ | १-८४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५९५ | १२५४९ (१) | चौरासी-वैष्णवों की वार्त्ता | | १७३४ | १७x१३ | २-६१ | प्रथम पत्र अप्राप्त। पत्र २०वां जला हुआ। पत्र ६१-७५ में कृति सं० २-९ में संस्कृत के 'अष्टक' हैं। लि.क. सुखदेव लि.स्था. रामपुरा (रावश्री मोहकमसिंहजी विजय राज्ये) |
| ५९६ | १०८३९ (८) | चौवीस-एकादशी-कथा | | १९०६ | ३२x१७.५ | ४४-८० | लि.स्था. जोधपुर |
| ५९७ | ११०८६ (९) | चौवीस-एकादशी-कथा | | १८१७ | २१.५x१५ | १६०-१७६ | अन्त में एक सवैया भी है। लि.क. गुलाब गिरी |
| ५९८ | १२५६९ (५) | चौवीस-एकादशी कथा-माहात्म्य | | गु० १८२२ | १६.५x११ | १-७ | अपूर्ण। |
| ५९९ | १२५५६ (१) | चौवीस-एकादशी व्रत-कथा | | १८५६ | २२.५x१६ | ११-०१ | प्रथम पत्र पर तुलछीदास कृत पद है। लि.क. भगत लछमणदास |
| ६०० | १२५६८ (२२) | चौवीस-जिन-वरणन | खेम | १९वीं. श. | १८.५x१२.५ | ३१-३३ | पत्र ३३ से ३४ पर स्फुट दोहा, सवैया है। |
| ६०१ | १२२१८ (७६) | चौवीस-जिन-स्तवन | क्षमातीर्थ | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ६६वां | |

| क्रमांक | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६०२ | १२५७५ (१५) | चौवीस-जिन-स्तवन | आनन्दविजय | १७वीं. श. | १३.५x१४ | ५५-५६ | र.का. १५६२ |
| ६०३ | १२२०५ (१६)२ | चौवीस-जिन-स्तवन | कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न वाचक | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | ३८-४१ | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ६०४ | १२२१८ (१०३) | चौवीस-जिन-स्तवन | जयसागर | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ११९वां | |
| ६०५ | १२५६८ (१७) | चौवीस-जिन-स्तवन | | १९वीं. श. | १८.५x१२.५ | २७वां | |
| ६०६ | ११५८५ (८)१० | चौवीस-जिन-स्तवन | | २०वीं. श. | १६.५x११.५ | १४१वां | |
| ६०७ | १२२१८ (१२०) | चौवीस-जिन-स्तवन | | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | १३३-१३४ | |
| ६०८ | ११५८५ (८)४६ | चौवीस-तीर्थङ्कर-लच्छन | आनन्दविजय | २०वीं. श. | १६.५x११.५ | १८३-१८६ | |
| ६०९ | १०७४३ | चौवीस-देव-वंदन-विधि | पद्मविजय | १९०७ | २५.५x१२.५ | १-२० | लि.क. उत्तमचन्द लि.स्था अवन्तिका नगरे-भटेवरारा उपासरा मध्ये |
| ६१० | १२२१८ (१३१) | चौवीसनाम | | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | १३८वां | तीर्थङ्करों व गुरुओं के नाम। |
| ६११ | १२३७० (१०) | चौवीसी | जिनराजसूरि | १९वीं. श. | १६x११.५ | ९९-११४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (स. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६१२ | १२३७० (८) | चौवीसी | देवचंद | १९वीं. श. | १६×११.५ | ७२-९८ | |
| ६१३ | १२०६८ (४) | चौवीसी | देवचन्द | गु० १८८८ | २३.५×१५.५ | २१-३२ | लि.क. जति वीरवैताल<br>लि.स्था. कलकत्ता |
| ६१४ | १०७५२ | चौवीसो | आनन्दघन | १८४८ | २६×११.५ | ३५ | पत्र सं. ५ अ तक टब्बा दिया है।<br>अन्त के ३ पद प्रभाती राग के हैं।<br>लि.क. महिमासागर<br>लि.स्था. सोजत |
| ६१५ | १२०६८ (५) | चौवीसी | हरखचन्द | गु० १८८८ | २३.५×१५.५ | ३२-३७ | लि.क. जति वीरवैताल<br>लि.स्था. कलकत्ता |
| ६१६ | १२०६८ (३) | चौवीसी | जिनराजसूरि | गु० १८८८ | २३.५×१५.५ | १६-२१ | लि.क. वीर वैताल<br>लि.स्था. कलकत्ता |
| ६१७ | १२०६८ (२) | चौवीसी | जसविजय | गु० १८८८ | २३.५×१५.५ | १०-१६ | लि.क. जति वीर वैताल<br>लि.स्था. कलकत्ता |
| ६१८ | १२२१८ (५४) | चौवीसो परिवार-सज्भाय | | गु० १७५५-१७६७ | २६.५×१० | ६७वां | |
| ६१९ | १२२१८ (१५१) | (१) चौसठ योगिनीरा सात वरदान<br>(२) पार्श्वनाथ-गीत | (२) जसवर्द्धन | गु० १७५५-१७६७ | २६.५×१० | १६४वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६२० | १२५६१ (३७) | छंद-भास | मलूकदास | २०वीं. श. | १५.५x१० | २३६-२५३ | |
| ६२१ | १२५८६ (१) | छंद-भुजंगी | रामचरण | १६६६ | १७x१३ | १-३ | लि.क. मंग(ल)दास<br>लि.स्था. कुचेरा-रामद्वारा |
| ६२२ | १०८४२ (२१) | छंद-रत्नावली | हरिरामदास निरंजनी | १६०१ | २४.५x१६.५ | १२३-१४२ | र.का. १७६५<br>(शर नव मुनि शशि)<br>र.स्था. डीडवाणां |
| ६२३ | १०६७८ | छंदसार-षोडशकर्म-टीका | मू. सुरति मिश्र<br>टी. इन्द्रभानु पुत्र भवानीराम | २०वीं. श. | २८.५x१४ | १-८ | |
| ॐ६२४ | १२३५६ | छन्दसार-षोड़स कर्म-टीका | मू. सूरति मिश्र<br>टी. इन्द्रभानु पुत्र भवानीराम पुष्करणा | १६१५ | ३०.५x१५.५ | १-६ | लि.क. उदैराम<br>लि.स्था. फलोदी |
| ६२५ | १२५५१ (२४) | छंद-सूरजरो | | १७वीं. श. | १३x११ | १५०-१५२ | |
| ६२६ | १२३८० (६) | छठी के पद (राम-जन्म के) | | गु० १७२४ | २०x१४ | १२६-१२७ | रागबद्ध। |
| ६२७ | ११४३५ | छायायन्त्र ग्रादि बनाने की विधि | | १६वीं. श. | ४६x१६.८ | ३-३६ | प्रथम दो पत्र ग्रप्राप्त। कृति बहीनुमा पत्रों में लिखी गई है एवं किसी फारसी ग्रन्थ का ग्रनुवाद है। कृति का ग्रन्तिम भाग ग्रपूर्ण है। पत्र कीट विद्ध एवं खण्डित हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६२८ | ११०१३ (४२) | छिनाल-पच्चीसी | | १६वीं. श. | ३२x१५ | ३१२-३१३ | २५ पद्य । |
| ६२९ | १२३७० (१७)६ | छिन्नु (९६) जिनवर-स्तवन | जिनचंद्र सूरि | १९वीं. श. | १६x११.५ | १५६-१६० | र.का. १७४३ ग्रन्त में साधुकीर्ति का एक स्फुट पद है । |
| ६३० | ११०७५ | छीहल-बावनी | छीहल कवि (नालिगवंशी-अग्रवाल) | १७वीं. श. | १८x१०.५ | १-१० | र.का. १५८४ पत्र बड़कने हैं । |
| ६३१ | १२४४२ | जंबूचरित्र | ऋषि चोथमल | १९०१ | | १-३० | र.का. १८६२ लि.क. छगना लि.स्था. किशनगढ़ |
| ६३२ | १२५७० (६) | जंबूसर की कथा | | १९वीं. श. | ९.५x६.५ | ११-२१ | |
| ६३३ | १०८६१ (५) | जंबूसर की कथा | | १९वीं. श. | १६x१२ | ८१-८७ | पत्र ८७-८८ पर ग्वाल बाल के पद हैं । |
| ६३४ | १०८४९ (२८) | जंबूसर को प्रसंग | | गु० १९३१-१९३४ | १७x११ | २१४-२१८ | लि.क. छूछमराम |
| ६३५ | १२४२१ (१२) | जंबूसर को प्रसंग | | १९वीं. श. | १७x१२ | १८९-१९३ | |
| ६३६ | १२२१८ (१००) | जंबू-स्वामी-सज्झाय | हर्षकुशल | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ११८वां | |
| ६३७ | १२३२० | जंबू-स्वामी-सज्झाय | हर्षकुशल | गु० १७९२-१८४७ | २१.५x१४.५ | २७वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६३८ | १२३७८ (१३)१५ | जखड़ी | वाजीद | १८वीं. श. | २२x१५.५ | १११-११२ | |
| ६३९ | ११६४८ (२०) | जगजीवणदासजी की बाणी | जगजीवणदास | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ५५३-५६० | राग ८, पद ५९ लि.क. साध गोपालदास लि.स्था. कोलिया |
| ६४० | १२५६८ (१२) | जगतसिंहजी महाराजरो सिलोको | | १९वीं. श. | १८.५x१२.५ | १७वां | र.का. १८४७ |
| ६४१ | १२५६८ (१९) | जगतसिंहजी राठौड़रो सिलोको | | १९वीं. श. | १८.५x१२.५ | २८-२९ | र.का. १८४७ |
| ६४२ | ११५८४ (३) | जगदम्वा-छंद | सारंग | १७०० | १९.५x१६ | २३-२५ | लि.क. चेला नरसिंघ लि.स्था. चितामां ग्राम |
| ६४३ | ११५८४ (१) | जगदीश्वरी-छंद | गोविन्द विप्र | १७०० | १९.५x१६ | १५-२३ | लि.क. चेला नरसिंघ लि.स्था. चितामां ग्राम पत्र सं. १२-१४ अप्राप्त |
| ६४४ | ११०१३ (९) | जगदेव-परमाररी वात | | १८१८ | २३x१५ | ८६-११४ | लि.क. सुजांण लि.स्था. चांणोद |
| ६४५ | ११५८३ | जड़भरथ-चरित | जनगोपाल | गु० १६९३ | १८x१५ | ६२-७८ | लि.क. उद्धवदास |
| ६४६ | ११६४८ (२०) | जड़भरथ-चरित | जनगोपाल | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ५७१-५७३ | लि.क. साध गोपालदास लि.स्था. कोलिया |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६४७ | १२२२१ (२) | जड़भरथ-चरित | जनगोपाल | १९वीं. श. | १५x१० | ५४-६१ | पत्र सं. ५८ से ६० तथा अनेक पत्र अप्राप्त। गुटका त्रुटित, जीर्ण तथा अस्तव्यस्त हैं। रामचरणजी की वाणी, जन तुरसी की वाणी, सन्त दासजी की वाणी, अनाथ-दास का सर्वंगसार, अनन्त दास कृत-नामदेव, सेऊसमन आदि की परचियां तथा अन्य स्फुट पद संग्रह और संत साहित्य का संग्रह है। |
| ६४८ | १०९०० (४) | जनमलीला | दयालदास (द्यालबाल) शिष्य रामदास | २०वीं. श. | १२x८.५ | २५-४५ | |
| ६४९ | ११०८७ (१) | जन्म-अष्टमीरी कथा | | गु० १७९३ | २१.५x१५.५ | १ला | पत्र सं. २ से ६२ तक अप्राप्त। गुटका बिखरा हुआ है। लि.क. मुंहता सोभागचंद। लि.स्था. जोधपुर। |
| ६५० | १२५५३ (६) | जन्म-कर्म-लीला | माधवदास | १८९७ | १४.५x१३.५ | ११८-१२२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६५१ | १२२०५ (२१) | जयतिहुअणस्तोत्र | अभयदेव सूरि | गु० १७४८-१७५८ | १७×११ | ५७-६१ | अपभ्रंश में। अन्तिम पत्र के पृष्ठ भाग पर आधाशीषी का मन्त्र है। लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ६५२ | १२०६८ (६) | जयतिहुअणस्तोत्र | अभयदेव सूरि | गु० १८८८ | २३.५×१५.५ | ४६-५१ | लि.स्था. कलकत्ता |
| ६५३ | ११९९४ | जयवन्तीरो सत-ढ़ालियो | ऋषि रायचन्द शिष्य जयमल | १९वीं. श. | २५×११.५ | १-४ | र.का. १८४२ र.स्था. नागोर द्वि पाठ। सात ढाल। |
| ६५४ | १०९०७ (२) | जयवन्तीरो सत-ढालियो | ऋषि रायचन्द शिष्य जयमल | १९वीं. श. | २५.५×१२ | ३-५ | र.का. १८४२ र.स्था. नागोर |
| ६५५ | ११०६२ (७) | जलंधरजी की सबदी | | गु० १८३६ | १८×१०.५ | १८६-१९१ | लि.क. सेवादास लि स्था. बर्लुदा |
| ६५६ | ११६४८ (१२)५ | जलंधरी पावजी की सबदी | | गु० १८५३ | २७×१६.५ | ३९१वां | लि.क. साध गोपालदास लि.स्था. कोलिया |
| ६५७ | ११०१३ (१०) | जलाल-गहांणीरा दूहा | | गु० १८१८ | २३×१५ | ११४-११७ | लि.क. सुजांण |
| ६५८ | ११६३५ (१) | जलाल-गहाणीरी वात सचित्र | | १९वीं. श. | २६.५×१६.५ | १-५३ | चित्र सं० ६५। अपूर्ण। पत्र सं. २४,४४,५४-५५वें अप्राप्त। गुटका पुस्तकाकार जिल्दबंध। |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६५९ | ११०१३ (१७) | जवानीरा दूहा | | गु० १८१८ | २३x१५ | १३२वां | दोहा १५<br>लि.क. सुजांण |
| *६६० | ११२८३ (१) | जसवन्तसिंहजी के दोहे | कालू | १७८४ | १६x१४.५ | ५३-५४ | कामदारी लिपि<br>लि.क. करमसी |
| *६६१ | ११९८३ | जादवरास | चोथमल | १९वीं. श. | २४.५x१०.५ | १-५१ | प्रति रचनाकालीन प्रतीत होती हैं।<br>र.का. १८७८<br>लि.क. सरूपचन्द<br>(ग्रन्थकार का पौत्र)<br>लि.स्था. जोधपुर |
| ६६२ | ११२५० | जानकी-मंगल | तुलसीदास | २०वीं. श. | ३०.५x१५.५ | १-७ | |
| ६६३ | १२३८० (२७ ५ | जांनराई-लीला (कृष्ण लीला) | माधोदास | गु० १७२४ | २०x१४ | ३२७-३३७ | पत्र ३३८, ३३९वें अप्राप्त। |
| ६६४ | १२३७० (४२ १० | जिनकुशल सूरि-गीत | कनककीर्ति | १९वीं. श. | १६x११.५ | १२७वां | |
| ६६५ | १२२१८ (१२७) | जिनकुशल सूरि-गीत | जिनहर्ष | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | १३७वां | |
| ६६६ | १२२१८ (१९) | जिनकुशल सूरि-स्तुति | हर्षकुशल | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ३५वां | |

| क्रमांङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी. में) | पत्रसंख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६६७ | १२५५१ (५) | जिनचन्द्र सूरि गीत | श्रीसुन्दर | १७वीं. श. | १३x११ | ६२-६४ | पत्र ६५वें पर प्राकृत में 'चतुर्विंशति जिन स्तुति' है। |
| ६६८ | १२५५१ (३२) | जिनचन्द्र सूरि-गीत | समयसुन्दर | १६८० | १३x११ | १७३वां | लि.क. समयकीर्त्ति |
| ६६९ | १२२१८ (८५) | जिनदत्त सूरि-गीत | | १७५१ | २६.५x१० | १०४वां | लि.क. अमीचन्द्र |
| ६७० | १२५५१ (७) | जिनदत्त सूरि-गीत | वीरविजय शिष्य तेजसार | १७वीं. श. | १३x११ | ९५-९६ | |
| ६७१ | १२३७० (४२)१६ | जिनपद-संग्रह | | १९वीं. श. | १६x११.५ | १३८-१४१ | |
| ६७२ | ११५८५ (८)२४ | जिन-प्रतिमा-स्तवन | जिनलाभसूरि | २०वीं. श. | १९.५x११.५ | १५६वां | |
| ६७३ | १२३७० (१९) | जिनरक्षित-जिनपाल चौपई | | १९वीं. श. | १६x११.५ | १९५-१९९ | |
| ६७४ | १०७३९ | जिन-विचार(चोवीस) | | १९०८ | २५.५x१२ | १-२४ | लि.क. सवाई सागर<br>लि.स्था. श्रीसुभटपुर |
| ६७५ | ११५८५ (८)५२ | जिन-स्तवन | | २०वीं. श. | १९.५x११.५ | १९३वां | |
| ६७६ | १२५७५ (२७) | जिन-स्तवन | प्रेमसागर | १७वीं. श. | १३.५x१४ | ७८वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६७७ | १२२१८ (७३) | जीवउत्पत्ति-सज्झाय | श्रीसार | गु० १७५५-१७६७ | २६,५x१० | ६१-६४ | |
| ६७८ | १२२०५ (४२ ४ | जीव-काया-गीत | कीर्तिवर्द्धन | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १४१-१४२ | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ६७९ | १२२०५ (३६) | जीव-काया-वचन विचार-गीत | ज्ञानसमुद्र | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १२१वां | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ६८० | १२२१८ (६३) | जीव-भेद-सज्झाय | | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ११५वां | |
| ६८१ | १०६०६ (१) | जीवरास | | १६२८ | २३.५x१०.५ | १-१५ | लि.क. मुनि हीरसागर |
| ६८२ | १०६०७ (४) | जुगमंधर स्तवन | ऋषि रायचन्द शिष्य जैमल | १६वीं. श. | २५.५x१२ | ७-८ | र.का. १८२१ र.स्था. डीडवाना |
| ६८३ | १२५६२ (८) | जुग-व्रह्माण्ड प्रमाण सवैयो | | १६वीं. श | १४x१०.५ | १७६वां | |
| ६८४ | १२३०६ | जैमनीय अश्वमेध यज्ञरी कथा सचित्र | | १६३४ | ३४.५x२०.५ | १-६२ | चित्र सं० ५ रजिस्टरनुमा जिल्दबद्ध। जिल्द कीटविद्ध। |
| ६८५ | ११६८६ (१) | जैमनीय अश्वमेधरी कथा | | १६०६ | २३.५x१६ | १-६८ | यह प्रति रजपूत फत्ताजी की सं० १८६६ वाली प्रति से लिपिकृत है जो जोधपुर में लिखी गई थी। लि.क. वसन्तीराम पुर्बिया ब्राह्मण |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६८६ | १०८३९ (६) | जैमनीय अश्वमेधरी कथा | | १९०९ | ३२×१७.५ | ८१-११० | कामदारी लिपि में। लि.स्था. जोधपुर |
| ६८७ | १२३६० | जैमनीय अश्वमेधरी भाषा | केवलदास | १८७५ | २६×१५ | २-५६ | प्रथव पत्र अप्राप्त। र.का. १७११ लि.क. ज्ञानदास लि.स्था. बिसाहू |
| ६८८ | ११५८३ (३) | जोग पद | जन हरिदास | गु० १६६३ | १८×१५ | ४-५ | |
| ६८९ | १२१५६ (२) | जोग पावड़ी | | १९वीं श. | २५.५×११.५ | २-५ | |
| ६९० | १२४३५ | जोग सुधानिधि | लछीराम पुत्र कल्याण | १९वी. श. | २६×१३ | १-१४ | दोहा ८२, चौपाई १८६ |
| ६९१ | १०८४६ (२३) | जोगसिद्धान्त | सुन्दरदास | गु० १९३१-१९३४ | १७×११ | १७८-१८२ | लि.क. छूछमराम |
| ६९२ | १०९७१ | ज्योतिषसार (लघुजातक के अनुसार) | कृपाराम | १८१६ | २४.५×१५ | २८ | पत्र जलग्रस्त। लि.क. जती खेमचन्द लि.स्था. सोजत |
| ६९३ | १०९०२ (१५) | ज्ञानगंज | | १८०९ | १५.५×१२.५ | ८५-८६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६९४ | ११६२६ (३) | ज्ञानभूलरणा-अष्टक | सुन्दरदास | १८९४ | ३२x१५ | ९-१० | लि.क. रामदयाल मारू लि.स्था. नरांणो-बरकता की बगीची |
| ६९५ | १२२२६ (२१)१ | ज्ञानदीप प्रबोध (दत्तात्रेय-गोरख-संवाद) | गोरखनाथ | १९वीं. श. | १४x१२,५ | ६१५-६२१ | लि.क. बीरमदास निरंजनी लि.स्था. कैरू (जोधपुर) |
| ६९६ | १०७८३ | ज्ञानपंचमी देववंदन-विधि | | २०वीं. श. | २४x१३ | १-२५ | |
| ६९७ | १२१९९ (१) | ज्ञानपंचमीरो बखांण (व्याख्यान) | | १९७५ | २७x१४ | २०-२३ | पत्र १-१९ अप्राप्त। लि.क. पं० केशरीसागर लि.स्था. फलोदी |
| ६९८ | १२२०५ (४३) | ज्ञानपंचमी-स्तवन | समयसुन्दर | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १४४-१४६ | लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर |
| ६९९ | १०८४३ (४) | ज्ञान-पच्चीसी | बनारसीदास | गु० १८९५ | २५,५x२० | ४-५ | लि.क. मुनि गंगराज लि.स्था. रतनपुरी, महाराज बलवन्तसिंहजी के समय में |
| ७०० | ११५८३ (२) | ज्ञान-प्रकास-जोगग्रंथ | सूरदास | १९९३ | १८x१५ | ३-४ | |
| ७०१ | १२४२१ (७) | ज्ञान-बत्तीसी | कबीरदास | गु० १८९३ | १७x१२ | १२७-१२९ | लि.क. बालदास लि.स्था. जोधपुर |
| ७०२ | १०९२४ (१८) | ज्ञान-बत्तीसी | कबीरदास | १८४४ | २३x१२ | ५८९-५९१ | अन्त में सृष्टि पुराण का विवरण है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७०३ | १०८९७ (७) | ज्ञात-बत्तीसी | कबीरदास | २०वीं. श. | १२x११ | २४०-२४६ | |
| ७०४ | १२४२८ (८) | ज्ञांन बारहखड़ी | | २०वीं. श. | २१x१५.५ | २७-२९ | |
| ७०५ | १२३७२ (६) | ज्ञानबोध | | १९वीं. श. | २४x१६.५ | ९९-१०० | |
| ७०६ | ११६४६ | ज्ञानमंजरी | मनोहरदास निरंजनी | २०वीं. श. | २०x१२ | १-२९ | र.का. १७०१ |
| ७०७ | १०९२४ (२०) | ज्ञानमाला | | १८४४ | २३x१२.५ | ५९२वां | |
| ७०८ | १२५९१ (२३) | ज्ञानलीला | रामानन्द | २०वीं. श. | १५.५x१० | १२६-१२७ | |
| ७०९ | १२५५७ (१७) | ज्ञानलीला | रामानन्द | गु० १८७८ | २०x१५.५ | ४-६ | कृति सं० २ से १६ संस्कृत में है। लि.क. वखतचन्द लि.स्था. अजमेर |
| ७१० | १०९०३ (४) | ज्ञानलीला | रामानन्द | १९वीं. श. | १३x८ | २६-२८ | |
| ७११ | १०८६५ (२) | ज्ञानलीला | रामानन्द | १९४६ | १२.५x८ | १-५ | लि.क. साधु रामस्वरूप |
| ७१२ | १०८४९ (४) | ज्ञानलीला | रामानन्द | गु० १९३१ | १७x११ | ६-९ | लि.क. छूछमराम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७१३ | १२५७१ (३) | ज्ञानलीला | रामानन्द | १९वीं. श. | १०.५x८ | १४-१८ | |
| ७१४ | १२२१४ (८)२ | ज्ञानसप्तभोमिका | मनोहरदास निरंजनी | १९वीं. श. | २१.५x१३ | ८९वां | |
| ७१५ | ११६२६ (६) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | गु० १८९४ | ३२x१५ | १-२२ | लि.क. रामदयाल मारू लि.स्था. नरांणो-बरकतां की बगीची |
| ७१६ | १२५६१ (३) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १९वीं. श. | २३.५x१७ | १४७-१६३ | |
| ७१७ | १२५५६ (२) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | गु० १८५६ | २२.५x१६ | १०१-१०५ | |
| ७१८ | १२४८० | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १९वीं. श. | २९.५x१४.५ | १-१७ | पत्र जीर्ण-शीर्ण। र.का. १७१० |
| ७१९ | १२३७२ (१) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १९वीं. श. | २४x१६.५ | १-१९ | इस कृति से पूर्व के पत्र १-३ अप्राप्त व पत्र ४-११ तक 'अवधूत गीता' दत्तात्रेय कृत संस्कृत में है। |
| ७२० | १०८४९ (२२) | ज्ञानसमुद्र (द्वितीय उल्लास) | सुन्दरदास | गु० १९३१-१९३४ | १७x११ | १७०-१७८ | लि.क. छूछमराम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७२१ | १०६९९ | ज्ञानसमुद्र (गुरु-शिष्य-सम्वाद) | सुन्दरदास | १९वीं. श. | २५x१२ | १-२६ | पत्र प्राचीन हैं व कोंण खण्डित हैं। र.का. १७१० |
| ७२२ | १२५७० (१६) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १९वीं. श. | ९.५x६.५ | ९६-१२२ | अपूर्ण। |
| ७२३ | १०८९७ (१) | ज्ञान सार | हेमदास | २०वीं. श. | १२x११ | १-१०० | पत्र चिपके हुए एवं खण्डित। |
| ७२४ | १२०६७ (४) | ज्ञान स्वरोदय | चरणदास | १९२६ | २३.५x१७ | १-६ | अपूर्ण। लि.क. वीराचन्दलाल लि.स्था. योधपुर (जोधपुर) |
| ७२५ | १२५६२ (१) | ज्ञान स्वरोदय | चरणदास | १९४७ | २८.५x२० | १७-२५ | पत्र सं. १-१६ अप्राप्त। लि.क. सुखरामदास लि.स्था. गांव जुभूं |
| *७२६ | १०८४७ (२८) | झगड़ो-पनघट को |  | गु० १९९९ | १७x८ | ६५७-६६० | लि.स्था. जोधपुर |
| ७२७ | १०८९७ (५) | झूलणा | हेमदास | २०वीं. श. | १२x११ | २०८-२१६ | झूलणा-३० |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७२८ | १२२२१ (३) | टेकसार जोग-ग्रन्थ | जन तुरसी | १९वीं. श. | १५×१० | ९०-९४ | पत्र अत्यन्त जीर्ण त्रुटित एव अ तव्यस्त । इस गुटके में निम्न कृतियां हैं—— (१) प्रहलाद चरित–जनगोपाल (४) सेऊसमन की परची–अनन्तदास (५) सर्वंगसार-नवलरांम (६) रांमचरणजी की वांणी-रामचरण (७) फुटकर राग-पद संग्रह (८) जनतुरसी की वांणी-जन तुरसी |
| ७२९ | १२५९२ (७ | डोकरीरी कथा | | २०वीं. श. | १४x१०.५ | १७६-१७९ | १७५-१७६ पर फुटकर दोहे हैं । १७९-१८० पर "जन रामा" के दोहे हैं । |
| ७३० | १०९३१ (२) | डोकरीरी कथा | | | १४x१०.५ | ३०७-३१६ | २८ प्रश्नोत्तर दिये हैं । इस से बड़ी कथा संग्रह में उपलब्ध नहीं है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७३१ | १०६०२ (३) | डोकरीरी कथा | | १८०६ | १५.५x१२.५ | १४-१६ | लि.क. साधु भीखनदास |
| ७३२ | १०८४७ (७) | डोकरीरी कथा | | गु० १९९९ | १७x८ | ७३६-७५० | इस कृति में २५ प्रश्नोत्तर हैं। |
| ७३३ | १२२२० (२८)१-३ | डोल के पद | कुम्भनदास<br>परमानन्द<br>रामदास | १९वीं. श. | १९x१६.५ | ९६, ९७;<br>९६;<br>९६-९७; | |
| ७३४ | १२२१८ ४) | ढंढणऋषि-सज्झाय | हर्षमंगल सूरि<br>जिनलब्धि सूरि | गु० १७५५ १७६७ | २६.५x१० | ३२वां<br>३३वां | अन्त में फुटकर शृंगारिक छंद हैं। |
| ७३५ | १२२१८ (२४)(३५) | ढाल "कंइयै मिलस्यैजी मुनिवर एहवा" | विजयदेव सूरि | गु० १७५५-१७६७ | २६ ५x१० | ३७वां,<br>४८वां | |
| ७३६ | १२३७० (२३)७ | ढाल-कपटी मिनखरी | | १९वीं. श. | १६x११.५ | २२४-२२६ | |
| ७३७ | १२२१८ (५६) | ढाल-"चतु विहारीरे आतम माहरा" | भुवनकीर्ति | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ६८वां | अन्त में 'केशकल्प" का नुस्खा है। |
| ७३८ | १२३७० (२४)१-३ | ढाल-धन्नाजीरी<br>,, श्रावकरी<br>,, समकितरी | रत्नचन्द | १९वीं. श. | १६x११.५ | २२७-२२८<br>२२८-२२९<br>२२९-२३१ | (१) र.स्था. अकबराबाद<br>(२) र. का. १८६८<br>र स्था. पाली |
| ७३९ | १०९४२ (९-१०) | ढाल-संग्रह | रूपदास<br>चोथमल | | १३x६ | २५६-२६२<br>२६३-२७० | र.का.१८५२<br>(१०) |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७४० | १०६४४ (६)१८-२० | ढाल-संग्रह— | अज्ञात | २०वीं श० | ८×५ | ३२४-३२५, ३३७-३४२ | |
| | | | सेवाराम | | | ३२८-३३० | |
| | | | रूपदास | | | ३३०-३३६ | |
| ७४१ | १२३७० (२४)४-५ | ढाल संग्रह— 'प्रीथवी एकक एन्डकडंजी' 'दोन्यांरी मीठी वाणीरे' | कुशलहेम, ऋषि दुर्गादास शिष्य पुन्यकलश | १९वीं श० | १६×११.५ | २३१, २३१-२३३ | र.का. (२) १८५० अजमेर |
| ७४२ | ११६७७ | ढोला-मरवणरी वात | | १८६० | १८.५x१४.५ | १६-१६३ | लि.क. बदुकापडी लि.स्था. जयपुर |
| ७४३ | १०६०१ (१) | ढोला-मारवणीरा दूहा | कुशललाभ वाचक | १९वीं श० | १५.५x१२.५ | १०-२८ | अपूर्ण। १२३वें दोहे से ३४४ तक। |
| ७४४ | १२३७६ (४) | ढोला-मारूरी चौंपई | कुशललाभ वाचक | १८६६ | २०.५x१४.५ | ३२-८१ | र.का. 'संवत् सोलै तेरो तरै' १६१३ र.स्था. जेसलमेर लि.क. रामकिशन |
| ७४५ | १०७०२ (२) | ढोला-मारूरी चौपई सचित्र | कुशललाभ वाचक | १८५८ | २५.५x१७ | ३०-९२ | चित्र सं० ५८। अन्त में अकबर से गऊ की फरियाद के सम्बन्ध में दोहा है। आगे के पत्र रिक्त हैं। लि.क. हेमसागर लि.स्था. पाली |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७४६ | १२२८९ | ढोला-मारूरी चौपई सचित्र | कुशललाभ वाचक | १९३१ | १९.५x१५ | १-५३ | चित्र संख्या २३ । र.का. १६०७ ज़ेसलमेर लि.क. प्यारचन्द लि.स्था. ग्राम पावटी |
| ७४७ | ११०१३ (३५) | तम्बाखूरी नीसाणी | कवि कानो | १८२२ | २३x१५ | २४९वां | लि.क. सुजांण लि.स्था. चम्तावती नयरे |
| ७४८ | १०९२४ (२३) | तर्क चितावणी | सुन्दरदास | १९वीं श० | २३x१२.५ | ५९३-५९५ | |
| ७४९ | १२३७३ (२१) | तर्क चितावणी | सुन्दरदास | १९०९ | २२x१५.५ | २१५-२१७ | लि.क. बिहारीदास वैष्णव लि.स्था. पाली |
| ७५० | १२३७५ (३) | तर्क चितावणी | सुन्दरदास | १९वीं श० | ११x१६.५ | ४८०-४९० | |
| ७५१ | १२३७८ (२१) | तर्क चितावणी | सुन्दरदास | १८वीं श० | २२x१५.५ | १३८-१३९ | |
| ७५२ | १२५७० (९) | तर्क चितावणी | सुन्दरदास | १९वीं श० | ९.५x६.५ | ३१-३९ | |
| ७५३ | १०९०२ (७) | तिलोकचन्दजी की परची | अनन्तदास | १८०९ | १५.५x१२.५ | ४०-४४ | लि.क. साधु भीखनदास |
| ७५४ | ११९४८ (३) | तिलोकचन्दजी की परची | अनन्तदास | १८५३ | २७x१६.५ | ४था | अपूर्ण । लि.क. गोपालदास लि स्था कोलिया |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७५५ | १२५५६ (३) | तिलोकचन्दजी की परची | अनन्तदास | गु० १८५६ | २२.५x१६ | १०५-१०७ | लि.क. भगत लछमरणदास |
| ७५६ | १२५८५ (४) | तिलोकचन्दजी की परची | अनन्तदास | १९२७ | १९.५x१५ | १८३-१९० | गुटके में परची साहित्य का दुर्लभ संग्रह है। लि.क. आरतराम; बदनोर |
| ७५७ | ११५८५ (८)११ | तीनों चोबीसों के नाम | | १९०३ | १९.५x११ ५ | १४२-१४४ | लि.क. लिखमीचन्द कोचर लि.स्था. बालाहेड़ा |
| ७५८ | १२२१८ (६६) | तीर्थ-यात्रा सज्झाय | समयसुन्दर | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ८९वां | |
| ७५९ | ११०९३ | तीलोक सुन्दरीनो वखाण | | १९८५ | २५x१२ ५ | १-८ | ११ ढालें हैं। लि.क. केसूलाल लि.स्था. नींबरेवारी |
| ७६० | ११५८४ (३३) | तुरकी भाषा शकुनावली | | १८वीं श० | १९.५x१६ | २३०-२३२ | कुलंग, फकती, टोटरू, लक, अक, तोता, बतख, हुद, बुलबुल दुर्हाज, कबूतर, मात्तरक, बऊस, बाज, खुरस, आदि नामों के पक्षियों की बोलो के आधार पर शकुन विचार दिया गया है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७६१ | ११६४८ (१५) | तुरसीदासजी को कृत | जन तुरसी | १८५३ | २७×१६.५ | ३९८-४३० | साखी ४२००, राग २९ प्रकरण-२०० जन तुरसी की कृतियों का दुर्लभ संग्रह है। लि.क. गोपालदास लि.स्था. कोलिया |
| ७६२ | १२४२२ (१५) | तुरसी-वाणी | जन तुरसी | १९वीं श० | १५×१०.५ | ३५४-३६५ | |
| ७६३ | १०८४९ (२७) | तुरसी-वाणी | जन तुरसी | गु० १९३१ | १७×११ | १९०-२१४ | लि.क. मनोरथदास |
| ७६४ | १२५४४ | त्रिधापद वेदान्त निर्णय | आत्माराम | २०वीं श० | २१.५×११ | १-२१ | |
| ७६५ | १०८४३ (७) | त्रिषष्ठिशलाका पुरुष नाम | बनारसीदास | १८९५ | २५.५×२० | २५-२७ | लि.क. मुनि गंगराज लि.स्था. रतनपुरी |
| ७६६ | ११६४८ (५४) | दत्तात्रेयजी की आरती | दत्तात्रेय | १८५३ | २७×१६.५ | ३४५वां | लि.क. गोपालदास लि.स्था. कोलिया |
| ७६७ | ११५३७ | दत्तात्रेय चो-पदे संग्रह | | २०वीं श० | १६×११.५ | १-४८७ | मराठी भाषा में। महानुभाव संप्रदाय कृति-संग्रह। पत्र सं० १०१ से ११० तक अप्राप्त। |
| ७६८ | १२४२२ (६) | दत्तात्रेयजी की सबदी | दत्तात्रेय | १९वीं श० | १५×१०.५ | २४३-२४५ | अपूर्ण। २४६वां पत्र अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७६९ | १२२२६ (१०) | दत्तात्रेय स्तोत्र | शंकराचार्य | १९वीं श० | १४x१२.५ | ५६वां | लि.क. बीरमदास निरंजनी लि.स्था. कैरू (जोधपुर) |
| ७७० | १२२१८ (१४२ | दंपति गीत | हर्षकीर्ति सूरि शिष्य चन्द्रकीर्ति सूरि | १८वीं श० | २६.५x१० | १५७-१५८ | |
| ७७१ | १०९२४ (२०) | दया बोध | गोरखनाथ | १९वीं श० | २३x१२.५ | ५९१-५९२ | |
| ७७२ | १२२१४ (२) | दया बोध | गोरखनाथ | १९वीं श० | २१.५x१३ | ३८-३९ | |
| ७७३ | १२२१८ (३३) | दयार्णव सज्झाय | पंडित लालविजय शिष्य शुभविजय | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ४७-४८ | |
| ७७४ | १२४२० (१०) | दयालदासजी का छुटकर सबद | दयालदास | गु० १९३२ | १६x१४ | १९२-२६१ | |
| ७७५ | १२५७१ (५) | दयालदासजी की वाणी | दयालदास | १९वीं श० | १०.५x८ | २३४-३१८ | |
| ७७६ | १०८६६ (६) | दयालदासजी की वाणी | दयालदास (ग्वालबांल) | १९१० | ७.५x६.५ | १०८-१५५ | लि.क. रामसजन शिष्य सेवगराम |
| ७७७ | १२५८६ (५) | दरियादासजी की वाणी | जन दरिया | १९वीं श० | १२x९.५ | ६०-८२ | लि.क. बिहारीदास "पोथी चम्पाबाई की" |
| ७७८ | १२२१८ (८३) | दश अवतार पार्श्वनाथ स्तवन | मतिविशाल | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | १०३-१०४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७७९ | १२२१० (१०)१-७ | दशहरा के पद— | नन्ददास | १९वीं श० | १८x१३.५ | ५२-५३ | राग-मारू, सारंग, गुटके में पदों का दुर्लभ संग्रह है। |
| | | | सूरदास | | | ५३-५४ | |
| | | | रसिकदास | | | ५४-५५ | |
| | | | परमानन्द | | | ५५,५६ | |
| | | | गोविन्द स्वामी | | | ५५ | |
| | | | रामदास | | | ५६ | |
| ७८० | १२२२० (१२)१-६ | दशहरा के पद— | स्यामदास, रसिकदास | १९वीं श० | १९x१६.५ | ७५; ७५ | |
| | | | कृष्णदास | | | ७५-७६ | |
| | | | परमानन्द | | | ७६ | |
| | | | चत्रभुज | | | ७६ | |
| | | | नन्ददास | | | ७६ | |
| ७८१ | १२३२० (२५) | दस श्रावक सज्झाय | मुनि श्रीसार | १८वीं श० | २१.५x१४.५ | ३२वां | |
| ७८२ | १२३२० (५) | दसारणभद्र चो-ढालियो | कुशलसिंह शिष्य रामसिंह | १८वीं श० | २१.५x१४.५ | १८-१९ | कर्त्ता लुंकागच्छी आर्यारत्ना पठनार्थ |
| ७८३ | ११९८९ (२) | दस्तूर अमल | | १९०६ | २३.५x१६ | १-७ | रजपूत फताजी की १८९९ की प्रति की नकल। लि.क. बस्तीराम पूरबिया |
| ७८४ | १२५४८ (१) | दाढाला एकलगिढरी वात | | १९वीं श० | १६x१२.५ | १-१५ | लि.क. मांणकचन्द लि.स्था. सोजत |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७८५ | १२२०५ (३३) | दादा गुरु गीत | जिनरंग सूरि | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | ११९वां | पत्र सं० ११८-११९ पर रक्तपीत आदि का नुस्खा है। |
| ७८६ | १२३७० (३) | दादाजीरी अष्टप्रकारी पूजा | देवचन्द्र | १९वीं श० | १६x११.५ | १५-२० | |
| ७८७ | १२२१० (६,१-३ | दान के कीर्तन | कुंभनदास, परमानन्ददास, गोविन्द स्वामी | १९वीं श० | १८x१३.५ | ३९वां ३९-४० ४०-४१ | राग-देवगंधार, विलावल, पूरबी |
| ७८८ | १२२२० (८) | दान के पद | परमानन्द | १९वीं श० | १९x१६.५ | ६९वां | |
| ७८९ | १०८४१ (३) | दानलीला | नन्दराम पंचोली | १९०० | २८x१९.५ | १-६ | लि.क. मुरलीधर पुरोहित लि.स्था, जोधपुर |
| ७९० | १०८६२ (२) | दानलीला | कृष्णदास | गु० १८९८ | १७x१४ | ११-१६ | लि.स्था. जोधपुर |
| ७९१ | १०८६२ (५)१७ | दानलीला | कृष्णदास | गु० १८९८ | १७x१४ | १६-१९ | |
| ७९२ | १०८६७ (९) | दानलीला | कृष्णदास | १९वीं श० | १८x११ | ९३-९७ | |
| ७९३ | १२४२८ | दानलीला | कृष्णदास पयहारी | गु० १९१२ | २१x१५.५ | १९-२१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७९४ | १२५५७ (१८) | दानलीला | कृष्णदास | गु० १८७३ | २०x१५.५ | ७-११ | लि.क. पंडित वखतचन्द लि.स्था. अजमेर |
| ७९५ | १०९५४ (५) | दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो | समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द | १८७४ | २४x१६.५ | ७५-८१ | र.का. १६६२ सांगानेर लि.क. रणजीत लि.स्था. पाली (मारवाड़) |
| ७९६ | १२३७० (२५) | दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो | समयसुन्दर वाचक | १९वीं श० | १६x११.५ | २३७-२४९ | र.का. १६६२ र.स्था. सांगानेर |
| ७९७ | १२३७० (१२) | दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो | समयसुन्दर वाचक | १९वीं श० | १६x११.५ | ११८-१३१ | र.का. १६६२ र.स्था. सांगानेर |
| ७९८ | १२५६८ | दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो | समयसुन्दर वाचक | १९वीं श० | १८.५x१२.५ | ८२-८७ | |
| ७९९ | १२२१८ (१११) | दान-शील-तप भावना सज्झाय | समयसुन्दर वाचक | १८वीं श० | २६.५x१० | १२२वां | |
| ८०० | १२२१८ (८०) | दान-शील-तप भावना संवाद | समयसुन्दर वाचक | गु० १७५५-१७६७ | २६ ५x१० | ९९-१०३ | |
| ८०१ | १२५७९ (१) | दादूदयालजी की जनम लीला | जन गोपाल | १९वीं श० | १६x८ | १७-७१ | पत्र जीर्ण एवं वड़कने हैं। |
| ८०२ | १२४१६ | दादूदयालजी के पद | दादूदयाल | १८४४ | ३०x१५.५ | १-४७ | राग ३०, पद ४०६ प्रथम पत्र खण्डित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८०४ | १२३७५ (६) | दादूदयालजी की परची | जन गोपाल | १९वीं श० | १६×११.५ | ८२२-९०६ | |
| ८०५ | ११६२७ | दादूदयालजी की वाणी | दादूदयाल | १८५२ | | १-९१ | राग १७, पद ४४४ पत्र ११-१७ त्रुटित लि.क. चत्रभुज पुत्र गुलाबचन्द |
| ८०६ | १२३६२ | दादूदयालजी के सबद | दादूदयाल | २०वीं श० | २९×१४.५ | १-४६ | सटिप्पण। |
| ८०७ | १२३६९ (१) | दादूदयालजी के सबद एवं वाणी संग्रह | दादूदयाल | १७८६ | २४×१७.५ | १-८५<br>८५-१६५ | राग २८, पद ४४४, साखी २५२ लि.स्था. नारनोल |
| ८०८ | १२३७४ (१) | दादूदयालजी के सबद एवं वाणी संग्रह | दादूदयाल | १९वीं श० | २१.५×१६.५ | १-१०६<br>१०६-१८५ | साखी २५९०, राग २७, पद ४४३ |
| ८०९ | १२३७५ (१) | दादूदयालजी के सबद एवं वाणी संग्रह | दादूदयाल | १९वीं श० | ११×१६.५ | १-२४४<br>२४४-४७५ | राग २९, पद ४४२ |
| ८१० | १२३७८ (२) | दादूदयालजी की साखी | दादूदयाल | १८वीं श० | २२×१५.५ | १-२५ | |
| ८११ | १२३८० (१) | दादूदयालजी की साखी | दादूदयाल | I० १७२४ | २०×१४ | ३१-१०६ | गुटका क्षतिग्रस्त। पत्र सं० २२२ पर भी दादू-वाणी के कुछ अंश हैं। पत्र सं० १-३० अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८१२ | १२४१५ | दादूदयालजी की साखी अंग बद्ध | दादूदयाल | १९वीं श० | ३०×१५ | १-६५ | अंग ३७, साखी २४११ |
| ८१३ | १२५६१ (१) | दादूदयालजी की साखी एवं पद | दादूदयाल | १९वीं श० | २३.५×१७ | १-१२२ | राग २९, पद ४४३, साखी २५५८, अंग ३७ |
| ८१४ | १२५७३ | दादूदयालजी की साखी | दादूदयाल | १९वीं श० | १५.५×१०.५ | १-२८६ | पत्र जीर्ण व बड़कने हैं। |
| ८१५ | १०८६२ (६)४ | दिस सुर को पालरा (दिशा-स्वर का पालन) | | गु० १८९५ | १७×१४ | ३९-४० | लि.स्था. जोधपुर |
| ८१६ | १२६१२ (१०) | दीतवारजी की कथा | | १८१७ | २५×१५ | २९-४३ | लि.क. हिम्मतराम सिंघ्वी लि.स्था. दिल्ली; जमुनां तीरे |
| ८१७ | १०९०२ (२) | दीनरा रेखता | दीन दरवेश | १८०९ | १५.५×१२.५ | ६-१४ | लि.क. साधु भीखनदास |
| ८१८ | १२२१० (१५)१-३ | दीपमालिका के पद | चत्रभुज<br>कुंभनदास, परमानन्द | १९वीं श० | १८×१३.५ | ९१, ९२-९३<br>९१; ९२ | राग-हमीर, कान्हरो। |
| ८१९ | १२२२० (१६) | दीपमालिका के पद | सूरदास<br>कुंभनदास | १९वीं श० | १९×१६.५ | ७७-७८<br>७८ | पत्र ७७ पर धनतेरस का पद है। |
| ८२० | १०८३९ (२) | दीपमालारी कथा | | १९०६ | ३२×७.५ | ९-११ | लि.स्था. जोधपुर |
| ८२१ | १२१९९ (८)(११) | दीवाली पर्व व्याख्यान | | १९७५ | २७×१४ | ४१-४३<br>५२-६४ | लि.क. पं० केशरी सागर लि.स्था. फलोदी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८२२ | १२२१८ (२६) | दीवाली भास | आणंद शिष्य पार्श्वचन्द | गु० १७५५-१७६७ | २६.५×१० | ३७-३८ | र.का. १७६३ लूणसर |
| ८२३ | ११३५३ (२) | दुर्गा की आरती | | १६वीं श० | ११.५×६.५ | ८२-८५ | गु० की अन्य कृतियां संस्कृत में हैं। |
| ८२४ | १२०१२ (१) | दूल्हैरामजी की वाणी और पद संग्रह | दूल्हैराम शिष्य रामचरण | २०वीं श० | १४.५×११ | १-५६७ १-८६ | राग ४६, पद २०५। |
| ८२५ | १०६२५ (८) | दृष्टांतसागर टीका संजुगति | टी० रामजन शिष्य मू० रामचरण | १६३३ | २२.५×१६.५ | १०१-१४८ | र.का. १८५७ बैसाख सुदि ३ शनिवार गुटका रामचरण के साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। |
| ८२६ | १२५४२ | देवकी चौपई | क्षमाकल्याण | १६०६ | २४×१२ | १-८ | लि.क. श्री चनणांजीरी चेली लि.स्था. बीलाड़ा |
| ८२७ | १२३७० (३४) | देवकीनी ढाल | | १६वीं श० | १६×११.५ | २२-३२ | |
| ८२८ | १२०६८ (६) | देवचन्दजी की वीमी | देवचन्द | १८८८ | २३.५×१५.५ | ३८-४५ | लि.क. जति वीरवैताल लि.स्था. कलकत्ता |
| ८२९ | १२४२२ (५) | देवलनाथजी की सबदी | देवलनाथ | | १५×१०.५ | २४३वां | |
| ८३० | १०६७३ (२) | देवसेनरी चौपई | कुसालचन्द | १६१४ | २५ ५×१२ | ७-१० | र.का. १८६८ सोजत, ९ ढालें लि.क. लाछमां लि.स्था. बिलाड़ा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८३१ | १२०१८ (२) | देवसोवणी एकादशी कथा-भाषा | नागरदास | १९०४ | २९×१३.५ | १-३२ | ब्रह्माण्ड पुराणगत पद्यानुवाद। पत्र जलाभिषिक्त। |
| ॐ८३२ | १०९२४ (७) | देवादासजी की वाणी | सं०कर्त्ता हरिराम शिष्य देवादास | १८४० | २३×१२.५ | ३४२-५०४ | रचनाकालीन प्रति। संकलन काल १८३७ सं.स्था. भीलाड़े (भीलवाड़ा) |
| ८३३ | ११०१३ (३६) | दोषावली पत्र (बारह लग्न भाव) | | १८२२ | २३×१५ | २४९-२५२ | लि.क. सुजाण लि.स्था. चम्पावती नयरे |
| ८३४ | ११०१३ (३८) | दोहा-गीतादि संग्रह | | १८२५ | २३×१५ | २८३-२८६ | लि.स्था. चाणोद |
| ८३५ | १०९४४ (१६) | दोहा-गूढ़ार्थ | | २०वीं श० | ८×५ | ३०४-३१७ | |
| ८३६ | १०८४५ (७)(१-९) | दोहा-पद आदि संग्रह | जीवनदास | गु० १८८६ | १५.५×१०.५ | ८५७-८५९ | |
| | | ,, | कबीरदास | ,, | ,, | ८५८वां | |
| | | ,, | अग्रदास | ,, | ,, | ८५९-८६० | |
| | | ,, | दादू | ,, | ,, | ८५९वां | |
| ८३७ | | ,, | बखतावर | ,, | ,, | ५५९वां | |
| | | ,, | ब्रिजानन्द | ,, | ,, | | |
| ८३८ | | ,, | नरसिंह | ,, | ,, | ८६०वां | |
| | | ,, | जन हरिदास | ,, | ,, | ८६१वां | |
| ८३९ | | ,, | मीरांबाई | ,, | ,, | ८६०-८६२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८४० | १०८४५ (७ ९ | दोहा-पद आदि संग्रह | मीरां | गु० १८८६ | १५.५x१०.५ | ८६०-८६२ | |
| ८४१ | १०८४५ (७)१०-१३ | दोहा-पद आदि संग्रह | रसिकनाथ | गु० १८८६ | १५.५x१०.५ | ८६०वां | |
| ८४२ | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ८६१वां | |
| ८४३ | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ८६१वां | |
| ८४४ | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ८६२वां | |
| ८४५ | ११०१३ (६) | दोहा-पोथीरा | | १८२५ | २३x१५ | ८३वां | कुल १३ दोहे हैं। लि.क. ऋषि सुजांण लि.स्था. चाणोद नगरे |
| ८४६ | ११०१३ (२८) | दोहा-रिपुजीतरा | शिव कवि | १८१८ | २३x१५ | १५७-१६० | कुल १०३ दोहे हैं। |
| ८४७ | ११०८५ (१०) | दोहा-लाखाफूलाणीरा | | १९वीं श० | १६.५x१३.५ | ६९वां | |
| ८४८ | ११०१३ (२०) | दोहा-वर्षारा | | १८१८ | २३x१५ | १३३वां | १३ दोहे हैं। अन्त में एक सवैया तथा कवित्त भी है। लि.क. सुजांण लि.स्था. चाणोद |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८४९ | ११०१३ (४०) | दोहा-संग्रह | प्रीतिसखी | १८१९ | २३x१५ | ३०८-३११ | कुल १३१ दोहे हैं। |
| ८५० | १०८६७ (४) | दोहा-संग्रह | जन तुरसी | १९वीं श० | १८x११ | ७३-८५ | १६३ दोहे हैं। |
| ८५१ | ११०१३ (२३) | दोहा-संग्रह | केसोराइ | १९वीं श० | २३x१५ | १३७-१४१ | कुल १०५ दोहे हैं। एक सवैये में "केसोराइ" नाम मिलता है। संभवतः दोहे भी इन्हीं के हों। |
| ८५२ | ११०१३ (४६) | दोहा-संग्रह | उदैराज, समन, सजन, जमाल आदि | १८१८ | २३x१५ | ३२१-३२३ | ८९ दोहे हैं। लि.क. सुजाण |
| ८५३ | १२३७१ (५)(६) | दोहा-संग्रह (श्रृंगार)<br>,, (गूढार्थ) | | १८३५ | १८.५x१६.५ | २५०-२५४<br>२५५-२६० | १०३ दोहे हैं।<br>१०६ दोहे हैं। लि.क. भीखनदास गौड़ लि.स्था. नागोर |
| ८५४ | ११०१३ (४५) | दोहा संग्रह "रसिकरंजन" | | १८१९ | २३x१५ | ३१५-३१७ | कुल ७६ दोहे हैं। |
| ८५५ | ११०१३ (१९) | दोहा-सूरीयारा | | १८१८ | २३x१५ | १३३वां | १० दोहे हैं। लि.क. सुजांण लि.स्था. चाणोद |
| ८५६ | ११०१३ (२१) | दोहा-सोरठ-वींझारा | | १८१८ | २३x१५ | १३४-१३६ | ७४ दोहे हैं। लि क. सुजांण लि.स्था. चाणोद |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी.में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८५७ | १२२०८ (५) | द्रव्यगुण पर्याय रास | यशोविजय शिष्य नयविजय | १७७४ | २५x१८.५ | ७२-९३ | कर्ता-तपागच्छी लि.क. मुनि ग्रासकरण |
| ८५८ | ११०१३ (४१) | द्वादशमास वर्णन | | १८१६ | २३x१५ | ३११-३१२ | अन्त में चार दोहे हैं। |
| ८५९ | १०९२४ (१३) | द्विज कन्या-संवाद | | १८४४ | २३x१२.५ | ५३७-५४५ | |
| ८६० | १२२१० (१२) | धनतेरस के पद | द्वारकेश | १९वीं श० | १८x१३.५ | ६७वां | राग देवगंधार |
| ८६१ | १२२०५ (८५) | धनदत्त सज्झाय | लब्धि विजय | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १४७वां | |
| ८६२ | १०९०२ (८) | धनाजी की परची | अनन्तदास | १८०९ | १५.५x१२.५ | ४४-५२ | लि.क. साधु भीखनदास |
| ८६३ | १०९४१ (६) | धनाजी की परची | अनन्तदास | १९३७ | १७x१०.५ | १३९-१४३ | लि.स्था. श्री पारी (पाली). |
| ८६४ | १२५७० (२) | धनाजी की परची | अनन्तदास | १९वीं श० | ९.५x६.५ | १६-३४ | |
| ८६५ | १२५३६ | धनाजी की परची | अनन्तदास | १९वीं श० | २०x१० | १-९ | |
| ८६६ | १२५९१ (२) | धनाजी की परची | अनन्तदास | २०वीं श० | १५.५x१० | २०-२७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८६७ | १२३७० (४३) | धन्नाअणगार चौपई | | १८७७ | १६x११.५ | १४४-१५२ | १५२-१५४ पर नव वाडि सज्झाय है। |
| ८६८ | १२२१८ (४६) | धन्नाअणगार सज्झाय | | ग० १७५५-१७६७ | २६ ५x१० | ६३वां | |
| ८६९ | १२३२० (३२) | धन्नाअणगार सज्झाय | श्री देव | १८वीं श० | २१.५x१४.५ | ३७-३८ | लि.स्था. आल्हणपुर |
| ८७० | १२५८१ (१२) | धन्नाअणगार सज्झाय | समयसुन्दर | १९वीं श० | १६x१०.५ | ७६-७७ | |
| ८७१ | १२२१८ (६) | धन्नाऋषिरी सज्झाय | सिधो | ग० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | २९वां | |
| ८७२ | १०९५४ (४) | धन्ना शालिभद्रनी चौपई | जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि | १८७४ | २४x१६.५ | ३९-७५ | र.का. १६७८ लि.क. रणजीत |
| ८७३ | १२२१० (२३.१-५ | धमारी के पद | मानिकचन्द, चत्रभुज, गोविन्द स्वामी, माधोदास, सूरदास | | १८x१३.५ | ११३-११४ ११४,११६, १३८,१४१, १४७,१४८, ११६-११८, १२५-१२६, १३०-१३१, १३९-१४१, | लि.स्था. पाली (मारवाड़) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८७३ | १०६४८ (४) | धमाल | रामचरण आदि | १९३५ | १४ ५x७ | ९६-९८ | लि.क. साधु रामबिलास |
| ८७४ | १०८६७ (७) | धमाल | तुलसीदास | | १८x११ | ८८-९२ | |
| ८७५ | १२२०५ ४२)५ | धर्म-कर्म गीत | कीर्तिवर्द्धन | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १४३वां | |
| ८७६ | १२४१८ | धर्मदत्त धनवती चउपई | कुशलहर्ष शिष्य रामसिंह | १८०४ | २५.५x११ | १-२४ | र.का.१७८८ नगीनो (नागोर) बखतसिंह राज्ये लि.क. जीवणहस शिष्य हीरहंस शिष्य कल्याणहंस लि.स्था. विक्रम महानगर |
| ८७७ | १२३७० (२४)६ | धर्मरुचि सज्झाय | रतनचन्द | १९वीं श० | १६x११.५ | २३४-२३५ | र.का. १८६५ जोधाणा (जोधपुर) |
| ८७८ | १०८४९ (२०) | धर्म-संवाद भाषा (महाभारत गत पद्यानुवाद) | जन गोपाल | गु० १९३१ | १७x११ | १५५-१६१ | लि.क मनोरथदास |
| ८७९ | १२४७२ | धर्म-संवाद भाषा | जनगोपाल | १९३९ | २७.५x१२.५ | १-१९ | "महाभारत" के धर्म पर्व की भाषा 'तेरै दिन मैं तीन सै करि चोपई जोड़" लि.क. गुलाबदास लि.स्था. सुजानगढ़ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८८० | १२१९० (५) | ध्यांन छत्तीसी | बनारसीदास | १८६७ | २१x११.५ | ८-१० | लि.क. रंगसागर<br>लि.स्था. जेतारण |
| ८८१ | १२३७८ (१३)२४ | ध्यांनलीला | सुन्दरदास | १८वीं श० | २२x१५.५ | १०७-१०८ | |
| ८८२ | ११६४८ (२१) | ध्यांनदासजी का सबद | ध्यांनदास | १८५३ | २७x१६.५ | ५६१-५६३ | संत साहित्य का दुर्लभ संग्रह<br>लि.क. गोपालदास<br>लि स्था. कोलिया |
| ८८३ | १०६२४ | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | गु० १८४४-१९३० | २३x१२.५ | ५४५-५५७ | गुटका संतों के वाणी संग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। |
| ८८४ | १०६३७ (७) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १८०६ | १०x२०.५ | १-२३ | पत्र गलित एवं चिपके हुए |
| ८८५ | १०६४० (१४) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १८८३ | १५.५x१०.५ | ४८४-५१३ | पत्र सं० ५१४-५१६ पर कर्म विपाक गीता संस्कृत में है।<br>लि.क. जैतराम<br>लि.स्था. फलोदी<br>२१० छन्द हैं। |
| ८८६ | ११०८६ (२) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १८१७ | २१.५x१५ | १-१३ | |
| ८८७ | ११०८९ (६) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १९वीं श० | १८.५x१५.५ | ६०-६६ | गु० के प्रारम्भ की पांच कृतियां संस्कृत में हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८८८ | ११५८६ (२) | ध्रुव चरित्र सचित्र | जनगोपाल | १८३३ | १५.५x११ | ११४-१३३ | चित्र सं० १<br>लि.क. मथेन मंसारांम<br>लि.स्था. नागोर |
| ८८९ | ११६४७ | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १७८९ | २१x९.५ | १-१३ | किनारे क्षति ग्रस्त<br>लि.क. नरसिंहदास वैष्णव |
| ८९० | १२२२६ (८) | ध्रुव चरित्र सचित्र | जनगोपाल | १८७७ | १४x१२.५ | १-३६ | चित्र सं० ३५<br>चित्रकार-महेशदास<br>लि.क. बीरमदास निरंजनी<br>लि.स्था. कैरू (जोधपुर) |
| ८९१ | १२३७५ (८) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १९वीं श० | १६x११.५ | ३९५-८२२ | |
| ८९२ | १२४२२ (१७) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | गु० १८३१ | १५x१०.५ | ३८२-३८९ | |
| ८९३ | १२५५३ (७) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | गु० १८९७ | १४.५x१३.५ | १२२-१२६ | |
| ८९४ | १२५६१ (११) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १९वीं श० | २३.५x१७ | ३५५-३६२ | |
| ८९५ | १२५६९ (३) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १८२२ | १६.५x११ | १-२३ | लि.क. रूपराम<br>लि.स्था. खँडापा |
| ८९६ | १२५७२ (१०) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | १९वीं श० | १०.५x८.५ | २१८-२८० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८९७ | १२५७४ (११) | ध्रुव चरित्र | जनगोपाल | २०वीं श० | १७x१०.५ | २२७-२५६ | |
| ८९८ | १२२२६ (५) | धूंधलीमलजी की सबदी | धूंधल | १८७९ | १४x१२.५ | ३०-३१ | अन्त में अग्रदासजी का एक पद है। लि.क. वीरमदास निरंजनी लि.स्था. कैरू (जोधपुर) |
| ८९९ | १०७६२ | नन्दि सूत्र-भाषा | ऋषि उत्तमजी | १७१२ | २६x११.५ | १-१० | श्री उत्तमजी ने कई शब्दों के भी पर्याय लिखे हैं। लि.क. गोदे ऋषि लि.स्था. द्रुणाला |
| ९०० | १२४२९ | नन्दोत्सव व्याख्या | | २०वीं श० | ३२.५x२० | १-३० | |
| ९०१ | १२२०५ (३४) | निन्दा सज्झाय | समयसुन्दर वाचक | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १२०वां | |
| ९०२ | १२३७१ (१३) | नखसिख वर्णन | प्रोहित घनश्याम | १८३९ | १८.५x१६.५ | १-१० | र.का. १८०५ लि.क. भीखनदास लि.स्था. नागोर |
| ९०३ | १२२१८ (१५०) | नणद-भोजाई सवाद | मुनि टीकम | १८वीं श० | २६ ५x१० | १६४वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९०४ | १२२१८ (५)३ | नणद-भोजाई सज्झाय | आनन्दवर्द्धन | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | २६वां | |
| ९०५ | १०९४२ (१) | नरसीजीरो मायरो | रतना खाती | १९५२ | १३x६ | १-१७३ | र.का. १६१६ शाके १४८१ लि.क. साधु बालकराम लि.स्था. महामन्दिर जोधपुर |
| ९०६ | १०९४४ (४) | नरसीजीरो मायरो | रतना खाती | २०वीं श० | ८x५ | ४४-२१९ | र.का. १६१६ लि.क. वालकराम |
| ९०७ | १२४२५ (२) | नरसीजीरो मायरो | रतना खाती | २०वीं श० | २६.५x१७ | ६०-६५ | अपूर्ण |
| ९०८ | १२५७७ (११)१० | नरसी मेहताना हुंडी | | १९वीं श० | २१x१५.५ | १५०-१५७ | लि.क. साधुराम नागर लि.स्था. कलकत्ता |
| ९०९ | १२५८६ (६) | नरसी मेहतानी हुंडी | | १९वीं श० | १२x९.५ | ८२-८८ | लि.क.बिहारीदास, प्रेमदयाल की परम्परा में |
| ९१० | १२२१८ (५)४ | नलदमयन्ती सज्झाय | उदयनन्दन | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | २७वां | जैन स्तुति स्तोत्रों का सुन्दर संग्रह इस गुटके में हैं। |
| ९११ | १२२१८ (१३२) | नवकार रास | अज्ञात | १८वीं श० | २६.५x१० | १४१-१४२ | |
| ९१२ | १२२१८ (९८) | नवकार स्तवन | गुणसूरि | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ११८वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९१३ | ११५७८ | नवतत्त्व विचार | | १८५७ | २४.५x१०.५ | १-१५ | लिपि सूक्ष्म एवं सुवाच्य लि.क. जेठमल शिष्य रोड़ीदास |
| ९१४ | १२३७० (५) | नवपद कलश पूजा | यशोविजय वाचक | १९वीं श० | १६x११.५ | ३५-४६ | |
| ९१५ | १२५६५ (६) | नवपदनी पूजा | ज्ञानविमल | २०वीं श० | १६x१२ | ४५-५६ | |
| ९१६ | १०७९७ (२) | नवपद-महिमा | | १९वीं श० | २७x१२ | १-१० | प्रारम्भ में 'यन्त्र राज बणावा री विधि' है। |
| ९१७ | १२३२० (४६) | नवमी स्तवन | सेवक | १८१९ | २१.५x१४.५ | ५१वां | आर्या सरूपा पठनार्थ लि.क. खुसाला शिष्या आर्या रत्ना लि.स्था. अहिपुर |
| ९१८ | १२२१७ (४) | नवरत्न छप्पै बद्ध | | १९वीं श० | २१.५x१२ | ८५-८६ | लि.क. नन्दराम |
| ९१९ | १२१९१ | नववाड़ि सज्झाय | जिनहर्ष | २०वीं श० | २५.५x१२.५ | १-५ | र.का. १७२९ |
| ९२० | १२२०५ (४२)२ | नववाड़ि सज्झाय | कीर्तिवर्द्धन | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १३२-१४० | |
| ९२१ | १२२१८ (१०१) | नववाड़ि सज्झाय | अजितदेव सूरि | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ११८-११९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९२२ | १२३२० (१) | नववाड़ि सज्झाय | जिनहर्ष | १८वीं श० | २१.५x१४.५ | १०-१४ | आर्या रत्नाजी पठनार्थ पत्र सं० १-९ अप्राप्त । |
| ९२३ | १२२२० (११) | नवविलास | रसिकदास | १९वीं श० | १९x१६.५ | ७२-७५ | |
| ९२४ | ११०८० (३) | नसीहत नामा (हकीम लुकमान) | | १९वीं श० | २२x१४.८ | ७३-७६ | १०७ छन्द लि.स्था. पाली |
| ९२५ | ११०९० (२) | नसीहत नामा (हकीम लुकमान) | | १९वीं श० | १४.५x११ | ६९-७८ | प्रारम्भ के ६० पत्र दीमक ग्रस्त |
| ९२६ | ११६४३ | नसीहत नामा (हकीम लुकमान) | | २०वीं श० | २४.५x१३ | १-६ | अपूर्ण । शीर्षक में १२५ शिक्षाओं का उल्लेख है जिनमें से ३५ दी गई हैं । |
| ९२७ | १२५५३ (८) | नसीहत नामा (हकीम लुकमान) | | गु० १८९७ | १४.५x१३.५ | १२६-१२९ | |
| ९२८ | १२२१८ (४३) | नाकोड़ापार्श्वनाथ-स्तवन | समयसुन्दर वाचक | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ६१वां | |
| ९२९ | १२३७० (४२)८ | नाकोड़ापार्श्वनाथ-स्तवन | समयसुन्दर वाचक | १८६९ | १६x११.५ | १२६वां | पत्र सं० १०७-१०८ पर नवकार स्तवन है । लि.क. सूरजमल लि.स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६३० | ११५८५ (५) | नागजी-नागवतीरी बात | | १८५२ | १९.५x११.५ | ४७-७७ | बीच के पत्र खण्डित लि.क. पंडित केसरविजय लि.स्था. वीकंपुर, बीकानेर |
| ६३१ | ११०८६ (८) | नागदमण | सांयाजी झूला | १९वीं श० | १८.५x१६.५ | ७५-८७ | |
| ६३२ | १२२१५ (३) | नागदमण | सायांजी झूला | १९वीं श० | २२x१६ | २६-३७ | |
| ६३३ | १२४२८ (४) | नागलीला के पद | सूरदास | गु० १९१२ | २१x१५.५ | १७-१९ | १५-१६ पर दधिलीला के पद हैं। |
| ६३४ | १२४६३ | नाड़ी परीक्षा आदि फुटकर रोगनिदान व नुस्खे | | १९वीं श० | २६.५x१३.५ | १-१३ | |
| ६३५ | १२५८१ (१६) | नाड़ी परीक्षा तथा फुटकर रोगों के नुस्खे | | १९वीं श० | १६x१०.५ | ९६-१२१ | ९६वें पत्र पर जंबूसर की कथा का प्रारम्भ मात्र है। |
| ६३६ | ११५८३ (१२) | नामदेव की परचई | अनन्तदास | गु० १६९३ | १८x१५ | ११८-१२१ | र का. १६४५ पत्र खण्डित। पत्र १२१ पर शिवस्तुति भी है। |
| ६३७ | १२४२१ (९) | नामदेवजी की परची | अनन्तदास | १९वीं श० | १७x१२ | १५०-१६६ | |
| ६३८ | १२४२२ (२०) | नामदेवजी की परची | अनन्तदास | गु० १८३१ | १५x१०.५ | ४२६-४२९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६३६ | १२४२६ (४) | नामदेवजी का पद | नामदेव | २०वीं श० | १६.५x१३ | ५६-६४ | राग-बद्ध |
| ६४० | १२५८५ (५) | नामदेवजीरी परची | अनन्तदास | १६२७ | १६.५x१५ | १६०-२२४ | लि क. आरतराम<br>लि.स्था. बदनोर |
| ६४१ | १२४२२ (१३) | नामदेवजी की फुटकर वाणी | नामदेव | गु० १८३१ | १५x१० ५ | २५०-२६४ | साखी १०, पद-५१, राग ११ |
| ६४२ | ११६४८ (१६) | नामदेवजी की साखी एवं पद संग्रह | नामदेव | १८५३ | २७x१६.५ | ४३०-४४२ | राग १७ पद १६५<br>लि.क. गोपालदास<br>लि.स्था. कोलिया |
| ६४३ | १२३५६ | नाम प्रकाश | हरिरामदास निरंजनी शिष्य बालकदास | १८६२ | ३१.५x१६ | १-१० | र.का. १८२५शर कर वसु शशि<br>र.स्था. डोडवाणा<br>लि.क. साधु सम्पतराम<br>लि.स्था. अजमेर |
| ६४४ | १०६३८ | नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ | रामचरण | १८८५ | १६.५x८.५ | ४६५-४७८ | |
| ६४५ | १०८४६ (३) | नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ | रामचरण | १६५० | १५.५x६.५ | १-२१ | गुटका सजिल्द<br>लि.क. रामविलास<br>लि.स्था. रतनपुरी |
| ६४६ | १२३७३ (२७) | नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ | रामचरणदास | १६०६ | २२x१५.५ | २३५-२४८ | २४६-२६६ तक संस्कृत की तीन कृतियां हैं। अन्तिम कृति अपूर्ण। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९४७ | १२४२० (१६) | नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ | रामचरण | 刀० १९३२ | १६.१४ | ३५२-३६० | |
| ९४८ | १२५७७ (७) | नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ | रामचरण | १९वीं श० | २१x१५.५ | ८७-९७ | लि.क. साधुराम लि.स्था. उज्जैन |
| ९४९ | १२५८८ | नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ | रामचरण | १९वीं श० | १२.५x८ | २-१५ | प्रारम्भ में दूल्हैराम के दो पद हैं। |
| ९५० | १०८९९ (४) | नाम-महिमा जोग-ग्रन्थ | आतमराम | २०वीं श० | १४x११.५ | ११-१५ | |
| ९५१ | १२२२६ (१२) | नाम-महिमा जोग-ग्रन्थ | | १९वीं श० | १४ १२.५ | ६०-६३ | |
| ९५२ | १०९३६ (६८) | नाममाला | आतमराम | १९३४ | १२.५x८.५ | ३६६-३७१ | लि.क. साधु चोकसराम लि.स्था. जोधपुर, मियां का बाग, चाँदपोल |
| ९५३ | ११६४८ (२४) | नाममाला आदि | | १८५३ | २७x१६ ५ | ५६९-५७१ | गुटके के पत्र बड़कने हैं। लि.क. गोपालदास लि.स्था. कोलिया |
| ९५४ | १२२१४ (७) | नाममाला | जन हरिदास | १९वीं श० | २१.५x१३ | ७३-७४ | |
| ९५५ | १२२१५ (१) | नाममाला | नन्ददास | २०वीं श० | २२x१५.५ | ५-२३ | अपूर्ण-आद्यन्त अप्राप्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९५६ | १०८४९ (१८) | नाम माहात्म्य | दादूदयाल | गु० १९३१ | १७x११ | १३७-१३९ | पत्र १४०-१४२ में रामदास के स्फुट पद हैं। लि.क. मनोरथदास |
| ९५७ | १०९५६ | नाम विरुदावली | किसोरअलि | २०वीं श० | ३२x१६ | १-२७ | र.का. १८३७ |
| ९५८ | १२२२६ (२७) | नारद गीता | | १८८२ | १४x१२.५ | ६७२-६७५ | कृति संस्कृत में है। |
| ९५९ | १२२५३ (३) | नारायण लीला | माधोदास | गु० १८९७ | १४.५x१३.५ | ९६-११२ | चौवीस अवतार वर्णन। |
| ९६० | १२३८० (१०) | नारायण लीला | माधोदास | गु० १७२४ | २०x१४ | १४२-१८० | पत्र सं० १८१-१८५ पर फुटकर पद एवं नुस्खे हैं। पत्रसं० १८६-१८९ विष्णुसहस्र नाम आदि स्तवन संस्कृत में हैं। लि.क. हरिदास |
| ९६१ | १०९०२ (१६) | नारी की साखी | कवि गद | १८०९ | १५.५x१२.५ | ८६-८९ | नारी के लिए वर्जित कार्यों का रोचक वर्णन। लि.क. साधु भीखनदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६६२ | १२२८३ (१) | नासिकेतु पुराण | सागर | १७८४ | १६x१४.५ | १-५३ | र.का. १७७३<br>पत्र सं० १-११ अप्राप्त।<br>लि.क. करमसी |
| ६६३ | १२५६७ (४) | नासिकेतु बालावबोध | | १८३० | २१x१५.५ | २८-४८ | लि.क. केसरचन्द गुरुभाई विजैचंद<br>लि.स्था. कंटालिया ग्राम |
| ६६४ | १०८३६ (४) | नासिकेतुरी कथा | | १६०६ | ३२x७.५ | १३-११ | चित्रों के लिए रिक्त स्थान छोड़े हुए हैं। श्लोकयुक्त।<br>लि.स्था. जोधपुर |
| ६६५ | १०८६१ (६) | नासिकेतुरी कथा | | गु० १८६८ | १६x१२ | ८८-६६ | लि.स्था. जोधपुर |
| ६६६ | १०६०२ (१६) | नासिकेतुरी कथा | | १८०६ | १५.५x१२.५ | ६४-१११ | पत्र रंगीन बॉर्डर युक्त।<br>अन्त में एक कवित्त है।<br>गुटके के अन्त में संस्कृत में 'ज्ञान गीता' है।<br>लि.क. भीखनदास |
| ६६७ | १०६४७ (२) | नासिकेतुरी कथा | | २०वीं श० | १४.५x७.५ | २८-६१ | |
| ६६८ | ११५८६ (१) | नासिकेतुरी कथा सचित्र | विष्णुदास | १८३३ | १५.५x११ | १-११३ | चित्र सं० २८,<br>लि.क. मथेन मंसाराम<br>लि.स्था. श्रीनागपुर (नागोर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९६९ | ११५९१ | नासिकेतुरी कथा सचित्र | | १८७७ | २०.५x१० | १-१९ | चित्र सं० ४६ अठारह अध्याय पर्यन्त लि.क. मथेन० मंसाराम लि.स्था. बीकानेर |
| ९७० | १२२१५ (१) | नासिकेतुरी कथा | | १९वीं श० | २२x१६ | १-२१ | |
| ९७१ | १०९२४ (२८) | नासिकेतु व्याख्यान | दयालदास | १९वीं श० | २३x१२.५ | ६०५-६३४ | अपूर्ण । |
| ९७२ | १२५५८ | नित्य सेवा विधि और उत्सव विधि | | गु० १८५४ | २१.५x१६ | २-३३ | र.का. १७३४ प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. अभैराम दवे |
| ९७३ | १२५७७ (८)४ | निर्वाण सार | प्रेमदयाल | १९वीं श० | २१x१५.५ | १२५-१२७ | लि.क. साधुराम नागर लि.स्था. उज्जैन |
| ९७४ | ११५८३ (१३) | नीति के पद | रायचन्द | गु० १९९३ | १८x१५ | १२१-१२२ | पत्र सं० १२३-१२५ पर संस्कृत में कर्मविपाक गीता है । |
| ९७५ | १२५९१ (१२) | नीति-मंजरी भाषा | | २०वीं श० | १५.५x१० | ६२-७० | ५४ छंद हैं । |
| ९७६ | १०९५६ (२) | नीति शतक भाषा टीका | मू० भर्तृहरि टीका-इन्द्रजीत | २०वीं श० | ३२x१६ | १-१३ | टीका "विवेक दीपिका" |
| ९७७ | ११०१३ (२४) | नीसाणी | गरीबदास | १९वीं श० | २३x१५ | १४४वां | कुल २ छन्द |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९७८ | ११०८५ (९) | नीसाणी | गरीबदास | १९वीं श० | १६.५x१३.५ | ६८वां | |
| ९७९ | ११०१३ (४८) | नीसाणी-भवानी की | मान कवि | १८१८ | २३x१५ | ३२४-३२५ | २५ छन्द हैं। पंजाबी पुट है। लि.क. सुजांण |
| ९८० | १०८४९ (१४) | नृसिंह अवतार-चरित्र (अवतार चरित्र गत) | नरहरिदास बारहट | ग० १९३१ | १७x११ | ४५-८७ | लि.क. मनोरथराम |
| ९८१ | १०८३९ (३) | नृसिंह चतुर्दशीरी कथा | | १९०६ | ३२x७.५ | ११-१२ | अपूर्ण लि.स्था. जोधपुर |
| ९८२ | ११०८७ (५) | नृसिंह चतुर्दशीरी कथा | | १७९३ | २१.५x१५.५ | ११४-१२० | लि.क. खुस्यालचन्द |
| ९८३ | १२२१० (२९)१-१३ | नृसिंह चतुर्दशी के पद | परमानन्द<br>सूरज प्रभु<br>सूरदास | १९वीं श० | १८x१३.५ | १७२,१७३<br>१७३वां<br>१७४वां | राग-कान्हरो |
| ९८४ | १२२२० (३३) | नृसिंह जयन्ति के पद | परमानन्द, सूरदास | १९वीं श० | १९x१६.५ | १०२वां | |
| ९८५ | ११५८४ (८) | नृसिंहावतार-छंद | कवि कान्ह | ग० १७०२ | १९.५x१६ | ३४-३६ | |
| ९८६ | ११५८५ (८)१ | नेमजी का पद, स्तुति आदि | हर्षचन्द | ग० १८५२ | १९.५x११.५ | १३५वां | लि.स्था. बीकानेर |
| ९८७ | ११९९७ (२-३) | नेमजी की ढाल | ऋषि चोथमल<br>विनयचन्द | २०वीं श० | २५ ५x१२ | २३वां<br>२४-२५ | लि.स्था. नवाशहर<br>र.का. १८७५ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९८८ | १२२१८ (१४४ १४८) | नेमिनाथ गीत | अज्ञात, ऋद्धिहर्ष | १८वीं श० | २६.५×१० | १५६वां १६२वां | |
| ९८९ | १०८४७ (८)४ | नेमिनाथरी जान | | गु० १९९९ | १७×१८ | ७५९-७६१ | लि.स्था. जोधपुर |
| ९९० | १२३२० (५२) | नेमिनाथजीरो बारैमासो | खुस्यालचन्द | १८वीं श० | २१.५×१४.५ | ३७-३८ | समकालीन प्रति । र.का. १७९८ |
| ९९१ | १२३२० (८) | नेमिनाथजीरो स्तवन | कुसलसिंह शिष्य रामसिंह | १८वीं श० | २१.५×१४.५ | २०वां | लि.स्था. दिल्ली |
| ९९२ | ११५८५ (८)५ | नेमिनाथजीरो स्तवन | लालचन्द | १९०३ | १९.५×११.५ | १३७वां | लि.क. लिखमीचन्द कोचर लि.स्था. बालाहेड़ा |
| ९९३ | ११५८५ (८)६ | नेमिनाथजीरो स्तवन | जिनचन्द | १९०३ | १९.५×११.५ | १३८-१३९ | लि.क. लिखमीचन्द कोचर लि.स्था. बालहेड़ा |
| ९९४ | १२२०५ (१९४ | नेमिनाथजीरो स्तवन | कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न | १७५० | १७×११ | ४४-४७ | लि.क. विद्याप्रमोद पुत्र कल्याणसिंह लि.स्था. रूपनगर |
| ९९५ | १२२१८ (७) | नेमिनाथजीरो स्तवन | | गु० १७५५-१७६७ | २६.५×१० | ३०वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९९६ | १२५७५ (२६)(३४ | नेमिनाथजीरो स्तवन | (१) मानचन्द (२) टोडर शिष्य केसराज | १९वीं श० | १३ ५×१४ | ७८-७९ ९७-१०२ | (२) र.का. १६७६ पत्र सं० ७२-७३ पर देव लक्षरग हैं। |
| ९९७ | १२५६५ ,१७ ६ | नेमिनाथजीरो स्तवन | जिनहर्ष | २०वीं श० | १६x१२ | ११८-१२० | |
| ९९८ | ११५८५ (८,२६,३८) | नेमि-राजमती गीत | ऋद्धिहर्ष | गु० १८५२ | १९.५x११.५ | १५९-१६० १७२वां | लि.स्था. बीकानेर |
| ९९९ | १२२१८ (५१) | नेमि-राजमती गीत | भुवनकीर्ति | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ६६वां | |
| १००० | १२३६७ (४) | नेमि-राजमती रास | विजयदेव सूरि | १९वीं श० | २५.५x१६.५ | ६७-७६ | |
| १००१ | १२३२० (३) | नेमि-राजमती सज्झ़ाय | रंगविजय | १८वीं श० | २१.५x१४ ५ | १५-१६ | आर्या रतना पठनार्थ |
| १००२ | १२३८० (५३ | नेमि-राजुल पद | खेम | १८वीं श० | २१.५x१४.५ | ३९वा | |
| १००३ | १०९७७ | नेमि-राजुल बारामासा | चोथमल | २०वीं श० | २६x१३ | १-५ | र.का. १८५२ |
| १००४ | १२३७० (२४)७ | नेमि-राजुल सज्झाय | ऋधिहर्ष | १९वीं श० | १६x११ ५ | २३५-२३६ | गुटके में २३६ के बाद भूल से प० सं० २५०-२६१ सी दिये गए हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १००५ | १२५७५ (१४) | नेमिश्वर समोसरण स्तवन | सोमसुन्दर सूरि | १९वीं श० | १३.५x१४ | ५३-५५ | |
| १००६ | ११६२६ (४) | पंचइंद्रिय चरित्र | सुन्दरदास | गु० १८९४ | ३२x१५ | १-११ | |
| १००७ | १२४२१ (१४)१-५ | पंच-इन्द्री, मीन, पतंग, मृग एवं गज चरित्र | सुन्दरदास | गु० १८९३ | १७x१२ | २१४-२१९<br>२१९-२२६<br>२२६-२२८<br>२२८-२३१<br>२३१-२३५ | |
| १००८ | १२३७२ (८) | पंच-उपनिषद् | चरनदास शिष्य सुखदेव | १९वीं श० | २४x१६.५ | १०१-१०६ | अपूर्ण<br>पत्र सं० १०७-११२ अप्राप्त |
| १००९ | १२३७० (१५) | पंचतीर्थंरो स्तवन | मुनि लावण्यसमय | १९वीं श० | १६x११.५ | १३६-१३८ | |
| १०१० | १२३७० (२७) | पंचतीर्थंरो स्तवन | मुनि लावण्यसमय | १९वीं श० | १६x११.५ | २६०-२६१ | पत्र सं० २५५-२६१ पर संस्कृत में ऋषिमंडल स्त्रोत है। |
| १०११ | १२३७० (४२)१५ | पंचपरमेष्ठी नमस्कार मन्त्र | | १९वीं श० | १६x११.५ | १३७-१३८ | पत्र सं० १४१-१४३ पर बारहव्रत आदरणा की याददाश्त है। |
| १०१२ | १२२२८ (५)७८ | पंचपरमेष्ठी मन्त्र (नवकार स्तवन) | जिनवल्लभ सूरि | १८वीं श० | २६.५x१० | ९७-९८ | अपभ्रंश में |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०१३ | १२३२० (१४) | पंचपरमेष्ठी सज्झाय | | १८वीं श० | २१.५x१४.५ | २३-२५ | |
| १०१४ | १२५५१ (१७) | पंचपरमेष्ठी स्तोत्र | हीरानन्द | १७वीं श० | १३x११ | १२०-१२३ | |
| १०१५ | १२५६१ (१३)१-३ | पंचप्रभाव, गुरु सम्प्रदाय एवं सहजानन्द | सुन्दरदास | १९वीं श० | २३.५x१७ | ३६६<br>३६६-३६७<br>३६७-३६८ | |
| १०१६ | १२२१८ (२) | पंचमगति वेलि | मुनि हर्षकीर्ति | १७६० | २६.५x१० | १८-२० | र.का. १६८३ |
| १०१७ | १२२०५ (१८) | पंचमी तप-गर्भित नेमि-जिनवर स्तवन | हर्षकुशल गणि शिष्य जिनचन्द सूरि | १८वीं श० | १७x११ | २२-२८ | र.का. १६७३ मेड़ता |
| १०१८ | १२२१८ (५)४७ | पंचमी स्तवन | समयसुन्दर | १७५५ | २६.५x१० | ६३-६४ | |
| १०१९ | १२२१८ (५)१४० | पंचमी स्तवन (ज्ञानपंचमी) | हर्षकुशल | १७६४ | २६.५x१० | १५५-१५६ | र.का. १६७३<br>लि.क. अमीचन्द |
| १०२० | १२३२० (४५) | पंचमी स्तवन | रंगकलश | गु० १७९७ | २१.५x१४ ५ | ५०-५१ | लि.क. खुसाला शिष्या रत्ना व अनोपजी<br>लि स्था. नागोर |
| १०२१ | १२३७० (१७)३ | पंचमी स्तुति | | १९वीं श० | १६x११.५ | १४२-१४३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०२२ | १२५७५ (१८) | पंचेन्द्रिय वेलि | कवि घेल | १९वीं श० | १३.५x१४ | ६०-६३ | र.का. १५८५ |
| १०२३ | १२५७० | पंद्रवारे जग्यरी कथा | | २०वीं श० | ९.५x६.५ | १३५-१३८ | |
| १०२४ | १२२२८ (५)६२ | पंथीड़ा सज्झाय | सुमतिहंस | १८वीं श० | २६.५x१० | ८३-८४ | |
| १०२५ | १०९५६ (७) | पंचाख्यान भाषा | | २०वीं श० | ३२x१६ | २७७-२९३ | "गुवालेरी भाषा में" |
| १०२६ | ११०१३ (१) | पंचाख्यान भाषा | देवीचन्द | १८२२ | २३x१५ | ६-६७ | कथा दोहा बद्ध<br>लि.क. ऋषि सुजाण<br>पत्र सं० १-५, ७-८ अप्राप्त |
| १०२७ | ११०७७ | पचाख्यान भाषा | | १८५६ | २४x१६ | ११-२६ | लि.क. हेमसागर शिष्य देवेन्द्र सागर<br>इसी गुटके में वृद्धचाणक्य राजनीति शास्त्र सटबार्थ संस्कृत में है। |
| १०२८ | ११०७४ | पंचांगुली जप-विधि | | १८८१ | २४x१०.५ | १-३ | जलाभिषिक्त<br>लि.क. अविचल विजयगणी<br>लि.स्था. जालोर महादुर्गे |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १०२९ | १२२१९ (२) | पक्षि शकुनावनी स-पृच्छा | | गु० १७५२ | २४x१०.५ | ३७-३९ | तीन पत्रों पर रंगीन चित्र तथा पेंसिल के खाके भी बने हुए हैं। |
| १०३० | १२५६५ (१७)७ | पखवाड़ो | डूंगरसी | २०वीं श० | १६x१२ | १२१-१२२ | १२२-१२३ पर सुजानमल और चद कृत स्फुट छंद हैं। |
| १०३१ | १२१७७ | पञ्चवीस (पच्चीस) बोल | | १९६८ | २७x१२.५ | १-३ | लि.क तोलाराम लि.स्था. सरदारशहर |
| १०३२ | १२५२८ | पञ्चदंडरीबात विक्रमादित्यरी | | १९वीं श० | १९.५x१३.५ | १-३१ | पत्र सं० २,२३-२८ अप्राप्त कीटविद्ध लि.क. सुजानसिंह राज्ये र स्था. वीकानेर |
| १०३३ | १२६१२ (१) | पट्टी पहाड़े | | १८१९ | २५x१५ | १-१० | गुटका अस्त-व्यस्त ढंग से लिखा गया है। पहाड़ों के ऊपर व नीचे शुभाषित दिए हैं। |
| १०३४ | १२२१९ (३) | पत्तनोत्पत्ति संग्रह | | गु० १७५२ | २४x१०.५ | ५३-५४ | संस्कृत में संवत् ८०२ वनराज के समय से १३६३ तक की हिन्दू राज्य-वंशावली है। कुमारपाल के समय की प्रमुख घटनाओं का भी उल्लेख है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०३५ | १०८४७ (२)१ | पद-संग्रह | रामचरणदास | १९९९ | १७x८ | ५८२-५८७,५९०,५९२,५९६,६०२,६३४, ६३६,६३७,६६६,६६७,६८५,७४२,७४५-७५० |
| १०३६ | १०८४७ (२.२ | पद-संग्रह | कबीरदास | १९९९ | १७x८ | ५८२,५८३,५९४,६०६,६०८,६११,६२९, ६३०,६३२,६३६,६३९,६४०-६४२,६६२-६६३,६६९,६७०,६७३,६७६,६८४,६८७, ६९१,७४४,७५३,७५५,७५७,७५८ |
| १०३७ | १०८४७ (२)३ | पद-संग्रह | काजीमहमद | १९९९ | १७x८ | ५८२-५८३,५९५ |
| १०३८ | १०८४७ (२)४ | पद-संग्रह | भगवानदास | १९९९ | १७x८ | ५८५,५८६,५८८,६०२,७४४ |
| १०३९ | १०८४७ (२)५-८ | पद-सग्रह | नरसी, मनसुखदास<br>बखतावर<br>मीरां | १९९९ | १७x८ | ५९१,६२५;६०८<br>६०८,६०९,६१०,<br>६०९,६१२,६१९,६२०,६२४,६२९,६३१, ६३२,६३८,६६५,६६८,६८१,६८३,६८७, ६८९-६९१,७५१,७५३,७५४ |
| १०४० | १०८४७ (२)९ | पद-संग्रह | तुलसीदास | १९९९ | १७x८ | ६१२,६३१,६३२,६८२,६८९ |
| १०४१ | १०८४७ (२)१०-११ | पद-संग्रह | जनतुरसी, सूरदास | १९९९ | १७x८ | ६१८,६१९,६६८;६१३,६३७,६३८,६६७, ६६८,६७३,६७४,६८१,६८८,७५२,७५५, ७५७ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०४२ | १०८४७ (२)१२-१५ | पद-संग्रह | नानूदास सुन्दरदास भरथरी, परमानन्द | गु० १९९९ | १७×८ | ६१३,६१४,६१७;६१४ ६१५;६१७ |
| १०४३ | १०८४७ (२)१६-२१ | पद-संग्रह | पेमदास, बखना हस्तीराम, श्यामसखी जनमुरली, नितानन्द | गु० १९९९ | १७x८ | ६२९;६३०,६७१ ६३०;६३१ ६३२;६३३,६३४ |
| १०४४ | १०८४७ (२,२२-२६ | पद-संग्रह | नागरीदास, नन्ददास अग्रदास, रसिकनाथ हरिदास | गु० १९९९ | १७x८ | ६३३;६३८ ६३८;६३८ ६४२ वां |
| १०४५ | १०८४७ (२)४१-४६ | पद-संग्रह | जैतराम, गरीबदास दादूदयाल, हुसैनफकीर भवानीदास, आसाराम | गु० १९९९ | १७x८ | ६८०;६८१ ६८६;६८७ ६८८;६९२ |
| १०४६ | १०८४७ (२)३५-३८ | पद-संग्रह | बालसखी, चिमनी | गु० १९९९ | १७x८ | ६६५;६६९-६७० |
| १०४७ | १०८४७ (८)१-२ | पद-संग्रह | रामसखी, नेमराज छीतमदास, माधोदास | गु० १९९९ | १७x८ | ६७२;६७५ ७५१;७५६ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०४७ | १०८४६ (१६) १७-१९ | पद-संग्रह | मीरां, सुखराम<br>बुधानन्द | गु० १९३१ | १७×११ | १३१;१३२<br>१३२ वां |
| १०४८ | १०८४६ (२१)१-१० | पद-संग्रह | रामदास, सेवादास<br>ग्वालबाल, पूरण<br>नेमनाथ, कबीरदास<br>नामदेव, काजीमैमद<br>वैरागी, तुरछीदास | गु० १९३१ | १७×११ | १६१,१६३,१६४,१६५,१६६;१६२,१६३<br>१६४;१६५<br>१६५;१६७<br>१६७;१६८<br>१६८;१६९ |
| १०४९ | १०८४६ (२९)१-७ | पद-संग्रह | दीनफकीर, सूरदास<br>कबीरदास, आत्माराम<br>सुखदेव, सुन्दरदास<br>दीनदरवेश | गु० १९३१ | १७×११ | २१८;२१९<br>२२०;२१९<br>२२१;२२२<br>२२२ वां |
| १०५० | १०८४६ (१६)१-१० | पद-संग्रह | रामदास, हरिराम<br>कबीर, बखतभारती<br><br>हरिदास, सूरदास<br>अग्रदास, परसराम<br>रिणछोड़, सेवकराम | गु० १९३१ | १७×११ | ८९-९०, ९३; ९१, ९४<br>९५, ११७, ११८, ११९, १२८, १३०, १३१, १३३; ९६-९७;<br>९७; ९८, ९९;<br>९९,१००,१०१-११०, ११५-११६<br>११८;१११,११४,१२७,१२८,१२९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०५२ | १०८४९ (११) ११-२२ | पद-संग्रह | नरसी, कीतो, राघोदास, माधोदास, मीरां बनारसी, अज्ञात अखैराम, कविगंग हरिराम, द्यालबाल रामदास | गु० १९३१ | १७x११ | ८; ८; ८ ८;८, ९ ९;९-१२ १०; ११ वां १३-१६; १७, १८, १९ १७,१८ |
| १०५१ | १०८४९ (११) १-१० | पद-संग्रह | कबीरदास, नामदेव सुन्दरदास, सूरदास जनतुरसी, हरिदास कान्हड़दास, पीपा जगजीवन, खेम | गु० १९३१ | १७x११ | २, ५; ४, १९ ४, ५; ५, १९ ५, १०, १२; ६ ६; ६, ७ ७; ७ |
| १०५३ | १०८४९ (१६) ११-१४ | पद-संग्रह | नरसी, द्यालवाल रामसखी, बखना | गु० १९३१ | १७x११ | ११९, १२०; १२० १२०; १२१ |
| १०५४ | १०८५१ (५) १-२ | पद संग्रह | घड़सी, संतदास | १७९२ | १५.५x१० | १८३; १८५ |
| १०५५ | १०८५१ (३) २२-२५ | पद संग्रह | रामानद, तुलछी, हरिदास, सुखदेव | १८ वीं श० | १५.५x१० | ११०-१११, ११३-११४, १८७-१८९ १२१;१२१-१२२ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०५६ | १०८६१ (४)१-७ | पद-संग्रह | हुसैनफकीर, सूरदास कबीर, गंगाराम तुलसी | १९ वीं श० | १६x१२ | ३० वां; ४५-५०,६७,६८ ; ६६,६७ ६८,६९,७५ ७५-७६ पर कालू कृत मरसिया है। |
| १०५७ | १०८६२ (३) १, ३-५, | पद-संग्रह | चन्द्रसखी, अज्ञात कबीर, धरमदास | गु० १८९८ | १७x१४ | १७,१९,२४-२५,२७ ; १८ १८,२२,२३ ; १८-१९,२४ |
| १०५८ | १०८६२ (३)६-१० | पद-संग्रह (रागबद्ध) | अज्ञात, तुलसीदास हसतराम, अज्ञात | गु० १८९८ | १७x१४ | १९,२०,२४ ; २०,२२ २०-२१,२७ ; २१ |
| १०५९ | १०८६२ (३)११-१६ | पद-संग्रह (रागबद्ध) | मीरांबाई, अज्ञात विसनदास, सूरदास बखतावर, परसोतम | गु० १८९८ | १७x१४ | २२,२५-२६ ; २३ २४ ; २५,२८-३० २६ ; २८-२९ |
| १०६० | १०८६२ (५) १-६ | पद-संग्रह (रागबद्ध) | बलवंत, ब्रजनिधि बखतावर, अज्ञात सूरदास, चत्रदास | गु० १८९८ | १७x१४ | १ ला १,७,९ ; ७,८ ८,१२ ; ९,१० |
| १०६१ | १०८६२ (५) ६, ११-१२ | पद-संग्रह (रागबद्ध) | अज्ञात, सुन्दरदास तुलसी | गु० १८९८ | १७x१४ | १० ; ११ १२ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०६२ | १०८६२ (५) १६, १८, २०, २२, | पद-संग्रह (रागबद्ध) | परसोतम, मीरांबाई कबीरदास, प्रेमसखी | गु० १८९८ | १७x१४ | १६; २०, २५, २६, २७, २८, २९, ३० २१-२४; २६, २७ |
| १०६३ | १०८६२ (५) २५, २७-२९ | पद-संग्रह (रागबद्ध) | रूपमती, जनतुरसी जन-हरिदास, सूरजकंवर | गु० १८९८ | १७x१४ | २८; ३० ३१; ३१, ३३, ३४ |
| १०६४ | १०८६४ (१) ६-१२ | पद-संग्रह (होली-राग बद्ध) | चत्रदास, धरमदास सूरदास, कबीर तुलसीदास; जनहरिदास अज्ञात | गु० १८९७ | १०.५x७ | ३-६३९; ४३-४४ ४४-४६; ४६-४८, ५०-५२, ६२-६३ ४८-५०; ५२-५६ ६४-६५ |
| १०६५ | १०८६४ (५) | पद-संग्रह | नामदेव | १८९७ | १०.५x१७ | १२५-१२६ |
| १०६६ | १०८६७ (१-२) | पद-संग्रह (रागबद्ध) | दयालदास, मोतीराम | १९ वीं श० १२ वीं श० | १८x११ १८x११ | ५१-५९; ५९-७० |
| १०६८ | १०८६७ (८) | पद-संग्रह | सूरदास | १९ वीं श० | १८x११ | ९२ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०६९ | १०८६८ (५)१-६ | पद-संग्रह | सूरदास, चरनदास<br>अग्रदास; रज्जब | गु० १९२७ | ८.५x७ | १८८ ; १८९<br>१८९ ; १९०-१९२ |
| १०७० | १०८६८ (५)६-१० | पद-संग्रह | आतमराम, जनतुरसी<br>दादू रामदास<br>कबीर, परसराम | गु० १९२७ | ८.५x७ | १९२ ; १९२-१९३<br>१९३ ; १९३,१९६,२०३<br>१९७,२०० २०२ ; १९७,२०० |
| १०७१ | १०८६९ (१)१-४ | पद-संग्रह | जैमलदास,हरिरामदास<br>रामदास, | गु० १९९२ | ८.५x७ | २-५ : ६-११,११-२०<br>२०-२७ |
| १०७२ | १०८९७ (२)१-२ | पद-संग्रह | जनरामा, हेमदास | २० वीं श० | १२x११ | १०१-११८ ; ११९-१३० |
| १०७३ | १०८९९ (५)११-१६ | पद-संग्रह | सुखदेव, बालकदास<br>कबीर, राजुल<br>हरिराम, रामदास<br>राघो, रामचरण<br>सूरदास, रामवल्लभ<br>बखना, बगताबर | २० वीं श० | १४x११.५ | ६२ ६४<br>६५-८३ ९१,९३,९४,९५,९६ ; ६५,६६<br>६७-७० ; ७१-७३,७४<br>८०,८१ ; ८१,८२<br>८२,८४,८५ ; ८८-८९<br>९०,९१ ; ९५ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०७४ | १०८९९ (५) १-१० | पद-संग्रह | परसराम, वगतराम<br>रामदास, मीरां<br>नरसी, द्यालबाल<br>सुखराम, सुरतराम<br>हसतराम | २०वीं श० | १४x११.५ | १५,१६,९७ ; ५४-५५<br>५५ ; ५५-५६,६०-६१,८५-८७ ८९,<br>९०,९५<br>५६-५७,९२-९३ ; ५७,७५-७९<br>५८-५९ ; ५९<br>६० |
| १०७५ | १०९३२ (२) | पद-संग्रह | रामचरणदास | गु० १९२८ | १७x१३.५ | ३४३-३७८ |
| १०७६ | १०९३३ (२) १ | पद-संग्रह | रामचरणदास | गु० १९४० | १३.५x८.५ | ६०२-६०५,६०८-६१०, ६२०-६२१,<br>६२२-६२४,६२५, ६२६, ६२७, ६२८,<br>६३०१.६३१,६३२,६३५,६३६,६३८-<br>६३६,६४०-६४१,६४४,६४.५,६४७,<br>६९८,६६३-६६४ |
| १०७७ | १०९३३ (२) २-४ | पद-संग्रह | रामजन<br>कबीर<br>काजीमैमद | गु० १९४० | १३.५x८ ५ | ६०५,६११,६१२,६१७,६१८,६४२<br>६०६,६०७.६३२-३३३,६३६-६३७,<br>६४६,३४८,६५५<br>६०७ |
| १०७८ | T१०९३३ (४) | पद-संग्रह | मुकतिराम | गु० १९४० | १३.५x८.५ | ६९३,६९५ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०७९ | १०९३३ (२)५-७ | पद-संग्रह | मीरांबाई | गु०१९४० | १३.५×८.५ | ६१२,६४१,६४२-६४३,६४५-६४६ ६४९-६५०,६५१-६५२,६५३,६५४, ६६० |
| | | | भगवानदास | | | ६१५-६१६,६१७,६२०-६२१. ६२५-६२६,३२८-६३०,६६५ |
| १०८० | १०९३३ (२)८-१५ | पद संग्रह | दुल्हैराम | | | ६१८-६२० |
| | | | मनसुखदास,बगतावर रूपदास, परमानन्द तुरसी, पेम दादू, श्यामसखी | गु०१९४० | १३ ५×८.५ | ६३३ ; ६३४-६३५ ६३७-६३८ ; ६३९ ६४०,७६५२ ; ६४९ ६५०-६५१ ; ६५३ |
| १०८१ | १०९३३ (२)१६-२१ | पद-संग्रह | रामससखी, मुरली नागरीदास, बखनो पदम, सूरदास | गु०१९४० | १३.५×८.५ | ६५९ ; ६५४-६५५ ६५६ ; ६५७-६५८ ६६० ; ६६१-६६२,६६३ |
| १०८२ | १०९३६ (१) १ | पद-संग्रह | रामचरणदास | गु०१९३४ | १२.५×८.५ | १-४,६-९,१५-१७,२१,२६,३०-३५, ३६-३९,४३,४४,४५,४७, ४८, ५२, ५३,५७-६१,६३,८५-८६,१०५,१११, ११४,११५,१३७-१३८,१३९-१४१, १९४,२३०-२३१,२५०-२५१,२६१-२६२,३७१-३७२ पर कवित्ता हैं। ४१६-४१९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०८३ | १०९३६ (१) २ | पद-संग्रह | रामजन | गु० १९३४ | १२.५x८.५ | ४,११-१२,१९-२१,२८,३१,३६-३८, ४५,४६,५४,६४,२५१-२५२ |
| १०८४ | १०९३६ (१) ३ | पद-संग्रह | कबीरदास | गु० १९३४ | १२.५x८.५ | ५,२२,२३,३२,५१,६४,६५,७०,८७, ९२,११२, ११५, ११६, १२०, १२१, १३१,१३३,१३५,१३६, १५२-१५५, १५६,१६०,१६२-१६३,१६५-१६६, १७७,१८७-१८९,१९३, २०१, २०४, २०८-२११,२१५-२१६,२३२-२३३, २३५-२३६,२४३-२४४,२५५-२५६, २६७-२७१,२८३,२८६,३७२-३७३ |
| १०८५ | १०९३६ (१) ४-५ | पद-संग्रह | काजीमहमद<br>भगवानदास | गु० १९३४ | १२.५x८.५ | ६,३३,३४,७९-८०<br>१०-११,१८.१९,३१-३२,४०,४१,४९-५०,५४,५५,७७-७९ |
| १०८६ | १०९३६ (१) ६ | पद-संग्रह | मीरांबाई | गु० १९३४ | १२.५x८.५ | १५,६२,६७,७१-७३,७५ ७६,८०-८१ ८६-८७ ९०,९१, ९२, ९४, ९६, ९७-१०४,१०५, १०६-११०, ११२-११३, ११६,११७-११८,१२८, १२९, १३०, १३२,१४३,१४५,१४६, १४७-१५०, १५५,१७१-१७३,,१७५-१७७, १७८, १८२,१८६,२०५-२०७,२०९, २३१-२३२,२३४-२३५,२३६-२३८,२४१-२४२,२५६-२५८,२६६-२६७, २७३, २७४-२७५,२७९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०८७ | १०६३६ (१) ७-९ | पद-संग्रह | नरसी<br>दुल्हैराम, नामदेव | गु०१६३४ | १२.५x८.५ | २३,२४-२५,१०६,१५८,१९२,२१३,<br>२७७-२७९<br>३१,४२,१३९,१८०,२८५ ; ३४ वां |
| १०८८ | १०६३६ (१) १० | पद-संग्रह | सूरदास | गु०१६३४ | १२.५x८.५ | ५०-५१,६७,७४,१०४,१४१-१४२<br>१५१,१८१,१८२-१८४,१८५, १९८-<br>२००,२०२,२३३-२३४,३३९-२४०,<br>२४२,२४५,२७३,२८२ |
| १०८९ | १०६३६ (१)११-१८ | पद-संग्रह | तुलसीदास,मनसुखदास<br>बखतावर, रूपदास<br>नानू, सुन्दरदास<br>अज्ञात | गु०१६३४ | १२.५x८.५ | ५६,७४,७५,१३०,१३३,१३४,१५०-<br>१५१ ; ६५ वां<br>६५-६६,६७,६९,१६९ ; ७०-७१<br>७६,८३-८४,२०३ ; ७७ वां<br>८१-८२ ; ८२-८३ पर गोपीचन्द का<br>गीत है। |
| १०९० | १०६३६ (१)१९-३० | पद-संग्रह | जनतुरसी परमानंद<br>जनहरिदास, दादू<br>पेम, कान्हड़<br>बखनो, ब्रजनंद<br>हसतराम, श्यामसखी<br>हुसैन, मुरली | गु०१६३४ | २१.५x१४.५ | ८४,८८-८९,९०,१८६, १९७, २१२-<br>२१३,२६२-२६३,२८७-२८८ ; ८८<br>९३ ; ९५-९७,१२२-१२६,१४६,२५४<br>११७ ; ११९<br>१२२,१९४,१९५-१९६,२५२,२५३ ;<br>१२७,१२७-१२८ ; १३१<br>१३२ ; १३२,१५९,१६४,१८३-१८४ |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०९१ | १०९३६ (१)३१-४१ | पद-संग्रह | नित्यानंद, रामसरण | गु०१९३४ | १२.५×८.५ | १३४,२११-२१२ ; १३५ |
| | | | नागरीदास, नंददास | | | १३५-१३६ ; १४२ |
| | | | रैदास, अग्रदास | | | १४४ ; १४४-१४५ |
| | | | निरभैराम, सूरजकंवर | गु०१९३४ | | १५६-१५७,२६०-२६१,२७१-२७२;१५९ |
| | | | रूपां, गंगादास | | | १५८-१५९ ; १६०-१६१ |
| | | | गुलाबजन | | | १६४-१६५ |
| १०९२ | १०९३६ (१)४२-५२ | पद-संग्रह | पूरनदास, किसोर | गु०१९३४ | १२.५×८.५ | १६६-१६७ ; १६७-१७० |
| | | | पदम, | | | १७४-१७५,१७९,२७५ |
| | | | पोहौकर | | | १७८,२३०,२४६,३७३-३७४ |
| | | | बालसखी,चिमनीविरहन | | | १८१ ; १८९-१९० |
| | | | जैतराम, रामसखी | | | १९१,२४७-२५० ; १९६ वां |
| | | | सिवरी, अज्ञात | | | २१२ ; २१३-२१५ (लावणी) |
| | | | सेवाराम | | | २१७-२१८ र.का.१८६९रामपुरागढ़ में |
| १०९३ | १०९३६ (१)५८-६१ | पद-संग्रह | खेम, गंगाधर | गु०१९३४ | १२.५×८.५ | २७४ ; २७९-२८१ |
| | | | लाखो, तानसेन | | | २८१-२८२ ; २८३ |
| १०९४ | १०९३९ (४) | पद-संग्रह | रज्जब | गु०१९३४ | १४×८ | ७०७-७४८ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०९५ | १०९४० | पद-संग्रह | सेवादास | गु०१८८३ | १५.५x१०.५ | ५१७,५२२,५२३ |
| | (७)१-१० | | कबीर | | | ५१७,५३०,५३१,५३२,५३३,५३६ ५५०,५५१,५७२,५८०-५८१,५८२, ५८४, ५८६ |
| | | | गोपाल | | | ५१८,५३५,५६५ |
| | | | जगंनाथ | | | ५१८-५१९.५४३,५४४-५४५,५५९-५६३ |
| | | | अग्रदास, सुखराम | | | ५१९-५२१,५२३,५७२,५७३,५२४ ५२४,५२५,५४३,५५२ |
| | | | रज्जब, वाजीद | | | ५५३,५७६,५७८,५७९ ; ५२६ |
| | | | अज्ञात, नामदेव | | | ५२६,५३०,५३९-५४२,५६४ ; ५३२ |
| १०९६ | १०९४० | पद-संग्रह | सनेहीराम, अग्रदास | गु०१८८३ | १५.५x१०.५ | ५३४ ; ५३५-५३५-५३९ पर श्लोक है |
| | (७)११-२४ | | सेवादास, तुरसी | | | ५४४ ; ५४५ |
| | | | चत्रदास, नवलराम | | | ५४६ ; ५४६-५४७ |
| | | | चन्द, कविगद | | | ५४७ ; ५४७-५५० |
| | | | मालमदास, किसनदास | | | ५५० ; ५५१ |
| | | | मुरारदास, मंडण | | | ५५१ ; ५५६-५५८ |
| | | | बिसनदास | | | ५५८ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १०९७ | १०९४० (७)२५-३५ | पद-संग्रह | गिरधरकविराय<br>केसोदास, नरसी<br>खेम, रैंदास<br>बखना, जनहरिदास<br>मीरां, काजीमहमद<br>सूरदास, सुन्दरविरहन | गु०१८८३ | १५.५x१०.५ | ५५८,५५९<br>५६३ ; ५६५,५७३<br>५६६ ; ५६७<br>५६७ ; ५६८-५६९,५८३<br>५६९,५७०,५७१,५८२ ; ५६९,५७०<br>५७०,५८४,५८५ ; ५७३ |
| १०९८ | १०९४० (७)३९-४१ | पद-संग्रह | जगजीवन, नापो<br>नानग | गु०१८८३ | १५.५x१०.५ | ५८१ ; ५८३<br>५८३ |
| १०९९ | १०९४१ (३)१-१३ | पद-संग्रह | जीवनदास, कबीर<br>अग्रदास, दादू<br>बखतावर, ब्रिजानंद<br>नरसिंह, जनहरिदास<br>मीरां, रसिकनाथ<br>रैंदास, गैबीराम<br>सूरदास | गु०१९३७ | १७x१०.५ | ९९ ; ९९,१००<br>१०० ; १००,१०३<br>१०१ ; १०१<br>१०१ ; १०१<br>१०२,१०३,१०४ ; १०२<br>१०३ ; १०४<br>१०४ वा |
| ११०० | १०९४१ (७)१-२ | पद-संग्रह | रामजन, कबीर | गु०१९३७ | १७x१०.५ | १४३ ; १४४ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११०१ | १०६४२ (११)१-२ | पद-संग्रह | पोहोकर | २०वीं श० | १३×६ | २७१-२७३ |
| | | | कबीरदास | | | २७३-२७५,३०१,३३७.३३८,३६०, ३६२-३६५,३६८,३७०-३७१, ३८०-३८१ |
| ११०२ | १०६४२ (११)३ | पद-संग्रह | सूरदास | २०वीं श० | १३×६ | २७५-२७६,२८१-२८२,२८६-२९२ २९८,३०८-३१०,३४७,३४९-३५० |
| ११०३ | १०६४२ (११)४-८ | पद-संग्रह | मीरांबाई | २०वीं श० | १३×६ | २७६-२७८,२८५-२८६,३००,३०२-३०३,३३९,३४१-३४५,३५२-३५६, ३५८-३५९ |
| | | | तुलसीदास,लिछमणदास | | | २८३-२८५ ; २९२-२९४ |
| | | | सेवादास, नाभादास | | | २९४-२९५ ; २९५-२९७ |
| ११०४ | १०६४२ (११)९-२० | पद-संग्रह | तुरसी, नामदेव | २०वीं श० | १३×६ | २९९,३१६-३१७,३३६ ; ३०४-३०५ |
| | | | खेम, रामसखी | | | ३०५-३०८ ; ३११ |
| | | | अज्ञात, अज्ञात | | | ३११-३१३ ; ३१३-३१४,३७२-३७५ |
| | | | नैनूदास, रामचरण | | | ३१५-३१६ ; ३१९-३२०,३३३-३३५, ३६९-३७० |
| | | | नरसी | | | ३२०-३२१,३२९-३३२ ; ३६१-३६२ |
| | | | सीतलपुरी, कानड़दास | | | ३२१-३२४ ; ३२४-३२५ |
| | | | जनमाधो | | | ३२५-३२७ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११०५ | १०६४२ (११) २१ ३४ | पद-संग्रह | दुल्हैराम, रूपदास | २०वीं श० | १३x६ | ३२७-३२८ ; ३३५-३३६ |
| | | | मनसुखदास, बखतावर | | | ३३८ ; ३३९, ३४०, ३८१-३८२ |
| | | | काजीमैमद, नंददास | | | ३४१ ; ३४८ |
| | | | नित्यानंद, बखना | | | ३४९ ; ३५०-३५२ |
| | | | रैदास, मुरली | | | ३५७, ३९१ ; ३६५-३६७ |
| | | | दादू, कालू | | | ३७१-३७२ ; ३७६-३७९ |
| | | | अज्ञात, किसोर अलि | | | ३८२-३८५ रेखता ; ३८५-३९० |
| ११०६ | १०६४४ (६) १-१२ | पद-संग्रह | पोहौकर | २०वीं श० | ८x५ | २४१-२४३ |
| | | | सूरदास | | | २४३-२४४, २४८-२४९, २५२-२५७, २६२-२६३, २७२-२७४, २९६-२९७, २९८-३०१ बारामासी |
| | | | मीरां | | | २४४-२४७, २५१-२५२, २६४, २६६-२६७. ३१७-३१९ |
| | | | तुलछीदास, लिछमणदास | | | २४९-२५१ ; २५७-२५८ |
| | | | सेवादास, नाभादास | | | २५९ ; २६०-२६२ |
| | | | जनतुरसी, कबीर | | | २६३-२६४, ३७५; २६५, ३२२-३२३, ३२६-३२७ |
| | | | नामदेव, खेम | | | २६८ ; २६९-२७१ |
| | | | रामसखी, | | | २७४ |
| ११०७ | १०६४४ (६) २५-२९ | पद-संग्रह | ननूदास, रामचरण | २०वीं श० | ८x५ | ३७३-३७४ ; ३७६-३७८ |
| | | | सीतलपुरी, कांनड़दास | | | ३७९-३८१ ; ३८२ |
| | | | माधोदास | | | ३८३-३८४ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११०८ | १०९४५ (३)१-६ | पद-संग्रह | रामजन, रैदास<br>जनहरिदास, नरसी<br>दादू, कांनड़दास<br>बखना | २०वीं श० | १४.५x७.५ | ३३२-३३३ ; ३३३,३९४-४००<br>३३४ ; ३३५<br>३३५-३३६ ; ३३६-३३७<br>३३७-३३८ |
| ११०९ | १०९४५ (३)११-१९ | पद-संग्रह | पोहौकर, खेम<br>कबीर, मीरां<br>तुरसी, रामसखी<br>ज्ञानसखी, तुलछीदास<br>रसिकनाथ | २०वीं श० | १९५x७.५ | ३९०-३९७ ; ३९७<br>६९८-३९९,४०० ; ४०१<br>४०२ ; ४०२<br>४०२ ; ४०३-४०५<br>४०५ |
| १११० | ११०९१ (३) १-५ | पद-संग्रह | नरसी, रामगिरि<br>मांनदास, चन्द्रसखी | २०वीं श० | १६x१२ | १२५-१२९ ; १२९-१३०<br>१३० वां ; १३१-१३२ |
| ११११ | १११७८ (१०) १-२,७-९ | पद-संग्रह | सूरदास, किसोरजन<br>तुलसीदास,भगवानदास | गु०१७५१-१७९२ | १५.५x१२ | ७८-७९.९४-९५ ; ७९-८०<br>९७-९८ ; ९९-१०० |
| १११२ | ११५८३ (१) | पद-संग्रह | जनहरिदास | गु०१६९३ | १८x१५ | १-३ |
| १११३ | ११५८३ (११) | पद-संग्रह | बाजीद | गु०१६९३ | १८x१५ | ११६-११८ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १११४ | ११५८४ (२९) | पद-संग्रह | आनन्दघन, सूरदास<br>नैणसी | १८ वीं श. | १९.५x१६ | २१७ ; २१७<br>२१९-२२३ |
| १११५ | ११६४८ (७) १-१० | पद-संग्रह | सोझा, सुखानन्द<br>धना, सैना<br>मुरारि, मूलकदास<br>जंगी, बनारसी<br>काह्नजी | गु०१८५३ | २७x१६.५ | ३२७ ; ३२८ रागबद्ध-<br>३२८ ; ३२८<br>३२८ ; ३२८-३२९<br>३२९ ; ३२९<br>३२९-३३० |
| १११६ | ११६४८ (७)११-२१ | पद-संग्रह | व्यासभगत, पूरणदास<br>नरिया, नंददास<br>चत्रदास, माधोदास<br>धरमसी, बालमीक<br>नाप, मुकंदभारती<br>छीतमदास | गु०१८५३ | २७x१६ ५ | ३३० वां<br>३३१ वां<br>३३२ वां<br>३३२-३३३ |
| १११७ | ११६४८ (७)२२-३० | पद-संग्रह | गैब, मछिन्द्रनाथ,<br>नैनोदास, छाजू<br>नानिक, सूरदास<br>अंगद, भावनजी<br>डूंगरसी | गु०१८५३ | २७x१६.५ | ३३४ वां<br>३३४-३३५ ; ३३५-३३६<br>३३६ वा<br>३३७ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (स. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १११७ | ११६४८ (७)३१-३७ | पद-संग्रह | बोहथदास, सीहाजी, ग्यांनतिलोक | गु०१८५३ | २७×१६.५ | ३३७ वां |
| | | | मतसुन्दर, सोमजी | | | ३३७-३३८ ; ३३८-३३९ |
| | | | काजीमेहमद | | | ३३८-३३९ |
| १११८ | ११६४८ (७)३८-५० | पद-संग्रह | सेखवहावदी, विद्याधर | गु०१८५३ | २७×१६.५ | ३३९ वां |
| | | | हरदास, परमानन्द | | | ३४० वां |
| | | | अग्रदास, तुलछीदास | | | ३४०-३४१; ३४१ |
| | | | वैणीदास, कांनड़दास | | | ३४१ वां |
| | | | दिवाकर, | | | |
| | | | दास, रुघदास | | | ३४२ वां |
| | | | जनगोपाल, अज्ञात | | | ३४२-३४३ |
| १११९ | १२२१४ (३) | पद-संग्रह | सेवादास | १९वीं श० | २१.५×१३ | ३९-४९,५०-५४ |
| | | | तुरसी | | | ४९,६२,६३,६४ |
| | | | कबीरदास | | | ४९,५५-५७,६४,६६ |
| | | | जनहरिदास | | | ४९,६०-६२,६४ |
| ११२० | १२२२६ (२४)१-५ | पद-संग्रह | अज्ञात, नामदेव | गु०१८७७ | १४×१२.५ | ६४०-६४३ ; ६४३-६४७ |
| | | | रैदास, पीपा | | | ६४७ ; ६४८-६४९ |
| | | | रामानन्द | | | ६४९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११२१ | १२२२६ (२६)१-१२ | पद-संग्रह | जगजीवन, वाजीद | १८७७ | १४×१२.५ | ६५२-६५५ ; ६५५-६५७ |
| | | | नैनोदास, काजीमहमद | | | ६५७-६५९ ; ६५९-६६२ |
| | | | जनहरिदास | | | ६६२-६६३ |
| | | | परमानन्द, वेणीदास | | | ६६३ वां |
| | | | कांनड़दास, नामदेव | | | ६६३-६६४ ; ६६४ |
| | | | शाहहुसैन, दास | | | ६६४-६६५ ; ६६५-६६७ |
| | | | कालू | | | ६६७-६६९ |
| | | | | | | ६६९-६७१ पर गोपीचन्द का पद है। |
| | | | | | | ६७२-६७५ पर संस्कृत में नारदगीता है |
| ११२२ | १२३११ (११)१-७ | पद-संग्रह | संतदास, रामचरण | गु० १९४० | १७.५×८.५ | ४७१-४७२ ; ४७३-४८२ |
| | | | रामवल्लभ, सुखराम | | | ४८२-५०९ ; ५०९-५१० |
| | | | हसतराम, मीरां | | | ५१०-५११ ; ५११-५१२,५१५-५१६ |
| | | | कबीरदास | | | ५१२-५१५ |
| ११२३ | १२३७८ (१३)१-१० | पद-संग्रह | जैमल, दादू; माधोदास | १८ वीं श० | २२×१५.५ | ९१ ; ९१ ; ९१ १०६ |
| | | | जनतुरसी, छीपो | | | ९२,९३,१०१ ; ९२ |
| | | | नामदेव | | | ९२,९४,९५,९६ |
| | | | केवलराम, रज्जब | | | ९२ वां |
| | | | बखना | | | ९२,९९ |
| | | | कबीर | | | ९२,९४,९५,९६,९७,९८, |
| | | | | | | ९९,१००,१०१ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११२४ | १२३७८<br>१३ ११-२० | पद-संग्रह | दादू, रैदास<br>सूरदास<br><br>नापा, जनहरिदास<br>छीतमदास, श्यामदास<br>हरदास, सुन्दरविरहन<br>जनगोपाल | १८वीं श० | २२x१५.५ | ९२,९८ ; ९३,९५,९९<br>९४,९५,१०१,१०२,१०३,१०४,१०५,<br>१०८<br>९७ वां<br>९९ वां<br>१०१ ; १०१,१०४<br>१०१,१०२,१०३,१०४,१०६ |
| ११२५ | १२३७८<br>(१३)२१-२३ | पद-संग्रह | वाजीद, केसोदास<br>लघुदामो | १८वीं श० | २२x१५.५ | १०३ ; १०७<br>१०८ |
| ११२६ | १२३७८<br>(१६)१-२ | पद-संग्रह | गरीबदास,काजीमहमद | १८वीं श० | २२x१५.५ | ११२,१३५ ; ११२ वां |
| ११२७ | १२३७८<br>(१९)१-५ | पद-संग्रह | विष्णुदास, जनतुरसी<br>सूरदास, परमानन्द<br>कबीरदास | १८वीं श० | २२x१५.५ | १३६ वां |
| ११२८ | १२३७८<br>(२३)१-४ | पद-संग्रह | खींवा, गरीबदास<br>बालकराम, सूरदास | १८वीं श० | २२x१५.५ | १४१ वां अंत में संस्कृत के सुभाषित हैं |
| ११२९ | १२३८०<br>(२१)१-४ | पद-संग्रह | हरिदास<br>कविगंग, शेख, अज्ञात | गु०१७२४ | २०x१४ | २२९<br>२३० ; २३०-२३३ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११३० | १२४२० (२)१-२ | पद-संग्रह | मीरां, भावनादास | गु० १९३४ | १६x१४ | ३४-३५ |
| ११३१ | १२४२० (७) | पद-संग्रह | जैमलदास | २०वीं श० | १६x१४. | ६-२१ |
| ११३२ | १२४२१ (१)१-४ | पद-संग्रह | जनदरिया, रामदास | १८९३ | १७x१२ | २-४ ; ५ |
| | | | नामदेव | | | ६,९,११,४२,४३,६५,६८-६९ |
| | | | कबीरदास | | | ६,९,१५,१७-१८,१९-२०,२१,२७,२९, ३१,३४,३८,४३,४५,४७-४९,५१,५२, ५४,५८,५९,६४-६५,६७,७० |
| ११३३ | १२४२१ (१)९-१७ | पद-संग्रह | नापा, रैदास | गु० १८९३ | १७x१२ | १०,५२,६५ ; ११,२७,३६,४१,६६,६८ |
| | | | परमानन्द, घड़सी | | | ११,५४,६९ ; १४ |
| | | | जनतुरसी, सूर दास | | | १५,२३ ; १५,४०,७१-७२ |
| | | | माधोदास, खेम | | | १६,३४,५०-५१ |
| | | | नैनोदास | | | १७ वां ; १८ वां |
| ११३४ | १२४२१ (१)१८-२५ | पद-संग्रह | मीरां, श्रीरंग | गु० १८९३ | १७x१२ | १९,२३,३३ ; २० |
| | | | जगजीवन, टीला | | | २१,६४ ; २३-२४,६८ |
| | | | पीपा, बखना | | | २७,३१,३६,६९ ; २८,४१,६२-६३,७१ |
| | | | कान्हा, केवलदास | | | ३१ ; ३२ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११३५ | १२४२१ | पद-संग्रह | चैंना, राघो; बनवारी | गु०१८९३ | १७x१२ | ३३ ; ३५ |
| | (१)२६-३७ | | नानगदास, गरीबदास | | | ३६ ; ३७,४४,६७ |
| | | | खींवां | | | ३८ वां |
| | | | परसराम,धना,संतदास | | | ४२ वां |
| | | | जगंनाथ, विद्यादास | | | ४३ वां |
| | | | रामदास | | | ४९ वां |
| ११३६ | १२४२१ | पद-संग्रह | हरदास, दादू | गु०१८९३ | १७x१२ | ५०,६९ ; ५१,५६ |
| | (१)३८-५१ | | जनबालमीक, वेणीदास | | | ५२ वां |
| | | | जनभगतां, जनहरिदास | | | ५३ वां |
| | | | जनमाणक | | | |
| | | पद-संग्रह | नाभा,पनहीदास शिष्य | | | ५५ ; ५७ वां |
| | | | संतदास, रामचरण | | | ५७-५८ ; ५९ वां |
| | | | लालदास, जनग्रंगद | | | ६६ ; ६९ वां |
| | | | नानिक, गोविन्ददास | | | ७० ; ७३ वां |
| ११३७ | १२४२१ | पद-संग्रह | ब्रह्मदास | गु०१८९३ | १७x१२ | २५१-२५२ |
| | (१८)१-३ | | तुलसीदास | | | २५२,२५९-६०,२६३-२६४,२६६,२७८ |
| | | | | | | २८५-२८६ |
| | | | कबीरदास | | | २५२-२५३,२६१, २६५, २६७-२६८, |
| | | | | | | २७०,२७१,२७९,२८१,२८६-२८७ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११३७ | १२४२१ (१८)४-१० | पद-संग्रह | नरसी, गोविन्द<br>पीपा<br>सदाराम, धीर ; मंछ<br>सूरदास | गु०१८६३ | १७×१२ | २५३ ; २५४ वां<br>२५५ वां<br>२५६ ; २५७-२५८<br>२५८ वां |
| ११३८ | १२४२१ (१८)११-२१ | पद-संग्रह | सुखिया, बगतावर<br>माधोदास, रामजन<br>मीरांबाई<br>रूपदास, दादू<br>माणक, खेम<br>बखना, अज्ञात<br>रामचरण | गु०१८६३ | १७×१२ | २६०-१६१ ; २६१,२८१<br>२६३ ; २६५<br>२६६,२६६,२७४,२७६,२८०,२८३<br>२६८ ; २६६,२८३<br>२७०-२७१ ; २७२<br>२७२-२७३ ; २७३-२७४<br>२७५-२७६,२८४-२८५ |
| ११३९ | १२४२१ (१८) २२-२६ | पद-संग्रह | ललनासखी, कांनड़दास<br>सहजराम<br>क्रिपासखी, जनतुरसी | गु०१८६३ | १७×१२ | २७६-२७८ ; २७६<br>२८०-२८१<br>२८२ वां |
| ११४० | १२४२१ (२१)५-८ | पद-संग्रह | किशनदास, रज्जब<br>जनगोपाल<br><br>सुन्दरबिरहन | गु०१८६३ | १७×१२ | ७ ; ७-८,१४,२६,३६,४५,५३<br>८,२२-२३ २६,३०,३२,३७,३६,४०<br>४५-४७,६३-६४<br>६-१०,१२,१३-१४,२४,२५-२६,२८-२६,३५,६०-६२,७०-७१ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११४१ | १२४२२ (७-११) | पद-संग्रह | रुघनाथ, सती<br>भरथरी, हणवंत<br>हालीपाव | गु०१८६३ | १५×१०.५ | २४७ वां<br>२४७-२४८ ; २४८-२४६<br>२४६ वां |
| ११४२ | १२४२६ (५) | पद-संग्रह | रैदास | २०वीं श० | १६.५×१३ | ६४-७३ वें-रागबद्ध |
| ११४३ | १२५४८ (४) | पद-संग्रह | सूरदास | गु०१८६० | १६×१२.५ | ३७-४० वें-पत्र ४१-४३ पर चौकी बद्ध कवित्ता है। |
| ११४४ | १२५५० (१)१-१० | पद-संग्रह | रसिकनाथ, गोविंदप्रभु<br>छीतस्वामी, चत्रभुज<br>नंददास, सूरदास<br>कुंभनदास, विठ्ठल<br>कृष्णदास, परमानन्द | १६वीं श० | १६.५×१३ | १-२ ; २-३<br>४-५ ; ५-६<br>६ ७ ; ८ वां<br>८-६ ; १०<br>११-१२ ; १२-१३ |
| ११४५ | १२५६१ (१७)१-४ | पद-संग्रह | दादू,कबीर; रज्जब<br>वाजीद | १६वीं श० | २३.५×१७ | ३६६ ; ३७०-३७१<br>३७१-३७२ |
| ११४६ | १२५७० (४) १-३ | पद-संग्रह | रज्जब ; कबीर,तुलसी | २०वीं श० | ६ ५×६.५ | ३६ ; ३७ वां |
| ११४७ | १२५७० (५)१-६ | पद-संग्रह | तुलसी, मलूकदास<br>कबीर, चरनदास<br>जनतुरसी, सूरदास<br>परसराम, बालकृष्ण<br>किसोरअलि | १६वीं श० | ६.५×६.५ | २ ; २-३ गुटका पत्र सं० १-३७ तथा<br>३-५ ; ५ वां-१४० से अन्त तक एक<br>५-६ ; ६ वां-ही द्वारा लिखा गया है।<br>६-७ ; ८ वां-<br>६ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | जैमलदास | १९वीं श० | १०.५x८.५ | २-५ वें |
| ११४८ | १२५७२ (१) | पद-संग्रह | पेमदयाल | १९वीं श० | १४.५x१० | ९७-१०३,१०५,१०७-११६ |
| ११४९ | १२५७७ (८) १-२ | पद-संग्रह | संतोकदास | | | १०३-१०५, १०६-१०७ |
| ११५० | १२५७७ (९) १-२ | पद-संग्रह | कबीरदास, आत्माराम | १९वीं श० | १४.५x१० | १२७ वां |
| | | | अज्ञात | | | १२७-१२९ |
| ११५१ | १२५७७ (११) १-६ | पद-संग्रह | बालकदास, पेमदयाल | १९वीं श० | १४.५x१० | १३०-१३५ बारहमास ; १३५-१३७ |
| | | | संतोकदास, नंददास | | | १३७-१३८,१३९-१४४ ; १३८ |
| | | | वाजीद, मछंदरनाथ | | | १४५-१४६ ; १४७ |
| | | | कबीर | | | १४८-१४९,१५०,१६०,१६६,१६८, १७४,१८१-१८३-१८४ |
| | | | पीपा, सुन्दरदास | | | १४९ ; १४९-१५० सवैये |
| ११५२ | १२५७७ (११) ११-२२ | पद-संग्रह | रंदास, मीरां | १९वीं श० | १४.५x१० | १५८ ; १५८.१७२,१७५-१७८,१८२ |
| | | | घाटमदास मीणां | | | १५९ ; वां |
| | | | जनधनजी, परसराम | | | १६० ; १६१ |
| | | | सुखदेव, अज्ञात | | | १६५ ; १६९ |
| | | | रामचरण, नरसी | | | १६९-१७०,१७५,१८४ ; १७१ |
| | | | बगतावर, सूरदास | | | १७२-१७३ ; १७३,१७९-१८१ |
| | | | रामसखी | | | १८३ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११५३ | १२५८१ (३)१-११ | पद-संग्रह | सूरदास, मीरां<br>आनन्दघन,सुन्दरविरहन<br>बखनो, कबीर<br>अज्ञात ; नापो, मुकंद<br>परमानन्द, हरिदास | १९ वीं श. | १६x१०.५ | २८,२९ ; २८<br>२९ ; २९-३१,३३<br>३२ ; ३३,३८-३९<br>३४ ; ३५<br>३५-३६ ; ३६-३७ |
| ११५४ | १२५८१ (६) १-५ | पद-संग्रह | कबीरदास, हरिदास<br>बुधानंद, गंगादास<br>रूपदास शिष्य हरिदास | १९ वीं श | १६x१०.५ | ४२,४३,४५ ; ४२-४३,४४-४५<br>४३ ; ४५<br>४६ वा |
| ११५५ | १२५८१ (१५)१-२ | पद-संग्रह | विष्णुदास, शिवदत्त | १९ वीं श. | १६x१०.५ | ९३-९४ ; ९४-९५ पर स्फुट कवित्त हैं।<br>९५-९६ ९ |
| ११५६ | १२५८६ (१)१-५ | पद-संग्रह | कबीरदास, मीरां<br>अमरदास, दुलहराम<br>जनतुरसी | १९ वीं श. | १२x९.५ | १-२ ; २ ४,६,८८-९०<br>३-३४<br>६ ठा |
| ११५७ | १२५८८ (२)१-४ | पद-संग्रह | संतदास<br>रामचरण<br><br>चेतनदास<br>रामजन | १९ वीं श. | १२.५x८ | ३७-३९ वें<br>४०-४२,४४,४६-४७,४९,५१,५३-५५,<br>५८-५९,६१-६४,६५-६६,७१-७२<br>४२,४७,५१,५६,६५,७०,७३,७७<br>४३,६०-६१,६७-६८,७३ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११५७ | १२५८८ (२,-४६ | पद-संग्रह | रामरस | १९वीं श० | १२.५×८ | ४८,५०,५२,५६-५७,६९,७४-७५,७८ |
| | | | सुखदेव | | | १२४ वां |
| ११५८ | १२५८८ (२)२-५ | पद-संग्रह | रामचरण | १९वीं श० | १२.५×८ | ७६-७७,७८-८२,८५-८७,९०-९२,९६, १००-१०२,१०४,१०८-१०९,१११-११३,११४-१२०,१२१-१२२ |
| | | | चेतनदास | | | ७७,८२-८३,१०३,१०५,१०७-१०८, ११३,१५४ |
| | | | रामजन | | | ८७-९०,९२,९८ |
| | | | रामरस | | | ८४,९४-९६,९७,९८-१००,१०३-१०४, १०६-१०७, १०९-११०, ११४,१२०-१२१,१२२-१२४,१४१-१४४ |
| ११५९ | १२५८८ (२)७-१४ | पद-संग्रह | कबरीरदास | १९वीं श० | १२.५×८ | १२५-१२६,१२९-१३०,१३६,१३७ |
| | | | नानिग | | | १२६ वां |
| | | | मीरांबाई | | | १२७,१३२,१३५,१४६-१५०,१५२-१५३ |
| | | | शेखफरीद, तुरसीदास | | | १२७-१२९ ; १३०-१३१,१३९ |
| | | | नागरीदास, देवादास | | | १३१ ; १३२ |
| | | | नरसिंह | | | १३३ वां |
| ११६० | १२५८८ (२)१५-२३ | पद-संग्रह | सूरदास, भगतराम | १९वीं श० | १२.५×८ | १३४-१३५,१३६,१४०,१५१ ; १३७ |
| | | | ब्रिजानन्द, चरनदास | | | १३८ वां |
| | | | हसतराम, नित्यानन्द | | | १३९ ; १४० त्रां |
| | | | फकीरदास, चन्द्रसखी | | | १४५ ; १५० वां |
| | | | नन्दानन्द | | | १५३ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११६१ | १२५८६ (४,१-६ | पद-संग्रह | कबीरदास | १९६६ | १७×१३ | १७५-१७६,१७९,१८०-१८१,१८५, १८६-१८७ |
| | | | सूरदास | | | १७७,१९०,१८३-१८४ |
| | | | चन्द्रसखी. तुलछीदास | | | १७७ ; १७८ |
| | | | जनमुरली, जनमंगल | | | १७८,१८२ ; १८५-१८६ |
| ११६२ | १२५९० (१)१-७ | पद-संग्रह | जनहरिदास | १८४० | १६x१२ | १-१२,२३,२८,३० |
| | | | सूरदास | | | १,१७,१८-१९,२४-२६,३१-३२ |
| | | | जनतुरसी | | | १२-१३,१९-२०,२१-२२,२३-२४,२७,४३ |
| | | | कबीरदास | | | १३-१४,१६-१७,२०,२१,२६,२९,३२, ३४,४३ |
| | | | बुधानन्द | | | १४,१८ |
| | | | सुन्दरदास, नैनोदास | | | १४-१५ ; १५ |
| ११६३ | १२५९० (१)८-२० | पद-संग्रह | बनारसी, तुलसीदास | ग्०१८४० | १६×१२ | १६ ; १८,१९ |
| | | | केसवदास, नापो | | | २६ ; २७,३३ |
| | | | बखनो, जगजीवन | | | २७-२८ ; ३० |
| | | | परमानन्द, मुकन्द | | | ३१ वां |
| | | | मीरां, परमराम | | | ३२,३३,३५-३६ ; ३४ |
| | | | गवीराम काजीमैमद | | | ३५ वां |
| | | | ग्रानंदघन | | | ३९ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११६४ | १२५६० (१)२१-२८ | पद-संग्रह | नागरीदास, भूतनाथ<br>नरसी. माधोदास<br>अभयराम, दादू<br>कांनड़, हरिवंश | १८४० | १६x१२ | ४० वां<br>४१,४२ ; ४१<br>४२ ; ४२-४३<br>४३ ; ४४ |
| ११६५ | १२५६१ (१)७-८ | पद-संग्रह | सुखदेव, दासकवि | २०वीं श० | १५.५x१० | १८-१९ ; १९-२० |
| ११६६ | १२५६१ (३)१-११ | पद-संग्रह | तुलछीदास, कबीर<br>बगतावर, ललितसखी<br>सूरदास, मीरां<br>सुरतराम, धरमदास<br>सुखराम<br>हसतराम, गंग | २० वींश० | १५.५x१० | ८६-८७ ; ८७,९७,१००-१०१<br>८८ ; ८८-८९<br>८९,९४,९६ ; ८९-९०,९८-९९<br>९०-९१ , ९१-९२<br>९२,९६<br>९३ वां |
| ११६७ | १२५६१ (६)१-४ | पद-संग्रह | हरिराम, रामदास<br>ग्वालबाल, सेवादास | २०वीं श० | १५.५x१० | ३९ ; ३९-४१<br>४१-४२ ; ४२-४३ |
| ११६८ | १२५६१ (१४ १-२ | पद-संग्रह | मलूकदास, दीनदरवेश | २०वीं श० | १५.५x१० | ८० ; ८२-८४,९७ |
| ११६९ | १२५६१ (१९)१-२ | पद-संग्रह | मलूकदास, बखना | २०वीं श० | १५.५x१० | ९९-१०० ; १०० वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (स. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११६९ | १२५६१ (१६)३-११ | पद-संग्रह | रामसखी, कबीर | २०वीं श० | १५.५×१० | १०१ ; १०२,१०३ |
| | | | हरिराम, परसराम | | | १०२ ; १०२,१०३ |
| | | | रामदास, भावनादास | | | १०३-१०४ ; १०४-१०५ |
| | | | गुपतराम, जनमुरली | | | १०५ वां |
| | | | नागरीदास | | | |
| ११७० | १२५६१ (२८) | पद-संग्रह | बगतराम | २०वीं श० | १५.५×१० | १८४-१८७ |
| ११७१ | १२५६१ (३४)१-८ | पद-संग्रह | अखैमल, रामचरण | २०वीं श० | १५.५×१० | २१५ लावणीं ; २१६,२१७ |
| | | | सेवगराम, कबीर | | | २१७ वां |
| | | | सीतलसखी, सुखराम | | | २१८ बधावा ; २१८-२१९ |
| | | | द्यालवाल, भीखमदास | | | २१९ ; २१९-२२१ पखवाड़ा |
| ११७२ | १२५६२ (१)१-१० | पद-संग्रह | दासकवि, परसराम | १९वीं श० | १४×१०.५ | १ ; २-३ |
| | | | दादू; बापजी ? | | | ३ रा |
| | | | सुखमणदास | | | १ ला |
| | | | मीरांबाई | | | २,११-१३,१४,१५-१६,१८-२३,२६, २७,३०,३२,३४.४०,४२ |
| | | | विजैराम, कबीरदास | | | ३-५ ; ५,१०,१२,३६-३७,४१ ४३ |
| | | | द्यालवाल, सेवगराम | | | ५,१७,२४,२९,३०-३१,३८,५१,५२ ६-७ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११७३ | १२५९२ (१)११-२० | पद-संग्रह | तुलसीदास, बुधानन्द<br>जनहरिया, दादू<br>हरिदास, रामसखी<br>सांईदास, पूरणदास<br>बाईरांना, सूरदास | १९वीं श० | १४x१०.५ | ७-८,१६-१७,३२-३३-४१ ; ८-९<br>१०,१३,२८ ; १०-११<br>१४ ; १७<br>१८ ; १८,२४-२५,४४<br>२३ ; २४,४३ |
| ११७४ | १२५९२ (१)२१-३१ | पद-संग्रह | रसिकराम, अखैमल<br>रामदास, नरसी<br>जैमलदास, पेम<br>कृपासखी, परसराम<br>रूपदास, बगतभारती<br>ललितसखी,नागरीदास | १९वीं श० | १४x१०.५ | २५,२६ ; २६-२७<br>२९,३७-३८,५१ ; ३१-३२<br>३४,३५ ; ३४<br>३५ ; ३५,३६,३९<br>३७ ; ३८-३९,४८-४९<br>४० ; ४३-४४ |
| ११७५ | १२५९२ (१)३३-३७ | पद-संग्रह | दासगोपाल, धरमदास<br>सीतलसखी नामदेव<br>श्रीभट | १९वीं श० | १४x१० ५ | ४५-४७ बारामासो ; ४७-४८<br>४८ ; ५० वां<br>५२ वां |
| ११७६ | १२५९२ (३)१२-१७ | पद-संग्रह | रामदास, मुरलीराम<br>जनहरिया, सेजराम<br>पोहोकर, जैतराम | १९वीं श० | १४x१०.५ | ९४ ; ९५<br>९७-९८ ; ९९-१००<br>१०१-१०६ ; १०६-१०९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११७७ | १२५९२ (५)५-९ | पद-संग्रह | सूरदास<br>रूपदास, कबीरदास<br>जूणादास, जनभावन | १९वीं श० | १४x१०.५ | १३० वां<br>१३१<br>१३२-१३३ ; १३३-१३४ |
| ११७८ | १२५९२ (५)१०-१६ | पद-संग्रह | मीरां, नागरीदास<br>नरसी<br>व्रजानन्द, रतनसखी<br>ललितसखी,बगतावर | १९वीं श० | १४x१०.५ | १३५-१३७ ; १३७-१३८<br>१३८ वां<br>१३९ वां<br>१४०,१४१; १४०-१४१,१४१-१४२ |
| ११७९ | १२२२० (३२)१-२ | पद-संग्रह (अक्षय तृतिया के) | चत्रभुज, परमानन्द | १९वीं श० | १९x१६.५ | १०० ; १०१-१०२ |
| ११८० | १२२२० (३१)२-१ | पद-सग्रह (आचार्यजीके जन्म-उत्सव के) | तिलोक, कृष्णदास | १९वीं श० | १९x१६.५ | १००, १००-१०१ |
| ११८१ | १०८६६ (६)१-८ | पद-संग्रह एवं साखी | बनारसी, माधोदास<br>तुरसी, रामचरण<br>हरिराम, सुन्दरदास<br>कल्याण, अज्ञात | गु०१९२७ | ८.५x७ | २४२-२४३ ; २४३-२४५<br>२४५-२४६,४७८-४८० ; २४६ वां<br>२४६-२४७ ; २४७-२४९<br>२४९-२५० ; २५०-२५३ |
| ११८२ | १०८६६ (६)९-१४ | पद-संग्रह एवं साखी | जनरामा, रज्जब<br>परसराम, सेवादास<br>कबीर, किशनदास | गु०१९२७ | ८.५x७ | ४५६ ; ४५६-४५७<br>४५७.४६२-४६४ ; ४५८<br>४६४-४६८ ; ४६८-४७१ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११८३ | १२२१० (१)१-१० | पद-संग्रह (कृष्ण जन्म के) | गोविन्दस्वामी | १९वीं श० | १८x१३.५ | १०,२२ सभी पद राग बद्ध हैं। |
| | | | सूरदास | | | ११,१४-१५,१६-१७,१८,२१,२२-२३ |
| | | | चत्रभुजदास, विट्ठलदास | | | ११ ; १२ वां |
| | | | कुंभनदास, कृष्णदास | | | १२ ; १३ |
| | | | जगन्नाथ, नंददास | | | १३ ; १३-१४,२१ |
| | | | परमानंद | | | १७-१८,१९-२०,२१,२२,२४-२५ |
| | | | माधव | | | २३-२४ |
| ११८४ | १२२२० (६) | पद-संग्रह (छठी के) | लछिराम | १९वीं श० | १९x१६.५ | ६७-६८ |
| ११८५ | १२२२० (३)१-५ | पद-संग्रह (जन्म के) | सूरदास, परमानन्द | १९वीं श० | १९x१६.५ | ६१,६२,६३ ; ६१,६३-६४,६५ |
| | | | माधोदास, चत्रभुज | | | ६१ वां ; ६२ वां |
| | | | गदाधर | | | ६४ वां |
| ११८६ | १२२११ (३) | पद-संग्रह (जन्माष्टमीके) | सूरदास | २०वीं श० | १७x१३ | २०-२३ राग-देवगंधार |
| ११८७ | १२२०५ (५३)१-५ | पद-संग्रह (जैन) | रूपचन्द, जिनलाभ | १८वीं श० | १७x११ | १४३,१४५ ; १४३ |
| | | | आनन्दघन, दोलत | | | १४३-१४४,१४५ ; १४४ |
| | | | फतेचन्द | | | १४५ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११८८ | १२२२० (५) | पद-संग्रह (ढाढी के) | सूरदास | १९वीं श० | १९x१६.५ | ६७ वां |
| ११८९ | १२२१० (२) | पद-संग्रह (ढाढी के) | सूरदास | १९वीं श० | १८x१३.५ | २५,२६ वां-राग धनाश्री |
| ११९० | १२२१० (२३)१६-१७ | पद-संग्रह (धमारि के) | कृष्णदास, मुरारि | १९वीं श० | १८x१३.५ | १३८-१३९ ; १४७ राग-गोरी, अडानो |
| ११९१ | १२२१० २३)११-१४ | पद-संग्रह (धमारि के) | कुंभनदास, गदाधर लच्छीराम, रसिकदास | १९वीं श० | १८x१३.५ | १२८,१३९ ; १२१,१२२,१३१-१३२ १३३ १३४-१३५,१४८-१४९ ; १३७ वां |
| ११९२ | १२२१० (२३)१-५ | पद-संग्रह (धमारि के) | मानिकचन्द | १९वीं श० | १८x१३.५ | ११३-११४ |
| | | | चत्रभुज | | | ११४-११६,१३८,१४१,१४७-१४८ |
| | | | गोविन्दस्वामी | | | ११६-११८,१२५-१२६,१३०-१३१, १३९-१४१,१४३-१४४,१४६ |
| | | | माधोदास | | | ११८-११९ |
| | | | सूरदास | | | ११८-१२०,१३१,१३६,१३७,१४२,१४६ |
| ११९३ | १२२१० (२३)६-९ | पद-संग्रह (धमारि के) | परमानन्द | १९वीं श० | १८x१३.५ | १२१,१२४,१२६-१२७,१२९ |
| | | | नंददास | | | १२२,१३३-१३४ |
| | | | छीतस्वामी | | | १२३ वां |
| | | | अज्ञात | | | १२२-१२३,१२७,१३२,१३५, १३६,१४२,१४३,१४४-१४६,१४९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं में) | माप (सें. मी. में | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ११६४ | १२२२० (२७)१-१० | पद-संग्रह (धमारि के) | मानिकचंद, चत्रभुज<br>गोविन्दस्वामी, जनमाधो<br>जनहरिया, परमानंद<br>गदाधर, नंददास<br>छीतस्वामी | १६ वीं श० | १६x१६.५ | ८६ ; ८६-८७<br>८७-८८,६४ ; ८८-६१<br>६१-६२ ; ६२-६३<br>६३ वां<br>६४-६६ |
| ११६५ | १२२२० (३४)-१३ | पद-संग्रह (ध्यांन यात्रा के) | परमानन्द, सूरदास,<br>विट्ठलप्रभु | १६ वीं श० | १६x१६.५ | १०३ वां |
| ११६६ | १२२२० (३८)६-११ | पद-संग्रह (नित्य के) | विष्णुदास, जनभगवान<br>कृष्णदास, गोविन्दप्रभु<br>वल्लभ, आसकरन | १६ वीं श० | १६x१६.५ | १२१ ; १२२<br>१२२ ; १२३-१२४<br>१२४ वां |
| ११६७ | १२२२० (३८)१-५ | पद-संग्रह (नित्य के) | परमानंद, छीतस्वामी<br>नन्ददास, चत्रभुज<br>सूरदास | १६ वीं श० | १६x१६.५ | ११८,११६,१२१,१२२,१२३,१२४;११८ वां<br>११८-११६ ; ११६-१२०,१२१<br>१२०,१२२ |
| ११६८ | १२२१० (३)१-६ | पद-संग्रह (पलना के) | कृष्णदास, चत्रभुजदास<br>विट्ठल, परमानन्द<br>सूरदास, गोविन्दस्वामी | १६ वीं श० | १८x१३.५ | २६ ; २७,२८<br>२७,२८ ; २८,२६<br>२६ ; ३० |
| ११६६ | १२२२० (४) १-५ | पद-संग्रह (पलना के) | गोविन्दप्रभु, कृष्णदास<br>रसिकदास, विठ्ठल,<br>आसकरन | १६ वीं श० | १६x१६.५ | ६५,६६ ; ६५ वां<br>६६ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२०० | १२२१० (२०)१-२ | पद-संग्रह (प्रबोधनी के) | परमानन्द, रसिकदास | १९ वीं श० | १८x१३.५ | १००-१०१ ; १०१-१०२ |
| १२०१ | १२२२० (२४)१-२ | पद-संग्रह (प्रबोधनी के) | रसिकदास, सूरदास | १९ वीं श० | १९x१६.५ | ८२ ; ८३ वां |
| १२०२ | १२२१० (२५)१-३ | पद-संग्रह (फूलमंडली के) | परमानन्द | १९ वीं श० | १८x१३.५ | १५३, १५५, १५६ राग-सारंग |
| | | | चत्रभुज | | | १५३-१५४,१५५ |
| | | | कुंभनदास | | | १५४-१५५ |
| १२०३ | १२२२० (२९)१-३ | पद-संग्रह (फूलमंडली के) | गोविन्दप्रभु, सूरदास, चत्रभुज | १९ वीं श० | १९x१६.५ | ९८ वाँ |
| १२०४ | १०८६४ (२)१-८ | पद-संग्रह (बधावारा) | मीरां | गु० १८९७ | १०.५x१७ | ६६,६७,१२४-१२५ |
| | | | कबीर | | | ६७-७१,७४-७६,७८-८०,८२,८३, १२२-१२४ |
| | | | दादू, पदमातेली | | | ७१-७२ ; ७२-७४ |
| | | | अज्ञात, दीनदयाल | | | ८१ ; ८३-८४ |
| | | | संतदास, सुखराम | | | ८५-८९ |
| १२०५ | १०९४४ (६) १४ | पद-संग्रह (बधावारा) | तुरसी | २० वीं श० | ८x५ | २९७-२९८,३७८ |
| १२०६ | १०८४७ (२)३०-३२ | पद-संग्रह (बधावारा) | पूरणचन्द, सूरजकंवर रूपाँ | गु० १९९९ | १७x८ | ६६३ ; ६६४, ६६४ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२०७ | १२२१० (२२)१-६ | पद-संग्रह (बसंत के) | कुंभनदास, चत्रभुजदास परमानन्द, सूरदास लघुगोपाल, कल्याण | १९वीं श० | १८×१३.५ | १०५-१०८ ; १०८-१०९ १०९-११०,११३ ; ११०-१११ ११२ ; ११२ वां |
| १२०८ | १२२२० (२६)१-३ | पद-संग्रह (बसंत के) | चत्रभुज, परमानन्द सूरदास | १९ वीं श० | १९×१६.५ | ८४,८५ वें ८५ वां |
| १२०९ | १२३११ (११)८-१० | पद-संग्रह(बारामासी,लावणी) | परमानन्द, अज्ञात लवलीनराम | गु०१९४० | १७.५×८.५ | ५१९-५२० ५२१-५५० |
| १२१० | १२२१० (४) १-५ | पद-संग्रह (बाललीला के) | परमानन्द, सूरदास चत्रभुजदास,आसकरण ऋषिकेश | १९ वीं श० | १८×१३.५ | ३१-३२,३३-३४,३५ ; ३२,३४ ३२-३३; ३४ वां ३५ वां |
| १२११ | १०९४४ (६)२३-२४ | पद-संग्रह (भरथरी,गोपीचन्द) | | २० वीं श० | ८×५ | ३७०,३७१ ; ३७१-३७२ |
| १२१२ | १२२१० (१८) | पद-संग्रह (भाईदूज के) | आसकरन | १९ वीं श० | १८×१३.५ | ९८-९९ राग-सारंग |
| १२१३ | १२२२० (२२)१-२ | पद-संग्रह (भाईदूज के) | आसकरन, रामदास | १९ वीं श० | १९×१६.५ | ८१ ; ८२ |
| १२१४ | १२२१० (३२) १-७ | पद-संग्रह (मलार राग के) | चत्रभुज, गोविन्दप्रभु कुंभनदास, सूरदास परमानन्द, रसिकदास विट्ठल | १९ वीं श० | १८×१३.५ | १७८ ; १७८ १७९,१८० ; १७९,१८०,१८१ १७९ ; १८० १८१ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२१५ | १२२२० (३२) १-६ | पद-संग्रह (मलार-राग के) | परमानन्द, कृष्णदास<br>विट्ठल, सूरदास<br>कुंभनदास, रामदास | १६ वीं श० | १६x१६.५ | १०५ ; १०५,१०७-१०८<br>१०५ ; १०५-१०६,१०७,१०८,१०६<br>१०६,१०८,१०६ ; १०६ |
| १२१६ | १२२२० (३६)७-११ | पद-संग्रह (मलार-राग के) | गोविन्दप्रभु<br>जनभगवान,छीतस्वामी<br>चत्रभुज, नंददास | १६वीं श० | १६x१६.५ | १०७,१०८,१०६<br>१०७ वां<br>१०६ वां |
| १२१७ | १२२१० (३१)१-३ | पद-संग्रह (रथ-यात्रा के) | कृष्णदास, परमानन्द<br>गोविन्द | १६वीं श० | १८x१३.५ | १७६ ; १७६,१७७-१७८<br>१७७ वां राग-बिलावल, मलार |
| १२१८ | १२२२० (३५)१-३ | पद-संग्रह (रथ-यात्रा के) | गोविन्दप्रभु, कृष्णदास<br>सूरदास | १६ वीं श० | १६x१६.५ | १०४ वां |
| १२१६ | १२२१० (५)१-८ | पद-संग्रह (राधाष्टमी के) | रसिकदास, नंददास<br>परमानन्द, कृष्णदास<br>दासगोपाल<br>कुंभनदास, आसकरन,<br>सूरदास | १६ वीं श० | १८x१३.५ | ३५,३६,३७ ; ३६ वां<br>३६, ३८ ; ३७ वा<br>३८ वां<br>३८ वां राग-देवगंधार, विलावल पूरबी<br>३८ |
| १२२० | १२२२० (७)१-४ | पद-संग्रह (राधाष्टमी के) | परमानन्द, कृष्णदास<br>रसिकराय, विट्ठल | १६ वीं श० | १६x१६.५ | ६८ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२२१ | १२२२० (२६)१-४ | पद-संग्रह (रामनवमी के) | तुलसीदास<br>परमानन्द<br>सूरदास<br>नंददास | १९वीं श० | १८x१३.५ | १५६,१५७,१५८ राग-विलावल, सारंग<br>१५७,१५९,१६०-१६१<br>१५८,१६०<br>१५८-१५९ |
| १२२२ | १२२२० (३०)१-२ | पद-संग्रह (रामनवमी के) | परमानन्द, कल्याणदास | १९वीं श० | १९x१६.५ | ९९ वां |
| १२२३ | १२२१० (९) | पद-संग्रह (रास के) | रसिकदास | १९वीं श० | १८x१३.५ | ४७-५२ : राग-मारू, मालवगौड़, विलावल, टोडी, मालव |
| १२२४ | १२२२० (१३)१-३ | पद-संग्रह (रास के) | कृष्णदास, परमानंद<br>कुंभनदास | १९वीं श० | १९x१६.५ | ७६ वां<br>७७ वां |
| १२२५ | १२२१० (११)१-७ | पद-संग्रह (रास कीर्तनके ) | चत्रभुजदास<br>कृष्णदास<br>परमानन्द,<br>सूरदास, कुंभनदास<br>नंददास, गोविन्दस्वामी | १९वीं श० | १८x१३.५ | ५६-५७<br>५७-५८,५९,६१-६३-६४-६६<br>५८-५९,६०,६३-६४,६६-६७<br>५९ ; ६०-६१,६३<br>६२,६६ : ६४ |
| १२२६ | १२२२० (१५)१-२ | पद-संग्रह (रूप-चौदस के) | विष्णुदास, विट्ठल | १९वीं श० | १९x१६.५ | ७७ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२२७ | १२२२० (२ १-४ | पद-संग्रह (वर्ष उत्सव के) | सूरदास, चत्रभुज, परमानन्द विट्ठल | १९ वीं श० | १९x१६.५ | ५६-५८,५६,६० ५८-५९; ५९-६० |
| १२२८ | १२२१० (७) | पद-संग्रह (वामनजी की- बधाई के) | परमानन्ददास | १९ वीं श० | १८ १३.५ | ४१-४३ : राग-विलावल, सारंग, देवगंधार, धनाश्री |
| १२२९ | १२२२० (९)१-२ | पद-संग्रह (वामनद्वादशी के) | सूरदास, परमानंद | १९ वीं श० | १९x१६.५ | ७० वां |
| १२३० | १२२२० (१०) | पद-सग्रह (सांझि के) | द्वारिकेश | १९ वीं श० | १९x१६.५ | ७०-७२ वां |
| १२३१ | ११६४८ (१३) | पद-संग्रह (सिद्ध एवं नाथ) | हणवंत, हालीपाव, कणेरीपाव, भरथरी, रुघनाथ, | गु०१८५२ | २७x१६.५ | २९६; ३९७ पत्र सं० ३९७-३९८ पर प्रेमकृत सिद्ध वंदना है। |
| १२३२ | १२२१० (३०)१-३ | पद-संग्रह (स्नान यात्रा के) | वल्लभ, परमानन्द, सूरदास | १९ वीं श० | १८x१३.५ | १७४; १७५ : राग-विलावल, सारंग १७५ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सं. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२३३ | १२२१० (१६)१-५ | पद-संग्रह (हटरी के) | विट्ठल, गोविन्दप्रभु सूरदास, नन्ददास रसिकदास | १९ वीं श० | १८×१३.५ | ९३;९४; ९४; वां राग कान्हरो ९४ वां |
| १२३४ | १२२२० (१७)१-२ | पद-संग्रह (हटरी के) | परमानन्द, गोविन्दप्रभु | १९ वीं श० | १९×१६.५ | ७८ वां |
| १२३५ | १२५०४ | पद-संग्रह (हरि कीर्तन) | वल्लभ, कृष्णदास, चत्रभुजदास, श्रीभट | गु०१९०३ | २३×१६.५ | १-३ |
| १२३६ | ११००३ (३) | पद-संग्रह (हरिजस) | रामदास | १९ वीं श० | २९.५×१४ ५ | ३३-३६ |
| १२३७ | ११००७ | पद-संग्रह (हरिजस) | रामदास | १९ वीं श० | २९.५×१४.५ | १-३ |
| १२३८ | १२५७२ (१३) | पद-सग्रह (हरिजस) | परसराम | १९ वीं श० | १०.५×८.५ | ३६४-३७८ |
| १२३९ | १२४२६ (३) | पद-संग्रह (हरिजस) | पूरणदास | २० वीं श० | १६.५×१३ | ४०-५६ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२४० | १२४२६ (६) | पद-संग्रह (हरिजस) | गुपतराम | २० वीं श० | १६.५x१३ | १-६ |
| १२४१ | १२५४८ (२) | पद-सग्रह (हरिजस) | चतुर्भुजदास | गु०१८६० | १६x१२.५ | १५-३४ ; ५१ से १०८ दोहे अप्राप्त |
| १२४२ | १२५७१ (२) | पद-संग्रह (हरिजस) | जैमलदास | १६ वीं श० | १०.५x८ | १८-५३ २६ वां पत्र अप्राप्त |
| १२४३ | १२६७२ (६) | पद-संग्रह (हरिजस) | रामदास | १६ वीं श० | १०.५x८,५ | १६६-१६८ ; १६६,२०३-२०८, २१२ २१३,२१४-२१७ |
| | | | दयालदास | | | १६८-१६६,२००-२०३,२०६-२११, २१३-२१४ |
| १२४४ | १०८४६ (५) | पद-संग्रह (हरिजस) | जैमलदास | गु०१६३१ | १७१ | ६-१२ |
| १२४५ | १०८५१ (१) १-२ | पद-संग्रह (हरिजस) | रामानन्द, सेवगराम | १६ वीं श० | १५.५x१० | १-३ ३-६; राग-बसंत, सोरठ, पुरज, मारू, विलावल, कानडो |
| १२४६ | १०८५१ (१) ३ | पद-संग्रह (हरिजस) | मीरांबाई | १६ वीं श० | १५.५x१० | ६-१४,४४-४६,४८,५७,५६,६२. ६५,८१,८२,८४,८६ राग-सोरठ, पुरज, बसंत |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२४७ | १०८५१ (३)१६-२० | पद-संग्रह (हरिजस) | मीरांबाई, वाजीद<br>बखना, पीपा<br>जनसुन्दर | १८ वीं श० | १५.५x१० | ८६,९५,९९,१००-१०३,१०७-१०९,<br>१११-११३,११९-१२०; १०२,१८३<br>१०३,११८,११९; १०४,१९४<br>१०४-१०५,१९४-१९५ |
| १२४८ | १०८५१ (३)११-१५ | पद-संग्रह (हरिजस) | नामदेव, जगजीवन<br>नरसी, राघवदास<br>माधवदास | १८ वीं श० | १५.५x१० | ८२; ८३,८४<br>८५-८६,१८४; ९८,१९५<br>९९,१८४ |
| १२४९ | १०८५१ (३)६-१० | पद-संग्रह (हरिजस) | सूरदास, रामदास<br>हरिराम, ग्वालबाल<br>काजीमहमद | १८ वीं श० | १५.५x१० | ७२-७५,१९०-१९३,१९७; ७५,<br>७६,१५३-१८५<br>६६,६७; ७७-७८<br>८० वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२५० | १०८५१ (२)१-५ | पद-संग्रह (हरिजस | तुलसी, प्रेमदास सुन्दरदास, रज्जब जनहरिदास | १८ वीं श० | १५.५x१० | ५६,६५,१०५,१०६ ; ६०, ६०, ६१,११७,१८२ ; ६०,८७ ६६,६७ राग-पिछुरी, धनाश्री, देवगंधार |
| १२५१ | १०८५१ (१)४ | पद-संग्रह (हरिजस) | कबीरदास | १९ वीं श० | १५.५x१० | १४,१५,५६,६५,७०,७१,७२,८६, ६५,११६,११७,१२३-१५३,१८६, १९६,१९७ |
| १२५२ | १०८५१ (१)५-६ | पद-संग्रह (हरिजस) | जैमलदास,हरिरामदास | १७९२ | १५.५x१० | १-३ ; ३-७,६६,६७ गुटके के पत्र १८५ तक प्राचीन हैं। आगे-पीछे नवीन पत्र लगाकर गुटके की सिलाई कर दी गई है। |
| १२५३ | १०८५१ (१)७-९ | पद-संग्रह (हरिजस) | रामदास, ग्वालबाल परसराम | १८ वीं श० | १५.५x१० | ८-१५,३६-३८,१२०-१२१ ; १५-३२ ३२-३६,३९,४०,६८,६९,७९ राग-सोरठ, कानडी, सारंग, बसंत |
| १२५४ | १०८५१ (१)१०-१२ | पद-संग्रह (हरिजस) | सेवगराम सुन्दरविरहन,ईसरदास | १८ वीं श० | १५.५x१० | ४०-४४,९६-९८,१०९-११०, ११४-११६,१९८,२०० ४७ ; ४९ राग-होरी, मल्हार, सोरठ |
| १२५५ | १०९००(१) | पद-संग्रह (हरिजस) | जैमलदास | २० वीं श० | १२x.८.५ | १-२ पत्र सं. २-४ पर ग्वालबाल कृत 'ब्रह्म-स्तुति' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२५६ | १०८६५ (३)१-२ | पद-संग्रह (हरिजस) | जैमलदास,परसोतम | २० वीं श० | १२.५x८ | ६-८ ; १०-११ पत्र सं. ६ अप्राप्त |
| १२५७ | १०८६६(१) | पद-संग्रह (हरिजस) | जैमलदास | १९१० | ७.५x६.५ | १-११ |
| १२५८ | १०८६६(७) | पद-संग्रह (हरिजस) | परसराम | १९१० | ७.५x६.५ | १०८-११५ |
| १२५९ | १२२१० (३३)१-११ | पद-संग्रह (हिंडोरा के) | कृष्णदास, चत्रभुज कुंभनदास, विट्ठल गोविन्दप्रभु, वल्लभ सूरदास, परमानन्द नन्ददास, रसिकदास धोंधी | १९ वीं श० | १८x१३.५ | १८१-१८४,१९४ ; १८५,१९२ १८६,१९१-१९२,१९३ ; १८६,१८९ १८७-१८९,१९३,१९५ ; १९० १९१-१९२ ; १९३ १९४ ; १९५ १९५ वां गुटका अपूर्ण है। पदों का दुर्लभ संग्रह है। राग—धनाश्री, मलार, कान्हरौ, मालव, नट, केदारो |
| १२६० | १२२१० (२४)१-७ | पद-संग्रह (हिंडोरा के) | परमानन्द, विष्णुदास सूरदास, कृष्णदास चत्रभुजदास, रामदास नन्ददास | १९ वीं श० | १८x१३.५ | १४९,१५१,१५२ ; १५० १५० ; १५१ १५१ ; १५२ १५३ राग—देवगंधार, जैतश्री, कल्याण, सारग |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२६१ | १२२२० (३७)८-११ | पद-संग्रह (हिंडोरा के) | कुंभनदास, विठ्ठल<br>मोहनप्रभु, आसकरन | १९ वीं श० | १९x१६.५ | ११२,११३-११४ ; ११२<br>११३ वां<br>गुटके में पदों का संग्रह ३८ शीर्षकों से किया गया है। गुटका अपूर्ण। |
| १२६२ | १२२२० (३७)१-७ | पद-संग्रह (हिंडोरा के) | कृष्णदास, कल्याण<br>चत्रभुजदास,गोविंदप्रभु<br>परमानन्द<br>रसिकदास, सूरदास | १९ वीं श० | १९x१६.५ | १०९-११०,११४ ; १११<br>१११,११२,११६ ; १११,११४,११५-११६<br>१११-११२,११५<br>११२ वां |
| १२६३ | १२३११ (११)११-१९ | पद-संग्रह (होरी) | मीरां<br><br>कबीरदास<br>सूरदास<br><br><br>माधोदास, तुलसीदास<br>चन्द्रसखी, छीतमदास<br>हरिदास, पदम | १९४० | १७.५x८.५ | ५५०-५५१,५५३-५५४,५५६-५५८, ५६१-५६२,५७४,५७५<br>५५१-५५२,५५४-५५५,५६५-५६६<br>५५२-५५३,५५८-५६१,५६२-५६३, ५७५,५७६,५७७<br>५६३-५६४ ; ५६७,५७०-५७३<br>५६८,५८० ; ५६९<br>५७३-५७४ ; ५८२<br>पत्र सं० ५८२-५८४ तक गुटके की कृतियों का ब्योरा है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२६४ | १२२१७ (४)२१-२६ | पद-संग्रह (होली) | माधोदास, सूरदास कृष्णदास, आसकरन कासीराम | १९ वीं श० | २१.५x१२ | १०७ ; १०७-१०८ १०८ वां १०९ वां पत्र सं. ९० पर सेनारा दूहा, छत्तीस पौणि (जाति) तथा पुरुष दशा की टीप है। |
| १२६५ | १२४२६ (१)१-८ | पद-संग्रह (होली, बंसत के) | जनहरराम, कबीर ग्वालबाल, कासीराम जनरामा, आतमराम छीतमदास, सूरदास | २० वीं श० | १६.५x१३ | १-३ ; ३,४,६,११ ४,५,६-७ ; ५ ८ ; ९ १० ; १२ |
| १२६६ | १०८६४ (१)१-५ | पद-सग्रह (होली-रागबद्ध) | जनदरिया, सुखराम प्रेमदास, नित्यानंद गंगदास | गु० १८९७ | १०.५x७ | १-६ ; ६-१०,५६-६२ ११-३४,३९-४३ ; ३४ ३४-३५ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप से. मी. में | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२६७ | १०६०६ (२) | पद्मावतीरास | समयसुन्दर | १६२८ | २३.५x१०.५ | १५-१८ | लि. क. मुनि हीर सागर |
| १२६८ | १०६२८ (२) | पन्ना-वीरमदेरी बात | किशोरसिंह | १८८६ | २२x१७ | १-३६ | लि. क. बाल हरलाल<br>लि, स्था. हरिदुर्ग |
| १२६९ | १२३०८ | पन्ना-वीरमदेरी बात सचित्र | कंवर शेरसिंह | १६ वीं श० | २१x१४ | ८ पत्र कुल | चि. सं. ८१ मरम्मत किए हुए । बात अपूर्ण |
| १२७० | १०८६६ (११) | परचै-प्राण जोगग्रन्थ | द्यालबाल(दयालदास) | गु० १६२७ | ८.५x७ | ५२२-५३७ | |
| १२७१ | १०७३२ | परदेसी राजारी चौपई | अज्ञात | १६४० | २४x११.५ | १-१६ | लि. क नथेजीराम<br>लि. स्था. रिणी |
| १२७२ | १०६७२ | परदेसी राजारी चौपई | अज्ञात | १८८० | २३.५x१०.५ | १-१५ | लि. क. मानजी<br>लि. स्था. मेड़ता |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२७३ | १२३७३ | परदेसी राजारी चौपई | अज्ञात | १८५७ | २५.५×११.५ | १-१६ | लि. क. उमेद<br>लि स्था. नगर सरवाड़ |
| १२७४ | १०८०९ | परदेसी राजारी संधी | अज्ञात | १८६६ | २५.५×११.५ | १-१४ | लि. क. सत्तूड़ी<br>लि. स्था. बघेरा |
| १२७५ | १२१५६(१) | परमसुख बत्तीसी | अज्ञात | १९ वीं श० | २५.५×११.५ | १-२ | |
| १२७६ | १०८०६ | परमात्मप्रकाश-भाषा (ढालबद्ध) | मू० योगेन्द्रदेव सूरि<br>टी० धर्ममन्दिर गणि शिष्य दयाकुशल | १९ वीं श० | २५ ५×१३ | १-२६ | र. का. १७४२ जेसलमेर<br>लि. क. पं. क्षमासागर<br>लि. स्था. सोजतदुर्ग |
| १२७७ | १२५६४ | परमार्थशिक्षा | | गु०१८८९ | १४.५×१० ५ | ९-१५ | प्रारम्भ के ८ पत्र अप्राप्त |
| १२७८ | १०८५०<br>(३) | परसरामजी को कृत | परसराम शिष्य रामदास | १८६६ | १७×१०.५ | ५४-११६ | लि. क. खण्डूराम<br>लि. स्था. कोटा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२७९ | १०८६६ (९) | परसरामजी के छुटकर सबद | परसराम | गु० १९१० | ७.५x६.५ | ३१६-३९९ | |
| १२८० | १०८६८ (२) | परसरामजी के छुटकर सबद | परसराम | १९२७ | ८.५x ७ | २८-३९ | लि. क. केवलराम<br>लि. स्था. सवाई जयपुर रावजी का बाग |
| १२८१ | १२४२० (१४) | परसरामजी के छुटकर सबद | परसराम | २० वीं श० | १६x१४ | ३४२-३५२ | पत्र सं. ३५२ पर सेवगराम के पद हैं। |
| १२८२ | १२२०४ (१) | पवनविजय स्वरोदय | मोहनदास कायस्थ | १८५८ | १७x१५.५ | १-२६ | लि. क. फतेहचन्द<br>लि. स्था. अवन्तिका नगरे |
| १२८३ | १०९०२ (१७) | पसुव (पशुओं) की रास | | गु०१८०९ | १५.५x१२.५ | ८९-९० | पशु जीवन पर आध्यात्मिक विचार। |
| १२८४ | १२३२० (२२) | पांच पाण्डव सज्झाय | | १८ वीं श० | २१.४x१४.५ | २७-२८ | |
| १२८५ | ११०८२ (२) | पांच सहेलियांरी बात | | गु०१८४३ | १८x१०.५ | २३-२७ | |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२८६ | १२३७० (४२)५-६ | पाक्षिक प्रतिक्रमण एवं प्रतिक्रमण सूत्र | | १९ वीं श० | १६x११.५ | १११-१२२; १२२-१२४ | प्राकृत एवं अपभ्रंश में |
| १२८७ | ११०१३ (२७) | पाबूजीरा दोहा-सोरठा | लधराज | १८१८ | २३x१५ | १४८-१५६ | र. का. १७७८ महाराजा जसवन्तसिंह जी के समय में कुल दोहे ३०२ |
| १२८८ | १२३२० (३०) | पारणो (वडोड़ा वीर को) | | १७९२ | २१.५x१४.५ | ३५-३७ | लि. क. ऋषि हरचन्द आर्या रत्नाजी पठनार्थं |
| १२८९ | १२३७० (२१) | पार्श्वनाथ-गीत | मुनि रत्नचन्द | १९ वीं श० | १६x११.५ | २०७-२०८ | |
| १२९० | १२२१८ (५) ६७ | पार्श्वनाथ-गीत | हर्षकुशल | १८ वीं श० | २६.५x१० | ८९ वा | |
| १२९१ | १२२१८ (५)१०२ | पार्श्वनाथ-गीत | जिनहर्षसूरी | १८ वीं श० | २६.५x१० | ११९ वां | |
| १२९२ | १२२१८ (५)१५१ | पार्श्वनाथ-गीत | जसवर्द्धन | १८ वीं श० | २६.५x१० | १६४ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२६३ | १२१६० (१) | पार्श्वनाथजीरो छन्द | अज्ञात | गु० १८६७ | २१×११.५ | १-२ | लि. क. रंगसागर लि. स्था. जैतारण |
| १२६४ | १२३७० (३०) | पार्श्वनाथजीरी नीसाणी | जिनहर्ष | १९ वीं श० | १६×११.५ | २-७ | गुटके में २६१ के बाद चार पत्रों को छोड़कर पुनः पत्राङ्क १ से प्रारंभ |
| १२६५ | १२२१८ (५)१२५ | पार्श्वनाथजीरी नीसाणी | जिनहर्ष | १८ वीं श० | २६.५×१० | १२५-१३७ | |
| १२६६ | १२३२० (२३) | पार्श्वनाथजीरी नीसाणी | जिनहर्ष | १८ वीं श० | २१.५×१४.५ | २८-३० | |
| १२६७ | १२५३५ (१७)१ | पार्श्वनाथजीरी लावणी | जिनराज | २० वीं श० | १६×१२ | ११४-११६ | पत्र सं. ११६, ११७ पर सेवाराम तथा चंद्रकिशन के स्फुट पद हैं। |
| १२६८ | १२२१८ (५)४८ | पार्श्वनाथजीरो बारामासो | जिनहर्ष | १७५५ | २६.५×१० | ६४-६५ | |
| १२६९ | १२३७० (१७)८ | पार्श्वजिन भयहरस्तोत्र | | १९ वीं श० | १६×११.५ | १४८-१४९ | पत्र सं. १४९-१५५ पर संस्कृत में 'ऋषिमंडलस्तोत्र' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.स. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३०० | १२३७० (१७)७ | पार्श्वनाथ नवग्रह स्तोत्र | जिनपद्मसूरि | १९ वीं श० | १६x११.५ | १४७-१४९ | 'अपभ्रंश' में। गुटके में प्राचीन स्तुति स्तवन संग्रह है। |
| १३०१ | १२२०५ (१७) | पार्श्वनाथ स्तवन | अज्ञात | १८ वीं श० | १७x११ | २१ वां | |
| १३०२ | १२३७० (४२)१३ | पार्श्वनाथ स्तवन | सदानन्द पाठक | १९ वीं श० | १६x११.५ | १३०-१३१ | पत्र सं. १३२-१३६ पर रूपचन्द आदि कृत स्फुट पद हैं। |
| १३०३ | १२३७० (१७)४ | पार्श्वनाथ स्तवन | जिनभक्तिसूरी | १९ वीं श० | १६x११.५ | १४३-१४४ | पत्र सं. १४४-१४५ पर संस्कृत में 'मौनेकादशी स्तुति' है। |
| १३०४ | १२३७६ (३) | पार्श्वनाथ स्तवन | बनारसीदास | २० वीं श० | १६x१४ | १-३० | पत्र सं. २४ तक ६ पंक्ति बाद में १२ पंक्ति प्रतिपत्र। |
| १३०५ | ११५८४ (३५) | पार्श्वनाथ स्तवन | अज्ञात | १८ वीं श० | १९.५x१६ | २६४ वां | पत्र खण्डित |
| १३०६ | ११५८५ (८)३४ | पार्श्वनाथ स्तवन | अज्ञात | १९ वीं श० | १९.५x११.५ | १६८-१६९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३०७ | ११५८५ (८)४२ | पार्श्वनाथ स्तवन | अज्ञात | १९ वीं श० | १९.५x११.५ | १७६ वां | १७९ पर आनन्दघन का पद है। |
| १३०८ | ११५८५ (८)४७-४८ | पार्श्वनाथ स्तवन एवं पद | वृद्धिकुशल, रूपचन्द्र | गु० १८४६ | १९.५x११.५ | १८७ वां | |
| १३०९ | १२२०५ (१६) | पार्श्वनाथ स्तवन | मतिविशाल | १८ वीं श० | १७x११ | २० वां | |
| १३१० | १२२०५ (५०) | पार्श्वनाथ स्तवन | पासचंद | १८ वीं श० | १७x११ | १३१-१३२ | |
| १३११ | १२२१८ (९) | पार्श्वनाथ स्तवन | रत्नहर्ष | १८ वीं श० | २६.५x१० | १७-१८ | गुटका १७५५ से १७६७ तक विभिन्न स्थानों पर लिखा गया है। प्रमुख रूप से जैन स्तुतिस्तोत्र एवं सज्झाय संगृहीत हैं। प्रारंभ के १६ पत्र अप्राप्त |
| १३१२ | १२२१८ (५) | पार्श्वनाथ स्तवन | जगरूप | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३४ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३१३ | १२२१८ (५)७१-७५ | पार्श्वनाथ स्तवन | ज्ञानोदय, रत्नराज | १८ वीं श० | २६ ५x१० | ६१ वां | |
| १३१४ | १२२१८ (५)११० | पार्श्वनाथ स्तवन (वामाराणी पार्श्वनाथ | जिनचंद | १८ वीं श० | २६.५x१० | १२२ वां | 'वामाराणी' पार्श्वनाथजी की माता का नाम था। |
| १३१५ | १२५५१ (१०) | पार्श्वनाथ स्तवन | अज्ञात | १९ वीं श० | १३x११ | १०१ वां | पत्र सं. १०१-१०२ पर 'सीमंधर जिन स्तुति' 'प्राकृत' में है। |
| १३१६ | १२५५१ (१९) | पार्श्वनाथ स्तवन | दानविनय | १७ वीं श० | १३x११ | १३४-१३५ | |
| १३१७ | १२५७५ (१९,२१) | पार्श्वनाथ स्तवन (रामपुरा) | गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर<br>हीरहर्ष | १९ वीं श० | १३.५x१४ | ६४<br>६८-७१ | र. का. १६६३<br>पत्र सं. ७२-७३ पर 'देव-लक्षणरी' टीप है। |
| १३१८ | १२५७५ (२९,३१) | पार्श्वनाथ स्तवन | मुनिमनोहर शिष्य हीरहष<br>गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर | १९ वीं श० | १३.५x१४ | ८७-९०<br>९३-९४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें. मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३१९ | १२५७५ (२३,३५) | पार्श्वनाथ स्तवन (मगसी पार्श्वनाथ) | अज्ञात, गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर | १९ वीं श० | १३ ५x१४ | ७४-७५ १०३ वां | पत्र सं. १०४ पर रायचन्द कृत स्फुट पद हैं। |
| १३२० | ११२८३ (५) | पाशाकेवली | अज्ञात | गु०१७८६ | १६x१४ ५ | ७३-८२ | अपूर्ण,कीटविद्ध |
| १३२१ | ११६४० | पाशाकेवली | अनारि | १८ वीं श० | २९ ५x१३.५ | १-२ | स्फुट दो प्राचीन पत्र मात्र |
| १३२२ | १०९२४ (२९) | पिसणश्रृंगार | सेवादास | १९ वीं श० | २३x१२.५ | ६३४-६३६ | ५१ से ७९ तक के दोहे अप्राप्त हैं। |
| १३२३ | १०९४८ (५) | पिसणश्रृंगार | सेवादास | गु० १९३५ | १४.५x७ | ९८-११६ | |
| १३२४ | १०९३८ (६) | पिसणश्रृंगार | सेवादास | गु०१८८५ | १६.५x८.५ | ५६१-५७० | दोहा १०१, सोरठा १९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३२५ | १०७६१ | पीठिका वर्णन (जैन) | | १६ वीं श० | २६.५x११ | १-७ | कल्पसूत्रों की कथाएं। |
| १३२६ | ११५८३ (२३) | पीपाजी की परची | अनन्तदास | १६६३ | १८x१५ | १६५-२३६ | लि. क. जगजीवन ईसरदास पाठनार्थ |
| १३२७ | १२३८० (२८) | पीपाजी की परची | अनन्तदास | गु०१७२४ | २०x१४ | ३४०-४१७ | अपूर्ण |
| १३२८ | १२५८५ (१) | पीपाजी की परची | अनन्तदास | १६२७ | १६.५x१५ | १-११६ | गुटके में परचीसाहित्य की दृष्टी से दुर्लभ संग्रह है। लि. क. आरतराम शिष्य सूलभराम लि. स्था. बदनोर |
| १३२९ | ११६४८ (१८) | पीपाजी की वाणी | पीपा | गु०१८५३ | २७x१६.५ | ५४६-५५२ | राग ६, पद २१ |
| १३३० | १२२०८ (२) | पुद्गल व्रत-अव्रत भेद | | १७७४ | २५x१८.५ | ६६-६८ | लि. क. मुनि आसकरण |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप से. मी. में | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३३१ | १०७५८ | पुन्यविलास-रास | जिनहर्ष शिष्य शान्तिहर्षगरिण | १८३० | २६.५x१२.५ | १-५६ | पत्रांक ३ से २२, २७, व ३१ से ३६ तक अप्राप्त। लि. क. पं. जैतसी गरिण लि. स्था. डाँगियावास (जोधपुर महाराज श्री विजयसिंह-राज्ये) |
| १३३२ | ११०१३ (३२) | पुरुषाघमछंद | | गु०१८२२ | २३x१५ | २०१ वां | |
| १३३३ | १२४११ (४) | पुरुषोत्तम सिद्धान्त | | १६ वीं श० | २१x१४ | ६६-११० | |
| १३३४ | १२४२२ (४) | पृथ्वीनाथजीरी सबदी | पृथ्वीनाथ | गु०१८३१ | १५x१०.५ | २४२-२४३ | |
| १३३५ | ११०१३ (२३)२ | पेटरा कवित्त | | गु०१८२२ | २३x१५ | १४१-१४३ | ३४ कवित्त हैं। |
| १३३६ | १२१६६(३) | पोषदसमी व्याख्यान | | गु० १६७५ | २७x१४ | २७-२६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (से.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३३७ | ११६८१ | प्रतापरासो-लछमणगढ़ रासो (प्रतिलिपिमात्र) | जाचिग-जीवण | २१ वीं श० | ३०x२०.५ | १-१५ | १८७३ की प्रति से प्रतिलिपित, प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला में प्रकाशित। लि. क. फतेहचन्द शर्मा लि. स्था. अलवर |
| १३३८ | १०६५४ (८) | प्रतिक्रमणसूत्र (पडिकमणसूत्र) | | गु० १८७४ | २४x१६.५ | ९६-१०८ | 'प्राकृत' में है। |
| १३३९ | १२२०५ (२४) | प्रतिक्रमणसूत्र | | १७५० | १७x११ | ७१-७७ | पत्र सं० ७८ पर कार्यसिद्धि का मंत्र है। |
| १३४० | १२२०५ (२) | प्रतिक्रमणसूत्र-भाषा | | १८ वीं श० | १७x११ | ५२-५६ | |
| ❀१३४१ | ११५८४ (५) | प्रत्युत्तरा (जैन) (मुकरियां) | कुशललाभ | १७०२ | १९.५x१६ | २९-३० | माधवानल कामकंदला चौपाई से उद्धृत लि. क. हर्ष सुन्दर-कक्कसूरि विजयराज्ये लि. स्था. लांबिया पत्र सं. ३० पर बालक होने का मंत्र एवं तंत्र है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३४२ | १०८७८ | प्रत्येकबुद्धि चतुष्पदिका | समयसुन्दर वाचक | १८९७ | २४.५×१२.५ | १-२८ | र. का. १६६५ लि. क. सवाईसागर लि. स्था. बीकानेर |
| *१३४३ | ११५८२ | प्रबोधचन्द्रोदयनाटक-भाषा | कवि मल्ह अपरनाम मथुरादास शिष्य खेमचन्द्र | १७१७ | १६.५×१५ | १-३८ | पत्र संख्या १-३ अप्राप्त |
| १३४४ | १०८४० | प्रवीणसागर | प्रवीणराय | १९ वीं श० | ३५×२० | १२-१४१ | अपूर्ण । अष्टम लहर से ७२ वीं लहर तक । सजिल्द । सिलाई टूटी हुई है । |
| १३४५ | ११५८४ (३१) | प्रश्नचंदऋषि चउढालियो | ऋषि उदयगणि | १७२८ | १९.५×१७ | २२४-२२५ | |
| १३४६ | १२५९१ (१८) | प्रश्नोत्तर | रामदास | २० वीं श० | १५.५×१० | ९७-९९ | पत्र सं. ९५ पर 'आठ सुख' पत्र सं. ९६ पर 'स्थूल शास्त्र परिचय' है । |
| १३४७ | १२५९१ (३३) | प्रश्नोत्तर | हरिदेव | २० वीं श० | १५.५×१० | २१२-२१५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३४८ | १०९५६ (५) | प्रश्नोत्तर ज्ञानरत्नमाला भाषाप्रश्न-प्रकाशिका | मू. शंकराचार्य रामदासभट्ट शिष्य तुलसीदास | २० वीं श० | ३२x१६ | १-१५ | पद्यानुवाद र. स्था. मलारना "मथुरा मंडल माहि" |
| १३४९ | १०९३८ (७) | प्रश्नोत्तरमाला | | गु० १८८५ | १६.५x८.५ | ५०२-५२३ | |
| १३५० | १०८४९ (२५,२६) | प्रश्नोत्तरमाला | | गु० १९३१ | १७x११ | १८४-१८९ | |
| १३५१ | १०९०० (६) | प्रश्नोत्तरी | जनहरिराम | २० वीं श० | १२x८.५ | ४९-५१ | |
| १३५२ | १२५८१ (४) | प्रश्नोतरी | | १९ वीं श० | १६x१०.५ | ३९-४१ | पत्र सं. ४१ पर स्फुट सवैया है। |
| *१३५३ | १०८४८ (८) | प्रश्नोत्तरीभाषा | बालकराम | १९ वीं श० | १५.५x८ | ६८२-७१५ | र. का. १८२१ भीलवाड़ा |
| १३५४ | १०९२४ (८) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | गु० १८४० | २३x१२.५ | ५०४-५१२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३५५ | १०६४० (३) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | गु०१८८३ | १५.५x१०.५ | ४१९-४४५ | |
| १३५६ | १०६४५ (४) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | १९ वीं श० | १४ ५x७.५ | ४०५-४५४ | |
| १३५७ | १०६४८ (३) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | गु०१९३५ | १४ ५x७ | ३०-९६ | |
| १३५८ | ११५८३ (९) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | गु०१९९३ | १८x१५ | ७८-९९ | |
| १३५९ | १२३२९ (४) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | २० वीं श० | २३x९.५ | ३६२-३७३ | |
| १३६० | १२३८० (२३) | प्रह्लादचरित्र | अग्रदास | गु०१७२४ | २०x१४ | २६७-२७८ | |
| १३६१ | १२४२० (१७) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | २० वीं श० | १६x१४ | ३६०-३८० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३६२ | १२४२२ (१८) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | गु० १८३१ | १५x१०.५ | ३९९-४१२ | |
| १३६३ | १२५६१ (१२) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | १९ वीं श० | २३.५x१७ | ३६२-३६६ | |
| १३६४ | १२५६९ (४) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | १८२२ | १६.५x११ | २३-४६ | लि. क. रूपराम<br>लि. स्था. खैड़ापा |
| १३६५ | १२५७४ (१०) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | २० वीं श० | १६.५x१०.५ | १९५-२२७ | |
| १३६६ | १२९७२ (११) | प्रह्लादचरित्र | जनगोपाल | १९ वीं. श० | १०.५x८.५ | २८१-३४६ | |
| १३६७ | १२२२९ | प्रह्लादचरित्र सचित्र | जनगोपाल | १९४१ | ३३.५x१७.५ | १-१३ | चित्र सं.—९<br>पूर्व प्रति की चोरी हो जाने से ललितराम द्वारा पिता की आज्ञा से जोधपुर में शीघ्रता से लिखी गई प्रति। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मीं. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३६८ | १२५५१ (३१) | प्राभातिक गीत | जयमल | १७ वीं श० | १३x११ | १७१-१७२ | |
| १३६९ | १२२१८ (५)२५ | प्राणातपात गीत | | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३७ वां | |
| *१३७० | १२०६९ (५) | प्रिथीराज चहूआण रासउ–रसाल | चन्दवरदाई | १६६७ | १५.५x१४ | ६१-१०७ | घारणोज वाली बहुचर्चित प्रति, भगवानदासजी पठनार्थं पत्र सं १०९ पर संस्कृत में स्तुति है। पत्र सं. १११ पर स्फुट नुस्खे हैं। |
| १३७१ | ८११०१३ (४४). | प्रेमपत्रो | | गु०१८१९ | २३x१५ | ३१४-३१५ | पत्नी द्वारा २१ दोहे एवं पति द्वारा २५ दोहे कहे गए हैं। |
| १३७२ | १२२१७ (१) | प्रेमरत्नाकर | भय्या रत्नपाल | १९ वीं श० | २१.५x१२ | १-१३ | प्रथम पत्र खण्डित तृतीय से पंचम तंरग पर्यन्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३७३ | १०८६१ (१) | प्रेम-स्तुति | हरिरामदास | १९ वीं श० | १६x१२ | १-२ | |
| १३७४ | ११६४८ (२७) | फरीदजी के पद | फरीद | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ५७५४-७५ | गुटके में सगुण, निर्गुण संतों की वाणी के ३४,००० श्लोक हैं। पत्र जीर्ण हैं। |
| १३७५ | १२२०५ (१३) | फलवर्द्धी-पार्श्वनाथ स्तवन | जिनरंगसूरि | १८ वीं श० | १७x११ | १६ वां | |
| १३७६ | १२२०५ (३१,३५) | फलवर्द्धी-पार्श्वनाथ स्तवन | जिनहर्षसूरि | १८ वीं श० | १७x११ | ११३-११४ | पत्र सं. १२० पर नामदेव का पद एवं (जैन) देवबदनरो विधि' है। |
| १३७७ | ११६३५ (२) | फूलजी नं फूलमतीरी वात | अज्ञात | १९ वीं श० | २६.५x१६.५ | ५६-६४ | प्रारंभ में गणपति का चित्र है। अन्य चित्रों के लिए स्थान छोड़ दिया गया है। लि. क. पुरोहित फतेकरण लि. स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३७८ | १०९५५ (१) | फूलजी नै फूलमतीरी वात | अज्ञात | गु० १९०५ | २३.५x१७.५ | १-१० | अपूर्ण |
| १३७९ | १०७०१ (२) | फूलजी नै फूलमतीरी वात सचित्र | " | गु० १८९२ | १६.५x१२ | ७३-१५२ | पत्र सं. ७० से ७२ तक अप्राप्त। अपूर्ण। चित्र सं. — ३६ लि. स्था. मेड़ता |
| १३८० | १२२२७ (१-२) | फूलजी नै फूलवतीरी वात सचित्र | " | १९ वीं श० | १८.५x१३ | ८-५१ | चित्र सं – १८; पत्र मरम्मत किए हुए हैं। दो प्रतियों को एक साथ सीं दिया गया है। दूसरी प्रति महाजनी लिपि में संवत् १९५५ की है। पत्र सं. १-७ अप्राप्त, बीच के दो पत्र खण्डित |
| १३८१ | १२३७१ (१८) | फूलजी नै फूलवतीरी वात | " | १८५२ | १८.५x१६.५ | ६२-६४ | गुटका १८३५ से १८३९ तक भीखनदास द्वारा नागौर में लिखा गया; अंतिम कृति जोधपुर में लिपिकृत है। अगले पांच पत्रों पर स्फुट नुस्खे हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३८२ | १२५८५ (६) | फूलीबाईरी परची | सुखसारण | गु०१६२७ | १६.५x१५ | २६६-२८२ | महाराजा जसवंतसिंहजी के समय की जाटकुलीय भक्त महिला |
| १३८३ | १२२२८ (५)५६ | बंभणवाड़ी सज्झाय | कमलकलश | १८ वीं श० | २६.५x१० | ८१-८२ | |
| १३८४ | १०६३५ (३) | बड़ेरारी वंसावलीरी याददाश्त | | १९ वीं श० | २१.५x१७.५ | १-७ | संवत् १७०० से परबतसिंह जी के पुत्र लूणकर्ण के समय से प्रारंभ। महाराजा मानसिंह जी के समय इनके पिता सदाशिव को 'लाख-पसाव' से अलंकृत किया गया था। |
| १३८५ | १२६१२ (८) | बड़ो-कक्को | गुलाबचंद | गु०१८१७-१८३६ | २५x१५ | २४-२७ | उपदेशात्मक पद्य |
| १३८६ | ११६४८ (२२) | बाजीदजी की वाणी | वाजीद | गु०१८५३ | २७x१६.५ | ५६३-५६४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३८७ | १२५६२ (४) | बारहभावना | जगदीश स्वाभी | १८८९ | १४.५x१०.५ | ६१ वां | लि. क. लिछमरण |
| १३८८ | १२५५१ (१६) | बारहभावना संधि | जयसोम शिष्य प्रमोद मांणिक्य | १७ वीं श० | १३x११ | ११२-११९ | र. का. १६४६ बीकानेर |
| १३८९ | ११८६६ | बारहमास व्रत-स्नान-विधि | | | २२x११ | २-३४ | अपूर्ण; पद्मपुराण एवं स्कन्ध-पुराणगत |
| १३९० | १२५७७ (११)१, (१६,१८ | बारहमासी | बालकदास<br>हृदयराम शिष्य माधोदास<br>तुलसीदास | १९ वीं श० | १४.५x१० | १३०-१३५<br>१६१-१६५<br>१६६-१६८ | |
| १३९१ | ११५८५ (४) | बारहमासी | | १९०४ | १९.५x११.५ | ३५-३८ | गु० कोचर परिवार का है। लि. क. लिखमीचन्द कोचर लि. स्था. बाला हेड़ी, सवाईजैपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३६२ | १२२०८ (६) | बारहव्रत बारह-अतिचार | | गु० १८वीं श० | २५x१८.५ | ११४-११८ | महाजनी लिपि |
| १३६३ | ११०६१ (२) | बारेमासारा दूहा | | | १६.५x१२ | १२३-१२५ | पत्र सं. १२२-१२३ पर राधाकृष्ण-भक्ति परक दोहे हैं। |
| १३६४ | ११०८६ | बारेमासो | ब्रह्मदास शिष्य रामदास | १८१८ | २१.५x१५ | २ रा | अगले पत्रों पर मीरां के पद, 'चड़कली शकुन विचार' एवं 'हनुमानाष्टक' है। |
| १३६५ | ११५८५ (८)५० | बारेमासो | | १८४७ | १६.५x११.५ | १८६-१६२ | |
| १३६६ | १०८४७ (४) | बालणचरित्र | परसराम | गु०१६६६ | १७x८ | ७२३-७२६ | |
| १३६७ | १०६०२ (६) | बालणचरित्र | परसराम | गु०१८०६ | १५.५x१२.५ | ३३-४० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३९८ | १०९२४ (३०) | बालणचरित्र | परसराम | २० वीं श० | २३x१२.५ | ६३६-६३८ | गुटका १८४० से १९३० तक लिखा गया है। |
| १३९९ | ११००३ (१) | बालणचरित्र | परसराम | १९ वीं श० | २९.५x१४.५ | १-३ | कीट-विद्ध<br>पत्र सं. ३-४ पर सोलह स्वप्न विचार है। |
| १४०० | १०९५० | बालापद्धति | | १९२२ | १४.५x८ | ११-८६ | नाथ सम्प्रदाय की तांत्रिक विधि<br>लि. स्था. जोधपुर |
| १४०१ | १२२१८ (५)१२४ | बावीस अभिक्ष बत्तीसी | अज्ञात | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३५ वां | |
| १४०२ | १२१४८ | बासठियो बालावबोध | | १९१९ | २६x१२.५ | १-१४ | 'जीव के ६२ मार्गणा करे ते कहै छै।'<br>लि. क. गणपतविजय<br>लि. स्था. सुभटपुरनयरे (जोधपुर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४०३ | १२२२८ (५) ५२ | बाहुबली-गीत | आणंद मुनि | १८ वीं श० | २६.५x१० | ६६ वां | |
| १४०४ | १२२१८ (५)३९ | बाहुबली सज्झाय | समयसुन्दर | १७५५ | २६.५x१० | ५७ वां | |
| १४०५ | ११३१३ (५) | बिहारी सतसई | बिहारीदास | गु०१८०२ | १५x१४ | १-५२ | पत्र सं. ४८-५१ अप्राप्त ७१५ दोहे हैं। |
| *१४०६ | १२२०७ (३) | बिहारी सतसई | बिहारीदास | गु०१८१४-१८२४ | २४x१७.५ | १-४४ | * अंत में जसभद्रसूरि के समय (१८३९) पाटण में राव लाखणजी द्वारा महालक्ष्मी की स्थापना तथा 'मेहता साख' के प्रारंभ आदि का ब्यौरा दिया है। |
| १४०७ | ११०८५ (१२) | बिहारी सतसई के स्फुट दोहे | बिहारीदास | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | ७१-७३ | पत्र सं. ७२ पर गोरखनाथ के कवित्त हैं। अंतिम पत्रों पर कबीरदासजी की साखी आदि हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल वि.सं. में | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४०८ | ११०५६ | बिहारी सतसई सटिप्पण | बिहारीदास | १७८६ | २६x१०.५ | १-३४ | लि. क. रंजीत सागर गणि लि. स्था. जोधपुर ७०३ दोहे हैं |
| १४०६ | १२३७१ (१२) | बिहारी सतसई सटीक | मू. बिहारीदास | गु०१८३६ | १८.५x१६.५ | १-१२२ | अपूर्ण, ६६७ दोहों तक |
| १४१० | १२३७० (१७)६ | बीज स्तुति | लब्धिविजय | १६ वीं श० | १६x११.५ | १४६ वां | |
| १४११ | ११०१३ (३०) | बुद्धिरासो | | गु०१८२२ | २३x१५ | १८६-१६२ | शिक्षाप्रद ६७ छंद |
| १४१२ | १२२१८ (५)८ | बुधरासो | | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३०-३१ | शिक्षाप्रद ४४ छंद |
| १४१३ | ११५८५ (३) | बुलाकीदास कायस्थ की विगत | | १८७६ | १६.५x११.५ | ३४-३६ | लि. क. शिवदास कोचर |
| १४१४ | १२३७८ (२२) | व्रजसूची उपनिषद् | | १८ वीं श० | २२x१५.५ | १४०-१४१ | कृति संस्कृत में है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४१५ | १२४११ (५) | ब्रह्मजिग्यास उपनिषद् | | १६ वीं श० | २१x१४ | १११-११४ | |
| १४१६ | १२३८० (१७) | ब्रह्मजिग्यास उपनिषद् | | गु०१७२४ | २०x१४ | २१८-२२० | |
| १४१७ | १२२२६ (८) | ब्रह्म जिज्ञासा भाषा | | गु०१८७७ | १४x१२.५ | ५६-६० | |
| १४१८ | १२३७२ (११-१०) | ब्रह्मजिग्यास, ब्रह्मज्ञानसागर | चरनदास शिष्य सुखदेव | १६ वीं श० | २४x१६.५ | १४४-१४५ १२६-१४४ | ११ वीं कृति अपूर्ण। |
| १४१६ | १२५७७ (५) | ब्रह्मध्यांन | संतदास | १६ वीं श० | १४.५x१० | ७६-८७ | |
| १४२० | १२२१४ (६) | ब्रह्मनामस्तुति आदि | जनतुरसी | १६ वीं श० | २१.५x१३ | १०३-१०७ | वांणी के स्फुट प्रकरणमात्र |
| १४२१ | १०८६६ (२) | ब्रह्मस्तुति | हरिरामदास | गु०१६१० | ७.५x६.५ | ११-१३ | गीतक छंद |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४२२ | १२५७२ (२) | ब्रह्मस्तुति | हरिरामदास | १९ वीं श० | १०.५x८.५ | ६-९ | |
| १४२३ | ११०८९ (७) | भँवरगीता (भ्रमरगीत) | विष्णुदास | १९ वीं श० | १८.५x१६.५ | ६६-७५ | छंद संख्या १२० |
| १४२४ | १२५७७ (१०) | भक्त-पचीसी | बालकदास शिष्य प्रेमदास | १९ वीं श० | १४.५x१० | १३०-१३५ | |
| १४२५ | ११०१२ | भक्तमाल | द्यालबाल (दयालदास) | १८७२ | ३०x१४.५ | १-८० | लि. क. तुलसीराम<br>लि. स्था. पचगायां केवास टेउ मध्ये<br>५३६ छंद है। |
| १४२६ | १२३७३ (१५) | भक्तमाल | द्यालबाल शिष्य रामदास | १९०९ | २२x१५.५ | ७७-१९२ | र. का. १८६१<br>लि. क. बिहारीदास वैष्णव<br>लि. स्था. पाली |
| १४२७ | १२३८० (२२) | भक्तमाल | नारायणदास (नाभादास) शिष्य अग्रदास | गु० १७२४ | २०x१४ | २३४-२६६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मीं. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४२८ | १२४२० (३) | भक्तमाल | रामदास | २० वीं श० | १६x१४ | १-२० | |
| १४२९ | १२५६१ (२६)२ | भक्तमाल | रामदास | २० वीं श० | १५.५x१० | १५३-१७४ | |
| १४३० | १२३२३ | भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त | मू. नाभादास<br>टी. प्रियादास | १९२८ | २९.५x१७ | १-१०५ | र. का. १७६९<br>लि. क. हरसुखदास, तितरी के संतों की परम्परा का<br>लि॰ स्था. बीदासर |
| १४३१ | १२५०८ | भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त | मू. नाभादास<br>टी. प्रियादास<br>टिप्पण. लालदास | १८६२ | ३०.५x१४ | १-१०४ | पत्र सं. १-२,९५-१०४<br>खण्डित |
| १४३२ | ११०४३ | भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त | मू. नाभादास<br>टी. प्रियादास | १८७६ | ३१x१४.५ | १-१५१ | र. का. दस सात सत्तउन्ह-त्तर फाल्गुन मास वदि सप्तमी<br>लि. क. जमनादास<br>लि. स्था. जोधपुर<br>प्रथम एवं अंतिम पत्र खण्डित |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४३६ | १२०७४ | भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी' | मू. नाभादास टी, प्रियादास | १८४६ | ३०.५×१५ | १-८२ | लि. क, क्रांनड़पंथी सदाराम बाबाजी सूरतरामजी के लिए। लि. स्था. नागपुर (नागोर) पत्र सं. ६६ अप्राप्त |
| १४३७ | ११५५२ | भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी' | मू नाभादास टी. प्रियादास | १८४० | २५×१२.५ | १-१४२ | र. का. टीका १७६६ लि. क, रामकृष्ण वैष्णव लि. स्था. नागपुर (नागोर) |
| १४३८ | ११५४४ | भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी' | मू. नाभादास टी. प्रियादास | १६ वीं श० | २५.६×११.५ | १-१२८ | र. का. टीका १७६६ वृन्दावन लि. क. चरणदास वैष्णव लि. स्था. गांव छपिया पत्र सं. ८५ वां अप्राप्त ४६ वां दोबार अंत में एक होली का पद है। |
| १४३९ | ११५६२ | भक्तमाल भाषा टीका-'भक्तिरसबोधिनी' | मू. नाभादास टी. प्रियादास | १८६५ | ३१×१५.५ | १-८६ | र. का. टीका १७६६ लि. क. यमुनादास लि. स्था. मुरलीमनोहरजी का मंदिर,बीकानेर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मीं. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४४० | १२०१५ | भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' | मू. नाभादास<br>टी. प्रियादास | १९ वीं श० | १४.५×११ | १-६८ | अपूर्ण, ३१३ दोहे पर्यन्त |
| १४४१ | ११५४२ | भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' | मू. नाभादास<br>टी. प्रियादास | १९ वीं श० | २०×११.५ | २-२१७ | प्रथम पत्र अप्राप्त<br>अंत में लालदास कृत प्रशस्ति पद्य है। |
| १४४२ | १२३८४ | भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' | मू. नाभादास<br>टी. प्रियादास | १९ वीं श० | ३१.५×१६ | १-८४ | र. का मूल १७६१<br>अंत में लालदास कृत प्रशस्ति पद्य है। |
| १४४३ | ११६४४ | भक्तमाल भाषा टीका | मू. राघोदास<br>टी. चतुरदास | १८८७ | २९×१५ | १-९४ | र. का. मूल १७१७<br>र. का. टीका १८५७<br>लि. क. रामभजनदास<br>लि. स्था. नागोर<br>प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला में प्रकाशित। |
| ❀१४४४ | १२५०३ | भक्तरतन | जैदास | १९३२ | २१.५×१६ | १-२५ | र. का १८३७<br>२३३ दोहे हैं।<br>महाजनी लिपि में |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४४५ | १२५५६ (४) | भक्त-विरुदावली | भगवानदास | गु०१८५६ | २२.५x१६ | १०७-११० | |
| १४४६ | १२२१८ (३) | भक्तामर भाषा | हेमराज | १८ वीं श० | २६.५x१० | २०–२३ | |
| १४४७ | १२३२० (२८) | भक्तामर स्तवन | सोमरत्न | १८ वीं श० | २१.५x१४.५ | ३३ वां | |
| १४४८ | १२२०५ (२३) | भक्तामर स्तोत्र | मानतुंगसूरि | १७५० | १७x११ | ६४-६६ | लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रूपनगर पत्र सं. ७० पर संतान होने का नुस्ख़ा है। |
| १४४९ | १०८६८ (१) | भक्ति जोगग्रन्थ | रामानन्द | १९ वीं श० | १०.५x८ | १-३ | |
| १४५० | १०८६६ (१४) | भक्ति जोगग्रन्थ | सुन्दरदास | गु०१९२७ | ८.५x७ | ५५०-५५८ | |
| १४५१ | १०९०२ (१३) | भक्ति जोगग्रन्थ | रामानन्द | गु०१८०९ | १५.५x१२.५ | ८२-८३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४५२ | ११४८५ | भक्तिभावती | लालदास शिष्य द्वारिकादास शिष्य प्रपन्न गैसानन्द | १९ वीं श० | २५x११.५ | १-१५ | र. का. १६०९ मथुरा-केशवालय |
| १४५३ | १०९४० (४) | भक्तिविधान-जोगग्रन्थ | | गु० १८८३ | १५.५x१०.५ | ४४६-४६५ | गर्भगीता, भागवत आदि के श्लोक देते हुए भक्तिमहिमा का वर्णन किया गया है। |
| १४५४ | १०८९६ (८) | भगतमाल | द्यालबाल शिष्य रामदास | गु० १९१० | ७.५x६.५ | १५८-३१६ | लि. क. रामसजन शिष्य सेवगराम |
| १४५५ | १०८७२ (१) | भगतमाल | द्यालबाल शिष्य रामदास | १९ वीं श० | २७.५x१५ | १-४९ | र. का. १८६१ कार्ती वद एकादशी लि. क, पूरणदास शिष्य द्यालबाल |
| *१४५६ | १०८७२ (२) | भगतमाल | पूरणदास | १९ वीं श० | २७.५x१५ | १-४ | अपूर्ण, चार पत्र मात्र हैं। |
| १४५७ | १०९९७ | भगतमाल का प्रसंग-दृष्टांत | | २० वीं श० | २५.५x१२.५ | १-७० | १०० दृष्टांत व कथाएं दी हैं। अंत में कुलक्षणा नारी के बारे में दो सवैये हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र सख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४५८ | १०८५१ (६) | भगतविरुद | चरनदास | २० वीं श० | १५.५x१० | २००-२०३ | |
| १४५९ | १२३८० (१) | भगतिप्रताप | | गु०१७२४ | २०x१४ | १११ वां | अपूर्ण |
| १४६० | १२५०४ (१) | भगवद्गीता सभाषा (गद्य) | | १९०३ | २३x१६.५ | १-५२ | स्याही फैली हुई है। लि. स्था. जोधपुर |
| *१४६१ | १२०२० | भगवद्गीता सभाषा टीका (अपरनाम-परमानन्दप्रबोध) | आनन्दराम नाजर | १९०९ | २३.५x२० | १-१६७ | लि. क. गुसांई मानपुरी लि स्था. जोधपुर, तखतसिंह विजयराज्ये पत्र चिपके हुए हैं। अंतिम पत्र खण्डित। |
| १४६२ | १२२९३ (१) | भगवद्गीता सभाषा टीका सचित्र | | १९ वीं श० | २२.५x१६ | १-८३ | चित्र सं.—४५ लि. क. एवं चित्रकार-विट्ठलदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४६३ | १२३०९ | भगवद्गीता सभाषा टीका सचित्र | आनन्दराम नाजर | १९१५ | ३०.५x१५.५ | १-९६ | चित्र सं.- २५ लि. क. वैष्णव मंगलदास कबीरपंथी लालदास पठनाथ पंचम अध्याय पर्यन्त। |
| १४६४ | १२५६१ (१८) | भगवद्गीता सभाषा | भगवानदास निरंजनी | १९ वीं श० | २३.५x१७ | ३७३-३८० | पत्र जीर्ण |
| १४६५ | १०८४८ (४) | भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद | हरिवल्लभ | १९ वीं श० | १५.५x८ | ५०९-५६४ | |
| १४६६ | १०८४९ (४) | भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद | हरिवल्लभ | गु०१९३१ | १७x११ | १-६१ | ६८४ दोहे; प्रारंभ के तीन पत्रों पर बारखड़ी है। लि. क. साधु छूछमराम |
| १४६७ | १०८६५ (१) | भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद | हरिवल्लभ | गु०१९४६ | १२.५x८ | १-२६ | पत्र सं. २७ से २८ रिक्त |
| १४६८ | १०९२७ (५) | भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद | हरिवल्लभ | गु०१८०९ | २०.५x१० | १४६-१५३ | अपूर्ण |
| १४६९ | ११२६४ | भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद | हरिवल्लभ | २० वीं श० | १६x१२ | १-७३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४७० | ११४६६ | भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद | हरिवल्लभ | १६ वीं श० | २२.५×१३.५ | ७-६३ | अपूर्ण<br>१ से १६ एवं अंतिम पत्र अप्राप्त |
| १४७१ | १०८४१ (१) | भगवद्गीता सभाषा (गद्य) | | १६०० | २८×१६.५ | १-५१ | लि. क. मुरलीधर पुरोहित<br>लि. स्था जोधपुर |
| १४७२ | १२२२५ (१) | भगवद्गीता सभाषा (गद्य) सचित्र | | १६ वीं श० | २४.५×१६.५ | १-८६ | गु० चित्र सं. ४६<br>पत्र सं.- ५३ वां अप्राप्त |
| १४७३ | १२४६४ (२) | भगवद्गीता सटीक 'पदबोधिनी टीका' एवं 'ज्ञानसतसई टीका' | भवानीदास पाठक<br>जनहरिदास | १६२३ | ३३×२१ | ५-१५६ | लि. क. मूरतराम ब्राह्मण<br>लि. स्था. सिकन्दराबाद की छावनी<br>र. का. १८११<br>भवानीदास पाठक ने पदच्छेद व अर्थ मात्र दिया है। |
| १४७४ | १२३५३ | भगवद्गीता सटीक 'बालबोधिनी' टीका | कालूराम बोहरा | २० वीं श० | ३१.५×१६.५ | १-१५६ | त्रिपाठ<br>अपूर्ण, १८ वें अध्याय के ७७ वें श्लोक तक |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४७५ | १२४११ (१) | भगवद्गीता सटीक 'बालबोधिनी टीका' | कालूराम बोहरा पुत्र रामदत्त | १९ वीं श० | २१×१४ | ३९-१८३ | र. का. १८२५ पत्र सं. १ से ३८ अप्राप्त |
| १४७६ | १०९५७ | भगवद्भक्ति रत्नावली भाषा टीका सहित | मू. बिष्णुपुरी टी चतुरदास शिष्य सतदास | १८९६ | ३२×१६ | १-१५२ | लि. क. आत्माराम 'मारवाड़ के पूर्व भाग में भाषा लिखने का कार्य प्रारंभ किया' |
| ❀१४७७ | १०९३२ (१) | भगवानदासजी की वाणी | मू. भगवानदास संकलनकर्त्ता– काशीराम | १९२८ | १७×१३.५ | १-३४३ | लि. क. दयाराम लि. स्था. महामन्दिर-जोधपुर |
| १४७८ | १०९३४ (३) | भगवानद सजी की वाणी | भगवानदास शिष्य रामचरण | १९ वीं श० | १४×८ | ७८-७०७ | लि. क. सुलभदयाल, हरिदास एवं मोबतराम |
| १४७९ | १०९४४ (३) | भगवानदासजी की वाणी | भगवानदास शिष्य रामचरण | २० वीं श० | ८×५ | २१-४४ | |
| १४८० | १०९४५ (२) | भगवानदासजी की वाणी | भगवानदास शिष्य रामचरण | १९ वीं श० | १४ ५x७.५ | २३६-३१९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४८१ | १२२१८ (५) ८८ | भजगोविन्द स्तोत्र | शंकराचार्य | १७६७ | २६.५x१० | १०६-१०८ | कृति संस्कृत है<br>लि. क. रामकृष्ण<br>लि. स्था. डिंडपुर |
| १४८२ | १२२२६ (१३) | भजगोविन्द स्तोत्र भाषा | मू. शंकराचार्य | गु० १८७७ | १४x१२.५ | ६३-६४ | पत्र सं. ६५ पर तुलसीदास जी कृत स्फुट दोहे हैं। |
| १४८३ | १२११८ | भड्डलीपुराण | | १९ वीं श० | २५.५x१०.५ | १-१२ | अंत में नक्षत्रों की स्थिति के आधार पद वर्षा का फलाफल दिया है जो अपूर्ण है। |
| १०८४ | १०८४९ (१६)१५ | भरत की बारामासी | लालदास | गु० १९३१ | १७x११ | १२१-१२४ | कर्त्ता बांसबरेली के निवासी थे। |
| १४८५ | १२१८५ | भरत बाहुबलि संवाद | लक्ष्मीवल्लभ शिष्य लक्ष्मीकीर्ति (खेमकीर्ति शाखा) | १८६९ | २५x१२ | १-५ | छन्द संख्या १०३<br>लि. क. पंडित तिलकनिधान ज्ञानानंदजी वाचनार्थं<br>लि. स्था. अजमेर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४८६ | १०८९८ (५) | भरथरी उपदेश | | गु० १९२६ | १३x.८५ | ८९-९५ | |
| १४८७ | १२२२६ (२२) | भरथरीजी की सबदी | | गु० १८७७ | १४x१२.५ | ६३४-६३८ | |
| १४८८ | १२४२६ (११) | भरथरीजी री लावणी | जरणादास (चरणादास) (नाथपंथी) | २० वीं श० | १६.५x१३ | १-३ | गुटके के प्रारंभ में सादूराम द्वारा अपनी चेली हीरां को गुटका बख्शीस करने की टोप है। |
| १४८९ | १२३७३ (१४) | भरथरी वैराग्य | | २० वीं श० | २२x१५.५ | पृ. ४१-७४ | पृ. ४१ पर गर्भ थंभन का मंत्र है। |
| १४९० | १२४२१ (५) | भरम बिधूंस को अंग (भ्रम विध्वंस को अंग) | हरखराम | गु० १८९३ | १७x१२ | ११४-११९ | पत्र सं. १०२-११४ पर इन्ही की 'चितावणी' है। |
| १४९१ | १२०६७ (३) | भर्तृहरि शतकत्रय भाषा पद्यानुवाद | महाराजा प्रतापसिंह | १९२६ | २३.५x१७ | १-३७ | र. का. १८५१ लि. क. बोहरा चंदलाल लि. स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मीं. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ※१४९२ | १०९२६ (४)१-३ | भर्तृहरि शतकत्रय भाषा पद्यानुवाद | भावनादास | गु०१९३६ | २१×१५.५ | २२०-२४४ २४५-२६५ २६५-२८६ | अंत में पत्र सं. २८६-२९१ पर संतदासजी के पद हैं। |
| १४९३ | १२२१८ (५)३० | भवानीजी री पूजा विधि | | १७६३ | २६.५×१० | ४३ वां | अंत में स्फुट तांत्रिक मंत्र हैं। |
| १४९४ | १२२१८ (५)३१ | भवानी स्तुति | | १७६३ | २६.५×१० | ४४ वां | |
| १४९५ | १०८४९ (१३) | भागवत (छुटकर दोहे) | पीताम्बरदास | १९३१ | १७×११ | १५-४४ | दोहा-बद्ध भाषा की गई है। कर्त्ता-मथानिया के थे। लि. क. मनोरथराम द्वादशस्कन्ध पर्यन्त |
| १४९६ | १२५८७ | भागवत एकादशस्कन्ध दीपिका भाषा | भावनादास शिष्य दामोदर | २० वीं श० | २०.५×१६.५ | १-११८ | र. का. हिमकर लोचन नंद ससि = १९२१ महाराजा तखतसिंहजी विजयराज्ये। किंचित कीटविद्ध |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १४९७ | ११६६५ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा (गद्य) सचित्र | | २० वीं श० | ३१x१४.५ | २-२६ | चित्र सं.-१९ अपूर्ण, दशमस्कन्ध के बारहवें अध्याय के प्रारंभ तक। |
| १४९८ | १०८४५ (२) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १८८६ | १५.५x१०.५ | ५२६-७६१ | र. का. १६९२ लि. क. जैरामनारायण लि. स्था. पोकरण |
| १४९९ | १०८५३ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १८८६ | ३०x१४.५ | १-१४३ | र. का. १६९२ |
| १५०० | १०८६५ (६) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९४९ | १२.५x८ | १८-४९ | द्वितीय अध्याय पर्यन्त लि. क. साधु छूछमराम लि. स्था सूरसागर रामद्वारा, जोधपुर |
| १५०१ | १०८६६ (११) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | गु० १९१० | ७.५x६.५ | ४२७-४८९ | ११ से १४ वें अध्याय तक। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि सं. में) | माप (सें.मी में | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५०२ | १०८७३ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुर्दास शिष्य संतदास | १९ वीं श० | २८x१५ | १-८२ | र. का. १६९२ अपूर्ण, २१ वें अध्याय के ३८ वें पद्य तक |
| १५०३ | १०९२४ (११) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुर्दास शिष्य संतदास | गु०१८४० | २३.५x१२.६ | ५२१-५३४ | अपूर्ण, २६ वें अध्याय पर्यन्त। |
| १५०४ | १०९२७ (४) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुर्दास शिष्य संतदास | १८०९ | २०.५x१० | ७-१४६ | पत्र बड़कने हैं। प्रारंभ की तीन कृतियां संस्कृत में हैं। |
| १५०५ | १०९३१ (१) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९ वीं श० | १४x१०.५ | १-३०७ | र. का. १६९२ चौपाई २३९४ दोहा ४४ |
| १५०६ | १०९३८ (२) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुर्दास शिष्य संतदास | गु०१८८५ | १६.५x८.५ | ३-४६० | र. का. १६९२ जेठ शुक्ला ९ मंगलवार |
| १५०७ | १०९४१ (१) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | गु०१९३७ | १७x१०.५ | १-८० | लि. स्था. श्री पारी मध्ये |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५०८ | १०६६१ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १८८२ | २४.५x१२.५ | १-११६ | लि. क. गोविन्दराम साधु लि. स्था. लोहावट ग्राम |
| १५०९ | ११५४१ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९ वीं श० | २५.५x११ | १-२५ | प्रथम पत्र खण्डित अपूर्ण, ११वें स्कन्धके ३०वें अध्याय के ६ ठे श्लोक तक |
| १५१० | ११५५६ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९ वीं श० | २८x१५ | १-३१ | अपूर्ण, जलाभिषिक्त |
| १५११ | ११५८६ (४) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १८३३ | १५.५x११ | १४३-१६८ | लि क. मथेन अभैराम लि. स्था. श्री नागपुर (नागोर) |
| १५१२ | ११६३१ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९०८ | २८.५x१५.५ | १-१३० | र. का. १६९२ लि. क. प्रसोत्तमदास, शिष्य मोतीराम शिष्य द्यालदास शिष्य रामदास पत्र सं १२२-१२५ खण्डित |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५३१ | १२३२७ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९३० | २८x१३.५ | १-१३३ | र. का. १६९२<br>लि. क. गुलाबदास शिष्य सायबराम<br>लि. स्था. सुजानगढ रामद्वारा |
| १५१४ | १२५०२ | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य सतदास | १९२१ | २०x१२.५ | १-१९० | र. का. १६९२<br>लि. क. साधु सीसाराम<br>पत्र सं. २९,७०-७२,७४,७५, १२५, १२८ अप्राप्त |
| १५१५ | १२५६१ (५) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९ वीं श० | २३.५x१७ | २२५-३०८ | र. का. १६९२ |
| १५१६ | १२५७९ (२) | भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९वीं श० | १६x८ | ७१-३७५ | र. का. १६९२<br>पत्र बड़कने हैं<br>अंतिम तीन पत्र नवीन |
| १५१७ | १०८४८ (९) | भागवत तृतीयस्कन्ध इकतीसमो अध्याय सभाषा | कश्चित रामदास शिष्य | १९ वीं श० | १५.५x८ | ७१७-७५० | अंतिम कृति 'हरचंद सतं' का प्रारंभ मात्र है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५१८ | १०८५४ | भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | भगवानदास निरंजनी | १९१८ | २४.५x१३ | १-४३४ | र. का. १७६० लि. क. साधु दयालदास शिष्य सेवाराम लि स्था. महामंदिर, जोधपुर |
| *१५१९ | १०८४९ (१०) | भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | रघुराजसिंह | १९३४ | १७x११ | १-२९ | र. का १९१ द्वितीय से सप्तम स्कन्ध पर्यन्त |
| १५२० | १२०२९ | भागवत दशम स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | नरहरिदास बारठ | १९०६ | २६.५x१८.५ | १·१६१ | चित्र सं.-२७ अन्य चित्रों के लिए रिक्त स्थान छोड़े हुए हैं। लि. क. बिहारीलाल-गुलालचंदोत लि, स्था. जोधपुर |
| १५२१ | १२०७१ | भागवत महापुराण भाषा | रसजानि शिष्य प्रियादास | १८६१ | ३१.५x१३.५ | १०२१ | र. का. १८०७ लि. क. रामगोपाल-खण्डेलवाल लि. स्था. सवाई जयपुर पत्र सं. स्कन्धवार लगी है। |
| १५२२ | १०९२६ (२) | भागवत माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत) | | गु०१९३६ | २१x१५.५ | २५-४४ | दो अध्याय एवं शुक मुनी की कथा मात्र है |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५२३ | १२६०६ (१) | भागवतसार पच्चीसी | गो० चंद्रलाल | १८८४ | १८x१०.५ | २-१४ | लि.क. जगदीश व्यास (पारीक) प्रथम पत्र अप्राप्त । आगे के १-४ पत्रों पर संस्कृत में वैश्य संध्या है । |
| *१५२४ | १२३५० | भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका | चैनकवि | १९ वीं श० | ३९x१८.५ | १-७८ | उद्योगपर्व के प्रथम अध्याय पर्यन्त । सूर्यवंशी राव शंभु के पुत्र राव चांदसिंह की आज्ञा से रचित । |
| १५२५ | १२५०७ | भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका (आदि, मौशल महाप्रस्थान पर्व) | चैनकवि | १९ वीं श० | ३०x१४.५ | १-९ | र. का. १८८५ तीन पर्व, मात्र । |
| *१५२६ | १०८३८ | भाषा-भारत | सांदू खेतसी (कवि सीह) | १९०६ | ३२.५x२० | १-२१५ | अंत की पुष्पिका महत्वपूर्ण है । महाराजा अभैसिंहजी ( जोधपुर ) के आश्रय में रचित । र.का. १७९० लि.क. परोपगाराय लि.स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५२७ | ११००८ (१) | भाषाभूषण | जसवंतसिंह | २० वीं श० | २६x१३ | १-१४ | अलंकार प्रकरण पर्यन्त । |
| १५२८ | ११३२४ (१) | भाषाभूषण | जसवंतसिंह | १६ वीं श० | २२.५x१५.५ | २-२८ | प्रारंभ के २७ दोहे अप्राप्त सर्व-२०४ |
| १५२९ | १२३३० (३) | भाषाभूषण | जसवंतसिंह | १६ वीं श० | २०.५x१४.५ | १-३१ | अपूर्ण |
| १५३० | ११०१३ (१२) | भाषा-वर्णन | | गु०१८१८ | २३x१५ | ११९-१२० | मराठी एवं गुर्जर आदि भाषा के १२ छन्द हैं। |
| १५३१ | १०८६६ (८) | भीखनजी की वावनी | भीखनदास शिष्य संतदास | गु०१९२७ | ८.५x७ | २२०-२४२ | र. का. १६८३ |
| १५३२ | ११०१० | भीखनजी की बावनी | भीखजन (भीखनदास) | २० वीं श० | २९x१३.५ | १-७ | र. का. १६८३ |
| १५३३ | १२३७३ (२५) | भीखम-बावनी | भीखनदास, शिष्य संतदास | २० वीं श० | २२x१५.५ | पृ. २२६-२३३ | पृष्ठ २३३-२३५ पर संस्कृत की कृति है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५३४ | १०८४३ (३) | भूपाल-चौवीसी (स्तोत्र भाषा) | भूपाल नरिंद | गु० १८९५ | २५.५x२० | ३-४ | लि.क. गंगराज लि.स्था. रतनपुरी |
| १५३५ | ११५८३ | भोगलपुराण | | गु० १६६३ | १८x१५ | ३५-५० | |
| १५३६ | १२५७४ (६) | भोगलपुराण | | २० वी श० | १७x१०.५ | १७३-१६४ | |
| १५३७ | ११०१३ (२६) | भोज राजा री पनरमी विद्या री वात | भवानीदास व्यास | गु०१८१८ | २३x१५ | १६०-१८६ | |
| १५३८ | १०६०२ (११) | भ्रमतोड़ जोगग्रन्थ | संतदास | गु०१८०६ | १५.५x१२.५ | ६३-८० | चौपाई ११६, दोहा १ अंतिम पत्र शोभन |
| १५३९ | १२३८० (२५) | भ्रमर-गीत | जनमोहन | गु०१७२४ | २०x१४ | २८०-३०० | पत्र सं. ३००-३०६ पर फुटकर पद हैं। |
| १५४० | ११०१३ (२२) | भ्रमर-बत्तीसी | मुनि केशवदास | गु० १८१८ | २३x१५ | १३६-१३७ | ४८ दोहे हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५४१ | ११२८३ (३) | भ्रमर-बत्तीसी | मुनि केशवदास | गु० १७८४ | १६x१४.५ | ५८-५६ | |
| १५४२ | १२४६७ | मंगलकलश चउपई | जिनहर्ष शिष्य गुणवर्द्धन | १८७६ | २०.५x१०.५ | १-२३ | र.का. १७१४<br>लि.क. अमरचन्द<br>लि. स्था. लदेरा |
| १५४३ | १२३२० (५७) | मंगलकलश फाग | | गु० १८४७ | २१.५x१४.५ | ४४-४८ | |
| १५४४ | १२३७० (६४) | मंडोवरपुर मंडन पार्श्वनाथ स्तवन आदि | साधु क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म | १९ वीं श० | १६x११.५ | ५४ वां | र. का. १८६८<br>र. स्थान मंडोवर, जोधपुर |
| १५४५ | ११०१३ (१४) | मदनकुंवर सत | दामो | १८१८ | २३x१५ | १२४-१२६ | लि.क. ऋषि सुजाण<br>चेला प्रेमचन्द वाचनार्थ<br>र. स्था. चाणोद नगर |
| १५४६ | १२४५६ | मदालसा आख्यान (मारकण्डेय पुराणगत) | माधोदास शिष्य दामोदर | १८३८ | ३०x१४ | १-३१ | पत्र जलाभिषिक्त<br>लि. क. जति तिलोकचन्द<br>लि. स्था. नागोर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५४७ | १२२१८ (५)३४ | मधुबिंदु सज्झाय | प्रेमसुख | १७६३ | २६,५x१० | ४८ वां | |
| १५४८ | ११६३३ | मधुमालती रसविलास री कथा चौपई सचित्र | चतुर्भुजदास | १९ वीं श० | २३.५x१७ | ३-१९७ | चित्र सं.-३०२ प्रथम दो पत्र अप्राप्त । |
| १५४९ | ११६०८ | मधुमालती री कथा चौपई सचित्र | चतुर्भुजदास | १९ वीं श० | २३x२० | २-१०१ | चित्र सं.-८५ १, ३-६, ११-२२, ३८, ७५, ९९, १०० वें पत्र अप्राप्त । |
| १५५० | ११५८४ | मधुमालती री कथा चौपई-सचित्र | चतुर्भुजदास | १९ वीं श० | २०x११.५ | ४ कुल | चित्र सं.-५ मात्र स्फुट पत्र । |
| १५५१ | ११५९५ | मधुमालती री कथा चौपई सचित्र | चतुर्भुजदास | १९ वीं श० | २३x२१.५ | ४ कुल | चित्र सं.-४ मात्र स्फुट पत्र । चित्र काट कर अलग, अलग चिपका दिए गए हैं । |
| १५५२ | १२३३० (१) | मधुमालती री कथा चौपई सचित्र | चतुर्भुजदास कायस्थ पुत्र अभैराम पुत्र नाथा | १९ वीं श० | २५.५x१८.५ | १-८८ | चित्र सं.-१३५ विभागीय प्रकाशन 'मधु-मालती सचित्र कथा' में चित्रों का पूर्ण ब्यौरा देखें । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५५३ | १२३०१ | मधुमालती री कथा चौपई सचित्र | चतुर्भुजदास पुत्र अभैयराम पुत्र नाथा | १९ वीं श० | २३.५x१७.५ | २-११६ | चित्र सं.-१०४ लि. क. भागचंद देवीचंद १, २२, ३२, ५०, ५१, ५४, ५७, ६०, ६४, ६५, ६८, ७०, ७२-७४, ७६, ८४-८६, ९०, ९८, १०९ वें पत्र अप्राप्त |
| १५५४ | १२५५७ (२०) | मधुमालती री कथा चौपई | चतुर्भुजदास | गु० १८७८ | २०x१५.५ | २३-७४ | अपूर्ण लि. क. पं. बखतचंद लि. स्था. अजमेर |
| १५५५ | १०९५५ (२) | मधुमालती री वात | चतुर्भुजदास | १९०५ | २३.५x१७.५ | १-५७ | लि. क. उदैचंद लि. स्था. चौपासनी (जोधपुर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५५६ | १०७०० | मधुमालती री वात सचित्र | चतुर्भुजदास | १८३३ | २०.५x१३ | १-७६ | चित्र सं.-४४ पत्र सं. ७१-८२ अप्राप्त। चित्रों का विवरण विभागीय प्रकाशन 'मधुमालती सचित्र कथा' में देखें। लि. क. नंदकिशोर लि. स्था. करोली, माणिकपाल के राज्य में। |
| १५५७ | १२२२४ (६) | मनपरसंग जोगग्रन्थ | जनहरिदास | १९ वीं श० | २१.५x१३ | ७१-७३ | |
| १५५८ | ११९५४ (१) | मनबोध | | १९ वीं श० | २२x१०.५ | १-२१ | कृति मराठी भाषा में। |
| १५५९ | १२२१८ (५)५३ | मन समझो सज्झाय (उद्बोधन) | आसो | १८ वीं श० | २६.५x१० | ६६-६७ | |
| १५६० | १०८३९ (६) | मनसा वाचा री कथा | | १९०६ | ३२x१७.५ | ३१-४० | चित्रों के लिए शीर्षक देकर स्थान रिक्त छोड़े हुए हैं। लि. स्था. जोधपुर |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५६१ | १२३५८ | मनहर छन्द (वाणी संग्रह) | रामचरण | १८९९ | ३१.५x१६.५ | १-१६ | छन्द १६२, अंग ४३ लि. क. प्रोहित घुघरराम लि. स्था. बीकानेर |
| १५६२ | १२५८५ (६) | मलूकदासजी री परची | परमानन्द | गु० १९२७ | १९.५x१५ | २२४-२४४ | अनन्तदास के अतिरिक्त दो अन्य परचीकारों की जानकारी इस गुटके से प्राप्त होती है। |
| १५६३ | १०७७० | महादण्डक-भाषा | | १८७० | २६.५x१२.५ | १-२० | लि. क. लखमीचन्द लि. स्था. गाँव कुकड़सर, हुलकर राज्ये। |
| १५६४ | ११०१३ (१३) | महादेवजी री निसांणी | लधराज | गु० १८१८ | २३x१५ | १२१-१२३ | ८७ छंद हैं |
| १५६५ | ११२६३ | महादेवजी रो ब्यावलो | शंभुदत्त जोशी | १९ वीं श० | १८.५x१४ | १-३० | |
| १५६६ | १०८३९ (५) | महादेवजी रो ब्यावलो (गद्य) | | १९०६ | ३२x१७.५ | २१-३१ | चित्रों के लिए शीर्षक देकर स्थान रिक्त छोड़े हुए हैं। लि. स्थान जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१५६७ | ११००४ | महादेवजी रो व्यावलो (शिवरामस्तोत्र भाषा) | शंभुराम जोशी | १९०७ | २७.५x१२.५ | १-१५ | लि. क. हीरविजय लि. स्था. लूणसर भंडारी श्रीचंदजी मोतीचंदजी की परत से प्रतिलिपि कृत। अंत में तत्कालीन अनाज के भाव व गांव के भोक्ता का वर्णन है। इस समय महाराज-तखतसिंहजी का डेरा बालसमन्द में बताया गया है। |
| *१५६८ | ११०१३ (५०) | महाराजा अभैसिंहजी रा कवित्त | बगता खिड़िया | १९ वीं श० | २३x१५ | ३२८-३४६ | गुटके की यह अंतिम कृति दूसरे के हाथ की है। |
| १५६९ | १२५६८ (१२) १९ | महाराजा जगतसिंहजी रो सिलोको | | १९ वीं श० | १८.५x१२.५ | २८-२९ | र. का. १८४७ |
| १५७० | १२२०५ (५) | महारुद्र तेरही | कीर्तिवर्द्धन | गु० १७४८-१७५५ | १७x११ | ४-८ | |
| १५७१ | १२३८० (९-११) | महावीर, ऋषभदेव एवं पार्श्वनाथ गीत | कुशलसिंह शिष्य रामसिंह | १८ वीं श० | २१.५x१४.५ | २१ वां | पत्र संख्या २२-२३ पर महावीर स्तवन तथा 'सूर्यजी रो सिलोको' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५७२ | १२५७५ (४०) | महावीर जन्माभिषेक कलश | | १९ वीं श० | १३x१४.५ | १११-११६ | पत्र संख्या १०८-११० पर 'वृहत्शांति' संस्कृत में है। |
| १५७३ | १२५६५ (८) | महावीरजी नो पारणो | | २० वीं श० | १६x१२ | ५८-६० | पत्र संख्या ६० पर 'गौडी-पार्श्वनाथ स्तवन' है। |
| १५७४ | १०९०७ (३) | महावीरजी रो चो-ढालियो | ऋषि रायचंद शिष्य जैमल | १९ वीं श० | २५.५x१२ | ६-७ | र. का. १८३९, नागोर दीपावली के दिन। |
| १५७५ | १२५५१ (१२) | महावीरदेव-विनती | वीरविजय गणि शिष्य तेजसार | १९ वीं श० | १३x११ | १०२ वां | |
| १५७६ | ११५८५ (८१६) | महावीर-स्तवन | समयसुन्दर | गु० १९०३ | १९.५x११.५ | १४९, १५८ वां | र. स्था. जेसलमेर पत्र १५८ पर पूर्ण किया है। |
| १५७७ | १२३२० (३६) | महावीर-स्तवन | लक्ष्मण | १७९७ | २१.५x१४.५ | ४१-४६ | र. का. १५२१ फागण वद ७ सोमवार। लि. क. भावविजय लि. स्था. मेड़ता |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५७८ | १२३७० (३१) | महावीर-स्तवन | समयसुन्दर | १६ वीं श० | १६x११.५ | ७-१० | र. स्था. जेसलमेर |
| १५७९ | १२४०३ | महासती द्रोपदी री चउपई | कनककीर्ति शिष्य जयमंदिर | १६४५ | २५.५x१३ | १-२० | र. का. १६९३ जेसलमेर अंत में शृङ्गारिक दोहे हैं। |
| १५८० | १०६२४ (५) | महिमासमुद्र, ब्रह्मसत आदि (चोहड्ड ग्रन्थ) | बालकराम शिष्य मीठाराम | गु०१८४० | २३x१२.५ | ३२३-३३८ | रामचरणजी की महिमा आदि। |
| १५८१ | १०६२५ (४) | महिमासमुद्र (चोहड्ड ग्रन्थ) | बालकराम शिष्य मीठाराम | गु०१९३३ | २५.५x१६.५ | ३०-३७ | |
| १५८२ | ११३८१ | माघमाहात्म्य भापा पद्यानुवाद | | १९ वीं श० | ३१.५x१३.५ | २-१५ | पद्मपुराणगत |
| १५८३ | १०६२४ (४) | माणिक बोध (चोहड्ड ग्रन्थ) (सबद माणिक बोध) | बालकराम शिष्य मीठाराम | गु० १८४० | २३x१२.५ | ३१७-३२३ | सूक्तियों का विस्तार चोहड्ड ग्रन्थों में किया गया है। |
| १५८४ | ११५८४ (७) | माताजी रो छन्द | | गु०१७०२ | १९.५x१३ | ३१-३३ | ४० छन्द हैं। पत्र सं. ३९ पर समयसुन्दर कृत कुन्थुनाथ गीत । है |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५८५ | ११५८४ (१८) | माताजी रो छन्द (पद) | अज्ञात | गु० १७१५ | १६.५x१६ | ५८-५६ | राग-गउरी |
| १५८६ | १२५४७ (३) | माताजी रो छन्द | हररूप | २० वीं श० | १६.५x१२ | ६-२५ | गुटके के मध्य के पत्रों पर भीमसिंहजी राठौड़ पर कवित्त हैं। |
| १५८७ | १२३६७ (१) | मानतुंग-मानवती चरित्र | अभयसोम | १६ वीं श० | २५.५x१६.५ | ३५-४४ | र. का. १७२७ पत्र. सं. १-३४, ४८-६६ अप्राप्त। पत्र सं. ४४-४७ पर 'मेण-रेहा चौपई' का प्रारंभिक अंश मात्र है। |
| १५८८ | ११०५० | मानतुंग-मानवती रास | मोहनविजय शिष्य रूपविजय | १८६० | २६x१३ | १-३६ | र.का. ० ६ ७ १=१७६० पुण्य-काय मुनी चन्द्र सुवर्षे र. स्था. अणहिलपुर पट्टन, दुर्गादास राठौड़ राज्ये। लि. क. मुनि उमेदविजय लि. स्था. गीरपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५८९ | १२३३० (२) | मानमंजरी | नंददास | १९ वीं श० | २०.५x१४.५ | १८-६१ | |
| १५९० | १२५५३ (५) | मानलीला | | गु० १८९७ | १४.५x१३.५ | ११६-११७ | अपूर्ण । ७७ वें छन्द तक । "श्रीकृष्ण रूप चैतन्य धन, तन सत मुकर प्रकाश ।" |
| १५९१ | १२५६८ (१८) | मानसिंहजी बारै पधार्‌या तिण समय रो कवित्त | | १९ वीं श० | १८.५x१२.५ | २८ वां | |
| १५९२ | १०९५५ (५) | मानसिंहजी रा मरसिया | | १९०५ | २३.५x१७.५ | १-३ | महाजनी लिपि में । लि. क. कुनणराज लि. स्था. जोधपुर |
| १५९३ | १०८४९ (३) | मानसी सेवा | रामानंद | गु० १९३१ | १७x११ | ५-६ | |
| १५९४ | ११००० | मानसी सेवा | रामदास | १९ वीं श० | ३०.५x१४.५ | १-७ | पत्र कीटविद्ध । |
| १५९५ | १२४२० (६) | मानसी सेवा | रामानन्द | २० वीं श० | १६x१४ | ४-५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५९६ | १२५७१ (१)२ | मानसी सेवा | रामानन्द | १९ वीं श० | १०.५x८ | १०-१३ | |
| १५९७ | १२२१८ (५)९६ | मारू-भाषा कवित्त एवं पत्री | | १८ वीं श० | २६.५x१० | ११७ वां | |
| १५९८ | १२४७१ | मार्कण्डेयपुराण भाषा पद्यानुवाद | दामोदर | १९०८ | २८.५x१६ | १-७० | र. का. १६८८<br>लि.स्था. पोकरण, रामद्वारा<br>"पुस्तक पं० साधु बुधराम की छै"<br>प्रथम व अंतिम पत्र त्रुटित। |
| १५९९ | १०८५५ | मार्कण्डेयपुराण भाषा पद्यानुवाद | दामोदर | २० वीं श० | २७.५x१५ | १-५७ | र. का. १६८८ |
| १६०० | १०८४३ (८) | मार्गणा-विधान | बनारसीदास | गु० १८९५ | २५.५x२० | २७-२८ | लि. क. गंगराज<br>लि. स्था. रतनपुरी |
| १६०१ | १०८४२ (६) | मावड़िया मिज़ाज़ | | १८९५ | २४.५x१६.५ | ७६-८२ | लि. क. खिड़ियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ<br>लि. स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६०२ | १०८४२ (६) | मिनष (मनुष्य) जन्म रा कवित्त | साधूराम गाडण | १८६५ | २४.५x१६.५ | ८८ वां | लि. क. खिड़ियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि. स्था. जोधपुर |
| १६०३ | ११०६२ (६) | मींडकीपावजी की सबदी | मींडकीपाव | गु० १८३६ | १८x१०.५ | १६२ वां | नाथ साहित्य |
| १६०४ | १२५८५ (१३) | मीरांबाई की परची | सुखसारण | गु० १६२७ | १६.५x१५ | ३११-३५५ | दुर्लभ परची |
| १६०५ | १०६५१ | मुकतरामजी की बाणी एवं पद-संग्रह | मुकतराम शिष्य रामचरण | १६ वीं श० | १०.५x८ | १–६३ | बीच के ६ पत्रों में सुदामाजी की बारखड़ी है। |
| १६०६ | १२५८५ (१४) | मुगतीबाई; ज्ञानदेव की परची | सुखसारण | गु० १६२७ | १६.५x१५ | ३५५-३८१ | 'दिखण देश पूनो-सतारो... विसनदेव ब्राह्मण हुआ ... ऐक सुता मुंगता हुवी ।।' |
| *१६०७ | १०६८० | मुनिपति–चरित्र | सिंहकुल | १७६५ | २५.५x११ | १-१५ | र. का. १५५० लि. क. किस्तूरचन्द लि. स्था. कृष्णगढ 'जैन गुर्जर कवियो' में इसका कर्त्ता सिंहकुल देवगुप्त सूरि का शिष्य लिखा है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६०८ | ११६६८ | मुनिपति-चरित्र | मुनि धर्ममंदिर शिष्य दयाकुशल | १८८६ | २६x१२ | १-२६ | र. का. १५२५, पाटण लि.क. के नाम पर रंग पोत दिया गया है। |
| १६०६ | १२५५१ (१८) | मुनिमालिका | मतिभद्र शिष्य सूरविजय | १७ वीं श० | १३x११ | १२४-१३० | र.का. १६३६; र.स्था. रिणी पत्र चिपके हुए हैं। |
| १६१० | १२५७४ (८) | मुरलीरामजी का दृष्टांत | जनमुरली | २० वीं श० | १७x१०.५ | १७२ वां | |
| १६११ | १०६६३ | मुरलीरामजी की वाणी | मुरलीराम | २० वीं श० | २३.५x१३.५ | १-५७ | गुटका बाद में शुद्ध किया गया है। |
| १६१२ | १२५५३ (६) | मूरख सत (मूर्ख शतक) गद्य | | गु० १८६७ | १४.५x१३.५ | १२६-१३२ | मूर्खों के १०१ लक्षण दिए हैं। अंत में गुटके की कृतियों की विगत है। सुदामाजी की बारखड़ी विगत के अनुसार अप्राप्त है। |
| १६१३ | १०८६६ (५) | मूलपुराण | | गु० १६१० | ७.५x६.५ | ६८-१०८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६१४ | १०८४९ (८-९) | मूलपुराण एवं पद संग्रह | रामदास | गु० १९३१ | १७x११ | १७-१९ २०-२५ | |
| १६१५ | १२२११ (२) | मूलपुरुष | द्वारिकेश | २० वीं श० | १७x१३ | १४-२० | वल्लभ-सम्प्रदाय की वंश-परम्परा । |
| १६१६ | १०९०२ (१४) | मूलमंत्र | कबीरदास | गु० १८०९ | १५.५x१२.५ | ८३-८५ | |
| १६१७ | ११०५७ | मृगलेखानी चौपई (मृगाङ्कलेखा) | ऋषि रायचन्द शिष्य जैमल | १८८९ | २५x१२ | १-१९ | र. का. १८३८<br>र. स्था. जोधपुर<br>लि.क. रामुजी की शिष्या ।<br>लि. स्था. बलुंदा |
| १६१८ | ११५८५ (८)३९ | मृगापुत्र सज्झाय | | १९ वीं श० | १९.५x११.५ | १७२-१७४, १७१ | महाजनी लिपि में ।<br>कृति का अंत पत्र संख्या १७१ पर किया गया है । |
| १६१९ | १२२१८ (५)१४३ | मृगापुत्र सज्झाय | | १८ वीं श० | २६.५x१० | १५८-१५९ | |
| १६२० | १२३२० (२९) | मृगापुत्र सज्झाय | मुनि खेम | गु० १७९२ | २६.५x१० | ३४ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६२१ | १२२१८ (५)६९-७० | मेघकुंवर सज्झाय | धर्मसार ज्ञानउदय | १८ वीं श० | २६.५x१० | ६० वां ६०, ६१ वें | |
| १६२२ | १२५६८ (३) | मेघकुमार चो-ढालियो | | १९ वीं श० | १८.५x१२.५ | ३०-३३ | अपूर्ण<br>पत्र सं. ३४-४२ अप्राप्त। |
| १६२३ | १२१३६ | मेघमाला सार्थ | | २० वीं श० | २७x१२.५ | १-१२ | अपूर्ण<br>श्लोक के नीचे राजस्थानी में अर्थ दिया है।<br>पत्र चिपके हुए हैं। |
| १६२४ | १२३१९ (७) | मेघमुनि-गीत | देवमुनि | गु० १७९२-१८४७ | २१.५x१४.५ | १९-२० | |
| १६२५ | ११९९२ | मेतारज मुनि री चौपई | ऋषि चोथमल | १८७९ | २५x१०.५ | १-५ | र. का. १६८१<br>लि. क. लिखमीचंद<br>लि. स्था. वगरी |
| १६२६ | १२२१८ (५)११ | मेतारिज ऋषि सज्झाय | | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३२-३३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६२७ | १२१९९ (९) | मेरू-तेरस रो वखांण | | गु० १९७५ | २७x१४ | ४४-४७ | लि. समय -- तपागच्छाचार्य विजयमुनि चन्द्रसूरीश्वर विजयराज्ये । लि.क. केशरीसागर; फलोदी |
| *१६२८ | ११०१३ (३३) | मेवाड़ गुण-वर्णन छंद | कवि जिनेन्द्र | गु० १८२२ | २३x१५ | २०१ वां | |
| १६२९ | ११९९७ (१) | मैनासुन्दरी-नाटक | न्यामत | २० वीं श० | २५.५x१२ | १-२३ | |
| १६३० | १२४२० (११-१३) | मोतीरामजी का छुटकर सबद एवं वाणी-संग्रह | मोतीराम शिष्य रामदास | २० वीं श० | १६x१४ | २६१-३४२ | |
| १६३१ | १२३२० (३८) | मोनी-एकादशी-स्तवन | समयसुन्दर | गु० १७९७ | २१.५x१४.५ | ४७ वां | र. का. १६८१ र. स्था. जेसलमेर लि. क. भावविजय लि. स्था. मेड़ता |
| १६३२ | १२३७० (१६) | मोनी-एकादशी-स्तवन | समयसुन्दर | १९ वीं श० | १६x११.५ | १३८-१४० | र. का. १६८१ र. स्था. जेसलमेर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६३३ | १०६३६ (३) | मोरधज राजा री कथा | सूरदास | गु० १६३४ | १२.५x८.५ | ३१६-३३४ | लि. क. चोकसराम लि. स्था. जोधपुर, बड़ा रामद्वारा |
| १६३४ | १०६४४ (५) | मोरधज राजा री लावणी | सूरदास | २० वीं श० | ८x५ | २२०-२४१ | |
| १६३५ | १०८४७ (३) | मोहमरद राजा री कथा | जगंनाथ शिष्य तुरसी | गु० १६६६ | १७x८ | ६६२-७२३ | र. का. १७७६ काति वदी १२, सोमवार। |
| १६३६ | १०६२४ (१५) | मोहमरद राजा की कथा | जगंनाथ | १६ वीं श० | २३.५x१२.५ | ५५७-५७२ | र. का. १७७६ |
| १६३७ | १०६३० (२) | मोहमरद राजा की कथा | जगंनाथ | १६ वीं श० | १५.५x१२ | १६-५५ | र. का. १७७६ |
| १६३८ | १०६३१ (४) | मोहमरद राजा की कथा | जगंनाथ | गु० १६३७ | १७x१०.५ | १०४-१३४ | र. का. १७७६ "श्री तुलसीदास धर्‍यौ सिर हाथ मोहैमरद कथा कही जगनाथ" |
| १६३९ | १२३७५ (७) | मोहमरद राजा की कथा | जगंनाथ | १६ वीं श० | ११x१६.५ | ७८३-७६५ | र. का. १७७६ |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६४० | १२५६१ (१०) | मोहमरद राजा की कथा | जगंनाथ | १९ वीं श० | २३.५x१७ | ३५१-३५५ | |
| १६४१ | १२५७२ (८) | मोहमरद राजा की कथा | रामदास | १९ वीं श० | १०.५x८.५ | १४१-१९६ | र. का. १८४१ |
| १६४२ | १२५८१ (१) | मोहमरद राजा की कथा | जगंनाथ | १९ वीं श० | १६x१०.५ | १-१४ | |
| १६४३ | १२५८६ (२) | मोहमरद राजा की कथा | जगंनाथ | १९ वीं श० | १२x९.५ | ७-३३ | |
| १६४४ | १२५७४ (१५) | मोहमरद राजा की कथा का दृष्टांत | | २० वीं श० | १७x१०.५ | ३०४-३०७ | |
| १६४५ | ११९७४ | मोहरम को गुरो फल एवं ३२ शुभ-अशुभ लक्षण | | २० वीं श० | ११.५x८ | १-४ | ग्रन्थाङ्क ११८२२ के साथ के पत्र हैं। |
| १६४६ | १२३८० (५) | मोह-विवेक | जनगोपाल | १७२४ | २०x१४ | ११२-१२६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३४७ | १२१९९ (१०) | मौनी-ग्यारस रो वखांण | | गु० १९७५ | २७x१४ | ४८-५१ | |
| १६४८ | १२२१८ (५)२९ | यंत्र-महिमा | | १७६३ | २६.५x१० | ४१-४२ | पत्र सं. ४२ क पर मेड़ता व व कोटा के पाटाधीशों की प्रशस्ति है। पत्र सं. ४२ ख पर स्त्री-पुरुष वशीकरण मंत्र एवं औषधि संग्रह है। |
| १६४९ | ११४१२ (२) | यमुनाष्टक भाषा-टीका | मू. वल्लभाचार्य टी. गोविन्दस्वामी | १९ वीं श० | २१x१६.५ | १६-२९ | |
| १६५० | १२५५९ (३) | यमुना-स्तुति टीका (यमुनाष्टक) | टी. गोविन्दस्वामी | गु० १८०५ | २१x१४ | ९१-९९ | श्री वल्लभाचार्य कृत 'यमुनाष्टक' की टीका। |
| १६५१ | १२२१८ (५)४२ | यादवां रो रास | पुन्यरत्न मुनि | १७५५ | २६.५x१० | ५९-६१ | |
| *१६५२ | ११००६ | युक्ति (युक्त निर्णय) संग्रह | | १९२५ | २८x१६.५ | १-६१ | प्राचीन हिन्दी-गद्य द्रष्टव्य है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६५३ | १०७४१ | योगपावड़ी | गरीबदास | १९ वीं श० | २३x१२ | १-४ | |
| १६५४ | ११५८३ (२२) | योग-वासिष्ठ-सार भाषा | मुरारि मिश्र | गु० १६६३ | १८x१५ | १७२-१९४ | मूल श्लोकों सहित । |
| १६५५ | १०८४२ (३) | रघुनाथ-रूपक गीताँ रो | कवि मंछ (मनसाराम) | १८९५ | २४.५x१६.५ | ४-७२ | मरुधर देश-भाषा में । कामदारी लिपि । लि. क. वणसुर फत्तौ नै खिड़िया हरसुख । लि. स्था. जोधपुर - ठाकुरां भेरूंदानजी री हवेली में । |
| १६५६ | ११००१ | रघुनाथ-रूपक गीताँ रो | मंछाराम सेवग | १८९६ | २६x१२.५ | १-५५ | लि. क. हीरविजय लि. स्था. लूणसर |
| १६५७ | १२५२२-१२५२३ | रघुवर बिसद जस (रामायण माहात्म्य) | | १९ वीं श० | ३४.४x१६ | १-५ १-८ | ग्रन्थाङ्क १२५२३ पर "रावण-वध" नामक कृति इसी के साथ के पत्र ज्ञात होते हैं । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६५८ | ११६८७ | रज्जबजी के कवित्त | रज्जब | १६ वीं श० | २६x१३ | १-११ | ग्रङ्गबद्ध। |
| १६५६ | १२३७६ (६) | रज्जबजी के कवित्त | रज्जब | १६ वीं श० | ११x१६.५ | ७५३-७८३ | कवित्त ६०, अंग ३८ |
| १६६० | १२५६१ (६) | रज्जबजी के कवित्त | रज्जब | १६ वीं श० | २३.५x१७ | ३४३-३५१ | |
| १६६१ | ११०७६ | रतनसिंह महेशदासोत री वचनिका | खिड़ियो जगो | १७६५ | २२.५x११.५ | १-१३ | लि.क. पंडित प्रेमचन्द |
| १६६२ | १०६२८ (१) | रतना-हमीर री वात | | १८६६ | २२x१७ | १-३६ | लि. क. हरलाल<br>लि.स्था. हरिदुर्ग |
| १६६३ | ११०८० | रतना-हमीर री वात | | १६ वीं श० | २२x१४.५ | १-४१ | जलाभिषिक्त<br>लि. स्था. पाली<br>छन्द सं. - ८२५ |
| १६६४ | ११०६६ | रत्नपाल रास | सुरविजय | १६१७ | २६.५x११.५ | १-२४ | र.का. १७३२<br>र. स्था. बुरहानपुर<br>लि. क. उत्तमचन्द नागोरी<br>लि. स्था. हेमावास, नागोर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६६५ | ११०५२ | रत्नावती नो रास | जिनहर्ष | १६१७ | २७x११.५ | १-२२ | र.का. १७२१<br>लि. क. उत्तमचन्द नागोरी<br>र.स्था. नागोर, गांव हेमावास |
| १६६६ | १०८२६ | रमल शास्त्र | | २० वीं श० | २४.५x१२ | १-१३ | लि. क. भोलानाथ |
| १६६७ | १२२०१ | रसरत्नाकर (मंत्रखण्ड) | नित्यनाथ पार्वतीपुत्र | १९ वीं श० | २४.५x१२.५ | १-६८ | अपूर्ण। १९ वें उपदेश तक पूर्ण; २० वें उपदेश का प्रारम्भ मात्र। |
| १६६८ | १०८४४ | रसराज (राजस्थानी भाषा टीका सहित) | मू० मतिराम | १९ वीं श० | २१.५x१५.५ | ४२-१७७ | आद्यन्तांश अप्राप्त। दो लिपियों में लिखित।<br>पत्र सं. ५३-६५, १५४-१६६ अप्राप्त। |
| १६६९ | १२२१८ (५) ९७ | रसावला | जसराज | १८ वीं श० | २६.५x१० | ११७-११८ | पत्र सं. ११५ पर 'महावीर तप सज्झाय,<br>पत्र सं. ११६ पर बुलाकीदास खत्री का वर्णन-आगरा से अन्य शहरों की दूरी संबंधी है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६७० | १२२१८ (५)८६ | राचा-बत्तीसी | राचो | १८ वीं श० | २६.५x१० | १०५-१०६ | |
| *१६७१ | १२३७६ (५) | राजनीति की रीति | जसुरांम | १९२८ | १६x१४ | ५०-१३६ | र. का. १८१४, अभैपुर<br>लि. क. विष्णुदास<br>लि. स्था. जोधपुर |
| १६७२ | ११०५९ | राजनीति रा कवित्त | देवीदास | १८३८ | २८x१२ | १-१५ | लि. क. लक्ष्मीचन्द्र |
| १६७३ | ११०८५ (१) | राजनीति रा कवित्त | देवीदास | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | १-५६ | प्रारंभ के पत्रों पर स्फुट कवित्त एवं शकुनावली है। पत्राङ्क ६१ पर भूषण कृत ७ कवित्त हैं। |
| १६७४ | ११२१५ (२) | राजनीति रा कवित्त | देवीदास | २० वीं श० | २२x१५.५ | १-१९ | अपूर्ण - ९५ कवित्त हैं। |
| १६७५ | १२३७१ (८) | राजनीति रा कवित्त | देवीदास | १८३६ | १८.५x१६.५ | २६८-२८६ | लि. क. भीखनदास<br>लि. स्था. नागपुर(नागोर) |
| १६७६ | १२३७६ (२) | राजनीति रा कवित्त | देवीदास | २० वीं श० | १६x१४ | १३-४४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६७७ | १२२१८ (५)३ | राजमती विनती | | १८ वीं श० | २६.५x१० | २६-२७ | |
| १६७८ | १२५४७ (४) | राजा दावसलेम री कथा | | २० वीं श० | १६.५x१२ | २६-३५ | अपूर्ण । आगे लिखना छोड़ दिया है । |
| १६७९ | ११९७७ (१) | राजा नल री वात | | १८६० | १८.५x१४.५ | ८-५५ | लि. स्था. बदुकापडी, जयपुर । |
| १६८० | १०८५१ (३)२३ | राजा भरथरी रा पद | | १८ वीं श० | १५.५x१० | १०६-१०७, १८९-१९० | |
| १६८१ | १०९५४ (१७) | राजा भोज री पनरमी-विद्या री वात | व्यास भवानीदास | गु० १८७४ | २४x१६.५ | १३८-१८८ | अंत के कवित्त में बीलाड़ा के कल्याणदास भूपाल द्वारा भोज कथा कराने का आग्रह व चारण कीठु द्वारा कथा कहने का उल्लेख है। |
| १६८२ | ११०६४ | राजा भोज री पनरमी-विद्या री वात | व्यास भवानीदास | १९ वीं श० | २५x१२.५ | १–१५ | सूक्ष्माक्षर । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८३ | १०८४१ (५) | राजा मान रे नाम पत्री | | गु० १९०० | २८x१६.५ | १-३ | जयपुर के राजा मानसिंह का मारवाड़ में जन्म लेने तथा पूर्वजन्म का वर्णन है। लि. क. मुरलीधर पुरोहित लि. स्था. जोधपुर |
| १६८४ | १०९४२ (३) | राजा मोरधज की लावणी | | | १३x१६ | २११-२३६ | |
| १६८५ | ११०१३ (३१) | राजा रिसालू री वात | नरबद चारण | गु० १८२२ | २३x१५ | १६२-२०१ | लि. क. ऋषि सुजाण लि. स्था. नंदपुर नगरे |
| १६८६ | १०९३६ (४) | राजा हरिश्चन्द्र की कथा | सूरदास | गु० १९३४ | १२.५x८.५ | ३३४-३४८ | लि. क. चौकसराम लि. स्था. जोधपुर, बड़ा रामद्वारा। पत्र संख्या ३५५-३५९ पर लावणी एवं दोहा संग्रह है। |
| १६८७ | १२२१८ (५) १२१ | राजुल कागल | जीतविजय शिष्य विनयविजय | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३४ वां | गुटके में जैन स्तुति-सज्झाय का सुन्दर संग्रह है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८८ | १२५५१ (३३) | राजुल गीत | समयसुन्दर | १६८० | १३x११ | १७३-१७५ | लि. क. समयकीर्ति |
| १६८९ | ११६२६ (५) | राजुलदे को बारेमासो | अज्ञात | गु० १८९४ | ३२x१५ | १-३ | |
| १६९० | १२२१८ (५) १-२ | राजुल सज्झाय | हर्षकीर्ति; आनंदवर्द्धन | १८ वीं श० | २६.५x१० | २६ वां | |
| १६९१ | १२५६८ (३३) | राणकपुर यात्रा स्तवन | समयसुन्दर | १८५४ | १८.५x१२.५ | ३४-३५ | र. का. १६७६ |
| १६९२ | ११५८४ (३६) | राणकपुर स्तवन | समयसुन्दर | १८ वीं श० | १९.५x१६ | २३४ वां | र. का. १६७६<br>र. स्था. राणकपुर |
| १६९३ | १२५८५ (८) | रानाबाई री परची | सुखसारण | गु० १९२७ | १९.५x१५ | २५३-२६८ | परचीकार का नाम अत्यल्प-ज्ञात रहा है।<br>रानाबाई —<br>"मुरधर देस गांव हरनामा।" |
| १६९४ | १२२१८ (४) | रात्रि भोजन चौपई | | १८ वीं श० | २६.५x१० | २३-२५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६९५ | १०८४१ (४) | राधा-कृष्ण-व्रजविहार लीला | | १९०० | २८x१९.५ | ६-३६ | अंत में मारवाड़ के राजा मानसिंहजी के सम्बन्ध में किसी साधु की पत्री है। लि.क. मुरलीधर पुरोहित लि. स्था. जोधपुर |
| १६९६ | ११०१३ (३४) | राम-गुण रासो | माधवदास दधवाड़िया | १८२२ | २३x१५ | २०४-२४९ | लि.क. ऋषि सुजाण लि. स्था. नन्दपुर नगरे |
| १६९७ | ११०७२ | राम-गुण रासो | माधवदास दधवाड़िया | १९ वीं श० | २३x११.५ | १-४४ | लि.स्था. वींझेवा नगरे |
| १६९८ | १२४१९ (१) | रामचन्द्रजी री कथा | | १९४३ | २५x१७ | ४०-९४ | महाजनी लिपि में। पत्र संख्या ४२-४५ व प्रारंभ के ७-३९ अप्राप्त। |
| १६९९ | १०८४७ (१) | रामचरणजी की अणभै वाणी | रामचरण सं. क. नवलराम | १९९९ | १७x८ | १-५८१ | सन्त-साहित्य की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण है। सं. स्था. शाहपुरा "नवलराम अंग बांधिया" लि. स्था. महामंदिर, जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७०० | १०६४२ (४) | रामचरणजी की लावणी | लवलीनराम शिष्य रामचरण | गु० १९५२ | १३x६ | २३६-२४३ | |
| १७०१ | १०६३६ (६३) | रामचरणजी की लावणी आदि | *लवलीनराम | गु० १९३४ | १२.५x८.५ | ३१५-३१९; ३४९-३५२; ३५२-३५५ | *तीनों लावणियाँ इन्हीं की हैं। |
| १७०२ | १०८४८ (१) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९ वीं श० | १५.५x८ | १-२३ | |
| १७०३ | १०६२४ (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण<br>सं. कर्त्ता–नवलराम | गु० १८४० | २३x१२.५ | ६५-२८८ | सं. का. १८२७<br>सं. स्था. साहिपुरा, भीलवाड़ा<br>सर्व 'सबद' ३०६३ |
| १७०४ | १०६२४ (६) | रामचरणजी की वाणी (स्फुट) | रामचरण | गु० १८४० | २३x१२.५ | ३४२-३५६ | |
| १७०५ | १०६२५ (२)५ | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | गु० १९३३ | २५.५x१६.५ | १६-३०; ४२-५१; ५५-५९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७०६ | १०६२६ | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९२२ | १३x८.५ | १-२५ | लि. क. नैंनूराम<br>लि. स्था. साहिपुरा<br>गु० १९२३ में जोधपुर में श्री हजूर चैनरामजी कूं बकस्यो। |
| १७०७ | १०६३० (१) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९ वीं श० | १५.५x१२ | १-१६ | |
| १७०८ | १०६३३ (१) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९४० | १३.५x८.५ | १-६०२ | लि. क. बिलासीराम<br>लि.स्था. साहपुरा-भीलवाड़ा |
| १७०९ | १०६३४ (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९ वीं श० | १४x८ | १६-७८ | लि. क. "सुलभदयाल हरिदासजी तीजो मोबतराम। तीनूं मिल गुटको लिख्यो |
| १७१० | १०६३७ (१) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | गु० १९२२ | १४.५x७.५ | १-४२४ | छांटमां 'सबदों' का संग्रह है।<br>लि. क. रामलाल<br>लि स्था. बदनोर, रामद्वारा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७११ | १०९४० (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १८८३ | १५.५x१०.५ | ६७-४१९ | लि. क. जैतराम<br>लि. स्था. फलोदी<br>राग २५, पद १०५। |
| १७१२ | १०९४४ (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९ वीं श० | ८x५ | ११-२१ | लि. क. बालकराम शिष्य दुलभरांम |
| १७१३ | १०९४५ (१) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | | १४.५x७.५ | १-२३६ | |
| १७१४ | १०८४६ (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९५० | १५.५x९.५ | २२-२९ | लि. क. रामनिवास<br>लि. स्था. रतनपुरी |
| १७१५ | १०९४८ (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | गु० १९३५ | १४.५x७ | १०-३० | |
| १७१६ | १०९४९ (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १९३५ | ११x६.५ | ५७-११८ | लि. क. चोकसराम<br>लि. स्था. रतनपुरी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७१७ | १०६५२ | रामचरणजी की वाणी | रामचरण शिष्य कृपाराम | १६०५ | ७.५x६ | १-१२४ | लि. क. रामनारायण<br>लि. स्था. देवगढ-रामद्वारा |
| १७१८ | १०६५३ | रामचरणजी की वाणी | रामचरण शिष्य कृपाराम | १६३० | ११.५x६ | २-४२५ | पत्र संख्या ४२५-४४५ पर रामजन के पद संकलित हैं।<br>लि.क. दयालदास<br>लि. स्था. जोधपुर |
| *१७१६ | १२००६ | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | २० वीं श० | १५.५x१२ | १-५८६ | सं.क. रामजन<br>सं. का. १८४७-४६,<br>सं.स्था. साहपुरा, भीलवाड़ा<br>पत्र सं. १-१० अप्राप्त,<br>११ वां खण्डित। |
| १७२० | १२३११ | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | १६४० | १७.५x८.५ | १-६६ | लि. क. साधु गंगाराम<br>लि. स्था. कोटा-रामद्वारा |
| १७२१ | १२३२६ (२) | रामचरणजी की वाणी | रामचरण | २० वीं श० | २३x६.५ | ४६-१७६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७२२ | १२३६१ | रामचरणजी की वाणी एवं कृति संग्रह | रामचरण | १६ वीं श० | २८x१४ | ३-१४२ | आद्यन्त पत्र अप्राप्त। |
| १७२३ | १०६३८ (१) | रामचरणजी की स्फुट-वाणी | रामचरण | गु० १८८५ | १६.५x८.५ | १-६ | |
| १७२४ | ११०३३ | रामचरितमानस | गो० तुलसीदास | १८६०-१६०७ | ३१x१५.५ | १-२८८ | लि. क. हरसुखदास लि. स्था. डीडवाणा। |
| १७२५ | ११४४३ | रामचरितमानस (उत्तरकाण्ड) | गो० तुलसीदास | १८६७ | ३१.५x१४.५ | १-३८ | लि.क. लालदास शिष्य सेवाराम लि. स्था. कोट मरोट |
| १७२६ | ११५४६ | रामचरितमानस (आरण्य, लंका एवं अयोध्या काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८४५ | २८x१४ | १-२६<br>१-५०<br>१-६४<br>१७० | लि. क. खेमदास मनसाराम |
| १७२७ | ११५५० | रामचरितमानस (बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड) | गो० तुलसीदास | १६०१-१६०२ | ३१.५x१४.५ | १-६४<br>१-४४ | लि. क. साधु कीमतराम एवं मगदत्त व्यास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७२८ | ११५५३ | रामचरितमानस (सुन्दरकाण्ड एवं किष्किंधा-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | ३०.५x१४ | १-१८, १-११ | |
| १७२९ | ११५५७ | रामचरितमानस (आरण्यकाण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | ३१x१४ | १-२४ | पत्र बड़कने हैं। |
| १७३० | ११५६१ | रामचरितमानस (लङ्का, अयोध्या, सुन्दर एवं किष्किंधा काण्ह) | गो० तुलसीदास | १९१५-१९१३ | ३०.५x१५.५ | १-४९; १-८२; १-१६; १-१४ — १६१ | लि. क. रामकृष्णदास निरंजनी लि. स्था. पीपली गली, मींदर पोल, अहिपुर(नागोर) लिखायतं साध द्वारकादास। |
| १७३१ | ११५७० | रामचरितमानस (अयोध्या, बाल, आरण्य, सुन्दर एवं लङ्का काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९१० | ३१x१४.५ | १- ७४ १-१०३ १- २२ १- १६ १- ४८ — २६३ | पत्र बड़कने हैं। लि.क. लालदास साधु लि. स्था. फलोदी, रघुनाथद्वारा। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७३२ | ११५६३ | रामचरितमानस (सातों काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८६३ | ३१.५x१५ | १-९३; १-७६; १-२१; १-१०; १-१६; १-४३; १-३९; २९८ | लि. क. रामजीदास लि.स्था. अहिपुर (नागोर) |
| १७३३ | ११६२९ | रामचरितमानस (सातों काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९३२ | ३०.५x१६ | कुल ५१० | पत्र सं.-बाल. १५८; सुन्दर २५; आरण्य ३०; किष्किधा १६; लङ्का ८४; अयोध्या १२९; उत्तरकाण्ड ६८। |
| १७३४ | ११६५१ | रामचरितमानस (सातों काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८८६-१८८८ | | १-२४५; १-१५६; १- ५२; १- १६; १- ३३; १- ९१; १- ५३; ६४६ | किष्किधा काण्ड का ७ वां पत्र अप्राप्त। लि. क. महात्मा भीखमचंद, जती जेठमल एवं शंकरगिरि लि. स्था. विक्रमपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७३५ | ११६५२ | रामचरितमानस (सातों काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९०९; १९१४-१९१५ | ३३x१८.५ | १-८८<br>१-६२<br>१-२०<br>१- ९<br>१-१५<br>१-४८<br>१-२६<br>२६४ | लि.क. लिछमणदास एवं मगदत्त सेवग लि. स्था. अहिपुर बापू हरशेठ द्वारा मुंबई से शक संवत् १७७३ में प्रकाशित प्रति की नकल। |
| १७३६ | १२०२७ | रामचरितमानस (छह काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९१७ | २५.५x१५.५ | १-११३<br>१- ९२<br>१- २४<br>१- १९<br>१- ६१<br>१- ४७<br>३५६ | सुन्दर काण्ड नहीं है। लि. क. ब्राह्मण खण्डेलवाल फूसा लि. स्था. लाडणू। |
| १७३७ | १२२१२ | रामचरितमानस (सातों काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८९२ | २५x२०.५ | २-४४५ | पत्र खण्डित, चिपके हुए। प्रथम पत्र अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७३८ | १२३२४ | रामचरितमानस (सातों काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९३८ | २९x१७ | १-३४<br>१-६७<br>१-१६<br>१-९२<br>१-२१<br>१-१४<br>१-४२<br>२८६ | लि. क. हरसुखदास<br>लि. स्था. वीवास (वीदासर) |
| १७३९ | १२३५१ | रामचरितमानस (सातों काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८७६ | ३५.५x१६.५ | १-१७१ | लि. स्था. सूरजगढ |
| १७४० | १२५९९ | रामचरितमानस (किष्किंधा काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | ३०x१५.५ | १-११ | पत्रों के कोंण खण्डित । |
| *१७४१ | १०९०२ (४) | रामचरित्र | सुन्दरदास शिष्य कालुजी | गु० १८०९ | १५.५x१२.५ | १७–२३ | |
| १७४२ | ११९५४ (२) | रामचरित्र (रामलीला) | | १९ वीं श० | २२x१०.५ | २१–२४ | वाल्मीकि कृत शतकोटि रामायण के आधार पर । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७४३ | १०९२२ (१) | राम चरित्र-गुण-कथा वार्ता सचित्र (ब्रह्माण्डपुराण गत) | | | २६.५x१६.५ | १–२२४ | चित्र संख्या – ४४७ सभी चित्रों पर शीर्षक दिया गया है। सभी पत्र फूलयुक्त लाल बोर्डर के हैं। लि. क. बोरा पुष्करना हीरालाल, पुस्तक प्रकाश वाले। लि. स्था. जोधपुर ठाकुरां देवीसिंहजी रै पूज्य माजीसायवा पठनार्थ। |
| १७४४ | १०८४८ (२) | रामजन की वाणी | रामजन शिष्य रामचरण | | १५.५x८ | २३–३० | |
| १७४५ | १०९२५ (९) | रामजन की वाणी | रामजन | गु० १९३३ | २५.५x१६.५ | १४९–३३५ | |
| १७४६ | १०९६८ | रामजन की वाणी | रामजन | १९१४ | २५.५x१२.५ | १–१२० | सबद, साखी एवं पद संग्रह। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७४७ | ११६४८ (७)५२-५३ | रामदासजी का कड़खा एवं पद | रामदास | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ३४४-३४५ | पत्र सं. ३४५ पर ही सुखदेव एवं कल्याणदास कृत आरती है। |
| १७४८ | १२४२० (६) | रामदासजी का छुटकर सबद | रामदास | २० वीं श० | १६x१४ | ११८-१६२ | |
| १७४९ | १०८५१ (४) | रामदासजी की वाणी | रामदास | १७९२ | १५.५x१० | १५३-१८१ | लि. क. श्यामाबाई |
| १७५० | १२५९१ (२६)१ | रामदासजी की वाणी | रामदास | २० वीं श० | १५.५x१० | १३४-१५२ | |
| १७५१ | १०८६६ (१८)१ | रामदासजी की वाणी कवित्तबद्ध | रामदास | गु० १९२७ | ८.५x७ | ६१६-६६२ | अङ्ग ७; कवित्त ९०। |
| १७५२ | १२५७१ (४)१ | रामदासजी के छुटकर सबद एवं कृति-संग्रह | रामदास | १९ वीं श० | १०.५x८ | १४७-१९२ | अङ्गबद्ध। पत्र सं. – १९२ से २३४ तक इन्हीं की अन्य कृतियों का संग्रह है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७५३ | १२२२६ (२-३) | राम-ध्यानमंजरी तथा रामचरित्र को कक्को | अग्रदास | १८७६ | १४x१२.५ | २-८ ८-११ | पत्र सं. – १ पर जनहरिदास की 'ब्रह्मस्तुति' है। लि. क. वीरमदास निरंजनी सेवादास की शिष्य परम्परा में। लि. स्था. केरूं, जोधपुर |
| १७५४ | १२३७१ (१०) | राम-नाम महिमा | संतदास | गु० १८३६ | १८.५x१६.५ | ३१६ वां | पत्र सं. – ३१६-३२० पर स्फुट दोहे हैं। |
| १७५५ | १०८६८ (७) | राम-बारखड़ी | रामरतन | गु० १६२६ | १३x८.५ | १७७-१८७ | |
| १७५६ | १२५६१ (६) | राममंत्र-महिमा | कबीरदास | २० वीं श० | १५.५x१० | ५२-५४ | |
| १७५७ | १२३७६ (३) | रामरक्षा (स्तोत्र भाषा) | रामानंद | गु० १८६६ | २०.५x१४.५ | २६-३१ | पत्र सं. – ३२ पर 'सप्तश्लोकी गीता' है। |
| १७५८ | १२५६१ (३८) | रामरक्षा (स्तोत्र भाषा) | रामदास | १६ वीं श० | १५.५x१० | २५३-२५५ | अंत में रामदासजी के कवित्त हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७५९ | १०८४९ (२) | रामरक्षा (स्तोत्र भाषा) | रामानंद | गु० १९३१ | १७x११ | १-५ | प्रारम्भ के पत्र पर सूरदास का एक पद है। |
| १७६० | १२४२० (४-५) | रामरक्षा (स्तोत्र भाषा) | रामानंद | २० वीं श० | १६x१४ | २१-२२; १-४ | पत्राङ्क, २२ के बाद पुनः १ से प्रारंभ किए गये हैं। |
| १७६१ | १०८६८ (४) | राम-रसायन | मानिकदास | गु० १९२७ | ८.५x७ | ४६-१८७ | अंत में एक कवित्त है। |
| १७६२ | १०९५६ (६) | राम-रसायन | मानिकदास | २० वीं श० | ३२x१६ | १-३५ | सव्याख्या। |
| १७६३ | १२३६५ | रामरासो | माधोदास दधवाड़िया | १७८३ | २२.५x१६.५ | १-८८ | पूर्व प्रति का उल्लेख है। लि.क. हरकिशन शिष्य दयारत्न लि. स्था. गांव बलूंदा—रामदास चांदावत रे गांव |
| १७६४ | १२५७० (१२) | रामरिष्या (रामरक्षा स्तोत्र-भाषा) | रामानंद | २० वीं श० | ९.५x६.५ | ४१-४६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७६५ | १२५१७ (१) १ | रामरिष्या (रामरक्षा स्तोत्र भाषा) | रामानंद | १९ वीं श० | १०.५x८ | १-९ | |
| १७६६ | १२५६१ (३२) | रामरिष्या (रामरक्षा स्तोत्र भाषा) | रामानंद | २० वीं श० | १५.५x१० | २०८-२११ | पत्र सं. - २१२ पर कबीरदासजी का पद है। |
| १७६७ | १२३११ (३) | रामवल्लभजी की साखी | रामवल्लभ | गु० १९४० | १७.५x८.५ | ३०३-४६४ | ग्रङ्कबद्ध। लि. क. साधु गंगाराम लि. स्था. कोटा |
| १७६८ | १२२१३ (१) | रामविनोद ग्रन्थ-रोगानुक्रमणिका | | गु० १८४७ | २१x१६.५ | ३-७ | मूलग्रन्थ से पत्र अलग सीं दिये गए हैं। मूल ग्रन्थ इसी गुटके में है। रामविनोद ग्रन्थ में वर्णित रोगों की पत्र क्रम से अनुक्रमणिका दी गई है। प्रथम दो पत्र अप्राप्त होने से पत्र सं. ५१ से १०२ तक की विगत है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७६९ | १२३८५ | रामविनोद भाषा (आयुर्वेद) | रामचन्द्र शिष्य पद्मरंग | १९२८ | ३२x१५.५ | १-७१ | लि. क. घनस्यामदास वैष्णव अंत में स्फुट नुस्खे हैं। |
| १७७० | १२२१३ (४) | रामविनोद भाषा | रामचन्द्र शिष्य पद्मरंग | गु० १८४७ | २१x१६.५ | १-१०० | अंत के दो पत्र अप्राप्त। गुटका आयुर्वेद-विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। संस्कृत में लोलिम्बराज कृत "वैद्यजीवन" के १-२२ पत्र भी इस गुटके में हैं। |
| १७७१ | १०८६३ | रामविनोद भाषा | रामचन्द्र पुत्र केशवदास मिश्र | १९ वीं श० | १६.५x११.५ | १-८८ | अपूर्ण। प्रारम्भ के तीन पत्रों पर "वैद्यमनोत्सव भाषा" का अंतिमांश है। |
| *१७७२ | १०९७९ | रामविनोद भाषा | रामचन्द्र शिष्य पद्मरंग | १८९५ | २५.५x१०.५ | १-७९ | र. का. १७२० 'गगन पांखि फुनि दीप ससि' औरंगजेब के समय में खुरसाण में रचित। लि: क. साधु गंगाराम सर्वगाथा - ३०३ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१७७३ | १२३६४ | राम विवर-विजय गीत (रामचरित्र) | तुलसी | १९ वीं श० | २४.५x१२ | १-११५ | दुर्लभ्यप्रति । अपूर्ण । दोहा चौपईबद्ध अहिरावण वध-कथा है । २३७ वीं चौपई पर्यन्त । |
| १७७४ | १०९२४ (१०) | रामसत | चत्रभुजदास | गु० १८४० | २३.५x१२.५ | ५१८-५२१ | |
| १७७५ | १२३११ (२) | रामसत | चत्रभुजदास | गु० १९४० | १७.५x८.५ | ९६-१०२ | लि. क. साधु गंगाराम लि. स्था. कोटा |
| १७७६ | १२३२९ (५) | रामसत | चत्रभुजदास | २० वीं श० | २३x१९.५ | ३७३-३७७ | |
| १७७७ | १०९२४ (१२) | राम सागर | कबीर | गु० १८४० | २३.५x१२.५ | ५३४-५३६ | |
| *१७७८ | १०९७० | राम-सीता-चरित्र | ऋषि चोथमल | १८६७ | २५.५x१३ | १-६७ | र. का. १८६२, जोधाण लि. क. मोती लि. स्था. गुरा (गुढ़ा-जोधपुर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७७९ | ११०६७ | राम-सीता चरित्र | ऋषि चोथमल | १९१२ | २५x१२.५ | १-९४ | र. का. १८६२, जोधाणे लि. क. केसर लि. स्था. गागराणां |
| १७८० | १०७५५ | राम-सीता-चरित्र टीका (गद्य) | | १९ वीं श० | २६x११.५ | १-१३ | अपूर्ण। जैन कृति। सीता के पुनः अयोध्या लौटने पर लगाये गये कलंक तक की कथा है। |
| १७८१ | १०९६४ | रामाज्ञा | गो० तुलसीदास | १९४५ | २५.५x११.५ | १-१२ | दोहे – ३४३ लि. क. चोकसराम |
| १७८२ | ११६४८ (१९) | रामानंदजी का पद एवं रामरक्षा | रामानंद | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ५५२-५५३ | |
| १७८३ | १२३१९ | रामायण (अवतारचरित्र गत) | नरहरिदास बारठ | १९०८ | २२४x२ | ४-२०४ | लि. क. ब्राह्मण गंगादास गौड़; लि. स्था. नागिना पत्र संख्या-१-३, ५, ९-१८ अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७८४ | १०९६० | रामाश्वमेध भाषा | मधुसूदनदास माथुर | २० वीं श० | ३२x१६.५ | १–२०५ | र.का. १८३९ पद्मपुराणगत। |
| १७८५ | १२५२० | रामाश्वमेध भाषा | | १९०३ | ३१x१५.५ | १-१८ | लि. क. व्यास रामसुख पारीक लि. स्था. बीकानेर |
| १७८६ | १२५६७ (१३) | रायमल, महासिंह-राठौड़ रो सिलोको | | गु० १८३१ | २१x१५.५ | ६४-६७ | लिपि भ्रष्ट है। पत्र सं.—५७, ६१, ६२-६४ पर पट्टी-पहाड़े हैं। पत्र सं.—५९-६० पर स्फुट पद हैं। |
| १७८७ | १०९४२ (५) | रावण की लावणी | लवलीनराम शिष्य रामचरण | गु० १९५२ | १३x६ | २४३–२४८ | |
| १७८८ | १२५६५ (१७)५ | रावण प्रतिवासुदेवजी की लावणी | | २० वीं श० | १६x१२ | ११७–११८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७८६ | १०७०१ (१) | रिसालुकुँवर री वार्ता (सचित्र) | नरबद चारण | १८६२ | १६.५x१२ | १-६६ | चित्र सं.—७१ गुटके की सिलाई नहीं है। लि. स्था. मेड़ता |
| १७६० | १०६५४ (१६) | रिसालु राजा री वात | नरबद चारण | १८७४ | २४x१६.५ | १२२-१३८ | लि. क. फतेचन्द लि. स्था. पाली समदकुंवरजी जुहारमलजी वाचनार्थं। |
| १७६१ | १२३७० (६)६ | रिषभदेव-गीतं | जिनलाभसूरि | १६ वीं श० | १६x११.५ | ५५ वां | |
| १७६२ | १२६०० | रुक्मिणीमंगल | विष्णुदास | १६ वीं श० | २०.५x१५ | १५-६६ | लि. क. बलदेव लि. स्था. अलवर पत्र सं.- १-१४, २५, २८, २६, ६७ अप्राप्त। ३५ वां पत्र दो बार। |
| १७६३ | २२४२५ | रुक्मिणीमंगल | पदमइयो शिष्य पीपा (पदमा तेली) | २० वीं श० | २६.५x१७ | १-६० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७९४ | १२५९२ (३) | रुक्मिणीमंगल | जनपदम (पदमा तेली) | १९ वीं श० | १४x१०.५ | ५३-८६ | |
| १७९५ | ११५८८ | रुक्मिणीमंगल (सचित्र) | पदमईया | १९४२ | २७.५x१८ | १-११४ | चित्र सं.-८, पत्र के माप के। लि. क. नन्दराम लि. स्था. नागोर |
| १७९६ | १२५५३ (२) | रुघनाथलीला | माधोदास | गु० १८९७ | १४.५x१३.५ | ८२-९६ | लि. क. ब्राह्मण श्रीधर लि. स्था. भागनगर |
| *१७९७ | १०८४२ (१९) | रूपग-दवावेत महाराजा-अजीतसिंहजी री | द्वारकादास | १९०० | २४.५x१६.५ | ११२-११९ | १२ दोहे, ३ कवित्त तथा २ गाहा। र. का. १७७२ लि.क. खिड़यो हरसुख |
| १७९८ | १२२१० (१३) १-२ | रूप-चौदस के पद | विष्णुदास विठ्ठल | १९ वीं श० | १८x१३.५ | ६८ वां ६८-६९ | राग-देवगंधार, विलावल। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७९९ | १०८४२ (२०) | रूपदीप पिंगल-भाषा | जयकृष्ण भोजग पुत्र भवानीदास | १९०० | २४.५x१६.५ | ११९-१२३ | पत्र सं. – १२३ पर स्फुट कवित्त हैं। किंचित अपूर्ण, महाजनी लिपि में। |
| १८०० | १२५८० (१) | रूपदीप पिंगल-भाषा | जयकृष्ण भोजग शिष्य कृपाराम | गु० १८६९ | १५x१०.५ | १-१२ | र. का. १७७६ अंत में गणविचार दिया है। लि. क. वैष्णव भगतराम लि. स्था. रामगढ़ |
| १८०१ | १०८४७ (२)३३-३४ | रेखता (स्फुट) | गंगादास बखतावर | गु० १९९९ | १७x८ | ६६४ वां ६६५ वां | |
| १८०२ | १०८४९ (६) | रेखता-ब्रह्मस्तुति | हरिरामदास | गु० १९३१ | १७x११ | १३-१४ | |
| १८०३ | १२५९२ (६)२ | रेखता-संग्रह | हरिरामदास किसना | १९ वीं श० | १४x१०.५ | १७३-१७४ १७४-१७५ | |
| १८०४ | १२४४६ (१) | रेणादेत्री चो-ढालियो | ऋषि रायचन्द | १९ वीं श० | २५x११ | १-३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८०५ | १२४२२ (२१) | रैदासजी की परची | अनन्तदास | गु० १८३१ | १५x१०.५ | ४२६–४३३ | पत्र सं. – ४४८-४४६ पर कबीरदास कृत 'बत्तीस जोग ग्रन्थ' का प्रारम्भ है। पत्र सं. – ४५० पर 'साध को व्यौरो' है। |
| १८०६ | १२५८५ (३) | रैदासजी री परची | अनन्तदास | गु० १६२७ | १६.५x१५ | १५०-१८३ | गुटके में १५ संतों की परचियों का संग्रह है। |
| १८०७ | ११६४८ (१७) | रैदासजी की वाणी | रैदास | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ५४२-५४६ | राग १४, पद ८६ |
| १८०८ | १२१६६ (७) | रोहिणी-व्याख्यान | | गु० १६७५ | २७x१४ | ३८-४० | |
| १८०९ | ११०११ | लघुचाणक्य भाषा पद्यानुवाद | भावनादास वैष्णव | २० वीं श० | २६x१४ | १-१३ | र. का. १६२६ "अंक अयन ग्रह इन्दु" |
| १८१० | १०८६७ (८) | लघुतानाम ग्रन्थ | खेमदास | २० वीं श० | १२x११ | २४६–२५४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८११ | १०७७३ | लघुसंग्रहणी-बालावबोध | शिवनिधान गणि | १८९३ | २६x१२.५ | १-७२ | मध्य में सारणियां दी हुई हैं। लि. क. क्षमासागर लि. स्था. श्री विक्रमपुर (बीकानेर) |
| १८१२ | १०८४७ (८) ३,५ | लावणी | रामलोचन | गु० १९९९ | १७x८ | ७५८-७५९ | पत्र संख्या ७६१-७६२ पर निर्भयराम के पद हैं। |
| १८१३ | १०८४७ (२) ३९-४० | लावणी | सेवाराम<br>चोथमल | गु० १९९९ | १७x८ | ६७६-६७७<br>६७७-६८० | र. का. (३९) १८६९, रामपुरा गढ<br>र. का. (४०) १८५२ |
| १८१४ | १२५७४ (६) | लावणी - प्रह्लादजी की | कृष्णदास | २० वीं श० | १७x१०.५ | १६४-१६७ | |
| १८१५ | १०९४२ (६-८) | लावणी - संग्रह | अमोलकराम<br>कबीरदास<br>सेवाराम | गु० १९५२ | १३x६ | २४८-२५०<br>२५१-२५३<br>२५३-२५५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८१६ | १०६३६ (१)५३-५५ | लावणी-संग्रह | रूपदास<br>चौथे<br>छीतमदास<br>सुन्दर विरहन | गु० १६३४ | १२.५x८.५ | २१६-२२३<br>२२३-२२८<br>२२८-२२६<br>२५८-२५६ | पदसंग्रह है। |
| १८१७ | १२५७४ (२) | लावणी-संग्रह (मीरांबाई व ध्रुवजी की) | रामनारायण<br>देवीदास<br>अज्ञात | २० वीं श० | १७x१०.५ | ७४-७६<br>७६-७६<br>७६-८१ | लि. क. बक्षीराम पत्र सं.—८१ पर रामचरण कृत आरती है। |
| १८१८ | १०६३५ (१) | लीलावती गणित चिंतामणि | सेवग रिदलाल | १६ वीं श० | २१.५x१७.५ | १-१३५ | |
| १८१६ | १२३८० (२७)१-४ | लीला-संग्रह (बाललीला, प्रबोधलीला, भक्तिप्रताप लीला) | माधोदास | गु० १७२४ | २०x१४ | ३०७-३१३<br>३१५-३१६<br>३१६-३२६ | पत्र सं. – ३१४ पर नामदेवजी की साखी है। |
| १८२० | १०६३५ (२) | लेखा रा ऊपर वाड़िया | | १६ वीं श० | २१.५x१७.५ | १३६-१५४ | गणित सम्बन्धी प्रश्नोत्तर। |
| १८२१ | १२५८१ (७) | वंदना आदि | सेवादास | १६ वीं श० | १६x१०.५ | ४७-५१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८२२ | १०८४२ (१७) | वमेकवार री निसांणी | केसोदास गाडण | १८९७ | २४.५x१६.५ | १०१-१०९ | पत्र सं.—१०९-११२ पर 'सारस्वत व्याकरण' है। लि. क. खिड़ियो हरसुख |
| १८२३ | १२३७९ (२) | वमेकवार री निसांणी | केसोदास गाडण | गु० १८६६ | २०.५x१४.५ | १४-२८ | |
| १८२४ | १२४३४ | वमेकवार री निसांणी | केसोदास गाडण | १८६१ | २५x१२.५ | १-६ | कीर्तिमल रणजीत पठनार्थ। |
| १८२५ | ११५८४ (६) | वरकानापार्श्वनाथ स्तवन | | १७१४ | १६.५x१६ | ३६ वां | पत्र सं.–३७-३८ पर संस्कृत में 'कालज्ञान' है। |
| १८२६ | १२२०५ (४७) | वरकानापार्श्वनाथ स्तवन | कीर्तिवर्द्धन | १८ वीं श० | १७x११ | १४६ वां | पत्र संख्या–१५० पर शेख महीमदीन का पद है। |
| १८२७ | १२३२० (४) | वर्द्धमानस्वामी स्तवन | उदयसिंह | गु० १७९२-१८४७ | २१.५x१४.५ | १६-१७ | र. का. १७६८ र. स्था. किशनगढ़ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८२८ | १२२११ (१) | वल्लभाख्यान के पद | गोपालदास | २० वीं श० | १७x१३ | १-१४ | राग -- केदारो, रामकली, भूपाली, प्रभाती, सामेरी, परज, धनाश्री। |
| १८२९ | १२२१८ (५) २८ | वस्तुपाल-तेजपाल धर्मकृत्य | | १७६३ | २६.५x१० | ४१ वां | |
| *१८३० | १०९७५ | वाक्यवल्लरी | | २० वीं श० | २८.५x१३.५ | १-९ | कोश ग्रन्थ है। अंतिम पत्र फटा हुआ है। |
| १८३१ | १२५७० (२४) | वाजीदजी की अरेल | वाजीद | २० वीं श० | ९.५x६.५ | १४०-१५५ | |
| १८३२ | १०८९८ (१-३) | वाणी-संग्रह | संतदास<br>जनदरिया<br>किसनदास | गु० १९२९ | १३x८.५ | १-४७<br>४७-६७<br>६७-८० | |
| १८३३ | १२३३० (४२) | वासपूजजिन स्तवन | कल्याणप्रसाद | गु० १७९७ | २१.५x१४.५ | ४९-५० | र. का. १६६५<br>र. स्था. हिसार<br>पत्र संख्या ५० पर 'सीमंधर स्वामी स्तवन' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८३४ | १२५६५ (३) | विंशति-स्थानक पूजा | जिनहर्षसूरि शिष्य जिनचंद सूरि | २० वीं श० | १६x१२ | १०-३३ | र. का. १८७१<br>गुटके में स्तुति-स्तोत्र आदि लघु कृतियों का संग्रह है।<br>पत्र सं.—३४ पर इन्हीं की 'वीसथानक आरती' है। |
| १८३५ | ११०६५ | विक्रमादित्य-खापर्‌या चोर री चौपई | लाभवर्द्धन | १९१६ | २७.५x१३.५ | १-२० | र. का. १७२७<br>र. स्था. जैतारण<br>सर्व ढालें—२७<br>लि. क. उत्तमचन्द<br>लि. स्था. हमावस (नागोर) |
| १८३६ | ११०७० | विक्रमादित्य राजा री चौपई | मानकवि | १७८० | २४.५x११.५ | १-४९ | सर्व ढालें—५१ |
| १८३७ | १०८४५ (४)१ | विचारमाला | अनाथदास | १८८६ | १५.५x१०.५ | ८२१-८३७ | पत्र संख्या ८३७-८५० तक जड़भरत कृत 'प्रश्नावली' संस्कृत में है।<br>र. का. १७२६<br>लि. क. जैरामनारायण<br>लि. स्था. पोकरण |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८३८ | १०८४८ (५) | विचारमाला | अनाथदास | १९ वीं श० | १५.५x८ | ५६४–५८१ | र. का. १७२६ |
| १८३९ | ११६४८ (२३) | विचारमाला | अनाथदास | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ५६०–५६९ | र. का. १७२६ |
| १८४० | १०८४९ (१९) | विचारमाला | अनाथदास | गु० १९३१ | १७x११ | १४३–१५५ | र. का. १७२६ |
| १८४१ | १०८६९ (७) | विचारमाला | अनाथदास | गु० १९२७ | ८.५x७ | २०५-२२० | |
| १८४२ | ११००५ | विचारमाला | अनाथदास | १९१० | २७.५x१३ | १-४१ | र. का. १७२६<br>लि. क. तुलछीदास शिष्य शंभूराम<br>लि. स्था. खेड़ापा, राम-मोहल्ला |
| १८४३ | १०९४१ (२) | विचारमाला | अनाथदास | गु० १९३७ | १७x१०.५ | ८०-९९ | र. का. १७२६<br>किंचित अपूर्ण । |
| १८४४ | १०९६५ | विचारमाला | अनाथदास | २० वीं श० | २५.५x१२.५ | १-१६ | र. का. १७२६ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८४५ | १२२२६ (४) | विचारमाला | अनाथदास | १८७९ | १४x१२.५ | ११-३० | र. का. १७२६<br>लि. क. बीरमदास निरंजनी<br>लि. स्था. केरूं (जोधपुर) |
| १८४६ | १२५६१ (७) | विचारमाला | अनाथदास | १९ वीं श० | २३.५x१७ | ३३०-३३६ | र. का. १७२६ |
| १८४७ | १२५७० (१५) | विचारमाला | अनाथदास | २० वीं श० | ९.५x६.५ | ७०-९६ | र. का. १७२६<br>पत्र संख्या ६७-६९ पर सेवगरामजी कृत लावणी है। |
| १८४८ | १०७२५ | विचार षट्त्रिंशिका | | १८ वीं श० | २६x११ | ५ वां | लि. क. गजसार शिष्य धवलचन्द्र |
| १८४९ | १०७६९ | विचार षट्त्रिंशिका-बालावबोध | | १८९८ | २५x१२ | १५ वां | लि. क. सवाईसागर<br>लि. स्था. फलोधी नगर |
| १८५० | १०९५८ | विचारसागर-भाषा | निश्चलदास | २० वीं श० | ३२x१६ | १-३२ | र. स्था.—<br>"दिल्ली तैं पश्चिम दिसा<br>कोस अठारह गांम।<br>तामैं यह पूरो भयो<br>किहिंडोली तिहि नांम ।।" |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८५१ | १०९९७ | विचारसागर-भाषा | निश्चलदास | १९२४ | ३१x१५.५ | १-१८० | लि. क. कुसलदास र. स्था. किहिंडोली ग्राम साधु रामसिंहजी की इच्छा से संतोकदास नारायणजी त्रिकमजी ने इसे मुंबई में ग्रन्थप्रकाश छापेखाने में छपवाया था। |
| १८५२ | १०९३० (४) | विधवा-विवेक | मुरलीदास | १९ वीं श० | १५.५x१२ | ४७-५२ | स्त्री स्वभाव पर औपदेशिक कवित्त। |
| १८५३ | १०८६७ (१०) | विनयपत्रिका के पद | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | १८x११ | ९७-१०० | गुटका अपूर्ण है—पत्र सं. ५१ से १०० तक के ही पत्र हैं। |
| *१८५४ | १२३५२ | विनयपत्रिका सटीक | मू० गो० तुलसीदास टी० शिवप्रकाश | १९ वीं श० | ३१x१८.५ | १-२६१ | टी. का. १९३५ पत्रों के कोंण क्षतिग्रस्त। |
| १८५५ | १२२१८ (५)१५२ | विनयाध्ययन गीत | ब्रह्म | १८ वीं श० | २६.५x१० | १६५ वां | गुटका विभिन्न लिपिकों द्वारा लिखा गया है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८५६ | १२२०३ | विपर्यय को अंग रहस्यार्थ-दीपिका टीका | सुन्दरदास | १९ वीं श० | २१.५x११ | १-४१ | टीका गद्य में है। |
| १८५७ | ११६८५ (८)४१ | विमलगिरि स्तवन | पद्मविजय | १९ वीं श० | १९.५x११.५ | १७५-१७६ | |
| १८५८ | १२३७० (६)५ | विमलनाथ गीत | जिनराज | १९ वीं श० | १६x११.५ | ५५ वां | |
| १८५९ | १२०६७ (७) | विमलपचीसी (देवी स्तुति) | | गु० १९२६ | २३.५x१७ | १३-१५ | पत्र संख्या १५-१६ पर संक्षेप-पूजन विधि है। |
| १८६० | १२५७५ (२८) | विमलाचल स्तवन | गुणसागर सूरि शिष्य पद्मसागर | १९ वीं श० | १३x१४.५ | ८०-८६ | |
| १८६१ | १०९०० (७) | विरह को अंग | परसराम | २० वीं श० | १२x८.५ | ५१-७० | |
| १८६२ | १२६१२ (३) | विरह को कक्को | | १८१९ | २५x११ | १४-१६ | लि. क. हिम्मतराम राजा सूरजमलजी की बही से प्रतिलिपि कृत। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८६३ | १२०६७ (६) | विराट एवं सूक्ष्म-रूप वर्णन | लिछमन गिरि | गु० १९२६ | २३.५x१७ | ५-९ | पत्र संख्या ९-१३ पर स्फुट नुस्खे एवं मंत्रादि हैं। |
| १८६४ | ११५७१ | विराटपर्व बाणगंगा माहात्म्य भाषा | अखैराम शिष्य चरणदास | १८४० | २९x१४.५ | १-९५ | पत्र कीटविद्ध। लि. क. साधु मनोहरदास लि. स्था. पत्तेपुर (फतेपुर) |
| १८६५ | ११०३० | विवाह-सारणी | पुण्यहर्ष | १९ वीं श० | २५x१ | १-२ | कृति दोहा-कवित्तबद्ध है। |
| १८६६ | १०९३६ (५) | विवेक चितावणी | सुन्दरदास | गु० १९३४ | १२.५x८.५ | ३५९-३६६ | लि. क. चोकसराम लि. स्था. जोधपुर |
| १८६७ | १२३२९ (६) | विवेक चितावणी | सुन्दरदास | २० वीं श० | २३x९.५ | ३७७-३७९ | |
| १८६८ | १२३७८ (२१) | विवेक चितावणी | सुन्दरदास | १८ वीं श० | २२x१५.५ | १३७-१३८ | पत्र संख्या १३८-१३९ पर इन्हीं की 'तर्क चितावणी' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८६९ | १२५७० (३) | विवेक चितावणी | रामजन | २० वीं श० | ९.५x६.५ | ३४–३६ | |
| १८७० | १५५९१ (३) | विवेक चितावणी | सुन्दरदास | २० वीं श० | १५.५x१० | २७-३१ | |
| १८७१ | १०९२४ (२४) | विवेक चितावणी | सुन्दरदास | १९ वीं श० | २३.५x१२.५ | ५९६-५९७ | पत्र संख्या ५९७-५९८ पर 'हरबोल चितावणी' इन्हीं की है। |
| १८७२ | १२३७८ (४) | विवेकसागर | लछीराम | १८ वीं श० | २२x१५.५ | २८-३१ | |
| १८७३ | १०९०४ (१-२) | विवेकसिन्धु एवं परमामृत | मुकुन्दराज योगी | १९ वीं श० | २०x१५.५ | २०-८४<br>१-२१ | प्रथम कृति अपूर्ण है। दोनों कृतियाँ मराठी भाषा में हैं। |
| १८७४ | १०९०० (११) | विश्वास को अंग | कबीरदास | २० वीं श० | १२x८.५ | ७९-९४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८७५ | १२४२८ (२) | विशांतनलीला | प्रेमदास | गु० १९१२ | २१x१५.५ | ९-१५ | कृष्ण का सखी वेश में राधा मिलन प्रसंग । |
| १८७६ | १२५६२ (२) | विष्णुपुराण भाषा | | १९४६ | २८.५x२० | २५-१०९ | लि. स्था. गांव जुभूं पत्र सं.–११० पर नारायण-शास्त्री कृत सत्यनारायण कथा का प्रारम्भ मात्र है । |
| १८७७ | १२२०५ (१६) | विहरमान-वीसी | कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न वाचक | गु० १७४८ १७५५ | १७x११ | २९-३७ | लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रूपनगर पत्र सं.–३७ पर ही सूरदास का पद है । |
| १८७८ | १२५५१ (२१) | वीर-जिन स्तवन (महावीर स्तवन) | समयसुन्दर | १७ वीं श० | १३x११ | १४५–१४७ | पत्र खण्डित हैं। |
| १८७९ | ११५८५ (८) ३-४ | वीर स्तवन | जिनलाभ | गु० १८५२ | १६.५x११.५ | १३६ वां | इसी पत्र पर 'लोद्रवा-पार्श्वनाथ स्तवन' भी है । |
| १८८० | ११५८५ (८) ४० | वीर स्तवन | जसविजय | १९ वीं श० | १६.५x११.५ | १७५ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८८१ | १२२०८ (८) | वीरस्तवन | | १८ वीं श० | २५x१८.५ | १२०-१२१ | पत्र संख्या १२२-१६५ तक संस्कृत-प्राकृत में टब्बे सहित मंत्र प्रवचन आदि हैं। |
| १८८२ | ११६३७ | वीसथानक-पूजा | विजयलक्ष्मी सूरि शिष्य विजयसौभाग्य | १९१६ | २६.५x१२ | १-१८ | र.का. १८४१, प्रति शोभन लि. क. मुनि जयसागर लि. स्था. मुंबई बंदरे लिखावतं— शाह श्री मूलचन्द दुल्लभ। |
| १८८३ | १२५७५ (१३) | वीसविहरमान नाम-ठाम-विचार | | १९ वीं श० | १३.५x१४ | ५१-५३ | |
| १८८४ | १२२१८ (५) १२८-१२९ | वीसविहरमान स्तवन एवं वीरस्तवन | समयसुन्दर | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३८ वां | |
| १८८५ | १२३७० (३७) | वीहरमान गौतम चो-ढालियो | ऋषि रायचन्द | १९ वीं श० | १६x११.५ | ४२-४६ | र. का. १८७३ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८८६ | ११०१३ (३९) | वृन्दविनोद सतसई | वृन्द कवि | १८१९ | २३x१५ | २८७-३०७ | र. का. १७६१<br>र. स्था. ढाका शहर |
| १८८७ | १२३७१ (९) | वृन्दविनोद सतसई | वृन्द कवि | १८३५ | १८.५x१६.५ | २८७-३१८ | र. का. १७६१<br>"शशि हर(रस)वार शशि"<br>र. स्था. ढाका<br>सर्व ७०६ दोहे<br>लि. क. भीखनदास गौड़<br>लि. स्था. अहिपुर |
| १८८८ | १०९८२ | वृन्दसतसई | वृन्द कवि | १९ वीं श० | २५.५x१२.५ | १-२७ | र. का. १७६१<br>र. स्था. ढाका |
| १८८९ | १२०६७ (१) | वृन्दसतसई | वृन्द कवि | १९०५ | २३.५x१७ | १-३६ | र. का. १७६१<br>र. स्था. ढाका<br>लि. क. सेवग भुंगरलाल |
| १८९० | १२५८० (२) | वृन्दसतसई | वृन्द कवि | गु० १८६६ | १५x१०.५ | २-८२ | र. का. १७६१<br>र. स्था. ढाका<br>लि. क. वैष्णव भगतराम<br>लि. स्था. रामगढ़<br>फतेचन्द सरावगी पठनार्थ। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८९१ | १०८७१ | वृहद् वासिष्ठसार भाषा | | १९ वीं श० | २७.५x१५ | १-४१ | अपूर्ण— वैराग्य प्रकरण, १८ वें सर्ग पर्यन्त । |
| १८९२ | १०८४३ (६) | वेदनिर्णय पंचाशिका | बनारसीदास | गु० १८९५ | २५.५x२० | २१-२५ | लि. क. गंगराज लि. स्था. रतनपुरी |
| *१८९३ | १२०६७ (२) | वेदान्त अद्वैत-अद्भुत नाटक | देवकृष्ण दरजी | १९२६ | २३.५x१७ | १-१२ | र. का. १९१७ लि. क. बोरा चंदलाल लि. स्था. जोधपुर |
| १८९४ | १२२१८ (५)१३८ | वैदर्भी चौपई | सुमतिहंस | १७६३ | २६.५x१० | १४४-१४७ | र. का. १७१३ र. स्था. जेतारण लि. क. अमीचंद लि. स्था. लूणसर पत्र संख्या १४३ पर संवत् १७६६ में पोमदत्त को जिन-समुद्र-सूरि के समय दीक्षा देने की विगत है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८९५ | १२३२० (५८) | वैदर्भी चौपई | | गु० १८४७ | २१.५x१४.५ | ४९-५५ | |
| १८९६ | १२५४५ | वैद्यक नुस्खा संग्रह | | २० वीं श० | २१x१०.५ | १-४४ | गुटका लछीराम दादूपंथी का है। |
| १८९७ | १०८४२ (७) | वैद्यक-वारता | बांकीदास | १८९५ | २४.५x१६.५ | ८२-८४ | लि. क. खिड़ियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि. स्था. जोधपुर |
| १८९८ | १०९०९ (२) | वैद्यमनोत्सव | नयनसुख पुत्र केशवदास | १७८८ | १५.५x१० | १-२४ | र. स्था. तीलियासर नगरे (बीकानेर) अंतिम दो पत्रों पर फुटकर नुस्खे हैं। |
| १८९९ | ११५८४ (२३) | वैद्यमनोत्सव | नयनसुख पुत्र केशवदास | १८ वीं श० | १९.५x१६ | १९७-२२१ | पत्र कीटविद्ध एवं गलित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६०० | १२२१३ (३) | वैद्यमनोत्सव-भाषा | नयनसुख पुत्र केशवदास | १८४७ | २१x१६.५ | १-८३ | पत्र सं.—८४ पर फुटकर नुस्खे तथा अगले ७ पत्रों में तांत्रिक मंत्रादि हैं। |
| १६०१ | १२५६६ (६) | वैद्यमनोत्सव-भाषा | नयनसुख पुत्र केशवदास | १९ वीं श० | १६.५x११ | १-१३५ | अपूर्ण । |
| १६०२ | १२४५८ | वैद्यमनोत्सव-भाषा | नयनसुख पुत्र केशवदास | १८४७ | २६.५x१३.५ | १-१६ | र. का. १६४९ अकबर शाह के समय में। लि. क. किशन व्यास पुत्र मोहनलाल लि. स्था. नागपुर |
| १६०३ | ११०१३ (२) | वैद्य विरहनी प्रबन्ध | उदैराज | १८२५ | २३x१५ | ६८-७० | लि. क. ऋषि सुजाण लि.स्था. चाणोंद (जोधपुर) ७६ दोहे हैं। |
| १६०४ | १२५६१ (१९) | वैराग्यप्रकरण-भाषा | उदैराज | १८५५ | २३.५x१७ | ३८०-३८२ | लि. क. नंदराम लि. स्था. ककोड़ग्राम पत्र सं.– ३८३ पर समनजी की साखी है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६०५ | १२५६१ (११) | वैराग्यमंजरी | भावनादास | २० वीं श० | १५.५x१० | ५५-६२ | अपूर्ण। |
| १६०६ | १२४२१ (१०) | वैराग्यमंजरी-भाषा | महाराजा प्रतापसिंह | गु० १८६५ | १७x१२ | १६६-१८० | र. का. १८५२ लि. स्था. जयपुर, चन्द्र महल में। |
| १६०७ | १०६५६ (१) | वैराग्यशतक-भाषा विवेक दीपिका टीका | इन्द्रजीत | २० वीं श० | ३२x१६ | १-३८ | |
| १६०८ | १२२०५ (४०) | वैराग्य सज्झाय | राजसमुद्र | १८ वीं श० | १७x११ | १२४-१२५ | |
| १६०९ | १०६५४ (१२-१४) | वैराग्य सज्झाय आदि | मानसागर<br>समयसुन्दर<br>लावण्यसमय | गु० १८७४ | २४x१६.५ | ११२ वां<br>१११ वां<br>११२-११३ | पत्र सं. - १११ पर समयसुन्दर कृत 'तीर्थ जात्रा फल स्तवन' है। |
| १६१० | १२३२० (३४-३५) | वैराग्य सज्झाय एवं सीमंधर-स्तोत्र | कुशलसिंह | गु० १७६७ | २१.५x१४.५ | ३९-४० | पत्र सं. - ३९ पर 'दोसानी सज्झाय' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९११ | १०८३९ (१) | वैशाख-माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत) | | १९०६ | ३२x१७.५ | १-९ | १२ वां अध्याय। लि. स्था. जोधपुर |
| १९१२ | १२४८२ | वैशाख-माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत) | सेसदास शिष्य मगनानन्द शिष्य रनजीत | १९०० | ३०x१५ | १-१८ | र. का. १८६२ 'दस आठ साठ रु दोय' कर्त्ता ने एक स्थान पर अपना नाम लिछमणदास भी दिया है। |
| १९१३ | १२५०४ (२) | वैशाख-माहात्म्य भाषा | | गु० १९०३ | २३x१६.५ | १-२४ | |
| १९१४ | ११३७८ | वैशाख-माहात्म्य भाषा पद्यानुवाद | सेसदास शिष्य मगनानन्द शिष्य रणजीत | २० वीं श० | ३०.५x१४.५ | १-१७ | अपूर्ण। पद्मपुराणगत। |
| १९१५ | १२३७१ (१५) | वैष्णववार्त्ता | | गु० १८३९ | १८.५x११.५ | १८-५८ | अपूर्ण। |
| १९१६ | ११९९६ | व्रत-अव्रत नो थोकड़ो एवं बोल आदि | | १९०८ | २२.५x११ | १-७ | लि. स्था. सोजत |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९१७ | १२५७८ | शंभूरामजी की वाणी एवं कृति-संग्रह | जनशंभूराम शिष्य दयालदास | १९ वीं श० | १४x१० | १-१४९ | गुटके में केवल इन्हीं का कृति संग्रह होने से महत्व-पूर्ण है। |
| १९१८ | ११०१३ (३७) | शकुनदीपिका | | गु० १८२२ | २३x१५ | २५६-२८२ | चौपईबद्ध। |
| १९१९ | ११५९० | शकुनपृच्छा सचित्र | | १८०९ | २२x१० | १-७ | चित्र संख्या—४ किनारे टूटे हुए। लि. क. जति हरिचन्द लि.स्था. अहिपुर (नागोर) |
| १९२० | १०८६२ (६) | शकुनविचार | | गु० १८९८ | १७x१४ | ३५-४१ | अंत में शकुन लेने का श्लोक है। लि. स्था. जोधपुर |
| १९२१ | १२५५१ (३४) | शकुनावली | | १८ वीं श० | १३x११ | १७७-१९१ | पत्र संख्या १९२ पर प्रताप-सिंहजी के पुत्र देवीसिंह तथा उनके पुत्र छजमल्ल का संवत् १९२७ का जन्मलग्न है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९२२ | १२५९२ (१०) | शकुनावली (स्फुट) | | १९ वीं श० | १४x१०.३ | १९६-१९८ | |
| १९२३ | १२२९० | शकुनावली सचित्र | | १८७० | १३x१२.५ | १-१२२ | र. का. १८७० विजय संवत् १७०१ की प्रति से प्रतिलिपि कृत। चित्र सं. - ११७ लि.क. मोनजी (मोहनजी) लि. स्था. नवानगर पत्र संख्या ६९, ७५, ७६, ८९, ११७ खण्डित। पत्र २०, ७६, १०२ वें अप्राप्त |
| १९२४ | १२५७५ (६) | शत्रुञ्जय सज्झाय | मल्लिदास | १९ वीं श० | १३.५x१४ | ११-१२ | प्रारम्भ के १० पत्रों में संस्कृत-प्राकृत में 'अजित-शांति - स्तवन', 'भयहर-स्तोत्र', 'लघुशांति' एवं 'उवसर्गस्तवन' तथा 'सात स्मरण' हैं। |
| १९२५ | १२२१८ (५)९० | शत्रुञ्जयउद्धार-स्तवन | | १७७० | २६.५x१० | १०९ वां | पत्र संख्या १०७ (ब) पर 'मुनिपति पडिलेहण ५० बोल' तथा 'रामानुज-स्तुति' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९२६ | १२२१८ (५)११७ | शत्रुञ्जयगिरि-स्तवन | पेमविजय शिष्य विमलहर्ष | १८ वीं श० | २६.५x१० | १२९-१३१ | पत्र संख्या १२६ पर भी 'शत्रुञ्जय - स्तवन' तथा कविगद कृत कवित्त एवं सुभाषित हैं। |
| १९२७ | १२२०५ (४२)१-५ | शत्रुञ्जय गीत आदि | कीर्तिवर्द्धन | १८ वीं श० | १७x११ | १४१-१४३ | |
| १९२८ | १२५५१ (२७) | शत्रुञ्जयगीत | श्रीकर्ण | १८ वीं श० | १३x११ | १५६-१५७ | |
| १९२९ | १०९५४ (७) | शत्रुञ्जयरास | समयसुन्दर | गु० १८७४ | २४x१६.५ | ८९-९४ | र. का. १६८२<br>र. स्था. नागोर |
| १९३० | १२३२० (५६) | शत्रुञ्जयरास | समयसुन्दर | १८४७ | २१.५x१४.५ | ४०-४४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९३१ | १२३७० (४१) | शत्रुञ्जयरास | समयसुन्दर | १८६६ | १६x११.५ | ८८-१०० | र. का. १६८२<br>र. स्था. नागोर<br>लि. क. सूरजमल<br>लि. स्था. जोधपुर |
| १९३२ | १२५६५ (१०) | शत्रुञ्जयरास | समयसुन्दर | २० वीं श० | १६x११ | ६४-७३ | र. का. १६८२<br>र. स्था. नागोर |
| १९३३ | १२२०५ (६) | शत्रुञ्जय-स्तवन | समयसुन्दर | १८ वीं श० | १७x११ | ६-७ | |
| १९३४ | ११०८२ (३) | शनिश्चरजी री कथा | | गु० १८४३ | १८x१०.५ | १-८ | |
| १९३५ | १२१९० (२)३ | शनिश्चरजी रो छंद | कवि हेम | गु० १८६७ | २१x११.५ | २-५ | पत्र संख्या ५ पर ही नेम-सागर कृत 'पार्श्वनाथस्तुति' है। |
| १९३६ | १२५८० (३) | शनिसरजी रो छंद | कवि हेम | गु० १८६९ | १५x१०.५ | ८२-८५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९३७ | १२३७१ (१) | शनीसर देवता री कथा | | १९ वीं श० | २०x३१ | १८.५x१६.५ | महाजनी लिपि में । अपूर्ण । पत्र संख्या ९७ पर महाराजा मानसिंहजी को संबोधित कर लिखा एक कबित्त एवं दोहा है । |
| १९३८ | १२५९१ (३५) | शब्दप्रकाश (योग) | | १९ वीं श० | १५.५x१० | २२१-२२६ | |
| १९३९ | ११५८४ (३७) | शांतिनाथ-स्तवन | सिद्धसूरि | १८ वीं श० | १९.५x१६ | २३४ वां | |
| १९४० | १२२१८ (५)६४ | शांतिनाथ-स्तवन | हर्षधर्म | १८ वीं श० | २६.५x१० | ८६-८७ | |
| १९४१ | १२२२८ (५)७९ | शांतिनाथ-स्तवन | गुणसूरि | १८ वीं श० | २६.५x१० | ९८-९९ | |
| १९४२ | १२३७० (४२)९ | शांतिनाथ-स्तवन | | १९ वीं श० | १६x११.५ | १२७ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९४३ | १२५५१ (१३) | शांतिनाथ-स्तवन | हर्षधर्म | १७ वीं श० | १३x११ | १०३-१०६ | |
| १९४४ | १२५६५ (१७)१० | शांतिनाथ-स्तवन | दीपसागर | १९३७ | १६x१२ | १२३ वां | र. का. १९३१<br>लि. क. दीपसागर शिष्य हस्तीसागर<br>लि. स्था. फलोदी<br>पत्र संख्या १२४-१२९ पर गुटके की कृतियों के नाम तथा पद-स्तवनों आदि के चरण देकर सूचीपत्र लिखा गया है। |
| १९४५ | १२५७५ (२५) | शांतिनाथ-स्तवन (चम्पावती मंडण) | | १९ वीं श० | १३x१४.५ | ७७ वां | |
| १९४६ | १२५७५ (१७)<br>(२४)<br>(३२)<br>(३८) | शांतिनाथ-स्तवन | पार्श्वचन्द<br>गुणसागर शिष्य<br>पद्मसागर<br>अज्ञात | १९ वीं श० | १३.५x१४ | ५८-५९<br>७६-७७<br>९४-९५<br>१०७ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९४७ | १२०७० | शांतिपर्व-भाषा | लालदास पुत्र ऊधोदास | १८८५ | ३०x१४.५ | १-४७ | लि.क. जमना श्रावगी कर्त्ता आगरा निवासी है । |
| १९४८ | १२२०५ (२६) | शाबरमंत्र एवं फुटकर नुस्खे | | १८ वीं श० | १७x११ | ८७-१०२ | पत्र संख्या ८७-९३ तक मंत्र. तंत्र व यंत्रादि हैं । |
| १९४९ | १२५६६ | शाबरमंत्रतंत्र एवं नुस्खा-संग्रह | | २० वीं श० | १७x११ | १-२८५ | |
| १९५० | ११०८३ | शाबर-मंत्र-तंत्र संग्रह | | २० वीं श० | १५x१० | १-३० | |
| १९५१ | १०९०५ | शालिभद्र महामुनिरास | मतिसार शिष्य जिनसिंह सूरि | १८८० | २५x१२ | १-६२ | र. का. १६७८ लि. क. मुनि कंनीराम लि. स्था. सणधरी |
| १९५२ | १२५६८ (४) | शालिभद्रमुनि-चौपई | जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि | १९ वीं श० | १८.५x१२.५ | ३४-८१ | र. का. १६७८ अंत में 'पार्श्वनाथ-स्तवन' है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९५३ | १२२०५ (२२) | शालिभद्रमुनि-सज्झाय | हर्षकुशल | १८ वीं श० | १७x११ | ६३ वां | पत्र संख्या ६२ पर पीलिया रोग का नुस्खा है। |
| १९५४ | १२२१८ (५)७४ | शालिभद्र-सज्झाय | सहजसुन्दर | १८ वीं श० | २६.५x१० | ९४-९५ | |
| १९५५ | १०९४३ (२) | शालिहोत्र-भाषा (गद्य) | | गु० १८८४ | १८x१४ | १-३९ | अश्व चिकित्सा। |
| १९५६ | ११०७९ (४) | शालिहोत्र-भाषा | | १८५५ | १५.५x१४.५ | १-१९ | "व्यास चतुरभुज देवदत्त री परत सु उतारी" लि. क. सवाईराम व्यास लि. स्था. चीतवाणां |
| १९५७ | १२२१६ | शिक्षापत्र भाषा | हरिराय | १९ वीं श० | १९x१७ | १-६९ | अपूर्ण। पत्र कीटविद्ध-खण्डित। ४१ शिक्षाओं तक। |
| १९५८ | १२२२० (१) | शिक्षापत्र भाषा | हरिराय | १९ वीं श० | १९x१६.५ | १-५६ | पुष्टिमार्ग से संबंधित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९५९ | १२२०४ (५) | शिवजीरो स्वरोदय भाषा | | गु० १८५८-१८६३ | १७x१५.५ | ४०-४२ | गद्य में। गुटके में 'स्वरोदय विचार' का संग्रह है। पत्र संख्या ४४ - ७० तक 'पवनविजय-स्वरोदय' संस्कृत में है। पत्र संख्या ७०-७२ पर पुनः 'स्वर विचार' है। |
| १९६० | ११०१३ (२५) | शिवरात्रि री कथा | | गु० १८१८ | २३x१५ | १४४-१४७ | |
| १९६१ | १२५६७ (१) | शिवरात्रि री कथा | | गु० १८३० | २१x१५.५ | १-९ | कोंण मुड़े हुए-जलाभिषिक्त लि. क. केसरचन्द लि. स्था. कंटालिया ग्राम |
| १९६२ | १११७८ (५) | शिबरी मंगल | तुलसीदास | १७९२ | १५.५x१२ | ८८-९१ | लि. क. राधावल्लभदास पत्र संख्या ८४ - ८८ तक 'गुरु-परम्परा' दी है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९६३ | १२२०५ (२८) | शीतलनाथ-स्तवन | समयसुन्दर | १८ वीं श० | १७x११ | १०४-१०५ | पत्र संख्या १०५-१०७ तक पेट दुखने, स्वेतमंडल, स्तंभन आदि के नुस्खे हैं। |
| १९६४ | १२३२० (३१) | शीतलनाथ-स्तवन | श्रीसार | १८ वीं श० | २१.५x१४.५ | ३७ वां | |
| १९६५ | १२२७८ (५) १०४ | शील सज्झाय | जिनहर्ष सूरि | १८ वीं श० | २६.५x१० | ११९ वां | |
| १९६६ | १२३७८ (१७) | शुकदेवजी की स्तुति भाषा | | १८ वीं श० | २२x१५.५ | ११३-११६ | |
| १९६७ | १०९२४ (९) | शुक-संवाद | खेम | गु० १८४० | २३.५x१२.५ | ५१२-५१८ | |
| १९६८ | १२४२२ (१६) | शुक-संवाद | खेम | गु० १८३१ | १५x१०.५ | ३६९-३८२ | |
| १९६९ | १२४९७ | शुक-संवाद | खेम | १९ वीं श० | २०x१० | १-२७ | लि. क. रामधनं लिछमणदास पठनार्थं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९७० | १२५६१ (८) | शुकसंवाद | खेम | १९ वीं श० | २३.५x१७ | ३३६-३४३ | |
| १९७१ | १२५७४ (१) | शुकसंवाद | खेम | २० वीं श० | १७x१०.५ | ५३-७४ | प्रारंभ के ५२ पत्र अप्राप्त । |
| १९७२ | ११३१३ (३) | शुभाशुभ-विचार | | १८०२ | १५x१४ | १-१७ | तत्वविजय–निहालचन्दजी वाचनार्थं । लि. स्था. जयपुर |
| १९७३ | १२५६८ (९-१०) | शेरसिंहजी राठौड़ रो कह्यो सिलोको (राजा रामसिंहजी के लिए) | शेरसिंह | १८४४-१८४६ | १८.५x१२.५ | १३ | (१०) कंवर अमरसिंह पर जसवन्त के भाई गजसिंहजी ने कोप किया उस समय के कवित्त । लि.स्था. हेमावास (जोधपुर) |
| १९७४ | १०८४२ (१६) | शेषसिंहजी ठाकुर का गीत | पहाड़खाँ आढ़ा | १९ वीं श० | २४.५x१६.५ | ९९-१०० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९७५ | १२३७० (११) | श्रावक री करनी सज्झाय | जिनहर्ष | १९ वीं श० | १६x११.५ | ११५-११८ | |
| १९७६ | ११५८५ (८)४५ | श्रावक री करनी सज्झाय | जिनहर्ष | १८४६ | १९.५x११.५ | १८०-१८२ | लि.क. लिछमणदास कोचर ग्रंत में स्फुट दोहे हैं। |
| १९७७ | १२३७० (२६) | श्रावक री मर्यादा | | १८७० | १६x११.५ | २५०-२५४ | प्रस्तुत विगत रत्नचन्दजी के पास संवत् १८७० में मांनजी जैपुरिये ने व्रत लिया, उस समय की है। गुटके में रत्नचन्दजी की कृतियां समकालीन होने से प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण है। |
| १९७८ | १२५६५ (१५) | श्रावक वंदितु सूत्र | | २० वीं श० | १६x१२ | ८७-९० | प्राकृत भाषा में है। पत्र संख्या ९०-९२ पर राग-कल्याणबद्ध दोहे हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९७९ | १२४१३ (१-२) | श्रावकविचार, बोल, गुणठाणा आदि | | १८२६ | २६x११.५ | ४-१८<br>१-२० | पत्र बड़कने हैं। पत्र संख्या १ बीच से टूटा हुआ है। लि. क. आरज्या मोटी शिष्या सुजाणा लि. स्था. बीकानेर |
| १९८० | १०९५४ (६) | श्रावक सज्झाय | जिनहर्ष | गु० १८७४ | २४x१६.५ | ८७-८८ | |
| १९८१ | १२२१८ (५)१०७ | श्रीकृष्ण चरित्र | ज्ञानउदय | १८ वीं श० | २६.५x१० | १२१-१२२ | |
| १९८२ | ११९७६ | श्रीकृष्ण-जन्मलीला | | १९१० | २१.५x१०.५ | १-३१ | |
| १९८३ | १२५५९ (१) | श्रीनाथजी की वार्त्ता | | १८०५ | | १०-६८ | कीटविद्ध। लि. स्था. श्री मगवार पत्र संख्या १-९ अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६८४ | १०७६८ | श्रीपाल-रास (सटिप्पण) | विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय एवं यशोविजय | १८५८ | २५.५x११ | २२ | लि. स्था. सोजत |
| १६८५ | १०८२४ | श्रीपाल-रास सटवार्थं | विनयविजय गणि शिष्य महो०कीर्तिविजय एवं यशोविजय | २० वीं श० | २४x१२ | ७२ | तृतीय खण्ड के बाद पत्र संख्या ३४ से ७२ में टिप्पण दिये गये हैं। पत्र संख्या १० से २० तक प्राचीन तथा शेष पत्र नये प्रतीत होते हैं। र. का. १७२८, रानेर में चातुर्मास्य के समय। लि. क. ऋषभसागर लि. स्था. जोधपुर |
| १६८६ | १०८७७ | श्रीपाल-रास | विनयविजय एवं यशोविजयद्वय | १९ वीं श० | २५x१२.५ | १-६२ | |
| १६८७ | ११५४३ | श्रीपाल-रास | विनयविजय एवं यशोविजय | १९ वीं श० | २६.५x११.५ | १-५२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९८८ | १२२२८ | श्रीपाल-रास (सचित्र) | ज्ञानसागर शिष्य गुणदेवसूरि | १७६४ | २६x११ | १-२१ | चित्र संख्या— ६। बाकी चित्र बनाने के लिए स्थान छोड़ा गया है। र. का. १५३१ र. स्था. पत्तन महानगर, शीतलनाथ प्रसादात्। श्राविका श्री रूपबाई पठनार्थं। |
| १९८९ | १०८५६ | श्रीपाल-रास सटबार्थ (चरित्र चतुर्थ खण्ड) | विनयविजय एवं यशोविजय | १९४१ | २५x१२.५ | १-७१ | र. का. १७२८ र. स्था. रानेर ७०० गाथा तक विनय-विजय और उनकी मृत्यु हो जाने पर यशोविजय ने इसे पूर्ण किया। लि. क. महात्मा करमचंद |
| १९९० | ११३५३ (५) | श्री बद्रीनाथ विसंभर स्तोत्र | | १९ वीं श० | १४.५x१६.५ | ९६-९८ | गुटके की अन्य कृतियाँ संस्कृत में हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९९१ | १०८४७ (५) | श्रीमुखनामो | वाजीद | गु० १९९९ | १७x८ | ७२९-७३२ | |
| १९९२ | १२२०५ (१२) | श्रीस्तवन | ऋषभसागर | १८ वीं श० | १७x११ | १३-१४ | पत्र संख्या १५ पर 'पृच्छा-सारणी' है ॥ |
| १९९३ | ११३२७ | षट्ऋतु-लीला के पद | सूरदास | १९ वीं श० | २९x१२.५ | १--३७ | १०७ पद रागवद्ध हैं। पत्र खण्डित एवं कीटग्रस्त हैं। |
| १९९४ | १२५६४ (३) | षट्पाठ स्तोत्र | | १८८९ | १४.५x१०.५ | ५१-६१ | र. का. १८५९ छः ढालों में धर्म और ईश्वर की ओर उन्मुख होने की शिक्षा दी गई है। लि. क. लिछमण |
| १९९५ | ११६२८ | षट्प्रश्नी निर्णय-भाषा | मनोहरदास निरंजनी | १८०६ | ३०.५x१५ | १-६५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९९६ | १०७५४ | षडावश्यक-बालावबोध | | १७ वीं श० | २६x११.५ | ३३x८३ | आद्यन्त अप्राप्त। |
| १९९७ | १२२०८ (६) | षष्टीशतक | भण्डारी नेमिचन्द | १७१५ | २५x१८.५ | १६६-१७७ | भाषा – अपभ्रंश लि. क. चेला गुड़ीदास |
| १९९८ | १०८४६ (१७) | षोडश-स्वप्न | | गु० १९३१ | १७x११ | १३५-१३७ | अंत में फ़क़ीरी पर रोचक पद हैं। |
| १९९९ | १२२१८ (५) १०९ | संखेसर पार्श्वनाथ स्तवन | गुणरत्न शिष्य | १८ वीं श० | २६.५x१० | १२२ वां | |
| २००० | १२३७० (१४) | संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन | उदयरत्न | १९ वीं श० | १६x११.५ | १३५-१३६ | |
| २००१ | १२५५१ (२६) | संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन | | १८ वीं श० | १३x११ | १५३-१५६ | लिपि भ्रष्ट— 'आदिजिन-स्तवन' तथा 'संखेश्वर पार्श्वनाथ का प्रारंभ मात्र। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २००२ | १२५६८ (१३) | संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन | जिनचंद | १९ वीं श० | १८.५x१२.५ | १८ वां | लि. क. उत्तमचन्द नागोरी<br>पत्र संख्या १८ पर ही स्फुट सवैया है।<br>पत्र संख्या १९ पर 'वर्द्धमान पद' तथा स्फुट दोहे हैं। |
| २००३ | १२५६८ (२०) | संखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन | उदैरत्न | १९०० | १८.५x१२.५ | २९-३० | लि. क. उत्तमचन्द<br>लि. स्था. हेमावास<br>पत्र संख्या ३० - ३१ पर समयसुन्दर कृत 'जीव-सज्झाय' है।<br>ग्रंत में स्फुट दोहे हैं। |
| २००४ | १०७२६ | संग्रह वेलि | | १७७५ | २६x११ | २-११ | प्रथम पत्र अप्राप्त।<br>लि. क. मुनि बालचन्द |
| २००५ | १०९४९ (१) | संतदासजी की छांटमा साखी | संतदास | गु० १९०७ | ११x६.५ | २-५७ | लि. क. चोकसराम<br>लि. स्था. रतनपुरी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २००६ | १०८४६ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १६५० | १५.५x६.५ | १-२१ | सर्व साखी १२१<br>गुटका सजिल्द ।<br>लि. क. रामनिवास<br>लि. स्था. रतनपुरी |
| २००७ | १०६२५ (१)६ | संतदासजी की वाणी | संतदास | गु० १६३३ | २५.५x१६.५ | १-१६;<br>५१-५४ | |
| *२००८ | १०६२४ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | गु० १८४० | २३x१२.५ | १-६४ | सं. का. १८३०<br>सं. क. नवलराम<br>सं. स्था. साहिपुरा (भीलवाड़ा)<br>सर्व सबद १३८८ |
| १००६ | १०६२६ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | गु० १६३६ | २१x१५.५ | १-२५ | संतदासजी की परमधाम-प्राप्ति का भी अंत में कुण्डलिया है । |
| २०१० | १०६३४ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १६ वीं श० | १४x८ | १-१५ | |
| २०११ | १०६४० (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १८८३ | १५.५x१०.५ | १-६६ | लि. क. जैतराम<br>लि. स्था. फलोदी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०१२ | १०६३८ (६) | संतदासजी की वाणी | संतदास | गु० १८८५ | १६.५x८.५ | ५०२-५२० | |
| २०१३ | १०६४८ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १६३५ | १४.५x७ | १-१० | लि. क. साधु रामबिलास |
| २०१४ | ११०६२ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १८३६ | १८x१०.५ | १-६७ | लि. क. सेवादास शिष्य आत्माराम लि. स्था. वलूंदा |
| २०१५ | १०६४४ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | २० वीं श० | ८x५ | १-११ | |
| २०१६ | १२३२६ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | २० वीं श० | २३x६.५ | १-४६ | पत्र बड़कने हैं। |
| २०१७ | १२५७७ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १६ वीं श० | १४.५x१० | १-२६ | |
| २०१८ | १२५८६ (४) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १६ वीं श० | १२x६.५ | ४२-५६ | गुरुदेव संतोषदासजी की आज्ञा से चम्पाबाई के लिए बिहारीदास ने लिखी। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०१९ | १०८४२ (८) | संतोक(ष)-बावनी | बाँकीदास | १८९५ | २४.५x१६.५ | ८४-८९ | रचनाकाल से सन्निकट प्रति । र. का. १८७५ लि. क. खिड़ियो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि. स्था. जोधपुर |
| २०२० | १२५७१ (६) | संप्रदाय-यशवर्णन | पूरणदास | १९ वीं श० | १०.५x८ | ३१९-३२४ | रामानन्द सम्प्रदाय के संतों का गुणवर्णन है । अंतिम पांच पत्रों पर महाजनी लिपि में कबीरदास आदि के पद हैं । |
| २०२१ | १२२०५ (२९)४-८ | संभवनाथ अभिनंदन, सुमतिनाथ, पद्मप्रभु, पार्श्वनाथ गीत | जिनराजसूरि | १८ वीं श० | १७x११ | ११०-११२ | |
| २०२२ | १२३२० (१८-२०) | संभवनाथ अभिनंदन, वासपूज्य जिनगीत | जिनराज | १८ वीं श० | २१.५x१४.५ | २६ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०२३ | १२५५१ (२६) | संभवनाथ-स्तवन | चारुदत्त | १७ वीं श० | १३x११ | १७० वां | |
| २०२४ | १२२०७ (२) | संयोग बत्तीसी | मानमुनि | गु० १८१४-१८२४ | २४x१७.५ | १-१४ | र. का. १७३१ 'चन्द्र समुद्र शिवाक्ष शशि' सर्वदोधक ४५, सवैया ३२, कवित्त । |
| २०२५ | १०८१० | संवत्सर-सारणी | | १८७६ | २६x१२.५ | ५ | वि. सं. १५७६ से प्रारम्भ की गई है । |
| २०२६ | १२५६७ (८) | सतनाथजी रो सिलोको | साधुकीर्ति शिष्य अमरमाणिक्य | गु० १८३० | २१x१५.५ | ५४-५५ | लिपिभ्रष्ट । पत्र संख्या ५५ - ५६ पर गुटके के स्वामी जीवाजी के पुत्र नाथजी का जन्मलग्न संवत् १८५४ का दिया है । |
| २०२७ | १२१६४ | सतरहभेदी पूजा विधि | साधुकीर्ति | १९ वीं श० | २६x१०.५ | १-७ | र. का. १६१८ लि. क. कमलसागर लि. स्था. आसोप |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०२८ | १२३७० (४) | सतरहभेदी पूजा विधि | | १९ वीं श० | १६x११.५ | २०-३५ | र. का. १६१८<br>र. स्था. अणहिलपुर |
| २०२९ | १२५५१ (२) | सतरहभेदी पूजा | साधुकीर्ति | १६५३ | १३x११ | ७७-९० | पत्र चिपके हुए हैं।<br>लि. स्था. रायधनपुर<br>पत्र संख्या ९० - ९२ पर 'दंडक-स्तुति' संस्कृत में है। |
| २०३० | १२५६५ (५) | सतरहभेदी पूजा | साधुकीर्ति | २० वीं श० | १६x१२ | ३५-४५ | र. का. १६१८ |
| २०३१ | १२२१८ (५)१३० | सती सज्झाय | हर्षकुशल | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३८ वां | पत्र संख्या १३९ पर विहरमानों के नाम तथा उदयराज कृत कवित्त है। |
| २०३२ | १२३७० (४२)३ | सत्तरिसय जिनस्तवन | | १९ वीं श० | १६x११.५ | १०८-११० | प्राकृत मिश्रित अपभ्रंश में। |
| २०३३ | १११७८ (३-४) | सत्ताईस नक्षत्र एवं सप्तवार पंद्रह तिथि विचार | | गु० १७८२-१७९२ | १५.५x१२ | ८०-८१<br>८१-८४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०३४ | २२४२५ (३) | सत्यनारायण कथा भाषा | नारायणशास्त्री शिष्य रंगाचार्य वैष्णव | २० वीं श० | २६.५x१७ | ६६-८१ | |
| *२०३५ | १२३६४ | सत्यार्थ भास्कर वेद | | १६४७ | ३०x१४.५ | १-८६ | इसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती के 'सत्यार्थप्रकाश' का खण्डन किया गया है। लि.क. गोवर्द्धनदास वैष्णव लि. स्था. नागोर पत्र संख्या १८, २५ - २७ अप्राप्त। |
| २०३६ | १२३२० (५०) | सदैवच्छ सावलिंगा री वात | | १८२७ | २१.५x१४.५ | १३-३६ | लि. क. मुनि राजसी लि. स्था. नागोर बाई सरूपा पठनार्थं। |
| २०३७ | १२३०५ | सदैवच्छ सावलिंगा री वात (सचित्र) | | १६ वीं श० | १८x१३.५ | १-१३६ | अपूर्ण। चित्र सं. – १४१ पत्र संख्या १२० - १३८ अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०३८ | ११५८५ (६) | सदैवच्छ सावलिंगा री वात | | १८५२ | १६.५x११.५ | ७८-११६ | अपूर्ण । लि. क. केसरविजय लि. स्था. बीकानेर |
| *२०३९ | १०७०२ (१) | सदैवच्छ सावलिंगा री कथा (सचित्र) | मुनि केशव | १८५८ | २५.५x१७ | १-२६ | चित्र सं. - ३० प्रथम दो पत्र कीटविद्ध - जलाभिषिक्त । कर्त्ता का नाम अद्यावधि अज्ञात था । र. का. १६६६, विजय दशमी, रविवार । |
| २०४० | १२२२३ | सदैवच्छ सावलिंगा री वात (सचित्र) | | १९ वीं श० | १७x१३.५ | ४-४५ | चित्र सं. - ४२ कथा - प्रसंगानुसार चित्र दिए हैं। पत्र संख्या १-३ अप्राप्त । |
| २०४१ | १२२०५ (४६) | सनत्कुमार गीत | | १८ वीं श० | १७x११ | १४८ वां | पत्र संख्या १४६ पर कनककीर्ति कृत 'जिनकुशलपद' है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०४२ | १२२१८ (५)८१ | सनत्कुमार सज्झाय | हर्षकुशल | १८ वीं श० | २६.५x१० | १०३ वां | |
| २०४३ | १२२१४ (८) | सप्तभूमि का वर्णन | हर्षकुशल | १९ वीं श० | २१.५x१३ | ८८-८९ | |
| २०४४ | १२२९३ (३) | सप्तश्लोकी गीता-भाषा | मनोहरदास निरंजनी | १९ वीं श० | २२.५x१६ | १-६ | पत्र तड़के हुए हैं। |
| २०४५ | १२२२५ (३-५) | सप्तश्लोकी गीता-भाषा (सचित्र) | | | २४.५x१६.५ | १६१-१६६ | चित्र सं. - १+१+१=३ पत्र संख्या १६६-१७० पर 'एकश्लोकी रामायणभाषा' पत्र संख्या १७१-१७४ पर 'एकश्लोकी भागवत-भाषा' दोनों कृतियों में एक-एक चित्र है। |
| २०४६ | १०९२५ (३) | सबद माणिक बोध | रामचरण शिष्य कृपाराम | गु० १९३३ | २५.५x१६.५ | ३०-३७ | प्रारंभ व अंत में चोहौडूग्रन्थ कृत बालकराम 'सबद माणिकबोध' लिखा है। |
| २०४७ | १२५७२ (४-५, ७) | सबद-संग्रह | दयालदास रामदास | १९ वीं श० | १०.५x८.५ | १०-१०८ १०९-११३ ११६-१४० | अंगबद्ध। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०४८ | ११६४८ (१२)१-६ | सबदी-संग्रह | गोरखनाथ | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ३८२–३८८ | |
| | | | भरथरी | | | ३८८–३८९ | |
| | | | चरपटनाथ | | | ३८९–३९० | |
| | | | गोपीचन्द | | | ३९०–३९० | |
| | | | जलंधरपाव | | | ३९१–३९१ | |
| | | | पृथ्वीनाथ | | | | |
| २०४९ | ११६४८ (१२)७-२४ | सबदी-संग्रह | चौरंगीनाथ | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ३९१ | पत्र संख्या ३९५ पर 'महादेव एवं पार्वती की सबदी' है। |
| | | | कणेरीपाव | | | ३९१ | |
| | | | हालीपाव | | | ३९१–३९२ | |
| | | | मींडकीपाव | | | ३९२ | |
| | | | हणवंत | | | ३९२ | |
| | | | अरजणजी नागा | | | ३९२–३९३ | |
| | | | सिद्धहरताली | | | ३९३ | |
| | | | गरीबजी | | | ३९३–३९४ | |
| | | | धूधूमलीलजी | | | ३९४ | |
| | | | बालगुदाई | | | ३९४ | |
| | | | घोड़ाचोली | | | ३९४ | |
| | | | अजैपाल | | | ३९५ | |
| | | | चोणकनाथ | | | ३९५–३९६ | |
| | | | देवलनाथ | | | | |
| | | | मालीपाव | | | | |
| | | | दत्तात्रेय | | | | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०५० | १२२०५ (३८-३९) | समतारस सज्झाय आदि | हर्षकुशल<br>भुवनकीर्ति | १८ वीं श० | १७x११ | १२२<br>१२२-१२४ | |
| २०५१ | १०८४३ (१) | समयसार नाटक | बनारसीदास | १८९५ | २५.५x२० | १-७५ | सजिल्द ।<br>लि. क. मुनि गंगराज<br>लि. स्था. रतनपुर<br>महाराजा बलवंतसिंहजी के समय में। |
| २०५२ | १२२०६ | समयसार नाटक | बनारसीदास | १७३१ | २२.५x१३ | | र. का. १६९३<br>शाहजहाँ के समय।<br>लि. क. कीर्तिविजय<br>लि. स्था. झुंझणू<br>प्रारंभ के ३ पत्रों पर 'कबीरदास के पद' हैं। चौथे पत्र पर 'उड़द की दाल का पाक' बनाने की विधि है। |
| २०५३ | १२४१७ | समयसार नाटक | बनारसीदास | १९ वीं श० | २४.५x१४.५ | ८९ | र. का. १६९३<br>र. स्था. आगरा<br>पत्र जलाभिषिक्त |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०५४ | ११३१८ (१) | समयसार नाटक भाषा पद्यानुवाद | बनारसीदास<br>मू० कुंदकुंदाचार्य<br>टी० अमृतचंद<br>बालावबोध-राजमल्ल | १७६१ | २२.५x१५.५ | ५-७२ | र. का. १६६३<br>शाहजहां के समय।<br>प्रथम ४ पत्र अप्राप्त।<br>लि. क. जुगलकिशोर<br>लि. स्था. पाटण |
| २०५५ | १२२१८ (५)१३४ | सरस्वती तीर्थ संख्या | जिनलब्धि सूरि | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३६-१४१ | |
| २०५६ | ११६२६ (२) | सर्वअंग जोगग्रन्थ | सुन्दरदास | गु० १८६४ | ३२x१५ | १-१० | प्रथम पत्र पर चारों दिशाओं का सवैया भी है। |
| २०५७ | १०८४६ (४) | सर्वांग-सार | नवलराम | १६५० | १५.५x६.५ | ४२-८१३ | र. का. १८३४<br>र. स्था. शाहपुरा<br>लि. क. रामनिवास<br>लि. स्था. रतनपुरी<br>पत्र संख्या ८११-८१३ पर अंगों में प्रयुक्त छन्दों का विवरण है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०५८ | १०८४५ (१) | सर्वांगसार - संत विचार | नवलराम शिष्य रामचरण | १८८६ | १५.५x१०.५ | १-५२६ | ग्रन्थ ३२ विधानों में बांटा गया है। गुटका सजिल्द। र. का. १८३४ र. स्था. शाहपुरा लि. क. जैरामनारायण लि.स्था. पोकरण |
| २०५९ | १२३२९ (३) | सर्वांगसार | नवलराम शिष्य रामचरण | २० वीं श० | २३x९.५ | १७७-३६२ | र. का. १८३४ ४१ विधानों में श्रेष्ठ संस्कृत ग्रन्थों से श्लोक लेकर उनकी टीका लिखी गई है। |
| २०६० | १०८४८ (३) | सर्वांगसार | नवलराम | १८३४ | १५.५x८ | ३०-५०९ | र. का. १८३४ र.स्था. शाहपुरा (भीलवाड़ा) |
| २०६१ | १०८५२ | सर्वांगसार | नवलराम | २० वीं श० | २८x१५ | १-१३२ | र. का. १८३४ र.स्था. शाहपुरा (भीलवाड़ा) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०६२ | १०८६६ (१०)१ | सर्व-अंग-सार के छुटकर सबद | संतदास | गु० १६२७ | ८.५x७ | ४८० ४६६, ५०१-५०४, ५१८, ५१६ एवं ५२२ वां |
| २०६३ | १०८६६ (१०)२ | सर्व-अंग-सार के छुटकर सबद | रामचरण | गु० १६२७ | ८.५x७ | ४८१, ४८२, ४८५, ४८७, ४६३, ४६६, ५०२, ५०३, ५०७, ५०६, ५१२ एवं ५२२ वां |
| २०६४ | १०८६६ (१०)३ | सर्व-अंग-सार के छुटकर सवद | कबीरदास | गु० १६२७ | ८.५x७ | ४८१, ४८२, ४८५, ४८८, ४६१ ४६२, ४६८, ५०१, ५०६, ५०७ ५१२, ५१६, ५१८, ५१६ एवं ५२० वां |
| २०६५ | १०८६६ (१०)४ | सर्व-अंग-सार के छुटकर सबद | जनतुरसी | गु० १६२७ | ८.५x७ | ४८१, ४८२, ४८५, ४८८, ४६१-४६२, ४६८, ५०१, ५०६, ५०७, ५१२, ५१६, ५१८, ५१६ एवं ५२० वां |
| २०६६ | १०८६६ (१०)५-६ | सर्व-अंग-सार के छुटकर सबद | रज्जब<br>चेतनदास | गु० १६२७ | ८.५x७ | (१) ४८२, ४६०, ४६८, ५०५ एवं ५१३ वां<br>(२) ४८२ एवं ४८५ वां |
| २०६७ | १०८६६ (१०)७-८ | सर्व-अंग-सार के छुटकर सबद | सूरदास<br>अज्ञात | गु० १६२७ | ८.५x७ | (१) ४८३ वां<br>(२) ४८३, ४८४, ४८६, ४६४, ५०७, ५०८, ५०६, ५१०, ५११ एवं ५१४-५१५ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०६८ | १०८६६ (१०) ९-१० | सर्व-अंग-सार के छुटकर सबद | जनहरिदास | गु० १९२७ | ८.५x७ | (१) ४८५ ५०१ ५०४ ५११ | |
| | | | दादूदयाल | | | (२) ४८५ ४८८ ५०० ५०४ ५१२ ५१३ | |
| २०६९ | १०८९६ (१०) ११-१८ | सर्व-अंग-सार के छुटकर सबद | गोरखनाथ | गु० १९२७ | ८.५x७ | ४८६ | |
| | | | परसराम | | | ४८६, ५१३ | |
| | | | रामप्रताप | | | ४९७ | |
| | | | जगजीवन | | | ४९९, ५१९ | |
| | | | मारकण्डेय | | | ५०८ | |
| | | | मुरारि | | | ५१६ | |
| | | | रामदास | | | ५१९-५२० | |
| | | | नृसिंह | | | ५२१ | |
| २०७० | १२२१० (८) | सांझी के पद | | १९ वीं श० | १८x१३.५ | ४३-४६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०७१ | १२२१८ (५)१२ | सांप्रति राजा सज्झाय | कनकविजय शिष्य कान्हजी | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३३ वां | |
| २०७२ | १०९३१ (३) | साखी कवित्त संग्रह | जनहरिदास | १९ वीं श० | १४x१०.५ | ३१६-३२४ | |
| २०७३ | १०८६९ (१७) १-१० | साखी-संग्रह | नानक | गु० १९२७ | ८.५x७ | ५९७-६०२ | कविगद का सवैया है। |
| | | | बखनो | | | ६०२ | |
| | | | कबीर | | | ६०३,६१५ | |
| | | | समन | | | ६०५ | |
| | | | रज्जब | | | ६०५,६१० ६१५ | |
| | | | कविगद | | | ६०६,६०९ | |
| | | | सजना | | | ६११ | |
| | | | नापा | | | ६१३ | |
| | | | सैंना | | | ६१३-६१४ | |
| | | | पीपा | | | ६१४ | |
| २०७४ | १०८६९ (१८) ८-१२ | साखी-संग्रह | नामदेव | गु० १९२७ | ८.५x७ | ७०३-७०५ | आगे के पत्रों में गुटके की कृतियों की पद्यवद्ध विगत है। |
| | | | रैदास | | | ७०५-७०६ | |
| | | | पीपा | | | ७०६-७११ | |
| | | | धना | | | ७११ | |
| | | | रज्जब | | | ७११-७१२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०७५ | १०८६६ (१) | साखी-संग्रह | जनहरिया | २० वीं श० | १४x११.५ | १, ३-११, १६-३४, ३४-४५, ६७ | |
| | | | दयालदास | | | २ रा | |
| | | | तुलसीदास | | | ३, ५४ वां | तुलसीदास के पद हैं। |
| २०७६ | १२२१८ (५)११२ | सागरसेठ चौपई | ज्ञानउदय | १८ वीं श० | २६.५x१० | १२३-१२४ | |
| २०७७ | १०५८५ (८)५१, ५३-५४ | सात सखियां रा, फुटकर एवं जलालबूबना रा दोहा-संग्रह | | १८५० | ६१.५x११.५ | १६२ १६३-१६४ १६४-१६७ | |
| २०७८ | १२५६५ (१७)३ | सात्रवीसना नी लावणी | चम्पालाल दीवान | २० वीं श० | १६x१२ | ११७ वां | |
| २०७९ | १२३२० (५१) | साधु-गुण गीत | उदयसिंह | गु० १८२७ | २१.५x१४.५ | ३७ वां | र. का. १७७५ र. स्था. सुभटपुर (जोधपुर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०८० | १०९२४ (३) | साधु-परीक्षा | मुरलीराम | गु० १८४० | २३x१२.५ | २९६–३१६ | |
| २०८१ | ११५८३ (१४-१५) | साधु-परीक्षा एवं सील-समाधि | पृथ्वीनाथ | गु० १६९३ | १८x१५ | १२६-१३५ १३५-१३७ | |
| २०८२ | १२५७१ (५) | साधु-महिमा आदि कृतिसंग्रह | दयालदास | १९ वीं श० | १०.५x८ | २३४-३१८ | साध-महिमा, अरक्षनिरणं, रिष्याबत्तीसी, करुणासागर, पिता-पुत्र संवाद । |
| २०८३ | १२२१८ (५)२७ | साधुवंदना | | १७६३ | २६.५x१० | ३८–४१ | लि. क. आणंद लि. स्था. लूणसर |
| २०८४ | १२२१८ (४०) | साधुवंदना | समयसुन्दर | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ५७ वां | |
| २०८५ | १२३२० (४७) | साधुवंदना | पासचंद | १८१९ | २१.५x१४.५ | १-६ | लि. स्था. अहिपुर (नागोर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०८६ | १२३७० (३८) | साधुवंदना | मुनि देवचंद शिष्य ज्ञानचंद | १८७४ | १६x११.५ | ४६-७३ | लि. स्था. जोधपुर पत्र सख्या ७४ - ८७ तक संस्कृत में 'कल्याणमंदिर स्तोत्र' तथा 'बृहत्शांति' है। |
| २०८७ | १२५५१ (२८) | साधुवंदना | पुण्यरागर उपाध्याय शिष्य जिनहंस | १६३२ | १३x११ | १५८-१७० | बीच-बीच में अक्षरों का स्थान रिक्त छोड़ दिया गया है। |
| २०८८ | १०६२४ (२६) | साधु-संगत को अंग एवं पद संग्रह | कबीरदास | १६ वीं श० | २३x१२.५ | ५६८-६०१ | |
| २०८९ | १२५६५ (११) | सामाइक लेवा नी विधि | | २० वीं श० | १६x१२ | ७३-७६ | |
| २०९० | १२२१८ (५) १४६ | सामाइक-व्रत स्तवन | जिनलब्धिसूरि | १८ वीं श० | २६.५x१० | १६२-१६४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०९१ | १२३७३ (४) | सामुद्रिकशास्त्र भाषा | सुखदेव | २० वीं श० | २२x१५.५ | पृ. ७–१७ | पृ० संख्या १-७ तक संस्कृत की तीन कृतियां हैं। पृ० संख्या १७-१८ पर स्फुट रेखते हैं। पृ० संख्या १९-४० तक संस्कृत की ८ कृतियां हैं। |
| २०९२ | १०९७६ | सामुद्रिकशास्त्र सटीक | मू० समुद्रकवि | २० वीं श० | २५x१२ | १-२४ | |
| २०९३ | १२५९१ (२१) | सायर | | २० वीं श० | १५.५x१० | ११९-१२३ | "तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर जीन धरो बाबा अब मोत नगारा आ बाजा चलने का फिकर करो बाबा" |
| २०९४ | १०९५६ (३) | सारचन्द्रिका भाषा | किशोरअलि शिष्य वंशीअलि | १८३७ | ३२x१६ | १-२७ | र. का. १८३७ सर्व सबद – ५६५ |
| २०९५ | १२५७४ (३) | सारचन्द्रिका भाषा | " | २० वीं श० | १७x१०.५ | ८२-१४० | सत्संग माहात्म्य परक कृति– विभिन्न पुराणों और धार्मिक ग्रन्थों के श्लोक देते हुए भाषा पद्यानुवाद चौपई में है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०९६ | १०८४८ (७) | चारचन्द्रिका भाषा व्याख्या | किशोरअलि शिष्य वंशीअलि | १९ वीं श० | १५.५x८ | ६०८-६२२ | र. का. १८३७<br>कर्त्ता सखि सम्प्रदाय के हैं। |
| २०९७ | ११५४७ | सारतत्व संग्रह | | २० वीं श० | २५.५x१२.५ | १-३३ | प्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रन्थों के संस्कृत श्लोकों के आधार पर औषधी संग्रह।<br>प्रथम दो पत्र खण्डित। |
| २०९८ | ११४७१ | सावित्री ची पोथी | | १९ वीं श० | २१x१२ | १-२३ | कृति मराठी भाषा में। |
| २०९९ | ११०६२ | साहिजादा कुतबदीनरी वात | | १८०३ | २५x११.५ | १-८ | लि. क. दीपविजय गणि<br>लि. स्था. कँवला |
| २१०० | १०८४३ (५) | सिंदूरप्रकरण (मुक्त-मुक्तावली-भाषा) | बनारसीदास एवं कुँवरपाल | गु० १८८५ | २५.५x२० | ७-२१ | गुटके में बनारसीदास की कृतियों का सुन्दर संग्रह है। दोनों मित्रों ने मिलकर ग्रन्थ बनाया है।<br>र. का. १६९१<br>लि. क. गंगराज<br>लि. स्था. रतनपुरी |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१०१ | ११०१३ (२६) | सिंह-वानर कथा | | गु० १८१८ | २३x१५ | १४७ वां | ११ दोहे। अंत में प्रेम करने के संबंध में २ दोहे हैं। |
| २१०२ | ११५८५ (८)५६ | सिंहासन-बत्तीसी री कथा | | १८५७ | १९.५x११.५ | २१२-२२६ | अपूर्ण। २३ वीं कथा तक। लि. क. लालविजय लि. स्था. बीकानेर लछमणजी कोचर पठनार्थ। |
| २१०३ | ११५४६ | सिंहासन-बत्तीसी री वार्त्ता | | १८३३ | २६.५x११.५ | १-१५ | अंत में ३२ देवियों के नाम भी दिए हैं। लि. क. शिष्यणी फत्तु शिष्या केसरजी चैनां लि. स्था. खण्डप शहर मध्ये |
| २१०४ | ११०१३ (१५) | सिखामण एवं वस्तु-विशेष-नाम वर्णन | | गु० १८१८ | २३x१५ | १२९-१३१ | पानी गंगा रो, खेती वाड़री आदि। |
| २१०५ | ११५८४ (२) | सिचियाव कवित्त-छंद आदि | खेतसी | १७०० | १९.५x१६ | २३ वां | लि. क. चेला नरसिंह लि. स्था. चीतामां ग्राम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१०६ | १२१२५ (१-७) | सिद्धमुक्ताफल, प्रश्नोत्तर, सिद्धसम्प्रदाय, तेजमंजरी, पद्मावली, सिद्धगंगा, परमारथ के कवित्त संग्रह | महाराजा मानसिंह | २० वीं श० | २३.५x१७.५ | १-११ | मानसिंहजी की स्फुट कृतियों का संग्रह है। कवित्त प्रारंभ कर लिखना छोड़ दिया है। |
| २१०७ | १२५६५ (१३) | सिद्धाचलजीनो स्तवन | ग्यांनउद्योत | २० वीं श० | १६x१२ | ७८ वां | |
| २१०८ | १२३७० (१७)२ | सिद्धाचल स्तुति | नंदसूरि | १६ वीं श० | १६x११.५ | १४२ वां | |
| २१०९ | १०६४६ (२) | सिद्धान्त-रहस्य सटीक | मू० वल्लभाचार्य | १६ वीं श० | १४.५x७.५ | १६-२७ | |
| २११० | १०६२० | सिद्धान्त-विचार (जैन) | | १६५६ | २२.५x११ | १-४६ | लि. क. सवाईसागर शिष्य विजयसागर लि. स्था. देपालपुर नगरे |
| २१११ | १२२१६ (१) | सिद्धान्त-विचार-संग्रह | लब्धिरुचि शिष्य हर्षरुचि | १७५२ | २४x१०.५ | १-३६, ४०-५२ | स्वलिखित प्रति। प्रारंभ के पत्र जलाभिषिक्त एवं खण्डित। लि. स्था. खमनोरनगर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २११२ | १०७३७ | सिद्धान्त सारोद्धार | | १९ वीं श० | २३.५x१० | १-५३ | ग्रन्थ का अन्तिमांश अपूर्ण है। लिपि दो प्रकार की है। सारणियों के लिए स्थान रिक्त छोड़े हुए हैं। |
| २११३ | १२५८५ (१२) | सिवरीबाई री परची | सुखसारण | गु० १९२७ | १९.५x१५ | २९८-३११ | गुटके में कर्त्ता की आठ परचियों का दुर्लभ संग्रह है। |
| २११४ | १२२१८ (५)३७ | सीता गीत | जिनरंगसूरि | १७६३ | २६.५x१५ | ४९ वां | पत्र संख्या ५० वें पर स्फुट मंत्र, पद व दोहे हैं। |
| २११५ | १२२०५ (१४) | सीता गीत | जिनरंगसूरि | १८ वीं श० | १७x११ | १६-१७ | पत्र संख्या १८ वें पर राशि-फल है। |
| २११६ | ११५७५ | सीताराम चौपई | समयसुन्दर वाचक शिष्य सकलचंद | १९ वीं श० | २२.५x१६ | १-११३ | पत्र चिपके हुए एवं स्याही फैली हुई है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २११७ | १२५५१ (१४) | सीमंधर स्तवन | भक्तिलाभ | १७ वीं श० | १३x११ | १०६-१०८ | र. का. १६७४ |
| २११८ | १२२१८ (५)६३ | सीमंधर स्तवन | हर्षकुशल शिष्य जिनचंद | १८ वीं श० | २६.५x१० | ८४-८६ | |
| २११९ | १२२०८ (१०) | सीमंधर स्तोत्र | जयविजय शिष्य नयविजय | गु० १७१५ | २५x१८.५ | १७८-१८२ | |
| २१२० | १२२१८ (५)१२३ | सीमंधर स्तोत्र | लालचंद गणि | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३४ वां | अंत में फुटकर कवित्त हैं। |
| २१२१ | १२२१८ (५)१८ | सीमंधर स्वामी गीत | हर्षकुशल | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३५ वां | |
| २१२२ | १२२१८ (५)४४ | सीमंधर स्वामी वृहत्-स्तवन | भक्तिलाभ | १७५५ | २६.५x१० | ६१-६२ | पत्र संख्या ६२ पर ४५ आगमों के नाम दिए हैं। |
| २१२३ | १२२०५ (४१) | सीमंधर स्वाभी स्तवन | हर्षकुशल गणि | १८ वीं श० | १७x११ | १२५-१२६ | अंत में विच्छु का विष उतारने का मंत्र है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१२४ | १२२१८ (५)३८ | सीलरास | विजयदेव सूरि | १७५५ | २६.५x१० | ५१-५७ | |
| २१२५ | १२२०५ (३) | सील-सज्झाय | समयसुन्दर | गु० १७४८-१७५५ | १७x११ | ३ रा | इसी पत्र पर अज्ञात कर्तृक लावणी है। |
| २१२६ | १०८४२ (४) | सीह (सिंह) छत्तीसी | कृष्णसिंह कविराज | १८९५ | २४.५x१६.५ | ७२-७३ | लि. क. खिड़यो हरसुख तथा वणसुर फत्तौ लि. स्था. जोधपुर |
| २१२७ | १२३७० (१८) | सुदर्शण-चरित्र कथा | धर्मसीह शिष्य कृत | १९ वीं श० | १६x११.५ | १६१-१९४ | कर्त्ता लुंकागच्छी है। कवित्तबद्ध; १२१ कवित्त। |
| २१२८ | १२१२३ | सुदामा-चरित्र | बीरबल | २० वीं श० | २९x१५ | १–७ | |
| २१२९ | १२२१७ (३) | सुदामा-चरित्र | बलभद्र | १९ वीं श० | २१.५x१२ | ६५-६९ | |
| २१३० | १०९०२ (१८) | सुदामाजी की बारखड़ी | संतदास | गु० १८०९ | १५.५x१२.५ | ९०-९४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१३१ | १२४२८ (७) | सुदामाजी की बारखड़ी | | गु० १९१२ | २१x१५.५ | २४ वां | अपूर्ण। |
| २१३२ | १२५६९ (२) | सुदामाजी की बारखड़ी | | १८२२ | १६.५x११ | १-४ | अपूर्ण—<br>२० पद मात्र, 'न' वर्ग पर्यन्त।<br>लि. क. रूपराम<br>लि. स्था. खैड़ापा |
| २१३३ | १५५९१ (५) | सुदामाजी री बारखड़ी | | २० वीं श० | १५.५x१० | ३५-३६ | |
| २१३४ | १२५३९ | सुन्दरदासजी का अष्टक | सुन्दरदास | २० वीं श० | | १-६ | र. स्था. नारायणपुर<br>१३ अष्टक हैं। |
| २१३५ | १२५७० (७-९) | सुन्दरदासजी की चितावणी (हरिबोल, विवेक, तर्क-चितावणी) | सुन्दरदास | २० वीं श० | ९.५x६.५ | २२-२५<br>२५-३१<br>३१-३९ | |
| २१३६ | १२५८१ (१३) | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १६x१०.५ | ७७-९० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१३७ | १२४२१ | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | गु० १८९३ | १७x१२ | २८७-२९१ | पत्र संख्या २९२ पर स्फुट कवित्त एवं पत्र संख्या २९२-२९४ पर 'दंडक' नामक लघु कृति है। |
| २१३८ | १२४२० (२२) | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | १९३४ | १६x१४ | ४४८-४५४ | अंगवद्ध। लि. क. साधु उदोतराम लि. स्था. बीदासर रामद्वारे |
| २१३९ | १२५६१ (४) | सुन्दरदासजी का सवैया एवं अष्टक आदि | सुन्दरदास | १९ वीं श० | २३.५x१७ | १४७-१६३ १६३-२२५ | |
| २१४० | १२५७४ (१६) | सुन्दरदासजी का सवैया आदि | सुन्दरदास | २० वीं श० | १७x१०.५ | ३०८-३१७ | |
| २१४१ | १२३७५ (५) | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | १९ वीं श० | ११x१६.५ | ४९८-७५३ | |
| २१४२ | १२३७६ (४) | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | २० वीं श० | १५x१४ | ३०-३५ | पत्र संख्या ३६-४९ पर 'द्विजवदन चपेटा' संस्कृत में है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१४३ | १२३७८ (५) | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | १८ वीं श० | २२x१५.५ | ३१-३७ | |
| २१४४ | १२५७७ (४) | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १९.५x१० | ७६-७८ | अपूर्ण। |
| २१४५ | १२३७२ (१-७) | सुन्दरदासजी रो कृति-सग्रह | सुन्दरदास | १९ वीं श० | २४x१६.५ | १-१०१ | "ज्ञानसमुद्र, सवैया, अष्टक, हरिहर - संवाद, राजजोग, ज्ञानबोध, विज्ञानबोध"। |
| २१४६ | १०९२६ (३) | सुन्दर-विलास (अंगवद्ध वाणी) | सुन्दरदास | गु० १९३६ | २१x१५.५ | ४४-२२० | |
| २१४७ | ११३१३ (१) | सुन्दरश्रृङ्गार | कविराज सुन्दर | १७९९ | १५x१४ | ३१-८६ | प्रारंभ के ३० पत्र अप्राप्त। लि. क. निहालचंद शिष्य कुशलसिंह लि. स्था. जिहानाबाद, (जैसिंहपुर) |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१४८ | ११३१८ (२) | सुन्दरशृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | गु० १७६१ | २२.५x१५.५ | १-२५ | अपूर्ण-कवि शाहजहाँ द्वारा सम्मानित किया गया था । लि. क. जुगलसागर लि. स्था. पाटण छंद संख्या २८७ वें पर्यन्त । |
| २१४९ | १२२०७ (१) | सुन्दरशृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १८१४ | २४x१७.५ | १-५८ | कीटविद्ध । र. का. १६८८, शाहजहां के समय । लि. क. पंड्या पीताम्बर लि. स्था. गिरपुर (डूँगरपुर) |
| २१५० | १२५८२ | सुन्दरशृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १८०७ | १५x१०.५ | ८-९३ | पत्र संख्या १-७ अप्राप्त । |
| २१५१ | १२५५१ (२५) | सुन्दरशृङ्गार का सवैया | सुन्दरदास | १७ वीं श० | १३x११ | १५३ वां | |
| २१५२ | १२५५१ (२०) | सुबाहु-संधि | पुण्यसागर उपाध्याय शिष्य जिनहंस सूरि | १७ वीं श० | १३x११ | १३६-१४५ | र. का. १६१४ र. स्था. जेसलमेर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१५३ | ११०८५ (८) | सुभाषित-संग्रह | वृन्द कवि | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | ६७-६८ | |
| २१५४ | १२५७५ (६) | सुमतिनाथ स्तवन | | १९ वीं श० | १३.५x१४। | २०-२१ | पत्र संख्या २१-२२ पर संस्कृत प्राकृत में सुभाषित हैं। |
| २१५५ | ११०६१ | सुरसुन्दरी चौपई | धर्मवर्द्धन | १८३७ | २५x११ | १-१६ | पत्र बड़कने हैं। लि. क. आरज्या जीऊ लि. स्था. सोजत |
| २१५६ | १०९०१ (२) | सूआ-बहुत्तरी री कथा | | १९ वीं श० | १५.५x१२.५ | २९-६६ | अपूर्ण। नवमी कथा के प्रारंभ तक है। पत्र चिपके हुए हैं। |
| २१५७ | १०९५४ (१८) | सूआ-बहुत्तरी री कथा | | गु० १८७४ | २४x१६.५ | १८९-२८३ | अपूर्ण। ६९ वीं कथा बीच में छोड़ दी गई है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१५८ | ११०९१ (५) | सूरातण को ग्रंग (वाणी) | रामचरण | गु० १८३६ | १८x१०.५ | १७६-१८६ | |
| २१५९ | १११७८ (६) | सृष्टिपुराण | गोरखनाथ | गु० १७९२ | १५.५x१२ | ९२-९३ | |
| २१६० | १०९०३ (२) | सेऊसमन की परची | ग्रनंतदास | १९ वीं श० | १३x८ | १३-२१ | |
| २१६१ | १०९२४ (२७) | सेऊसमन की परची | ग्रनंतदास | २० वीं श० | २३x१२.५ | ६०२-६०४ | ग्रंत में रामभक्तिपरक तीन 'धमाल' हैं। |
| २१६२ | १०९४० (५) | सेऊसमन की परची | ग्रनंतदास | गु० १८८३ | १५.५x१०.५ | ४७८-४८३ | ग्रंत में राग सुभंग में कबीरदास का पद है। |
| २१६३ | १०९४१ (५) | सेऊसमन की परची | ग्रनंतदास | गु० १९३७ | १७x१०.५ | १३४-१३९ | |
| २१६४ | १२५७४ (१३) | सेऊसमन की परची | ग्रनंतदास | २० वीं श० | १७x१०.५ | २९४-२९९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१६५ | १२५८५ (१५) | सेऊसमनजी की परची | अनन्तदास | गु० १९२७ | १९.५x१५ | ३८१-३९० | लि. क. आरतराम शिष्य सुलभराम<br>लि. स्था. बदनोर |
| २१६६ | १०८६८ (१८)६ | सेवगरामजी का कवित्त अंगबद्ध | सेवगराम | गु० १९२७ | ८.५x७ | ६८०-६८६ | पुष्पिका में गुटके की संकलित कृतियों का पद्यात्मक वर्णन है। |
| २१६७ | १२५७२ (१२) | सेवगरामजी का झूलणा अंगबद्ध | सेवगराम | १९ वीं श० | १०.५x८.५ | ३४७-३६४ | |
| २१६८ | १०८६५ (५) | सेवगरामजी की साखी कुण्डलिया | सेवगराम | १९४६ | १२.५x८ | १६-१७ | लि. क. साधु रामस्वरूप |
| २१६९ | १२४२१ (३) | सेवादासजी का रेखता | सेवादास | गु० १८९३ | १७x१२ | ९०-१०२ | |
| २१७० | १२२१४ (१) | सेवादासजी की वाणी | सेवादास | १९ वीं श० | २१.५x१३ | ९-३८, ५९-६५, ७५-८८, ९७-१०३ | पत्र चिपके हुए एवं खण्डित पत्र सख्या १-८। अप्राप्त पत्र संख्या ९ 'क' पर कबीरदास के पद हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१७१ | १२४२२ (१४) | सेवादासजी की वाणी एवं कृतिसंग्रह | सेवादास | गु० १८३१ | १५x१०.५ | २६४-३५४ | "गुरुमंत्र, नाममहिमा, तत्व-निर्णय" । |
| २१७२ | १२२२६ (१६) | सेवादासजी की वाणी एवं पदसंग्रह | सेवादास | गु० १८७७ | १४x१२.५ | ३००-४३८<br>४३८-४७४ | |
| २१७३ | ११६४८ (८) | सेवादासजी की वाणी एवं पदसंग्रह | सेवादास | गु० १८५३ | २७x१६.५ | १७०-२८५<br>२८५-३२७ | लि. क. गोपालदास<br>लि. स्था. कोलियानगर<br>पद ४००, राग २३ |
| २१७४ | ११६०६ | सैलकुंवरनी चौपई | समयसुन्दर | १६ वीं श० | २४.५x११ | ४ था मात्र | पत्र चित्रित है । |
| २१७५ | ११५८५ (८)१३ | सोलह-सतियों के नाम | | गु० १६०३ | १६.५x११.५ | १४६ वां | पत्र संख्या १४७ पर एक सौ अट्ठावन कर्म-प्रकृति-वर्णन है । |
| २१७६ | १२२१८ (५)३६ | सोलह-सती सज्झाय | प्रेमराज | १७६३ | २६.५x१० | ४६ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१७७ | १२३७० (१३) | सोलह-सती सज्झाय | उदयरत्न | १९ वीं श० | १६x११.५ | १३१-१३४ | |
| २१७८ | १०९०० (५) | सोला-कला | ग्वालवाल | २० वीं श० | १२x८.५ | ४६-४८ | वांणी का ही एक अंग है। |
| २१७९ | १२४२१ (११) | सोले-सुपना (स्वप्न) | परसराम | गु० १८९३ | १७x१२ | १८०-१८९ | |
| २१८० | १२३८० (७) | सोहिलो (रामजी को) | तुलसीदास | गु० १७२४ | २०x१४ | १२७-१२९ | पत्र संख्या १२६-१२७ पर रामजी की छठी के रागबद्ध पद हैं। |
| २१८१ | १२०६६ | सौन्दर्यलहरी-सभाषाटीका | शंभुदत्त पुत्र ज्योतिर्विद शिवकृष्ण | १८७६ | १७.५x११ | १-१३८ | पोरवाल बालकृष्ण वाचनार्थ। लि. स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१८२ | १२४३० | सौ-प्रश्नी भाषा | | २० वीं श० | १६.५x११.५ | १-२७ | |
| २१८३ | १२२१८ (१५३) | स्तंभण-पार्श्वनाथ गीत | कुशललाभ | १८ वीं श० | २६.५x१० | १६५-१६८ | अपूर्ण । अंतिम पत्र खण्डित । |
| २१८४ | ११५८४ (१३) | स्तंभण-पार्श्वनाथ गीत | | १७१४ | १६.५x१६ | ३९ वां | लि. क. नयणा<br>लि. स्था. लांबिया<br>पत्र संख्या ४० - ४१ पर संस्कृत में नाड़ी-परीक्षा है । |
| २१८५ | १२२०५ (१२) | स्तंभण-पार्श्वनाथ-स्तवन | | १७५५ | १७x११ | ११-१२ | लि. क. विद्याप्रमोद<br>लि. स्था. रूपनगर |
| २१८६ | १२२०५ (२७) | स्तंभण-पार्श्वनाथ-स्तवन | भुवनकीर्ति | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १०३ वां | लि. क. विद्याप्रमोद<br>लि. स्था. रूपनगर |
| २१८७ | १२५५१ (२३) | स्तंभण-पार्श्वनाथ-स्तवन | जयसोम | १७ वीं श० | १३x११ | १४९ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१८८ | १२५६५ (१६) १–११ | स्तवन पद संग्रह | माणक, कुशलराय | २० वीं श० | १६x१२ | ९३ वां | पत्र संख्या ९०-९२ पर रागबद्ध दोहे हैं। |
| | | | रूपचंद | | | ९३, ९४, १०७, १०८, १०९ | कल्याण राग के स्तवन १०, पत्र संख्या ९२-९४। |
| | | | माधोदास | | | ९४ | काफी राग के स्तवन ६, पत्र संख्या ९४-९६। |
| | | | बनारसी | | | ९४, ९५, | |
| | | | रूपविमल | | | ९५, ९७ | |
| | | | देव | | | ९५ | |
| | | | अज्ञात | | | ९६ | |
| | | | चंदकुशाल | | | ९७, १००, १०८ १११ | जंजोटी के स्तवन ४, पत्र संख्या ९७-९८। |
| | | | हस्तीमल | | | ९८ | ठुमरी के स्तवन ६, पत्र संख्या ९८-१००। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१८९ | १२५६५ (१६) १२-२१ | स्तवन-पद-संग्रह | धर्मभगत | २० वीं श० | १६x१२ | ९८ वां | *र. का. १९३१ |
| | | | लालचंद | | | ९९, १००, १०१, १०३-१०४ ११३, ११४ | पत्र संख्या १०२ पर सोरठ राग के दोहे हैं। |
| | | | *प्रधानसागर | | | ९९ वां | रेखते के स्तवन ४, |
| | | | आनन्दघन | | | ९९, १०४, | पत्र संख्या १००-१०१। |
| | | | जादुराय | | | १०५-१०६ १०० वां | |
| | | | राजाराम | | | १०१ वां | |
| | | | कीर्तिसागर | | | १०२ वां | |
| | | | चैनविजय | | | १०१-११२ | |
| | | | रायचंद | | | १०३ वां | |
| | | | रिखबदास | | | १०५ वां | |
| २१९० | १२५६५ (१६) २२-३१ | स्तवन-पद-संग्रह | धर्मपाल, हरखचंद | २० वीं श० | १६x१२ | १०६ वां | |
| | | | श्रीधर | | | १०७ वां | |
| | | | धन्नो, खेम | | | १०९ | |
| | | | भावविजय | | | ११० वां | |
| | | | केशरीचंद | | | ११३ वां | |
| | | | मुकनचंद | | | ११० वां | र. स्था. बालोतरा |
| | | | चतुरकुशल | | | ११३ वां | |
| | | | बस्तीराम | | | ११४ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१६१ | १०८२२ | स्तवन-संग्रह | जसविजय | १६ वीं श० | २७.५x१३.५ | १-११ | "वीस विहरमान स्तवन" हैं। लि. क. लखमीकुसल |
| २१६२ | ११५८५ (८) १७-२२ | स्तवन-संग्रह | रूपचंद | १६ वीं श० | १६.५x११.५ | १५० वां | सुविध जिन स्तवन |
| | | | लावण्यसमय | | | १५१-१५३ | पंचतीर्थ स्तवन |
| | | | जिनराज | | | १५३-१५४ | वासुपूज्य स्तवन |
| | | | अज्ञात | | | १५४ | आदिजिन स्तवन |
| | | | समयसुन्दर | | | १५५ | शेणिक सज्झाय |
| २१६३ | १२२०५ (२५) | स्त्री-प्रवाह-प्रतिकार ओखद | | १८ वीं श० | १७x११ | ७६-८६ | |
| २१६४ | १२५७० (१७) | स्थूलदेह-वर्णन आदि | जनतुरसी | २० वीं श० | ६.५x६.५ | १२३-१२४ | पत्र संख्या १२५-१२८ पर 'नरसी' कृत पद हैं। |
| २१६५ | १२३७० (३२) | स्थूलिभद्र नव-रासो | उदयरत्न | १६ वीं श० | १६x११.५ | १०-१८ | र. का. १७५६ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१९६ | १२१७८ | स्थूलिभद्रनी सीयल वेल | वीरविजय | १९४० | २८x१२ | १-७ | र. का. १८६६, राजनगर लि. क. पंवोरविजय लि. स्था. चांणसमा नगरे |
| २१९७ | १२२०५ (३७) | स्थूलिभद्रमुनि-गीत | सौभाग्यसुन्दर | गु० १७४८-१७५८ | १७x११ | १२१-१२२ | |
| २१९८ | १२२१८ (७५) | स्थूलिभद्र सज्झाय | सिद्धविजय शिष्य शीलविजय | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ९५-९६ | |
| २१९९ | १२२१८ (५)१६ | स्थूलिभद्र सज्झाय | जिनराज | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३४ वां | |
| २२०० | १२२१८ *(२१-२३) | स्थूलिभद्र सज्झाय | समयसुन्दर | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ३६ वां | *(२१) भुवनकीर्ति कृत "गुरु-स्तुति" रूप में ढाल है। (२३) "नीसाणी" शीर्षक से २५ संतों के नाम व उनकी जाति दी गई है। |
| २२०१ | १२२१८ (४१) | स्थूलिभद्र सज्झाय | धर्मविजय शिष्य चारित्रविजय | गु० १७५५-१७६७ | २६.५x१० | ५७-५८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२०२ | १२३७० (१) | स्नात्रपूजा-विधि | देवचन्द्र | १६ वीं श० | १६x११.५ | १-६ | ढालबद्ध । |
| २२०३ | १२५६५ (१) | स्नात्रपूजा-विधि | देवचन्द्र | २० वीं श० | १६x१२ | १-८ | |
| २२०४ | १०६२७ (८) | स्नेहलीला | मोहनदास वैष्णव (जनमोहन) | गु० १८०६ | २०.५x१० | १-१३ | अगले दो पत्रों पर 'दत्तात्रेय स्तोत्र' है । |
| २२०५ | ११६७५ | स्नेहलीला | ब्रजनिधि (सवाई प्रतापसिंह) | १६ वीं श० | २३.५x१०.५ | १-११ | अपूर्ण— ११८ छन्द हैं । |
| २२०६ | ११५८६ (३) | स्नेहलीला (सचित्र) | विष्णुदास | गु० १८३३ | १५.५x११ | १३३-१४३ | चित्र संख्या—२ |
| २२०७ | १२५५७ (१६) | स्नेहलीला | जनमोहन | गु० १८७८ | २०x१५.५ | १२-२२ | |
| २२०८ | १०६४७ (१) | स्नेहलीला | जनमोहन | २० वीं श० | १४.५x७ | १-२८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२०९ | १२४२८ (१) | स्नेहलीला | रसिकराय | १९१२ | २१x१५.५ | १-९ | प्रथम पत्र शोभन । लि. क. वैष्णव मोतीराम लि. स्था. जोधपुर |
| २२१० | १२१६० | स्फुट-आलापक (जिन-प्रतिमाजी री हुंडी) | | १८४६ | १९.५x११.५ | १–३२ | जलाभिषिक्त । लि. क. अमरचन्द लि. स्था. मेड़ता |
| २२११ | १२५६७ (५) | स्फुट-औषधि एवं आयुष्य विचार-संग्रह | | गु० १८३० | २१x१५.५ | ४९-५० | पत्र संख्या ५० से ५४ पर स्कन्धपुराण के कुछ श्लोकों की टीका एवं ज्यौतिष-विषयक संग्रह है । |
| २२१२ | ११५८४ (२) | स्फुट-औषधि एवं मंत्र-संग्रह | | १७४९ | १९.५x१६ | १३०-१३६, १३८ वां | |
| २२१३ | ११५८५ (८)८ | स्फुट-औषधि सरसों री | | १९०३ | १९.५x११.५ | १४० वां | |
| २२१४ | ११५८३ (२०) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | गंगकवि | गु० १६९३ | १८x१५ | १६४–१६६ | लि. क. अमरदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२१५ | १०८५० (२) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | दयालदास | १८६६ | १७x१०.५ | १०-५३ | अन्त में गुटके की कृतियों का विवरणात्मक कुंडलिया है। |
| २२१६ | १०८६७ (५) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | | १९ वीं श० | १८x११ | ८६ वां | गुटका सजिल्द। |
| २२१७ | १०८९७ (६) | स्फुट-कवित्त-संग्रह (वाणी के अंग) | रामदास | १९ वीं श० | १२x११ | २५४-२७० | गुटका अपूर्ण है। पत्र फटे हुए एवं चिपके हुए हैं। |
| २२१८ | १०९३६ (७२) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | पद्माकर | १९३४ | १२.५x८.५ | ४१५-४१६, ४१९-४२१ | लि. क. चोकसराम लि. स्था. जोधपुर |
| २२१९ | ११०८५ (२) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | रामदत्त | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | ५७-५९ | |
| २२२० | १२२१८ (१२२) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३४ वां | गुर्जर-भाषा में। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२२१ | १२६१२ (२, ४, ६) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | लछीराम<br>देवीदास<br>रावबुधा<br>कासीराम<br>वाजीद | गु० १८१९ | २२x१५ | ११ वां<br>१४ वां<br>१७ वां<br>१८ वां<br>१९-२० | पत्र संख्या १८ पर 'लूला-पांगला की खोट की टीप' है। |
| २२२२ | १२५४७ (२) | स्फुट-कवित्त एवं लघुचाणक्य | कविशंभु | २० वीं श० | १६.५x१२ | २-३<br>४-५ | पत्र संख्या ३-४ पर 'पञ्चाक्षर मंत्र' संस्कृत में है। |
| २२२३ | ११५८४ (२४-२५) | स्फुट-कवित्त-संग्रह (जालिकाबद्ध, मादलबद्ध, टोकरियो आदि) | | १८ वीं श० | १९.५x१६ | २११, २१२ वें | |
| *२२२४ | १०८४२ (१२) | स्फुट-कवित्त-संग्रह (राठोड़ां रा) | | १९ वीं श० | २४.५x१६.५ | ९२ वां | इसमें राव तीड़ा से लेकर जोधपुर के महाराज विजयसिंह तक का नामोल्लेख है। |
| *२२२५ | १०८४२ (१३) | स्फुट-कवित्त-संग्रह (रिणमल-रायाँ-राव) | | १९ वीं श० | २४.५x१६.५ | ९४ वां | अंत में स्फुट दोहा है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२२२६ | १०८४२ (१५) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | | १६ वीं श० | २४.५x१६.५ | ६७-६८ | "जीवराज सोलंखी लारे सती हुई जिणरो"। ११ चरण हैं। |
| *२२२७ | १०८४२ (११) | स्फुट-कवित्त-संग्रह (सरणै राखिया रा) | | १६ वीं श० | २४.५x१६.५ | ६० वां | मण्डोर के महाराजाओं के प्रशंसात्मक कवित्त हैं। |
| *२२२८ | १०६५५ (४) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | | गु० १६०५ | २३.५x१७.५ | १-४ | मानसिंहजी की प्रशस्ति-परक एवं शृङ्गारिक कवित्त हैं। |
| २२२६ | १२३७० (२०) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | धर्मसी | १६ वीं श० | १६x११.५ | २००-२०७ | |
| २२३० | १२३७६ (१) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | | २० वीं श० | १६x१४ | १-२२ | |
| २२३१ | १२४४८ (२) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | कविसिद्ध, सूरत<br>पद्माकर<br>गंग<br>कविलाल | गु० १६०६ | २८x१३ | ६ वां<br>६, १० वें<br>६ वां<br>१० वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२३२ | १०६३० (५) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | कविगद | १६ वीं श० | १५.५x१२ | ५२ वां | स्त्री-स्वभाव पर औपदेशिक कवित्त हैं। अंत में तांत्रिक मंत्रादि हैं। |
| २२३३ | १०८६६ (१८) २-६ | स्फुट-कवित्त-संग्रह (अंगबद्ध) | नारायण | गु० १६२७ | ८.५x७ | ६६२-६६५ | |
| | | | अज्ञात | | | ६६५-६७० | |
| | | | हरिदेव | | | ६७०-६७७ | |
| | | | अज्ञात | | | ६७७-६७६ | |
| | | | सेवगराम | | | ६८०-६८६ | |
| २२३४ | ११०१३ (११) | स्फुट-कवित्त, सवैया | कविगद आदि | गु० १८१८ | २३x१५ | ११८-११६ | प्रेमी-प्रेमिका के वार्तालाप संवन्धी श्रृङ्गारिक सवैये आदि हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२३५ | १२१७४ (१) १-१४ | स्फुट-कवित्त, सवैया आदि | तुलसी<br>जगनाथ<br>गैब<br>रामवल्लभ<br>मांणक<br>सांईदीन<br>केशव<br>वनारसी<br>देवीदास<br>हरिदास<br>ईसरदास<br>मालमदास<br>राघोदास<br>दीनानाथ | २० वीं श० | १८.५x७ | १, ७, ९, २६<br>१, ८<br>२ रा<br>३ रा<br>४, ५, ६<br>८ वां<br>१०, १६<br>११ वां<br>१७, २५<br>१८-२४<br>१८ वां<br>१९ वां<br>१९ वां<br>२५ वां | किसी बड़े गुटके के बीच के पत्र मात्र हैं। मूल पत्राङ्क ५१ से ७७ तक लगे हुए हैं। सगुण भक्ति-परक छन्द हैं। |
| २२३६ | १२४२० (२०) १-३ | स्फुट-कवित्त, सवैया आदि (वाणी के अंग) | परसराम<br>जनतुरसी<br>सुन्दरदास | २० वीं श० | १६x१४ | ४३१-४३५<br>४३२-४३४<br>४३५-४३७ | पत्र संख्या ४५२ पर भी परसरामजी के कवित्त हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | सर्व ६१— |
| २२३७ | १२२२६ (७) १-१३ | स्फुट-कवित्त, सवैया, कुण्डलिया-संग्रह | | १८७६ | १४x१२.५ | ४२-५८ | ग्रंत में तीन दोहे हैं। |
| | | | ग्रज्ञात | | | ४२,४३, ४६ | |
| | | | देवीदास | | | ४३-४४ | राजनीति रा। |
| | | | कवि व्यास | | | ४४, ५४ | कलजुगी मित्र रा। |
| | | | कवि ब्रह्म | | | ४५-४६ | |
| | | | ऋषि लालचंद | | | | लि. क. वीरमदास निरंजनी |
| | | | कवि जनक | | | ४७ वां | शिष्य कोमलदास |
| | | | कवि सार | | | ४८ वां | शिष्य वनमालीदास |
| | | | कवि गद | | | ४८,५१,५३ | शिष्य मंगलदास |
| | | | उदयराम | | | ४९ वां | शिष्य ग्रमरदास |
| | | | गिरधरकविराय | | | ५० वां | शिष्य सेवादास |
| | | | लिखमीदास | | | ५२ वां | लि. स्था. कैरूं (जोधपुर) |
| | | | केसोदास | | | ५७ वां | पत्र संख्या ५४ से ५६ पर |
| | | | जगन्नाथ | | | ५८ वां | 'पृथ्वी रा खण्ड द्वीप रो प्रमाण' है। |
| २२३८ | १२५७४ (१४) १-३ | स्फुट-कवित्त, सवैया, ढाल | तुरसीदास | २० वीं श० | १७x१०.५ | ३०० वां | |
| | | | माधोदास | | | ३०१-३०२ | |
| | | | चोथमल | | | ३०२-३०४ | र. का. १८५२ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२३९ | १२२८१ (९) १-५ | स्फुट-चन्द्रायणा | सेवादास<br>हरिदास<br>कबीर<br>रूपदास<br>जनतुरसी | १९ वीं श० | १६x१०.५ | ७०-७१<br>७३-७५<br>७२ वां<br>७३ वां<br>७५ वां | जनतुरसी की 'साखी' है। |
| २२४० | १२३७१ (१६) | स्फुट-दोहा-संग्रह (शृङ्गार) | | १८५२ | १८.५x१६.५ | ५९-६० | महाजनी लिपि में। पत्र संख्या ६१-६२ पर पत्र लिखने की कला के दोहे हैं। |
| २२४१ | १२२०५ (४९) | स्फुट-दोहा-संग्रह | | १८ वीं श० | १७x११ | १२६-१३१ | ७७ दोहे हैं। |
| २२४२ | १२५७० (२२) | स्फुट-दोहा-संग्रह (दोहावली) | गो० तुलसीदास | २० वीं श० | ९.५x६.५ | १३०-१३५ | |
| २२४३ | १०९४० (७) ३६-३७-३८ | स्फुट-दोहा-संग्रह | रहीमदास आदि | गु० १८८३ | १५.५x१०.५ | ५७४-५७५ | पत्र संख्या ५७६-५७८ पर "रघुनाथ-अंजनी-संवाद" है। |
| २२४४ | ११५८५ (८) ९ | स्फुट-दोहा-संग्रह | | १९०३ | १९.५x११.५ | १४०-१४१ | लि. क. लिखमीचंद कोचर लि. स्था. बालाहेड़ा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२४५ | ११०८२ (१) | स्फुट-नुस्ख़ा-संग्रह | संग्रह कर्त्ता मेघराज बल़ाई | १८४३ | १८x१०.५ | १-६७ | पत्र खण्डित एवं जलाभिषिक्त लि. क. मेघराज बल़ाई लि. स्था. पाली गुटका प्रतिलिपि कर्त्ता का स्वयम् का ही है। |
| २२४६ | १२२१३ (२) | स्फुट-नुस्ख़ा-संग्रह | | गु० १८४७ | १२x१६.५ | ५-२३ | |
| २२४७ | ११५८३ (१६) | स्फुट-पद | रैदास | १८ वीं श० | १८x१५ | १६१-१६२ | |
| २२४८ | ११५८५ (८) २५, २८ | स्फुट-पद एवं दोहे | रूपचंद एवं अज्ञात | १६ वीं श० | १६.५x१५.५ | १५७; १६४ | |
| २२४६ | १२५६२ (६) १-३ | स्फुट-पद, कवित्त आदि | पूरणदास<br>देवीदास<br>तुलसीदास | १६ वीं श० | १४x१०.५ | १८०-१८३<br>१८३-१६१<br>१६१-१६२, १६३-१६५ | पत्र संख्या १६३ पर 'बावीस-अभक्ष वर्णन' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२५० | १२६१२ (१२) १-५ | स्फुट-पद, कवित्तादि | जुगतराम<br>ख्यालीराम<br>बिहारीदास<br>भूधरदास<br>अज्ञात | गु० १८१७-१८३६ | २५x१५ | ४५ वां<br>४६ वां<br>४७ वां<br>४८-४९<br>५०-५४ | पत्र संख्या ४९ - ५० पर 'विहरमान विनती', ५१ वें पर 'पार्श्वनाथ स्तुति' एवं ५२ वें पर 'श्रीपाल दर्शन' है। |
| २२५१ | १०९३६ (७) | स्फुट-पद, कवित्तादि | हरीदास<br>अज्ञात<br>पद्माकर | १९३४ | १२.५x८.५ | ३७४-३७५<br>४१५-४१६<br>४१९-४२१ | लि. क. चौकसराम<br>लि. स्था. बड़े रामद्वारे-चाँदपोल, जोधपुर |
| २२५२ | १२०६९ (३) | स्फुट-पद, कवित्तादि | वेणीदास<br>कवियण<br>अज्ञात | गु० १६६२ | १५.५x१४ | ३४, ३८, ५०, ५१<br>२४ वां<br>३४-५५ | पत्र संख्या ४२ - ४३ पर 'हनुमान-स्तुति' है।<br>पत्र संख्या ४६ पर रागों के नाम हैं। |
| २२५३ | १२५७० (२५) १-४ | स्फुट-पद, कुण्डलिया आदि | संग्राम<br>जनभावन<br>जगजीवन<br>रामदास | २० वीं श० | ९.५x६.५ | १५५-१५७<br>१५९-१६७<br>१६८ वां<br>१६९-१७० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२५४ | ११३१३ (४) | स्फुट-पद, दूहा-संग्रह | | गु० १८०२ | १५x१४ | १-७ | |
| २२५५ | १२६१२ (१८) | स्फुट-पद, बिनती आदि | रिखबदास | गु० १८१६ | २५x१५ | ६१-६३ | पत्र संख्या ६४ पर धर्मचर्चा का प्रारंभ मात्र है। |
| २२५६ | १२२०५ (५१) | स्फुट-पद-संग्रह | मीरां | १८ वीं श० | १७x११ | १३३ वां | "राधा मोहजोरी स्यांम खेलो होरी" |
| २२५७ | १०६०० (१२) | स्फुट-पद-संग्रह | नामदेव<br>रैदास | | १२x८.५ | ६४-६५<br>६५ वां | स्फुट नुस्खे व मंत्र भी हैं। गुटका अपूर्ण है। |
| २२५८ | ११४७७ (२) | स्फुट-पद-संग्रह | ब्रह्मानन्द | | २३.५x१६ | १-१० | लिपि गुजराती मोड़ लिए हुए है। पदों की भाषा भी गुजराती है। |
| २२५९ | ११५८३ (२४) | स्फुट-पद-संग्रह | जनहरिदास | गु० १६६३ | १८x१५ | २३८-२३९ | ग्रंत में संवत् १७४५ की घरेलू-याददाश्त है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२६० | १२२१७ (४) | स्फुट-पद-संग्रह | जिनरंग<br>केशवदास<br>परमानन्द<br>कासीराम | १६ वीं श० | २१.५x१२ | ७४ वां<br>७६ वां<br>७७ वां<br>७८-७६ | |
| २२६१ | १२२२६ (२०) | स्फुट-पद-संग्रह | तुलसीदास<br>मीरां<br>जनतुरसी | गु० १८७७ | १४x१२.५ | ६१४ वां | |
| २२६२ | १२३७० (४५) | स्फुट-पद-संग्रह | आनन्दघन | १८७८ | १६x११.५ | १५५-१५७ | लि. क. विनचद<br>लि. स्था. जोधपुर<br>पत्र संख्या १५८ पर लल-वाणी मानमलजी के पुत्र नवलमल का संवत् १८८१ का जन्म-लग्न है।<br>पत्र संख्या १५६ पर साहजी रामचन्द्रजी के पुत्र सकलचंद का जन्म-लग्न है। |
| २२६३ | १२३७८ (१) | स्फुट-पद-संग्रह | गोविन्ददास<br>सुन्दरविरहन | १८ वीं श० | २२x१५.५ | १-६ | बीच-बीच में संस्कृत के सुभाषित भी हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२६४ | १२३८० (६) | स्फुट-पद-संग्रह | बखना आदि | गु० १७२४ | २०x१४ | १३२-१३९ १४०-१४१ | पत्रों पर एक ओर ही लिखा गया है। |
| २२६५ | १२३८० (१५) १-३ | स्फुट-पद-संग्रह | कबीरदास<br>नापा<br>कान्हा | गु० १७२४ | २०x१४ | २०८, २१५-२१६<br>२०६-२१३<br>२१३-२१४ | |
| २२६६ | १२४१६ (२) | स्फुट-पद-संग्रह | परमानन्द<br>मीरां | गु० १९४३ | २५x१७ | ६४ वां<br>६५ वां | पत्र संख्या ६५ - ६६ पर 'महादेवजी री स्तुति' है। अगले पत्रों पर 'फूलजी-फूलमती की बात' का प्रारंभ मात्र किया गया है। |
| २२६७ | १२५७५ (३६-३७) | स्फुट-पद-संग्रह | रायचंद<br>प्रेमसागर | १९ वीं श० | १३x१४.५ | १०४ वां<br>१०५-१०६ | |
| २२६८ | १२६१२ (७) १-३ | स्फुट-पद, सवैया आदि | रूपचंद<br>बनारसी<br>भूधर | गु० १८१७-१८३६ | १५x१५ | २१ वां<br>२२,२८<br>२३-२४, २७-२८ | पत्र संख्या २८ पर संवत् १९१४ की गांव की आमदनी की टीप है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२६९ | १२३७० (२३) | स्फुट-पद, सवैया, कुण्डलिया | रतनचन्द | १९ वीं श० | १६x११.५ | २१६-२२०, २२१-२२४ | |
| | | | बनारसीदास | | | २२०-२२१ | |
| २२७० | १२५७० (५) १०-१३ | स्फुट-पद, साखी, कवित्तादि | जनरामा | २० वीं श० | ९.५x६.५ | ९ वां | पत्र संख्या १० पर ही गोपीचंद का कुण्डलिया है। |
| | | | रज्जब | | | १० वां | |
| | | | जनहरिदास | | | १०, ११ | |
| २२७१ | १२४२१ (२) १-१० | स्फुट-पद, साखी, सवंया, कवित्तादि | अज्ञात | गु० १८९३ | १७x१२ | ७२-७४, ७७-७८ | |
| | | | मुकंद | | | ७४-७५ | |
| | | | राघोदास | | | ७५ वां | |
| | | | सेवादास | | | ७५-७६ | |
| | | | जनतुरसी | | | ७६, ७८ | |
| | | | जगंनाथ | | | ७७, ८०, ८२ | |
| | | | सुन्दरदास | | | ७७, ८८, ९० | |
| | | | किशनदास | | | ७८ वां | |
| | | | गोपाल, जगजीवन | | | ७९ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२७२ | १२४२१ (२) ११-२० | स्फुट-पद, साखी, सवैया, कवित्तादि | रज्जब, बिसनदास | गु० १८९३ | १७x१२ | ८० वां | |
| | | | जनतीजो, कृष्णदास | | | ८१ वां | |
| | | | बालकराम | | | ८१,८७-८८ | |
| | | | कबीर | | | ८३, ८९ | |
| | | | मोहनलाल | | | ८३ वां | |
| | | | देवीदास | | | ८४ वां | |
| | | | खेमदास | | | ८५ वां | |
| | | | चतुरदास | | | ८६ वां | |
| २२७३ | १२४२१ (१६) १-६ | स्फुट-पद, साखी, सवैया, कवित्तादि | जनभगवान | गु० १८९३ | १७x१२ | २४३ वां | |
| | | | जगंनाथ | | | २४४, २४५ | |
| | | | रज्जब | | | २४४ वां | |
| | | | जनतुरसी | | | २४६ वां | |
| | | | माधोदास | | | २४६, २४७ | |
| | | | सुन्दरदास | | | २४७, २५१ | |
| २२७४ | ११९७३ | स्फुट-पद होली आदि | नारायण | २० वीं श० | १६.५x१० | १-४ | |
| २२७५ | ११३२४ | स्फुट-रेखता | | १९ वीं श० | २२.५x१५.५ | २८-३४ | राधा-कृष्ण परक २८ रेखते हैं । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२७६ | ११६४८ (२८) | स्फुट-रेखता, कवित्त संग्रह | रूपराम | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ५७५-५७६ | गुटके में संत व नाथ-साहित्य का दुर्लभ संग्रह है। |
| २२७७ | १२०६६ | स्फुट-रोग एवं नुस्खा संग्रह | | गु० १६६२ | १५.५x१४ | ३२-५२ | पत्र एक-ओर लिखे हैं। |
| २२७८ | ११५८५ (८) ३१-३२ | स्फुट-सज्झाय एवं पद | राजसमुद्र<br>आनन्दघन | १६ वीं श० | १६.५x११.५ | १६६-१६७ | |
| २२७९ | १०८५० (१) | स्फुट-सबद-संग्रह | रामदास | गु० १८६६ | १७x१०.५ | १-६ | लि. क. खण्डूराम<br>लि. स्था. कोटा |
| २२८० | १२५६१ (१)१-६ | स्फुट-सबद-संग्रह | दासहरिया (हरिदास)<br>भीखजन<br>आतमराम<br>रामचरण<br>जनरामा<br><br>द्यालवाल | २० वीं श० | १५.५x१० | १-२<br>२-४<br>४-६<br>६ ठा<br>७-१२,<br>१४-१५<br>१६ वां | |
| २२८१ | १०६४५ (३)१० | स्फुट-सबद-संग्रह | अनेक संतों के | १६ वीं श० | १४.५x७.५ | ३३८-३६० | संग्रह-सवैया, कवित्त, दोहा, मनहर-छंद आदि में है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२८२ | १०६४४ (६)१५ | स्फुट-सवैया | केसोदास | २० वीं श० | ८x५ | ३०२-३०४ | |
| २२८३ | १२२१७ (४) | स्फुट-सवैया, कवित्त-संग्रह | मोहनविजय | १९ वीं श० | २१.५x१२ | ६९-७१, ७३ | |
| | | | कविगंग | | | ८१ वां | |
| | | | अज्ञात | | | ७५,८०-८१, ८२-८३ | |
| | | | वनारसीदास | | | ८७-८९ | |
| | | | मुकंदकवि | | | ९१-९२ | |
| | | | विहारी | | | ९३ वां | |
| | | | हरिनाथ | | | १०१ वां | |
| २२८४ | १०८६१ (७) | स्फुट-सवैया, कवित्त | | १९ वीं श० | १६x१२ | ९९-१०३ | |
| २२८५ | ११६४८ (९) | स्फुट-सवैया, कवित्त, रेखता | | गु० १८५३ | २७x१६.५ | ३४५-३४७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२८६ | १२२१७ (२) | स्फुट - सवैया, सुभाषित, समस्यापूर्ति एवं नुस्खा-संग्रह | कविगंग, मनराम<br>लालकवि<br>बनारसी,<br>केसोदास आदि | १६ वीं श० | २१.५x१२ | १३-२३<br>२६-२७<br>३५-३८<br>४५-५१,<br>५४ | पत्र संख्या २३ से २५ पर 'सोमोत्पत्ति परिशिष्ट' संस्कृत में है। पत्र संख्या २७ से ३४ पर संस्कृत में सुभाषित एवं स्तुति है। गुटके में भाषा व संस्कृत पद्यों को एक-साथ लिख दिया गया है। |
| २२८७ | १०८६६ (१२) १-३ | स्फुट-साखी | रज्जब<br>जगजीवन<br>कालू | गु० १६२७ | ८.५x७ | ५३७-५३८<br>५४२ वें<br>५३६-५४१<br>५४१ वां | |
| २२८८ | ११०६२ (१०) | स्फुट-साखी | कबीरदास | गु० १८३६ | १८x१०.५ | १६३-१६४ | |
| २२८६ | १२५६१ (८,१०,१७) | स्फुट-साखी | सेवादास<br>कबीरदास<br>जनगुरसी | २० वीं श० | १५.५x१० | ५२ वां<br>५४-५५<br>५४-६५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२६० | १२५८१ (८) १-१३ | स्फुट-साखी, पद, कवित्तादि | माधवदास | १९ वीं श० | १६x१०.५ | ५१ वां | |
| | | | रज्जब | | | ५२-५३ | |
| | | | अज्ञात | | | ५३ वां | |
| | | | सेवादास | | | ५४ वां | |
| | | | जनरूपदास | | | ५४-५६, ६८ वां | |
| | | | हरिराम | | | ५६-६४ | |
| | | | समन | | | ६४ वां | |
| | | | तुलसीदास | | | ६५ वां | |
| | | | कबीर | | | ६६ वां | |
| | | | सेखबहावदी, सुन्दरदास | | | ६७ वां | |
| | | | कानड़, मीरां | | | ६९ वां | |
| २२६१ | ११६४८ (२) | स्फुट-साखी, पद-संग्रह | दादूदयाल | १९ वीं श० | २७x१६.५ | १-४ | पत्र जीर्ण हैं। |
| २२६२ | १२५८१ (२) | स्फुट-साखी-संग्रह | अहमद आदि | १९ वीं श० | १६x१०.५ | १४-२८ | |
| २२६३ | १२५७५ (८,१०,१२) | स्फुट-सैद्धान्तिक बोल-संग्रह (जैन) | | १९ वीं श० | १३.५x१४ | १७-२०, २२-२८, २९-५१ | |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२६४ | ११०१३ (३) | स्फुट-शृङ्गारिक प्रहेलिका-संग्रह | दलपति<br>विप्रभान<br>पिंगल<br>शुभसागर<br>वृन्द | गु० १८२५ | २३x१५ | ७०-७१ | दोहा, कवित्त, सवैया वद्ध। आगे के पत्रों पर भी गूढार्थ एवं पहेलियां हैं।<br>पत्र सं. ७४ पर कुण्डलिया है। |
| २२६५ | १२२१८ (५)१०८ | स्वयंभू-पार्श्वनाथ स्तवन | हर्षकुशल | १८ वीं श० | २६.५x१० | १२२ वां | |
| २२६६ | १२३८० (८) | स्वयंवर (सीता का) | नन्ददास | गु० १७२४ | २०x१४ | १२६-१३१ | |
| २२६७ | ११८२२ | स्वरज्ञान | चरनदास | १६ वीं श० | ११.५x८.५ | १-१० | स्वर-चलने के आधार पर शकुन विचार है।<br>जेबी डायरीनुमा है। |
| २२६८ | १२५५६ (२) | स्वरूप-निर्णय भाषा | | गु० १८०५ | २१x१४ | ६८-६१ | पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ। |
| २२६९ | १२२०४ (३) | स्वरोदय | चरनदास | १८६३ | १७x१५.५ | २६-४० | लि. क. फतेचंद<br>लि. स्था. अवंतिका नगरे |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३०० | १२२२६ (६) | स्वरोदय | | १८७९ | १४x१२.५ | ३२-४१ | लि.क. वीरमदास निरंजनी<br>लि. स्था. कैरूं (जोधपुर) |
| २३०१ | १२२०४ (२) | स्वरोदय-शास्त्र-तत्वज्ञान | | गु० १८५८ | १७x१५.५ | २६-२९ | |
| २३०२ | १०९८४ | हंसराज-वच्छराज चौपई | जिनोदयसूरि | १९ वीं श० | २५.५x१२ | १-२४ | र.का. १६८०<br>पत्र चिपके हुए हैं। |
| २३०३ | १२५६८ (३४) | हंसराज-वच्छराज चौपई | जिनोदयसूरि | १८५९ | १८.५x१२.५ | १-५३ | र.का. १६८०। कीटविद्ध।<br>संवत् १८३० की पूर्व प्रति से प्रतिलिपि कृत।<br>लि. स्था. ग्राम मांडावास |
| २३०४ | १०८६९ (९)१५ | हनुमन्नाटक-पद्यानुवाद | अज्ञात | गु० १९२७ | ८.५x७ | ४७१-४७२ | मनहर छंद में कुछ श्लोकों का अनुवाद है। इनके बाद जगन्नाथ कृत स्फुट सवैये हैं। |
| २३०५ | १०६४४ (६)२१ | हरचंद (हरिश्चन्द्र) की लावणी | सूरदास | २० वीं श० | ८x५ | ३४३-३४५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३०६ | १०६२४ (१६) | हरचन्द (हरिश्चन्द्र) सत | ध्यांनदास | १६ वीं श० | २३.५x१२.५ | ५७२–५८७ | |
| २३०७ | १२४२१ (१३) | हरचन्दसत | ध्यांनदास | गु० १८६३ | १७x१२ | १६३-२१४ | |
| २३०८ | १२३७३ (२०-२२) | हरबोल-चितावणी | सुन्दरदास | २० वीं श० | २२x१५.५ | पृ० २१४–२१५<br>२१५-२१६ | इसीके आगे 'तर्क चितावणी' तथा 'विवेक चितावणी' है। पृ० संख्या २१६-२२५ पर दो संस्कृत कृतियां हैं। |
| २३०९ | १२३७५ (२-४) | हरबोल-चितावणी | सुन्दरदास | १६ वीं श० | ११x१६.५ | ४७६–४८०<br>४८०–४६०<br>४६०–४६७ | <br>'तर्क चितावणी'<br>'विवेक चितावणी' |
| २३१० | १०६३० (३) | हरिचन्दसत | ध्यांनदास | १६ वीं श० | १५.५x१२ | १-४७ | सर्व सबद ३४० |
| २३११ | ११००२ | हरिचन्दसत | ध्यांनदास | १६ वीं श० | २१.५x११ | १-२४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३१२ | १२४२० (१) | हरिचंदसत | ध्यांनदास | २० वीं श० | १६x१४ | १-३४ | पत्र संख्या ३४-३५ पर मीरां के पद हैं। |
| २३१३ | १२५७४ (१२) | हरिचंदसत | ध्यांनदास | २० वीं श० | १७x१०.५ | २५७-२६४ | |
| २३१४ | १२४२१ (१३) | हरिचंदसत | ध्यांनदास | १९ वीं श० | १७x१२ | १९३-२१४ | |
| २३१५ | १२२२६ (२८) | हरिचंदसत | ध्यांनदास | १८८२ | १४x१२.५ | ६७६-७०६ | |
| २३१६ | ११०८७ (७) | हरिचरणां री महिमा | | गु० १७९३ | २१.५x१५.५ | १२१ वां | |
| २३१७ | १०८३९ (१०) | हरिजस | दी. दरवेश | १९०९ | ३२x१७.५ | १-४७ | ग्रंत में स्फुट सवैये तथा 'हरिगीता-छंद' दिया हुआ है। लि. स्था. जोधपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३१८ | ११५८३ (१६) | हरिदासजी का चन्द्रायणा एवं पद-संग्रह (वाणी) | जनहरिदास | १८ वीं श० | १८x१५ | १३८-१४६ १४६-१५६ | अमरदास ईश्वरदास पठनार्थ। अंत में संवत् १७३८ की याददाश्त है। |
| २३१९ | १०९६६ | हरिदासजी की वाणी | जनहरिदास | २० वीं श० | २५.५x१२.५ | १-३९ | |
| २३२० | १२२२६ (१५) | हरिदासजी की वाणी एवं कृति-संग्रह | जनहरिदास | १८७७ | १४x१२.५ | १-२९९ | पत्र संख्या २९९ पर अमरदासजी का, पत्र संख्या ३०० पर हरिदासजी का, पत्र सं. ३०१ पर मंगलदासजी का, पत्र संख्या ३०२ पर वनमालीदासजी का चित्र है। लि. क. वीरमदास निरंजनी लि. स्था. कैरू (जोधपुर) |
| २३२१ | १२४२२ (२) | हरिदासजी की वाणी एवं कृति-संग्रह | जनहरिदास | गु० १८३१ | १५x१०.५ | १-१९३ | लि. क. ऊगमदास लि. स्था. डीडवाणा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३२२ | ११००३ (२) | हरिदासजी की साखी | जनहरिदास | १६ वीं श० | २६.५x१४.५ | ४-३३ | पत्र चिपके हुए हैं। |
| २३२३ | १२५५३ (४) | हरि-नाम-प्रताप | दामोदर | गु० १८६७ | १४.५x१३.५ | ११२-११६ | |
| २३२४ | १०६०२ (६) | हरिबोल-चितावणी | सुन्दरदास | गु० १८०६ | १५.५x१२.५ | ५२-५४ | |
| २३२५ | १२३२६ (७) | हरिवोल-चितावणी | सुन्दरदास | २० वीं श० | २३x६.५ | ३७६-३८० | |
| २३२६ | ११०८६ (६) | हरिरस | ईसरदास बारठ | १६ वीं श० | १८.५x१६.५ | ८८-१०१ | २६४ छंद हैं। |
| २३२७ | १२४२० (६) | हरिरामदासजी का छुटकर सबद | जनहरिया | २० वीं श० | १६x१४ | २१-११८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३२८ | १२५७१ (३)२ | हरिरामदासजी री वाणी (गग्घर निसाँणी) | जनहरिया शिष्य जैमलदास | १९ वीं श० | १०.५x८ | ५३-१४७ | |
| २३२९ | १२५९१ (२५) | हरिरामदासजी री वाणी | जनहरिया | २० वीं श० | १५.५x१० | १३२–१३४ | प्रारंभ मात्र है। |
| २३३० | १२५७१ (३)१-५ | हरिरामदासजी के सबद एवं कृति-संग्रह | जनहरिया | १९ वीं श० | १०.५x८ | ५३-१२८ | अंगबद्ध। |
| | | | | | | १२८–१३५ | पद-बत्तीसी |
| | | | | | | १३६–१४३ | गग्घर-निसाँणी |
| | | | | | | १४४–१४६ | प्रश्नोत्तर |
| | | | | | | १४६–१४७ | पद |
| २३३१ | ११००९ | हरिवंश-प्रबन्ध (ढाल-संग्रह) | गुणसागर सूरि शिष्य प्रेमसागर | १७८३ | २६.५x१० | १-९६ | र. का. १६७२ 'मास सावण सुद तीज' र. स्था. कुकुटेश्वर नगरे लि. क. चैना— कनकादे प्रसादात् पत्र संख्या ७६-८४ अप्राप्त। पत्र जीर्ण। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३३२ | ११०९२ (८) | हालीपावजी की सबदी | हालीपाव | गु० १८३६ | १८x१०.५ | १९१-१९२ | नाथ-साहित्य । |
| २३३३ | ११५४८ (३४) | हिंगुलाजदेवी-गीत | | १८ वीं श० | १९.५x१६ | २३२ वां | |
| २३३४ | १२२१८ (५)११९ | हित-शिक्षा-सज्झाय | विजयभद्र | १८ वीं श० | २६.५x१० | १३२-१३३ | |
| २३३५ | १२३७१ (२) | हितोपदेश कथा | मू० विष्णुशर्मा | १८३५ | १८.५x१६.५ | १००–१४१ | लि. क. भीखनदास गौड़ लि. स्था. अहिपुर (नागोर) |
| २३३६ | ११९८८ | हितोपदेश पञ्चाख्यान सभाषा-सहित | मू० विष्णुशर्मा | १९ वीं श० | २३.५x१६ | १-७० | अपूर्ण— विग्रहभेद कथा तक । |
| २३३७ | १२५७६ | हितोपदेश पञ्चाख्यान भाषा | मू० विष्णुशर्मा | १९ वीं श० | २१x१५.५ | १-५० | अंतिमांश अप्राप्त । प्रति जेठमल आसोपा की । |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३३८ | ११०६० (३) | हितोपदेश भाषा | | १६ वीं श० | १४.५x११ | ७८-३४३ | अपूर्ण । गुटका दीमकग्रस्त । पत्र संख्या ३३६ वें के वाद पत्र गुटके से अलग हो गए हैं । |
| २३३९ | १२१५८ | हितोपदेश भाषा | | १६ वीं श० | २५x११.५ | १-१३ | विग्रह-कथा मात्र । |
| २३४० | १२२१८ (५)६ | हीरविजयसूरि-सज्झाय | भक्तसेन शिष्य विजयसेनसूरि | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३१ वां | अंत में हर्षकुशल का एक पद है । |
| २३४१ | १२२१८ (५)१५ | हीयाली (प्रहेलिका) | | १८ वीं श० | २६.५x१० | ३४ वां | |
| २३४२ | १२३२० (५४) | हीयाली-संग्रह | मुनि जयमल | गु० १८२७-१८४७ | २१.५x१४.५ | ३६ वां | पत्र संख्या ३६ - ४० पर साध्वी सरूपा जिसके लिए गुटका लिखा गया है, उसी के हाथ का लिखा पत्र है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३४३ | १०८६१ (३) | हेमदासजी रा सबद | हेमदास शिष्य लालजी | १९ वीं श० | १६x१२ | ९-२६, ३४-४५, ५०-६६, ६७-७४ | गुटके के बीच-बीच में इन्हीं के 'सबदों' को लिखा गया है। |
| २३४४ | १२१९९ (४) | होलिका-पर्व री कथा | | गु० १८७५ | २७x१४ | ३०-३१ | लि. क. केशरीसागर<br>लि. स्था. फलोदी |

ग्रन्थाङ्क १०६८९ से १२६१२ तक का विवरण समाप्त।

ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १०६८८ तक के
हिन्दी ग्रन्थों तथा अवशिष्ट राजस्थानी
ग्रन्थों का विवरण :—

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३४५ | ९५५६ (७) | अगध-मंगल | कबीरदास | १९ वीं श० | २२.५x१०.५ | २६-३३ | |
| २३४६ | ८४०० (३७) | अजितनाथ-स्तवन | पाश(पार्श्व)चन्द सूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ७९-८० | |
| २३४७ | ९२४८ | अटलविहारीजी की ब्याह-बत्तीसी | राय अमृतराम | १९ वीं श० | १९x१२.५ | १–१२ | |
| २३४८ | ८४२२ (३३) | अनाथी-मुनि-सज्झाय | समयसुन्दर | गु० १७७६ | २३x२० | ९९ वां | |
| २३४९ | १०६८५ (३) | अनेकार्थ-नाममाला | नन्ददास | १९३८ | २५.५x१६ | ७०-७४ | अपूर्ण। अंतिम पत्र पर 'तलवार-शुभ - अशुभ देखने का विचार' है। |
| २३५० | ८९८८ | अनेकार्थ-मञ्जरी | नन्ददास | १९४७ | २६x११.५ | ८ वां | लि. क. टेकचन्दात्मज सुखलाल<br>लि. स्था. प्रतापगढ़ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३५१ | ६२५० | अनेकार्थ-मञ्जरी | नन्ददास | १६ वीं श० | २७.५x२० | १-१६ | |
| २३५२ | ६२३३ | अमृत-पद-मुक्तावली | राय अमृतराम | २० वीं श० | २०.५x२२ | ३-६८६ | रागबद्ध। र. का. १८६६ पत्र संख्या २४ - ६८६ तक जीर्ण एवं त्रुटित। पत्र संख्या १-२ व १५१ वां अप्राप्त। पत्र संख्या ५७ - ५८ वें दो-बार। |
| २३५३ | ६२६६ | अमृत-पदावली | राय अमृतराम | १८७० | २५.५x१८.५ | २-८४ | पत्र खण्डित। पत्र संख्या १, २१, ३१, ४५, ५५, ६५, ७३-७४ व ७६ वें अप्राप्त। |
| २३५४ | ८०१७ | अमृतसागर | महाराजा सवाई-प्रतापसिंह कारित | १९ वीं श० | २०.५x१३ | १-२८६ | आयुर्वेदिक ग्रन्थ है। अपूर्ण। पत्र २७८ वां अप्राप्त। पत्र संख्या २८२-२८३ वें दो बार। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३५५ | १०५०२ | अमृतसागर | सवाई-प्रतापसिंह कारित | २० वीं श० | २१.५x१३.५ | २-१७३ | आयुर्वेदिक ग्रन्थ । अपूर्ण । पत्र संख्या ५७ से ७३ खण्डित । |
| २३५६ | १०१८१ | अवतारचरित्र | नरहरिदास बारठ | १८६५ | ३१x२४ | १-४३२ | लि. क. ब्राह्मण गंगाविष्णु, ज्ञाति गुर्जरगौड़, गौत्र सुरतान्यां जोशी । वास्तव्य—लोचनपुर । |
| २३५७ | ८५८४ (३) | अवतारमाला नी गरवी | जीवनलाल नागर | २० वीं श० | २२x१७.५ | ४०-४२ | र. का. १९१४ र. स्था. बूँदी समकालीन प्रति है । पत्र त्रुटित । |
| *२३५८ | ७८६० | अलंकार-कलानिधि | श्रीकृष्णभट्ट-कवि कलानिधि | १९ वीं श० | २१.५x१६ | १-१९२ | पत्र संख्या १३३-१३८ तक अप्राप्त । प्रारंभ में 'गीत-प्रबन्धाध्याय' के ८ पत्र हैं । कवि लाल के आग्रह से सवाई-जयसिंह के समय में निर्मित । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२३५९ | १०६८५ (१) | अलंकार-रत्नाकर | दलपतिराय एवं बंशीधर | २० वीं श० | २५.५x१६ | १-६६ | र. का. १७९८ पत्र संख्या ५९ - ६६ पर 'भाषाभूषण' नाम से अलंकारों के मूल-लक्षण दिये गये हैं। |
| २३६० | ९२६० (४) | अश्वलक्षण | | १९ वीं श० | २०x१४ | ३४७-३६८ | प्रारंभ के २९ छन्द अप्राप्त। पत्र संख्या ३४९ - ३५२ व ३६४ वां अप्राप्त। |
| २३६१ | ८४०४ (२) | अष्टप्रकारी-पूजा | मुनि देवचंद | १९ वीं श० | २०x१३ | ७-११ | पत्र चिपके हुए हैं। |
| २३६२ | ८४०० (३९) | आदिजिन-गीत | मुनि देवचंद | १९ वीं श० | १६x१३.५ | ८३-८५ | |
| २३६३ | ८४०० (३४) | आदिजिन-गीत | करमसिंह | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ७३ वां | |
| २३६४ | ८४०० (४३) | आदिजिन-गीत | मुनि देवचंद | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८५-८६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३६५ | ८४२२ (१४)१-२ | आदिजिन-स्तोत्र | गुणसागर | गु० १७७६ | २३x२० | ७७-८० | |
| २३६६ | ८४२२ (१, ५) | आदित्यवार कथा (जैन) | | गु० १७७६ | २३x२० | १८-२० | अपूर्ण—प्रारंभ के १७ पत्र अप्राप्त। |
| | | आदित्यहृदय स्तोत्र | | ,, | ,, | २८-३७ | कृति संस्कृत में है। |
| २३६७ | ८६२८ (१-१२) | आरती-संग्रह (१२ आरतियां) | | २० वीं श० | २३x१४ | १-१४ | पत्र संख्या १४-२२ पर संस्कृत में जैन स्तोत्र हैं। |
| २३६८ | ८८५७ (२) | इतिहाससार-समुच्चय-भाषा | गुसाईं जुगतानन्द शिष्य चरणदास | १९ वीं श० | १९x१४ | १-१८३ | |
| *२३६९ | ८२३६ | इतिहाससार-समुच्चय-भाषा | लालदास पुत्र ऊधोदास | १८५५ | २५.९x१३ | १-४२ | र. का. १६४३ लि. क. रामजीदास लि. स्था. नागपुर(नागोर) बखततड़ाग तीरे। कश्मीरी पत्र। |
| २३७० | ९९४१ | इतिहाससार-समुच्चय-भाषा | लालदास | १८ वीं श० | २५x१३ | १-५६ | र. का. १६४३, किंचित अपूर्ण। ३२ वें अध्याय के २५ व श्लोक तक। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३७१ | १०१९६ | इन्द्रजाल-भाषा | | १९०९ | ३८x१८.५ | १–४८ | चौरासी तन्त्रों के आधार पर मंत्र-तंत्र संग्रह है। प्रथम दो पत्र खण्डित हैं। |
| २३७२ | ८४२२ (३१) | इलापुत्र-सज्झाय | लब्धिविजय | गु० १७७६ | २३x२० | ९८ वां | |
| २३७३ | ९६८१ (२) | इश्कचमन रा छुटकर दूहा | | १८९६ | २४x११.५ | ८–९ | लि. स्था. फलवर्धिका (फलोदी) अंत में सुभाषित दोहा-संग्रह है। |
| २३७४ | ९३१५ (१-२) | इश्कलता | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | १८x१३ | ६+६=१२ | कृति पंजाबी मिश्रित भाषा में है। र. का. १८२७ महाराजकुंवर गोपालसिंह हित रचित। |
| २३७५ | ९७२० (५) | इश्कलता | रसराशि | १९ वीं श० | २०x१५.५ | १४-१६ | अपूर्ण। |
| २३७६ | ८४२७ (४) | उपदेश-चितावणी | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १०.५x७ | २९–४५ | पत्र संख्या ४५ से ५४ तक दादू, सेवादास के स्फुट-पद, साखी, सवैया आदि हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३७७ | ९०८८ (५) | उपदेश-छत्तीसी | जिनहर्ष | १९५६ | २२.७x१४ | १६-२९ | लि. क. मोहनकीर्त्ति लि. स्था. लाखोला ग्राम र. का. १७१३ 'संवत गुण शशि भक्ष' |
| २३७८ | ८५६२ (१३)३ | ऐतिहासिक टीप (विगत) | | गु० १७९९ | २९.५x१५.५ | ७ वां (ब) | संवत् १७९९ में किसन-विलास में शक्तावत सूरत-सिंहजी के पुत्र प्रताप्रसिंहजी की हत्या की विगत है । |
| २३७९ | ८४०० (३९) | ऋषभदेव-गीत | समरचन्द सूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८१-८२ | |
| २३८० | ८४२२ (२३) | ऋषभदेव-स्तवन | गुणसागर सूरि | गु० १७७६ | २३x२० | ८९-९० | |
| २३८१ | ९३२७ (३) | कंठाभरण की वचनिका | भोलानाथ | १९ वीं श० | २८x१८.५ | ३२-३४ | स्फुट पत्र। |
| २३८२ | ९२२८ (७) | कबीर-गोरख-गोष्ठी | | १८४१ | २६.५x१४.५ | ४०-४३ | पत्र संख्या ४४ पर षट्-शास्त्र सम्मत पद्य हैं । पत्र संख्या ४५ पर कबीरदास की वाणी का अंश है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३८३ | ८५६१ (१) | कबीरदासजी री परची | अनन्तदास | १७५४ | २१.५x१६ | ९–१४ | पत्र संख्या १ से ८ अप्राप्त। प्रारंभ के पत्र त्रुटित। |
| २३८४ | ८५६१ (२) | कबीरदासजी की वाणी | कबीरदास | १७५४ | २१.५x१६ | १५-६६ | ३३ वां पत्र अप्राप्त। लि. क. रूपदास लि.स्था. करवर ग्राम(बूँदी) पत्र जीर्ण। |
| २३८५ | ९७३२ (१) | कबीरदासजी की वाणी | कबीरदास | १९ वीं श० | १७x१२.५ | १-२० | काया की, द्वादशपंथ की, करम की, प्रबोध की, अक्षर-खंड की रमेनी है। |
| २३८६ | ८००३ | कबीरदासजी का सबद एवं पद-संग्रह | कबीरदास | १९ वीं श० | २८x१४.५ | १-१०४ | प्रति में दो प्रकार के पत्र हैं। लि. क. किसनदास लि. स्था. जोधपुर |
| २३८७ | ९२२८ (६) | कबीरदासजी की साखी (कबीर-धर्मदास-संवाद) | कबीरदास | गु० १८४१ | २५.५x१४.५ | ३३-४० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ -नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३८८ | ८५६२ (५)११ | कबीरदासजी की साखी | कबीर | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ७४ वां (ब) | |
| २३८९ | ८५६२ (५)८ | कमलकुंवर बाईसा रो गीत | | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ९३ वां (अ) | महाराणा अमरसिंह द्वितीय के साथ संवत् १७६७ वि. में सती होने का गीत। |
| २३९० | ८४२२ (३९) | कर्म-सज्झाय | हीरानन्द सूरि | गु० १७७६ | २३x२० | १०४-१०५ | |
| २३९१ | ९०८८ (३) | कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषा | बनारसीदास | १९५६ | २२.८x१३.५ | ३-८ | लि. क. मोहनकीर्त्ति लि. स्था. लाखोला ग्राम |
| २३९२ | ८४०४ (६)१ | कल्याण-राग रा दूहा | | १९ वीं श० | २०x१३ | ५७ वां | |
| २३९३ | ८४०४ (६)२ | कल्याण-स्तवन | कुशालराय | १९ वीं श० | २०x१३ | ५७ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३९४ | ६८३४ (२) १-७ | कवित्त अमरसिंह का आदि | कविगद<br>मोहन<br>केहरि<br>नयन | १८४५ | १२x१५ | २-३<br>६ ठा<br>७ वां<br>८-२०<br>२१ वां | पत्र संख्या ४ पर गिरधर कविराय के कुण्डलिया है। पत्र संख्या ५ पर मीरां के पद हैं। पत्र संख्या ४-५ पर रेखा-चित्र हैं। |
| २३९५ | ६२६० (३)२ | कवित्त गुजरात की रसोई को | | १९ वीं श० | २२x१४ | २८७ वां | |
| २३९६ | ६२६० (१)१२-१४ | कवित्त जयसिंहजी को तथा कुण्डलिया आदि संग्रह | कविनोने<br>गिरधर कवि<br>गंगकवि | १९ वीं श० | २२x१४ | २९२-२९४ | पत्र संख्या २९४-२९७ पर दोहा-संग्रह है। |
| २३९७ | ६२६० (१)१-६ | कवित्त, दोहा-संग्रह | मुरलीदास<br>बनारसीदास<br>सुन्दरदास<br>अज्ञात<br>अकबरशाह<br>गिरधर कविराय | १९ वीं श० | २२x१४ | २८१-२८७ | पत्र संख्या २८४ पर 'गणेश जी की स्तुति' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २३९८ | ६७२८ (४, ६) | कवित्त, दोहा-संग्रह | हरलाल | १९ वीं श० | २१x१७ | १७-१९ २१-२२ | ७ दोहे हैं। महाराजा तखत-सिंहजी रा कवित्त। |
| २३९९ | ६८३४ (७) | कवित्त, दोहा-संग्रह | वेहरि | गु० १८४५ | १२x१५ | ३३-६० | पत्र संख्या ३२-३३ पर पुराणों की संख्या का विवरण है। |
| २४०० | १०२४७ (२) ३ | कवित्त नायिका री वोहतर कला रो | कविग्यांन | गु० १८८३ | १६x१२ | २६-२९ | पत्र संख्या २९ पर ही कवि गद कृत कवित्त हैं। |
| २४०१ | ९२६० (१) १५ | कवित्त-पद्य-संग्रह | कवि केसो | १९ वीं श० | २२x१४ | २९७-२९८ | सूरजमलजी आदि के कवित्त। |
| २४०२ | ९२६० (१) १६ | कवित्त बरसाना की राड़ को | कवि केसो | १९ वीं श० | २०x१४ | २९९-३०० | नवलसिंह जाट को। |
| २४०३ | ७८७६ | कवित्त राजनीति रा | देवीदास | २० वीं श० | ३४.५x२२ | १-९ | कवित्त संख्या ७६ हैं। अंत में १२५ उपदेशात्मक वाक्य हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४०४ | ६७२८ (२) | कवित्त राजनीति रा | देवीदास | १९ वीं श० | २१x१७ | ७-१४ | पत्र संख्या १-७ पर 'मदनाष्टक' है। |
| २४०५ | १०२४७ (२)१ | कवित्त रामसिंहजी रो | | गु० १८८२ | १६x१२ | ७-८ | पत्र संख्या ७ पर 'जोगीगीत' है। |
| २४०६ | ६८८६ | कवित्त-रामायण | कवि चन्द | २० वीं श० | २३.५x१४ | १४ | |
| २४०७ | ६२६० (१)७-११ | कवित्त-पद्य-संग्रह | केसोदास, बुधराव, काशीराम, कवि गोकुल | १९ वीं श० | २२x१४ | २८८-२९२ | राग-रागिनियों के नाम आदि के कवित्त । |
| २४०८ | ८८५७ (१)४ | कवित्त-संग्रह | जुगतानन्द | १९ वीं श० | १९x१४ | १५०-१६३ | ६८ कवित्त हैं। |
| २४०९ | ६८८६ (२) | कवित्त-संग्रह | भूषण, भोलानाथ, रघुराय आदि | १९ वीं श० | १५x१० | ६-२० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४१० | ९२९८ | कवित्त-संग्रह | वद्रीजन | १८ वीं श० | १७x१२ | १-२६ | कुल ६० कवित्त हैं। कवि का नाम अंतिम पत्रों के कवित्त-सवैयों में दिया गया है। |
| २४११ | १०६७९ (१) | कवित्त-संग्रह | रामलाल जोशी | २० वीं श० | १५.५x११ | १-७ | इस गुटके में इन्हीं की कृतियां संगृहीत हैं। |
| २४१२ | १०२४७ (२)२ | कवित्त-संग्रह | | गु० १८८२ | १६x१२ | २३-२४ | कवित्त में जयपुर राज्य का रजाई से व मुग़ल बादशाही का चादर से रूपक बांधा गया है। |
| २४१३ | ९७२८ (५) | कवित्त-संग्रह | पद्माकर | १९ वीं श० | २१x१७ | १९-२१ | |
| २४१४ | ९३३७ (४) | कवित्त, सवैया-संग्रह | शोभाराम तिवारी, हरिवल्लभ | १८ वीं श० | १९.५x१३ | २३-२८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४१५ | ६४३१ (२) | कवित्त, सवैया-संग्रह | घनानन्द | १७८६ | २१x१५.५ | १-३७ | अंतिम पत्र में स्फुट सुजान हित कवित्त-छन्द है । |
| २४१६ | ६७२८ (७) | कवित्त, सवैया-संग्रह | | १६ वीं श० | २१x१७ | २३-२६ | |
| २४१७ | १०१४६ (१)१-१२ | कवित्त, सवैया-संग्रह | कृपाराम, घनानन्द, उधोराम, कासीराम, देवीदास. विहारी, सुन्दरदास, भूषण, सूरजमल, लालकवि, नाथकवि, जसराज | १६ वीं श० | २१x१२.५ | १-३४ | कुल २८० कवित्त हैं । छत्रसाल, शिवाजी, मानसिंहजी, बुधसिंह हाडा, आदि के प्रशस्तिपरक कवित्तों के साथ - साथ शृङ्गारिक कवित्त भी हैं । पत्र संख्या ३५ - ३६ पर संस्कृत में 'जगन्नाष्टक' है । |
| २४१८ | ६२३६ | कवित्त, सवैया-संग्रह | राय अमृतराम | १६ वीं श० | २७x१६ | १-२५ | र. का. १८६६ कुल ३४ कवित्त हैं । |
| २४१९ | ६२६० (१)१६ | कवित्त सिक्खां की लड़ाई फतै करी जीं को | कवि केसो | १६ वीं श० | २२x१४ | १६६-३०० | नवलसिंह जाट को कवित्त । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४२० | ८५६२ (१३)२ | कवित्त (स्फुट) | | गु० १७६५ | २४.५x१५.५ | ५ वां (व) | |
| २४२१ | १०५६३ | कविप्रिया | केशवदास | १९ वीं श० | २३x११ | १-२६ | ६३ वें छन्द पर्यन्त । |
| *२४२२ | १०१५० (१) | कविप्रिया | केशवदास | गु० १७८५ | २१x१६ | १-१८ | र. का. १६५८<br>छन्द संख्या ७६ से प्रारंभ । |
| २४२३ | १००५९ (४) | कलिजुग-पच्चीसी | नन्दराम पुत्र बलराम | १८११ | २६.५x१८ | १०७-१०९ | र. का. १७४४<br>लि. क. बखतराम चाटसूका<br>लि. स्था. बुपोई |
| २४२४ | ८००८ | कार्तिक माहात्म्य भाषा-टीका | भगवानदास निरंजनी | २० वीं श० | २५x१५ | ६१ | र. का. १७४३ |
| २४२५ | ८४२७ (३) | कालचितावणी को अंग | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १०.५x७ | १९-२८ | |
| २४२६ | ६२९४ (४) | कालीनाथन-लीला | चरणदास | १८ वीं श० | १६.५x११ | ९४-९८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४२७ | ७८५७ (३) | कुण्डलिया-संग्रह | गिरधर कविराय | १९ वीं श० | २७.७x१८ | १-९७ | ४० कुण्डलिया हैं। गुटके के अन्तिम ६ पत्रों में बालचन्द कायस्थ का वंश वर्णन एवं ऐतिहासिक टीप है। बूँदी में बालचन्द कायस्थ के नाम से 'बालचन्द पाड़ा' आज भी प्रसिद्ध है। ये वहां के कामदार थे। |
| २४२८ | ९७२८ (३) | कुण्डलिया | गिरधर कविराय | १९ वीं श० | २१x१७ | १५-१७ | |
| २४२९ | ९३२७ (४) | कुवलयानन्द-भाषा | भोलानाथ | १९ वीं श० | २८x१८.५ | ३९३८ | स्फुट-पत्र मात्र। |
| २४३० | ८६९३ (२) | कृष्ण-बावनी (उपदेश-बावनी) | किशन वाचक | १९ वीं श० | १९x१३.५ | ३६-५२ | र. का. १७६७ |
| २४३१ | ९२५२ (२) | कृष्ण-रुक्मिणी री वेली | पृथ्वीराज राठौड़ | गु० १७७४ | २१.५x१४ | १-१९ | र. का. १६३८ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४३२ | ९२३६ (३) | कृष्ण-रुक्मिणी री वेली सटीक (गद्य) | पृथ्वीराज राठौड़ | १७२७ | १६.५x१४ | ३९-७० | लि. क. आनन्दराम मिश्र पत्र संख्या ७१ से ८२ तक 'आदित्यहृदय-स्तोत्र' संस्कृत में हैं। |
| २४३३ | ९३२७ (२) | कृष्ण-लीला पद्य-संग्रह | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २८x१८.५ | २४-३२, ३९-५१ | इसमें 'जुगल विलास' एवं 'कंठाभरण की वचनिका' आदि के भी स्फुट-पत्र हैं। |
| २४३४ | ८८५८ | कृष्णावतार-भाषा (अवतारचरित्र गत) | नरहरिदास बारठ | १९ वीं श० | ३९x२१ | १-४५ | |
| २४३५ | ९२२८ (२) | कृष्णोत्पत्ति भाषा (पद्य) | चतुरदास शिष्य संतदास | १९ वीं श० | २५.५x१४.५ | १४४-१५४ | र. का. १६९२ आगे के पत्र गुटके में से कटे हुए हैं। |
| २४३६ | ९७२८ (८) | कैवाट सरवहिया रा सोरठा | जोगीदास | १९ वीं श० | २१x१६.५ | २७-३५ | अगले पत्र पर 'पन्ना वीरमदे की बात' का प्रारम्भ मात्र है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४३७ | ६५०६ | कोकसार-भाषा | आनन्द कवि | १८५३ | २४x१०.५ | १-१३ | लि. स्था. बीकानेर |
| २४३८ | ६७३० (१) | कोकसार-भाषा | आनन्द कवि | १८२१ | १५x११ | १-४५ | लि. क. ऋषि दयाराम प्रारम्भ के तीन पत्रों पर 'शनिश्चरजी की कथा' का अन्तिमांश है। |
| २४३९ | ६२५४ (४) | कोकसार-भाषा | आनन्द कवि | १८१० | १६.५x१३.५ | १-२१ | |
| २४४० | ८४२२ (१५) | क्षमा-बत्तीसी | समयसुन्दर | गु० १७७६ | २३x२० | ८०-८२ | र. स्था. नागोर |
| २४४१ | ६६८२ (१) | गंगाजी रो सिलोको (श्लोक) | | २० वीं श० | २५.५x१२.५ | २ रा | |
| *२४४२ | ६५६४ (६) | गंगा-शतक | जीवनलाल नागर | २० वीं श० | २२x१७.५ | ७१-८० | र. का. १९२० र. स्था. बूँदी समकालीन प्रति। पत्र त्रुटित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४४३ | ९२९० (२) | गणेशजी की स्तुति | | २० वीं श० | २२x१४ | २८४ वां | पंजाबी मिश्रित भाषा में। |
| २४४४ | ८५६२ (१३)१ | गीत ( मन रो ) | पहाड़खां | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ४(ब) वां | गुटके के पत्रों के पृष्ठीय भाग बाद में लिखे गये है। |
| २४४५ | ८२५२ | गीता-माहात्म्य (आनन्द-विलास) | आनन्दराम नाजर | १९ वीं श० | २६x११ | १-२८ | र. का. १७६१, अनूपसिंह राज्ये, बीकानेर। |
| २४४६ | ८४१७ (४) | गीता-माहात्म्य-भाषा (पद्मपुराण गत) | तुलसीदास | १८ वीं श० | १६x१३ | २-६६ | आदि के १७ श्लोक अप्राप्त। इस गुटके के प्रारंभिक पत्रों में (१) पुरुषोत्तम सहस्रनाम (२) यमुनाष्टक (३) चतु:-श्लोकी आदि हैं। लि. क. जोशी पीथा वास हस्तेड़ा। 'राज, महाराजा श्री जैसिंघ को'। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४४७ | ८५६१ (३) | गीता-माहात्म्य-भाषा (गद्य) (पद्मपुराणगत) | | गु० १७५४ | २१.५x१६ | ६७-१०४ | लि. क. रूपदास<br>पत्र संख्या ७५ वां अप्राप्त |
| २४४८ | १०५६६ | गीता-माहात्म्य-भाषा (गद्य) (पद्मपुराणगत) | | १८७४ | २१x१५.५ | १–५३ | लि. क. हिम्मतराम<br>लि. स्था. अलवर |
| २४४९ | ८४०० | गुरु-गीत | पद्मचन्द सूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ३७-३८ | र. का. १७१५<br>र. स्था. मांडल |
| २४५० | १०१३९ | गुरुचार, कालज्ञान, राशि-फल आदि | | १८०४ | १४x१३ | १–४६<br>६०-७२ | पत्र संख्या ७३-७९ पर स्फु. मंत्र हैं । |
| २४५१ | ८८५७ (३) | गुरु-चेला गोष्ठी (पद्मपुराणगत) | जुगतानन्द | १९ वीं श० | १९x१४ | १८३–२२१ | पत्र जीर्ण । |
| २४५२ | ८५६२ (५) ३ | गूढार्थ (पहेलियाँ) | | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ६९ वां | |
| २४५३ | ९४२५ (१) | गोकुलचन्द्रमाजी की सेवा, उत्सव-विधि | द्वारकेश | १९ वीं श० | २१.५x१०.५ | १-१११ | पत्र संख्या १०६ से १११ खंडित । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४५४ | ६५७४ (७) | गोपीगीत | | २० वीं श० | २२x१७.५ | ८०-८२ | अपूर्ण । |
| २४५५ | ६४२५ (२) | गोवर्द्धननाथजी की स्तुति-पद-संग्रह | चतुर्भुजदास | १८१४ | २१.५x१७.५ | १–५ | |
| २४५६ | १०६६२ | गोविन्दचन्द्रिका | [इच्छाराम] | २० वीं श० | २२.५x१६ | ५०-३०१ | १४ वें अध्याय के ७० वें छन्द से ८५ वें अध्याय के १८ वें छन्द तक। बीच-बीच में पत्र अस्त-व्यस्त हैं। कर्त्ता का नाम अप्राप्त। |
| २४५७ | ८४०० (४४) | गौड़ी-पार्श्वनाथ-गीत | देवचंद | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८६–८७ | |
| २४५८ | ८४०० (१५) | गौड़ी-पार्श्वनाथ-स्तवन | प्रीतिविमल | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ४५-५२ | |
| २४५९ | ८५६३ (२) | गौतमपृच्छा-रास | लावण्यसमय | गु० १७५३ | १७x१० | १–११ | र. का. १५५४ पत्र जीर्ण हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४६० | ८४२२ (१२) | गौतम-रासो | विनयप्रभ | गु० १७७६ | २३x२० | ६८-७२ | |
| २४६१ | ८४२२ (४७) | गौतम-सज्झाय | लावण्यसमय | गु० १७७२ | २३x२० | १-१२५ | पत्र संख्या ११७ - १२४ अप्राप्त। लि. क. ऋषि रामचन्द्र चौधरी उदैभाण वाचनार्थ। |
| २४६२ | ८४०० (४) | गौतमस्वामी-अष्टक | समयसुन्दर | गु० १८६४ | १५x१३.५ | १०-११ | १० वां पत्र दो-बार। |
| २४६३ | ८४०० (२) | गौतमस्वामी-अष्टक | लावण्यसमय | गु० १८६४ | १५x१३.५ | १-२ | प्रारम्भ में 'नवकार मंत्र' है। |
| २४६४ | ८४०० (५०) | गौतमस्वामी-स्तवन | | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६५-६८ | अपूर्ण। |
| २४६५ | ६२६० (३) १० | घोड़ा-घोड़ी री परख रा दोहा | | १६ वीं श० | २०x१४ | ३०५-३०६ | अपूर्ण। पत्र संख्या ३०१ से ३०४ तथा ३०७ से ३४६ अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४६६ | ९३३२ | चतुर-मुकट रानी चन्द्रकिरन री वात री कथा | | १८८१ | २१.५x१५ | १-२३ | लि. क. पुष्कर मिश्र<br>लि. स्था. रोसी नगर |
| २४६७ | ८५६२ (९) | चन्दन-मलयागिरी रा दूहा | भद्रसेन | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ११८-१३१ | १८२ दोहे हैं ।<br>लि. क. पंचोली गुलाबराय हरीदासोत । मामाजी वगसी-रामजी री पोथी सूं उतारी । |
| २४६८ | ७९६९ | चाणक्यसूत्र-भाषा | विष्णुगिरि शिष्य ब्रह्मानन्द | १९०५ | २५x१०.५ | १-१४ | र. का. १७७९<br>लि. क. विजयचन्द<br>लि. स्था. इन्दोर<br>'कोविद यतिवर विष्णुगिरि, सुगम रीति रचि राष ।<br>गोविंददास षवास हित, कंवर गुमानी भाष ।।' |
| २४६९ | ८४१५ | चितावणी को अंग | रामचरणदास | २० वीं श० | १०.५x६.५ | १-५६ | |
| २४७० | ९५५६ (५) | चितावणी को अंग | तुलसीदास | १९ वीं श० | २२.५x१०.५ | १-४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४७१ | ६८३६ (६) | चितावणी को अंग | रामचरण | गु० १८२० | १२x१० | १००–११५ | अन्त में 'चौथ माता एवं गणेशजी की कथा' का प्रारंभ मात्र है। |
| २४७२ | ८३३२ | चेतनचरित | भगवतीदास | १६ वीं श० | २४.५x११ | १-७ | र. का. १७३६ |
| २४७३ | ८४२२ (२६) | चैत्य-वंदन | खीमो | गु० १७७६ | २३x२० | ६६-६७ | |
| २४७४ | ६२४५ | चौपड़-हुलास | राय अमृतराम | १६ वीं श० | २७x१६.५ | १-५ | र. का. १८६६ |
| २४७५ | ८६६१ | चौबीस-एकादशी कथा (ब्रह्माण्ड पुराणगत) | | १८४० | २१x१५ | १-५३ | लि. क. नन्दकिशोर मिश्र श्री साँनियाजू भण्डारी पठनार्थ। |
| २४७६ | १२१६५ | चौबीस-जिन-स्तुति | मोहनविजय शिष्य रूपविजय | १८७४ | २६.५x१०.५ | १-८ | लि. क. क्षमासागर लि. स्था. वडलू |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४७७ | ८४२२ (२८) | चौवीस-तीर्थङ्कर-स्तवन | आणंद शिष्य कमलमुनि | गु० १७७६ | २३x२० | ६५-६६ | र. का. १५६२ 'इंदु वांण रस नयण' |
| २४७८ | ८८५७ (१)५ | चौमासा | जुगतानन्द | १९ वीं श० | १९x१४ | १६४-१६५ | |
| २४७९ | ८००५ (१) | चौरासी पद | हितहरिवंश स्वामी | १८७४ | २६x१६ | २-२५ | चौरासी पदों के आगे संस्कृत में 'विष्णु सहस्र नामावली' ११ पत्रों में है। |
| २४८० | १०६६६ (१४) | चौरासी-वैष्णव को धोल | | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ११९-१२२ | |
| २४८१ | ६४२५ (६) | चौरासी-वैष्णव बोल | | १९ वीं श० | २१.५x१७ | ३४-४० | पत्र संख्या ४० पर गोकुल-चन्द का पद है। |
| २४८२ | ६७२५ | चौरासी-वैष्णवों की वार्ता | | १९ वीं श० | २२x१६ | ३८-२२५ | अपूर्ण— पत्र संख्या ३८, ३९, ४७-६० ७२, ७४-८८, १४७-१६०, १६२-१६३, १७०-१९९ व २२४-२२५ ही हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४८३ | १०६७१ (३) | चोरासी-शिक्षा (अष्ट-उपाधि, आदि) | | १९ वीं श० | २४x१३.५ | ४-२० | पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ । |
| २४८४ | ८४२२ (३) | चौसठ-देवी-स्तोत्र | | गु० १७७६ | २२x२४ | २२-२४ | इसी के आगे 'क्षेत्रपाल-स्तोत्र' भी है। दोनों कृतियां संस्कृत में हैं। |
| २४८५ | ९१७१ | छन्द-रत्नावली | हरीरामदास निरंजनी | १९ वीं श० | ३०.५x१५.५ | १-१२ | र. का. १७९५<br>लि. क. साधु जैतराम |
| २४८६ | १०२४७ (१)१-५ | छन्द-संग्रह—अमल रो<br>भांग रो<br>जलंधरजी रो<br>सूरजदेव रो<br>चामुण्डा रो | कविराजो<br>नरवद<br>कांनड़ | १८८२ | १६x१२ | १-३<br>४-६<br>८-१०<br>११-१२<br>२१ वां | लि. क. मेघराज मुंता<br>लिं. स्था. जोधपुर<br>सेवग थानजी की प्रति से प्रतिलिपि कृत । |
| २४८७ | ८९४६ | छन्दसार सटिप्पण (पिङ्गल ग्रन्थ) | सूरति मिश्र | १९४७ | २६x११.५ | १–१४ | लि. क. सुखलाल पुत्र टेकचन्द ज्यौतिषी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२४८८ | ६२७० | छन्द-सुधाधर | कवि चन्द पुत्र बखतावर | १९११ | २३x१६ | १-१३६ | र. का. १८९८ 'वसु निधि वसु ससि' लि. क. झूंथालाल दाहिमा ब्राह्मण। लक्ष्मणसिंह नरेश की आज्ञा से। पत्र संख्या ५१ से ६२ तक अप्राप्त। प्रारंभ की प्रशस्ति ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व-पूर्ण है। |
| २४८९ | ६७२० (३) | छन्दाष्टक | रसराशि | १९ वीं श० | २०x१५.५ | ११-१२ | पत्र संख्या १० से ११ पर स्फुट कवित्त हैं। |
| *२४९० | १०१८५ | जगत-विनोद | कवि पद्माकर | १९०६ | १६.५x१२.५ | १-१२६ | लि. क. नागरभट्ट कुबेर लि. स्था. रत्नावती इसके बाद के १८ पत्रों में ५+४५ कवित्त-सवैये हैं। |
| २४९१ | ६२५४ (५) | जगदम्बा री निसानी आदि | कवि मण्डन | गु० १८१० | १६.५x१३.५ | २२-२४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४९२ | १०१४६ (२) | जगन्नाथाष्टक | | २० वीं श० | २१x१२.५ | ३५-३६ | |
| २४९३ | १०२४७ (४) | जतीरासो | भीखमचन्द | गु० १८८२ | १६x१२ | १७-२१ | |
| २४९४ | ८५६२ (६) | जनम-बत्तीसी (कृष्ण-जन्म-बत्तीसी) | भगतराम पंचोली | १७९५ | २४.५x१५.५ | ७९-९० | र. का. १७९५ लि.क. गुलाबराय हरिदासोत गुटका लिखने वाले के परिवार के ही व्यक्ति द्वारा रचित। मूल प्रति। |
| २४९५ | ८४०८ (१-२) | जन्मपत्री पद्धति भाषा तथा लघुचाणक्यादि | | १९ वीं श० | २३.५x१४ | १२+३ | वर्ष तथा जन्म-पत्र निर्माण का गणितादि प्रकार भाषा में बताया गया है। कुछ संस्कृत पद्यों का प्रारंभ में भाषार्थ भी किया है। गुटके के अन्तिम तीन पत्रों में वर्णपाटी (वर्णमाला-बोध), तथा लघु-चाणक्य-नीति के दो अध्याय लिखे हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२४९६ | ८७३६ | जलवय-शहनशाह-इश्क | जवानसिंह (महाराजा) | १९४५ | २१x१६.५ | १–२ | र. का. १९४५<br>लि. क. कवि जय<br>लि. स्था. कृष्णगढ़<br>स्वलिखित प्रति । |
| २४९७ | ९७३६ (३) | जसामृतसागर-भाषा | मू० हरिव्यास<br>भा० रूपरसिक | १९ वीं श० | ३०.५x२१.५ | २०५-२६६ | छन्द संख्या १६०९ |
| २४९८ | ९२९४ (२) | जागरण-माहात्म्य | चरणदास | १९ वीं श० | १६.५x११ | ८५-९० | |
| २४९९ | १०१३८ (४) | जानकीमङ्गल | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | १४.५x१३.५ | २८-३५ | पत्र संख्या ३६ पर दो कवित्त हैं। |
| २५०० | ८४०० (१०) | जिनकुशलसूरि-गीत | लालचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ३८-४० | पत्र संख्या ३९ अप्राप्त। |
| २५०१ | ८४०० (३८) | जिन-गीत | | १९ वीं श० | १६x१३.५ | ८३ वां | २३ वें तीर्थङ्कर सम्बन्धी। |
| २५०२ | ८४०० (४५) | जिन-चौवीसी | ऋषि देवीचंद | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८७-८९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५०३ | ८४०० (१२) | जिनदत्तसूरि-गीत | लाभोदय (लब्धोदय) | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ४१-४२ | पत्र संख्या ४२ वां दो-वार। |
| २५०४ | ८४२२ (२) | जिन-पञ्जर-स्तोत्र | | १७७६ | २३x२० | २१-२२ | संस्कृत में है। |
| २५०५ | ८०२७ | जिनप्रतिमार्चन-विधि | | १६ वीं श० | २५.५x११.५ | १-२१ | |
| २५०६ | ८४०० (१६) | जिन-स्तवन | | ० १८६६ | १५x१३.५ | ५२-५३ | |
| २५०७ | ८४२२ (३०) | जीव-काया-सज्झाय | महमद | गु० १७७६ | २३x२० | ६७-६८ | |
| २५०८ | ८४२२ (३२) | जीव-काया-सज्झाय | पद्मतिलक | गु० १७७६ | २३x२० | ६८ वां | |
| २५०९ | ८७०५ (१) | जोगरत्न (गुरु-शिष्य-संवाद) | | गु० १८५१ | १४x८.५ | १-१८ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५१० | ८३५४ | ज्यौतिष-सार ( लघुजातक भाषा टीका पद्यानुवाद) | कृपाराम पुत्र तुलाराम | १८६७ | २४x१२ | १-५१ | र. का. १७९२<br>लि.क. ओंकार दायमा ब्राह्मण<br>लि. स्था. देवदुर्ग<br>यह ग्रन्थ 'लघुजातक' का दोहानुवाद है। |
| २५११ | ९५५६ (१) | ज्ञान-तिलक | कबीरदास | १९ वीं श० | २२.५x१०.५ | ७-११ | अपूर्ण—पत्र संख्या ११-१२ पर कबीरदासजी के पद हैं। पत्र संख्या १-६ अप्राप्त। |
| २५१२ | ९०८८ (६) | ज्ञान-पच्चीसी | बनारसीदास | १९५६ | २२.५x१४ | २९-३१ | लि. क. मोहनकीर्त्ति<br>लि. स्था. लाखोला ग्राम |
| २५१३ | ८७०५ (५) | ज्ञानबोध | | गु० १८९१ | १४x८.५ | ८३-८७ | अन्त में पत्र संख्या ८७ से ९० तक स्फुट-नुस्खे एवं मंत्र हैं। |
| २५१४ | ९३३८ (४) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १०.५x६.५ | ५६-६९ | प्रथम उल्हास मात्र। |
| २५१५ | ८५०७ (३) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १९०४ | १६x१२ | १-३६ | लि. क. रामदास कबीरपंथी<br>लि. स्था. पूरनगर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५१६ | ६१६५ | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास | १८३४ | २३.५x११.५ | ३-३७ | प्रथम दो पत्र अप्राप्त। |
| २५१७ | ८०७७ | ज्ञानसम्बोध | | १८६४ | २१.५x११ | १-४० | लि. क. वालकभक्त महन्त भगवतीदास की प्रति से प्रतिलिपि कृत। पत्र ३८ वां अप्राप्त। इसके कर्त्ता कोई कबीरपंथी साधु प्रतीत होते हैं। |
| २५१८ | ८७०५ (२) | ज्ञान स(स्व)रोदय | चरणदास | १८६१ | १४x८.५ | १८-५४ | |
| २५१९ | ८५६२ (५)६ | झाला जसवन्तसिंहजी रो गीत | भीमजी आढा | गु० १७६५ | २४.५x१५.५ | ७१-७२ | |
| २५२० | ६७२१ (१) | ढोला-मारवणी री वात | | १६१७ | २२x११ | ६१-१४२ | लि. क. गुरां इन्दरचन्द प्रथम पत्र पर मालदेव कृत 'शकुन विचार' है। |
| २५२१ | ६८५२ (६) | ढोला-मारू री वात | | १७८१ | २१.५x१४ | १-३७ | लि. क. मित्रराम भट्ट |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५२२ | ६११५ (२) | तरक-चितावणी | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १५x११ | २६९-२८१ | |
| २५२३ | ८४२७ (२) | तरक-चितावणी | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १०x६.५ | ७-२० | |
| *२५२४ | ७९९८ | तिलशतक | जुगतराय | १९ वीं श० | २५x१०.५ | १-४ | |
| २५२५ | ८४०० (२७) | तीर्थमाला-स्तवन | समयसुन्दर | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६५-६६ | |
| २५२६ | ८५६१ (६) | तुरसी-पद-संग्रह | जनतुरसी | १७५४ | २१.५x१६ | १-४४ | अपूर्ण । रागबद्ध । पत्र संख्या १५ अप्राप्त । |
| २५२७ | ८५६२ (१) | त्रिया-विनोद | मुरली कवि | १७९४ | २४.५x१५.५ | ३-९ | र. का. १७३६ अपूर्ण—३० छन्द मात्र । कोठारचा के ऊदा चौहान की आज्ञा से रचित । प्रति पत्रों के एक तरफ ही लिखी गई है । प्रथम पत्र अप्राप्त । इसकी एक सचित्र एवं पूर्ण प्रति उदयपुर शाखा कार्यालय में विद्यमान है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५२८ | ८४२२ (२०) | थंभण-पार्श्वनाथ-स्तवन (खंबात के) | | गु० १७७६ | २३x२० | ८७ वां | |
| २५२९ | ८४०० (३८) | थंभण-पार्श्वनाथ-स्तवन | विजयदेव सूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८०-८१ | |
| २५३० | १०१४३ | दत्तलालजी को कक्को | दत्तलाल | २० वीं श० | १६x११ | १-२४ | |
| २५३१ | ९२५४ (८) | दम्पत्तिरङ्ग | लछीराम | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | १-१२ | अपूर्ण। नायिका भेद है। |
| २५३२ | ९१९९ (१) | दयासूरजी की बावनी | दयासागर | १८२४ | २५x११ | १-६ | र. का. १७४९<br>१ ७ ४ ९<br>संवत चन्द्र समुद्र कथा निधि फागुण वदी तीज |
| २५३३ | ९७२९ | दश-महाविद्या के रेखा-चित्र | | २० वीं श० | १५.५x१२.५ | १-७ | पत्र संख्या ८-११ पर मीरां के पद हैं। |
| २५३४ | ८४२२ (३५) | दसाणभद्र राजा री सज्भाय | लालविजय शिष्य विजय पंडित | गु० १७७६ | २३x२० | १००-१०१ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५३५ | ८४०० (१३) | दादा-गुरु-गीत | समयसुन्दर | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६३ वां | |
| २५३६ | ८४०० (२५) | दादा-गुरु-गीत | सुमतिरङ्ग | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६३ वां | |
| २५३७ | ६३३८ (१) | दादूदयालजी की वाणी ( लय को अङ्ग ) | दादूदयाल | १९ वीं श० | १०.५x६.५ | ४-११ | प्रारम्भ में सुन्दरदास कृत 'विश्वास को अंग' के ३ छन्द हैं। |
| २५३८ | ८४०० (२८) | दानगीत | जयन्तीदास | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६६-६७ | |
| २५३९ | ८६२८ (३) | दानलीला | कृष्णदास | १९२९ | १७x१२.५ | १३५-१४३ | लि. क. मुकन्द ब्राह्मण लि. स्था. कल्याणपुरी |
| २५४० | ६१०० (२) | दानलीला | कृष्णदास | १९ वीं श० | १७.५x११.५ | १६-२१ | |
| २५४१ | ६२९४ (३) | दानलीला | चरणदास (स्वामी) | १९ वीं श० | १६.५x११ | ९१-९४ | गुटके में इन्हीं की ६ कृतियों का संग्रह है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५४२ | १०१३८ (१) | दानलीला | | १९ वीं श० | १४.५x१३.५ | १-९ | |
| २५४३ | १०१४८ | दानलीला | कृष्णदास | १८४० | १८x१० | १-९ | लि. क. श्री वृन्दावनवासी वैष्णव हरिप्रसाद लि. स्था. नषलौ (लखनऊ) |
| २५४४ | १०१८३ (३) | दानलीला | | २० वीं श० | २.४५x१७ | ६४-६७ | अपूर्ण—३५ छंद हैं। |
| २५४५ | १०६६९ (२) | दानलीला | | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ७-१४ | |
| २५४६ | १०६६९ (८) | दानलीला | कुंभनदास | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ६९-७२ | |
| २५४७ | ९४२५ (५) | दानलीला के पद | हरिदास, सदादास | १९ वीं श० | २१.५x१७ | २७-३३ | |
| २५४८ | ७८६१ (१०) | दुर्गा-आरती | साँवला | गु० १९१५ | १७x१३ | ४४-४५ | लि. क. भज्जूराम लि. स्था. बामनवास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५४६ | १०६७६ (४) | देवचितावणी एवं रतन पचीसी | पनालाल जोशी | २० वीं श० | १५.५x११ | १-२ | अपूर्ण—मात्र १० दोहे हैं। |
| २५५० | ८६६४ | देवी आरती व भैरव आरती | मगनीराम सेवक | १६ वीं श० | १६.५x११ | १ ला | |
| २५५१ | ६४३१ (४) | देहदशा | नागरीदास | गु० १७८६ | २१x१५.५ | ५-८ | अंतिम पत्र में ज्ञात-यौवना, मुग्धा आदि के लक्षण हैं। |
| २५५२ | ८५६२ (५) १५ | दोहा, कवित्त अक्षर चिंतवणी रो | | गु० १७६७ | २४.५x१५.५ | ७६ वां | |
| २५५३ | ८७०५ (३) | दोहावली | गो० तुलसीदास | गु० १८६१ | १४x८.५ | ५४-७८ | कुल १७१ दोहे हैं। |
| २५५४ | १०६७६ (३) | दोहा-संग्रह | रामलाल जोशी | २० वीं श० | १५.५x११ | १-२४ | १२८ दोहे हैं। |
| २५५५ | ८५६२ (१)२ | दोहा-संग्रह | पञ्चोली नीलकण्ठ अनोपचन्दोत | १७६१ | २४.५x१५.५ | १ ला | लि. क. गुलाबचन्द |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५५६ | ९२६० (३)५ | दोहा-संग्रह | | १९ वीं श० | २२x१४ | २९४–२९७ | |
| २५५७ | ८५६२ (१२) | दोहा-सोरठा-संग्रह | | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | १३९–१४३ | कुल ६२ दोहे-सोरठे हैं। अन्तिम पत्र पर 'तत्वसार' ग्रन्थ' के १२ दोहे हैं। |
| २५५८ | १२४२१ (८) | द्विजपुत्री कन्या-माहात्म्य | | गु० १८९३ | १७x१२ | १२९–१५० | |
| २५५९ | ९८४३ | द्रव्य-गुण पर्याय विचार सअर्थ | | १८ वीं श० | २३.५x१४ | २२-७८ | अपूर्ण— पत्र जीर्ण एवं त्रुटित। पत्र संख्या १-२१ अप्राप्त। |
| २५६० | ८४२२ (३४) | धन्नारिषि-सज्झाय | सेवक सीधो | गु० १७७६ | २३x२० | ९९-१०० | |
| २५६१ | ७९१३ | धर्म-परीक्षा-भाषा | मनोहरदास (जैन) | १८४५ | ३०.५x१३.५ | १-९९ | र. का. १७०७ र. स्था. नगर धामपुरी लि. क. लालचन्द्र भट्ट पत्र संख्या ७७-७९ के स्थान पर ८० से पत्राङ्क प्रारंभ। पाठ पूरा है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५६२ | ८४२२ (३७) | धर्मी-सज्झाय | चारुदत्त वाचक | गु० १७७६ | २३x२० | १०२-१०३ | |
| २५६३ | ८१६० (१) | ध्रुव-चरित्र | जनगोपाल | १८ वीं श० | १२.५x१ | २-१९ | पत्र संख्या १, ४, ५, ९-११ अप्राप्त । |
| २५६४ | ८३८२ | ध्रुव-चरित्र | जनगोपाल | १८७७ | १७x९.५ | १-३१ | लि. क. परमसुन्दर<br>लि. स्था. पितांवरी |
| २५६५ | ८५६१ (५) | ध्रुव-चरित्र | जनगोपाल | १७५४ | २१.५x१६ | १२४-१३७ | प्रारंभ के १५ छन्द अप्राप्त । पत्र संख्या १३७ से १३९ तक दादू, जनहरिदास तथा जनतुरसी के पद हैं । |
| २५६६ | ९८३६ (५) | ध्रुव-चरित्र | परमानन्द | गु० १८२२ | १२x१० | ७६-८६ | |
| २५६७ | ९८३६ (३) | ध्रुव-चरित | जनगोपाल | १८२२ | १२x१० | २५-५७ | लि. क. लछीराम |
| २५६८ | ८८२४ | नख-शिख-वर्णन | वलभद्र | १७८४ | २५x११ | १-३ | लि. स्था. योगनिपुर<br>अंत में स्फुट औषधि-संग्रह है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५६९ | ८८२५ | नख-शिख-वर्णन | केशवदास | १८ वीं श० | २६.५x११ | १-७ | |
| २५७० | ९२५४ (२) | नख-शिख-वर्णन | बलभद्र | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | ११२-१४३ | |
| २५७१ | ९३१९ (१-२) | नख-शिख-वर्णन | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २३x१४.५ | १-७<br>१-१२ | दो प्रतियां। कुल ५३ दोहे हैं। |
| २५७२ | ८४११ | नरसीजी को मायरो (मीरां-मिथुला-संवाद) | मीरांदास (मीरां) | २० वीं श० | २०.५x१४.५ | १-४५ | अन्तिम पत्र में सदानन्द कृत 'अम्वाजी की आरती' लिखी हुई है। |
| २५७३ | ९८३६ (६) | नरसीजी रो मायरो | पेमभगत (प्रेमानन्द) | गु० १८२२ | १२x१० | ६६-७६ | |
| २५७४ | ७८७३ | नल राजा दमन का किस्सा | | २० वीं श० | २३x१६.५ | १-२८ | अपूर्ण—फारसी भाषा, नागरी लिपि में लिखित। |
| २५७५ | ८४०४ (३) | नवपद-पूजा | जसविजय | १९ वीं श० | २०x१३ | ११-२२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५७६ | ९७३५ (२) | नवरतन | | गु० १९०२ | १७x११ | ४१-४४ | नीति-परक कृति । अन्तिम चार पत्रों पर स्फुट कवित्त पद्य हैं । |
| २५७७ | १०६८५ (२) | नवरतन रा छप्पय | | २० वीं श० | २५.५x१६ | ६७-६८ | १६ छप्पय हैं । पत्र संख्या ६९ पर 'दारू रा दूहा, 'शकुन रा कवित्त', 'छींक विचार' तथा शृङ्गारिक कवित्त छप्पय हैं । |
| २५७८ | ९३१८ | नवलानुराग | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २१x१३.५ | १-१४ | |
| २५७९ | १०६७१ (७) | नवहुलास (गद्य) | | १९ वीं श० | २४x१३.५ | ६५-११५ | ७ वें हुलास के २४ वें प्रसङ्ग तक । पत्र संख्या १०१-११४ अप्राप्त । |
| २५८० | १०१३८ (३) | नाग-छन्द (नागलीला) | | १९ वीं श० | १४.५x१३.५ | १८-२८ | |
| २५८१ | ९८३४ (१) | नागदमन | सांयाजी झूला | १८४५ | १२x१५ | १-२ | प्रारम्भ मात्र । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५८२ | ८४०५ (२) | नागदमन रास | गोकुल कवीश्वर | १९ वीं श० | २१.५x१४ | ४६-५२ | |
| २५८३ | ९०५४ (२) | नाम-मञ्जरी | रघुनाथकवि | २० वीं श० | २०.५x१६ | १-८ | अपूर्ण— ९१ दोहे हैं । |
| २५८४ | ९३१४ | नायिका-भेद | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | १७x११.५ | १-३६ | र. का. १८२८ महाराजा नवलसिंह प्रीत्यर्थ । कुल २४७ छन्द हैं । |
| २५८५ | ९५९६ (२) | नारद-गीता | | १९ वीं श० | २२.५x१०.५ | १-५ | |
| २५८६ | ९१०४ | नारायण-लीला | माधोदास गुसांई | १९ वीं श० | २०x११ | २-३२ | लि. क. सर्वदास वैष्णव प्रथम पत्र अप्राप्त । |
| २५८७ | ९२९४ (१) | नासिकेतोपाख्यान | चरनदास स्वामी (गुसांई रनजीत) | १९ वीं श० | १६.५x११ | २-८४ | प्रथम पत्र अप्राप्त । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५८८ | ९७३६ (२) | नित्यविहार पदावली | रूपरसिक | १९ वीं श० | ३०.५x२१.५ | १९६-२०५ | रागवद्ध। १२० पदों का सार ७२ पदों में है। |
| २५८९ | ९६८४ | नित्यविहारी युगलध्यान | भगवतरसिक | १९ वीं श० | २२.५x१० | २-१२ | लि. क. भक्तिसनेह<br>पथम पत्र अप्राप्त। |
| २५९० | १२६१२ (१४) | निर्वाण-काण्ड भाषा | भगोतीदास | १८१९ | २५x१५ | ५५-५७ | र. का. १७४१<br>लि. क. सिंघवी हिम्मतराम<br>लि. स्था. जयपुर |
| २५९१ | ८५०७ (१) | नीतिशतक | भर्तृहरि | १९०५ | १६x१२ | १-४२ | संस्कृत में है।<br>लि. क. रामदास<br>लि. स्था. पुरनगर<br>पत्र संख्या ४३ पर 'गणेश तुष्टि-तंत्र' है। |
| २५९२ | ८५६२ (११) | नीसाणी भांग री | कवि हरिचन्द | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | १३६-१३९ | |
| २५९३ | ८४०० (२९) | नेमराजमती-गीत | अजीतसागर | गु० १८६४ | १५x१३ | ६७-६९ | |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५६४ | ८४०० (२४) | नेमिनाथ गीत | हर्षचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६२-६३ | |
| २५६५ | १०८४९ (१६)१६ | नेमिनाथजी री लावणी | | गु० १९३१ | १७x११ | १२४-१२६ | |
| २५६६ | ८४०४ (६)३२ | नेमिनाथजी रो बारहमासो | | १९ वीं श० | २०x१३ | ६७-६८ | |
| २५६७ | ८४२२ (४०) | नेमिनाथ-स्तवन | कल्याणसागर सूरि | गु० १७७२ | २३x२० | १०५-१०६ | |
| २५६८ | ९२४० | नेह-समर | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७.५x१९ | १-१३ | र. का. १८६९ |
| २५९९ | ९३२२ (२) | नैषध-महाकाव्य भाषा | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २३.५x१७ | १-२२ | र. का. १८४० अपूर्ण। प्रथम सर्ग के १२४ वें छन्द पर्यन्त। कवि के वंशजों से प्राप्त प्रति। |
| २६०० | ८४२२ T(१७) | पञ्च-तीर्थ-स्तवन | मुनि लावण्यसमय | गु० १७७६ | २३x२० | ८३-८४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६०१ | ८५६२ (३) | पञ्चसहेली रा दूहा | छीहल | १७६५ | २४.५x१५.५ | ३७-४५ | र. का. १५७५ लि. क. पंचोली गुलावराय हरिदासोत । लि. स्था. उदयपुर |
| २६०२ | ७८५७ (१) | पञ्चाख्यान सटीक ( हितोपदेश ) | मू० विष्णुशर्मा | १८६४ | २७.५x१८ | १-६३ | लि. क. कृष्णराम लि. स्था. बूँदी |
| २६०३ | ६५५६ (४) | पञ्चायणवोध | कवीरदास | १६ वीं श० | २२.५x१०.५ | १०-२२ | पत्र संख्या २३ - २४ पर 'नवकार मंत्र' एवं तीर्थङ्करों के नामादि हैं । |
| २६०४ | ८४२२ (१६) | पदमावती-सज्भाय | समयसुन्दर | गु० १७७६ | २३x२० | ८२-८३ | |
| २६०५ | ६७३६ (६) | पद-पैंतालीसी | रूपरसिक | १६ वीं श० | ३०.५x२१.५ | ६१-७२ | |
| २६०६ | १०१६७ | पद-मुक्तावली | नागरीदास (महाराजा सावंतसिंह) | १६ वीं श० | ३३.५x२२.५ | १-६३ | राग, तालबद्ध । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६०७ | ६२४६ | पद-रत्नावली | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१६ | १-१०७ | रागवद्ध। २५६ पद्य हैं। पत्र संख्या १८ से ७५ तक के पद्य संख्या ४३ से १८६ अप्राप्त। |
| २६०८ | ८७०४ (२) | पद-संग्रह एवं आरती | सूरदास, कबीर | १८४९ | १५x१० | १ ला | लि. क. भोजजी पोकरणा लि. स्था. जोधपुर |
| २६०९ | ८४०४ (६)३९ | पद-संग्रह एवं लावणी | जिनदास | १९ वीं श० | २०x१३ | ७१-७३ | |
| २६१० | १०१९५ | पद-संग्रह | रसराज (महाराजा मानसिंह) | १९ वीं श० | १९x१३.५ | १-११३ | राग-तालवद्ध। पंजाबी शब्दों का पुट है। पत्र संख्या १, १५, २७, ४७, ५३-५५, ५७, ५९-६२, ६४-११३ मात्र हैं। अन्तिम पत्र पर स्फुट कवित्त हैं। |
| २६११ | ८४०४ (६)३३-३८ | पद-संग्रह | जिनदास, जिनचन्द, किशनगुलाब, सज्जन, कीरतसागर, धर्मचन्द | १९ वीं श० | २०x१३ | ६८-७१ | धर्मचन्द कृत 'नेमिजी की लावणी' है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६१२ | ८४०४ (६)६-१५ | पद-संग्रह | उदयप्रभु, शिवदास, लालचन्द, केशरीचंद, सेवाराम, नयविमल, सेवग | १६ वीं श० | २०x१३ | ५६-६१ | |
| २६१३ | ८४०४ (६)१६-२४ | पद-संग्रह | रूपचन्द, लालचन्द, भूधर, सेवग, नवलदास, कीरतसागर, देवचंद, आनन्दरत्न, हर्षचन्द | १६ वीं श० | २०x१३ | ६२-६४ | |
| २६१४ | ८४०४ (६)२५-३१ | पद-संग्रह | जिनदास, भूधर, रामचन्द, क्षमाकल्याण, दौलत, सेवग, रूपचन्द | १६ वीं श० | २०x१३ | ६५-६७ | पत्र संख्या ६६ पर 'सोरठ राग रा दूहा' है। |
| २६१५ | ६२४६ (२) | पद-संग्रह | मीरां, माधोदास, रामदास, सूरदास, तुलसीदास आदि | १६ वीं श० | २७x१६ | १-६२ | पत्र अस्तव्यस्त— दो ग्रन्थों के पत्र सम्मिलित हैं। |
| २६१६ | ८४०० (३३) | पद-संग्रह | जिनहर्ष | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ७२-७३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६१७ | ८४०४ (६)३-८ | पद-संग्रह | शिवचन्द, भद्रगुलाब, लालचन्द, वालह, चैनविजय, केशरीचंद | १९ वीं श० | २०x१३ | ५७-५९ | |
| २६१८ | ८४०० (१९) | पद-संग्रह | अनुपमचन्द शिष्य जिनलाभ | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ५८-५९ | |
| २६१९ | ८४०० (१७)१-८ | पद-संग्रह | जिनराज, अज्ञात, सुखविलास, आणन्द, समयसुन्दर, जिनचंद, सेवग, धर्मसी | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ५३-५७ | |
| २६२० | ९२९४ (६) | पद-संग्रह (मटकी, हेली, रास) | चरणदास स्वामी | १८ वीं श० | १६.५x११ | ९९-१११ | लि. क. मीठाराम शिष्य भक्तिसनेह |
| २६२१ | १०६६६ (१२)१-७ | पद-संग्रह | परमानन्द<br>गोविन्दप्रभु<br>कृष्णदास<br><br>विट्ठलदास<br>सूरदास<br>विष्णुदास, वल्लभ | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ९७,९८,९९<br>९७, ९९<br>१००,<br>११०-१११<br>१०० वां<br>११२-११३<br>११३-११६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६२२ | ८००५ (२) | पद-संग्रह | चंदलाल, दयासखी, किशोरअलि, हीरालाल अलि | गु० १८७४ | २६x१६ | ३७-४० | सखी सम्प्रदाय के पद हैं। |
| २६२३ | ६५५६ (८) | पद-संग्रह | कबीरदास | १६ वीं श० | २२.५x१०.५ | ३३-४४ | रागबद्ध। |
| २६२४ | ६५५६ (६)४-६ | पद-संग्रह | कबीरदास, सूरदास, रैदास | १६ वीं श० | २२.५x१०.५ | २०-२५ | रागबद्ध। |
| २६२५ | ६५५६ (६)१-३ | पद-संग्रह | कबीरदास, दासकमाल, माधोदास | | २२.५x१०.५ | ४-२८ | रागबद्ध। पत्र संख्या २६ पर वायु रोग का स्फुट नुस्खा है। पत्र संख्या ३० पर तांत्रिक मंत्र है। पत्र संख्या ३० के वाद पत्राङ्क २० से प्रारंभ हैं। |
| २६२६ | १०६६७ (११) १-२ | पद-संग्रह | तुलसीदास, मीरां | गु० १८४१ | १२x६ | ८४६-८५० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६२७ | १०६६७ (३) | पद-संग्रह | मदन, कबीर, रामचरण | गु० १८४१ | १२x९ | ६९-७२ | |
| २६२८ | १०६७१ (२)१ | पद-संग्रह | विष्णुदास | १९ वीं श० | २४x१३.५ | १-४ | राग बिलावल के १० पद हैं। |
| २६२९ | १०६७१ (१)१-३ | पद-संग्रह | चत्रभुजदास, सूरदास, छीतस्वामी | १८२९ | २४x१३.५ | ४९-५० | लि. क. ब्रजमोहनदास पत्र संख्या ५० - ५१ पर 'हरिलीला' के १८ छन्द हैं। प्रारम्भ के पत्र संख्या १ पर 'मानसी सेवा' का प्रारम्भ मात्र है। |
| २६३० | १०६८३ | पद-संग्रह | गोविन्दस्वामी | १९ वीं श० | २३x१३.५ | ४३-७० | रागबद्ध; अपूर्ण। जलाभिषिक्त। |
| २६३१ | १०१५२ | पद-संग्रह | सूरदास | १९ वीं श० | २०.५x१५ | १-२१ | रागबद्ध; अपूर्ण—गुटके के बीच के पत्र हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६३२ | ६४२१ (३) | पद-संग्रह | तुलसीदास, चन्द्रसखी, वृजनिधि | १९ वीं श० | १५x१३.५ | ४७-६७ | रागबद्ध । |
| २६३३ | ६२६२ | पद-संग्रह | देवादास, तानसेन, सूरज, आनन्दघन, चन्द्रसखी, वंसीधर, भगवान, परमानन्द, नन्ददास, श्रीभट्ट, चत्रभुजदास, गोविन्दप्रभु, लछीराम, छीतस्वामी | १९ वीं श० | १७x१४ | १-९५ | रागबद्ध । पत्र अस्तव्यस्त हैं । |
| २६३४ | ६२४७ | पद-संग्रह | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१९.५ | ९-२०० | रागबद्ध । पत्र संख्या २ से ८, १७ से २३, ३९ से १०७, एवं १२५ वां अप्राप्त । अन्तिम पद्य संख्या ४९५ । |
| २६३५ | ६३३७ (६) | पद-संग्रह | तुलसीदास, शोभाराम तिवारी, नन्ददास, आनन्दघन | २० वीं श० | १६.५x१३ | ४४ वां ४६-५४ | अन्तिम पत्रों पर संस्कृत में स्फुट श्लोक एवं 'दसामृत हारीत' की भाषा तथा स्फुट पद्य हैं । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६३६ | ८४०७ | पद-संग्रह | लछमणदास | १८८६ | २०x१५ | १-६८ | रागबद्ध । लि. क. मेहताबराय गुटका कर्त्ता के शिष्य जैरामदास का है । इसमें रामभक्तिपरक, बाल-लीला, होली आदि के पद हैं। कर्त्ता अप्रसिद्ध ज्ञात होता है । |
| २६३७ | ६०८८ (२) | पद-संग्रह | कबीरदास | १६५६ | २२.५x१३.५ | २-३ | लि. क. मोहनकीर्त्ति लि. स्था. लाखौला ग्राम |
| २६३८ | ६७३६ (५) | पद-संग्रह ( आचार्य जन्मोत्सव-बधाई के एवं परचुनी पद ) | रूपरसिक | १६ वीं श० | ३०.५x२१.५ | १-१७ | रागबद्ध । ४२ पद हैं । |
| २६३६ | १०६७२ (५)१-२ | पद संग्रह ( आरती के ) | छीतस्वामी; गोपाल | १६ वीं श० | २२x१५.५ | ४६; ४७वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २६४० | १०६७२ (८) १-१४ | पद-संग्रह (उत्थापन के कीर्तन) | परमानन्द | १९ वीं श० | २२x१५.५ | ५२, ५३, ५५, ५६, ५९, ६०-६१ |
| | | | गोविंदप्रभु; कुंभनदास | | | ५२, ५३ से ५६; ५३, ५५, ५८-५९ |
| | | | सूरदास; छीतस्वामी | | | ५३, ५४, ५७, ६०, ६४; ५४, ६१ |
| | | | आसकरन; द्वारिकेश | | | ५५ वां |
| | | | चत्रभुजदास | | | ५५, ५६, ५७, ५९, ६२, ६३, ६४-६५ |
| | | | रसिकदास; कृष्णदास | | | ५६ वां; ५७, ६१-६२ |
| | | | नन्ददास; रामदास | | | ५८ वां; ५९, ६० |
| | | | जनभगवान; अज्ञात | | | ६५ वां; ६६-६७ |
| २६४१ | १०६७२ (७) १-४ | पद-संग्रह (कुञ्ज के) | परमानंद; कुम्भनदास, | १९ वीं श० | १५x१३.५ | ४९-५०; ५१ |
| | | | नंददास, कृष्णदास | | | ५१ वां |
| २६४२ | ९५९४ (४) | पद-संग्रह (कृष्ण चरित्र) | जीवनलाल नागर | २० वीं श० | २२x१७.५ | ४२-४५ |
| २६४३ | १०६६९ (१) | पद-संग्रह (गरवी) | अज्ञात | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | १-६ |
| २६४४ | १०६६९ (१३) | पद-संग्रह (गुसाईंजी की जन्म-वधाई के) | मांनिकचन्द | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ११७ वां |
| | | | छीतस्वामी | | | ११८ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २६४५ | १०६७२ (१०) १-१३ | पद-संग्रह ( गो-दोहन, संभा को-ग्वालभोग के ) | परमानन्द | १६ वीं श० | २२x१५.५ | ६६, ७१, ७३, ७४, ७७-७६, ८३, ८५, ८६-८७ |
| | | | रसिकदास; कुम्भनदास | | | ६६, ७०, ८१, ८३, ८४; ७०, ७२ |
| | | | चत्रभुजदास; रामदास | | | ७०, ८७; ७१ वां |
| | | | गोविंदप्रभु; छीतस्वामी | | | ७१, ७२-७३, ७५-७६, ८०, ८४; ७२वां |
| | | | सूरदास; विठ्ठलदास | | | ७३-७४, ८१, ८२; ७४, ८३ |
| | | | नन्ददास | | | ७४-७५, ७६, ७७, ८०-८१, ८५-८६ |
| | | | कृष्णदास; जगजीवन | | | ७६ वां; ८१-८२ |
| | | | ग्रासकरन | | | ८३ वाँ |
| २६४६ | १०६६६ (१६) १-४ | पद-संग्रह (गोवर्द्धन के एवं फुटकर) | चत्रभुजदास; मोतीलाल | १६ वीं श० | २२.५x१७.५ | १२६-१३०; १३०-१३१ |
| | | | गदाधर; गोपालदास | | | १३२; १३३ वां |
| | | | | | | १३४ वें पर 'धमार' है। |
| २६४७ | १०६६६ (७) १-४ | पद-सग्रह ( जन्मोत्सव के ) | सूरदास | १६ वीं श० | २२.५x१७.५ | ६५-६६ |
| | | | विठ्ठलदास; चत्रभुजदास | | | ६७ वां |
| | | | कृष्णदास | | | ६८ वां |
| २६४८ | ६७२६ | पद-संग्रह | विठ्ठल, नागरीदास, ग्रानन्दघन, हरिदास, गोविन्दप्रभु, विद्यापति ग्रादि | १६ वीं श० | २६.५x१४ | १-३६ राग ३६। प्रारम्भ के तीन पत्रों में रागनियों एवं पदों की सूची दी है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २६४९ | १०६७२ (१-२) १-१२ | पद-संग्रह ( जमुनाजी के, मंगला भोग के ) | चत्रभुजदास; वल्लभ<br>नन्ददास<br>जनभगवान<br>हरिदास; परमानन्द<br>गोविन्दप्रभु; सूरदास<br>छीतस्वामी; रसिकदास<br>कृष्णदास; गदाधर | १९ वीं श० | २२x१५.५ | ३-४, ७, ११, १६, २१; ३, ४<br>४-५, ६, १२, १७, १८<br>५, १३, १४, २१<br>५वां ; ६, ७, ९, १५-१६, २०, २२<br>६, ८, ११, १७; ६ से ११, १४ से २२<br>७, २० वें; ८, ११<br>११-१२; १३ वां |
| २६५० | ९०८७ (१) ९७-१०३ | पद-संग्रह ( डोल के ) | विट्ठल, व्यास, चतुर्भुजदास, परमानन्द, सूरदास, रामदास, गोविन्दप्रभु | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | १४५ से १५१ कुल १० पद हैं। |
| २६५१ | ९०८७ (१) १०७-११३ | पद-संग्रह ( डोल के ) | आसकरण, कृष्णदास परमानन्द, नन्ददास, माधोदास, हरिदास, कुम्भनदास | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | १६० से १६३ कुल ९ पद हैं। |
| २६५२ | ६४२७ | पद-संग्रह (नित्य के) | सूरदास, परमानन्द | १९४० | १९.५x१६.५ | १-५६ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६५३ | ६०८७ (१) १०४-१०६ | पद-संग्रह (फाग एवं स्फुट) | चतर्भुजदास, कृष्णदास, जनहरिदास | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | १५२-१६० | |
| २६५४ | १०६६६ (६) १-३ | पद-संग्रह (फाग के) | माधोदास मुरारिदास गोविन्दस्वामी | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ७२ वां ७३-८२ ८३ वाँ | |
| २६५५ | ६५६४ (१) | पद-संग्रह (रामचरित्र) (बसन्त-वर्णन) | जीवनलाल नागर | २० वीं श० | २२x१७.५ | १-५ | समकालीन प्रति है। गुटके में बूँदी के महाराजा रामसिंह के मंत्री-परिवार द्वारा निर्मित कृतियों का संकलन है। |
| २६५६ | ६०८७ (१)(१)(१) १-७ | पद-संग्रह (बसन्त के) | परमानंद, स्यामदास, सूरदास, चतुर्भुजदास, कुम्भनदास, कृष्णदास, श्रीभट्ट | १९ वीं श० | २१.५x१२.१ | ५-१० | प्रथम दो पत्रों पर 'गीत गोविन्द' के पद्य हैं। पत्राङ्क १-४ अप्राप्त। |
| २६५७ | ६०८७ (१) २-६ | पद-संग्रह (बसन्त के) | मानकचंद, परमानंद, रघुनाथदास, सूरदास, कृष्णदास, नन्ददास, छीतस्वामी, गदाधर, जनहरिया, हरिदास | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | १०-१५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६५८ | ९०८७ (१)१०-१५ | पद-संग्रह (बसन्त के) | छीतस्वामी, कृष्णदास, कल्याणराय, लघुगोपाल, सूरदास, कुम्भनदास | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | १५-१९ | कुल ३८ पद हैं। |
| २६५९ | १०६६९ (४) १-६ | पद-संग्रह (बसन्त, फाग, धमार) | चत्रभुज<br>गोविन्दस्वामी<br>सूरदास<br>गोविन्दप्रभु<br>कृष्णदास<br>परमानन्द | १९ वीं श० | २३.५x१७.५ | २०, २५, २७-२९<br>२१-२२<br>२३-२४<br>४८-४९<br>५०, ४९<br>२६,४०-४१ | |
| २६६० | १०६७२ (६) १-३ | पद-संग्रह (मान के) | परमानन्द, छीतस्वामी<br>सूरदास | १९ वीं श० | २२x१५.५ | ४७-४८<br>४८ वां | |
| २६६१ | ९०८७ (१) *१६-२५ | पद-संग्रह (धमार के) | केवलराम, लछीराम, माणकचंद, माधवदास, चतुरविहारी, सूरदास, वल्लभ, जनहरिया, गजाधर, विचित्रविहारी | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | १९-३४ | *१६-६६ तक धमार के कुल १४६ पद हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६६२ | ९०८७ (१) २६-३५ | पद-संग्रह ( धमार के ) | वल्लभ, विद्यापति, गोकुलचन्द, नन्ददास, कुम्भनदास, विट्ठल, सूरदास, परमानन्द, कृष्णदास, धौंधी | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | ३४-४२ | |
| २६६३ | ९०८७ (१) ३६-४५ | पद-संग्रह ( धमार के ) | आसकरण, गोकुलचंद, जनगोविन्द, चतुर्भुज, गोविंदप्रभु, छीतस्वामी, रसिकदास, दासगोपाल, सूरदास, हरिदास | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | ४२-५५ | |
| २६६४ | ९०८७ (१) ४६-५५ | पद-संग्रह ( धमार के ) | माधवदास, हितहरिवंश, परमानन्द, विट्ठल, कृष्णदास, हरिवल्लभ, कुम्भनदास, चतुर्भुज, ताजखान, गोपीदास, | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | ५५-६४ | |
| २६६५ | ९०८७ (१) ५६-६५ | पद-संग्रह ( धमार के ) | गोकुलचन्द, सूरदास, गोविन्दप्रभु, नन्ददास, गदाधर, परमानन्द, गोवर्द्धन, स्यामदास, गजाधर, नारायण | १९ वीं श० | २१.५x१२.५ | ६४-७६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २६६६ | ६०८७ (१)६६-७५ | पद-संग्रह (धमार के) | सूरदास, नन्ददास, स्यामदास, जसुदास, लछीराम, जगन्नाथ, हरिदास, रघुवीर, कुम्भनदास, जनगोविंद | १६ वीं श० | २१.५x१२.५ | ७७-१०० |
| २६६७ | ६०८७ (१)७६-८५ | पद-संग्रह (धमार के) | चतुर्भुज, सूरदास, विष्णुदास, लघुगोपाल, मोहनदास, छीतस्वामी, हरिदास, गोविन्दप्रभु, रामदास, कुम्भनदास | १६ वीं श० | २१.५x१२.५ | १००-१२४ |
| २६६८ | ६०८७ (१)८६-६६ | पद-संग्रह (धमार के) | गोकुलचन्द, नन्ददास, गदाधर, कृष्णदास, चतर्भुज, विट्ठल, मुरारिदास, जगन्नाथ, गोपालदास, वल्लभ, परमानन्द | १६ वीं श० | २१.५x१२.५ | १२४-१४५ |
| २६६९ | १०६६९ (६)१-९ | पद-संग्रह (धमार के) | अज्ञात; माधवदास जनहरिया; सूरदास गोविंदप्रभु; मुरारिदास गोपालदास; हरीदास छीतस्वामी | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ३०-३१, ३७, ३८; ३१-३४, ३६-३७ ३४-३५; ३८-३९ ३९-४३; ४३ वां ४४-४५; ४६ वां ४६-४८ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २६७० | १०६६६ (१५) | पद-संग्रह ( धवल पद ) | हरिदास | १६ वीं श० | २२.५x१७.५ | १२३ से १२६ |
| २६७१ | १०६६६ (३) १-४ | पद-संग्रह ( धोल के ) | कुम्भनदास; दामनुदास<br>हरिदास; माधवदास | १६ वीं श० | २२.५x१७.५ | १४; १६-१७<br>१८; १६ वां |
| २६७२ | ७८५८ (२) १-१० | पद-संग्रह ( धोल, सुखपाल, सोहिलो एवं रास के) | भगवानदास, परमानन्द, कृष्णदास, कल्याण, हितहरिवंश, सूरदास गोविंदप्रभु, कुम्भनदास, मुरारिदास, चत्रभुजदास | १६ वीं श० | १८.५x१५.५ | ४६ से ५६ |
| २६७३ | १०६७२ (४) १-१३ | पद-संग्रह ( वेणी के ) | सूरदास<br>परमानन्द<br>विट्ठल; छीतस्वामी<br>रसिकदास; चत्रभुज<br>आसकरन; नंददास<br>कुम्भनदास; रिषिकेश<br>जनभगवान; रामदास<br>जगजीवन | १६ वीं श० | २२.५x१५.५ | २६, २७-२८, ३०, ३१, ३३-३४, ३७, ३८, ४१, ४२<br>२६-२७, २८, २६-३०, ३१-३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७-३८, ३६, ४०, ४१, ४३-४४, ४५, ४६<br>२७, ३५, ३८, ३६-४०; २७, ४४, ४५-४६<br>२८-२६, ३२; ३०, ३२, ३३, ४२-४३<br>३२-३३, ४२; ३६, ३८-३६<br>३६ वां; ४० वां<br>४१ वां; ४२ वां<br>४५ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २६७४ | १०६७२ (३) १-६ | पद-संग्रह ( शृङ्गार के ) | विष्णुदास; चत्रभुजदास<br>छीतस्वामी<br>परमानंद, गोविन्दप्रभु<br>नन्ददास | १६ वीं श० | २२x१५.५ | २२-२३, २४; २३, २४-२५<br>२३ वां<br>२४वां<br>२५ वां |
| २६७५ | १०६७२ (६) १-४ | पद-संग्रह ( संझा की आरती के ) | परमानंद; छीतस्वामी<br>सूरदास; चत्रभुजदास | १६ वीं श० | २२x१५.५ | ६७ वां; ६७-६८, ६६ वें<br>६८ वां; ६६ वां |
| २६७६ | १०६७१ (४) १-३ | पद-संग्रह ( सेवापद ) | सूरदास, चत्रभुज,<br>छीतस्वामी | १६ वीं श० | २४x१३.५ | २१ से २३ |
| २६७७ | ६४२६ १-२ | पद-संग्रह ( हिंडोरा के ) | कृष्णदास, नंददास | १८ वीं श० | २७.५x१३ | १ से ६० पत्र अस्तव्यस्त हैं। |
| २६७८ | ६३३७ (५) १-४ | पद-संग्रह ( हिंडोरा के ) | तुलसीदास, कृष्णदास,<br>शोभाराम तिवारी | २० वीं श० | १६.५x१८ | २७ से ३४<br>पत्र संख्या ३४-३५ पर 'मानस पूजा विधि' भी है। |
| २६७६ | १०६६६ (५) १-८ | पद-संग्रह ( होरी ) | जसुदास; अज्ञात<br>कनीलाल; स्यामदास<br>गोविन्दप्रभु; वल्लभ<br>परमानंद; मांनिकचंद | १६ वीं श० | २३.५x१७.५ | ४६-५०; ५१-५२, ५८, ६०-६४<br>५२ वां; ५२-५४<br>५५-५६; ५६-५७<br>५७ वां; ५६ वां |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६८० | ६४३२ (२) | पद-संग्रह (होरी) | किशोरीदास | १६ वीं श० | २२.५x१७ | १-८ | ५१ पद हैं। |
| २६८१ | ६३३७ (२) | पद-संग्रह (होरी) | शोभाराम तिवारी, जगन्नाथ कविराय, तानसेन, उदयराज, गदाधर, सूरदास, तुलसीदास, ठाकुर, काशीराम | १६ वीं श० | १६.५x१३ | १-१७, ३६-३७ | |
| २६८२ | ६७२० (११) | पन्नावीरमदै री वात | | १६ वीं श० | २०x१०.५ | ६०-१४२ | |
| २६८३ | ६६७२ | पवनविजय स्वरोदय (सभाषा टीका गद्य) | | १८६१ | ३२.५x१६ | १-१० | कुल २८६ छन्द हैं। |
| २६८४ | ८७०८ | पवित्रामण्डल ब्रजलीला | | १८७५ | २६x१८.५ | १-६५ | |
| २६८५ | ८६६३ (४) | पहेली और मुकरियाँ | | १६ वीं श० | १६x१३.५ | ६६-७४ | |
| २६८६ | ६२६६ (२) | पाण्डवगीता | | गु० १७३५ | १६.५x१५ | २६-३७ | लि. क. आनन्दराम मिश्र कृति संस्कृत में है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६८७ | ६२२१ (१) | पाण्डवगीता स्तोत्र | | १९ वीं श० | १५x१३.५ | १-१६ | कृति संस्कृत में है। |
| २६८८ | ८८२३ | पाबूजी रा दूहा | लधराज | १९ वीं श० | २५x१०.५ | १–५ | कुल ३०१ दोहे हैं। र. का. १७७८ |
| २६८९ | ८४०० (२१) | पार्श्वनाथ-गीत | धर्मसी | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ५९-६० | |
| २६९० | ८४०० (११) | पार्श्वनाथ-गीत | समयसुन्दर | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ४०-४१ | |
| २६९१ | ८४०० (२०) | पार्श्वनाथ-गीत | जिनचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ५९ वां | |
| २६९२ | ८४०० (३१) | पार्श्वनाथ-गीत | जिनचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ७०-७१ | |
| २६९३ | ८४०० (४१) | पार्श्वनाथ-गीत | लालचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८३ वां | |
| २६९४ | ९०८८ (१) | पार्श्वनाथ-छन्द | प्रमोद | १९५६ | २२.५x१३.५ | १-२ | लि. क. मोहनकीर्त्ति लि. स्था. लाखोला ग्राम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६६५ | ८४०० (५) | पार्श्वनाथजी री नीसाणी | जिनहर्ष | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ११-१६ | |
| २६६६ | ८४०४ (६)१६ | पार्श्वनाथ-स्तवन | धरमेन्द्रसूरि | १६ वीं श० | २०x१३ | ६१-६२ | |
| २६६७ | ८४०० (३५) | पार्श्वनाथ-स्तवन | पाशचन्दसूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ७३-७५ | |
| २६६८ | ८४२२ (२१) | पार्श्वनाथ-स्तोत्र | मितविलास | गु० १७७६ | २३x२० | ८७-८८ | कर्त्ता का नाम स्पष्ट नहीं है। |
| २६६९ | ८५६२ (१०) | पीपाजी री चितावणी | | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | १३१-१३४ | पत्र संख्या १३५ पर स्फुट कवित्त-सवैया है। |
| २७०० | ८१९० (४) | पीपाजी री परचई | जनगोपाल | १८ वीं श० | १२.५x१६ | ४०-९० | किञ्चित अपूर्ण। अन्त में छीतमजी की 'जखड़ी' भी है। |
| २७०१ | ६२५१ | पूर्णमासी री कथा | | १६ वीं श० | २०x१४.५ | १-४१ | अपूर्ण। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७०२ | ८५६२ (५)२ | पृथ्वीराज चहुआण रा कवित्त सवैयादि | कवि चन्द, कवि गद | गु० १७६५ | २४.५x१५.५ | ६७-६८ | |
| २७०३ | ८५६२ (५)१३ | पृथ्वीराज चहुआण रो छन्द | | गु० १७६७ | २४.५x१५.५ | ७६-७८ | कृति में पृथ्वीराज के बंदी-काल का वर्णन है। लि. क. पंचोली गुलाबराय हरिदासोत |
| २७०४ | ६३३४ | पृथ्वीराजरासो ( महवो खण्ड ) | कवि चन्द | १८२६ | २०.५x१४ | १-४३ | अन्तिम पत्र पर उम्मेदसिंहजी का कवित्त है। गुटके के अन्दर चार पत्रों में (नवीन प्रतिलिपि) रासो के कुछ छन्द हैं। |
| २७०५ | ६३३५ | पृथ्वीराजरासो | चन्दवरदाई | १८१२ | २६x१६ | १३-३२६ | लि. क. राधाकृष्ण—ठाकुर हमीरसिंह पठनार्थ। पत्र संख्या १-१२ अप्राप्त। 'कनवज खण्ड से शहाबुद्दीन युद्ध वर्णन खण्ड' पर्यन्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७०६ | ८४१४ (१) | प्रह्लाद-चरित्र | जनगोपाल | १९ वीं श० | १३X७ | १-९३ | प्रथम ५ पत्र अप्राप्त। पत्र संख्या ९४ से ९७ पर 'सप्त श्लोकी गीता' । पत्र संख्या ९७ से १२१ पर 'गीता माहात्म्य' वराह-पुराणगत, संस्कृत में तथा पत्र संख्या १२१-१२४ पर 'रामाष्टक' संस्कृत में और पत्र संख्या १२४-१२५ पर 'चतुःश्लोकी भागवत' संस्कृत में है। |
| २७०७ | ९५६२ (८) | प्रह्लाद-चरित्र | जनगोपाल | गु० १७९५ | २४.५X१५.५ | ९७–११७ | लि. क. पंचोली गुलाबराय हरिदासोत ने अपने मामा बगसीराम की पोथी से उतारा। अंत में पत्र संख्या ११७ पर शृङ्गारिक कवित्त हैं। |
| २७०८ | ९२५४ (६) | प्रास्ताविक छन्द | बुद्धसेन | गु० १८१० | १६.५X१३.५ | २५-२९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७०९ | १०१४५ | प्रीति-चौवनी | ध्रुवदास | १९ वीं श० | १६.५x११ | १-६ | |
| २७१० | ९२४२ | प्रीतिवेल | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७.५x१९.५ | १-१८ | र. का. १८६९ (रचनाकालीन प्रति) |
| २७११ | ९३१७ | प्रेम-पच्चीसी | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | १७x१०.५ | १-८ | महाराजा माधवसिंह प्रीत्यर्थ। अक्षर धुंधले हो गए हैं। |
| २७१२ | ९७२० (४) | प्रेम-पत्रिका | रसराशि | १९ वीं श० | २०x१५.५ | १२-१३ | |
| २७१३ | ९२३७ | प्रेम-वहार | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१९ | १-१३ | र. का. १८६९ (रचनाकालीन प्रति) |
| २७१४ | ९४३१ (६) | प्रेम-मञ्जरी (रूप मञ्जरी) | जनबद्रीअलि | गु० १८७६ | २१x१५.५ | १-४ | अंतिम ५ पत्रों पर 'कामंदकीय नीति शास्त्र' भाषा है। |
| २७१५ | ७८७८ | फुटकर किस्से | | १८९९ | २३.५x१८ | १-३५ | अन्त में हाड़ाओं का एक कवित्त और अन्तिम पत्र में 'राधिका स्तोत्र' (अपूर्ण) है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७१६ | ६२५२ (४) | पूल चितावणी | | गु० १७७४ | २१.५x१४ | १-३ | |
| २७१७ | ८४२२ (२२) | बंभणवाड़ी स्तोत्र | कमलकलशसूरि शिष्य | गु० १७७६ | २३x२० | ८८-८९ | |
| २७१८ | ८८५७ (१)६ | बारहमासा | जुगतानन्द | १९ वीं श० | १६x१४ | १६५-१६७ | पत्र जीर्ण। पत्र संख्या १६७ से १६८ पर ८ कवित्तादि हैं। |
| २७१९ | ९०२६ (२) | बारहमासा | सुन्दरदास | १७९२ | २५x१० | ३१-३४ | |
| २७२० | ६२६० (१) | बारहमासा रा दोहा | मुरलीदास | १९ वीं श० | २२x१४ | २८२-२८३ | प्रारम्भ के २८१ पत्र अप्राप्त। |
| २७२१ | ६१६९ (३) | बालचन्द बत्तीसी | बालचन्द | १८२४ | २५x११ | ९-१२ | |
| २७२२ | ८४२२ (३६) | वाहुवलि सज्झाय | समयसुन्दर | गु० १७७६ | २३x२० | १०१-१०२ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७२३ | ६२२८ (३) | विचारमाला | अनाथदास | १६ वीं श० | २५.५x१४.५ | २-१२ | र. का. १७२६ प्रथम पत्र अप्राप्त। |
| २७२४ | ६०४६ | बिहारी सतसई | बिहारीलाल | १६ वीं श० | २१.५x१४.५ | १-५६ | अपूर्ण— पत्र संख्या १ से ४ के प्रथम ५३ दोहे अप्राप्त। पत्र संख्या ४५ के बाद दोहा संख्या ७५ से ६८ अप्राप्त। |
| २७२५ | ६२६६ (६) | बिहारी सतसई (सटिप्पण) | बिहारीलाल | १७३५ | १६.५x१४ | १३६-१७३ | लि. क. ऋषि दीपचन्द लि. स्था. श्री राघवपुर |
| २७२६ | ८६६१ | बिहारी सतसई | बिहारीलाल (बिहारीदास माथुर) | १८ वीं श० | २५.५x१०.५ | १-१६ | जीर्ण प्रति। |
| २७२७ | ८२२७ | बिहारी सतसई | बिहारीलाल | १८३६ | २७.५x१२.५ | १-२५ | लि. स्था. प्रतापगढ इसमें ७०४ दोहे हैं। अन्त में कुछ अन्य कवियों के सूक्तिपरक कवित्त सङ्कलित हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७२८ | ८०१२ (१) | विहारी सतसई | विहारीलाल् | २० वीं श० | २४x१४ | १-८ | अपूर्ण—२०२ दोहों तक। |
| २७२९ | ९४३१ (१) | बिहारी सतसई | बिहारीलाल | १७८६ | २१x१५.५ | १-३९ | पत्र संख्या १३ पर तथा अन्तिम ८ पत्रों पर कवित्त-संग्रह है। |
| २७३० | १०१८२ | विहारी सतसई | विहारीलाल | १९ वीं श० | २४.५x२०.५ | १-६७ | कुल ७०९ दोहे हैं। लिपि सुडौल एवं सुन्दर है। |
| २७३१ | ९५५६ (६) | ब्रह्म-रमैनी, रेखता आदि | कबीरदास | १९ वीं श० | २२.५x१०.५ | ४४-७१ | पत्र संख्या ७२ से ७५ पर 'शाबर-मंत्रादि' हैं। पत्र संख्या ७६-७७ पर स्फुट पद हैं। |
| २७३२ | ९८३६ (१) | भँवर-गीता | जनमोहन | १९ वीं श० | १२x१० | १२-१८ | पत्र संख्या १-११ अप्राप्त। |
| २७३३ | १०९७९ (२) | भँवर-पच्चीसी | | २० वीं श० | १५.५x११ | ८-१० | १७ दोहे ही हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७३४ | ८८५७ (१) | भक्त-प्रबोध | गुसांई जुगतानन्द शिष्य चरणदास | १९ वीं श० | १९x१४ | १-८४ | पत्र बड़कने हैं। पत्र संख्या १६७ पर दिए गए कवित्तों में रचना काल १८२४ दिया है। |
| २७३५ | ८९२७ | भक्तमाल (भक्तिरस-बोधिनी टीका) | मू० नाभादास टी० प्रियादास | १९१२ | २५.५x१३.५ | १-१५९ | टी. र. का. १७६९ लि. स्था. पंजाब (पटियाला) ग्रंत में लालदास कृत टीका की प्रशस्ति में पद्य हैं। |
| २७३६ | ९०८८ (४) | भक्तामर स्तोत्र भाषा | हेमराज | १९५६ | २२.५x१३.५ | ८-१६ | लि. क. मोहनकीर्ति लि. स्था. लाखोला ग्राम |
| २७३७ | ८१६१ (४) | भक्तिभावती | प्रसन्नगैसानन्द | १७५४ | २१.५x१६ | १०५-१२३ | र. का. १६०९ लि. क. रूपदास र. स्था. मथुरा |
| २७३८ | ९७३६ (४) | भक्तिसदाचार सागरी | रूपरसिक | १९ वीं श० | ३०.५x२१.५ | २६६-२७१ | कुल १४० छन्द हैं। |
| २७३९ | ९३२४ (२) | भगवद्गीता-भाषा | भोलानाथ | २० वीं श० | २२.५x१७.५ | १-३३ | १५ वें ग्रध्याय पर्यन्त— नवीन प्रति। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७४० | ६३२१ | भगवद्‌गीता भाषा-पद्यानुवाद | कवि भोलानाथ | १६ वीं श० | २२x१५ | १-४८ | र. का. १८२० नवलसिंह भूपाल की आज्ञा से वाघसिंह हित रचित। भोलानाथ के वंशजों से प्राप्त संग्रह की प्रति। |
| २७४१ | ६२६६ (५) | भगवद्‌गीता | | १७३२ | १६.५x१४ | ८३-१३८ | संस्कृत में है। लि. क. आनन्दराम मिश्र लि. स्था. रामपुरा |
| २७४२ | ८६२८ (१) | भगवद्‌गीता भाषा-पद्यानुवाद | हरिवल्लभ | गु० १६२६ | १७x१२ | १-११५ | प्रारम्भ के चार पृष्ठों पर 'विनियोगध्यानादि' है। |
| २७४३ | ८६६२ | भरथरी-सार | हरिदास | १६०४ | २०x१५ | १-६६ | र. का. १६६६ लि. क. पं० गणेश लि. स्था. गोपाचल |
| २७४४ | ७८६१ (१५) | भवानी अष्टक | | गु० १६१५ | १७x१३ | ८१-८२ | लि. क. भज्जूराम लि. स्था. वामनवास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७४५ | ९२२८ (१) | भागवत एकादश स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | चतुरदास शिष्य संतदास | १९ वीं श० | २५.५x१४.५ | १-१४४ | |
| २७४६ | ९३२५ | भागवत दशम स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २५x१७ | १-१०७ | र. का. १८२९ महाराज नवलसिंह प्रीत्यर्थ। कवि वंशजों से प्राप्त प्रति। ४९ वें अध्याय पर्यन्त। |
| २७४७ | ९४३३ | भागवत दशमस्कन्ध भाषा | वेणीदास | १८५३ | २४x१७ | १-६५३ | र. का. १७२३ लि. क. सदाशिवलाल |
| २७४८ | ९५९४ (२) | भागवत द्वादश स्कन्ध भाषा संक्षेप | शंभुराम पुत्र जीवनलाल | २० वीं श० | २२x१७.५ | ५-३९ | पत्रों के किनारे टूटे हुए हैं। बूँदी के महाराजा बिशनसिंह के पुत्र रामसिंह के मंत्री तुलाराम नागर के लघुभ्राता शंभुराम द्वारा निर्मित। |
| २७४९ | ८१९० (३) | भागवत द्वितीय स्कन्ध चतुर्थाध्याय भाषा | | १८ वीं श० | १२.५x९ | २९-३९ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७५० | ६४२८ | भागवत महापुराण पञ्चम स्कन्ध भाषा | | १६ वीं श० | २३x१६.५ | २-६६ | पुष्पिका अपूर्ण। कीटविद्ध। पत्र संख्या १, ३, ५, ६, ८ अप्राप्त। |
| २७५१ | ६७२० (२) | भावना-पच्चीसी | | १६ वीं श० | २०x१५.५ | ६-१० | |
| २७५२ | ७८७१ | भाषा-भूषण | महाराजा जसवंतसिंह | १६ वीं श० | १६x११.५ | १-२१ | |
| २७५३ | ६३३१ | भूपतीन्द्रविलास | | १६ वीं श० | २२x१४.५ | १-५७ | अपूर्ण—खण्डित प्रति। दिल्ली के चहुआन राजा भूपतीन्द्र प्रीत्यर्थ। |
| २७५४ | ६०६३ | भेद-भास्कर | | १६ वीं श० | २२.५x११.५ | १-८ | गुरु-शिष्य-संवाद रूप में है। पत्र संख्या ८ पर 'चतुः-श्लोकी भागवत' है। |
| २७५५ | ८५६२ (२) | भोगलपुराण | | १७६४ | २४.५x१५.५ | १-३६ | लि.क. अखैराम—गुलाबजी की पोथी से प्रतिलिपि कृत। लि. स्था. उदयपुर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७५६ | १०१३९ (२) | भोगलपुराण | | १८१६ | १४x१३ | ४७-५९ | |
| २७५७ | ६४२५ (७) | भ्रमर-गीत | | १८१८ | २१.५x१७ | ४१-५० | महाजनी लिपि में। पत्र संख्या ५० - ५१ पर स्फुट पद्य-संग्रह है। |
| २७५८ | ९२४९ (१) | भ्रमर गीत (भागवत दशम अध्यायगत) | | १८६६ | २६.५x१८.५ | २-२९ | प्रथम पत्र अप्राप्त। ११७ छन्द हैं। |
| २७५९ | ८४२२ (४१) | मगसी पार्श्वनाथ स्तवन | पद्मांकज शिष्य जीवविजय | गु० १७७६ | २३x२० | १०७–१०८ | लि. क. मुनि अमरसागर |
| २७६० | ८४२२ (२९) | मगसी पार्श्वनाथ-स्तवन | गुणसागर सूरि शिष्य पद्मसागर सूरि | गु० १७७६ | २३x२० | ९०-९१ | |
| २७६१ | ९७२८ (१) | मदनाष्टक | | १९ वीं श० | २१x१६.५ | १–७ | कृति संस्कृत में है। |
| २७६२ | ८५०७ (४) | महादेव-गोरख-संवाद | | १९०६ | १६x१२ | १-३ | लि. क. रामदास कबीरपंथी |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७६३ | ९३२४ (१) | महाभारत-भाषानुवाद (भीष्म पर्व) | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २२.५x१८ | १-३०८ | र. का. १८३२ कवि वंशजों से प्राप्त प्रति। |
| २७६४ | ८५६२ (५)१० | महाराणा अमरसिंहजी रो गीत | तेजसिंह बारठ | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ७४ वां (अ) | |
| २७६५ | ८४०० (४८) | महावीर पारणा-स्तवन | देवीचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ९०-९२ | यह गुटका भोजराज पुत्र अखैराज का है। |
| २७६६ | ८४२२ (१०) | महावीर-स्तवन | सेवक लक्ष्मण | गु० १७७६ | २३x२० | ५१-६३ | र. का. १५२१ |
| २७६७ | ८४०४ (६)४० | महावीर-स्तुति | समयसुन्दर | १९ वीं श० | २०x१३ | ७३-७५ | |
| २७६८ | ८४०० (३६) | महावीर स्वामीजी रा पारणा | मुनिमाल | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ७५-७८ | ३१ छंद हैं। |
| २७६९ | १०६६७ (७) | महिमासमुद्र | रामचरण | १८९१ | १२x९ | ३९१-३९७ | 'चोहडू कृत' वालकराम |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७७० | ६७३६ (७) | मांझ बत्तीसी | रूपरसिक | १६ वीं श० | ३०.५x२१.५ | ७२-७४ | अपूर्ण—२७ पद मात्र। |
| २७७१ | ६२६४ (५) | माखन चोरी-लीला | चरणदास | १८ वीं श० | १६.५x११ | ६८-६६ | |
| *२७७२ | ६३३३ | माधवानल कामकन्दला कथा-चउपई | आलम | १८८१ | २२x१५ | १-५० | र. का. हि. संवत् ६६१—अकबर के शासनकाल में। लि. क. मिश्र पोहैकर लि. स्था. रोसी नगर |
| २७७३ | १०२४७ (६) | मारवाड़ री पीढियाँ री विगत | | गु० १८८२ | १६x१२ | २५ वाँ | सेतराम से मानसिंहजी तक। |
| २७७४ | १०६६७ (६) | मुरलीरामजी की अणभै वाणी, कृति-संग्रह एवं पद-संग्रह | जनमुरली सं. क. नानजी | १८४१ | | ४०६-८१० ८१०-८४१ ८५१-८५४ | सं. का. १८४० ८ ग्रन्थ हैं। सं. स्था. बालाखेड़ा (हाड़ौती प्रदेश) लि.क. टैलदास लि. स्था. बालोतरा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७७५ | ६११७ (२) | मूलपुरुष | द्वारिकेश | २० वीं श० | १६x१२.५ | २२-३० | इसमें वल्लभाचार्यजी की वंशावली है जो मूल पुरुष भगवान नारायण से प्रारंभ होती है। |
| २७७६ | १०६६६ (११) | मूलपुरुष | द्वारिकेश | १९ वीं श० | २२.५x१७.५ | ९०-९६ | पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ। |
| २७७७ | ९४२५ (४) | मूलपुरुष | द्वारिकेश | १९ वीं श० | २१.५x१७ | २२-२७ | |
| २७७८ | ८५५८ (२) | मृगकपोत-चौपई | चतुर्भुजदास | १९ वीं श० | १५x११.५ | १-१९ | पत्र संख्या २० व २१ पर 'नरसिंहजी की आरती' है। |
| २७७९ | ८५६२ (५)५ | मोकमसिंहजी शक्तावत रो गीत | भीमजी आढा | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ७१ वां (अ) | भींडर ठिकाने के। |
| २७८० | १०६६७ (१२) | मोरधजरी लावणी | | गु० १८१४ | १२x९ | ८५४-८७४ | |
| २७८१ | ८१९० (२) | मोहमरद राजा की कथा | जन जगन्नाथ | १८ वीं श० | १२.५x९ | १९-२९ | पत्र बड़कने हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७८२ | ६३२६ | मोहविवेक | रामदास कायस्थ (टोडा निवासी) | २० वीं श० | १५x१०.५ | १-२७ | र. का. १६२३ |
| २७८३ | ६३२० | युगलविलास | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | १६x११ | १-२९ | र. का. १८२८ के लगभग। भोलानाथ के वंशजों से प्राप्त संग्रह की प्रति। |
| २७८४ | ६३२७ (१) | युगलविलास | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २८x१८.५ | १३-२७ | कवि के वंशजों से प्राप्त प्रति। पत्र अस्तव्यस्त—दो प्रतियां। प्रारम्भ में राज-वंशावली प्रशस्तिपरक एक पत्र है। सभी पत्र रफ लिखे हुए ज्ञात होते हैं। |
| २७८५ | ६३२६ | युगलविलास (अष्टयाम) | कवि लाला हरसहाय | १८१३ | २१x१४ | १–१८ | संभवतः समकालीन प्रति। |
| २७८६ | ६६९६ | यमन के बादशाह निहायत साहब का किस्सा | | २० वीं श० | २८x१८.५ | १-२६८ | कथा उर्दू भाषा में है। नवीन प्रतिलिपि। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२७८७ | ८०८२ | रसप्रबोध | दौलत कवि | १८६९ | १५.५x११.१ | १-२९ | र. का. १८६६ लि. क. कल्याणदास कुंभट, मुहणोत सौभाग्यसिंहजी की परत से प्रतिलिपि कृत। लि. स्था. किशनगढ़ आद्य दो पत्रों के १८ छन्द अप्राप्त। |
| २७८८ | ६७३५ (१) | रत्न-परीक्षा | रत्नसागर | १९०२ | १७x११ | १-४१ | र. का. १७५५ लि. क. कनीराम लि. स्था. सवाई माधोपुर ठाकुर श्री भोपालसिंहजी को 'नज़र' करने के लिए लिखी गई प्रति। |
| २७८९ | ६२५४ (७) | रसमञ्जरी | नन्ददास | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | १-१८ | अन्त में चन्द कवि कृत स्फुट कवित्त हैं। |
| २७९० | १०१७९ | रसमञ्जरी भाषा | मू० भानुदत्त भा० छज्जूमल्ल | १७३२ | २५x११ | १-१२ | लि. क. पं० अमरविजय नायिका भेद के ८२ छन्द हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७९१ | ९३३० | रसमञ्जरी भाषा | कवि आनन्द | १७०८ | १२x१४ | १-२३ | लि. क. शिरोमणि |
| २७९२ | १०१३७ | रसमुक्तावली | ध्रुवदास | १८४६ | १७.५x११ | १-२१ | प्रथम पत्र अप्राप्त। कुल ८९ छन्द हैं। |
| २७९३ | ९०५४ (१) | रसराज | मतिराम | २० वीं श० | २०.५x१६ | १–५४ | आधुनिक नीले लेजर पर काली और लाल स्याही से सुलिखित प्रति। |
| २७९४ | ९२५४ (३) | रसराज | मतिराम | १८१० | १६.५x१२.५ | १३२–२४१ | पत्रों में पृष्ठाङ्क लगे हैं। |
| २७९५ | ९७२० (६) | रसराज | मतिराम | १९ वीं श० | २०.५x१५.५ | १-४० | अन्त में 'शुक्लाभिसारिका' के कवित्त हैं। |
| २७९६ | ९८५८ | रसराज | मतिराम | १९ वीं श० | १६.५x१४ | ८४-१२२ | अपूर्ण—३८२ छन्द पर्यन्त। पत्र संख्या १ से ८३ एवं ८५ वां अप्राप्त। |
| २७९७ | १ १० (२) | रसराज | मतिराम | १७८५ | २१x१६ | ४८-५२ | अपूर्ण—पत्र संख्या १से ४७ अप्राप्त, छन्द संख्या ३७६ से ४१९ पर्यन्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७९८ | १०१५१ | रसशिरोमणि | | १९ वीं श० | २०x१५ | १-२० | अपूर्ण— १२५ वें छन्द पर्यन्त। |
| २७९९ | ९७२० (१) | रसिक-पच्चीसी | रसराशि | १९ वीं श० | २०x१५.५ | १-५ | महाराजा सवाई प्रतापसिंह की आज्ञा से रचित। अन्त में स्फुट सवैया है। |
| २८०० | ८४२४ | रसिकप्रिया | केशवदास | १९ वीं श० | २२x१४ | ३-६६ | आदि व अन्त के पत्र अप्राप्त। |
| २८०१ | ८४४१ | रसिकप्रिया | केशवदास | १७८५ | २५.५x११.५ | १-१०० | लि.क. मुनि जगराज शिष्य ज्ञानराज |
| २८०२ | ८६४९ | रसिकप्रिया | केशवदास | १८ वीं श० | २३.५x१३ | १-९७ | जीर्ण प्रति। |
| २८०३ | ९२५४ (१) | रसिकप्रिया | केशवदास | १८०९ | १६.५x१३.५ | ६-१११ | लि. स्था. जोधपुर प्रथम प्रभाव अप्राप्त, प्रथम ५ पत्र अप्राप्त। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८०४ | १०२२२ | रसिकप्रिया सटीक | केशवदास | १९ वीं श० | २५x१०.५ | १–४० | अर्थ गद्य में किया गया है। गुजराती भाषा का पुट है। |
| *२८०५ | ९४३१ (३) | रसिकरत्नावली | नागरीदास (महाराजा सावंतसिंह) | १७८६ | २१x१५.५ | १-५ | र. का. १७८२ |
| २८०६ | ९४२९ | रसोई पातस्याही की (पोथी) | | १९ वीं श० | २१.५x१६.५ | १–१२९ | फारसी के ग्रन्थ 'नुस्ख़-ए-शाहजानी' का जयपुरी भाषा में अनुवाद। |
| २८०७ | ८७०५ (४) | राजजोग ग्रन्थ | | गु० १८९१ | १४x८.५ | ५८-८३ | |
| २८०८ | ८६६३ (६) | राजनीति रा दोहा | जसराम | १९ वीं श० | १९x१३.५ | ८२-१११ | र. का. १८१४ सोढा जगमाल सुत उदयसिंह के लिए रचित। |
| २८०९ | ८४०० (२३) | राणकपुर गीत | समयसुन्दर | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६१-६२ | र. का. १६७६ |
| २८१० | ८४२२ (४४) | राणपुरा (राणकपुर) रो स्तवन | शिवसुन्दर शिष्य देवसुन्दर | गु० १७७२ | २३x२० | ११३–११४ | र. का. १७१५ कर्त्ता–सांडेराव गच्छ का है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८११ | ९२०० | राम आरती-शकुनविचार | तुलसीदास | १९ वीं श० | २२x१० | १-२४ | अन्तिम पत्र खण्डित। सात सर्गों में। |
| २८१२ | ८२०९ | रामगीता सभाषा टीका | केशवदास वैष्णव | १८९९ | २५x१४ | १-२९ | टी. र. का. १८६१ लि. क. श्रीगौड़ रघुनाथ अध्यात्मरामायण के उत्तर-काण्डान्तर्गत। |
| २८१३ | ८९१९ | रामगीता सभाषा टीका | केशवदास वैष्णव | १८६५ | २७x१४ | १-३० | टी. र. का. १८६१ 'भू रस वसू विश्वंभभरु' लि. क. मोकमराम प्रथम पत्र अप्राप्त। |
| २८१४ | ८६६७ | रामगीतावली | गो० तुलसीदास | १८५७ | २४.५x१०.५ | १-११९ | लि. क. सनमुखराम |
| २८१५ | ८४८९ | रामचन्द्रिका | केशवदास | १८५४ | २५x१९ | १-१४३ | लि. क. महात्मा शंभुराम लि. स्था. सवाई जयपुर |
| २८१६ | ८१९३ | रामचन्द्रिका | केशवदास | १९ वीं श० | २४x१५.५ | १७-१७४ | अन्तिम पत्र खण्डित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८१७ | १०६६७ (४) | रामचरणजी की अणभै वाणी एवं कृति-संग्रह | रामचरण शिष्य कृपाराम | गु० १८४१ | १२x६ | ३-३५० | सं. का. १८२७<br>सं. क. नवलराम<br>सं.स्था. शाहपुरा(भीलवाड़ा)<br>लि. क. टैलदास<br>लि. स्था. पाली |
| २८१८ | १०६६७ (८) | रामचरणजी की महिमा का सवद | द्वारकादास, मालिदास जनभगवान, तुलछी सेवादास | १८४१ | १२x६ | ३६७-४०६ | विभिन्न संतों के सवदों का संग्रह है। |
| २८१९ | १०६६७ (१०) | रामचरणजी की लावणी (बारामासी) | दासकरन | गु० १८४१ | १२x६ | ८४१-८४८ | |
| २८२० | ७८६४ | रामचरितमानस (बाल-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | ३०.५x१४ | १-११८ | प्रारम्भ व अन्तिम पत्र खंडित। |
| २८२१ | ७८६५ | रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | ३०x१४ | १-६१ | |
| २८२२ | ७८६६ | रामचरितमानस (अरण्य-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८४० | ३०x१४ | १-२५ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८२३ | ७८६७ | रामचरितमानस (किष्किन्धा-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८४० | ३०x१४ | १-१२ | |
| २८२४ | ७८६८ | रामचरितमानस ( सुन्दर-काण्ड ) | गो० तुलसीदास | १८४० | ३०x१४ | १-२० | केवल इसी काण्ड की पुष्पिका में लिपिकाल दिया गया है। |
| २८२५ | ७८६९ | रामचरितमानस ( लङ्का-काण्ड ) | गो० तुलसीदास | १८४० | ३०x१४ | १-४६ | |
| २८२६ | ७८७० | रामचरितमानस ( उत्तर-काण्ड ) | गो० तुलसीदास | १८४० | ३०x१४ | १-४७ | ग्रन्थाङ्क ७८६४ से ७८७० पर एक ही प्रति के विभिन्न काण्ड हैं। |
| २८२७ | ७८८८ | रामचरितमानस ( बाल-काण्ड ) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | ३२x१५ | १-६४ | अपूर्ण। |
| २८२८ | ८१४९ | रामचरितमानस ( बाल-काण्ड ) | गो० तुलसीदास | १९१४ | २६x१६.५ | २-९९ | प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क. बगसूराम गुर्जरगौड़ लि. स्था. उणियारा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८२९ | ८२२३ | रामचरितमानस (अयोध्या, अरण्य, सुन्दर और लङ्का-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १७८८ | २७x१२ | १-१८० | लि. क. पीताम्बरदास लि. स्था. काशी |
| २८३० | ८४०६ | रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड अरण्य-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | २६x१६.५ | २-१९८ १-५३ | अपूर्ण— जिल्दयुक्त गुटका। प्रथम पत्र एवं पत्र संख्या ८९ अप्राप्त। पत्र अस्तव्यस्त। |
| २८३१ | ८६४८ | रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | २३.५x१४.५ | १-११५ | |
| २८३२ | ९०७७ | रामचरितमानस (बाल-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८७० | २२.५x१२.७ | १-२६ | लि. क. गपरराम लि. स्था. कोटा, नीलकण्ठ समीपे, चरमण्वती(चम्बल)तीरे ठाकुर बैजूसिंहजी पठनार्थ। |
| २८३३ | ९०७८ | रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८८७ | २१.५x१४ | १-२३४ | |
| २८३४ | ९०७९ | रामचरितमानस (सुन्दर-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८९३ | २३x१३ | १-२३५ | लि.क. हीरालाल खण्डेलवाल लि. स्था. कृष्णगढ़ सुलिखित प्रति। |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८३५ | ९०८० | रामचरितमानस (अरण्य-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८८७ | २३x१३ | १-५९ | लि. क. रूपदास वैष्णव लि. स्था. कृष्णगढ़ |
| २८३६ | ९०८१ | रामचरितमानस (लङ्का-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८९२ | २३x१३ | १-११९ | लि. क. ललितादास ब्राह्मण लि. स्था. कृष्णगढ़ |
| २८३७ | ९०८२ | रामचरितमानस ( उत्तर-काण्ड ) | गो० तुलसीदास | १८२२ | २२.५x१३ | १-५७ | लि. क. राममङ्गल वैष्णव लि. स्था. दक्षिण देशे, गोदावरी तीरे, जेथर मध्ये |
| २८३८ | ९३२८ | रामचरितमानस | गो० तुलसीदास | १८९८ | २१.५x१८ | १-४३५ | किनारे त्रुटित । |
| २८३९ | ९५५३ | रामचरितमानस (बाल-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १९ वीं श० | ३३.५x१५ | १-१५९ | अपूर्ण — छन्द संख्या २९५ पर्यन्त । |
| २८४० | ९६६५ | रामचरितमानस (सचित्र) (लङ्का एवं उत्तर-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १८९३ | ३३.५x१७ | १-७१ | दोनों काण्डों को समग्र चित्र संख्या १०० है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८४१. | ६७२१ (२) | रामचरितमानस (सुन्दर-काण्ड) | गो० तुलसीदास | गु० १६१७ | २०x११ | १-३७ | अपूर्ण । |
| २८४२ | ६७२१ (३) | रामचरितमानस (अरण्य-काण्ड) | गो० तुलसीदास | गु० १६१७ | २०x११ | १–६ | अपूर्ण । |
| २८४३ | १०६८१ | रामचरितमानस (किष्किन्धा-काण्ड) | गो० तुलसीदास | १६८८ | १७x१० | १-२८ | सुलिखित । काश्मीरी पत्र । पत्रों के चारों ओर रंगीन बॉर्डर है । |
| २८४४ | ८८५६ | रामचरित्र (लङ्का-काण्ड) (अवतारचरित्रान्तर्गत) | नरहरिदास बारठ | १८६७ | ३६x२१ | ७५–११५ | लि. क. रामावतार चतुर्वेदी एक ही ग्रन्थ तीन हिस्सों में ग्रन्थाङ्क ८८५८ से ८८६० पर उपलब्ध । |
| २८४५ | १०६७० | राम-नामावली | गुसाईं जगन्नाथ पुत्र वेणीदत्त | १८८२ | २३x१० | १-१० | लि. क. देवीदास |
| २८४६ | ६८३६ (२) | रामरक्षा(रामरिछया)स्तोत्र | रामानन्द | १६ वीं श० | १२x१० | १६-२४ | अन्त में 'चतुःश्लोकी भागवत' है । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८४७ | १०६६३ | रामविनोद | रामचन्द्र | १९०७ | २६.५x१७.५ | ३-१२७ | प्रति कीटविद्ध । लि. क. श्रवणदास दादूपंथी लि. स्था. गांव बूलेट, श्रीनाथजी की बस्ती में । |
| २८४८ | ९११८ | रामायण-सार | हरिचरणदास | १९ वीं श० | १५x१३ | १-३६ | अन्तिम पत्र त्रुटित । |
| २८४९ | ९२३४ | रास को रेखतो | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१९ | १-९ | र. का. १८६९ २७ पद्य हैं । |
| २८५० | ८९१४ | रासपञ्चाध्यायी भाषा | नन्ददास | १९ वीं श० | २६.५x१६ | १-१८ | लि. क. गंगाराम |
| २८५१ | ६५६४ (५) | रासपञ्चाध्यायी भाषा (भागवत दशमस्कन्धगत) | शंभुराम | २० वीं श० | २२x१७.५ | ४५-७१ | र. का. १९१५ र. स्था. बूँदी समकालीन प्रति । पत्र त्रुटित । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८५२ | ८४०५ (१) | रासविलास | गोकुल कवीश्वर | १९ वीं श० | २२x१४ | ३३-४६ | रागबद्ध। इस गुटके का प्रारम्भ लिपि-कर्त्ता द्वारा विन्यस्त पत्र संख्या ३३ से होता है। |
| २८५३ | ८४०० (२२) | रिषभदेव-गीत | अज्ञात | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६०–६१ | |
| २८५४ | ८९३३ | रूपदीप-पिङ्गल | जयकृष्ण भोजग पुत्र भवानीदास | १८८३ | २६x१३ | १-५ | र. का. १७७६ लि. क. चम्पाराम |
| २८५५ | ९२३५ | रेखता (भक्ति के) | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१९ | ८४-९१ | रागबद्ध। पत्र संख्या ८७-८८ अप्राप्त। र. का. १८६९ |
| २८५६ | ९२३८ | रैन-रङ्ग | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१९.५ | १-५ | र. का. १८६९ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८५७ | १०६६७ (२) | लावणी | लवलीनराम | गु० १८४१ | १२x६ | ६३-६६ | |
| २८५८ | ६३१३ | लीला-पच्चीसी | कवि भोलानाथ | १८२० | २०x१३.५ | १-७ | लि. क. नन्दराम महाराजकुमार नाहरसिंह पुत्र सूरजमल्ल प्रीत्यर्थ। १०७ छन्द हैं। |
| २८५९ | ९७२० (१०) | लुकमानी नसीहत | हकीम लुकमान | १९ वीं श० | २०x१५.५ | ८६-९० | |
| २८६० | १०१८८ (२) | लूहर | | १९१० | १५.२x११ | २०९-२१३ | लि. क. प्रोहित मानमल राजकंवार फोजसिंघजी पठनार्थ। १५ छन्द हैं। |
| २८६१ | ९२३९ | वंशी-बहार | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१९.५ | १-६ | |
| २८६२ | ८४२२ (९) | वडो-नवकार | | गु० १७७६ | २३x२० | ४२-५० | र. का. १८६६ |
| २८६३ | १०१८३ (१) | वन-यात्रा परिक्रमा वार्त्ता (८४ कोस परिक्रमा री वार्त्ता) | गोकुलनाथ | २० वीं श० | २४.५x१७ | १-५३ | पत्र संख्या ४९-५३ पर वन के प्रकार का वर्णन है। |

T

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८६४ | ८४२२ (४३) | वरकाणा पार्श्वनाथ-स्तवन | सेवक | गु० १७७२ | २३x२० | ११३ वां | |
| २८६५ | ६४२५ (३) | वल्लभाख्यान | | १८१६ | २१.५x१७.५ | ६-२१ | पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ। |
| २८६६ | ६११७ (१) | वल्लभाख्यान | | २० वीं श० | १६x१२.५ | १-२२ | |
| २८६७ | १०६६६ (१०) | वल्लभाख्यान | | १६ वीं श० | २२.५x१७.५ | ८४-८६; १०१-११० | तीजा कड़खा से। |
| २८६८ | ८८५७ (४) | विचार-बोध | जुगतानन्द | १६ वीं श० | १८x१४ | २२१-२२७ | र. का. १८३२ गुटका जीर्ण है। |
| २८६९ | ८०६१ | विचारमाला | अनाथदास | १६३४ | २४.५x१६ | १-१५ | र. का. १७२६ लि. क. कोमलदास लि. स्था. कपासन अष्टम विश्राम तक। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८७० | ६१६८ | विचारसागर भाषा | निश्चलदास | १८ वीं श० | ३०.५x१३.५ | १-२८६ | पत्र अस्तव्यस्त हैं। प्रारम्भ के पत्र संख्या १ से ३ अप्राप्त। र. स्था. 'किहिंडोली' ग्राम जो दिल्ली से पश्चिम दिशा में १८ कोस की दूरी पर स्थित है। |
| २८७१ | १०६७६ | विचारसागर भाषा | निश्चलदास | १६१७ | ६x७.२ | १-१३४ | र. स्था. किहिंडोली ग्राम लि. क. देवकृष्ण दरजी लि. स्था. जोधपुर |
| २८७२ | ८४००<br>(३०) | विनती | कनककीर्ति | गु० १८३४ | १५x१३.५ | ६६-७० | |
| २८७३ | ८६८५ | विनयपत्रिका | गो० तुलसीदास | १६०६ | २३.५x१७ | १-१५० | पत्राङ्क ७४, ७५, ७६ एक ही पत्र पर। १४० वां पत्र अप्राप्त। |
| २८७४ | ८४२२<br>(४२) | विमलसाह रो सरलोको ( श्लोक ) | पं० विनयविमल | गु० १७७२ | २३x२० | १०८-११३ | लि. क. अमरसागर |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८७५ | ९२४४ | विरहतरङ्ग | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१९ | १-९ | र. का. १८६९ |
| २८७६ | ९११५ (२) | विवेक-चितावणी | सुन्दरदास | १९०१ | १५x११ | २५६-२६३ | |
| २८७७ | ८६९३ (१) | विवेकसागर-सतसई | | १९ वीं श० | १६x१८ | १-३६ | कामदारी लिपि में। ४५२ दोहे मात्र। विभिन्न कवियों के दोहों का संकलन है। |
| २८७८ | ९८३६ (५) | विष्णुपंजर-स्तोत्र-भाषा | | गु० १८२२ | १२x१० | ५९-६१ | पत्र संख्या ६२ पर स्फुट पद्य एवं पत्र संख्या ६३-६५ पर 'शकुनविचारादि' हैं। |
| २८७९ | ९२९६ (१) | विष्णुसहस्रनाम-स्तोत्र | | १७२७ | १६.५x१४ | १-२८ | लि.क. आनन्दराम मिश्र कृति संस्कृत में है। |
| २८८० | ८४०४ (५) | वीस-थानक पूजा | जिनहर्ष सूरि | १९ वीं श० | २०x१३ | ३५-५६ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८८१ | ८४१७ | वृन्दसतसई | वृन्दकवि | १८८२ | १५.५x१०.५ | १-७६ | र. का. १७६१<br>र. स्था. ढाका शहर<br>लि. क. अमीचन्द<br>पत्र संख्या २, ३ अप्राप्त। |
| २८८२ | १०१८७ (१) | वृन्दसतसई | वृन्दकवि | १९१० | १५x११ | १-२०९ | र. का. १७६१<br>र. स्था. ढाका<br>लि. क. प्रोहित मानमल<br>महाराजकुमार फोजसिंहजी पठनार्थ।<br>कुल ७१५ दोहे हैं। |
| २८८३ | ८७०३ | वृन्दावनसत(शतक) | ध्रुवदास | १८२८ | १४x१ | १-१७ | र. का. १६८६<br>प्रथम पत्र अप्राप्त। |
| २८८४ | ९४३१ (५) | वृन्दावनसत(शतक) | भगवन्त शिष्य हरिदास | १७८६ | १२x१५.५ | १-२५ | र. का. १७०७<br>लि. स्था. शाहजहानावाद<br>अंत में 'गङ्गाजी' के कवित्त हैं। |
| २८८५ | ९७३६ (१) | वृहदुत्सवमणिमाला | रूपरसिक | १९ वीं श० | ३०.५x१२.५ | ७५-१९५ | रागबद्ध।<br>पूरे गुटके में रूपरसिक की कृतियों का संग्रह है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८८६ | ८४३५ | वैद्यमनोत्सव (आयुर्वेद) | नयनसुख पुत्र केशवदास | १८६१ | १६.५x११ | १-५९ | लि. क. ईसुरीदास<br>लि. स्था. घाट के गाँव में<br>अन्तिम ९ पत्रों में औषधी-संग्रह है। |
| २८८७ | ९२०१ | वैद्यमनोत्सव | नयनसुख पुत्र केशवदास | १९ वीं श० | २२x१५ | १-१३ | |
| २८८८ | ९६११ | वैद्यमनोत्सव (सप्तमोद्देश पर्यन्त) | नयनसुख पुत्र केशवदास | १७६६ | २५.५x१०.५ | १-८ | लि. क. पं० अमरमूर्ति मुनि<br>लि. स्था. सुद्धदंती |
| २८८९ | ९८०४ | वैद्यमनोत्सव | नयनसुख पुत्र केशवदास | १७४९ | २५x१०.५ | १-१४ | लि. क. भाग्यविजय |
| २८९० | ९२६८ | वैराग्यप्रकरण भाषा | | १८९१ | २०x१४ | १-७८ | लि. क. ज्ञान ब्राह्मण |
| २८९१ | ८५०७ (२) | वैराग्यशतक सटीक | मू० भर्तृहरि | १९०४ | १६x१२ | १-२५ | टी. क. अज्ञात<br>लि. क. रामदास |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८९२ | ९७३२ (४) | वैराटपुराण | | १९ वीं श० | १७x१२.५ | ७४-९५ | कृति संस्कृत में है। |
| २८९३ | १०६७१ (६) | व्रजविहार-लीला | | १९ वीं श० | २४x१३.५ | ५७-६५ | ८५ छन्द हैं। |
| २८९४ | १००५९ (२) | व्यास कथा | | १८११ | २६.५x१८ | ११९-१२१ | पंडितों पर व्यंग्य है। पत्र संख्या १६१ पर सेवादास का पद है। |
| २८९५ | ८३८३ | शकुनावलि (शकुन, स्वप्न, दिशा, पशु, अंग फुरकनादि) | | १८३२ | १७x१०.५ | ३-२२ | अपूर्ण। महाराणा भीमसिंहजी के समय में लिखित। प्रथम दो पत्र अप्राप्त। लि. क. माणकचन्द लि. स्था. उदयपुर पत्र संख्या २३ - २४ पर समयसुन्दर, साधुकीर्त्ति एवं अगरचन्द के पद हैं। |
| २८९६ | ८४२२ (२६) | शत्रुञ्जय-स्तवन | कवियण | गु० १७७६ | २३x२० | ९२-९४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८९७ | ८४२२ (११) | शत्रुञ्जय-रास | समयसुन्दर | गु० १७७६ | २३x२० | ६३-६८ | र. का. १६८२ |
| २८९८ | ८१०४ | शनिश्चरजी की कथा | जोरा (जोरावर) पुत्र हुकमराय | १९४३ | २१.२x११.३ | १-१६ | र. का. १८२० कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है—<br>कायस्थ माथुर जात भिवांनी ।<br>नगर नागपुर वाली जानो ।।<br>हुक्मराय सुत जोरो जानों ।<br>जीवणदास की गोद बखानों ।।<br>निसदिन ध्यांन शनिको ध्यावै ।<br>दुख-कष्ट कदे नहीं पावै ।।<br>लि. स्था. लक्ष्मणपुर |
| २८९९ | ८४१९ | शनिश्चरजी की कथा | जोरा पुत्र हुकमराय | १९०३ | १६.५x११.५ | १-२५ | लि. स्था. मन्दसौर |
| २९०० | ८४२० | शनिश्चरजी की कथा | जोरा पुत्र हुकमराय | १९३८ | १६.५x१६.५ | ३-४० | लि. क. विश्वनाथ गौड़ चुन्नीलाल हलवाई पठनार्थ । प्रथम २ पत्र अप्राप्त । |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९०१ | ९३३८ (३) | शनिश्चरजी की कथा (सचित्र) | आसकरण | १९ वीं श० | १०.५x६ | २१-५६ | शिव, राम - सीता - लक्ष्मण एवं हनुमानजी के ३ चित्र हैं। |
| २९०२ | १०१४२ (२) | शनिश्चरजी की कथा ( गद्य ) | | १९ वीं श० | २२.५x१६ | ५-११ | पत्र संख्या ११ - १२ पर 'विसंभरा को सोंण' शकुन विचार है। |
| २९०३ | १०५६७ | शनिश्चरजी की कथा ( पद्य ) | | १९ वीं श० | १९.५x१४ | १-८७ | वि. सं. १८१३ की प्रति से प्रतिलिपि कृत। महाजनी लिपि में। लि. क. चैनसुख श्रीवास्तव लि. स्था. जावली |
| २९०४ | ८५५८ (३) | शनिश्चर-स्तोत्र (थावर-रास) | कपूरविजय (तपागच्छी) | १९ वीं श० | १५x११.५ | १-८ | र. का. १८४३ 'भुवन वेद सिद्धि चन्द' रचनाकालीन प्रति। |
| २९०५ | ९३३८ (२) | शनिश्चर-स्तोत्र | | १७ वीं श० | १०.५x६ | ११-१४ | कृति संस्कृत में है। पत्र संख्या १५ से २० तक जिन्स खरीदने की विगत है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६०६ | ८८५७ (६)२ | शब्दवर्णन ( सबद ) | जुगतानन्द शिष्य चरणदास | १६ वीं श० | १८x१४ | ८५-१४६ | रागबद्ध। गुटका जीर्ण। |
| २६०७ | ६४२२ | शरणमन्त्र एवं समर्पण श्लोक की भाषा टीका (गद्य) | गो० गिरिधर | १६ वीं श० | १६x१२ | १-१० | |
| २६०८ | ८४०० (२६) | शान्तिनाथ-स्तवन | पाशचन्दसूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ६३-६५ | |
| २६०९ | ८४२२ (४५) | शान्तिनाथ-स्तवन | सहजसागर | गु० १७७० | २३x२० | ११४-११५ | |
| २६१० | ८४२२ (१८) | शान्तिनाथ-स्तवन | गुणसागर शिष्य पद्मसूरि | गु० १७७६ | २३x२० | ८४-८५ | |
| २६११ | ८४२२ (४८) | शालिभद्र महामुनी चौपई | जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि | १७७२ | २३x२० | १२५-१५४ | र. का. १६७८<br>लि. क. ऋषि गांगजी<br>पत्र संख्या १५५-१५७ पर 'गौतमस्वामी रास' के ४२ छन्द मात्र हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९१२ | ८४२२ (२७) | शालिभद्र-सज्झाय | सहजसुन्दर | गु० १७७६ | २३x२० | ९४-९५ | |
| २९१३ | ९३३६ | शालिहोत्र-भाषा टीका | मू० नकुल | १८९२ | ३१x२०.५ | १-३९ | |
| २९१४ | ९४२५ (८) | शिक्षापत्री-भाषा | हरिराय | १९ वीं श० | २१.५x१७ | १-६९ | |
| २९१५ | ७८६१ (९) | शिव-आरती | साँवला | १९१५ | १७x१३ | ४३-४४ | लि. क. भज्जूराम<br>लि. स्था. वामनवास |
| २९१६ | ८५६२ (४) | शुक-संवाद | खेमदास | १७९५ | २४.५x१५.५ | ४५-६६ | अपूर्ण— छन्द संख्या १३० पर्यन्त।<br>लि. क. पंचोली गुलावराय हरिदासोत<br>लि. स्था. उदयपुर |
| २९१७ | ८५६२ (१) | श्यामबत्तीसी या (कृष्णध्यान चतुराष्टक) | श्याम सखी | १९ वीं श० | १५x११.५ | १-११ | पत्र संख्या १२ से २० तक विविध औषधियों के नुस्खे एवं वशीकरणादि मन्त्र लिखे हुए हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९१८ | ८४०० (१४) | श्रावकरी-करणी-सज्झाय | जिनहर्ष | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ४२-४५ | |
| २९१९ | ८४०० (३) | श्रीचक्र-स्तवन | | गु० १८६४ | १५x१३.५ | २-१० | कृति प्राकृत में है। |
| २९२० | ८४२२ (२५) | श्रीमन्-गुणतीसी | गुणसागर सूरि | गु० १७७६ | २३x२० | ९१-९२ | |
| २९२१ | ८४०० (३२) | संखेश्वर-पार्श्वनाथ-स्तवन | जिनचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ७१-७२ | |
| *९२२२ | ८७५९ | संग्राम-सार | कुलपति मिश्र | १७९४ | २५x१६.५ | १-२४१ | र. का. १७३३<br>लि. क. कवि पूरण<br>लि. स्था. सवाई जयपुर<br>किनारे खण्डित। पत्र संख्या २४० वां खण्डित। |
| २९२३ | १०६६७ (१) | संतदासजी की वाणी | संतदास | १८४१ | १२x९ | १-६३ | सं. का. १८३०<br>सं. क. नवलराम<br>सं. स्था. शाहपुरा<br>लि. क. टैलदास<br>लि. स्था. भीलवाड़ा |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२९२४ | ९८८९ (१) | संभरि-जुद्ध | कविकलानिधि कृष्णभट्ट | १९ वीं श० | १५x१० | १-८ | |
| २९२५ | ९१९९ (२) | संवेग-बत्तीसी (मान बत्तीसी) | मानकवि | १८२४ | २५x११ | ६-९ | |
| २९२६ | ८४०४ (४) | सतरहभेदी-पूजा | साधुकीर्ति | १९ वीं श० | २०x१३ | २३-३२ | र. का. १६१८ |
| २९२७ | ८४२२ (१०) | सत्याँ-सज्झाय | | १८ वीं श० | २३x२०.५ | ५१-५३ | |
| २९२८ | ८४०० (८) | सद्गुरु-भास | मुनि मेघराज | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ३६-३७ | |
| २९२९ | १०१८३ (२) | सनेह-लीला | जगमोहन | २० वीं श० | २४.५x१७ | ५३-६३ | |
| २९३० | ८८५७ (१)३ | सप्तश्लोकी-गीता-भाषा | जुगतानन्द | १९ वीं श० | १९x१४ | १४९ वां | |
| २९३१ | ९८३६ (४) | सप्तश्लोकी-गीता | | गु० १८२२ | १२x१० | ५८ वाँ | कृति संस्कृत में है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९३२ | ०८३४ (३-५) | सप्तश्लोकी-गीता | | गु० १८४५ | १२x१५ | २२-२४ | पत्र संख्या २२ (ब) पर शिव-पार्वती एवं २७ (ब) पर कृष्ण व गणेश के रेखा-चित्र हैं। पत्र संख्या २५ पर 'एकश्लोकी भागवत' एवं पत्र संख्या २५-२६ पर 'एकश्लोकी महाभारत' है। |
| २९३३ | १०६६७ (६) | सबद-माणिक-बोध | रामचरण | १८४१ | १२x९ | ३८१-३९१ | चोहड्ू कृत बालकराम |
| *२९३४ | ९७२० (९) | सभाभूषण-भाषा | गंगाराम | १९ वीं श० | २०x१५ | ७४-८५ | र. का. १७४० र. स्था. सांगानेर(जयपुर) सङ्गीत-शास्त्र का ग्रन्थ है। |
| २९३५ | ७८५७ (२) | सभाविलास | तुलसीदास | १९ वीं श० | २७.५x१८ | ९३-९७ | इस कृति में ६९ दोहे हैं। |
| *२९३६ | १०११९ | सभा-विनोद (रागमाला-भाषा) | पायंदावेग पुत्र संगीवेग पुत्र शेरवेग | २० वीं श० | २३.५x१५ | १-१६ | शाहजहाँ के शासन-काल में रचित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२६३७ | ८३६३ | सभासार नाटक | कवि रघुराम | १८४३ | २३.५x१२ | १-२४ | र. का. १७५७<br>लि. क. छजमल |
| २६३८ | ८५३७ | सभासार नाटक | कवि रघुराम | १६०४ | २४.५x१३.७ | १-४५ | लि.क. लक्ष्मीराम श्रीमाली<br>लि. स्था. लाडणु |
| २६३६ | ६७२० (७) | सभासार नाटक | कवि रघुराम | १६ वीं श० | २०x१५.५ | १-४२ | र. का. १७५७ |
| २६४० | १०१४७ | समन रा दोहा आदि | समन | २० वीं श० | २०x१५.५ | २-६२ | पत्र संख्या १, ३ से ५ एवं २५ से ५७ अप्राप्त। स्फुट पत्र। |
| *२६४१ | ६५१७ | समयसार नाटक | वनारसीदास | १७४८ | २७x२१ | १६५-१६५ | र. का. १६६३<br>र. स्था. आगरा<br>लि. क. ऋषि हेमराज<br>लि. स्था. सादड़ी<br>पत्र जीर्ण। अन्त में एक पद है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६४२ | ६२२८ (४) | समयसार नाटक | बनारसीदास | १६ वीं श० | २५.५x१४.५ | १-१६ | छांटमा ५० कवित्त हैं। |
| २६४३ | ८५६३ (१) | समयसार नाटक | बनारसीदास | १७५३ | १७x१० | १-४८ | र. का. १६६३<br>लि. क. जयचन्द्र |
| २६४४ | ८४०० (४६) | समेतशिखर-स्तवन | देवीचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८६-६० | |
| *२६४५ | १०६८४ | समै-सु-प्यार-सतसई | बसन्तराम | १८४१ | २२.२x१६.७ | १-३६ | र. का. १८३३<br>लि. स्था. जोधपुर<br>प्रति कीटविद्ध।<br>पत्र संख्या ३७-३८ पर मतिराम कृत 'रसराज' का प्रारंभिक अंश है। पत्र संख्या ३९-४१ पर रामदास के पद हैं। |
| २६४६ | ८४२२ (४) | सरस्वतीजी रो छन्द | शांतिकुशल | गु० १७७६ | २३x१० | २५-२७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९४७ | ८५६२ (७)२ | सवैया देश-देशरी भाषा रा | | १७९५ | २४.५x१५.५ | ९३-९५ | पंजाबी, ब्रज, गुजराती, मारवाड़ी, हाड़ोती एवं दक्षिणी आदि आंचलिक भाषाओं में सवैये हैं। |
| २९४८ | १०२४७ (५) | सात सखियां रा दूहा | | गु० १८८२ | १६x१२ | २२-२३ | |
| २९४९ | १०२४७ (३) | सादाँरी अर अमलीरी स्त्री रो संवाद | | गु० १८८२ | १६x१२ | १३-१७ | |
| २९५० | १०६६७ (५) | साध-पारख्या | रामचरण | १८९१ | १२x९ | ३५१-३८१ | चोहड़ कृत मुरलीराम |
| २९५१ | ८४०० (७) | साध-वन्दना | पाशचन्द मुनि | १८६४ | १५x१३.५ | २२-३५ | ७ ढालों युक्त। |
| २९५२ | ८४०० (४९) | सारस्वत-प्रक्रिया | | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ९२-९४ | कृति संस्कृत में है। अपूर्ण—प्रारम्भ मात्र। |
| २९५३ | ९७४५ | सिंहासन-बत्तीसी, वेताल पच्चीसी एवं हितोपदेश तथा चन्दनमलियागिरी री वात (सचित्र) | | १९ वीं श० | २६.५x१८ | १५२ कुल | चित्र संख्या-३२१ अपूर्ण। पत्र अस्तव्यस्त एवं मिश्रित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ - नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६५४ | ६७८७ (१) (२) | सिंहासन-बत्तीसी | महादेव पुत्र विट्ठलदास | १८५६ | २३.५x१६.५ | १-६४ | लि. क. जती मयाचन्द लि. स्था. कल्याणपुरी बादशाह अकबर की आज्ञा से निर्मित। प्रारम्भ में चगत्ताई पातशाह बाबर आदि की कीर्ति वर्णित है। इस कृति के बाद ८ पत्रों में 'रामसहस्रनाम' (लिंगपुराण-गत) संस्कृत में है। |
| २६५५ | ६०५३ | सिख-नख-वर्णन (तिलक टीका सहित) | मू० बलभद्र टी० मनीराम | १८६२ | २१.५x१६ | १-६४ | टी. र. का. १८४२ उणियारा के राजा महासिंह की आज्ञा से रचित। पत्र संख्या ३ से ६ तक अप्राप्त। |
| २६५६ | ८४०० (१८) | सिद्धाचल-स्तवन | जिनचन्द | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ५७-५८ | |
| २६५७ | ६६८२ (३) | सीख का सवैया आदि | | २० वीं श० | २५.५x१२.५ | ८-११ | ७ वां पत्र अप्राप्त। कविगद आदि के २८ छन्द हैं। |
| २६५८ | ८३११ | सीताजी की आलोयणा | | २० वीं श० | २६x१२.५ | १-१० | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९५९ | ८४२२ (१३) | सीमंधर-ग्रायोयणा-स्तवन | मल्लिदास शिष्य देवराज | गु० १७७६ | २३x२० | ७२-७७ | |
| २९६० | ८४२२ (१६) | सीमंधर-पार्श्वनाथ-स्तवन | भक्तिलाभ | गु० १७७६ | २३x२० | ८५-८७ | |
| २९६१ | ८४०४ (६)४१ | सीमंधर-स्तुति | भक्तिलाभ | १६ वीं श० | २०x१३ | ७५-७६ | गुटके के अन्तिम २ पत्रों पर कृतियों की टीप है। |
| २९६२ | ९२४१ | सुखकरन-लता | राय अमृतराम | १९ वीं श० | २७x१६.३ | १–६ | र. का. १८६६ |
| २९६३ | ९२२८ (५) | सुखनिधान (संवादात्मक) | | १८४१ | २५.५x१४.५ | १-३३ | कुल २७० छन्द हैं। |
| २९६४ | ९३१६ | सुखनिवास | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २०.५x१३.५ | १-३८ | र. का. १८३० 'नभ वैश्वानर नाग भू' ठाकुर चतुरसिंह प्रीत्यर्थ। सम्पूर्ण संग्रह कवि के वंशजों से प्राप्त हुआ है अतः सम-कालीन अथवा मूल कहा जा सकता है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९६५ | ६३०७ | सुदामा-चरित्र | | १९ वीं श० | १७.५x११ | १-१२ | लि.क. अग्निहोत्री भाउमुनि कुल ७३ छन्द हैं। इस कृति के पूर्व के ५ पत्रों पर हिन्दी के पदादि एवं पश्चात् कुछ संस्कृत के श्लोक संगृहीत हैं। |
| २९६६ | १०१३८ (२) | सुदामाजी की बारखड़ी | | १९ वीं श० | १४.५x१३.५ | १०-१८ | |
| २९६७ | ९८३६ (८) | सुदामा-सार (चरित्र) | | गु० १८२२ | १२x१० | ८६-१०० | लि. क. लछीराम |
| २९६८ | ८४२२ (४६) | सुनक्षत्रसाधु-सज्झाय | सहजसुन्दर | गु० १७७२ | २३x२० | ११५-११६ | लि. क. अमरसागर |
| २९६९ | ९०४८ | सुन्दरदासजी का अष्टक | सुन्दरदास शिष्य दादूदयाल | १९ वीं श० | २५x१४.५ | १-११ | १३ अष्टक हैं। |
| २९७० | ६११५ (१) | सुन्दरदासजी की वाणी (सवैयाबद्ध) | सुन्दरदास | १९०१ | १५x११ | २-२५५ | प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क. जयदेव लि. स्था. मांगरोल |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि. सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९७१ | ९३३८ (५) | सुन्दरदासजी का सवैया (विश्वास को अंग) | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १०.५x६ | ६९-७५ | अपूर्ण। |
| २९७२ | ९५१८ | सुन्दरदासजी का सवैया (वेदान्त प्रकरण) | सुन्दरदास | १९ वीं श० | २६.५x२१ | ७-२२ | अङ्कबद्ध। अपूर्ण। पत्र जीर्ण। |
| २९७३ | ९५५६ (३) | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | १९ वीं श० | २२.५x१०.५ | ६-१० | |
| २९७४ | ९७४४ | सुन्दरदासजी का सवैया | सुन्दरदास | १८३९ | १६x१२.५ | १-१४७ | लि. स्था. सनेहड़ी पत्र संख्या ६-७ अप्राप्त। पत्र जीर्ण एवं कीटविद्ध। |
| २९७५ | ८०१२ (२) | सुन्दरशृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १९ वीं श० | २९x१४ | ९-२७ | १०९ वें छन्द से प्रारम्भ। |
| २९७६ | ९०२६ (१) | सुन्दरशृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १७९२ | २३x१० | १-११ | र. का. १६८८ कवि ग्वालियर निवासी है। शाहजहाँ की आज्ञा से रचित। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२९७७ | ९२५२ (३) | सुन्दर-शृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १७७४ | २१.५x१४ | १-३२ | र. का. १६८८— लि. स्था. राणा संग्रामसिंह राज्ये। कवि ग्वालियर निवासी है। |
| २९७८ | ६७३० (२) | सुन्दर-शृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १८८१ | १५x११ | ४६-१४८ | र. का. १६८८ र. स्था. आगरा बादशाह शाहजहाँ की आज्ञा से रचित। लि. क. ऋषि दयाराम |
| २९७९ | ९८३० | सुन्दर-शृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १९ वीं श० | २३x१२.५ | ८-७६ | प्रारम्भ अपूर्ण। पत्र संख्या ७६ से ७८ पर 'द्वादशमास वर्णन' के ९ छन्द हैं। |
| २९८० | १०६८२ | सुन्दर-शृङ्गार | कविराज सुन्दरदास | १९ वीं श० | २४.५x११ | १-१५ | र. का. १६८८ २७१ वें छन्द पर्यन्त। |
| २९८१ | ८४०० (४०) | सुमतिनाथ-स्तवन | पाशचन्द सूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८२-८३ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९८२ | ८४०० (४२) | सुमतिनाथ गीत | पाशचन्दसूरि | गु० १८६४ | १५x१३.५ | ८४ वां | |
| २९८३ | ६३२३ | सुमन्तप्रकाश (सुमनप्रकाश) | कवि भोलानाथ | १९ वीं श० | २३x१७ | १-३ | र. का. १८३७<br>कवि के वंशजों से प्राप्त प्रति।<br>अपूर्ण — ३० पद्य मात्र। अगले ६ पत्रों पर स्फुट पद्य हैं। |
| २९८४ | ६३३७ (३) | सूर्य-स्तवः | | १९ वीं श० | १६.५x१३ | १८-२३ | कृति संस्कृत में है। |
| २९८५ | ८४०० (६) | सूरज रो श्लोक | सेवक | गु० १८६४ | १५x१३.५ | १९-२१ | |
| २९८६ | ६३३७ (१) | सूर-पदावली (रागवद्ध) | सूरदास | १९ वीं श० | १६.५x१३ | १-१९६ | अपूर्ण। ६३६ पद्य हैं। |
| २९८७ | ८४२२ (३८) | सोलह-स्वप्न-सज्भाय | अज्ञात | गु० १७७६ | २३x२० | १०३-१०४ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९८८ | ८४०४ (१) | स्नात्र-पूजा | | १९ वीं श० | २०x१३ | १-७ | |
| २९८९ | ८६२८ (२) | स्नेह-लीला | नन्ददास | गु० १९२९ | १७x१२.३ | ११६–१३५ | |
| २९९० | ९१०० (१) | स्नेह-लीला | जन मोहनदास | १९ वीं श० | १७.५x११.५ | १–१५ | प्रथम पत्र अप्राप्त। |
| २९९१ | ८५६२ (५)१ | स्फुट-कवित्त | कासीराम | १७९५ | २४.५x१५.५ | ६७ वां | |
| २९९२ | ८५६२ (५)४ | स्फुट-कवित्त | कविसार | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ६९–७० | |
| २९९३ | ८४६२ (५)७ | स्फुट-कवित्त | अज्ञात | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ७२ वां | |
| २९९४ | ८५६२ (५)१४ | स्फुट-कवित्त | अज्ञात | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ७८ वां | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९९५ | ८६९३ (३) | स्फुट-कवित्त (अरिल, छप्पय आदि) | | १९ वीं श० | १९x१३.५ | ५२-६८ | |
| २९९६ | ८५९२ (५)१ | स्फुट-कवित्त (छत्तीत राग का) | | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ७३ वाँ | |
| २९९७ | ९२५२ (१) | स्फुट-कवित्त, दोहा-संग्रह | | गु० १७७४ | २१.५x१४ | १-६ | |
| २९९८ | ८५९२ (७)३ | स्फुट-कवित्त (शृङ्गारिक) | | गु० १७९५ | २४.५x१५.५ | ९५-९६ | |
| २९९९ | ९७२० (८) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | राधावरलाल पुत्र गोस्वामी दयालाल | १९ वीं श० | २०x१५.५ | ४३-७३ | १४४ छन्द हैं। अन्त में महाराणा भीमसिंह के पुत्र की प्रशस्ति परक छन्द हैं। |
| ३००० | ९२५४ (१) | स्फुट-कवित्त-संग्रह | | १९ वीं श० | १६.५x१३.५ | १३-१७ | |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३००१ | ८५६२ (७)१ | स्फुट-कवित्त, सवैया | कविराम | गु० १७६५ | २४.५x१५.५ | ६१-६३ | |
| ३००२ | ८५६२ (५)१२ | स्फुट-गीत, दोहा | | गु० १७६५ | २४.५x१५.५ | ७५ वां | |
| ३००३ | ६६८१ (१) | स्फुट-दोहा, कवित्त, सवैया, कुण्डलियादि-संग्रह | देवीदास, कविगद, उदयराज, ईसरदास, गुमान, तुलसीदास, गिरधर कविराय, बुधराय, वृन्द, जमाल | १६ वीं श० | २५x११.५ | १-७ | लि. क. भक्तिसुन्दर |
| ३००४ | ६७६८ | स्फुट-दोहा-संग्रह | | १६ वीं श० | २३x१२ | १-६ | विषयवार दोहों का संग्रह है— तत्वसार, हीर-रांझा, पत्री रा, बरसात रा एवं बारामासा रा। |
| ३००५ | ६२५२ (५) | स्फुट-दोहा, सोरठा | किसना | १६ वीं श० | २१.५x१४ | ३-४ | अन्त में आलम कृत सवैया है। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३००६ | ६२४३ | स्फुट-पद | राय अमृतराम | १६ वीं श० | २७x१६ | १-१० | र. का. १८६६ |
| ३००७ | ६२६० (५) | स्फुट रसायन-विधि | | १६ वीं श० | २०x१४ | ३६८-३६६ | पत्र संख्या २८३ पर भी रसायनविधि के साथ संवत् १८१६ में सदाशिवराव भाऊ साहब के साथ लूट में जो घरू माल गया उसकी विगत दी गई है। |
| ३००८ | ८५६२ (१)१ | स्फुट-सवैया | बृजनाथ | १७८५ | २४.५x१५.५ | १ ला | लि. क. गुलाबचन्द प्रारंभ में 'प्रश्न शकुनावली' के १० प्रश्न हैं। |
| ३००९ | ८५६२ (१३)४ | स्फुट-साखी | | १७६८ | २४.५x१५.५ | १६ वां | लि. क. पंचोली नीलकण्ठ अनोपचंदोत |
| ३०१० | १०१४२ (१)१-६ | स्फुट-स्तुति-संग्रह | कविचन्द | २० वीं श० | २२.५x१६ | १–५ | इसमें राम, बावन अवतार, विष्णु, गणेश, सूर्य, भवानी, हनुमान, शिव, प्रभु आदि की स्तुतियां हैं। |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३०११ | १०६७१ (५) | स्वरूप-निर्णय | | १९ वीं श० | २४x१३.५ | २३-५७ | पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ । |
| ३०१२ | ८३७२ | स्वरोदय-विचार | चरणदास | २० वीं श० | २१.५x११.५ | | लि. क. दलीचन्द |
| ३०१३ | ९६८२ (२) | हंसादे रायां रो सिलोको, आदि | | २० वीं श० | २५.५x१२.५ | २-६ | ७ वां पत्र अप्राप्त । |
| ३०१४ | ६७३२ (२) | हठ-प्रदीपिका (सिद्धान्त मुक्तावली) | आत्माराम योगिन्द्र | १८६९ | १७x१२.५ | १-२९ | कृति संस्कृत में है । लि. क. रामदास पत्र संख्या ३० पर सेवादास कृत पद्य है । |
| ३०१५ | ६७३२ (३) | हठ-प्रदीपिका ( सिद्धान्त मुक्तावली ) | आत्माराम योगिन्द्र | १८८९ | १७x१२.५ | १-७३ | कृति संस्कृत में है । लि. स्था. लांव्या |
| ३०१६ | ६८९६ | हमीर-रासो | महेश कवि | १९ वीं श० | २०x१६ | २-३४ | प्रथम पत्र अप्राप्त । |
| *३०१७ | ६४३२ (१) | हमीर-रासो | महेश कवि | १९ वीं श० | २२.५x१७ | १-२७ | लि. क. नाजर नैनसुख |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ – नाम | कर्त्ता | लिपिकाल (वि.सं. में) | माप (सें.मी. में) | पत्र संख्या | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३०१८ | ८४२७ (१) | हरबोल चितावणी | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १०x६.५ | ३-६ | प्रथम ७ छन्द अप्राप्त। |
| ३०१९ | ६११५ (३) | हरबोल चितावणी | सुन्दरदास | १९ वीं श० | १५x११ | २६४-२६८ | |
| ३०२० | ८६६३ (५) | हीयहुलास रा दोहा | | १९ वीं श० | १९x१३.५ | ७५-८१ | रागबद्ध। कुल ७० दोहे हैं। |
| | | | | | | | ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १०६८८ तक का विवरण समाप्त। |

# परिशिष्ट १

## कतिपय विशिष्ट चिह्नित * ग्रन्थों के उद्धरण

५६.    १२६०३[1]    **अवतारचरित्र**

प्रारम्भः— श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वत्यै नमः । श्री कृष्णाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । अथ श्री अवतारगीता अवतारचरित्र भाषा बारहट नरहरदासेन विरचितं गणेश स्तुतिः ।

गुण साटक

सुंडा दंड प्रचंड मेक डसनं, मद गंध गल्लस्थलं ।
सिंदूरारुण तुंड मंडित मुख, भ्रंगेस गुंजारवं ।।
यंपुर संकर धार सार सगणं, प्रारंभ अग्रेस्वरं ।
तं सततं सदनं सफलं सकलं, वरदाय लंबोदरं ।। १ ।।
(सरस्वती एवं गुरुदेव स्तुति के बाद . . . )

आरया ( आर्या )

गणपति ग्यांनी ज्ञांन गुंन अप्पन ।
सरसति सुदति सुमति समप्पन ।।
गुर परसाद पाइ बंदौं धन ।
भूत भाव जुग जुगति बखांन ।। ४ ।।
इति चतुर असतुति संपूरणं ।

कविरुवाच

दूहा

कवि परिचयः— चारन जाति जु बारहट, नरहर मति अनुसार ।
मैं सागर पैर न लयौ, कहन चरित अवतार ।।१।।
रुद्रस पंचम विरंचि चव, सेष सहस मुख संग ।
नित्य रसना जस कहत नव, और न लहत अभंग ।।२।।

---

१ प्रथम संख्या क्रमाङ्क और द्वितीय संख्या ग्रन्थाङ्क-सूचक है ।

रसना एक सुस्वाद रत, सब दिन रहत सखेद ।
कितोक तिहिं हरजस कहूं, बरनत नेति सवेद ।।३।।

जो आपन असमत्थ ह्वै, कहियै मति अनुसार ।
पावन दीन दयाल प्रभु, कृत मानत करतार ।।४।।

जथा सुमति नरहर सुकवि, कहि अवतार रस रूप ।
जिहिं जिहिं ग्रंथनि जे सुने, रिष प्रनीत अनुरूप ।।५।।

नरहर प्रभु बाराह भौ, अवनि उधारन हेत ।
निरमूल निंदित जात कुल, देह सत्य मम सेत ।।६।।

इती कवि लघुता वरननो नाम ।। (पत्राङ्क ३ रा (ए)

अन्त :— चौवीस अवतार नाम ।

कवित

विसद आदि बाराह, भए सनकादिक स्वांमी ।
जथा जग्य अवतार, नर जु नारायण नांमी ।।
कपिल सु दत्तात्रेय, रिषभ ध्रुव प्रभु हयग्रीवा ।
कुरम सफर नरसिंघ, द्विज सु वामन हरिदेवा ।।
हूअ हंस मन्वंतरि धन्वंतरिहि, जामदग्नि जय व्यास जय ।
रघुनाथ कृष्ण अर बोध प्रभु, भुव ऐते अवतार भय ।।१।।

विदित तींन अर बीस, लऐ अवतार अंग जीय ।
सत त्रेता द्वापर संजोग, कारुण्य रूप कीय ।।
अब कलिजुग के अंत, हेत अवतार जु ह्वै हैं ।
धर्म कर्म मख ध्यांन, जवैं निरमूल नसै हैं ।।
भवतव्य पुन्य विस्तार भुव, हठि अनेक जवनेस हति ।
अखिलेस स्वेत अरु हय विहित, प्रभु कलंक त्रयलोकपति ।।२।।

यह जु प्रकार अवतार, भऐ भवतव्य अभय भूव ।
चिदानंद चौवीस, हेत अदभूत देह हूव ।।
दुष्ट दांन दम दया, रूप रस रोष जु रंजीय ।
भई भूअ भाराक्रांति, तब ही भुव भार सु भंजीय ।।

द्विज वेद सहाइक धर्म दृढ, हित त्रिलोक वंदित हरे ।
सुभ साध सुखद आतम सहति, कवि नरहर वंदन करे ।।३।।

रचना कालः- सतरह सैं तेतीस, नियत संवत उतरायन ।
रितु ग्रीषम आषाढ, मास पख कृष्ण सुपावन ।।
बनि आठम तिथि भौम, वार सिधि जोग समंगल ।
पहुकररन्य प्रसिद्ध, मध्य पूजित भुव मंडल ।।
अवतार चरित्र चौवीस ऐ, विजय सुजस जग वित्थरचौ ।
कवि दास दास नरहर सु कवि, कृत उधार अपनो करचौ ।।४।।

छंद झंपताल

ग्रन्थ माहात्म्य :—
अवतार गीता ईस्वरी । भक्ति कवि नरहर करी ।।
मख मुक्ति मारग मांनियैं । सोपांन स्वर्ग सु जांनियैं ।।
यह सहित सरधा ऊचरैं । पुनि सो न भव बंधन परैं ।।
सम साध जौ वांचैं सुनैं । अति प्रेम नेमहिं आपनैं ।।
सोइ संत जोति समाइ हैं । पुनि पुनर्जन्म न पाइ हैं ।।

दूहा

छंद संख्या- सतर सहस अरु आठ सैं, इकसठ ऊपर आंन ।
छंद अनुष्टप करि सकल, पूरन ग्रन्थ प्रमांन ।।१।।
मैं जोइ सुन्यौ पुरांन मह, क्रम सोइ वर्णन कींन ।
श्रोता पाठक हेत सौं, पावैं मुक्ति प्रवींन ।।२।।

पुष्पिका- इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्त्रिसति अवतार चरित्रे संपूर्ण । भाषा बारहट नरहरदासेन विरचितं । संवत १९१७ श्रावण शुद्ध १३ चंद्रवासरे ग्रांम धंवोला मध्ये पंड्या वेणीरांम सुत वंशीधरेण लिखितं । गांम नवागांम नाम इयारी आढा कोर-उदेसिंघजी तत्पुत्र चंडीदानजी पठनार्थं । श्रुभं ।छ।

५६. १२३०३ अवतारचरित्र सचित्र

गुटका सजिल्द। हाथ के बने मोटे कागज पर सुडौल एवं सुवाच्य लिपि में लिखित। चित्रों की सुरक्षार्थ पत्रों के मध्य मलमल का कपड़ा रखा गया है।

चित्रों का विवरण निम्न प्रकार है :—

| शीर्षक/भाव | माप सें.मी. में | पत्र संख्या |
|---|---|---|
| १. चतुर्भुज गणेश मय ऋद्धि-सिद्धि एवं गणादि के | २६.५x२८ | प्रथम पत्र से पूर्व |
| २. ब्रह्मा एवं सनकादिक अवतार | २३x११.५ | ४ बी |
| ३. राजा परीक्षित, सुखदेव ऋषि एवं दोनों ओर ऋषिगण | २३x११ | ४ बी |
| ४. यग्य-अवतार | २३x६.५ | ५ ए |
| ५. नर-नारायण अवतार | २३x१३ | ५ बी |
| ६. कपिल अवतार एवं माता देवहुती | २३x१४ | ७ बी |
| ७. दत्तात्रेय अवतार— दत्तात्रेय, अप्सरा एवं कामदेव | २३x१०.५ | ८ बी |
| ८. ऋषभदेव अवतार | २३x१२ | ६ ए |
| ९. भक्त ध्रुव एवं गरुड़वाही भगवान विष्णु | २३x१४ | १२ ए |
| १०. राजा पृथु मय रानी के एवं गो-स्वरूपा पृथ्वी | २३x१५.५ | १५ बी |
| ११. हयग्रीव अवतार एवं हयग्रीव दानव युद्धमुद्रा में | २३x११ | १६ बी |
| १२. कूर्म अवतार मय चौदह रत्नों के | २३x१३ | १८ बी |
| १३. मत्स्य-अवतार मय संखासुर के युद्धमुद्रा में | २३x१२ | २० ए |
| १४. नरसिंहा अवतार | २३x१६ | ३४ बी |

| शीर्षक/भाव | माप सें.मी. में | पत्र संख्या |
|---|---|---|
| १५. वामन अवतार मय वंचावली– रानी, राजा बली एवं शुक्राचार्य के | २३x१८.५ | ३७ ए |
| १६. हरि अवतार गज को ग्राह के फंदे से छुड़ाते हुए | २३x१४.५ | ३९ बी |
| १७. हंसा अवतार मय ब्रह्मा के | २३x१३ | ४० बी |
| १८. मनुअवतार मय स्वयम्भू मनु के | २३x१३.५ | ४२ ए |
| १९. धन्वंतरि अवतार, नाड़ी परीक्षा करतें हुए | २३x१३ | ४२ बी |
| २०. परशुराम अवतार मय कामधेनु, जमदग्नि ऋषि तथा रेणुका के। राजा सहस्रार्जुन एवं परशुराम युद्धमुद्रा में | २३x१९.५ | ४६ बी |
| २१. वेदव्यास अवतार व्यासजी, सुखदेव (शुकदेव) तथा व्यास के कोप से सुखदेव वृक्ष में समाते हुए | २३x१४.५ | ४८ ए |
| २२. रामचन्द्र जन्म (चतुर्भुजस्वरूप) मय माता कौशल्या के | २३x१८.५ | ९१ ए |
| २३. बाली वध— बाली - सुग्रीव युद्ध करते हुए, राम का तीर मारना तथा बाली की मृत्यु पर शोकाकुल तारा केश नोंचती हुई। | २३x१८ | १३३ बी |
| २४. गिद्धराज संपाति द्वारा वानरों को सीता का पता बताना, अशोक वन में हनुमान द्वारा सीताजी के सम्मुख मुद्रिका गिराना तथा लौटने से पूर्व आज्ञा मांगते हुए। | २३x१६.५ | १४७ बी |

| शीर्षक/भाव | माप सें.मी. में | पत्र संख्या |
|---|---|---|
| २५. राम-लक्ष्मण रावण से युद्ध करते हुए। | २३x२०.५ | १६७ ए |
| २६. राम के अयोध्या आगमन पर स्वागत समारोह की झांकी। | २३x२० | २१४ ए |
| २७. श्रीकृष्ण बाल-लीला— पूतना, अघासुर, केशी, त्रणासुर, धेनुकासुर आदि असुरों का वध तथा वसुदेव द्वारा कृष्ण को उफनती कालिंदी से गोकुल में लाना आदि। | २३x१२.५ | २४४ बी |
| २८. रामचन्द्र राज्याभिषेक की झांकी। | २३x१५ | २४४ बी |
| २९. श्री कृष्ण का स्वधाम गमन— मृगाकार चरणार्विंद देखकर व्याघ्र का बांण मारना तथा आकाश में (ब्रह्मा एवं शिव) देवताओं द्वारा स्तुति करने का भाव | २३x१८.५ | |
| ३०. बुद्धा अवतार | २७x२७.५ | ३२५ ए |
| ३१. कल्कि अवतार | २३x२०.५ | ३२७ बी |
| ३२. वराह अवतार | २९x२८.५ | ३२९ ए |
| ३३. शेषशायि आदिनारायण (विष्णु) मय लक्ष्मी एवं नाभिनाल पर ब्रह्मा तथा समुद्र में मत्स्य, कच्छप, मकरादि स्वच्छन्द विचरण करते हुए चित्रित किए गए हैं। | २६.५x२५ | ३३० ए |

सभी चित्र एक ही व्यक्ति द्वारा जोधपुरी कलम में बनाए गये हैं। चित्रों में भावों के अनुरूप ही रंगों का चयन कर चित्रकार ने चित्रों को अधिक प्रभावोत्पादक बना दिया है। चित्रकार के सम्बन्ध में ग्रन्थ में कुछ भी ज्ञातव्य नहीं दिया गया है।

१५३. १०६८३ उपदेशी ढाल संग्रह (पत्रवार विवरण)

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र.स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १. | पञ्चजिन स्तवन | लावण्यसमय | १/६ | |
| २. | उपदेशी पद–<br>जोबनीया री मोजां फोजां<br>जाय नगारा देती रे | दयारत्न | १/५ | |
| ३. | धर्मरुचि सज्झाय—<br>चम्पानगर निरोम सुन्दर | रत्नचन्द | २/१५ | १८६५<br>जोधपुर |
| ४. | समतारस नी सज्झाय | रत्नचन्द | २/५ | |
| ५. | विषेरस उपदेशक पद–<br>किउं विषया रस निजर भरे<br>तेरो पलक पलक आउ जाय रे | लालचन्द | २/४ | |
| ६. | चवदै-स्थानक सज्झाय | | २/१० | |
| ७. | नववाड़ि को स्तवन | हरिसिंघ | २/६ | १८७६<br>सायपुर |
| ८. | पंचतीर्थ नो स्तवन | | २-३/६ | |
| ९. | धर्मरुचि स्तवन | | ३/६ | |
| १०. | ढाल—अमोखा भमरजी हो सायबा<br>झाला द्यु घर आव (दे०) | चोथमल | ३/२ | |
| ११. | ढाल—इम धन्नो धण ने परचावें (दे०) | | ३/२१ | |
| १२. | बालपचवीसी—<br>दुर्लभ मनुष जमारो पाय | ऋषि जैमल | ३-४/२८ | |
| १३. | दृष्टांत—वसंतपुर नामे नगर<br>जित सत्रुतिहां राय | | ४/१४ | |
| १४. | सील रा कड़ा—<br>अपूर्व जीव जिण धर्म पांम्यो | ऋषि रायचंद | ४-५/२५ | १८३३<br>मेड़ता |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १५. | सामायक नी सज्झाय | कुशालचंद | ५/१६ | १८६४ करेडा |
| १६. | मेतारज री लावणी | हीराचंद शिष्य रूपजी | ५-६/६ | १६१४ |
| १७. | पांचमा-आरा नो स्तवन | जैमल | ६/१३ | |
| १८. | सोले सत्यां रो स्तवन | | ६/५ | |
| १९. | विजेकुंमरजी री लावणी | ऋषि लालचन्द शिष्य दौलतराम | ६-७/१६ | १८६१ कोटा(रामपुरा) |
| २०. | नेमजी री लावणी<br>गाफल मति रहरे मेरी ज्यांण | विनेचन्द | ७-८/४२ | |
| २१. | धन्नाजी री लावणो | विनेचन्द | ८-९/२० | |
| २२. | उपदेशी पद—<br>कर गुदरान गरीबी सैं;<br>तन धर सुखिया कोई न दीठा;<br>संतो भाई कूए भांग पड़ी;<br>माया के मजूर की कहा जांणै बंदगी;<br>चांवडा री पूतली रे चावै बीड़ा पांन;<br>तूं मांहरो बाबो रे बाबो,<br>थारौ मिट्यौ न आबो जावो। | कबीरदास | ९-१०;<br>१४-१५ | |
| २३. | उपदेशी पद | रूपचन्द | १० | |
| २४. | ,, | आनन्दघन | १०-११, १५ | |
| २५. | ,, | नवल | १२ | |
| २६. | ,, | बनारसी | १२ | |
| २७. | ,, | लालचन्द | १२ | |
| २८. | ,, | मांन | १२ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| २९. | उपदेशी पद– | समयसुन्दर | १२, १४ | |
| ३०. | ,, | रूपविजय | १२-१३ | |
| ३१. | ढाल १ ली : अलवेली (दे०) पहिलौ दंडक नर्कनो रे लाल | ऋषि जैमल | १३/११ | |
| ३२. | ढाल : अलवेली (दे०) आज एकादशी है नणदल मून करी मुख रहियै । | उदेरत्न वाचक | १३/७ | |
| ३३. | ढाल : रे माधव इम बोलै (दे०) दया रणसींगो वाजियौ रे | | १३-१४/३७ | |
| ३४. | ढाल : सोना केरो वेहड़ो (दे०) जिनस्तवन | पद्मविजय | १४/७ | |
| ३५. | उपदेशी पद (रागबद्ध) | रामजन | १४-१५ | |
| ३६. | ,, | आनन्दघन | १५ | |
| ३७. | ,, | गरीबदास | १५ | |
| ३८. | ,, | लालचंद | १५ | |
| ३९. | ,, | शाहहुसेन फकीर | १६ | |
| ४०. | ढाल १ ली : विछीयानी (दे०) अहो सिध सिला सगलां सीरे | रायचंद शिष्य जैमल | १६/१७ | १८३० फलोदी |
| ४१. | ढाल २ री : हमीरीयानी (दे०) श्री गोतम स्वामी पूछा करे | ,, | १७/१६ | |
| ४२. | ढाल ३ री : अजितनाथजी रावा रानी (दे०) प्यारो मोह नगारो राज | ,, | १७/१३ | १८४० पीपाड़ |
| ४३. | ढाल ४ थी : अर्णक मुनिवर (दे०) पांचू इंद्री हो अहि निस वस करे | विजेदेव सूरी | १७/८ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ४४. | ढाल ५ वीं :<br>एक दिन घोड़ा हाथीयां रे | लावण्यसमय | १८/१३ | |
| ४५. | ढाल ६ ठी : कड़खारी (दे०)<br>म कर हो जीव पर वात दिन रात तूं | | १८/६ | |
| ४६. | ढाल ७ वीं : हमीरीयानी (दे०)<br>चावत म करो पर तणी | | १८/५ | |
| ४७. | ढाल ८ वीं :<br>इण स्वारथ सिद्ध रे चंदरवे० (दे०)<br>साध पणा को मारग लेने | आसकरण | १८/१३ | १८७२<br>जोधाणे |
| ४८. | ढाल ९ वीं : अलवेल्या री (दे०)<br>च्यार पोहर रो दिन हुवे रे | रायचन्द | १८-१९/११ | |
| ४९. | ढाल १० वीं : रसीयानी (दे०)<br>सुगण सनेही रे सामळ सीखड़ी | आनन्द मुनि | १९/१० | |
| ५०. | ढाल ११ वीं : नणदल री (दे०)<br>मत कोई रमजो जुवटे<br>चतुर तिके नर नार हो | कुशालचंद | १९/११ | १८७१<br>पाली |
| ५१. | ढाल १२ वीं :<br>नवकार मंत्र नो ध्यान धरो (दे०) | | १९/११ | |
| ५२. | ढाल १३ वीं :<br>करो दांन सीयल ने तप भावे (दे०)<br>देवगुरु धर्म री पारख करो | | १९-२०/१३ | |
| ५३. | ढाल १४ वीं : (सारङ्ग राग)<br>देव तणो आचार न जांणे | | २०/९ | |
| ५४. | ढाल १५ वीं : धमाल<br>मात पिता सुत बंधवा हो | | २०/८ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ५५. | ढाल १६ वीं : जिनवर गणि मुनिवर ने केहरे (दे०) आउखो टुटां ने साधो को नहि रे | | २०/८ | |
| ५६. | ढाल १७ वीं : मिनख जनम दूल हो लह्यो | जैमल | २०-२१/२७ | |
| ५७. | ढाल १८ वीं : ताणा कोन तणावे रेजा कोन वणेगा (दे०) गुर का कह्या मांन ले रे | | २१/६ | |
| ५८. | ढाल १९ वीं : नवकार मंत्र रो ध्यान० (दे०) गुर अमृत जीम लागे मीठा | रायचन्द | २१/१९ | १८४० खेड़ा सांडियेगांव |
| ५९. | ढाल २० वीं : पुन्य जोगे ग्यांनी मोने गुर मिलिया | रायचन्द | २१-२२/१४ | १८४२ गगडांणा |
| ६०. | ढाल २१ वीं : ते गुर मेरे उर वसे, ते भव जलधि जिहाज | | २२/१३ | |
| ६१. | ढाल २२ वीं : हरयसरी (दे०) बोहोत निहाल किया हो परम गुरु | रायचन्द | २२/१३ | |
| ६२. | ढाल २३ वीं : गयोरो जोवन (दे०) गुरु समझाय ने संजम दीनो | " | २२/२१ | १८४१ जेतारण |
| ६३. | ढाल २४ वीं : जोर वण्योजी आजरो नेमीश्वर (दे०) संबर रो सिणगार धर्मप्रेम पीठीजी | " | २२-२३/१३ | १८४१ पीपाड़ |
| ६४. | ढाल २५ वीं : मोटा थे तो चतुर सुजाण | गोरधन | २३/८ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ६५. | ढाल २६ वीं : चौपई<br>सूधे मन सुणजो नर नार | आणंदविमल | २३/२२ | |
| ६६. | ढाल २७ वीं : नवकार मंत्र री(दे०)<br>दुलहो मिनख जनम लाधो | रायचन्द | २३/१२ | |
| ६७. | ढाल २८ वीं :<br>कुड कपट कर माया मेली | | २३-२४/१२ | |
| ६८. | ढाल २९ वीं : देवर पूर खड़ा रे<br>रेलो कांम धर्म धरेगा (देशी) | | २४/१० | |
| ६९. | ढाल ३० वीं :<br>मेरा साहब सगुण सोभागी | नयविमल | २४/९ | |
| ७०. | ढाल ३१ (३२) वीं :<br>आदर जीव खिम्या गुण आदर(दे०)<br>किण सुं वाद विवाद न कीजे | रायचन्द | २४/१८ | १८३३<br>मेड़ता |
| ७१. | ढाल ३३ वीं :<br>मन मेला रे तन क्या धोया | | २४/७ | |
| ७२. | ढाल ३४ वीं :<br>श्री कल्याण गुरु सीम री सार | ऋषभदास | २४-२५/९ | |
| ७३. | ढाल ३५ वीं :<br>प्रथम नमुं सह गुरु नांम | लालविजय शिष्य<br>शुभविजय | २५/५ | |
| ७४. | ढाल ३६ वीं :<br>जोरवण्यो ३ जी आजरो (दे०)<br>भेद आठ्या का दोय भाख्या | | २५/६ | |
| ७५. | ढाल ३७ वीं :<br>छोटो बालक मोटो थावे | | २५/७ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ७६. | ढाल ३८ वीं :<br>चेतन छांडो यह रीत | विनोदीलाल | २५/२१ | |
| ७७. | ढाल ३९ वीं :<br>नर माया काये कुं जोड़ी रे(दे०)<br>समकृत ने चोखी आरावे | जैमल | २५-२६/९ | |
| ७८. | ढाल ४०(४१) वीं :<br>नाह लीया विहूणी (दे०)<br>प्रीतड़ी न कीजे हे नारी परदेशीया रे | समयसुन्दर | २६/५ | |
| ७९. | ढाल ४२ वीं : चेडो महाराज रे (दे०)<br>एक कनक अरु कांमणी परदेशी रे | | २६/१० | |
| ८०. | ढाल ४३(४४) वीं :<br>वीर जिणेसर गोतम नें कहे | | २६/६ | |
| ८१. | ढाल ४५ वीं .<br>सुण बहिनी प्रिऊड़ो परदेशी (दे०)<br>इम सतगुरु जीव ने समझावे | | २६-२७/२१ | |
| ८२. | ढाल ४६ वीं : चन्द्रायणा<br>नवघाटी उलंगने रे पायो नरभव सारो | हीरो | २७/७ | |
| ८३. | ढाल ४७ वीं :<br>तुंगीया गिर सिखर सोहे (दे०)<br>मोह मद की नींद सुतो जाग बंदे जाग बे | सेवग | २७/१३ | |
| ८४. | ढाल ४८ वीं :<br>वीर मती कहे रे वहू(दे०)<br>सुण २ सुगण तूं जीवड़ा | पद्मविजय | २७/१४ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज़) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ८५. | ढाल ४९ वीं : कर्म समो नहीं कोई (दे०) चैत्य मंदिर मांहे वृक्षज उगो | पासचंदसूरि | २७-२८/१६ | |
| ८६. | ढाल ५० वीं : दुल हो नर भव भवे भमतां | ,, | २८/१५ | |
| ८७. | ढाल ५१ वीं : अरिहंत सिद्ध आचारज मोटा | जैमल | २८/१९ | |
| ८८. | ढाल ५२ वीं : भला पधारचा मेरे पूज जी (दे०) रतन चिंतामण जेहवो | ऋषि आसकरण | २९/२१ | १८६३ नागोर |
| ८९. | ढाल ५३ वीं : नित करूं साधूजी ने वंनणा (दे०) इण काळ रो भरोसो भाईरे को नहीं | | २९/१४ | |
| ९०. | ढाल ५४ वीं . पोते पुन्य हूवे जेहनें, दुख नेड़ो नही आवे तेहने | रायचन्द | २९-३०/२८ | १८३५ जोधपुर |
| ९१. | ढाल ५५ वीं : राणी कहे नटराज आ० (दे०) वैठी साधां रे पासक | मोतीचन्द | ३०/३० | १८५३ |
| ९२. | ढाल ५६ वीं : सांमीजी सायब सुणो विनती | रायचन्द | ३०-३१/१८ | १८४२ पीपाड़ |
| ९३. | ढाल ५७ वी : नवकार मंत्र नो ध्यान धरो (दे०) सूत्र में दस सुख दाख्या दसमें ठाणे ज्यांरा नाम भाख्या | रायंचन्द | ३१/१२ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ९४. | ढाल ५८ वीं :<br>आदनाथ रो ननणजी (दे०)<br>धर्म पावे तो कोई पुनवंत पावे | | ३१/९ | |
| ९५. | ढाल ५९ वीं :<br>म्हारी गुर दीठा दील हुवे (दे०)<br>तिर्थंकर चोवीसे ध्यावो | रायचन्द | ३१/१० | |
| ९६. | ढाल ६० वीं :<br>तृष्णा तुरणी हे तुं व्यापार हि जग माय (दे०)<br>जव ही उसकी वात वणावे | | ३१-३२/१७ | |
| ९७. | ढाल ६१ वीं : चौपई री<br>अस्त्री ने दुःख कह्या अनेक | रायचन्द | ३२/३५ | १८४८<br>रायपुर |
| ९८. | ढाल ६२ वीं :<br>केल करावे रे हाथीयो (दे०)<br>एक एक मांनवी एहनी | | ३२-३३/२१ | |
| ९९. | ढाल ६३ वीं : भूलड़ा स्याने (दे०)<br>इण संसार में थिर नहि कोइ | चोथमल | ३३/८ | |
| १००. | ढाल ६४ वीं :<br>एतो जुग छै प्रतक कारमो | | ३३/७ | |
| १०१. | ढाल ६५ वीं :<br>भूलडा स्याने फिरो (दे०)<br>दिन उगे तूं धंधे लागो | | ३३/६ | |
| १०२. | ढाल ६६ वीं :<br>पाडली पूररी सेरीयां भमतां (दे०)<br>वीस सखी री टोली मील नें | गोरधन | ३३-३४/२३ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १०३. | ढाल ६७ वीं : काची कली अनार की रे हां० (दे०) इथर मांणस रो आउखो रे हां | | ३४/६ | |
| १०४. | ढाल ६८ वीं : अलवेल्यारी (दे०) आद अनाद रो जीवडो रे लाल | | ३४-३५/२५ | १८३५ जोधाणे |
| १०५. | ढाल ६९ वीं : नवकार मंत्र रो ध्यान धरो (दे०) इंद्र ने वले इंद्राणी, ज्यांने ही काल लपेटे आंणी | रायचन्द | ३५/१५ | |
| १०६. | ढाल ७० वीं : नवकार मंत्र (दे०) पुन जोगे नर भव लह्यो ढाणो | ,, | ३५/२४ | |
| १०७. | ढाल ७१ वीं : गुर विन ग्यांन नही (दे०) पुन जोगे गुरु मिलीया भारी | ,, | ३५-३६/२० | फलोदी |
| १०८. | ढाल ७२ वीं : गुर विन० (दे०) मात पिता बहू ने भाई जांणो स्वारथ री सब सगाई | | ३६/११ | |
| १०९. | ढाल ७३ वीं : कलमी री जोड़ री (दे०) मोह मिथ्या तरी नींद में– जीवा सुतो काल अनन्त | जैमल | ३६-३७/२३ | |
| ११०. | ढाल ७४ वीं : सीलावटीग्रारी तथा पनारी (दे०) सतगुरु मांनो सीख | | ३७/१५ | |
| १११. | ढाल ७५ वीं : तुम पर वारी २ (दे०) अलगी रेहनी हे रेहनी | | ३७/६ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ११२. | ढाल ७५ वीं :<br>आवे काल लपेटा लेतो (दे०)<br>कदे हूवो गीजंदर साहो रे | जैमल | ३७-३८/२६ | |
| ११३. | ढाल ७६ वीं :<br>नायक मोह नचावीयो | जिनराज | ३८/५ | |
| ११४. | ढाल ७७ वीं : मारा स्वामी हो<br>सुण सीतलनाथ (दे०)<br>थें सुणजो हे आरजीयां एम | रायचन्द | ३८/२२ | १८३२<br>अहिपुर |
| ११५. | ढाल ७८ वीं : दोषा सडली<br>श्रुत अति भलो सिंघ सकल आधार | | ३८-३९/७ | |
| ११६. | ढाल ७९ वीं : होली री—राग वसंत<br>ऐसे मुनी राज छउ काय के<br>पीहर खेलत होरी सदइयां | विनेचन्द | ३९/१४ | 'जंबू विच जोरी' |
| ११७. | ढाल ८० वीं :<br>वोलो २ जी म्हारी सगी नणदरा बीर (दे०)<br>सुमत सखी इम वीनवे रे | | ३९/७ | |
| ११८. | ढाल ८१ वीं :<br>चतु विचार करी ने देषो (दे०)<br>नेम सरीखा वांदण आवे | रायचन्द | ३९/१५ | १८३३<br>वीसलपुर |
| ११९. | ढाल ८२ वीं :<br>ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं (दे०)<br>भूलो मन भमरा कांइ भमे | महमद | ३९/१२ | |
| १२०. | ढाल ८३ वीं : खटमलीयो मेवासी (दे०)<br>अभिमान म करजो कोइ | | ३९-४०/७ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १२१. | ढाल ८४ वीं : साधू निर्वेद भाषा बोलजो (दे०) साधू धन ते जीता मोहणी | आसकरण | ४०/२० | १८३२ नागोर |
| १२२. | ढाल ८५ वीं : ऋषभ जिणसर प्रीतम माहरो (दे०) मूरख जीवडा रे गाफल मत रहे | | ४०/१२ | |
| १२३. | ढाल ८६ वीं : ऋषभ जिणेसर तुमने ध्याइ (दे०) मम कर जीवड़ा रे महारो महारो | जेमल | ४०-४१/१३ | |
| १२४. | ढाल ८७ वीं : नंदी जमुना के तीर उडे दोय पंषीया प्रीउ चाल्या परदेस (दे०) आ देही असारक हाड ने चर्म री | सीयल | ४१/२१ | |
| १२५. | ढाल ८८ वीं : कोयल पर्बत धूंधलो रे लाल (दे०) सूतर भगोती सतक पै लडे रे लाल | रायचन्द | ४१-४२/१७ | |
| १२६. | ढाल ८९ वीं : हिंडो हाले रे (दे०) ओ जीव काल अनादी रुलीयो | लालचन्द | ४२/६ | १८७६ अजमेर |
| १२७. | ढाल ९० वीं : गोरी दिल वसें जीदवो (दे०) जेन धर्म पायो दोहिलो | | ४२/६ | |
| १२८. | ढाल ९१ वीं : निहालदे रा गीत री (दे०) समकृतधारी सुध मति साधू गुणारी माल | चन्द्रभाण | ४२/१६ | १८६३ फतेपुर |
| १२९. | ढाल ९२ वीं : कमखारी (दे०) जोवन वय मांहे जोर जालम वण्यौ | रायचन्द | ४२-४३/९ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १३०. | ढाल ९३ वीं : तेमुज मिच्छामि दुक्कडं (दे०) काया रे वाडी करमी सीचंता सूके | रतनतिलक | ४३/६ | |
| १३१. | ढाल ९४ वीं : सूत्र भगोती शतक (दे०) पुन्य जोगे नर भव लह्यौ | रायचन्द | ४३/१९ | १८३१ पाली |
| १३२. | ढाल ९५ वीं : वाहा वणायों रे वीजणों (दे०) इण विषय थकी डूबा घणा | | ४३/१३ | |
| १३३. | ढाल ९७ वीं : नवकार मंत्र रो ध्यान धरो (दे०) सतगुरु उपदेस घणो ही देवे | | ४३ ४४/१४ | |
| १३४. | ढाल ९८ वीं : श्रावका चित चोषी करो (दे०) जिण जल मांहे माछली व्याइ | कबीर | ४४/७ | |
| १३५. | ढाल ९९ वीं : डोरी मोरी आवे रे रसीया कर तले (दे०) साधूजी रो मारग रे कठण कह्यो केवली | रूपचन्द | ४४-४५/४३ | |
| १३६. | ढाल १०१ वीं : कूसल मुनिवर देवे देसणा जी | | ४५/१२ | |
| १३७. | ढाल १०२ वीं . चेत चेत मन गाफल मत रहे | | ४५/६ | |
| १३८. | ढाल १०३ वीं : आतम रांम सयांणा | मांणकदेव | ४५/८ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १३९. | ढाल १०४ वीं :<br>नवकार मंत्र रो ध्यान धरो (दे०)<br>इण जग मांहे केइ नर नारी,<br>जोगी जती ने वले भेख धारी | रायचन्द | ४५-४६/१० | १८४०<br>पीपाड़ |
| १४०. | ढाल १०५ वीं :<br>सुण रे भाई तेरा कीया ते पावेगा | जालम | ४६/९ | |
| १४१. | ढाल १०६ वीं :<br>आघा आप पधारो पूज्य (दे०)<br>जुग में जोर सुरंगी रे लाल | ऋषि रायचंद | ४६/१४ | १८५२<br>कुचेरा |
| १४२. | ढाल १०७ वी :<br>संघ आयो रे सेत्रुंजाजी को (दे०)<br>होरी खेलो रे भविक मन थिर करके | रूपचन्द | ४६/५ | |
| १४३. | ढाल १०८ वीं :<br>लेखो बेठो लोभे लागे | | ४६/९ | |
| १४४. | ढाल १०९ वीं :<br>अब मन मेरा है सुन सुन सीख सयांणी | | ४६-४७/५ | |
| १४५. | ढाल ११० वीं : चालो सहेल्यां<br>आपां भेरू ने मनास्यां है (दे०)<br>भाव पचीसी जोड़ूं भारी<br>आगम ने अनुसारी | चन्द्रभाण | ४७/२५ | १८१८<br>फतेहपुर |
| १४६. | ढाल १११ वीं :<br>प्यारो मोहण गारो राज (दे०)<br>भवसागर में भटकत २ | रामचन्द | ४७/१३ | |
| १४७. | ढाल ११२ वीं : चउपईनी<br>पोते पाप हूवै जेहनें | रायचन्द | ४७-४८/२५ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १४८. | ढाल ११३ वीं :<br>गढ सुरत को कारीगर आयो | | ४८/११ | |
| १४९. | ढाल ११४ वीं :<br>एक सुणजो हे मारी बाई वेनड़ीयां | | ४८/१५ | |
| १५०. | ढाल ११५ वीं : चीतोड़ी राजा रे(दे०)<br>केइ खोल उतारे रे | | ४८-४९/३० | |
| १५१. | ढाल ११६ वीं :<br>सुण चतुर सुजाण परनारी सुं<br>प्रीत कछू नही कीजीये | | ४९/१० | |
| १५२. | ढाल ११७ वीं :<br>सीहल नृप कहे चंद ने (दे०)<br>हां रे मारा प्रांणीया | रतनसागर | ४९/८ | |
| १५३. | ढाल ११८ वीं : चीणजा रानी०(दे०)<br>जीवां चेतो रे दे मुनिवर उपदेश | जैमल | ५०/१७ | |
| १५४. | ढाल ११९ वीं :<br>अबको चोमासो प्रभुजी अठै करो(दे०)<br>सासण नायक दीयो उपदेस | चोथमल | ५०/१६ | १८६०<br>जयपुर |
| १५५. | ढाल १२० वीं : सुगर पचीसी<br>साध म जाणो इण चल गत सु(दे०)<br>सुगुरु पींछाणो इण आचारे | जिनहर्ष | ५०-५१/२४ | |
| १५६. | ढाल १२१ वीं :<br>साध म जाणो इण चल गत सु(दे०)<br>इण आरा में निन्नव वीगड्या | रायचन्द | ५१-५२/३९ | १८३३<br>पाली |
| १५७. | ढाल १२२ वीं : छत्तीसी<br>नित करूं साधुजी ने वनण,(दे०)<br>निखरो मांणस निंदक हूवे | " | ५२/२५ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज़) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १५८. | ढाल १२३ वीं :<br>मांन न कीजे रे मांनवी (दे०)<br>सतगुरु आगम सीख थी | जैमल | ५२-५३/३७ | |
| १५९. | ढाल १२४ वीं :<br>कहो नी चतुर नर कुण (दे०)<br>चाखो रे नर समता रस चाखो | रायचन्द | ५३/२१ | १८३३<br>मेड़ता |
| १६०. | ढाल १२५ वीं :<br>कर्म न छूटे रे प्राणीया (दे०)<br>मांन न कीजे रे मानवी | | ५३-५४/४१ | |
| १६१. | ढाल १२६ वीं :<br>पुन्य जोगे नर भव पांमीयो | रायचन्द | ५४/१८ | १८४३<br>बीकानेर |
| १६२. | ढाल १२७ वीं : (नारी स्वभाव पर)<br>सुवे सवेली उठे अवेली<br>देफारां दळ रांधे | | ५५/१४ | |
| १६३. | ढाल १२८ वीं : लोभ पच्चीसी<br>एक सदा जिन धर्म आराधो (दे०)<br>लोभी मिनख सुं प्रीत न कीजै | रायचन्द | ५५/२५ | १८३४<br>बीकानेर |
| १६४. | ढाल १२९ वीं : चेतन्य पचीसी<br>नणदल री (दे०)<br>नीठ नीठ नर भव लह्यो | ,, | ५५-५६/२५ | जोधाणे |
| १६५. | ढाल १३० वीं : दान पचीसी<br>अलवेल्या री (दे०)<br>पुन्य जोगे नर भव पांमीयो रे लाल | रायचन्द | ५६/२५ | १८३५<br>जोधपुर |
| १६६. | ढाल १३१ वीं :<br>विरला इसड़ा ब्रह्म (दे०)<br>रात दिवस ते माया मेली<br>कर २ देही दोरी रे | | ५६-५७/१५ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १६७. | ढाल १३२ वीं : | | | |
| | अर्णक मुनिवर चाल्या गोचरी(दे०) | | | |
| | चंचल जीवड़ा रे मे तोने वरजीयौ | | ५७/११ | |
| १६८. | ढाल १३३ वीं : | | | |
| | नयण निहाले रांणी देवकी (दे०) | | | |
| | साधूजी नगरी मै आव्या सदा भला रे | | ५७-५८/३० | |
| १६९. | ढाल १३४ वीं : | | | |
| | भूलो मन भवरा कांई भमै(दे०) | | | |
| | हटवाड़ा मेळो जिसो जुग जांणौ एह | | ५८/१६ | |
| १७०. | ढाल १३५ वीं : | | | |
| | जीव दया व्रत पाळो रे (दे०) | | | |
| | प्राणी कर्म समो नही कोई | | ५८-५९/२२ | |
| १७१. | ढाल १३६ वीं : | | | |
| | कवरी बोलावे रे (दे०) | | | |
| | समकृत षरो अराधो रे | जैमल | ५९/३४ | |
| १७२. | ढाल १३७ वीं : | | | |
| | नवकार मंत्र रो ध्यान धरो(दे०) | | | |
| | एक दिन निश्चय करनें मरणो | रायचन्द | ५९/११ | |
| १७३. | ढाल १३८ वीं : | | | |
| | सुग्यांनी उजल राषै हो मनरी भावना | चोथमल | ५९-६०/१३ | १८६५ चण्डावल |
| १७४. | ढाल १३९ वीं : वय–पचीसी | | | |
| | मन रे तुं जीव ने समझाय | रायचन्द | ६०/२३ | १८२१ डीडवाणा |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १७५. | ढाल १४० वीं :<br>इम सत गुर जीव ने समझावे (दे०)<br>पांचमा आरा रा भावज एहवा | रायचन्द | ६०-६१/३० | १८१७ |
| १७६. | ढाल १४१ वीं :<br>कपटी मनुष्य रो विश्वास न कीजै (दे०)<br>कु गुर तणे उपदेसे भूला | जैमल | ६१-६२/४५ | |
| १७७. | ढाल १४२ वीं :<br>थारे नेणा रो पाणी लागणो मारूजी (दे०)<br>गुरांजी मे दरसण दीठो नयण, भलो दिन आज रो | रायचन्द | ६२/२५ | १८३२ नागोर |
| १७८. | ढाल १४३ वीं : गुणवंत-पचीसी<br>हर मुरली ए (दे०)<br>सिष सुवनी तज देषने ठरे गुरां रा नेंण | ,, | ६२-६३/२४ | १८२५ नागोर |
| १७९. | ढाल १४४ वीं :<br>थांरे नेणा रो पांणी लागणो (दे०)<br>गुरणीजी मारा हिवड़ा रे मांहि माला थांरा जाप री | ,, | ६३/२१ | पाली |
| १८०. | ढाल १४५ वीं :<br>नांनो नाह लो (दे०)<br>सिष्यणी सांमो जोय नें रे गुरणी बौले बोलक | ,, | ६३-६४/२० | |
| १८१. | ढाल १४६ वीं :<br>हुंतो जांणु रे जिणवर बांदसा (दे०)<br>दुक्षम काले समकृत दोहिलो | ,, | ६४/१४ | १८५२ जोधपुर |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज़) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १८२. | ढाल १४७ वीं : | | | |
| | वंदु सोले जिन सोवन वर्णा (दे०) | रायचन्द | ६४-६५/५४ | १८१८ |
| | निन्नव नीकलीया पांचमें आरे | | | पाली |
| १८३. | ढाल १४८ वीं : टलोकड पचीसी | ,, | | |
| | टोला रा अवगुण वोलै टलोकड | | ६५-६६/२५ | |
| १८४. | ढाल १४९ वीं : | | | |
| | निन्नव पदावली (सारङ्ग राग) | ,, | ६६/२० | १८३१ |
| | निन्नव माहे कला न कांइ | | | पाली |
| १८५. | ढाल १५० वीं : निंदक पचीसी | | | |
| | दोहिलो मानव भव कांई नु हारे(दे०) | ,, | ६६-६७/२७ | ,, |
| | इण दुक्षम आरा मांहि उघाड़ा | | | |
| | निन्नव पापी जीव रे | | | |
| १८६. | ढाल १५१ वीं : | | | |
| | हमची हेली हे सागरीयो विष नी वेली | | ६७/३१ | |
| १८७. | ढाल १५२ वीं : | | | |
| | सहेल्यां हे आंबो मोरीयो (दे०) | | | |
| | निंदडली वैरण हूय रही | जैमल | ६७-६८/२२ | |
| १८८. | ढाल १५३ वीं : | | | |
| | चेतन चेतजो रे | ,, | ६८/२२ | |
| | मनुष्य जमारो पायो रे | | | |
| १८९. | ढाल १५४ वीं : | | | |
| | ऋषभ जीनेसर प्रीतम माहरा(दे०) | | | |
| | जीवड़ा ने मेले रे ओ मन मोकळो | | ६८-६९/२७ | |
| १९०. | ढाल १५५ वीं : | | | |
| | समजणी बाई रा थें गुण सुणो | मोतीचन्द | ६९/१२ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| १९१. | ढाल १५६ वीं : सुणजो रे ब्रह्मचारी | विजेदेव सूरि | ६९/१३ | |
| १९२. | ढाल १५७ वीं : चेतोरे प्राणी चेतो, मति राचो रे रमणी रे रंग | ,, | ७०/१६ | |
| १९३. | ढाल १५८ वीं : संकर वसै रे केलास में (दे०) तप वडो रे संसार में | आसकरण | ७०/१५ | १८५३ जोधपुर |
| १९४. | ढाल १५९ वीं : साध संगत नित कीजिये रे लाल | धर्मदास शिष्य समरचन्द | ७०/७ | |
| १९५. | ढाल १६० वीं : ते तीरीयारे भाई ते तीरीया (दे०) मांन ले रे सतगुरु तुं सीखड़ली | रायचन्द | ७०-७१/१५ | १८५४ जोधपुर |
| १९६. | ढाल १६१ वीं : श्रावक धर्म करो सुखदाई (दे०) दोषण टाली ने करो समाई | आसकरण | ७१/१७ | १८३७ रीयां ग्राम |
| १९७. | ढाल १६२ वीं : रसीया री (दे०) मारो मन लागो हो जीनजी रा ध्यान सु | रायचन्द | ७१/१३ | १८५५ मेड़ता |
| १९८. | ढाल १६३ वीं : एक दिवस लंका गढ़ केरो (दे०) तारक वचन विचारी नें जोइजो | रतनचन्द शिष्य लालचन्द | ७१-७२/२० | १८०३ रीयां |
| १९९. | ढाल १६४ वीं : मुनि तणो मंगल तीसरो (दे०) मम करो काया माया कारमी जी | जैमल | ७२-७३/३३ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज़) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र.स्था. |
|---|---|---|---|---|
| २००. | ढाल १६५ वीं : दीक्षा पचीसी<br>नणदल री (दे०)<br>दीक्षा मत दीजो अयोग नें | रायचन्द | ७३/२४ | १८३६<br>नागोर |
| २०१. | ढाल १६८ वीं :<br>इण समकृत मन थिर करो (दे०)<br>सुण गोतम पचखाण विधि | | ७३/१३ | |
| २०२. | ढाल १६६ वीं : कुलक्षणी बोले तु रेहनी ३<br>वरज्यो रेहनी | गोरधन | ७३-७४/१२ | १८३८<br>खेजड़ला |
| २०३. | ढाल १६६ वीं :<br>इण कोड पूर्व लग पांमी (दे०)<br>इम स्वार्थ सिद्ध रे चंदरवे कांई<br>मोती जुंबक सोहेजी | | ७४/१५ | |
| २०४. | ढाल १७० वीं :<br>स्वामी जी थांसु वांनवू | लालचन्द | ७४/१४ | रतलाम |
| २०५. | ढाल १७१ वीं :<br>ओ भव रतन चिंतामण सरिखो | अखैराम | ७४-७५/१० | |
| २०६. | ढाल १७२ वीं :<br>आवे काळ लपेटा लेतो (दे०)<br>ए तो हथी कर्म से वेजांण रे | रायचन्द | ७५/८ | |
| २०७. | ढाल १७३ वीं : सूक्ष्म पचावनी<br>निन्नव जांणो इण चल गत सुं (दे०)<br>सूक्ष्म छत्तीसीं सांभल प्राणी | उदय ऋषि | ७५-७६/५४ | औरंगावाद |
| २०८. | ढाल १७४ वीं :<br>नगरी खूब वणी छै (दे०)<br>कांइ तुं गरभ रही छे हे<br>ओ घर माहरो ने हूं घर की | जसरूप | ७६/१२ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| २०६. | ढाल १७५ वीं : समदृष्टी पचीसी<br>उपजे आणंद (दे०)<br>अपूर्व जीव जिन धर्म पांमीयो | रायचन्द | ७६-७७/१३ | १८३३<br>मेड़ता |
| २१०. | ढाल १७६ वीं :<br>वात म काढो जी व्रत तणीं (दे०)<br>इम समकत मन थिर करो | | ७७-७७/५६ | |
| २११. | ढाल १७७ वीं :<br>नव वाड सहि जिन राज कही<br>मुनि राज लही हे हितकारी | | ७८/११ | |
| २१२. | ढाल १७८ वीं : तुम तो भले<br>विराजे जी सांवलीया गिरधारी (दे०)<br>जोयजो असी दुनीयां भोरी<br>धर्म करंती लाज करै ले परतख खेले होरी | चैनसुख | ७८-७६/६ | |
| २१३. | ढाल १७६ वीं :<br>तंत मारग एक मुगत छै | रायचन्द | ७६/६ | १६३७ |
| २१४. | ढाल १८० वीं :<br>लालन लील करूंगी रे (दे०)<br>भवीयण ग्यांन विचारो रे | माणकचन्द | ७६/१४ | १८७८<br>जालोर |
| २१५. | श्री रामजी री लावणी :<br>हां रे काळ सुं डरे रे | जसकीर्ति शिष्य रत्नचन्द | ७६-८१/६७ | १६२१<br>आगरा |
| २१६. | ढाल : मोटी जग मैं मोहणी | रत्नचन्द | ८१/११ | १८७२<br>देवगढ़ |
| २१७. | ढाल : महावीरजी रो स्तवन<br>आयो २ मारूजी विणजारा रो पीठ | मनोहर विजय | ८१/६ | |
| २१८. | ढाल : रमो २ हे चेलकड्यौ<br>फूंदा री डोरी (दे०)<br>मीठी इम्रत सारपी सत गुर की वांणी | रत्नचन्द | ८१/१० | १८७३<br>रूपनगर |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| २१९. | ढाल : ढंढण ऋषजी री<br>ढंढण ऋषजी ने वंनणा हूं वारी | जिनहर्ष | ८२/१० | |
| २२०. | ढाल : लालन लील करूंगी आछो (दे०)<br>नगरी खूब वणी छै जी | रत्नचन्द | ८२/१२ | |
| २२१. | ढाल : कोप्यो देव पापुर धणी (दे०)<br>बे बंधव वन में थका रे<br>वात करे कुरणाय | | ८२/१५ | |
| २२२. | ढाल : मिनख जनम दोहलौ कह्यौ<br>लाधो आरज खेत रे (दे०)<br>दुलहौ मांनव भव कांय तुं हारे | | ८२-८३/२२ | |
| २२३. | ढाल : मे सरनी रा गीत नी (दे०)<br>सीख सुध मांनो रे सतगुर री | रत्नचन्द | ८३/२५ | १८७८<br>नागोर |
| २२४. | पद : किसका छोरु छोकरा रे | | ८३/४<br>(राग पंजावी) | |
| २२५. | पद : नेमनाथजी रो<br>जब रथ दूर गयो तब चेती | रूपचन्द | ८४/४ | |
| २२६. | पद : जिन मेरो रे पारसनाथ आधार | सेवक | ८४/२<br>(राग भैरवी अजमेरी) | |
| २२७. | ढाल : नींबूड़ा ना गीत नी (दे०)<br>सुखकारी हो जिनजी | रत्नचन्द | ८४/७ | |
| २२८. | पद : भव जीवां हो वांदो भगवंत नै | ,, | ८४/१३ | १८७१<br>अजमेर |
| २२९. | पद : जिनराज हांजी थांने<br>कोणक वांदण जाय | ,, | ८४/१० | वड़लू ग्राम |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| २३०. | पद : वीर वखांण्यौ श्रावक एहवौ रे | रत्नचन्द | ८४-८५/७ | १८८४ पाली |
| २३१. | ढाल : नेणा रो झकोळो हे गवालण मोह्यौ (दे०) तुम पर वारीजी वीर वखांणी हो | ,, | ८५/७ | |
| २३२. | पद : म्हारा सोढा राणा मेलो रे माझळ रात री (दे०) माहरा ग्यांनी गुर री वांणी हो इम्रत सारखी | ,, | ८५/९ | १८४२ जोधाणे |
| २३३. | ढाल : आघी तो नीरुंकर हा एलची (दे०) समुद्र विजेजी रा लाड़ला हो | ,, | ८५/५ | |
| २३४. | ढाल : पनां मारू हिवडे रा हार (दे०) प्रभु म्हांरा हो— हे दरसण देखी ने हिवड़ौ उमगेजी | ,, | ८५/५ | |
| २३५. | ढाल : गुल गुल रही नींद हो नयणां लोभी आलीजा मारू नै नींद (दे०) मनड़ौ उमायौ हो दरसण देखवा | ,, | ८५-८६/९ | १८७३ कृष्णदुर्ग |
| २३६. | ढाल : सुंवर सोहनी (दे०) मनड़ो उमायौ हो दरसण देखवा | ,, | ८६/९ | १८६० पीपाड़ |
| २३७. | ढाल : सावणीया रे पेलड़ै मासजी (दे०) हां हे दरसण देव रो हे हीया नौ सेहरो हे पार्श्वनाथ | ,, | ८६/६ | १८७४ पाली |
| २३८. | ढाल : सोनल नै वाघेली परण पधारीया (दे०) ऋषभदत्त नै देवा नंदा नार | ,, | ८६/७ | १८८० पाली |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| २३९. | ढाल : जचारी (दे०) श्री ऋषभ जिनंद ऋषभ मारा मन में वसीया हो | | ८६/६ | |
| २४०. | ढाल : रांवण राय आसारे इध की थाय (दे०) सेणक रे वाडि संचरचौ रे | समयसुन्दर | ८६/८ | |
| २४१. | ढाल : अब घर आवो हो आवो जी मारा मन गमता माराज (दे०) हूं तौ अलादी होय रही रे | रतनचन्द | ८७/९ | |
| २४२. | पद : अब घर आवो हो (दे०) चेतन चेतो रे चेतो थारी छिन छिन छीजे आव | विनेचन्द | ८७/५ | |
| २४३. | ढाल : दुर्लभ लाधो मांनव नो भव थे किउं जाउ हार | | ८७/६ | |
| २४४. | ढाल : चतुर नर अर्थ विचारो रे ज्ञांनी जतन करो छकाय | कुसल | ८७/११ | |
| २४५. | ढाल : गिरधारी रा गीत री (दे०) मातपिता सुत बंधवा हो सगा सनेही मित्त | रतनचन्द | ८७/८ | |
| २४६. | पद : तूं कांइ चाळै लागो रे लोभीड़ा आयो छै वूढ़ापो | | ८७/४ | |
| २४७. | पद : बड़े घर ताली लागी रे | | ८७-८८/६ | |
| २४८. | ढाल : मांने एक आपरो आधार (दे०) जीव रे तूं सील रो कर संग | | ८८/१० | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| २४९. | पद : राग निहालदे री<br>अब मति छोडो हो मांन महिपतिजी | | ८८/११ | |
| २५०. | पद : मुनिवर मन नें पाछो घेर | | ८८/९ | |
| २५१. | पद : साधू री आचार छत्तीसी<br>साधू तें सूत्र भणि स्यूं कीधो | रतनचंद शिष्य गुमानचन्द | ८८-८९/३७ | पाली |
| २५२. | पद : निठुर थयो गोकुल मथुरा विचे (दे०)<br>आज नेंण भर गुरु मुष निरख्यौ | ,, | ८९/१० | |
| २५३. | पद : स्तवन<br>मिलीया गुर ग्यांन तणा दरिया | ,, | ८९/५ | |
| २५४. | पद : मन सतगुरु सीख कहा भूले | ,, | ८९/४ | |
| २५५. | पद : गुरु सम कुण जग मैं उपगारी | ,, | ८९/९ | |
| २५६. | पद : सतगुर मत भूलो एक घड़ी | ,, | ८९/४ | |
| २५७. | पद : कठन लगन की पीर | | ८९-९०/३ | |
| २५८. | पद : पंथीड़ा रे पंथ चलेगो | रूपचन्द | ९०/५ | |
| २५९. | पद : घ्राणेन्द्री के वस नहि पडियै | विनेचन्द | ९०/५ | |
| २६०. | पद : नाम धरायो फकीर<br>बेटुक लाज न आई | हुसेन फकीर | ९०/४ | |
| २६१. | पद : जोगारम को मारग वांको रे | | ९०/५ | |
| २६२. | पद : मत कर मांन गुमांन | लालचन्द | ९०/५ | |
| २६३. | हेरी काया मत संग छाड हमारी | कबीर | ९०/४ | (राग काफी) |
| २६४. | पद : मत कोई करियौ प्रीत<br>दुख के फंद पडोगे | | ९०/३ | ,, |
| २६५. | पद : मुसापर चोकस रेणा ठग<br>लागा तेरी लार | कबीर | ९०/३ | ,, |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| | पद-संग्रह— | | | |
| २६६. | भावै सोइ करो में तो तेरे हाथ विकांना | रसकनाथ | ६०/२ | (राग काफी) |
| २६७. | तूं क्या ढूंढे वन वन में, तेरा नाथ वसैं नेनन में | | ६०/४ | ,, |
| २६८. | एक आस भली जिनवर की | | ६०/५ | ,, |
| २६९. | मत ताको नार विराणी | | ६१/६ | ,, १८८६, जोधपुर |
| २७०. | निंदा मोरी कोइय करो रे दोष विना सोच न कोय | | ६१/३ | (राग काफी) |
| २७१. | श्री जिन मेटो विरथा हमारी | | ६१/४ | (राग विहाग) |
| २७२. | जीवडला यूंही जनम गमायो | रत्नचन्द | ६१/६ | ,, |
| २७३. | चंदा ने विच में वेच लियो रे | कबीर | ६१/४ | ,, |
| २७४. | राज सुणौ सीखडली | | ६१/७ | (राग भांगडली) |
| २७५. | विनवै सुमता नारी घर आवोनी पियारा | रत्नचन्द | ६१/७ | (राग खंभायच) |
| २७६. | मांनव कौ भव पायकै मत जाय रे निराशा | ,, | ६१/७ | ,, |
| २७७. | कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावै | ,, | ६१/५ | ,, |
| २७८. | काया पिंड काचो राज | ,, | ६१/४ | (अलिया वेलावल) |
| २७९. | ओतो गढ वांको राज | ,, | ६१-६२/४ | ,, |
| २८०. | आंटो कर्मा को राज | ,, | ६२/४ | ,, |
| २८१. | पिंडत पूछ पिया किम पांणे | कबीर | ६२/५ | (राग आसावरी) |
| २८२. | मन रे अगम तीरथ कुं चलणा | ,, | ६२/४ | ,, |
| २८३. | फिर गई रांम दुवाइ रे | तुलसीदास | ६२/५ | ,, |
| २८४. | पगला थिर रे नहीं तेरी काया | | ६२/३ | ,, |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| | पद संग्रह— | | | |
| २८५. | मना रे तोने कोतक वेर कही | | ९२/४ | (राग कल्याण) |
| २८६. | हेरि मोरी अखियन हरख भरी | | ९२/३ | ,, |
| २८७. | अब मोरी साय करो जिनराज | रत्नचन्द | ९२/४ | ,, |
| २८८. | मेरे घट ग्यांन भानु भयो भोर | आनन्दघन | ९२/३ | ,, |
| २८९. | तूं जासी में जाणी रे जीवडा | | ९२/५ | ,, |
| २९०. | तूं किणरो कुण थारो रे चेतनिया | रत्नचन्द | ९२/६ | ,, |
| २९१. | ते मेरा दरद न पाया रे अग्यांनि | | ९२-९३/६ | ,, |
| २९२. | रसना बिगर बिचारी म बोल | रत्नचन्द | ९३/४ | (राग धनाश्री) |
| २९३. | जांण्यो थांरो भाव प्रभुजी हो | | ९३/४ | ,, |
| २९४. | वांदुं नित गज सुकमाल मुनीस | ,, | ९३/५ | ,, |
| २९५. | भोला मन कब सिंवरे प्रभु नाम | सूरदास | ९३/४ | ,, |
| २९६. | भजन विन वेल विरांना भयो | कबीर | ९३/४ | ,, |
| २९७. | देख्या दुनियां बीच रे कोइ अजब तमासा | | ९३/४ | ,, |
| २९८. | क्या नैंणा समभावै हे ठगणी | कबीर | ९३/५ | ,, |
| २९९. | तन वस्त्र के रंग लगायो मन के रंग न लागो रे | जिनदास | ९३/३ | ,, |
| ३००. | कुटल मंजारी तोतो ले गइ | कबीर | ९३/३ | ,, |
| ३०१. | हां रे नगरी पेम की | ,, | ९३/६ | ,, |
| ३०२. | वटाउडा बीत गई हो सारी रेण | ,, | ९३/४ | (राग जंगलो) |
| ३०३. | जीवत मार मुवा मति लाइयो | ,, | ९४/४ | (राग ठुमरी) |
| ३०४. | किन गुन भयो रे उदासी भवरा | आनन्दघन | ९४/३ | ,, |
| ३०५. | किण वन ढूंढु री माई | तुलसीदास | ९४/५ | ,, |
| ३०६. | हां रे तेरा तन का तनक भरोसा नांहि | | ९४/३ | ,, |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं ग्रांकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३०७. | पद : धम आया रे नहि आया | | ९४/४ | (राग बंगाली) |
| ३०८. | पद ऐसी होरी खेलो जामे हुरमत लाज रहो री | कबीर | ९४/५ | (राग कालिंगडो) |
| ३०९. | पद : हमारे कुण खेले ऐसी होरी | सोभाचन्द | ९४/१० | (होरी काफी) १८८६, जावरा |
| ३१०. | पद : होरिया रंग खेलण आवो | | ९४/४ | (होरी काफी) |
| ३११. | पद : होरी खेलण की रुत भारी | | ९४/४ | " |
| ३१२. | पद : सखी तोय केती थी कांने सें प्रीत लगाय मती | | ९४-९५/५ | |
| ३१३. | पद : हे मांरे स्यांम सुन्दर दिल में वसियो | | ९५/४ | |
| ३१४. | पद : अंबर देवो मुरारि हमरो | चन्द्रसखि | ९५/४ | |
| ३१५. | पद : आज स्यांम के में अंग लगूंगी | | ९४/२ | |
| ३१६. | पद : जलम थारो वातां में वीत गयो रे | कबीर | ९४/४ | |
| ३१७. | पद : जोबन धन पांवणो पांवणो दिन च्यारा | " | ९५/४ | |
| ३१८. | पद : सात वीसन छोडो भाव सुं संसारी लोकां | रामचन्द्र | ९५/५ | |
| ३१९. | ढाल : नेमनाथजी रो तवन संकर वसे रे केलास में (दे०) श्री नेमीसर वसे रे वेराग में | चोथमल | ९५/१४ | |
| ३२०. | ढाल : कहा रे अग्यांनी जीव कुं गुर ग्यांन वतावे | जिनराज | ९५/३ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३२१. | ढाल : क्षमा छत्तीसी<br>आदर जीव खिम्या गुण आदर | समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द | ६५-६६/३६ | |
| ३२२. | ढाल : पुन्य छत्तीसी<br>पुण्य तणा फल परतख देखो | ,, | ६६-६७/३६ | १६६६ सिद्धपुर |
| ३२३. | ढाल : त्रूटकनी जाति परनारी(दे०)<br>सुणि सुणि कंता सीख सुहावणी | | ६७-६८/१० | |
| ३२४. | ढाल : सरसति मुजरे माता द्यो<br>वहु मांन रे | | ६८/१० | |
| ३२५. | ढाल : सात व्यसन री<br>पर उपगारी साधु<br>सुद्ध गुरु इम उपदेसे | पुण्यकलससूरी शिष्य [रंगे] | ६८/६ | |
| ३२६. | ढाल : तमाखु री<br>प्रीतम सेती वीनवे | आनन्द मुनि | ६८-६६/१५ | |
| ३२७. | ढाल : चित संभूत री<br>बंधव बोल मानो हो | कवियण | ६६/२३ | |
| ३२८. | ढाल : इण काळ रो भरोसो<br>भाई रे को नही | रत्नचन्द | ६६/१२ | १८६७ किसनगढ़ |
| ३२९. | ढाल : अजित शांति जिण थुइ<br>मंगल कमला कंदुए<br>सुख सागर पुनम चंदुए | मेरुनन्दन | ६६-१००/३२ | |
| ३३०. | ढाल : भूलो मन भमरा कांइ भमइ(दे०)<br>जागरे सुग्यांनी जीवडा<br>सूतो बहू काल | रत्नसमुद्र | १००/१६ | |
| ३३१. | ढाल : वीर वखाणी रांणी चेलणाजी | समयसुन्दर | १००/७ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३३२. | ढाल : दया धरम दिल धार सुगत की करणी | हीर | १००-१०१/७ | |
| ३३३. | ढाल : ओलंवडे मत कीजो जिणंदजी | मोहनचन्द शिष्य रूपचन्द | १०१/५ | |
| ३३४. | ढाल : आज सु दीन में वाईजी में जिनजी जुहारचा | | १०१/६ | |
| ३३५. | पद : समुद्रविजे सुत नेम विराजे | | १०१/६ | |
| ३३६. | ढाल : घोडी तो आई थारा देस में मारूजी (दे०) सांवलडी सुरत मन मोहियो साहिबजी | रामविजय शिष्य विमलविजय | १०१/५ | |
| ३३७. | ढाल : मेडतिया भमरजी रो करहलो(दे०) मारी वंदणा प्रभूजी अवधारजो | रूपसेवक | १०१/७ | |
| ३३८. | ढाल : सोकड़ली री साळ मांने दोरी लागे जी (दे०) कोहोनी किस विध आउंजी साधुजी रो वखाण सुणवा | | १०२/१७ | |
| ३३९. | ढाल : तुंगीयापुर री इण नगरी में वाजा वाजे (दे०) आया सुग्यांनी साध मन मोयो रे तुंगीयापुर नगर सुहामणो रे | | १०२/१७ | |
| ३४०. | ढाल : भुकजाय भमरजी रा करहा (दे०) भवीयां सकल मनोरथ सिद्ध | प्रधानसागर | १०२/७ | |
| ३४१. | ढाल : आज ऊछव छेरे अधिको | | १०२/७ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३४२. | ढाल : वादळ दह दिस उनम्यो (दे०) वीरखा रुत आई मोहना | मांनसागर | १०२-१०३/१२ | |
| ३४३. | ढाल : पूण्ये सुपना ए देखे, मन माहे हरख विसेखे | | १०३/६ | |
| ३४४. | ढाल : मंगल कमला कंदुए (दे०) सोहमपती आसण कंपीयो | | १०३/१३ | |
| ३४५. | ढाल : जिन रयणीजी दशदिसी उजळता धरे | | १०३-१०४/१५ | |
| ३४६. | ढाल : पंच कल्याणक तीर्थ कमल उदक भरीने पुसकर सागर आवे | देवचन्द | १०४/६ | |
| ३४७. | ढाल : कोटांरे कोपे कांगरा (दे०) फूल अंगोछो फूटरो किण ही दीठो हुवे तो दीजो रे लाला | डोकरो ? | १०४/६ | १८३६, सिरोही |
| ३४८ | ढाल : सफल संसार अवतार एहुं गिणु | भक्तिलाभ | १०४-१०५/१६ | |
| ३४६. | ढाल : निंडलीनाहनी(दे०)वर्द्धमानस्तवन वीर सुणो मोरी वीनती | समयसुन्दर | १०५/१६ | जेसलमेर |
| ३५०. | ढाल : सिद्धारथ कुल दीपक चंद | रायचन्द | १०५/१२ | १८३७, मेड़ता |
| ३५१. | पद : विधना तूं तो गेहली भइये | | १०५/४ | |
| ३५२. | ढाल : सीमंधर स्तवन श्री मिंदरजी सुणजो मारी वीनती | लालचन्द | १०५-१०६/७ | |
| ३५३. | ढाल : आदिनाथ आदि जिनवर वंदि सफल मनोरथ कीजिए | उदयरत्न | १०६/१७ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३५४. | पद : पंडित वाद वदे ते झूठा | कबीर | १०६/५ | |
| ३५५. | पद : सूरज सूं उतपन्न पुरस ने अस्त्री हुवा | | १०६/ | |
| ३५६. | ममत मत कीजो राज मन में | पेम | १०६/४ | |
| ३५७. | जंबू कुंवर रो तवन : जंबू कवर वेरागीया | | १०६/१२ | |
| ३५८. | पूज्य गुणमाल : सांमी दास वेराइ में थे वसो कांकरीया कुल जात जी | कीरतमल | १०६-१०७/११ | १८७८, पीपाड़ |
| ३५९. | ढाल : वांणी श्री जिनराज तणी कांने सुणी रे माइ | | १०७/१५ | |
| ३६०. | ढाल : धारणी मनावे हो मेघ कवार ने रे | प्रीतविजय | १०७/५ | |
| ३६१. | ढाल : सात वारों की अदितवार दिन दुनियां भूली | | १०७-१०८/८ | |
| ३६२. | ढाल : श्री संखेसर पास जिनेसर भेटीये | जिनचन्द | १०८/५ | |
| ३६३. | ढाल : श्रावक तुं उठे परभात | जिनहर्ष | १०८/२३ | |
| ३६४. | ढाल : थूलभद्र मुनीसर आवो नी | सीलविजय शिष्य सिद्धविजय | १०८-१०९/१७ | |
| ३६५. | ढाल : लाख चोरासी घोड़ा पायदल छिनुं कोड (दे०) श्रेणक राय तिर्थंकर पद पासी | रायचन्द | १०९/१६ | १८८६, मेड़ता |
| ३६६. | ढाल : मास खमण नें पारणें मुनी आया बामण गेह | मुनि रामचन्द | १०९/७ | |
| ३६७. | ढाल : पिणहारी री (दे०) जंबू द्वीप राची देह में जिनवर जी हो राज | रामचन्द शिष्य विरधीचन्द | १०९-११०/१३ | १९०९, वीसलपुर |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३६८. | ढाल : कलाली रे गीत री (दे०) त्रिभुवन सांमीजी हां तो विराजे श्री जग नायकु हो राज | मुनि रामचन्द | ११०/८ | |
| ३६९. | लावणी : लाज मेरी रखले भवानी (दे०) प्रभुजी प्रगट फुरमावे, सुर नर सुणवाकुं आवे | ,, | ११०/६ | |
| ३७०. | लावणी : सिख सांभळ लो सतगुर कीं जिण सु होय भव पार लारलो | जिनदास | ११०/४ | |
| ३७१. | ढाल : उग्रसेण की लली, नेमजी वंदण गिरनार चली | | ११०/९ | |
| ३७२. | ढाल : आनन्दघन जिनदास गावे, सीस चरणां से निमावे | | ११०-१११/५ | |
| ३७३. | लावणी : तुम तज कर राजुल नार तज्या सब घर रे | ,, | १११/५ | |
| ३७४. | ढाल : खबर नही है जुग में पल की | अखेमल | १११/६ | |
| ३७५. | लावणी : हलाहल कलजुग चल आयो रे | मुनि राम | १११/९ | |
| ३७६. | लावणी : मन सुणरे थारी सफल घड़ी सरावकी हाथ सुं जावे | जिनदास | १११/५ | |
| ३७७. | लावणी : सुकृत की वात तेरे हाथ रती न रही रे | ,, | १११-११२/५ | |
| ३७८. | लावणी : कीसी की खोटी नही करीये रे | ,, | ११२/५ | |
| ३७९. | पद : तेरी फूल सी देह पलक में पलटे क्या मगरूरी राखे रे | रतनचन्द | ११२/५ | |
| ३८०. | पद : किउं विषीया रस निजर भरे तेरो पलक पलक आउ जाय | लालचन्द | ११२/४ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३८१. | पद : देखी रे सुरत पारस की<br>मांरो जनम सफल भयो आज | रूपचन्द | ११२/४ | |
| ३८२. | पद : विराजे बंगला में मारो सांवलीयो | ,, | ११२/५ | |
| ३८३. | पद : विषीया वस जनम गयो रे | रतनचन्द | ११२/४ | |
| ३८४. | पद : प्रभुजी के पाए लाग रे<br>में कयो तोकूं | आनन्दघन | ११२/४ | |
| ३८५. | ढाल : नवकार मंत्रजी रो ध्यान धरो | रायचन्द | ११२-११३/१३ | बीकानेर |
| ३८६. | ढाल : घोड़ी तो आई थांरे<br>वाग में मारूजी (दे०)<br>साहेबजी अजित संभव भगवंत हो | भांनीराम शिष्य<br>भगवानदास | ११३/८ | |
| ३८७. | पद : श्रीमिंदर क्या जांणु<br>मुज करम कटक दल केवा | रामचन्द | ११३/८ | |
| ३८८. | पद : जिनराज रो<br>मेरे इतनो चाहियें नित उठ<br>दरसण पावुं | आनन्दघन | ११३/३ | |
| ३८९. | पद : काहारे अग्यांनी जीव कुं<br>गुर ग्यांन वतावे | | ११३/३ | |
| ३९०. | ढाल : सीता सती री<br>सुजांण सीता जांणे<br>केसूला फूलीया रे लाल | जिनहर्ष | ११३/९ | |
| ३९१. | ढाल : पदमावती (राग वेराडी)<br>हिव रांणी पदमावती जीव<br>रास खमावे | समयसुन्दर | ११३-११४/३४ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र.स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ३९२. | ढाल : मुरख लखजा रे कनक नें कामण जग में पास है | रामचन्द | ११४/३५ | १९१८. जोधपुर |
| ३९३. | ढाल : भव जीवां आद जिनेसर वीनवुं | रायचन्द | ११४-११५/३१ | |
| ३९४. | तवन : चेतन तेरी रसना वस कर रे | विनेचन्द | ११५/५ | |
| ३९५. | वात : डोकरी री वात (गद्य) | | ११५/३ | |
| ३९६. | ढाल : चउपई– भगवती भारती चरणन सेवी सद गुरु नाम सदा समरेवी | पं० लखमी | ११६/१६ | |
| ३९७. | ढाल : जीव री उतपत उतपत जोध जीव आपणी मन मांहि विमास | रत्नहर्ष शिष्य [रंगे] | ११६-११७/६१ | |
| ३९८. | ढाल : माहावीरजी आवी समो सरया राजग्रही नगरी मांहि | | ११७/५ | |
| ३९९. | ढाल : सुण चेतन रे तुम गुणवंत मुनि कुं सेवो | रामचन्द | ११७/५ | |
| ४००. | ढाल : धन धन वीर जिणंद हो सुखकारी हो प्रभुजी | भांनीराम | ११७-११८/८ | १९३३ जालोर |
| ४०१. | ढाल : नाथ केसे गज को पांय छुडायो (दे०) ऋषभ जिन में तो शरण तिहारी वारी हुं वार हजारी | सूर्यमल | ११८/७ | |
| ४०२. | ढाल : किण डारी पिचकारी गोरी के किण डारी (दे०) कांम क्रोध से न्यारा रे गुरदेव हमारा | ,, | ११८/७ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज), एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ४०३. | ढाल : मै डरू एकेली बादल में चमके बीजळी (दे०) आंबो भोजन रात नो सरे तिण मांहे अति दोष | ,, | ११८/६ | १६२४ डेह नगरी |
| ४०४. | पद : अब तोरी सरण में विरद संभाल | जसरूप | ११८/४ | |
| ४०५. | ढाल : एक दिवस वसे नेमकवर निज (दे०) अहो सर्व गुणी मुनि, सुव्रत माहाराज काज मुज सारो | सूर्यमल शिष्य कुशालचन्द | ११८-११६/७ | १६१ डेह ग्राम |
| ४०६. | ढाल : मत ताको नार विराणी है (दे०) अरजी सुणो नेम हमारी कहे इम राजुल नारी | ,, | ११६/१५ | १६०६ |
| ४०७. | ढाल : हां रे कांई भरवा गई जल जमुना तीर (दे०) हां रे कांइ रजपुर सोहे | ,, | ११६/६ | १६०४ अहिपुर |
| ४०८. | ढाल : कुंजन में ले चालो कांन मोने (दे०) सुविध जिन तुम चरणे चित दीनो | ,, | ११६/६ | |
| ४०९. | ढाल : सीमंधर स्तुति पूरव पुखलावती विजय में जनमीयाजी नगरी पुंडकरी कणी नाम | जैमल | ११६-१२०/११ | |
| ४१०. | ढाल : घमके रे घमके गवादे रो गागरो (दे०) ऋषभानंदन वंदीये प्रभूजी पोह उठी प्रभातो रे | आसकरण | १२०/७ | १८३८ बूसी गाँव |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ४११. | ढाल : कीर्त थारी हे माता जुग मांहे भारी | गोरधन | १२०/५ | |
| ४१२. | ढाल : नांम एला पुत्र जांणीये धनदत्त सेठ नो पूत | लब्धिविजय | १२०/८ | |
| ४१३. | पद : पहिले पद अरिहंत जांणी, ज्यांरो भजन करो भवियण प्राणी | जैमल | १२०/७ | |
| ४१४. | ढाल : वीरा मोरा गज थकी उतरो गज चढ्यां केवल न होसी रे | समयसुन्दर | १२०-१२१/७ | |
| ४१५. | ढाल : रे जीव जिन धर्म कीजीये | समयसुन्दर | १२१/६ | |
| ४१६. | ढाल : पांच पचास छोकरा घर में कयो कोई न मांने | मंगल | १२१/५ | |
| ४१७. | ढाल : जोबन धन प्रावणो दिन च्यारा इण रो गर्भ करे सो गिवारा | मांणकदास | १२१/५ | |
| ४१८. | दहा : नमो सिद्ध निरंजण, नमुं सतगुरु पाय धिन वांणी जिनराज री, सुणंता पातक जाए | | १२१/३१ | |
| ४१९. | ढाल : मोने भाखो नी माहावीर (दे०) चोमासी ईग्यारमीजी विचरत साहस धीर | मुनिमाल | १२१-१२२/२५ | |
| ४२०. | लावणी : कब देखुं जिनेसर देव जगत गुरु ग्यांनी | जिनदास | १२२/५ | |
| ४२१. | लावणी : दे गया दगा दिलदार सुणो मेरी माई लग रही नेम दरषण की सरस आसनाइ | जिनदास | १२२/५ | |
| ४२२. | लावणी : मन सुण रे थारी सफल घडी श्रावकी हाथ सुं जावे | | १२२/५ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ४२३. | ढाल : प्रणमु श्रीजिनराय<br>मनवच काय करीए | | १२२-१२३/१८+११ | |
| ४२४. | ढाल : तांम हुवो प्रभात मोछव<br>मांड्यो तात | देवराज शिष्य ज्ञानचन्द | १२३/१० | १८२३<br>गगरांणा |
| ४२५. | ढाल : चोवीसे जिनवर करूं ज जाप<br>नाम ठांम लंछण माय तात | ,, | १२३-१२४/२८ | (इषु रस अश्व रवि) |
| ४२६. | ढाल : प्रणमी जिनवर भाखु आयु प्रमांण | देवराज | १२४/५ | |
| ४२७. | ढाल : रतन कुंवर की<br>रतन कुमर गुण आगलो रे<br>आगला मुख ना बोल | | १२४-१२५/४२ | |
| ४२८. | ढाल : सफल दीहाडो जी भलांई<br>सूरज ऊगीयो | हीराचन्द | १२५/१३ | १८९९<br>नागोर |
| ४२९. | ढाल : चंगरण रंग मंगल हुवा घणा | | १२५-१२६/१६ | |
| ४३०. | ढाल : कागलीयो कीरतार भणी<br>सी पर लिखुं रे | जिनराज | १२६/५ | |
| ४३१. | ढाल : समाइक सुखदाइ जी<br>चित लाइ कीजो | | १२६/९ | |
| ४३२. | ढाल : तेवीसमा हो प्रभू पास जिणंद के<br>चरण करण मधु मोहीयो | मनरूप शिष्य हीराचन्द | १२६-१२७/१६ | |
| ४३३. | ढाल : मोरा साहिब हो मुझ वीनती<br>एक के सुणोजी कहुं सुख कारणे | हीराचन्द | १२७/२३ | १८८९<br>जोधपुर |
| ४३४. | ढाल : सिखामण हो तूमे सुणियो सार के<br>एक मना चित धारजो | ,, | १२७-१२८/२५ | १८९८<br>वीसलपुर |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र.का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ४३५. | ढाल : श्री ऋषभ अजीत संभव अभिनंदन सुमत पदम सुपारख मन रंजन | | १२८/ | |
| ४३६. | ढाल : प्रह उठी नें समरीजे हो भवीयण मंगलीक सरणा च्यार | चोथमल | १२८/११ | १८५२ पाली |
| ४३७. | ढाल : साधूजी ने वंदणा नित कीजे पोह ऊगंते सूरजीं | आसकरण | १२८-१२९/८ | १८३८ बूसी गांव |
| ४३८. | ढाल : पास जिणेसर पूरण आसा गावत मंगल लील विलासा | जिनराज | १२९/१३ | जेतपुर |
| ४३९. | ढाल : एक कुवो नें पांच पीणीहारी नीर भरे हो न्यारी न्यारी | कबीर | १२९/४ | |
| ४४०. | ढाल : घडा एक सो आठ सहेली रस सुं भरिया नीका | नथमल | १२९/६ | |
| ४४१. | ढाल : सुणीयो रे बाबू कुटल मंजरी लारे लग रही | कबीर | १२९/३ | |
| ४४२. | ढाल : हाथ जोडी काली इम बोले ऊभी सनमुख तीर | आसकरण | १२९/१७ | |
| ४४३. | ढाल : कांइ रे गुमान करे आपणो, मांन करेगो गुमांन करेगो तो नीची रे गत में जाय पडेगो | रामचन्द | १२९-१३०/१० | |
| ४४४. | ढाल : प्रह उठी गोतम प्रणमीजे मन वंछित फल नो दातार | समयसुन्दर | १३०/७ | |
| ४४५. | ढाल : नव वाड सही जिनराज कही मुनि राज लही अति हित कारी | | १३०/११ | |
| ४४६. | ढाल : आरंभ करतो रे जीव डरे नही | | १३०/५ | |

| क्रमाङ्क | कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकड़ी) | कर्त्ता | पत्रांक/ छन्द संख्या | र. का. एवं र. स्था. |
|---|---|---|---|---|
| ४४७. | ढाल : निरखण दो असवारी (दे०)<br>धंना मुनी धन मांनव भव पायो<br>श्रीमुख ईउ फुरमायो | रामचन्द | १३०-१३१/७ | |
| ४४८. | ढाल : घुमर रमवा में जासां (दे०)<br>गुणधरजी रा गुण मे गासां<br>ज्यांसुं परम आणंद हुय जासां हो राज | भगवानदास | १३१/६ | |
| ४४९. | ढाल : जाग हो जाग हो जाग होजीव तूं,<br>कांइं तूं मोहनी नींद सूतो | कुसालचन्द शिष्य जिनराज | १३१/११ | १८८०, जोधाणे |
| ४५०. | ढाल : सीतल जिन सहज सुरंगा<br>तुज दरसण थी दिल चंगा रे | | १३१/६ | |

---

अंतिम ढाल अपूर्ण है। ढाल की पंक्तियों से ज्ञात होता है कि इसकी रचना उदयपुर में तपागच्छाचार्य विजयक्षेमसूरि के चातुर्मास के समय में की गई थी।

संकलन में लिपिकर्त्ता तथा लिपि-स्थान का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है। ( पत्राङ्क ७९ पर लिपिकाल १९३७ दिया गया है। ) संग्रह में संवत् १९३३ तक रचित ढालों का समावेश किया गया है जिसमे प्रस्तुत संग्रह में अनेक अप्रकाशित ढाल-पदों की विद्यमानता स्पष्ट है।

संग्रह में प्रमुख रूप से १९ वीं एवं २० वीं सदी के मारवाड़ एवं गुजरात में कार्यरत लुंकागच्छीय ऋषि जैमल, रायचन्द, चोथमल, रूपचन्द, रतनचन्द तथा इनके शिष्य प्रशिष्यों द्वारा रचित ढाल-पदों का संकलन किया गया है।

लुंकागच्छ के बाद तपागच्छीय तथा खरतरगच्छीय मुनियों एवं आचार्यों के औपदेशिक पदों एवं ढालों को भी स्थान दिया गया है। जैनेतर कवियों में कबीर एवं हुसैनफकीर के पदों का समावेश इन कवियों के सार्वभौम प्रभाव का द्योतक है।

प्रस्तुत सूची-पत्र में अनेक जैन पदों एवं ढालों का उल्लेख किया गया है। उनके स्वरूप परिचय की दृष्टि से 'देशियों' की बानगी उपर्युक्त विवरण में दी गई है। समस्त 'देशियों' का संकलन व उनका अनुसंधान अपने आप में शोध कार्य का एक स्वतन्त्र एवं मौलिक विषय हो सकता है। 'देशियों' के साथ ही साथ रागों का भी उल्लेख संकलन में किया गया है किन्तु स्थानाभाव के कारण उनके उल्लेख के लोभ का संवरण करना पड़ा।

१५६. ११००८ (२) **उपमासंग्रह**

प्रारम्भ :—

।। अथ उपमा संग्रह लिख्यते ।।

मंगलाचरन— दोहा

उपमान रु उपमेय नहि, तह उपमा का होय ।
अनुपम पद मे गन बचन, आदि न पहुंचे कोय ।।१।।

करन अनुग्रह जीव पर, विग्रह धरत मुरारि ।
तसु सुमिरत मे ऊपमा, संग्रह करों विचारि ।।२।।

उपोद्घात— दोहा

जहां वरन आकार श्री, आदि एकही तुल्य ।
तहां कहत उपमान कवि, पावत हर्ष अमुल्य ।।३।।

उपमान रु उपमेय में, चमत्कार दरसाइ ।
अधिक न्यून में मिल रहे, तह उपमा ठहराइ ।।४।।

अति रूपवती स्त्री रूपोपमा

मुख पर पंकज चंद्रमा, दृग पर मृग दृग मीन ।
कमल कमल की पंखुरी, खंजन की कवि कीन ।।५।।

तारक दृग तारेन पर, अरु कटाछ पर बांन ।
भोंहन पर भोरावली, धनुष लता हू मान ।।६।।

अलक ऊपर चामर अही, जाल त्रिवेनी पाश ।
अर्द्ध चंद्र है भाल पर, पट्ट पटल हू तास ।।७।।

टेडि भोह दो कों कहत, पंख सवारत भोंर ।
जावक भीने मीन सम, लोचन लाल सुठोर ।।८।।

नासा पर सुक तिलकु सम, दीपक नथ झक हर्न ।
मधुक वदर जु कपोल पर, सूक्ति पान पुट कर्न ।।९।।

ओठन पर वंधूक अरु, विंव प्रवालहु मांन ।
दातुन पर दार्यो विजुल, वीज कुंदकली जांन ।।१०।।

अन्त :- ग्रन्थ प्रयोजन

यों उपमा बहु बिध कही, कवि नैं ग्रंथनि मांहि ।
सो सब संग्रह क्यों बने, कछुक कही में ताहि ।।६६।।

एक देश ते ऊपमा, लगी रहत सब ठोर ।
ओर देश को छोडिकैं, बरनत नर शिरमोर ।।६७।।

कछुक अबुध के हित अरथ, उपमा संग्रह कीन ।
पढहि विचारहिं सोइ नर, होहिं अति परवीन ।।६८।।

रचनाकाल संवत वाइस उन्निशो, पोष कृष्ण हरि द्योस ।
कीनो हीराचंद ने, उपमा संग्रह घोष ।।६९।।

पुष्पिका :- इति कवि हीराचंद कानजी कृत उपमा संग्रह समाप्त ।

प्रारम्भ :- अथ लुप्तोपमा विलास[1]

जहां दोऊं वस्तु की शोभा को चमत्कार समान दिखत होइ तहां उपमालंकार होत है। तामें हु अधिक गुन उपमान अरु हीन गुण उपमेय सो दोउं को संबंध करन हारी उपमा है। तहां उपमान अरु उपमेय में काव्य की भावना करकै परिपक्व बुद्धि वारे रसिक पुरुष क हृदय कों आनंद होय, ऐसो जो व्यंजना विन स्पष्ट समानता को प्रकाश होत है, तहां उपमालंकार जानियै ।

उदाहरन-- चन्द्रमुख । चन्द्र सो अधिक-गुन उपमान है। मुख सो हीन गुन उपमेय है। सो दोउ की समानता करावन हारी तीसरी वस्तु एक उपमा प्रगट होत है। चन्द्रमा में उज्वलता, गोलता अरु आह्लादकता है सो सब साधारण धर्म है। ए सर्व साधारण धर्म का धरनहार जो चन्द्रमा है सो धर्मी है। सो इहां धर्म - धर्मी में अभेद उपचार मान्यो है। क्यों जो धर्मी, जो चन्द्रमा हैं ताको नाम कहते हैं, धर्म को गृहण होत है, तातें चन्द्रमुख यो कह्यो सो मुख में उज्वलता, गोलता और आह्लादकता अैसे सर्व धर्म रहे है। तातै चन्द्र जेसो मुख कह्यो है।

---

१ उपमा संग्रह नामक मूल ग्रन्थ से पूर्व हीराचन्द कानजी कृत "लुप्तोपमा विलास" शीर्षक से पृथक् कृति लिखी गई है। जिसका आद्यन्त भी यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

अन्त :- दोहा

"कनक लता पर चंद्रमा, धरे धनुष द्वे बान।"

देखो, सोने की लता पर चंद्रमा ता पर द्वे धनुष और बानन सो कछु एक दूसरे पर धरे जात नांहि। यह तो सोने की बेल जेसी स्त्री कही और ताके मुख को चंद्रमा कह्यो, और ताकी भोंह को दो धनुष कहे, और ताके कटाछन कों बान कहे। एसें केवल उपमानन के नाम लेके उपमेय को वर्णन कियो है। तातें यहु रूपकातिशयोक्त्यलंकार भयो है। और जो लुप्तोपमा सो तो आगे बर्नन कियो है तातें समुझनों।

पुष्पिका :- इति प्राचीनोदाहरण पूर्वक कवि हीराचंद कानजी कृत लुप्तोपमा विलास संपूर्णम्॥ शुभम्॥

३११. १२१५३ कोकशास्त्र

[ प्रति अशुद्ध लिखी गई है ]

प्रारम्भ :- ॥ दं० ॥ ॐ नमः ॥ दूहा

मातंगी मति आपीई, कवीत्त करूं रसाल।
कोक कला गुण वर्णवौ, जे प्रीछें बाल गोपाल ॥१॥

श्री सारद तुझ्य ध्याइई, अक्षर आपो माय।
कृपा करी मुख अवतरें, जिम गुण आवें ठाय ॥२॥

जे नर पेहेंला कवी हूंआ, ते ताहरो प्रसाद।
नाम जपंतां सरस्वती, भाजें दुख विष वाद ॥३॥

कवित करेवा मन घणो, खंति करूं दिनराति।
वाचा अवीचल आपीइं, कीजें कवित सुंजाति ॥४॥

पिंगल जोइ बांधिस्यूं, उतम कवीत प्रमांण।
लघू दीर्घ गुंण भला, चोपै चालि वखांणि ॥५॥

कोक शास्त्र कोकें कीऊ, ते जोई सुं वचन।
कवीत छंद इंम उचरें, बांधू कवीत कथन ॥६॥

चौपाई

श्री शारद दिधुं वरदांन। मांतंगी आप्यां सनमांन ।।
श्री गुरे कृपा कीधाज घणी। करूं चोपै कोकज तणी ।।७।।

पहिला ग्रंथ अनेकज हूआ। मति एक नें प्रबंध जू-जूआ ।।
छें आंनंद कवीश्वर तणी। कांम शास्त्रनी मति छें घणी ।।८।।

कोक देवें कीधुं कोक। ते उपरें रजें सवी लोक ।।
तेहनो मत जोइ नें सही। कोक कला बांधु चोपै ।।९।।

जे नर होसें चतुर सुजांण। नारी प्रेम विलूंधा प्राण ।।
भोग तणा गुण जे जांणस्यै। ते नर सुणता उल्हस्यें ।।१०।।

कोक कला कुसम मालनी। अर्थ सुगंध नें रातें चालनी ।।
भमरो नर भोगी जेहस्यें। ते सास्त्र ले वाचि न वस्ये ।।११।।

दश प्रकार जे कोकें कह्या। तेहना अर्थ विशेषें लह्या ।।
विगतें करी कहूं वेगला। प्रीछें नान्हो मोटा भला ।।१२।।

गाहा दुहा अनें चोपै। श्लोक सूभाषित बोलीश सही ।।
मति सारूं हूं करुं कवीत। सांभलयो सहू एकें चीत ।।१३।।

कविता कवीत करें सु रसाल। सांभलयो नर चित्त वीसाल ।।
वक्ता करि विचार अनेक। कथा तणो रस उपजे विवेक ।।१४।।

श्लोक

शृङ्गारः गायनं नृत्यं वाद्यं तालौ(लं) रतिक्रिया।
साहित्यं पट(द) लालित्यं पट(द) बांध्यो(बन्धो) गतिस्तथा ।।१५।।
कटाक्ष लक्ष सरभो(संरम्भो) वरसे मृदु भाषणं।
वशीकर्णतांयांति कथयां(कथिता) षोडसी कला ।।१६।।

अन्तिमांश :–

कवि-परिचय – पत्राङ्क ८२-८४

हवें नर्वद बोलें कथा। नांम ठांम पोतानु यथा ।।
कवण वंस माहिं उपना। ते संखेपें बोलुं अधुनः ।।९८।।

गुजर देस मांहि अभिरांम। धर्म ध्यांन नो उत्तम ठांम।।
यती सती तप आगम गनांन। सर्व लोक वस्यें सावधांन।।६६।।

कलीयुग गंगा सावरमती। उतम नीर वहें सरस्वती।।
सदा काल जल पूर्ण वहे। स्नानें पाप सवेने दहे।।६००।।

काठें नगर वसे अभीराम। अहमदावाद श्री उतम ठांम।।
सर्व वस्तु पांमीजे जिहा। जंबू द्वीप मां न मलि कही।।१।।

श्री श्रीमाल तिहां व्यवहार। देवराज नांमि उपचार।।
मांन दिइं महिमुद सुरतांण। महिता मांहिं वडो बंधाण।।२।।

तेहनि घरि कुलवंती सात। बे पंखि पूर्ण कुल विख्यात।।
माता का नाम राजलदे नामें उचरो। तेहनी कुखें हुं अवतरयो।।३।।

कर्म संयोगें मारू देश। नगर शीरोही कीध प्रवेश।।
तिहां रहिंवानो कीधो ठांम। योगि थया लह्या गुणग्राम।।४।।

नवमें वर्ष श्री गुरु तणा। पाम्यां चरण मनोरथ घणा।।
दीक्षा लीधी श्री गुरु पास। भव बंधन थी छोड्यो तास।।५।।

गच्छ वर्णन श्रीगुरु तपगछ मांहि जसवंत। कमलकलस साखा वोलत।।
गछ नायक श्रीपूज्य प्रमांण। जांणे गगन उगंतो भांण।।६।।

धर्म धोरंधर श्री गुरु नांम। कमलकलस साखा अभीरांम।।
महा गुणवंत गंभीर। पंच महाव्रत यती सुधीर।।७।।

प्रोढा भटार्क पदवा घणी। जेहनी कीरति जग मांहि घणी।।
महा गुणवंत महानुभाव। पंडित श्री मतिलाव्यणभाव।।८।।

बीजा सुंमतिकलस पन्यास। श्री गणधर कहे सुखवास।।
त्रीजा गणि मतिपन्यास। कल्याण भाव प्रते प्रकास।।९।।

सूरिसर ना गणधर एह। केतला नांम कहुं वहुतेह।।
गण मांहि गुणवंत गंभीर। जती सकल मांहि ते धीर।।१०।।

एहवा गुरु भट्टारक जेह। कहुं उपमा सवाई तेह।।
शिष्य नर्बद ने कृपा करी। दीधो पद ते करुणा करी।।११।।

देइ दिक्षा ने दीधा मंत्र। श्री सरस्वती इं वांध्यो तंत्र ।।
घणा दिवस में सेवा करी। श्री सारद सेवा आदरी ।।१२।।

वर्ष तेरमे दीधो मांन। मातंगी दोधो वरदांन ।।
श्रीगुरु स्तवना कवीजने करी। मति नर्बद नी ए चा(आ)चरी ।।१३।।

घणा दीवस मिं गुरु सेवीया। भणी गुंणी ने पोढा थया ।।
विहार कर्म वली तिहां थी कीध। श्रीगुरु नी अनुंज्ञा लीध ।।१४।।

दक्षिण देश प्रति कियो विहार। कउंतक जोया देश अपार ।।
बोध पमाड्या वहु जीव ने। कवि सदगति पांमी देश ने ।।१५।।

देवयोगि चालता सही। खांनदेश मां आया वही ।।
गाढ आसेर तिहां अभिरांम। बुरहांनपुर नगर नो नांम ।।१६।।

राज्य करि वर्त्मवंत सुजांण। वेरी ना भाजे भड ठांण ।।
महा अभंग तरवारहिं तेग। जाति फारक कला वीवेक ।।१७।।

मीरह दल्लसाह सुजाण। तास पुत्र बलवंत वखाण ।।
मीरा बाहादुर साह फकीर। कीरति सर्व न जांणे लखीर ।।१८।।

रचना काल–
संवत सोल छपन्ना(१६५६) सार। शाक पन्नर एकवीस(१५२१) ।।
वीया – दशमी दनें आणंद। बुध वासरि बहु प्रमाणंद ।।१९।।

उतराषाढी नक्षत्रे सु विचार। मकर चंद्र भोगविं तिण वार ।।
कर्क रासि ग्रह गुरु भोगविं। तुंलि शनि श्रावण चिंतवि ।।२०।।

श्रुन्य मुहुरत सुभ वेला सार। उतम लक्षण तणो विचार ।।
श्री नर्बद वोले कवीराज। करी चोपई संपूरण आज ।।२१।।

श्री गुरुदेवें करुणा करी। कोक चोपाई संपूर्ण करी ।।
जे नर होस्यें चतुर सुजांण। नारी प्रेम विलुंधा प्रांण ।।२२।।

जे ए कथा सुंणस्ये सही। अथवा भणस्ये सरसी जही ।।
सुणतां चित होस्यें आंणंद। परम सुख पांमि मति मंद ।।२३।।

कोक तणो मत लेइ करी। चालीश चोपाई कवी उचरी ।।
र.स्था. वूरहानपुर नगर मां थई। कोक देव नामें चोपाई ।।२४।।

दश प्रकार संपूर्ण थया। विगते करी कथा जू-जूया ।।
श्री मातंगी ने वरदांन। करी चोपाई अमृत समांन ।।२५।।

जे नर रसलुब्धा हूस्यें। तेहना मन इणे ग्रंथे वस्यें ।।
जिम कमल मांहि भमरो रमें। गंध केतकी छांडी किसे ।।२६।।

जेरा जानें घरि नहि शास्त्र। कामकला किम प्रीछें पात्र ।।
कामशास्त्र नो जे हुई जांण। तेरां जानुं जीवित प्रमांण ।।२७।।

जेह नर सुंणस्ये श्रवणे सही। बुद्धि विस्तार न होस्ये लही ।।
विरही तणा भजें दूख। भोगी जन के प्रेम दा सुख ।।२८।।

जिहां लगें रवी गगनें तपें। जिहां लगें मेरू मही मध्य जवें ।।
जिहां लगे कथा रहस्यें पुराण। कवि नर्बद कहे कथा वखाण ।।३०।।

कामशास्त्र मां उतंम एह। देइ चित ने श्रुंणस्यें जेह ।।
अनंत सुख पामें सदा। श्री नर्बद कहें शुख संपदा ।।३१।।

पुष्पिका :– इति श्री मज्जिनाचार्य कवी श्री नर्बद विरचिते कोकशास्त्रे आसनं आग्रहन कौतक भेषयां ज्ञान वर्णनोनामः दशमो प्रकार ।।१०।।

ल० ठकरलालजी शवजी ।

५२३. ११५८५ (८) चंदकुंवर री वात

प्रारम्भ :– ।। दं० ।। अथ चंदकुंवर री वात लिखतै ।

समरु सारद माय, गणपति दै कै लागु पाय ।
कर्त्तानाम परतापसिंघ की अगाज, कीनी कथा रसिक(क)विराज ।।१।।

प्रतापसिंघ खुमाण तै, हुकम कीयो कर चाव ।
हंस कवि[1] एसो कहौ, कुछीयक वात सुणाव ।।२।।

---

१ प्रस्तुत वार्त्ता के कर्त्ता का नाम प्रतिष्ठान से प्रकाशित पूर्व सूची-पत्रों में 'हंसकवि' दिया गया है, उसी के अनुरूप प्रस्तुत सूचीपत्र में भी कर्त्ता का नामोल्लेख 'हंसकवि' के रूप में किया गया है। वार्ता के आद्यन्त का अध्ययन करते समय अनायास यह विचार आया कि "हंस कवि सूं अैसे कह्यौ" का सीधा अर्थ "प्रसन्न होकर कवि से ऐसा कहा"

सबकूं लगै सुहावणी, रस संजोग सिगार।
मूरख कै मन हरै, सब रसीयन को सार ॥३॥

रचनाकाल सत्तरै सै चालीस[२] समै, तेरस पोसज मास।
गुण कीनौ कर चाव कै, भोगी पूरण आस ॥४॥

कथा-प्रारम्भ:- नगर नाम अमरापुरी, पंच कोस लंबाय।
अमरसेन राजा तिहां, राज करै बैठाय ॥५॥

चंदकुमर ताकै भयो, मानु काम अवतार।
चल्यौ सैहर सिकार कु, रहि विमोहित नार ॥६॥

---

अधिक संगत है क्योंकि 'हंस' पद 'विहंसि' के समीप एवं उपसर्ग रहित है। प्राचीन प्रतियों में प्रतिलिपिकर्त्ताओं द्वारा प्रायः सर्वत्र चन्द्रबिन्दु का प्रयोग नहीं मिलता एवं यह पाठानुसन्धान की प्रवृत्ति पर ही निर्भर करता है अतः इसके कर्त्ता का नाम जैसा कि प्रारंभ की पंक्तियों में "कीनी कथा रसककवीराय" तथा अन्त में भी 'चंदकुमर की वारता, करि रसककवीराय" स्पष्टतः उल्लिखित है इसलिये कर्त्ता का नाम 'रसिक कविराय' अथवा 'रसिकराय' कवि मानना ही सर्वथा उपयुक्त है। प्रस्तुत संग्रह की तीनों वार्त्ताएं एक ही कवि की हैं किन्तु ग्रन्थाङ्क ११५८५ (७) वाली प्रति अपूर्ण है।

२ संवत् १७४० में जोधपुर के पाट पर प्रतापसिंह पुत्र सूरतसिंह नामक किसी राजा के होने का इतिहास ग्रन्थों में उल्लेख नहीं है। 'जोधवंश' में दूसरा राज्य बीकानेर का है। वहाँ चाचा-भतीजे के रूप में उक्त दोनों नाम मिलते हैं किन्तु प्रतापसिंह के गद्दी पर बैठने के दो वर्षों के अल्पकाल ही में उनके चाचा एवं संरक्षक सूरतसिंह ने उनकी हत्या करवा दी थी। उक्त घटना संवत् १८४४ के बाद की है। सभी प्रतियों में रचनाकाल संवत् १७४० उपलब्ध होता है अतः उक्त कवि को वार्ता की रचना का आदेश देने वाले प्रतापसिंह जोधपुर और बीकानेर के महाराजाओं से भिन्न कोई और व्यक्ति होने चाहिए। उक्त प्रतापसिंह कहाँ के राजा थे? यह अनुसंधान का विषय है।

* [ वार्त्ता के अनेक पाठभेद प्राप्त होते हैं अतः उक्त दोनों विषयों को स्पष्ट करने के लिए ग्रन्थाङ्क १०९५४ (१५) वाली प्रति का भी आद्यन्त इसी के साथ दिया जा रहा है। ]

चंद्रायणा

एक दिन चंदकुमर आहैडै चालियौ ।
राजाजी को साथ सबै हालीयो ।।
उठीयो एक वाराह तास पै लगीयो ।
परिहा : कुमर लागो पूठ कै सूवर भगीयो ।।७।।

साथ कवर रो भूलकै चूको वटडी ।
दन खंड हैवां नवौ तरवर वटडी ।।
कोस वत्रीसां उपर सूर मारीयो ।
परिहा : साथ न आयो कोयक निहारीयो ।।८।।

दुहा

पडीयो कुमर उजार मै, आथमीयो तिहां भाण ।
तपसी वेठो तप करै, तिहां आयो राजान ।।९।।

अन्त :- वारता

कुंवरजी घरै आया । सगलांइनु सुख हुवौ । साहुकार री बहू नै, राजा री बेटी परणाइ, तिणने पिण लेता आया । पिण साहुकार री बहू सुं प्रीत सनेह घणौ ।९०।

दूहा

मो मन प्यारी सुं वस्यौ, प्यारी को मन पीव ।
मै प्यारी का जीवडा, प्यारी मेरा जीव ।।९१।।

प्रतापसिंघ सुरताण है, जिहां की वात सुणाय ।
कविनाम चंदकुमर की वारता, करि रुकककविराय ।।९२।।

जोत(ध) वंस जुग जुग जीवो, घणा हेत परवार ।
नाम धरचौ प्रताप तै, या गुण कौं गुण सार ।।३००।।(९३)

पुष्पिका :- इति श्री चंदकुवर री वात संपूरनं । ग्रंथाग्रंथ तिनसै । लिखतं पं० लालविजै वीकानेयर मध्यै । संवत १८५७ वर्षे । मिति मिगसर वदि ६ शुक्रवारै को मु ० लछमणजी वाचनार्थं ।

दूहा

पोथी प्यारि प्राण थी, हर हीया को हार ।
लाख जतन करि राखज्यौ, पोथि सेति प्यार ।।१।।

श्री गणेशदेव शाहाय छै जी । श्री ।

५२१. १०६५४ (१५) ।। दं० ।। **अथ श्री चंदकुंवर री वात लिख्यते**

प्रारम्भ :— समरूं सरसति सांमणी, गणपत देव कुं लागुं पाय ।
कर्त्तानाम परतापसिंघ की आग्या पाय, कीनी कथा रसककविराय ।।१।।

परतापसिंघ कुं मांण लै, हुंक्रम कीयो कर वाच ।
हंस कवि सूं असै कह्यौ, कछु ईक वात सुणाय ।।२।।

सब कुं लगे सुंहामणी, रच संजोग सिणगार ।
मुरखहुं को मन हरे, सरब रय(स)न को सार ।।३।।

सतरह सै. चालीस में, तेरस पोसज मास ।
गुण कीनो कर वांच कै, भोगी पुरण आस ।।४।।

अन्त :— परतापसिंघ सुरतसिंघरो, वसत सदा सुहाय ।
चंद वात पूरी हुई, कर(रि) सकलकविराय ।।६३।।

जोध वछ जुग २ जीवो, घणो होत परिवार ।
नाम धरचो परतापसी, या गुण को गुण सार ।।६४।।

पुष्पिका :— ईति श्री चंदकुमर री वात संपुरणं ।।
उपरली पोथी तण माफक लखी छै । खोटी खरी तो श्री परमेसर जांणे ।। संवत् १८७४ शाके १७३६ माह वद ८ श्रुक्रवासरे ।

६२४. १२३५६ **छन्दसार**

प्रारम्भ :— ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ छंदसार ।।

दोहा

कृष्ण चरन चित आन, कहुं सुमति पिंगल कछु ।
जिहतें छंदै हि जान, प्रभु गुन जामैं वरनियै ।।१

षोडस कर्म : चौपई

प्रथमहि संख्या करम बताय। प्रस्तारह सूची चित लाय ।।
पुनउ दष्टि नष्टि सुख खान। मेर पताका मरकट जान ।।२।।

अष्ट कर्म ए मत्त के पुन वरनन के जान।
इह विध षोडस कर्म ए कहे सुकवि सुख दान ।।३।।

अन्त :- ।। अथ वर्ण मर्कटी ।।

छपै

वर्ण संख कोठार, करहु सूरत षठ पंकत।
बृत पंकत भर आदि, एक तें अंक क्रमहि गत।
दूजी पंकत भेद, दोय धर दुगने ठानहु।
इन दोहूवन गुण, चतुर वर्ण पंकत में आनहु।
इह अर्ध अंक गुरु लघु पंकत, पंच छठइ भरि सु पुन।
गुरु अंक वर्ण अंक सम मत्त, पंक्त त्रई वर्ण मर्कट सुगुन ।।५८।।

इति वर्ण मर्कटी। टीका :—

वर्ण मर्कटारी वर्ण जितरां री मर्कटी करणी व्है तितरा कोठा उभा कीजै। तिरछा ६ कोठा कीजै, सदैव उणां रै आगै इसी संख्या मांडीजै। व्रत १, भेद २, मात्रा ३, वर्ण ४, गुरु ५, लघु ६, इण तरै ६ नाम लिखीजै। अठै वर्ण ३ री मर्कटी करणी है। प्रथम व्रत पंक्ति १ सु अनुक्रमें आंक भरीजे (१) दूजी पंक्ति भेद री प्रथम २ घर ने दूणा करनें आगै जितरा कोठा हुवै सो भरीजै। २।४।८।१६। ३२।६४। इण रीत भरीजै (२) हमें चोथी वर्ण पंक्ति। इण ने पहिली पंक्ति ने दूजी पंक्ति रा आंक गुणाय ने भरीजै। २।८।२४।६४। इण रीत भरीजै (४) हमें गुरु लघु री ५।६। पंक्ति भरीजै। तठै वर्ण पंक्ति रा आंक आधा करनें दोनु ५।६। पंक्ति भरीजै। १।४।१२।३२। इणरी ५।६ पंक्ति गुरु लघु री भरीजै। (५-६) अब ३ मात्रा पंक्ति भरीजै। अठै वर्ण पंक्ति नें गुरु पंक्ति रा आंक भेला करनें भरीजै। ३।१२।३६।९६। इण रीत मात्रा पंक्ति प्रस्तार: १२ मात्रा, ८ अक्षर, ४ लघु, ४ गुरु। तीन वर्ण रा ८ प्रस्तार, ३६ मात्रा, २४ वर्ण, १२ गुरु, १२ लघु। च्यार वर्ण रा १६ प्रस्तार, मात्रा ९६, वर्ण ६४, गुरु ३२, लघु ३२, इण रीत उत्तर दीजै।

वर्ण ३ री मर्कटी यंत्र

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | व्रतः |
| २ | ४ | ८ | १६ | ३२ | भेदः |
| ३ | १२ | ३६ | ९६ | २४० | मात्रा |
| २ | ८ | २४ | ६४ | १६० | वर्णः |
| १ | ४ | १२ | ३२ | ८० | गुरु |
| १ | ४ | १२ | ३२ | ८० | लघुः |

पुष्पिका :— इति षोडस कर्म सूरत मिश्र कृत छंदसारे संपूर्णम् ।। इति श्री पुष्करणा ज्ञातौ पुरोहित वैणावत भवानीरामात्मज इंद्रभानु कृत टीका समाप्तं ।।

श्लोकः

एकोंनबिंशे पंचदशोपि वर्षे कार्तिकमासे शुक्लदले च पक्षे ।
करौतिथोनां च अर्केपिवासरे लिखतं च साधुरुदेरामकेन ।।१।।
फलोधीनगरे श्रीहरमंदिरे लिखितं च साधु निरंजनी
श्री भागवतीदाशजी तस्य शिष्योदेंरामकेन स्ववचनार्थम् ।।२।।

(संवत) १९१५ का० शु० २ । श्रीरस्तुः । शुभं भूयात् ।

६६०. ११२८३ (२) **जसवन्तसिहजी के दोहे**[1]

प्रारम्भ :— जसवंत गरव न किजीयै, तज दीजीयै अभमौन ।
पट दरसण वेठा रहा, अ(उ)ड़गन चढी वीमौन ।।

कविनाम कला रहै कालु कहै, मुठी चीणा चंवाय ।
सत जाय पत छाडियै, घैवर खाय बंलाय ।।

---

१ कालू द्वारा महाराजा से यथोचित सम्मान प्राप्त न होने के कारण क्षुब्ध होकर लिखे गये ज्ञात होते हैं। महाजनी लिपि में, अनेक अशुद्धियों से पूर्ण, विषहर कोटि के दोहे आदि स्फुट छन्द हैं ।

सौ कवत न एकै दुहरो. नावक कैसे तीर।
लागत ही छिक जात है, नैक न होत अधीर ।।

बंदूक बौन गुणोण अंड, नैणस बौण दुरस।
सो लगै छै लौण उर, कोउ जीवौ न तुरस ।।

गात सुरंगी गौरडीं, ऊभी अंग लगाड।
सीर कुं रयण संही तणौ, फल पौमीयो कीवाड ।।

जा घर कुं तू कहै अपणा घर,
ता घर मै घर केऊ वसे है।
नौल बियाल बिलाव बिली,
बिल मुसह भीतन मौह घुसे है ।।
भुछ छछुंदरी छपगौ छपगी,
मंकरा मंकरी तिण मौहे पसे है।
तैं ज कियौ अपने रस कुं,
अपने अपने रस सबे ई बिरसे है ।।

**६६१. ११६८३ जादवरास**

प्रारम्भ :- ।। श्री र्द० ।। श्री वीतरागाय नमः ।।

दुहा

समरु रिषभ जिनेसरु, मन वंछित दातार।
अलिय विघन दुरै हरै, वर्त्तै मंगल चार ।।१।।

सासण नायक वीर नै, नमतां नवनिध होय।
उतपति कहु जादव तणी, सांभल ज्यौ सहु कोय ।।२।।

ढाल : चौपाइनी देसी

एहीज जंबू द्वीप वखांण। भरत खेत्र कोसंबि जांण ।।
गढ मढिदर पोल पागारि। वन वाडी कुठाठ विचारि ।।
धन धान करि पुरण भरी। लौभै जांणे इंद्रनी पुरी ।।
सुखीया लोक वसै तिण माय। विद्यावंति नामै तिहां राय ।।

हय गय रथ पायक दल पुर। धारणी रांणी नित रहै हजुर ।।
सुख विलसै करै लील विलास। आयो वसंत खेलणनो मास ।।
एक समै राजा नीसरयौ। निज सेन्या सेती परवरयौ ।।
वीर कुविंदक केरी नारि। राजा देखी मैहल मझारि ।।
रुपै रंज्यो भुप विशेश। नयणन खंडे वनमाला देख ।।
रामति रमनै आयो राय। निज मंत्रीसर नै तेडाय ।।
वात कही वनमाला तणी। ल्यावो नारी मुज सुख भणी ।।
रिष चोथमलजी कहै पैहली ढाल। आगै सुणज्यौ वात रसाल ।।

अन्त :– दुहा

संजम लीधो मनरली, परजन संब कुमार।
थिवरां पासै सीखीया, द्वादसी अंग वीसतार ।।१।।

सीह ज्युं संजम पालता, सुर वीर नै धीर।
गुणरतन छंवछर करै, तपीत खीयौ जिन सीर ।।२।।

तीर्थ ते नमूरे : ए देसी

मुनीवर मोटा बेजण गुण गिर वारे।
पालै पांच अचार साध गुण गिर वारे ।।
करणी करता निरमली गुण गिर वारे।
नवकोटी धर है विहार साध गुण गिर वारे ।।१।।

जादव वंस उजवालीयौ गुण गिर वारे।
सहै परीसा घोर साध गुण गिर वारे ।।
अंत समै केवल लही गुण गिर वारे।
मुक्त गया करम तोर साध गुण गिर वारे ।।२।।

सोलै वरस लगै पालीयौ गुण गिर वारे।
चारत्र खंडानी धार साध गुण गिर वारे ।।
अंत गढ मै चालीयौ गुण गिर वारे।
एक मास नो संथार साध गुण गिर वारे ।।३।।

मुनवर नां गुण गावतां गुण गिर वारे।
तुटै करमांरी कोड साध गुण गिर वारे।।
रिष चोथमलजी कहै साधना गुण गिर वारे।
पाय बंदु बेकर जोड साध गुण गिर वारे।।४।।

उतपत कही जादवा तणी गुण गिर वारे।
कांइ सुत्र कथा कार साध गुण गिर वारे।।
साचा करनै सरद जौ गुण गिर वारे।
पछै गांनी वदै तंतसार साध गुण गिर वारे।।५।।

सुणीयौ धारचौ ज्युं दाखीयौ गुण गिर वारे।
फेर क्युंहीक चोज लगाय साध गुण गिर वारे।।
मारी मत सारु कह्या गुण गिर वारे।
वले सुत्र वदै सौ न्याय साध गुण गिर वारे।।६।।

रचनाकाल संवत १८७८ गुण गिर वारे।
काती वद तेरस दिन जोय साथ गुण गिर वारे।।
इणमै इधकौ उछौं हुवै गुण गिर वारे।
तो मिछामदुक्कड मोय साध गुण गिर वारे।।७।।

रचनास्थान नगर नगीनौ नित नवौ गुण गिर वारे।
लोक कहै छै वांण साध गुण गिर वारे।।
सुण सुगण नर चेतज्यौ गुण गिर वारे।
कांइ काजौ व्रत पचखांण साध गुण गिर वारे।।८।।

पुष्पिका :— इती जादवरास संपुर्ण। पुजजी श्री चोथमलजी तथ सीष बुधमलजी। लीखतु सरुपचन्द जोधपुर मध्ये: काती वद १२: संपुर्र्ण: ११११

७२६. १०८४७ (२८) **झगडो – पनघट को**

प्रारम्भ :— ।अथ झगडौ।

कूंप चढी पिणहार, दोन्यूं झगड़ पड़ी।
हरजन सागट नार, बातां बोहोत अड़ी।। टेक।।

बोली हरजन नार मोहि भर लेणें दे–री ।
लागैगी तेरी छांट जायगी गगरी मेरी ।।
तूं पीछै भर लीजे ऐ कहा होत है बारि ।
ए तो जब सुगरी कह्यौ जल उठी नुगरी नारि ।।१।।

बोली सागट नारि वैसनूं कब होइ आई ।
अंत हमारी जात काहा तेरैं चतुराई ।।
तूं पीछै भरि लीजीऐ हे सब दुनीयां भरि जाइ ।
जे तूं भगत राम की हे तो न्यारो कूप खिणाइ ।।२।।

तूं तो सागट नारि धरम की बात न जाणैं ।
हिरदै नहीं हरि नांम आपणी बुधि बखाणैं ।।
संगी जीवा जूण की हे चौरासी की देह ।
मोसूं झगड्या काहा होवै हे तूं पहली भरि लेह ।।३।।

देखी तोसी नार नवा नित पाखंड करती ।
पांणी पीती छांणि न्हाइ-क रोटी करती ।।
बाली सूं वूढी भई हे पाखंड कीया नांहि ।
यो कुल अब ही वीगड्यौ न्हाइ न्हाइ रोटी खाइ(हि) ।।४।।

मै पूज्यूं राजा रांम सकल देवन कौ देवा ।
मनसा वाचा लाइ करूं मैं हरि की सेवा ।।
मेरे तौ पत व्रत रांम को हे मैं नहीं पूजूं आंन ।।५।।[1]

मैं धोकूं देवी देव पाबू गोगा को ध्याऊं ।
करूं कड़ाई लाफसी सदा लूंदा गटकाऊं ।।
गंगा जाऊं न गोमती हे पोकर कदे न न्हाइ ।
पूजूं देवी चंडका हे तन भर खाइ अघाइ ।।६।।

हरि तजि पूजै आंन अन्याई उनकूं कहीऐ ।
नीचन सूं महानीच संग वाकै नहीं बहीऐ ।।
आंन चड़ावो खात है ऐ जांन मड़ा को अंग ।
जा घरि हरि की भगत नहीं हे तजीऐ वाकौ संग ।।७।।

---

१ तीन चरण ही हैं ।

तेरौ तो मोडीयौ बुरो नित उठ मूंड मुडावै।
करि ऊपर जल लेह बैठ करि तिलक बणावै ॥
सिर पतर सो लीयां फिरे हे सब कुल मारचौ लाज।
भाई बंध कुटंब की खोई हे वळती कहूं मैं ग्राज ॥८॥

कंठी माला तिलक प्रभु को उजल बांनूं।
रांम नांम को तेज नहीं कोई जग मैं छांनूं ॥
राव रंक सवही निवै हे तिरलोकी को ईस।
जम भी दावो ना करे हे सिर ऊपर जगदीस ॥६॥

मेरे तो घर को भलो नित कह्यौ मेरो मांनैं।
राखै मेरा बाळ ऊठ कर पांणी ग्रांणैं ॥
पीसै पोवै करि धरै हे मने खवाइ खाइ।
गोबर कचरा डार कै हे कहूं जब बाहिर जाइ ॥१०॥

तूं तो नुगरी नार ग्रापकै नर कूं बस कीयौ।
स्वांन टूकड़ौ खाइ ध्रक है वाकौ जीयौ ॥
कैतो तोनैं छाड दे हे कै कहूं ऊठर जाइ।
तोसी नुगरी नार को हे दरसण करे बलाइ ॥११॥

ऐक दिनां कलीया को बाबो माला ले करि ग्रायौ।
जब ले बंदी मुसल चरखलीयौ बिखरायौ ॥
पांणी जाऊं न पीसणैं रे चूलै करूं न ग्रागि।
दई मारचा माला फैंक दै रे नहीं तो पीहर जाऊंली भागी ॥१२॥

तूं तो सागट नार नांव हरि को नहीं लीनो।
साध संगत मै बैठ रांम रस कदे न पीनो ॥
मुत हीणीं वुध बाहरी हे माहा मूढ ग्रजांण।
जा घर साध न पूजीया हे सो घर सदा मसांण ॥१३

बोली व्याहित नार नुंगरी को कीनी झूठी।
सो बोली सोनार रांम रांम करि उठी ॥
रीछ भील बानर तिरचा हे रांम नांम गुण गाइ।
तेरा ग्रांन देव सूं कुंण तिरचौ है ऐकही देह बताइ ॥१४॥

जीती हरजन नार नुगरी कूं दिष्या दीनी ।
जा जैसी उनिमांन श्राप जैसी करि लीनी ।।
गुरु - सिख भेला भया यो कर ग्यांन विचार ।
रांम नांम परताप सूं रे जीती हरजन नार ।।१६।।

।। इति संपूरण ।।

८३२. १०६२४ (७) **देवादासजी की वाणी**

आरम्भ :– अथ साध श्री देवादासजी की वांणी अणभै लिख्यते ।
प्रथम स्तुति का – किवत – लिख्यते ।

नमो अखंडत रांम, नमो सतगुर सुखदाता ।
नमो अनंतही कोटिं, रांम रस पीइ पिलाता ।
जिनको गही-ज वौट, रहो सिर सदा हमारु ।
अठ पहरचौ मन मेल, सुरत धर तू रति न टारू ।
देवादास वंदन करै, बारू वारज जोइ ।
रांम गरू अर संत जन, हिरदै राखूं योइ ।।१।।

इती प्रथम स्तुति कौ किवत ।

---

१ देवादासजी की अनुभव-वांणी विभिन्न छन्दों में अङ्गबद्ध की गई है । यथा : साखी, कुण्डलिया, रेखता, नीसाणी, चन्द्रायणा आदि । इनके अतिरिक्त कुछ कृतियों को ग्रन्थ नाम से भी अभिहित किया गया है, यथा : 'भगति भेद', पत्र संख्या ४८४ से ४८७; 'सार-असार जोगग्रन्थ', ४८७ से ४६० । इसके बाद गाबा का पद शीर्षक से विभिन्न रागों में निबद्ध १०५ पद हैं । इन रागों के नाम इस प्रकार दिये गये हैं :—
राग भैरू, राग लिलत, राग बिभास, राग देवगंधार, राग रामगिरि, राग बिलावल, अल्हीया बिलावल, राग जैजैवन्ती, राग आसा, राग गौड, राग सारंग, राग गौड़ी, राग बसन्त, राग काफी, राग जैतश्री, राग आसासींधू, राग हींडोल, राग मंगल, राग कल्याण, राग कनडौ, राग कनडी, राग धूनी, राग बिहंगडौ, राग टोड़ी, राग पंजाब, राग सोरठि, राग गिरनारी सोरठि, राग सुवासोरठि, राग मलार, तोयंग मलार, राग जंगलौ, राग मारू, राग धनाश्री, राग केदारो, राग बधावा, राग जोग-धनाश्री, राग आरती ।

प्रथम गुरदेव को अंग लिख्यते ।। *

स्तुति

रांम गरू सब संत कूं, देवो नावै सीस ।
वार वार परनांम है, मेरी बिसवाबीस ।।१।।

अंग

गुरुनाम रांमचरणजी गुर सही, मेरै सिरि सोधंत ।
देवादास सरणै रह्यां, दुबध्या सब खोवंत ।।१।।

देवा दुबध्या दूरि करि, मेटैं तीनूं ताप ।
रामचरण पद परसतां, नास होइ सब पाप ।।२।।

देवा ग्यांन भगति बैराग का, आठ पहर ओदार ।
रामचरणजी बोध दे, बौहौत उतारचा पार ।।३।।

रामचरण म्हाराजि दे, गरक ध्यांन अर ध्यांन ।
लोभ कांमना मेटि करि, निरभै करै निधांन ।।४।।

रामचरणजी रचि रह्या, ब्रह्म ब्रिछ कै मांहि ।
जै कोई बैठै छांहां तलि, सो इंम्रत फल खांहि ।।५।।

सतगुर का दीदार मैं, मिलै पदारथ च्यारि ।
देवादास दिल सुध सूं, धारण लेवै धारि ।।६।।

अन्त :– आरती ३

आरति अखंड रांम की कीजे । रांम रांम रसनां सूं पीजे ।।टेक०।।
प्रथम आरति मंन मतवाला । घट मैं दीपग ग्यांन उजाला ।।१।।
दूसरी आरति दीरघ देख्यां । निस दिन हिरदैं हरि कूं पेख्यां ।।२।।
तीसरी आरति तिरपति पाया । निरभै गिगनि निसांण बजाया ।।३।।
चवथी आरति चहूं दिसि फूल्या । पेम पहोय परि भवरा भूल्या ।।४।।
पंचवी आरति पूरण दरस्या । आतम मिलि परमातम परस्या ।।५।।
जन देवादास ऐ गुणं म गावै । सत गुर सरणि बौहौत सुख पावै ।।६।।

---

* निरंजन स्तुति एवं गुरुदेव स्तुति के वाद गुरुदेव का अंग प्रारम्भ किया गया है ।

आरती ४

आरति उभै निरंतरि कीजे । ऐक गर ऐक रांम ही पीजे ।टेक।

मन इंद्री परकति निरवाल्या । आतम देव निरंतरि भाल्या ।।१।।
सतगुर सबद अधिक अधिकारा । देवादास ऐ मोखि दवारा ।।२।।

पुष्पिका:— इती राग आरती संपूर्ण ।
राग ३४, पद १०५ । इति गावा का पद संपूर्ण ।

अथ बांणी की संख्या को ब्योरो । स्तूति का किवत ३, अस्तूति की साखी ८२, साखी २२२६ । अंग २४, चन्द्रायणा १३३ । [अन्तिम पत्र फट जाने के कारण उस पर कागज चिपका दिया गया है अतः पूरा व्यौरा पढ़ने में नहीं आता है] अंग १४, सवैया आदि ६९ । अंग १४, झूलणा ५२ । अंग ४२, किवत २०३ । अंग ४४, कुंडल्या ४८२ । अंग १९, रेखता ४७ । नीसाणी २ । ग्रन्थ २ (भगति-भेद, सार असार जोग ग्रन्थ), पद १०५, राग ३४ ।

देवादास दयाल की बांणी ······
सांसे जाइ सब हरीरांम कहै दास
। इति अस्तुति को किवत ।

दुहा

संकलन-कर्त्ता हरीरांम हरि गुर दया, सत जह्न का हेत ।
अंग लिखे अ(ठी)तरैह, अंतर होइ सु चेत ।।१।।

संकलन-स्थान भीलाडै मधि भावसूं, सुख सति संगति धांम ।
अंग बनाऐ जुगतिकरि, बांणी का बिसराम ।।२।।

संकलन-काल संवत् अठारा सै सही, सैतीसा व्रतमांन ।
मगिसर सूदि जू दोइज ऐह, बार शनीसर जानि ।।३।।

किवत

देवादास का परिचय
देस ढुंढाहड मांहि, प्रगनू वाहातरि जांनूं (नों) ।
कसवा मधि ऐक गांव, नांम गूढौ सौ मांनौं ।
ताहा प्रगट भऐ आइ, जन जो देवादासा ।
लीया ग्यांन अर भगति, बैराग धरि बौहौत उदासा ।।

जगत डरत हैं दूरि, निकटि नहीं आवैं कोई ।
ब्रह्म देस की वात, सबद कहै वांहां बताई ।
संमत अठारा पूरि, ऊपरि हु अठाईस बिलाऐ ।
गिरा उचारी तब, रांम जब हिरदै आऐ ।
रांमचरण गुर देव, जास का सिर परि राजै ।
रांमति देसांज च्यारि, खुसी होइ तांहा बिराजै ।।
खांनाजाद गुलाम है, हरीरांम तुम दासजू ।
भौ बूड़त मौहि राखीयौ, सतगुर देवादासजू ।।१।।

इती बांणी सर्व संपूरणं । रांम रांम रांम रांम*

१३४१. ११५८४ प्रत्युत्तरा ( मुकरियां )

प्रारम्भः–छानउ आयउ मन ऊल्हस्यउ । राति दिवस मन-माहे वस्यउ ।।
आठ पुहर राखइ मुहि आगल । किउं प्रभु सयण नही सखि–कागल ।।१।।

आठ पुहर घण विचि संचरइ । मन रंगईं तसु आदर करइ ।।
निस-वासर गल राखइ नारि । किउं सखि सयण नही प्रभु–हार ।।२।।

एक पलक तिण त्रिण न विरहई । तिण दीठइ स्त्री अति गह-गहइ ।।
बांह विलूधउ नही छइ कूडउ । किउं प्रभु सयण नही सखि–चूडउ ।।३।।

देखंतां सब जग मन मोहइ । कस-मस करत धरत तनु सोहइ ।।
रंग रस रहइ सदा अंग लागउ । किउ प्रभु सयण नही सखि–वागउ ।।४।।

सांकडी सेरी साम्हउ मिलीयउ । मुझ टालंतां किमइ न टलीयउ ।।
मां-मां करतां पाडी मांड । सखि ए सज्जन ना बाई–सांड ।।५।।

उण मो फाडी मइ ओ फाड्यउ । सारी रातइं सेज रमाड्यउ ।।
पर उपगारी अम्हसुं वेवंडउ । सखि ए सज्जन ना बाई–केवडउ ।।६।।

एक सरस अनइ स-सवादउ । जो वन मांहि जोवंती लाधउ ।।
रूप रुडउ नइ मुहडइ मीठउ । सखि ए वालंभ नां बाई–साठउ ।।७।।

---

* गुटके में ग्रन्थ का लेखन-काल अन्यत्र संवत् १८४४ दिया गया है ।

एक ग्रचुंकउ न रहइ बारिउ। लाजिउ लोके घणुं टपारचउ ।।
जण देखंतां ग्रावइ निरासउ। सखी ए वालंभ ना बाई-हासउ ।।८।।

एक पाडोसी मो घरि ग्रावइ। उग्रइ लाभ मो विणज करावइ ।।
लाहइ विणज करंतउ जाण्यउ। सखि ए वालंभ ना बाई-वाणिउ ।।९।।

जिण मो चावी सो मइ चाविउ। मुझ चावंती भावइ ग्राविउ ।।
सहीज सुन्दर कुंकुं रोल। सखि ए सज्जन ना बाई-तंबोळ ।।१०।।

जिण हुं मोडी सो मइ मोड्यउ। सो मइ रयणी परहउ छोड्यउ ।।
कंड विलगउ न करइ चांचूं। सखि ए वालंभ ना बाई-कांचू ।।११।।

जिण मोनइ पहिरी सो मइ पहिरचउ।
उण पहिरचां मोनइ किण ही न वहोरचउ।
कंठ विलंब्यउ न करइ भार। सखी ए वालंभ ना बाई-हार ।।१२।।

जिण मोनइ चूसी सो मइ चूस्यउ। तिह चूस्यइ मेरउ कछु न मूस्यउ ।।
ग्रति न छोटउ ग्रति न लांबउ। सखी ए वालंभ ना बाई-ग्रांबउ ।।१३।।

सरस सकोमल घणुं सुहावउ। चतुरंग माहे दीसइ चावउ ।।
होठ कंठ मुझ लागइ मींठउ। कां सखि वालंभ ना बाई-सांठउ ।।१४।।

छानइ पगि छमकंतउ ग्रावइ। निस भरि सूती मोहि जगावइ ।।
पाड्यउ चटकउ खलक्यउ कांकण। कां सखि वालंभ ना सखि-माकण ।।१५।।

प्रीत विहूणउ मुझ प्रकासइ। हसइ जंबुक विहूणइ हासइ ।।
ग्रण वतलायउ झखइ इलोलउ। कह सखि सज्जन ना बाई-भोलउ ।।१६।।

प्रीत नही नइ प्रीतज मंडइ। लोक सहूना चित्तज खंडइ ।।
ग्रावइ जावइ नित प्रति सवउ। कहउ सखि सज्जन ना सखि-जवउ ।।१८।।

उज्जल धवल ग्रनइ-स सनेहउ। तेण पुरष सुं लागउ नेहउ ।।
देव जोग थी गमीउ जोती। कां सखि वालंभ नां सखि-मोती ।।१८।।

ग्रण तेड्यउ केडइ हुवउ ग्रावइ। मिलवा कारण मन मइ भावइ ।।
जण देखंतां पाडइ ग्रांटउ। सखि ए वालंभ ना बाई-कांटउ ।।१९।।

एक सखी मेरइ सज्जन ग्रायउ। ग्रावत ही मइ ग्रंग लगायउ ।।
रात दिवस मेरइ उणसुं खेल। कहउ सखि सज्जन नां सखि-तेल ।।२०।।

एक सखी मेरइ सजन आयउ । आवत ही मइ मुख लगायउ ।।
मुख लागत ही दिद्धउ मान । कहउ सखि बालंभ नां सखि–पान ।।२१।।

पुष्पिका :– संवत १७०२ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ श्री उपकेश गच्छे कुकुदाचार्य संताने भट्टारक प्रभु श्री कक्कसूरिजी विजयराज्ये विनेय मुनि हर्षसुन्दरेण लेखि लांबीया मध्ये लिपि कृतं ।

१३४३. ११५८२ प्रबोध चन्द्रोदय नाटक *

प्रारम्भ :– श्रीरामाय नमः । श्रीगणेसाय नमः ।
।। ग्रन्थ चन्द्रोदय लिखितं ।।

अभिनंद नु परमार्थ कियौ । अरु ह्वै गलित ज्ञांन रस पियो ।।
नाटक नग चित मै वस्यौ । ताहि देखि तन-मन उल्हस्यौ ।।१।।

कृष्णभट करता है तहां । गंगा सागर भेटी जहां ।।
अनभै कौ घर जांनें सोई । ता सम नही ववेकी कोई ।।२।।

तिन प्रवोधचन्द्रउदै कियौ । जनु घट दीप हाथ कर लियौ ।।
करणी सू रसु पावहि स्वाद । कायर और करहि प्रतिवाद ।।३।।

इंद्री उदार पराइण होई । कबहु पै न रीझै है सोई ।।
पंच तत्व अव्यक्त मन धरचौ । तिंहि महि नाटक विस्तरचौ ।।४।।

---

* इस नाटक में सुमति, विवेक, श्रद्धा एवं शान्ति धारण करने से संसार के मायाजाल से मुक्त होने का मार्ग बतलाया गया है । नाटक में काम, रति, विवेक, मोह, माया, अहंकार, लोभ, तथा सुमति, करुणा, क्षमा, संतोष, श्रद्धा आदि गुणों को पात्रों के रूप में प्रस्तुत कर रूपक बांधा गया है ।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, भाग १' में प्रबोधचन्द्रोदय के कोई आठ कर्त्ताओं के नाम दिए गए हैं, किन्तु मल्हकवि अथवा मथुरादास का उल्लेख नहीं है । प्रस्तुत कथा बहु चर्चित होने के कारण जैन एवं अजैन दोनों ही वर्ग के कवियों ने इसे अपनाया है । कवि मल्ह ने कृष्णभट्ट की कृति के आधार पर ही प्रस्तुत कृति की रचना करने का स्पष्ट उल्लेख प्रारम्भ में ही किया हैं ।

अंतर नांडी सोखै बाइ · · · । अरु आनंद समुद्र समाइ ।।
विस्व चक्र महपति तन होई । पंडित नाम कहावै सोई ।।५।।

गुरुनाम जब वर खेमचन्द्र गुर दियौ । तब आरंभ ग्रंथ कौ कियौ ।।
वह प्रबोध उपतिष्ट्यौ आय । अंतकार तिनि द्याल्यौ खाय ।।६।।

भितर बाहर कहि समुझावै । होइ चतुर तापहि लखि आवै ।।
जो या रस कौ बेता होई । या महि खौजै पावै सोई ।।७।।

कविनाम मथुरादास नांम निस्तारचौ । देवीदास पिता को धरचौ ।।
अंतरवेद कोल मै रह्यौ । तीजो नाम मल्ह कवि कह्यौ ।।८।।

ताहि सुनत अदभुत रुचि भई । निश्चै मन की दुविधा गई ।।
जितनै पुस्तक प्रिथ्वी आहि । यह श्री कथा सरोवनि ताहि ।।९।।

यह निज बात जांनियौ सही । परचै प्रगट मल्ह कवि कही ।।
पोथी एक पहूंची आंनि । ज्यूं ह्वां त्यू इह्या राखी बानि ।।१०।।

रचनाकाल सोरसै संवत जब लागा । ताकौ करत बरस एक अर्ध भागा ।।
कार्तिक कृष्ण पछि द्वादसी । ता दिन कथा चित्त महि बसी ।।११।।

जै हुं कृष्ण भगति नित करौं । वासुदेव गुर मन महि धरौं ।।
तौ यह मोपहि ह्वं जो तिसी । कृष्णभट भाखी है जिसी ।।१२।।

दोहा

मथुरादास विलास यह, जै रंमि जांनैं कोई ।।
इस रस वीधौ मल्ह कहि, वगदनि वहुरि न होई ।।१३।।

जव ज्यूं चन्द्र अवासा होइ । तव त्यूं तिमर न देखै कोई ।।
तैसें ज्ञान चन्द्र परकासै । ज्यूं अज्ञान अंधेरौं नासै ।।१४।।

पर्मात्मां प्रकट है जांही । जांनो उहै महादेव आंही ।।
ज्ञान नेत्र* तीजौ तव होई । मृग त्रिष्णा देखै जग सोई ।।१५।।

---

* प्रथम पत्र के उपर्युक्त छन्द बाद में नवीन पत्र पर लिख कर पाठ पूरा करने की दृष्टि से जोड़े गये हैं ।

अनभै ध्यांन धारनां करै । समिता सील माहि मन धरै ।।
इहि विधि रमि जौ जांनै सही । महादेव मन बचन कर्म कही ।।१६।।

कथा सनबंध

राय गोपाल चंद्र ब्रत लीयौ । तिन सब राज सखा कूं दीयौ ।।
क्रित क्रित ब्रह्मह सौ कह्यो । आपु निरारंभ ह्वै रह्यौ ।।१७।।

परमात्मा गुपालहि मांनि । क्रित ब्रह्म जिय आत्मा जांनि ।।
राजा क्रित ब्रह्म है जैसौ । अब हौं बरनि सुनांऊ तैसौ ।।१८।।

नव द्वारा सरबंगी देस । तिहुं लोक ग्रामी ब्रु नरेस ।।
महा ऊग्र कछू कह्यौ न जाइ । बिदि मांन नट लीयौ बुला(इ) ।।१९।।

तब आयस भूपाल हि दीयौ । नौ रस नाच सबै तुम कीयौ ।।
सांति निरंति दिखावैहि जैसै । अनभै ना बिखावैहि तैसैं ।।२०।।

नट ऊवाच

जो गुन देख्यौ सुनौं न होइ । सो रसना चिन सकई कोइ ।।
सुनत वात राजा रिस भयौ । क्यूं रे यहु रस पृथ्वी गयौ ।।२१।।

कै तूं नाचि दिखावहि ताहि । कै तूं दूरि देस त्याग लै जाहि ।।
तब नट डरचौ वीनवै ऐव । कछु अवधि हंम दीजै देव ।।२२।।

राजा जबहि अवधि दिन दीयौ । नटनि पयांनो दक्षण कूं कीयौ ।।
गंगासागर पहुच्यौ जाइ । तहां कोऊ रह्यौ समाधि लगाइ ।।२३।।

अन्त :– तब आकाश भयौ जैकारू । अरे बछ मिलि गयौ विकारू ।।
पुरष प्रगट परमेस्वर आही । वछ विवेक जांनिये ताही ।।६६।।

अब प्रभ ये मुखि तुम धरीयौ । चंद्र प्रबोध उदै तब करीयौ ।।
सुमति विबेक रू सरधा सांति । कांमादिक काटं नजु भ्रांत ।।६७।।

इनकी क्रिपा पबल मन भयौ । जो हौ आदि सोई फिरि ठयौ ।।
बिष्ण भगति तै पहुची आई । · · · · · · (पंक्ति छूट गई है)
· · · · · · · तेरै परसादा । कृति कृति भयौ मिट्यौ अनबादा ।।६८।।

अवनि हि संग रहौगो एही । हूं भयौ ब्रह्म भूजिहौं देही ।।
बिष्ण भगति तूं पहूंची आइ । कियौ आनन्दज सदा सहाई ।।६९।।

अरु चिरंकाल मनोर्थ पूजे। गए सत्र साल हे दूजे।।
जै नर बरति बासनां होई। ताते पर और नहीं कोई ।।७०।।

अद्वीत राज अभै पद लह्यौ। अच्यंत चितवत अच्यित भयौ।।
जिस रस ईस्वर सनक सनंदा। अरु वासिष्ट भेद ताहि बंदा ।।७१।।

कृष्णभट सोई रस गाता। मथुरादास कहै सोई वाता।।
वंदे गुर गोविंद का पाई। मति उनमान कथा सो गाई ।।७२।।
[४७२]

पुष्पिका :– इति श्री मल्ह कवि विरचिते पठते हरंते पापं। श्रुत्वा मोक्षि दाईकं जोगारंभभवेसिधा आवागमन न वरतते। इतिश्री चंद्रउदय प्रबोध षष्टमो अंक संपूर्ण समापता।४७३। संवत् १७१७ मिति वैसाख वदि सात्यौ। लिखतं खेमदास नागपुर मध्ये। पठनार्थ हरिरांमदास। सुभं भवत् श्री श्री श्री श्री श्री

१३५३. १०८४८ (८) **प्रश्नोत्तरी भाषा**

प्रारम्भ :– अथ ग्रन्थ प्रस्नोतरी लिख्यते ।। टीका संजुगत ।।

दूहा

गुरू संत परब्रह्म कूं, मम जु करत परनांम।
प्रस्न होइ दयौ प्रागि अति, बदत बचन अभिरांम ।।१।।

सदगुर दाइक सरब सुख, विघन हरन सब संत।
मंगल कारक ब्रह्म एह, तिहूं ऐक भजि कंत ।।२।।

आचारज संकर तणूं, ग्रन्थ प्रस्नौतर नांम।
तिनकी भाषा कहैत हूं, हरि कबि पूरण कांम ।।३।।

राम नाम कलि पत्र है, संपति सरब तम भारि।
कबिता सिधि निधि मुकति जू, सब भजता की लार ।।४।।

प्रस्न उतर दोन्यूं जुगल, संकर बचन रसाल।
मंमोखी जन उरि धरो, मणि रतनां की माल ।।५।।

वंदन वालकरांम करि, उचरत गिरा बबेक।
संमोधन अब होत है, सुणौं सकल चित टेक ।।६।।

श्लोक

अपारसंसारसमुद्रमध्ये समंभ(ज्ज)तो मे सरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपयावदैत(तवैव) विश्वेस पादांबुजदीर्घनौका ।।१।।

टीका

सिखो उकत – दुहा

अपार समुद्र संसार मैं, डूबत नहचै ऐव ।
कूंण सरणि हम ऊवरूं, को हो क्रिपाल गुर देव ।।१।।

गुरो उक्ति – अरेल

विस्व ईस ऐक रांम तास पद कवलजू ।
वड नौका एह जांनि ध्याइ होइ विमलजू ।।
या चढि उतरे पार समुद्र संसाररे ।
परिहां सिष्य सरणि एह तोहि सोही उरु धाररे ।।१।।

अन्त :– ग्रन्थो किवत

ग्रन्थ-माहात्म्य प्रस्नौतर एह ग्रन्थ ज्यौ उर धारत वड भाग ।
इनमैं सब तत्व बुस्त(बसत) है ग्यांन भगति बैराग ।।
ग्यांन भगति बैराग और भी सति सति भाखी ।
नीति अनीति बिबेक वदत बाधा नहीं राखी ।।
परम आंनंद बरतै सही रमै मनो अति लाग ।
प्रस्नौवर एह ग्रंथ ज्यौ उरधारत वड भाग ।।२।।

दुहा

संकराचारज भाखीयौ, ग्रंथ प्रस्नौतर नांम ।
वडौ धरम एह जांनीऐ, कलि जीवन विसरांम ।।१।।

संकराचारज संकर कौ, भए अनभी अवतार ।
पाखंड वहंड मैं लोक मैं, कीनौं आइ पसार ।।२।।

जिन ए ग्रंथ वखांनीयौ, सिव दास जन कांम ।
कछू कछू भाषा जास की, करी जू वालकरांम ।।३।।

स्वांमींजी श्री संतदास, ताप्रजि कृपारांम ।
जिनके रांमचरण सिख, सह्र नमम बिसरांम ।।४।।

टीकाकार तिनकी अग्या भाखीयौ, टीका बालकरांम ।
संतदास की सरणि मैं, जपि करि रांमो रांम ।।५।।

सुणीयौ ग्यांनी पिंडता, पुनि जू सबही साध ।
एह भाषा लघु दीरघ जो, लीज्यौ कर समाध ।।६।।

छुदर मेरी बुधि जू, भाख्यौ घटि बधि एह ।
अरध वचन बालक बदैं, मात समझि सब लेह ।।७।।

संकर तुम भाषा तणूं, तुमंही जांणूं भेव ।
जो मोकूं तुम भाखियौ, सो मैं भाख्यौ एव ।।८।।

तुम संकर सरवगि हो, अंतरजांमीं रांम ।
ऐही खंम्यां प्रभु कीजीयौ, घट बदि वचन बिरांम ।।९।।

ऐह ग्रंथ प्रस्नोतरी, संकर भास अगाध ।
टीका बालरांम कृत, गुर मीठारांम प्रसाद ।।१०।।

रचनाकाल एह ग्रंथ चित धारियां, नहचै होइ कारज ।
संमत अठारासैं मही, एक बीस ब्रतमानज ।।११।।

फागण बदि एकादसी, बार सनीसर जांन ।
(.... .... .... .... ....) ।।१२।।

नग्र भीलाड़ा मधिजू, टीका भऐ प्रकास ।
सुभ मंगल आंनंद करि, आतमराम विलास ।।१३।।

पुष्पिका :— इतीश्री प्रस्नौतरी रत्नमाला ग्रंथ संपूरण । संकाचारज बिरचिताई भाषा कृत बालकरांम स्वांमीजी श्री रांमचरणजी की अग्या सूं । वांचैं सुनैं ज्यांनैं राम राम ।

**१३७०. १२०६९ (५) प्रिथीराज चहूआण रासउ रसाल**
**[ बहुर्चाचत धारणोज वाली प्रति ]**

प्रारम्भ :— ।। र्द० ।। श्रीसारायै नमः ।।

प्रथम मंगल मूल सुतं, बीय सुतर एकुं धर धम्म उभ्यो ।
त्रिप्त दुशामिय त्रिपुर वर्ण पत्त मुखा पत्तो श्रुभ्यो ।।

कुसम रंग भारहि सुफल, उकत्ति अलंब अमीर।
रस दरसन पारस्सर मइ, श्री(ई)सअ सम कवि कीर ॥१॥

भुजंगी छंद

प्रथमं भुजंगी सुधारि ग्रहणं, जिणे नाम एक अनेकं कहणं।
दुतिय लभयं देवं ता जीव तेसं, जिणे विश्व राख्यो बल मित्रं सेसं ॥२॥

त्रितिय ता(भा)रथी व्यास भारत्थ भख्यो, जिणे उत्त पारत्थ सारत्थ सख्यो।
चवे सु केदेवं परिच्छच्छ पाय, जिणे उद्धरे सव्व कुल वंसराय।
नले रूव पंचमति श्रीहष(र्ष) सारं, नले राय कंठं द नैषद हारं।
कवे कालदासं छ भाषा समुद्दं, नियं सेतुबंधुं सु भोजं प्रबंधं।
संत दंड मामाल लालिय कवित्तं, जिणे वुत्तरंगं सुणंगं सरित्तं।
गिरा शेष बा-(णं) कवी कव्व बंधं, जिणे शेष उचिष्ट कवि चंद छंदं ॥३॥

अन्त :- चंद फुरमाण मांगिवे कुं जाइ। गोरी बादिसाहि प्रिथीराज फुरमाण मागइ। तव हि फुरमाण देवे कुं बादिसाहि हजूर हुउ। तव चांद (चंद) राजा सु कह्यो॥ राजा प्रिथीराज सबदेश्वर सुरताण सुइ मुख फुरमाण देता हइ।

कवित्त

भयो इक्क फुरमाण इक्क बाण जि गुण सजिउ,
सुइ सवद्द अरु बान अग्र सु अविचल करि वजिउ।
भयो बीय फुरमाण खंचि रख्यो श्रवण वर,
तीय सवद सुणि निसुणि निसुणि सुण्यो सुलताणे परचो धर।
लइ दसण रसण दस रंधि हुइ बहु कपाट विधग संघण,
सुलताण परचो खा(न) पुकारचो त दिन चंद राजन मरण ॥४१५॥

परत भूमि सुलताण खान मिलि खलक पिट्टि सिर,
मइ वरजिउ बहु वार साहि दुसमन अ संभवर।
भोग छंडि करि जोग भट्ट आसोजु संधि करि,
वचन विधि. . हक मय लियो गोरीह नरिंद हरि॥
टुक मंझि टुंट टुकरे करहु तव सु साहि गोरहि धरउ,
हजि जाण खान इम उच्चरिय अवक चित्त कोई कवि करउ ॥४१६॥

दूहा

सार विसि करि पलकं खिजि, मरणहु चंद नरिंद ।
रासेउ रसाल नव रस निबंधि, अचरिजइ दु फणिंद ।।४१७।।

पुष्पिका :- इतिश्री कविभट्ट चंदवरदाई कृतं राजा श्री प्रिथीराज चहूआण रासउ रसाल संपूर्ण ।। ग्रंथाग्रं (थ) १३०० सिलोक छइ । श्रेयस्तु । लेखक वाचयो । यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितमया । यदि श्रुद्धमंश्रुद्धं वा मम दोषो न दीयते ।।१।। श्रीरस्तु ।। श्रीकल्याण ।। ।। संबत् १६६७ वर्षे शाके १५३२ प्रवर्त्तमाने आसातु मासे शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ ।।

महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री कल्याणमल्लजी तत्पुत्र राज्य श्री भाणजी तत्पुत्र राज्य श्री भगवांनदासजी पठनार्थं । श्रेय कल्याणं । श्री श्रुभं भवतु ।।

१४४४. १२५०३ भक्तरतन

( महाजनी लिपि में )

आरम्भ :- ।। श्री गणेशायन्मः ।।

राग-अरज भावन

तुम सायब हु दास मैरै रांमजी ।
तुमही करो नीरधार सुणो करतारजी ।।
पांनी सु पैदा कीयो मेरा रांमजी ।
नख सख सुज बनाय सुणो करतारजी ।।
गरभ माय रच्या करी जठर अगन मु बचाय ।
सुणो करतार जु ।।
जनम त(तै)ही पै पाईया मैरै रांमजी ।
दसन कीनै अनपांन सुणो कीरतारजी ।।
लगी जगत की बाल मैरै रांमजी ।
बाहर आके बीसरया मैरै रांमजी ।।

कर्त्तानाम जैदासी जैदास तैहारी । गुर मांनदास बलीहारी ।
गुर अवगत सब गत धरै । गुर आप तरै पर तारै ।।

गुरु-महिमा गुर दयावंत उपगारी । समज्याबत नर अरु नारी ।।
गुर रांम भगत करवावै । गुर मारण आंन चुडावै ।।
गुरां ग्यांन भांण दरसावै । गुर तमर अग्यांन नसावै ।।
गुर अै दांन कै करता । गुर दुख दालीदर हरता ।।
गुर पारब्रम परमैसर । गुर सरब माय सरवैसुर ।।
गुर अधम उधार कहावै । भव जल सु पार लगावैं ।।

अरल

सत गुर अेह सुभाव, करै भो पार सु ।
ग्यांन नाव बैठाय, बचावै धार सु ।।
मैटै करम कलैस, रखै जम मार सु ।
हरीयां अैसै दीन, दयाल मीलावै सार सु ।।२६।।

दुहा

फीता (गीता) मै ईच्या भई, अव्यक्त कैसोय ।
अव्यक्त अभास मील, मह तत्व उपजाय ।।२७।।
x x x x ।
अहं तत्व ऊंकार है, भयै जु तीर गुण ताये ।।२८।।

त्रीगुण तै तीर दैव जो, ब्रमा त्रीसन महैस ।
तीन लोक चवदै भवन, कीनै नाना भैस ।।२९।।

च्यार खांन कै जीव सब, चोरासी लख जात ।
जनम मरन डोरी लगी, जोन जोन भुगतात ।।३०।।

ब्रमा जो उतपत करै, वीष्नु करै प्रतपाल ।
संकर करै सीघारही, येह माया कौ ख्याल ।।३१।।

अन्त :- चोपई

सतगुर मांनदास बलीहारी । तुमरी सरन लह्यो सुख सारी ।।
जै जै सतगुर परम उदार । दरसायो मोही ब्रह्म अपार ।।२२५।।

कहां लग असुत करु तुमारी । गुन गंभीर मेहमा अत भारी ।।
मै बड मुरख कछु न जांनु । अत लघु बुध जो कहा बखांनु ।।२२६।।

कवी की रीत कछु मै नही जांनु । घट वड अछ नाही पीचांनु ।।
भक्तरतन की पोथी कीनी । सो सब कृपा तुमारी चीनी ।।२२७।।

जब तुमरै मन भयो हुलासा । मम हिरदै मै करचो प्रकासा ।।
नीतो कतीयक बुध हमारी । बानी सीक्षा जौ करत उचारी ।।२२८।।

दोहा

कवीजन सु अेह बीनती, करौ पुत्रवत नेह ।
भुल चुक जो है कछु नीज कर सुध कर लैह ।।२२९।।

छप्पै

ग्रन्थ-माहात्म्य भक्तरतन सुख सार, सबन के सुख की दाता ।
पढै सुनै चीत लाय, सो होय सबन मै ग्याता ।।
उपजै प्रेम प्रकास, रहै नीज आनंद राता ।
पावै परम हुलास, कृष्न कै ध्यांन समाता ।।
होय लाल मिल लाल सुं, रहै न दूजी आसा ।
फीर नही आवै जगत मै, करै अमरपुर वासा ।।२३०।।

संकट पीडा सब नसै, आवा गवन जो खोय ।
पढै सुनै जो प्रीत सो, धन संपत सुख होय ।।२३१।।

रचनाकाल जैठ महीनो सुकलपछ, मंगलवार सु वार ।
अेकादसी हरी बरत कुं, भक्त रतन नीरधार ।।२३२।।

अष्टादस सेतीस को, संमत सुध बीचार ।
सतगुर कै परतापसो, वांनी करी उचार ।।२३३।।

पुष्पिका :– इती श्री भक्तरतन पोथी जैदास कृत संपुरण । सं० १९३२ का मती मा० वद १२ दीतवार नै संपुरन करी । वांचै जीनै रांम रांम छै ।

**१४५६. १०८७२ (२) * भक्तमाल**

प्रारम्भ :– । श्रीरांमजी ।। अथ श्री श्री पूरणदासजी म्हाराज की भक्तमाल लिखंते । स्तूत्त (स्तुति)

---

* इससे पूर्व रामसनेही सम्प्रदाय के सिंहथल खेड़ापा पीठ के पट्टधर तथा श्री पूरणदासजी के गुरु श्री दयालदास कृत 'भक्तमाल' है ।

साखी

निमस्कार हरि गुरु जनां, आद अंत मध ताम ।
तिनही कूं नित करत हैं. पूरणदास प्रणांम ।।१।।

प्रणम करूं कर जोर कै, रांमदास गुरु द्याल ।
सब संता सिर न्वाय हों, परब्रह्म प्रतिपाल ।।२।।

रिछक रांम दयाल हो, अवर न जग मैं कोय ।
औठंभण परमात्मा, सब कर्त्ता सिद्ध होय ।।३।।

अपनो विरद विचारजो, दया सिंधु माहाराज ।
कठिन कलू यह काल मैं, मेरी तुमकों लाज ।।४।।

अरथ भेद बांणी वचन, जोड जुगत नहि काय ।
सिसु बांणी ज्यूं त्यूं कहै, नीकै समझै मांहि ।।५।।

कठिन कली ओछी अवधि, होय विघन नहि पार ।
पिता धरम प्रति पाल कर, लीजौ आप सुधार ।।६।।

चौपई

विष्णु ब्रह्मा सिव आदहु कहियै । पोषण भरण जीव सोइ लहियै ।।
वेद व्यास बगता सोइ नायक । सुख दे सर्व सिरोमण लायक ।।७।।

सेसनाग की आद न अंता । कुमेर बारद भक्ती पंथा ।।
सिनकादिक च्यारूं अवतारं । आदि शृष्टि में आर न पारं ।।८।।

X X X X X

गुरु-परंपरा अमीरांम पुन रुखियां बाई । और अनत जन सरणै आई ।।
जन हरदेव पाट ता आजै । मोतीरांम विमल सुख जाजै ।।४८।।

ता गादी रुघनाथ विराजे । ग्यांन ध्यांन जप तप सत साजै ।।
एक जीव मैहैमा काहा गावै । हरि संतन कौ पार न पावै ।।४९।।

जन हरिरांम परमपद पूगा । रांमदास सिख रवि ज्यूं ऊगा ।।
तम अग्यांन अघ भागे दूरा । विकसे जल सरोज उद सूरा ।।५०।।

तिन की साखा अति विस्तारूं । गुर दयाल पद सिर पर धारूं ।।
गादी दास दयाल विराजै । अनभव गिरा मेघ ज्यूं गाजै ।।५१।।
मेरा सांम सिरोमण सौई । डूबत तार लियौ भव मोई ।।
पंच मात ज्यूं है वड भागी । माता सुंदर यूं अणरागी ।।५२।।

अन्त :- चौपई

पीथारांम सिख कहुं भाई। कनीरांम दूदा सुखदाई ।।
कोठारी गलतांन कहीजै। पीथल वहु परभाव लहीजै ।।१०३।।

परसरांम सिख सेवगरांमहि। निरभै परमहंस सिध कांमहि ।।
परिब्रह्म अंस प्रगट मुख नूरा। सेवगरांम परमहंस पूरा ।।१०४।।

मेघोदास सिख सिवरांमा। त्याग वैराग परमहंस नामा ।।
लालदास पट्टत सिख भारी। ध्यांनदास जन धीरज धारी ।।१०५।।

मनीरांम परसाद प्रभावा। ऋपारांम पाद्यारांम सुभावा ।।
जनसोभा सिख सालूरांमहि। कुल अभिमांन त्याग सुख धांमहि ।।१०६।।

निरमलदास कहूं सिख सोई। वचन रांम उर सीतल सोई ।।
बुधारांम धीरज परतापा। हेमदास गुंण अधिक मिलापा ।।१०७।।

जन कालू सरणै विश्रांमा। प्रागदास अरु कासीरांमा ।।
कुशलदास अरु नरसिंघदासा। जगत जंजाल छोड सब आसा ।।१०८।।

मनीरांम मालवै अस्थांना। उरजन उदैरांम सिख जाना ।।
राघोदास कहूं सिख सोई। चैनरांम ईम्रत भल जोई ।।१०९।।

सहजरांम के साधूरांमा। रूपा विजैरांम सू लांमा ।।
हरीदास सिख कहों सुइाई। लछीरांम कुसला गुरु भाई ।।११०।।

गांव समदड़ी प्रेमदास जन। ता सिख लाडूरांम ··· जन ।।
ग्यानदास सिख दास कल्यांना। दोलत को सिख धीरम मांना ।।१११।।

दास संग्राम सिख रांमहुचंद। दयारांम पायो पर्मानंद ।।
गोबिंद सिख चैन माहारांमा। जग जल मंज कंवल ज्यूं धांमा ।।११२।।

वखतरांम सिख तुलसीदासा। चतुरा आतमरांम विलासा ।।
वस्तरांम सिख भाखूं तेही। तुरसीदास कल्यांण वदेही ।।११३।।

साखा अनत अनत है भारी। सब वर्णो कहा बुध हमारी ।।
मोंकूं दोस न दीजो कोई। बाल विलास कियौ है सोई ।।११४ ।।

मेरा सतगुर कहियै सम्रत। म्रतग जांन पिवायो इम्रत ।।
कहा अग्रज कहा भाग हमारो। पद रज पनी उठावण हारो।। १५१।।

दोहा

सतगुर द्याल प्रताप तैं, ग्रन्थ उचारन कीन ।
मेरै मन उपज्यो हरख, मो तुछ बुध मत हीन ।।११६।।

मैं तो कछु समझूं नहीं, देस काल अनुसार ।
घट वद अक्षर मातरा, कविजन लहो सुधार ।।११७।।

क० (कवित्त)

रांमदास गुरु द्याल, सदा उर ध्यांन हमारै ।
तीन काल के संत रांम निज मित्र उचारैं ।।
पेमी नेमी सुवद, पर्महंस बृकत वदेही ।
परवृतीं निर्वृत, भजै. नित रांमसनेई ।।
के दीर्घ के अनुज लघु, सार सार गुण लीजीयै ।
पूर्णदास प्रणाम नित, मम उर वास वसीजीयै ।।११८।।

इति भक्तमाल सम्पूर्ण ।

अतिरिक्त सवैया

ता दिन तैं यह देह धरी, दिन ही दिन पाप कमावन हारो ।
नीच क्रिया बुध हीन मलीन, कुचाल अचार विचारवु हारो ।।
औगुन कोनहि ओर कहां लग, ऐक भरोसो है आस तुमारो ।
हो हरिया विनती इतनी, मुख सूं कहौ पूर्णदास हमारो ।।

**१४६१. १२०२० भगवद्गीता सभाषा टीका**

प्रारम्भ :– ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ श्री भगवद्गीता भाषा टीका दोहा सहित आनंदराम कृत परमानंद प्रबोधो लिख्यते ।।

दोहा

हरि गोरीश गणेश गुरु, प्रनवौं सीस निवाई ।
गीता भाषारथ करौ, दोहा सहित बनाय ।।१।।

सुथिर राज विक्रम नगर, नृपति नृपति अनूप ।
थिर थाप्यो परवांन इह, राज सभा को रूप ।।२।।

कर्त्तानाम नाजर आनंदराम के, इह उपज्यो चित चाउ ।
गीता की टीका करी, सुनि श्रीधर के भाउ ।।३।।

आनंदराम अनूप को, नाजर अति परवीन ।
सुघर सुधीर विचार कै, जन हित करी नवीन ।।४।।

आपहि आनंदराम यह, टीका रची वनाई ।
निस दिन हरि हिरदे रहै, गिरधर कृष्ण सहाई ।।५।।

गीता ग्यांन गंभीर लखि, रचि जु आनंदराम ।
कृष्ण चरन चित लगि रह्यो, मन मै अति आराम ।।६।।

आनंद मन उछव भयो, हरि गीता अविरेखि ।
दोहारथि भाषा लिखि, वानी व्यास विसेखि ।।७।।

जो इह गीता समझि कैं, हिरदै धारै सौई ।
व्रह्म मगन निस दिन रहै, कर्म लियै नहि कोई ।।८।।

। इति आदि दोहा संपूर्ण ।। अथ न्यास । . . .

अन्त :– दोहा

जोगेश्वर श्री कृष्णजु, अर्जुन हैं या ठौर ।
तहां विजय अरु नित हैं, राज संपदा और ।।७८।।

कृष्ण कृपा तें होत हैं, भक्त युक्त कौ ज्ञान ।
तातें वंधन तें छुटै, यह गीतारथ जांन ।।१।।

इहिं अठारमैं ध्याय मैं, कह्यौ मोक्ष संन्यास ।
अर्जुन सौं श्रीकृष्णजु, जांनि जांनि अपनौ दास ।।२।।

कह्यौ मोक्ष संन्यास जो, कृष्ण कवल दल स्यांम ।
उर मैं धरि गिरधरन कौं, वरन्यौ आनंदरांम ।।३।।

माहात्म्य यह गीता अद्भुत परम, श्री मुख कीयौ वखांन ।
वार वार निरधार किं, यह परा भक्त कौ ज्ञांन ।।४।।

भक्ति वस्य श्री कृष्ण जु, यहै करी निरधार ।
भक्ति करै बहु भांति सौं, यहै वेद को सार ।।५।।

भगवद्गीता कोऊ पढै, और सुनै चित लाइ।
पावै भक्ति अखंडि सौं, श्री हरि सदा सहाइ ।।६।।

गीता प्रति दिन उच्चरै, सद सुच्छर्यंग मांहि।
मनसा वाचा कर्मना, तिहि सम कौऊ नांहि ।।७।।

जो कोऊ चाहत भव तिरचौं, कृष्ण चरण कौ पास।
और सकल श्रम छाडि कै, गीता करै अभ्यास ।।८।।

लोक कृतार्थ कै लीये, सब ज्ञांन कौं सोधि।
आनंदरांम ही यह करचौ, परमानंद प्रबोध ।।९।।

परमानंद प्रबोध यह, कीनौ आनंदरांम।
पढै गुनै याकौं सुनै, सो पावै प्रभु धाम ।।१०।।

नारायण निज नाम कौं, धरचौं देख कै ध्यांन।
अपनी आनंदरांम कौं, भक्ति दइ भगवांन ।।११।।

जव लगि रवि ससि मेरु महि, अगनि उदधि थिर होइ।
परमानद प्रबोध यह, तव लगि जगि मैं जोइ ।।१२।।
तब – – – – – –

पुष्पिका:– (इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु व्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे) श्री कृष्णार्जुन संवादे भाषा टीकायां (दोहा) आनंदरांम कृत परमानंद प्रबोधे मोक्ष संन्यास नाम अष्टादशोऽध्याय: ।।१८।। इति श्री भाषा संपूर्ण ।।

संवत् १९०९ रा मिति भाद्रवा दुतिय क . . . ७ मि सोम वाशरे, लिखितं गुसांईजी श्री मांनपुरीजी . . . . देवपुरी पठनार्थं गुसांईजी श्री शाक्षात् आनंदपुरी . . . . . सिष्य चिरंजीवो सूर्यपुरीजी जोधपुर श्री चैन-पुरीजी . . . मध्ये, श्री राज राजेश्वर माहाराजाजी श्री तखतसिंघ . . . . प्रताप: । दोहा

जब लग मेरु अडग है, जब लग शशि . . . . ।
तब लग या रहज्यौ सदा, पोथी गुण भरपूर ।।१।।

या दृशं ता दृशं लिखितं मया
यदि श्रुद्धमश्रुद्धं वा मम दोसो न . . . . .

**१४७७. १०६३२ (१) भगवानदासजी की वाणी**

प्रारम्भ :- ग्रथ स्वामीजी श्री भगवानदासजी की वांणी लिख्यते ।
प्रथम स्तूति का किवत लिख्यते ।

ब्रह्मस्तूति

नमो ग्रलपता रांम, गुरु गुणवंता पूरा ।
नमो संत ग्रर महंत, कीऐ जिन तिरगुण चूरा ।।
मेरै मुखि ग्रर सीस, हीरदा मै ऐही बिराजै ।
इनकौ मोहि प्रताप, बिघन सब दूरा भाजै ।।
गरू संत ग्रर रांम कू, तन मन ग्ररपू दोइ ।
भगवानदास की बंदना, बारूंबार ही होइ ।।१।। *

x x x x

ग्रथ साखी, प्रथम गुरदेव कौ ग्रंग लिख्यते ।

सतूति (स्तुति)

रमता रांम संत गुर, मो उर सीस निधांन ।
ताकूं बंदन प्रेम जुत, करै दास भगवांन ।।१।।

ग्रंग

गुरु-नाम सतगुर मेरा सूरिवा, रांमचरण दरबेस ।
भगवांनदास परि महरि करि, जिन कीया ग्यांन परवेस ।।२।।

भगवांनदास कै सिर सही, गुरु रांमचरण का हाथ ।
दरसण कीयौ रांमं को, नर तन भयौ सुनाथ ।।३।।

भजन कीयौ भगवांनदास, त्रिमल हुई देह ।
गुर रांमचरण प्रताप सूं, मिटि गया भरम सनेह ।।४।।

सतगुर पूरण ब्रह्म है, रांमचरण पद लीन ।
भगवांनदास से पतित कूं, ग्राप उधारे दीन ।।५।।

---

* ब्रह्मस्तुति के चार कवित्तों के बाद गुरुदेव-स्तुति का एक ग्रौर कवित्त है ।

अन्त :- अथ वांणी की संख्या :—स्तुति का किवत ५, साखी १०७४, सोरठा २, चौपई २। अंग ३०, अरेल ११३। अंग १३, सवईया ४३। झूलणा ११, अंग ४। किवत ५३, अंग १४। कूडल्यां ३५, अंग १०। मनहर २७०, अंग ४०। रेखता १। पद ३७, राग १६। दुहा-साखी १०७४, सोरठा ३, चौपई २, अरिल ११३, सवईया ४३ होइ। झूलणा ११, किवत ५३ र कूंडल्या ३५, मनहर २७०, रेखता १, पद ३७, सोरठा १।

ऐह बांणी सब सार है, भाखी गुर भगवांन।
रैंनि दिवस मम उरि रहो, सतगुरजी को ध्यांन ।।२।।

भाखी वांणी सार ऐह, सतगुरजी भगवांन।
रैंनि दिवस मम उरि रहौ, उनके पद को ध्यांन ।।३।।

भाखी बांणी सार ऐह, भगवानदासजी संत।
संकलन-कर्त्ता कासीरांम कर जोडि कैं, उनकी सरणि रहंत ।।४।।

धरि उर मांहि प्रीति जूं, अंग बनांया ऐह।
कासीरांम तुम सरणि है, मुख सूं भाखूं केह ।।५।।

सं. स्थान भीलाडै मधि जांणीऐ, रांमदुवारो धांम।
अंग बणाया तास मधि, मुख सूं उचरत रांम ।।६।।

कासीरांम बंदन करै, भगवांन गरू सिर नाइ।
सब साधा सूं अरज ऐह, भूलि चूक बकसाइ ।।७।।

सं. काल संमत सो ऐ जांणीऐ, अठारा सै अडतीस।
सांवण सुधि चत्रदसी, बार-ज रवि वनींस ।।८।।

सोरठा

वेद तत्व रस चन्द्र जु, सरव ऐ जांणि। (१६५४)
सुणत ही सांसो जात जु, भाखे गुर भगवांन।
नमो नमो निति ताज जू – – –।

पुष्पिका :- इती स्वांमीजी श्री भगवांनदासजी की वांणी सरब संपूरण। *

* गुटके में इसके बाद रांमचरणजी कृत 'गाबा का पद' शीर्षक से १७ रागों में निबद्ध ६२ पद हैं। गुटका जोधपुर में महामंदिर नामक स्थान पर संवत् १९२८ में लिखा गया है।

१४६२. १०६२६(६) भर्तृहरि शतक - व्रज भाषा
( नीतिमंजरी भाषा )

प्रारम्भ :- ।। अथ नीति मंजरी लिखते ।।

सोरठा

अमल प्रीति उर आंनि, दामोदर पद कमल प्रति ।
भावन भर्नहिं सु बांनि, नीति सतक भाषा सु भलि ।।१।।

सबैया

जिनकौं हम प्रांन प्रिया कही, चिंतत भिन्न सदा तिनकौ चिते है ।
जन औरन तै वहें प्रीति करै, जनसो पुनि औरहु तें रत है ।।
अनुरागनता तिय कै तिन सौं, हम कौं प्रिय जांनि चहैवित है ।
धिक है तिय कौं जन कौं रु मन कौं, याहि कौ मोहि कौ सो नित है ।।२।।

अन्त:- जग सब होत सरोज विन, विधि वस तै केहि काल ।
कुक्कुट जिम कचनि कर, पर महि नहि खनत मराल ।।११५।।

दामोदर सुभ दृष्टि तें, मुख मंडल सुख मूल ।
भावन पावन नीति सत, किये निज मति अनुकूल ।।११६।।

पुष्पिका :- इति श्री भरतरीसत भाषा भावनादासेन बिरचिता नीति मंजरी समाप्ता ।

प्रारम्भ :- ।। श्री: अथ सृंगार मंजरी लिख्यते ।।

दोहा

विदुष बिराग बढाविनी, रसिकन कौं रस रूप ।
भावन सत सृंगार की, प्राकृत रचहि अनूप ।।१।।

जेहि बस विधि हरि हर करहि, मृग लोचनि गृह काम ।
बचन अगोचर चरित तेहि, रति पति होहु प्रनाम ।।२।।

कवित्त

स्वेत चारु चूडन सी जिनतै दिपाय मान,
कला कलानाथ की ललाट कमनीय मै ।

जरत पतंग काम लीला तें परत तामैं,
श्रेय सुभ्र वर्तिका सु अग्र रमनीय मै ।।
करत्त निकंदन सो मोह तम छंदन कौं,
पूरन प्रकास मांन अंतर स्वकीय मै ।
बार बार ताकी नित बिजय विसेष होहु,
ग्यांन के प्रदीप हर जोगिन के हीय मै ।।३।।

अन्त :– सवैया

अलकै रलकै छवि खांन सु आंनन, चुंबन तें सिसिकार धरांही ।
घन पीन पयोधर कंचुकि हीन, उरस्थल मै त्तिनकौं पुलकांही ।।
उरु कंप उपावतु हैं सु छली, छलहूतें नितंब दुकूल छिनांही ।
त्तिय के गन मै बिटहू-से चरित्रन. कांकरि सैं सिर वायु बहांही ।।१०२।।

इति षट रितु बरननं ।

दोहा

केहि की राग बिराग मै, नीति करत कोउ नेह ।
कौउ रत सत सृंगार मै, रति रुचि भेद करेह ।।१०३।।

जदपि न रुचि रमनीय तोउ, गहत नही गुनवंत ।
सुखद सुधाकर सब्र हितेहि, पंकज देख दहंत ।।१०४।।

पुष्पिका :– इति श्री भरतरी सत भाषा भावनादासेन बिरचिता सृंगार मंजरी समाप्त ।

प्रारम्भ :– **।। अथ बैराग्य मंजरी लिखते ।।**

**दोहा**

गुरु हरि हर गनपति गिरा, बंदि सहित अनुराग ।
भावन पावन करन हित, बरनूं सतक बिराग ।।१।।

**कवित्त**

**दिसतैं दिसतैं अलिप्त देश काल हूतैं,**
**अमल अनंत ईस अज अबिकारी है ।**

करता सब विस्त्र कौ विभरता हरता पेखियत,
आप अबिनासी माया पासी बिसतारी है ।।
अनुभो पिछांन ग्यान खांन चिदानंद जांन,
तेज को निधाँन सांत सुध सुखकारी है ।
सरब सक्तिमान सरब ईस्वर कला निधांन,
भावन भनत ताकौं बंदन हमारी है ।।२।।

दोहा

बुद्धिवंत मछर ग्रसे, धनी ग्रसे अभिमांन ।
अपर ग्रसे अग्यान तैं, हिय जीरन भरा ग्यान ।।३।।

अन्त :- दोहा

ग्यांन अनल कौं अरनि सम, मुनि-जन जीवन मूरि ।
वरनी सतक विराग की, भावन भाषा भूरि ।।१११।।

रचनास्थान मरुधर नगर सु जोधपुर, बसिबौ सदा बखांन ।
रांमसनेही साधु हम, खैरापा गुरु थांन ।।११२।।

कवित्त

स्वछ रमनीय हिय अछर अनूप जाके,
नीति राग बिमल विराग त्याग तैं भरी ।
जरी गुन मानक तैं वांनक विसेख बनी,
सिंधु भव भूरि ताके तरिबैं कौं है तरी ।।
रसिक रिझाविनी बिबेक की बढाविनी है,
जेते बुधिवंत ताके जीवन की है जरी ।
रचनाकाल अंक नैन अंक इंदु मास सुचि राका कवि,
१९२९ भाषा मैं बखांनी टीका भावन भरतरी ।।११३।।

पुष्पिका :- इति श्री भरतरीसत भाषा भावनादासेन बिरचितायां बैराग मंजरी समाप्त ।

गुटके की पुष्पिका :- संत सीरोमणी हैं सही प्रगट्या कलि माह, प्रगट्या कलि माहि प्रगट्या कलिजुग मै सोई, हमसे जीव निसर्तांकै गये उस देस जहाँ

संतन का बासा। रांम नाम ल्यौ लाइकै, भये या जग सूं ऊदास। प्रगट रांम महाराज तीसैं तन त्याग कैं मीलें रांम कै मांह, ३ कातीग बदी तीज तीसरै पहर तन परहरी, तीन के सीख जांन चेनरांम म्हाराज। तास दास पोथी लिखी दयारांम है नाम, गढ आगरै मध्य ठंडी सड़क नाई कै मंडी समत ३६ (१८३६)

१५१६. १०८४६ (१०) भागवत भाषा पद्यानुवाद

प्रारम्भ :– श्री रांमजी। श्री गुरुभ्योनमः। श्री गणेशायनमः।
अथ द्वितीयोस्कंद लिख्यते।

सोरठा

जै जै जै जदुनाथ, गुन आगर सागर कृपा।
नटनागर मुद गाथ, कीजै मोहि सनाथ प्रभु ॥१॥

दुहा

जै वानी जै गजवदन, जै हरि गुरु पद कंज।
जै सुक जै श्री व्यास मुनि, जै पितु पद मन रंज ॥१॥

विरचहुं आनँद अंबु निधि, दूजो यह स्कंधु।
विघन रहित पुरन करौ, हे हरि दाया सिंधु ॥२॥

सोरठा

सुनि कुरुपति कै वैन, व्यास सुवन शुकदेव मुनि।
लह्यो परम चित चैन, तेहि सराहि वोले वचन ॥३॥

श्री शुक उवाच : चौपाई

नरपति उत्तमं प्रष्न तुम्हारो। लोकन मंगल प्रकटन हारो ॥१॥
ज्ञानिन कर संवत सब भाँती। कहत मोरि मति अति अधिकाती ॥२॥
पूछचौ जो तुम यह नृप नायक। सुनिवे महँ का सुनवे लायक ॥२॥
जे नहिँ आतम तत्व को जानै। सदा ग्रहन विषयन सुख सानै ॥४॥
तिनके सुनन जोग दुख कारन। हैँ नरेंद्र जग कथा हजारन ॥५॥
दिन मे धन हित वह थल धावैँ। निज कुटंब पालन मन लावैँ ॥६॥

निद्रा रति करि रैन गमावैं । यहि विधि सिगरी उमर वितावैं ।।७।।
असत देहँ तिय सुत दल काहीं । नसत निरखि निरखत सठ नाही ।।८।।

दोहा

तातै भारत जो चहै, यह जग मै कल्यान ।
नाम सुजस वपु कृष्ण के, कहै सुनै धरि ध्यान ।।१।।

अन्तः–(पत्राङ्क २६ वां) * चौपई

जब नृप पाप रह्यौ कछु बाकीं । लहत कु-जोनि विबुध वसुधा की ।।१।।
तैसहिँ पुन्य रही कछु बाची । तब सु-जोनि पावत सुख राची ।।२।।
जेहि विधि होत न पुनि अवतारा । सो प्रकार मै प्रथम उचारा ।।३।।
यह ब्रह्मांड माह मति मांना । लोके चतुरदस कहै पुरांना ।।४।।
थूल रूप नारायण केरो । यह सिगरो मै कियो निवेरो ।।५।।
हरि माया गुंन मय यह जांनो । प्रथमहि सुक्षम रूप वखानौ ।।६।।
पढै सुनै अरु जनन सुनावै । बैठिय कांत आपही गावै ।।७।।
सो जदुपति सरूप कहं जाने । जाहि उपनिषद करत वखानै ।।८।।
जदुपति चरन होइ जेहि प्रीती । जांनहिँ सकल भक्ति की रीती ।।९।।

दुहा

हरि वपु सूक्षम थूल कहँ ध्याइ ।
पुनि सुक्षम मे क्रमहि क्रम, निज मन देहि लगाइ ।।१।।

कवित्त

सातहूँ दीप नौ खंड मही, सर सिंधु औसैल हू सात पताला ।
और दिसान के भाग सबै, नरकौ स्वरगौ औ नक्षत्रन माला ।।
कर्त्तानाम श्रीरघुराज हरि को अहै, यह थूल सरूप गुंनौ महिपाला ।
जीवन धाम सबै वरन्यौ, यहि को पति येक है नंद को लाला ।।१।।

---

* पञ्चम स्कन्ध की पुष्पिका के बाद में किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अगले पत्र पर ७ वां स्कन्ध लिखना प्रारम्भ किया गया है । इस प्रकार से २९+२५=५४ पत्रों में यह कृति उपलब्ध है ।

दुहा

१०  ९  १

रचनाकाल दिसि निधि ससि संवत सुभग, पौष कृष्ण बुधवार ।

१९१० त्रियोदसी तिथि कौं भयौ, ............................ ।।

पुष्पिका :— इति श्री महाराजाधिराज श्री महाराज वांधवेस विश्वनाथसिंहात्मज सिधि श्री महाराजा वहादुर श्री कृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकार श्री रघुराजसिहजू देव कृते आनन्दाम्बुनिधो पंचम स्कंधे षट्विंसस्तरंग । सरब श्लोक मेध्या २०० घटत बढत गुनो माफ ।

प्रारम्भ :— श्री रामाय नमः *

शुकोवाच

नरहरि अरु प्रहलाद की, सुन कै कथा नरेस ।
सभा मध्य मुनि सो कियो, पुनि कै प्रश्न सुवेस ।।१।।

युधिष्ठिर उवाच चौपाई

हे मुनीस दायक सव सर्मा । सुनन चहौं वरनाश्रम धर्मा ।।१।।
जाहि किये हरि कहै जग जानत । कवहु गर्व नहि निज उर आनत ।।२।।
तुम हो नारद व्रह्म कुमारे । तप बल सब पुत्रन मे प्यारे ।।३।।
तुम समान जो श्रीपति दासे । सांत साधु करुनाकर खासे ।।४।।
तिन के दरस पाइ सुख धामा । पूरन होत आसुमन कामा ।।५।।
धर्म भूप के सुनि अस वैंना । नारद कहत भये भरि चैना ।।६।।

अन्त :— दोहा

धन्य धन्य हो धन्य तुम, पाचहु पांडु कुमार ।
जिनकै संग विचरत रहैं, नित प्रति नंद कुमार ।।

चौपाई

कमला कैलासी करतारा । कहि न सकैं जैंहि रूप अपारा ।।१।।
करिकैं भक्ति करै पद वंदन । तव प्रसन्न होवै जदुनंदन ।।२।।

---

* भागवत भाषा पद्यानुवाद का छठा स्कन्ध एवं ७ वें की दश तरंग अप्राप्त । सातवें स्कन्ध की ११ वीं से १५ वीं तरंग का आद्यन्त यहाँ उद्धृत किया जा रहा है । इसका रचना काल संवत् १९०९ दिया गया है ।

श्री शुक उवाच

सुनि नारद के वचन सुहाये। धर्म भूप अति आनंद पाये ।।३।।
नारद को पूजन नृप कीन्हो। चरन पखार सलिल सिर लीन्हो ।।४।।
पुनि जदुपति को पूजन करिकै। विहवल भये प्रेम उर भरि कैं ।।५।।
धर्म-भूप सौ पूजन पाई। नारद तिनसो मागि विदाई ।।६।।
जदुनंदन को करि परनामा। मुनि मोदित गमने निज धामा ।।७।।
परब्रह्म सुनि कृष्ण हि काहीं। विसमित से भूपति मन माही ।।८।।

दोहा

बंस पृथक दाक्षाइनी, मै वरन्यौ कुरु राय।
देव असुर मनु जाद गन, यहि मे प्रगटत जाय ।।१।।
र. का. निधि नभ निधि ससि संवतै, भाद्र मास रविवार।
१९०९ सतयो यह स्कंद को, सित छनि भो अवतार ।।२।।

पुष्पिका :— इति श्री मद्भागवते महापुराण सप्तस्कंधे पंचदसस्तरंग ।।१५।।
श्री राम ।। श्री राम ।। श्री राम ।।

१५२४. १२३५० भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका *

प्रारम्भ :— श्री गणेशाय नमः। अथ भाषा भारथ सारचन्द्रिका लिख्यते। तहा प्रथम मंगलाचर्णः

कवित्त

सनमुख होत जाके बिघन बिमुख होत,
नाम ही के लेत सब काम सुधरंहत है।
रिद्धि सिद्ध दोऊ जाकै रहत सदा है,
साथि फरसा हथ्यार हाथ दुख कौं रहत हैं ।।
गवरि के नंद सदा आनंद के कंद,
सुनौं देवन के देव यह अरज करत हैं।

* प्रस्तुत प्रति में आदि पर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व तथा उद्योग पर्व का प्रथम अध्याय एवं द्वितीय अध्याय का एक पृष्ठ मात्र है। अतः ग्रन्थ का प्रारम्भिक अंश इस प्रति से एवं अंत अन्य प्रति से उद्धृत किया जा रहा है।

दीजिये सुबुधि सुधि लीजिये सुमुख मेरी,
करुणानिधांन ध्यांन आपकौ धरत हैं ॥१॥

दोहा

गणपति चरण सरोज कौ, ध्यान हिये मधि धारि ।
बरनौं भारथ सार की, भाषा मति अनुसारि ॥२॥

अथ बंसावली

दोहा

रघुकुल सूरज बंस मै, गोगावत विख्यात ।
एक एक तै सब अधिक, सूर वीर सरसात ॥३॥

छपै

कूंत्तल भयौ हमीर तासु सुत नाहर जानौं ।
डूंगरसी ह्वो राज तनय ता मांनिक मांनौं ॥
कुंभो पांचौ जांनि तासु गोगो बीठल भनि ।
ताकौ केसरिस्यंघ सुवन जाकौ सुजान गनि ॥
हुव पेमस्यंघ ताकौं तनय, जिह दिल्लीपति राव किय ।
रणधीर बीर संभू सुदै, दुजन दांन हरि भक्ति लिय ॥४॥

यथा सवैया

सो महि सेस धरैं निसि द्योस प्रथ्वी मथुनै निज नाम की कीनी ।
सो हरिनाक्षहरी हरि रूप बराह कै मारी तत्तक्षन छीनी ॥
सो पुनि बावन ह्वै बलि हार पै जाय अधीन ह्वै मागि कै लीनी ।
सो महि राव श्री संभु सुजान गुनी द्रुत्त दीन दान कैं दीनी ॥१॥

यथा कवित्त

दपट पवन पूत झपट खगैस कै कैसी
चित्त तैं चलाकी मैं सरस चलि जात हे ।
फेरत फुहारे की फुही पै थहराइ रहै
खुरीन यैक पै करत सरसात है ॥
गुन गहैं चंगु नभ नचत पल चारु
मढे जरबाफन सौं सब सुभ गात है ।

ग्रैसे बाजी देत राव गोगावत रात्र संभु,
भांन मघवांन देखि देखि ललचात है ।।५।।

दोहा

चांदस्यंघ ताको तनय, सूर बीर रणधीर ।
दाता ग्याता है महा, कवि कोविद को भीर ।।

कवित

ग्राये जोम जी मैं लियैं दक्षिनी फिरंगी,
जंगी संगी सैंद मुगल समूह सरसायो है ।
तिन्है देखि केते कूर कायर कचाये रहे,
सूर बीर तेवे महा मोद मन छायो है ।।
जहां हाका हाकी मारि खगान खपाये,
तहां तुपक तमंचा तोप तीरौं झर लायौ है ।
रंग राव संभू के सपूत चांदस्यंघ,
तेरे दांन कीरिवांन कौं जहांन जस गायो है ।।७।।

दोहा

सबही कौं वर्नन कियै, होत ग्रन्थ विस्तार ।
ताते इनके नाम ही, कहे समति ग्रनुसार ।।८।।
रामायण की बचनिका, करी संभु श्री राव ।
त्यौंही भारथसार की, चांदस्यंघ चित चाव ।।६।।
हुकम चैन कबि कौं कियो, ग्रैसी भाषा होइ ।
जाके बांचत सुनत्त ही, समझि जाय सब कोइ ।।१०।।

ग्रथ पर्वारंभ । ( ग्रादि पर्व प्रथमोऽध्याय )— कोईक समै के विषें कृष्णद्वैपायन मुनि कौरवन कौ राजा जनमेजय ताके देखिबे कौं हस्तनांपुर ग्रावत भये । जहां जनमेजय हू गंगा तीर बिराजमान हौ । तहां बेदव्यास महामुनि कौं ग्राये देखि राजा सन्मुख जाय चरणारबिंदन मैं सिर धरि प्रणाम करि पाद्याग्रर्घ ग्रासन देय पूजन करि बिनती करत भयौ । ग्राज मेरो जन्म सफल भयौ । मैं कृत कत्य भयौ । मेरौ राज्य भी धन्य भयौ । ग्रब ग्रापके पधारिवे कौं कारण जांणिवे की बांछा है सो ग्राग्या करियै । तब बेदव्यास राजा की राज-समृद्धि

देखी । तीन जोजन लौं बिसाल सभा हैं । तामैं तीन कोटि क्षत्रिय सर्व ही तरुण श्रूर शस्त्र-अस्त्र विद्या मैं निपुण । बस्त्र शस्त्र अलंकारन करि मंडित, तिन के बीच रत्न-सिंघासन पर राजा ग्रैंसो दीख्यो ज्यों देव सभा मध्य इंद्र सोहै । ताकी विभूति देखि कै बेदव्यास बोले । हे राजा जनमेजय तेरौ प्रभाव देखि हमारो मन बहौत प्रसन्न भयौं । या समय मैं तेरे तुल्य और राजा धर्मात्मा-धीर-बीर-दाता है ही नहीं । तातैं प्रजांन कौ पालन करौ । नीति मार्ग मैं चलौ ज्यौं तेरो प्रताप बधैगौ ।

१५२५. ,२५०७ भारतभाषा सारचन्द्रिका *

अन्त :– हे पुत्र या जीव कै संसार कहियै । जामण मरण तामै, मात-पिता हजारां भये है, ग्ररु होइ है, और आगैं हू होयेंगे । अरु तैसैं ही स्त्री पुत्र सैंकडा भये है, होय है, आगैं होइगे ।।१।।

ओर दिन दिन प्रति याकौ हर्ष के स्थांन हू हजारा है । अरु भय के स्थांन हू सैंकडा हैं । सो मूढ जीव कौं तौ व्यापै है । और पंडित कौ नहीं व्यापैं हैं ।।२।।

अरु धर्म कौ साधन क्यों नहीं करैं हैं । जा धर्म सौं अर्थ सिद्धि होय वाक्षित सिद्धि होय है । यह मै ऊचे हाथ करि ऊचे सुर सौं पुकारि कैं वहौं हौं । सो कोऊ हू नही सुणत है ।।३।।

ग्रौंर काम सौं भय सौं लोभ सौं कदाचित हू धर्म कौ त्याग नहीं करैं,ग्रसैं धर्म कौ त्याग करैं जीव जातो हू बचै तौहू धर्म छोडै नहीं । सो यह धर्म तौ नित्य है । और सुख दुख्य अनित्य हैं । और यह जीव है सोहू नित्य है । अरु या जीव को कारण माया है सो अनित्य है ।।४।।

तातैं हे पुत्र जो नर या भारत सावित्री कौं प्रात:काल उठि पढै है, ताकौ संपूर्ण भारत कौ फल होय है अरु अंत मै मोक्ष को जाय है ।।

---

* इसी कृति की अन्य प्रति ग्रन्थाङ्क १२५०७ की है । इस प्रति में भी आश्रमपर्व, मोशल पर्व एवं महाप्रस्थान पर्व ही हैं । अन्तिम पर्व के बाद की पुष्पिका में कृति का रचना काल दिया गया है अतः अन्तिमांश एवं पुष्पिका ग्रन्थाङ्क १२५०७ की दी जा रही है ।

छप्पै

रचनाकाल संवत सत दस अष्ट वर्ष पच्चासी ता पर ।
१८८५ माधव मास सुमास अलक जिग्गि तीज उजागर ।।
लगन महूरत जोग सु दिन गुर बार जानि जिय ।
भारत भाषा सार चन्द्रिका तव प्रकास किय ।।
सुत संभुराव श्री चाँदसिंघ, गोगावत कुल रबि उदित ।
ता हुकम पाय कबि चैन यह, करीं वचनिका जग बिदित ।।१।।

पुष्पिका :- इति श्री गोगावत कुलावतंस संभूस्यंघात्मज राव चांद-स्यंघाज्ञया कवि चैनराम कृत भारत सारचंद्रिका संपूर्ण ।

१५२६. १०८३८ भाषाभारत

प्रारम्भ :- ।। श्री गणेशाय नमः ।। श्री विष्णुभ्यो नमः ।। श्री सारदायै नमः ।। श्री सद्गुरुभ्यो नमः ।। अथ भाषाभारत संदू खेतसी रो कह्यो लिख्यते ।।

गाथा

गवरी पुत्र गणेसो, गज वदनाय अग्र तेतीसं ।
मल सुध सुतन महेसो, दे सदबुधि चित्र वा कैरव कुल ।।१।।

जोगणि जगत जनेवो, जग पाल गर विष्ण वाभंगा ।
दीजै उकति सदेवो, वाणि विथारी चित्रवा भारथ ।।२।।

गीरवरधर गोपालो, जग उधरण अनत अगमागम ।
दीजै उकति दयालो, चालो कहण तुझ चक्राधर ।।३।।

जग जेता जट धारो, जोगारंभ भाण जोगेसुर ।
मंम दे सुमति महेसो, भाखण वाणि पारथं भारथ ।।४।।

ब्रह्मा बुध विसालो, अविहित अखलि सिष्ट उपराजक ।
वाणी समपि विचत्रो, कुर पंडवां कहण कलि कारण ।।५।।

रवी करता जग रारो, जगत आंधार मेटगर जाहर ।
समपि सुबुधि विसालो, चालौ कहण कैरव सुध चित ।।६।।

गुणदाता गुर देवो, गुर गम देअणहार उतम गति ।
दे सदबुधी अदोषो, दाखण गति सति दई वाणी ।।७।।

दोहा

कर दुरधार उधारिवा, मन मा धारि मुरारि ।
करवायो भारथ कठण, सो कवि कहि अनुसार ।।८।।

अकर्ण करण विचारीयौ, मन चालो निरमौह ।
कवियण सो चित धरि कीसन, कहियै वाणि विमोहि ।।९।।

अवनि भार उतारिवा, चित्त आरंभीयो स्याम ।
सो क्ति हित संजूत सकल, कहि लै सुकवि सकाम ।।१०।।

अन्त :- कवित्त (छप्पय)

रचनाकाल १७९० सतरमै संमत वरस नेउवै वसेखण ।
कबि मुख रखेकरां कथ भारथ सपुरण ।।
वैसाख एक दिन तिथ ऐकम अलोकत भोमवार निरधार ।
.... .... .... .... .... ।।*

रामाईण उपरा कवि माधव रासो कीय ।
फिर नरहर बारट वाणि अवतार चिरत लीय ।।
भागवंत सिर विवरि कीध ईसर हरिरसह ।
कवि सीह जिम करी वले भाषा भारथह ।।
मति सार विचारि कुल करम, तन परमाद पून जीयो ।
नीस दिवस वर षत्रीय चित, त्रिमल जीहकु रांजसज जीयो ।।२।।

महाकथ भारथ सुणै सुज खत्रीस मंगह ।
करै सार वापार अजै न लहै भरि जंगह ।।
सुकवि श्रण इह सुणे भाख षट भेद सजाणैं ।
सोतो वकता सकल चढै चाढै निरवाणै ।।
चत्र वरण वाणि भाषा चवे, जीवन मुगत सचित लहि ।
चत्र वाणि खाणि आश्रम चत्रह, कवि तिह कथ संभरि कहै ।।३।।

इंद प्रसन आरंभ कीध भारथ सु कथह ।
फेर राह साराह कवि मनि चहि समंथह ।।

---

* पत्र चिपक जाने से अक्षर उड़े हुए हैं ।

जोध थांन सामांन मास पंच हवन कथै ।
वैराटह प्रब कीयो वागस्याही पारथै ।।
अहिमुदावाद प्रब श्रवइ तर, वसि मधे धर गुजरी ।
कवि सीह करत पुरण कीया, सेवा अभा निरंदरी ।।४।।

दुहा

भारथ भाषा अखीयो, मति माफक कवि सीह ।
व्यासह क्रित अति चित विमल, सुणि श्रवणे निस दीह ।।१।।

वारता

कवैसुर भारथ की भाषा का आरम्भ तो माल विजावत के भेलप दिली वीच कीधा, ता पाछै महीनां दोइ नै राठोडां कै राव जोधपुर की राह लीधा । चत्रमास तो मंडोवर कै साथ डेरु कीहुं स राजु कीसुं समारग हीज टारचों । काती सुद बीज के दीह राउका राव पखुं के थानक पधारचा । चेत सुध दसमी तांइ तो नरसमांद की छात महीलुं हीज रह्या । ता पाछै कविसुरु के भाग सिरविलंद की सेना कै आभा गुजर धर का राह ग्रह्यो । उभी चत्रमासा तौ मारग हीज वीता । आसु सुदि दसमी कै सेरविलंद का दल का वल जीता । ता पाछै पोस सुद माराज राजेसुर सहर दाखील हुआ । उबरावाकुं डेराकुं तजबीज वतांइ कै जुवा जुवा । तठै कवैसुर हठीसीघ सुरसींघोत कै भेलंप अतही आराम पाया । मति का पुरुरकर रूपक कविरा कुं दुगणा ही कथाया । तद बुध माफक भाषा करिकै जथा जोग अठारै ही परखेम पुरण कीधा । *

कवित्त

तर भेलप .... .... .... .... ।
पंडित भेलप प्रगटि महा विद्या धन पावत ।
सत पुरषां संग कीयां प्रीत हरि हुंत लगावत ।।
महिमा समंद जादव त्रिमल, देखत व्रन आणंदीयो ।
कवि सीह हठी भेलप करे, भाषा दध पारह भयो ।।२।।

दुहो

सेवा आभा नरेस री, भेलप हठी सुरींद ।
कवि भाषा भारथ कीयो, आग्या आणंद कंद ।।१।।

* इसके बाद एक कवित्त और है । अक्षर उखड़े हुए हैं ।

श्रवणे सहित सुध सुणै, प्रातह पाठ प्रमांण ।
करै जिक निहचै करै, पुहचै पद निरवाण ।।२।।

पुष्पिका :— इति श्री भाषा भारथ संपूर्ण । संवत् १६०६ वर्षे शाके १७७१ प्र० दुतीक वैशाख सुदि ५ गुरौ सहर योधपुरे लिखितवात् । परोपगाराय ।

१५६७. ११००४ महादेवजी रो व्यावलो
( शिवराम स्तोत्र भाषा )

प्रारम्भ :— श्री गणेशाय नमः । अथें महादेवजी रो व्यावलो लीख्यते ।

गणपत नाव उचार, विघवन पावक है (टेर)
सिष्ट करंता व्रह्म उचारचौ, शंभु त्रिपुर जय काज ।
बल बांधतें विष्णु उचारचौ, जग जीतन रतिराज ।।१।।

धरा धरेतां सेष उचारचौ, महिष विजय को अंब ।
मन बस कारन रिषन उचारचौ, मंगल विपिन कलंब ।।२।।

जोई उचारचौ जाके सवही, काज सुधारै भारै ।
सदनमति कौ हेमवती को, नंदन आपत टारै ।।३।।

सिव को व्याह भयो गिरिजा सों, जांनत त्रिभवन सारै ।
करि प्रनांम गजमुख कां वरन्यौ, गजमुख विघन विडारै ।।४।।

दुहा

लता अपर्ना सेईयें, जिनकी संगत पाय ।
थांनु पुरांनो फलत है, जो मांगत मन चाय ।।१।।
माया व्रह्म बीलास में, बन्यो अखिल संसार ।
माया हिमगिरि कन्यका, व्रह्म महेस नीहार ।।२।।
हे असार संसार में, अै दोय सार अपार ।
असिव निवारन सिव-सीवा, भज उतरो भव पार ।।३।।
दोनु वीनी अर्थ ज्यौ, मिले एक अरु दोय ।
अरध अंग नारी पुरुष, रूप अलौकिक कोय ।।४।।
जिनके गुन अनुबाद में, सफल गिरा कुं जांन ।
तज बकवाद बिवाद सब, गाओ गुन सप्रमान ।।५।।

गुन को पार नहु जुन को, कौ बरनें कवि मुंठ ।
थाके वेद सभेद करे, खेद व्रह्म वैकुंठ ।।६।।
जग कथ वानी मलीनता, पूर करन कै हेत ।
उमा-शंभु कीरत कथा, गंगा परम संकेत ।।७।।
ए विसवास विसेस धर, वरनों व्याह विधान ।
वानी के कट जायगे, श्रोगुन गनस निदान ।।८।।

अन्त :–

कर जोर सवि हवंचर वडे । मोहि ज्यांनकीनाथ सुनाथ करो ।।
हर सां पद पंकज सो सरणं । सीव संकर संकट को हरणं ।।१।।
तुम नाथ सबी विधि लाईक हो । गति श्रो पत के सुख दाईक हो ।।
करता सवि पोखन हे भरनं । सिव संकर संकट को हरणं ।।२।।
तुम नाथ अनाथ सुनाथ हरे । प्रगटे त्रिय मूरत देह धरे ।।
गति श्रो पत के तुम हो करणं । सिव संकर संकट को हरणं ।।३।।
पद अंवुज सागर हुं जलसा । किऊ आगम पुरन मा मनसा ।।
दर सो पद पंकज सो सरनं । सिव संकर संकट को हरणं ।।४।।
जव जक्त र मोहन मोह थरे । बहु तास वदे सव चूक पडे ।।
सव ही तुम नेम हो करनं । सिव संकर संकट को हरणं ।।५।।
हम श्रोगुन के अति आगममे । प्रभु वूडत हूं भव सागर मे ।।
गह राख भुजा अपने चरनं । सिव संकर संकट को हरणं ।।६।।
जव राम दया नद कीन दया । कटि हे जम जाल की मोह मया ।।
नित लोल लोल हुं तुमरे चरनं । सिव संकर संकट के हरणं ।।७।।

पुष्पिका :– इति श्री राजा श्री हिमाचल विरचितं शिवरांम स्तौत्र संपूर्णं । इती श्री माहादेवजी रो व्यावलो जोसी शिंभुरांम कृतं । जोधपुर को वासी, जोसी प्रभुलाल रो पीता, तीको संपूर्ण । सं. १९०७ रा मी॰ भादवा सुद ८ शुक्र प्रभात समये लि॰ हीरविजै, लूंणसरा मध्ये । चि॰ मगनमल पठन हेतवे ।

* आज दीन वायरो ठंडो वाजै छै । श्रोर मेह मूलक में थोडा

---

* तत्कालीन साख-वाड़ी भाव एवं राजनैतिक दशा का उल्लेख भी प्रतिलिपिकर्त्ता द्वारा अन्त में किया गया है ।

छै। साखा ग्रमांमी छें पीण कठेई तो मेह घणा कठेई मे थोडा; येकसार-सो जमांनो छें नही।

वाजरी रु० १ री ३१ *(सेर), मोठ ३३, मुंग ३२, गोहुं २१, जवार ३२, जव ३३, तेल ६।।, घ्रत २☰), गुल १३।।, चीणी ५. तीजारो १०, टका भाडसाही २०।।, ढबुसाही १८।।, ईगतीसंदारा ४।। वटारा, ग्राज दीन ग्रो भाव छै।

ग्रोर भंडारीजी श्रीचंदजी मोतीचंदजी जोसीजी सीवनारायणजी रो हल डेरा छै। भोमडो हली मायै छै। भंडारीजी साह री पोथी सुं भर्त्तरी सतक, सभासार नाटक, सीवजी रो व्यावलो ग्रोर फुटकर उतारचा छै।

वाग मार हमीरमल वैठौं छै। गांव ग्राधो तो श्री खालसै छै, ग्राधो ठा० सांवतसींघ न छै। गांव में हुकम जाटां रो छै। कुंणी को क्युंही न चालें। माहाराजाधिराज श्री तख्तसींघजी राज्ये, राज रा डेरा वालसमंद छै।

**१५६८. ११०१३ (५०) महाराजा ग्रभैसिहजी रा कवित्त**

**प्रारम्भ :–** ।। किवत ।। महाराजा श्री ग्रभैसिंघजी रा गुजरात रै समै रा खडीया वगता रा कह्या।

(छप्पय)

ग्रादि सकत इश्वरी, मंगल कारी चितांमण।
कामधेन पोरसो, तु हीज पासा त्रिभामण।।
धण कण साहण सोह, पूत परवार वडाळी।
देधी देस विदेस, राजद्वारै रखवाळी।।
ग्राणंद रूप ग्राणंद मइ, सबही वात सुधारणो।
रीभीउ गुणे राजा ग्रभो, तो प्रताप भव्र तारणी।।१।।

जग जिननी जोगणी, राय उमया परवेची।
भंज दैत चालको, नांम तिण चाळक-रेची।।
भाले थळ ऊजळो, वले हरीया गहरा तर।
चाळक रो मढ जठै, रचै देवी ग्राधो फर।।

* सभी तोल सेर की दृष्टि से दिए गये हैं।

त्रिहु लोक जात आवै तठै, वाज छत्रीस वधावही ।
रीझीए गुणे राजेस वर, पाउ रूपक पावही ।।२।।

पाय घुघर घम घमै, लंगर काळा खरळकै ।
अहि काळो हिडळै, चोहर काळा भरळकै ।।
काळी सिगी करग, चीर काळा पाटंबर ।
वाहण कालो विकट, रूप कालो राजेसर ।।
गरीबनिवाज काला गहर, कळू वीच वढती कला ।
आप सु अरज काला इती, आखर दीजै उजला ।।३।।

मेकदंत भल लहै, सुंडल लव लैस नुरा ।
उदर दराज आणंद, सीस झक बोल सिंदुरा ।।
गवरनंद सुख समंद, सदा रता राजेसर ।
च्यार पण वोह जंण, रहै अगवंण विसंभर ।।
एहा सरूप देवं अगल, कही इलोल उकतरा ।
सुध मन भाव धारै सुकव, पाव वंदो गणपतरा ।।४।।

वप उजल वसतरं, कंन उजला सा कुंडल ।
उजलं मुख उपरा, नाक उजला निरमल ।।
उजल माला उवर, वेद उजलो विचारै ।
वावै यंत्र उजलो, राग उजलो उचारै ।।
आवास विराजण उजला, विध उजला हंस वाहणी ।
उजल . अडोल गाउ अभो, दीजै मुझ वरदायणी ।।५।।

अडा भीड राठोड, हुयो सिर हर माहाराजा ।
गज संसण लख देयण, कीया न मा दधि पाजा ।।
जिण मारे मुगलंण, अनड लीधो जालंधर ।
जिण दिखणी भंजीया, थया नेजा लालंबर ।।
जीतो अनक समहर जिको, भुजं लाज दुनींय भिली ।
जोधपुर तखत जोधाहरो, तपीयो जन माहाबली ।।६।।

गजन पाट सौहीयो, संकर अवतार सवाडो ।
ओरंग सु मंडीयो, जिकण पाधरै अखाडो ।।
गजं धजं मारीयो, जिकण धड चे खग धारं ।
जिण खेलू लुटीया, सहित मालू सिणगारं ।।

भागा अनेक सोबा भिडे, कमध खाग ग्रहीयं करं।
जोवीयो जितै रहीयो जसो, दावा मुदी दिलेसरं ।।७।।

जिसो कमंध आथमै, सुन न उगीयो अकारो।
तेज जोर आगलो, इला भागो अंधीयारो।।
किरण जो सकल कलै, रूक जलहलै प्रगटं।
अरण रूप आखीयं, वली करवा दह बटं।।
एको सरूप बद आहुडै, गैण रैण दुजो गजो।
गालत्रा असुर पाल गिरं, अरक रूप तपीयो अजो।।८।।

इला थंभ अवतार, अडर अण बीह अणंकल।
परम अंस सत पुरस, अंग रूपी विल उजल।।
उदमं दांमणो, अनमनं मणो सवाडो।
अनथं नाथणो, उडंड डंडणो अखाडो।।
नह फिरै पीठ नाकार नह, गह सरूप थह गलरै।
होदुवं भाग पैदास हुयो, अभो पाट अजमालरै।।९।।

उबासै उसस, नडं झाडै वंवाडै।
करै वलं धुकलं खलं मुगलं पछाडै।।
खवं कुभ वलहलै, दलं वीटीयं अकारं।
हुए सेस दल चल चलं, मलेछ खलभलै अपारं।।
पै लंगरे लाज खल हल प्रगट, वलं चिहु जस वाहसो।
आछंट करै राजा अभो, सत्रं सीस नव साहसो।।१०।।

फिर नकीब बोलीया, चढो बाहादरं बंबालं।
दरक भार भीडजै, धीह धड हडै त्रंबालं।।
मदमता खोलीया, धतधता पोतारे।
कोड करै कोतल, साझ सोनै सिणगार।।
चढीयो अभीह ढुलतै चमर, धजाबंध दल धारीयो।
इण भंत दिली राजा अभो, प्रथमीनाथ पधारीयो।।११।।*

* महाराजा अभयसिंहजी के शौर्य और यशोगान के साथ ही गुजरात के सूबेदार सर-बुलंदखांन की बगावत से चिंतित होकर बादशाह द्वारा उसे दबाने का वर्णन २२ वें छन्द तक किया गया है।

अन्त :- वखतसिंघ मेलीया, भडां थाप ले जीयारां ।
वाज सोक कैमरां, अधुवै सावलां दुधारां ।।
खगां वुर उडीया, सुर थांभीया तमासै ।
वह कटार डाडरां, पार फुटता प्रकासै ।।
धुर तो वाह करता थको, खेध वेध लागा खिसै ।
वाग सो चोल् कीधो वदन, जल़ा बोल दूजो जसौ ।।११४।।

भडा आड वीटीयो, कड ओरी आवखांणै ।
वाड तोप नालीयां, चाड मुगलांण उराणै ।।
किता पाड केवीयां, सैहत ब्रगतरां बरंगां ।
घाड घाड आखीयो, राडता हीर कुरंगां ।।
कुंजरा फाड सुरां कवल, हथ वजाड केवी हणा ।
वारणा लीयै जिण वार रा, मारवाड वेढी मणा ।।११५।।

तैं सताव मेलीया, वीच जाडां घमसांणां ।
तैं आडां ओसरां, बंध चाडां कर वांणां ।।
तैं चढाय छातीयां, वेढ वीजल़ा वजाइ ।
तौ हाथां उतरे, साथ सखरा सिपाइ ।।
उडंता रीठ कीनी उभै, जद रिण ताल् जुहारीयो ।
दीठा नीवाब विरला दुनीं, तो सीरखा तरवारीयां ।।११६।।

---

**२३ वें छन्द में बादशाह द्वारा महाराजा को सरबुलंदखांन को जीतने के आदेश का उल्लेख है । अगले छन्दों में महाराजा की कीर्तिगाथा वर्णित है ।**

**३५ वें छन्द में महाराजा का ससैन्य आमेर आगमन, ४१ वें छन्द में मेदपाट आगमन, ७६ वें छन्द से अर्बुद और पाल्हणपुर तथा सिद्धपुर आगमन और ८५ वें छन्द में महाराजा का ससैन्य अहमदाबाद आगमन का वर्णन है । बीच - बीच में महाराजा के आतिथ्य-सत्कार तथा यशोगान के साथ ही शूरवीरों, सेना, घोड़ों और हाथियों आदि का पारंपरिक वर्णन है ।**

**८५ वें छन्द के बाद मोर्चाबन्दी और युद्ध का वर्णन प्रारम्भ होता है । गुटके में केवल ११८ छन्द ही उपलब्ध हैं जो युद्ध-प्रसङ्ग तक का ही परिचय कराते हैं । आगे के छन्द इस गुटके में अप्राप्त हैं, अतः संभवतः कृति अपूर्ण है ।**

**बादशाह द्वारा सरबुलंदखान (मुबारिजुलमुल्क) से गुजरात छीनकर महाराजा अभयसिंह को देने का समय वि.सं. १७८७ आषाढ मास (ई. सन् १७३० का जून मास) 'रेऊजी' ने लिखा है । विशेज विवरण के लिए कृपया विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत 'मारवाड़ राज्य का इतिहास' भाग २, पृ० ३३६ से ३४२ देखें ।**

वाज झाट वीजळां, वळा दोंवडा सकजां ।
धडा कंध वीछले, सहत पाखरां भाडजा ।।
विकट हाथ वाहतो, सत्रां ढाहतो सिगालो ।
तुरी राव गर रहे, सिंधुर झरहरै छडालो ।।
सारां विहार माझी सहित, धरा वेध धरा थीयां ।
वणीया धिराज जींण वारका, सज कसुंबल साथीयां ।।११७।।

क्यांव राड चाचरां, धडा डेंडरा लटकै ।
कडा फूट फीफरा, पगां आंतरा अटकै ।।
परचटां वावरै, कितां खंजरां कटारां ।
चकावौ माछीयो, चिहुं कांनीयां चकारां ।।
झड पडै किता केता झुकै, कीता रूक वाजै करां ।
अमदा खेल मा-तो इसो, मुछालां मडोवरां ।।११८।।

१५६२. १०६५५ (५) मानसिंहजी रा मरसिया

प्रारम्भ :– म्हाराज श्री मानसिंघजी रा मरसीया ।

कवित्त (छप्पय)

मृत्यु-समय समत अठारै साच, वरस सीको भादरवौ ।
१६०० देव झुलणी दिवस, कठण समीयो म्हा करवौ ।।
प्होर रात पाछलि, काळ न्रिप मान करायौ ।
नव-कोटां रो नाथ, सांम परलोक सीधायो ।।
छत्रपती मांन छत्र भंग हुवौ, धरा पाल प्रथवी धणी ।
हुणहार वणीयो - हु - तब, वसु वीच माठी वणी ।।१।।

प्रजा भाग पळटीयो, सांम परलोक सीधायो ।
वणी अवेष्ठी वार, प्रीथी रो डीगीयो पायौ ।।
मोटो राजा मांन, धरा सारी रो ढांकण ।
पर दुख मेटण पीड, जपै प्रथमाद जणो जण ।।
नवकोट नाथ हुतो नीडर, धरा थंभ प्रोथवी धणी ।
हुंणहार वणीयो - हु - तब, वसु वीच माठा वणी ।।२।।

वणी अवेढी वार, प्रीथीपत धाम पधारे ।
दोढी खबरा दीध, सेग मेहलां वीच सारै ।।
म्हाराणी मन मोट, देवडी उठी दाखां ।
चीत पडदायत च्यार, अेक फीर कीना आंखां ।।
लुंटाय दरब दीधा लीखां, रैणा जेज न करी रती ।
वईकुंठ वास मंडोवरां, सांम पास पुगी सती ।।३।।

अगर चंनण आंणीयां, आंण घ्रीत राळ अपारां ।
वडा रचे अे वास, सांम सतीयां कज सारां ।।
होय कोळाहळ हाक, भांण रथ खांचे उभो ।
माठी कीधी मांन, लोक सारो हुय लुभौ ।।
हथ प्रजा दुखी सारो होवै, हठ कारण लागो हीयो ।
दुनी आंण दाग सोह मील दीयो, जरे कमंध वास सतपुर कीयौ ।।४।।

सोनारा अे वास, कमंध सोह ढीला कीधा ।
मेळ हुवो छीन माह, लार जस लाखां लीधां ।।
भजन अेक रै भाव, राज चोडै रजधांनी ।
मेहमत छोडै मोह, कमंध बैगे हेक कांनी ।।
आपरो धरम खोयो अडग, नीरणो करे नीभावीयो ।
म्हाराज मांन रहीयो जी - ते, गुणां नाथ अेक गावीयौ ।।५।।

ओ राजा अवतार, पुरस मोटो पुजांणों ।
ओ राजा अवतार, कलु में सीध कहाणो ।।
ओ राजा अवतार, वडां री रखी वडाई ।
इण राजा अवतार, भेख री टेक नीभाई ।।
पुंनवंत पुरस उजल पणें, जस नामों रखीयो जुगां ।
कलस गीरनाथ माठी करी, मेहपत न्हीं रखीयो पगां ।।६।।

धरतौ थारो ध्यांन, मान कमधज म्हाराजा ।
धणी नाथ जलंधरी, लगी नही आई लाजा ।।
वणीयै विखमी वार, जाय छीपीयो कित जोगी ।
उपर न करी आय, हुंणी होनी सो होगी ।।

आगा सुं कुंण मांनेइला, बिजा इन्ह बुझसी।
अधपति काज देउ ओलवो, थनें पाव पंथ कुंण पुजसी ।।७।।

तें आगै तारीया, तीकै सोइ कुण जोगी।
गोपीचंद भरथरी, भेख में कुडा भोगी ।।
कांनड वीरमजी के, मेही न्ही वात मनीजै।
संत विनोद गोगस, जिकै ही कुण गीणीजै ।।
अबरकी वार रखतो अडग, इतरा लेखे आंणतो।
अधपती मांन करतो अमर, जोगी हुं सीध जांणतो ।।८।।

मेही मांन जग मांह, केई परमारथ कीधा।
दांन पुंन दोवडा, दत बलख हातां दीधा ।।
कि कमठांणा कीध, कीध सांसण कव गावां।
वले अनोखी वात, राखीया सरणै रावां ।।
गरीबांनीवाज हुंतो घणौ, मेहला माया मांणतौ।
अधपती मांन करतो अमर, जोगी हुं सिध जांणतौ ।।९।।

आस करै आवता, दुवार तिण रै अंनदाता।
देसी कुंण आधार, वेद बांणी वीख्यातां ।।
कवरावां रीझीत, कुंण अव मुंगी करसी।
सुंणो सीधैश्वर सांम, देस सारा में दरसी ।।
सासत्र अभ्यास करतां सुकव, याद घणा दीन आवसी।
म्हाराज मांन थारा हमै, जाचग कीण गर जावसी ।।१०।।

रंगीला रंगरेज, तबोली गांधी त्यारां।
सो विलखांणा सेंग, पार वणस कौ अपारां ।।
दरजी हुंनरदार, कांम कर चोबी करता।
सारा कीसबी सेंग, तठै सोह पेट भरता ।।
मरजाय गया द्रीग सोच में, हारे बेठा हीमतां।
म्हाराज मांन तो वीन हमें, क्हो करसी कुंण कींमतां ।।११।।

उर वसीया आंगणें, तिकै पातस्यां भगतण्यां।
सभा रंग साझती, सबद बोलती सुहांवणां ।।

गवईया गावता, राग छतीस अपारां ।
कलावत कौक तासों, रीझ पावता हजारां ।।
मलीन मंन हुवा अतरां, उमंग झांखा पडीया जु-जुवा ।
म्हाराज मांन तो वीन हमें, वै माथा ढकीया हुवा ।।१२।।

बोह जांणां बाजर, पांण सारा लखपती ।
साहुकार सेठीया, हार बैठा हीमतां ।।
सारा भीभा छोड, छोड व्यौपार स-कोई ।
हद ग्रह काठा हाथ, हुंणी माठी सो होई ।।
उतपात म्हा प्रीथमी हुवौ, कमंध मांन डीगीयो करां ।
सो सुख खाप केंग्रो-सक्यों, वीणज छोड देसावरां ।।१३।।

डोडीदार पडदार, अैस करता अलवेला ।
छडीदार चोपदार, सांमी धरमी अै वेला ।।
धणी पास ढालेत, रात दीन प्होरै रहता ।
दुजा खीजमतदार, लाखां जस लेतां ।।
अवतार मांन तो विण अेता, मन मांजां कद मांणसी ।
आप वीण सको वीलखा हुवा, जोधाहर कुंण जांणसी ।।१४।।

सोह सारा सीरदार, संग मुतसदी सारां ।
करी जीकां चाकरी, वीखा में वारमवारां ।।
बे तीन घेरां वीच, कठण वणीयां जंग कीधा ।
म्हाराज आपरां, देख सारां तंन दीधा ।।
धंणी आप धणी कुंण जाणसी, न्वां लेखै कुंण आंणसी ।
चाकरां तणी हीव चाकरी, जोधाहर कुण जांणसी ।।१५।।

सारा संग सरूप, जीकैं कीण रै घर जाई ।
पात्र आप पूजीया, कुंण राखे ठकराई ।।
यांरी इतरी आप, लगी न्ही अग्या लोपी ।
गुर जांणे गढ पत, राज मरजादा रोपी ।।
नवकोट नाथ बुध नीरमली, पुंजण गुर प्रथमी पतां ।
अवतार जोध गढ आवजौ, मेंहपत राखण मांनतां ।।१६।।

नव कोटां रे नाथ, दीष्ट भगवती नें दीधौ।
राजा छोडै राज, केण सुं मोह न कीधौ।।
पुंन तणें प्रभाव, सबद सासत्र कर साखी।
धणीं हेक धारण, रखण सत चीत में राखी।।
कमठांण कार मासो कीयो, नेह बांधीयो नाथ सुं।
त्रप मांन धर्म रखीग्रो नीभै, हरचंद वालो हात सुं।।१७।।

बाबा खोटी वात, वसु में भली वणाई।
त्यांरी करतौ टहल, वडां री ग्राही वडाई।।
भगती मांहें भ्रांत, जलंध्रो कासुं जांणी।
जोखमीयो म्हाराज, ग्रेक न्ही लेखै ग्रांणी।।
गढ गढां मुलक होसी गलौ, ग्रधपती न्हं ग्राधारीयौ।
कहां चुक पड्यौ इंण चाकरी, सु धंणी ग्रायौ नही धारीयौ।।१८।।

पुष्पिका :– संवत १९०५ रा म्हा सुद ग्रेकम वार गुरवार दी०। सि०। कुंनणराज रा है।

१६०७. १०६८० **मुनिपति चरित्र**

प्रारम्भ :– ।। र्द० ।। श्री सारदाय नमः। वस्तु।

गोयम गणधर गणधर पाय प्रणमेवि
नांमें नव निद्ध संपजें, सयल सिद्ध सेवक कह थापें।
एक मनां जेऊ लगें, धरें ध्यांन तस लवद्धि ग्रप्पें।।
वेकर जोडी वींनवूं, द्यो मुझ वांणि वसेष।
बोली सराग्रो मुणिपति, चरी कथा बंद्ध सुविसेष।।।१।।

जंबु दीठह दीठह भरह मझंमि,
मुणिपति की नगरी भली, करें राज मुनिपति सूरो।
कला बहुतरि ते कुसल, लक्षण ग्रंग बत्रीस पुरो।।
पटरांणि प्रथिवी सुंणुं, रूपवंत सु विचार।
बेटुं बहुं गुण ग्रागलुं, तस मुणि चंद कुमार।।२।।

चउपई

राजा राज करें चिर बहुं। नगर लोक ते सुखीया सहु ।।
राजा नीति पालें सुविचार। पुत्र तणें सिर सुंप्यों भार ।।३।।

देखी पत्नी थयुं वैराग। अथिर संसार नही अम्ह लाग ।।
श्री दमघोख मुनिवर सुणी। चाल्यो साधु वांदवा भणी ।।४।।

त्रिण पदक्षणा देई राय। करी तत्रासण लागुं पाई ।।
धरी ध्यांन बैठो महाराज। फल्यो मनोरथ माहरुं आज ।।५।।

देख्य लाभ दीधुं उपदेस। सूणी वाणी बूझीउ नरेस ।।
छांडी राज ऋद्धि परिवार। राजा लीधुं संजम भार ।।६।।

अन्त :–

कुचि कथा सुणि सु विसाल। पारिव्राजिकांइ चढाव्यो आल ।।
तिणि सूंणि वरि परि कीधी जेह। अम्हे हठे परि करि स्युं तेह ।।५९७।।

श्रावक जाणै द्रव्य ताहरुं लीयुं। तेतां क्षय पांम्यो पापीयों ।।
इसउ कहंता लागी वार। थयो मुनिवर नै कोंप अपार ।।५९८।।

तेजों लेस्यां मुकी जास्यै। धुंउ नीकल्यो मुख थी तिस्यै ।।
सेठ पुत्र वे बीहै घणुं। तुं निधांन प्रगस्यो आपणुं ।।५९९।।

म द्यो आल मुनिवर नै तुम्हे। कहै पुत्र धन लीधुं अम्हे ।।
दीठो धुंउ मुनिवर नै मुखै। अति संतोख्यौ वालै रखै ।।६००।।

घणु खमावी लागुं पाइ। मै दुहव्या खमो ऋषिराइ ।।
तुम्हे कृपा परसि वूंहुं जंतु। तु माहतमो हुउ पसांत ।।६०१।।

करै सेठि अति पश्चाताप। दीधुं आल हुस्यै मुझ पाप ।।
लाज्यो घणुं हीया माहे तेह। भव वाधिस्यै नही संदेह ।।६०२।।

थयो वैराग्य सेठि मनि घणुं। करिस्यू काज हवै आपणु ।।
घणुं महोछव बेटै कीध। ऋषि मुनिपति कर दीक्षा लीध ।।६०३।।

बेउ मुनीस्वर करै विहार। पालै पंच महाव्रत भार ।।
ध्यांन मौनप तप सोभी देह। देवलोक देव थया बेह ।।६०४।।

तेहनु ध्यांन हीया माहे आंणि। बेहुं एकावतारी जांण ।।
मुगति पंथ ते जास्यै वही। सुणु कथा संखेपै कही ।।६०५।।

र.का. संवत पनरे पंचासूं जांणि। वदि वैसाख मास मनि आंणि ।।
१५५० दिन सप्तमी रच्यौ रविवार। भणै सुणै तेहनै हर्ष अपार ।।६०६।।

पुष्पिका :- इति श्री मुनिपति चरित्रं संपूर्ण समाप्ताः। संवत् १७६५ वर्षे मति काति वदि १३ दिने। कृष्णगढ मध्ये लपीकृत्वां।। श्री रस्तु। कौसतूरचंदरी ने सराय।

१६२८. ११०१३ (३३) मेवाड़ गुण वर्णन

प्रारम्भ :- दूहा

मन धरि माता भारथी, कवियां कोतिक काज।
गुण वर्णन् मेवाड़ का, करिसूं कांयक आज ।।१।।

छंद जाति हाटकी

नही उन्हो खांणो नही दोजांणो, रांणा केरे देश।
जव मकी रोटा छोटा खोटा, खारी खायै हमेस ।।
मद मंस आहारी सहु नर नारी, कालो पहिरण वेश।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।१।।*

पग पग जिहां माटा काठा भाटा, लागै ठोकर ठेश।
वालक नै बुढा सहु नर मूढा, भण्या नही लवलेश ।।
अध नंघ्या जंघ्या पहिरण नितका, वतका करै कलेश।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।२।।

जिहां नर नै मूढै दाढी मोटी, छोटी मुछां केश।
वलि राखै पट्टा जट्टा चट्टा, मोटा पेट विसेस ।।
मुहडा पीलरीया नर विल्लरिया, ऊंका हीण नरेश।
मेवाडै देशै भूले चूकै, मति करिजौ परवेश ।।३।।

---

* प्रस्तुत वर्णन किसी जैन मुनि को मेवाड़ के ग्रामों में हुए व्यक्तिगत कटु अनुभवों की अभिव्यक्ति मात्र है। इसे मेवाड के सामाजिक जीवन के संदर्भ में प्रमाण-स्वरूप नहीं मानना चाहिए।

दारचा सेबरीया वलि टेघडीया, एहवा सहिजे बोल ।
सो वरसे सीधा न हुवै, मेधा हीया फूटा ढोल ।।
नीपजै भाखला नही ते भल्ला, नही कांबल नही खेस।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।४।।

जिहां नर रोगीला वली सोगीला, छिली फीहा पेट ।
नर वातां करतां करै लडाई, धम्मा धम्म धमेस ।।
पीवै सहु कोई भांगि तिजारा, अमल तमाखू पेंस ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।५।।

नवि चालै गाड़ा वहिल न चालै रथ, नवि चालै तेम ।
एक पोठ्या हीडै जो धणी खेडै, पुछ मरोडै तेम ।।
घर बारी जोगी जंगम संगम, संगी वलि दरवेस ।
मेवाडै देशै भुले चूकै, मति करिजौ परवेश ।।७।।

जिहां लागै पांणी खोटी खांणी, वाय चोरासी गेह ।
मांकण नै माछर चांचण सुरला, बहुंला दीसै तेह ।।
जिन धरमी थोडा घणा मिथ्या, ती मानै देव हमेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।८।।

माथै पाघडीयां बांधै जांणे, आरीसा को म्यान ।
मोटी रुदराछां वादी सरिखी, पहिर हलावै कान ।।
नासै पहिला थी फोजां फीटै, डुंगर करै परवेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।८।।

जिहां डायण नै सायण गोगा मोगा, भूत प्रेत असंख ।
तसकर पासीगर घणा ठगा राते, वलि खाली खंख ।।
गछ नायक साहिब वगर उदैपुर, मति देज्यौ आदेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ।।६।।

कवि नाम इण विध ए मेवाड को, कवि जिनेंद्र कृत छंद ।
पिण एक उदेपुर है भलो, सो रहिजो चिर नंद ।।१०।।

इति मेवाड को छंद संपूर्णम् । छ ।

दूहो

प्यारी लागत भांग मै, शशी वदनी सारी ।
राय अंगण ऊभी रंभा, जांणै केशर गुल क्यारी ।।१।।

जरर जरर बादल जरर, जाडा नीर जरेह ।
जिण रित कांमणि मद वहै, प्रीतम आव घरेह ।।२।।

लि० (लिपिकर्त्ता) सुजांण ।

१६५२. ११००६ ग्रहसंयुक्ति

प्रारम्भ :- ।। श्री परमात्मने नमः । अथ युक्ति लिख्यते । ॐ ।

एक पुरुष द्रव्य की इछा करकैं घरतैं निकला । वन मैं गया । वन मैं एक पुरुष बैठा था । वातैं इस्नैं प्रार्थना करी कि हे प्रभु एसी कृपा करो कि मेरै कों द्रव्य प्राप्त होवै । उस पुरुष नैं उस्कों एक कुदाला और एक खड्ग दिया और पास एक मन्दर वताया और कहा कि इस मन्दरि मैं जा तुजकू द्रव्य प्राप्त होवैगा । वह पुरुष उसकै अन्दर गया । देखै तौ क्या है, कि च्यार स्त्री उसमैं खडी है । उनेसें पुरुष नै पूछा कि तुम कौंन हौं, किस्कुल की हौ, क्या नाम है । स्त्रियां बोली हम स्त्रियां हैं, व्राह्मण कै कुल की हैं, जो नाम था, सो वताया । फेर पुरुष नैं पूछा कि रहती कहां हौ । एक नैं कहा मैं अग्निसाला मैं रहती हूँ, दूसरी नैं कहा मैं द्वार में रहती हूँ, तीसरी नैं कहा मैं धर्मशाला में रहती हूँ, चौथी नैं कहा मैं अन्तःपुर में रहती हूँ । यह कह कै स्त्रियां गुप्त हो गई, और च्यार पुरुष निकस आए । फेर उन्सैं पूछा कि तुम कौंन हौ, क्या नांम हैं, किस कुल के हो । उनांनैं कहा के हम पुरुष हैं, क्षत्री कुल है और अमुके-अमुके नांम है । फेर पूछा कि रहते कहां हो । एक नैं कहा मैं अग्निसाला में रहता हूँ । पुरुष नें कहा कि वहां तो अमुकी स्त्री रहती है । उस्ने कहा के मेरी स्त्री है । प्रथम तो उसका काम क्या है, और जो रहती है तौ दासी होकैं रहै । दूसरे सें पूछा कि तूं कहां रहता है । उस्नें कहा मैं द्वार में रहता हूँ । पुरुष नें कहा के वहां अमुकी स्त्री रहती है । उस्ने कहा कि मेरी स्त्री है । प्रथम तो उस्का काम क्या है, और जो रहे तौ दासी होकै रहे । तीसरे तैं पूछा कि तूं कहां रहै है । उस्ने कहा कि मैं धर्मसाला में रहता हूँ । पुरुष नैं कहा कि वहां तौ अमुकी स्त्री रहती

है। उसनें कहा कि वह मेरी स्त्री है। प्रथम तो उस्का काम कहा, और जो रहै तो दासी होकै रहै। चौथे से पूछा कि तूं कहां रहता है। उस्ने कहा कि मैं अन्त पुर में रहता हूँ। पुरुष ने कहा कि वहां तौ अमुकी स्त्री रहती है। उस्नें कहा कै मेरी स्त्री है। प्रथम तौ उस्का काम कहा है, और जो रहै तौ दासी होकै रहै। तब पुरुष नै सुनकै कहा कि तुमनै वडा अनर्थ किया, क्षत्री हो कर्कें ब्राह्मणीयां कौ घर में गेरी, तुमकौं दंड देना योग्य है। तब पुरुष नैं खड्ग काढि कै पृथक्-पृथक् च्यारों का सिर छेदन किया। तब फेर च्यारों स्त्रियां प्रकट हुई। स्त्रियों नैं कहा कै हमारे पुरुष हैं, हम सती होवेंगी। तब ये स्त्रियां जलने लगी। तब अन्तःपुर में जो स्त्री रहती थी सो पुरुष नै रख लीनी और कहा कि तू मेरे पास रहा कर। उस्कै रख कै फेर तीनूं स्त्रियां कुं, च्यारौं पुरुषां सहित दाह दिया।

अन्तः –

'हरिं अहं इडेति' स-हरि की मैं स्तुति करूं हूँ, सो कूंन हैं। 'संसार-ध्वांत-विनासं' संसार का कारण जो अज्ञान, तिस्का नास कर्नें वाला है। काहे तें विपै तपय कर्के इस आकांक्षा विषै कहै हैं। 'योगाष्टांगैरुप्रज्वलितज्ञानमयाग्नौ' योग कहिये, प्रत्यक् चैतन्य और ब्रह्मचैतन्य, दोनौ की एकता, तिस्की प्राप्ती विषै साधन भूत निर्गुण के विषय कर्नें वाले आठों अंगां कर्के निर्गुण योग कै आठों अंग, आत्मयोग, ग्रन्थ योग विसेष का तिस विषै कहे हैं। सोई दिखावै है। देह और चक्षु आदिक इन्द्रियों विषै जो विरक्तता, सो यम कहियें। इस योग विषै नियम दिखावै हैं कि आतमा तत्व विषै जो प्रीत, सो नियम कहियै। बाह्‌ के विषयौं विषै उदासीनता कूं ही आसन कहै हैं, और चिंतादिक सम्पूर्ण भावौं विषै, ब्रह्म कर्के भाव कर्नें तें सम्पूर्ण वृत्तियों का जो निरोध, तिस्कूं प्राणायाम कहियै। अपनी बुद्धि की विषयों तें जो विमुखता, सो प्रत्यहार कहियै। और आत्मा-निष्ठा कूँ धारणा कहियै, ब्रह्म मैं हूँ, तिस्कौं ध्यान कहियै। दृष्टा तें भिन्न कुछ नहीं, अज्ञान रहित जो फुर्णा, आत्मा मात्र, सो समाधि कहिये। तिनकाष्ट स्थानीं आठों अंगौं कर्के बलता हुवा जो ज्ञानरूप अग्नि, तिस विषै, और जो मन्द मुमुक्षू हैं, साधनौं विषै हैं अन्तर जिसके और नहीं परिपाक हुवा मन जिस्का, जिस्के प्रति कहै है। पतञ्जलि नैं वर्णन किये प्रसिद्ध है, यम नियमादिक आठौं अंग हठयोग के। तिन काष्ट-स्थानी आठों अंगों कर्कें वलता हुवा जो ज्ञानमय अग्नि, तिस विषै दृष्टान्त 'लोहयुतं हेम यथाग्नौ' लोह कर्के मिले हुये सुवर्ण कूं अग्नि विषै तपाय कर्के

लोहे कूं त्याग करकें सुवर्ण कूं जैसे ग्रहण करिये हैं, तिस्की नांई, चिर्काल विषै ग्रौर ग्रति चिर्काल विषै, मध्यम ग्रौर मन्द मुमुक्षू दोनूं, ग्रात्म पद कूं प्राप्त होवै है।

पुष्पिका :– इति सिघ्र ग्रौर चिरकाल विषै ज्ञान होनें के निर्णय की युक्ति पूर्ण हुई ।। ३६ ।। संवत् १६२५ रा काती सुदि १ श्रीरस्तुं ।।

**१६७१. १२३७६ (५) राजनीति की रीति**

प्रारम्भ :– ।। ग्रथ राजनित लिक्षंते ।।

दुहा

ग्रछर ग्रगम ग्रपार गति, किनहुंन पार-न पाय ।
सो मोहि दीजै सकत, जय जय जय जुगराय ।।१।।

छप्पै

बरनी उज्वल वरन, सरन जग ग्रसरन सरनी ।
करनि करुंना करन, तरन सब तारन तरनी ।।
सिर पर धरनी छत्र, भरनी सूप संपती भरनी ।
झरनी ग्रंमृत कुरन, हरन दुख दालिद्र हरनी ।।
धरनी त्रीसुल खपर भरनि, भव भय हरनी सकल भय ।
जुगदंब ग्रादि बरनी जसु, जय जगधरनी मात जय ।।२।।

सोरठा

दीजै बूधि ग्रपार, करि प्रनांम प्रारंभ करि ।
राजनीति विस्तार, जसु वरनैं वांनी सुगम ।।३।।

जिन वखतन में पातसाह, राजत ग्रालमगीर ।
तिनै वखत पैदा कीयो, गुन गनियन गंभीर ।।४।।

सोलंकी जुगमाल सुत, उदयां सींघ ग्रनेक ।
गूंन दीनैं तातें गुनि, वांध्यो ग्रंथ विसेख ।।५।।

र. का. संमत नाम ग्रठारसैं, वरस चउदन मांहि ।
१८१४ ग्रासो सुदी नांमी सुकर, गुंन वरन्यों चित चांहि ।।६।।

राय जदुकुल जीत सुत, नगर अभेपुर नांम ।
महीर-वारा जित मही, वरन वरन वीसरांम ।।७

मनोर्हं (मनोहर)

जाके जसु कंचन की सीख वीराजमांन,
जाकै भुज भारन को पारहु न लहीयैं ।
जाके दांन गंग से प्रवाह वहै आठौ जांम,
जाके नर देव हुं की सेव सब चहियैं ।।
जाकें रूप अधर उदार पंचरूप जेसें,
रायगीरि राय देखी रीझ रीझ रहियैं ।
राजनीत की मत नरेसहु कौं जसुरांम,
कहीयें तो मेरंहु समांन कर कहियैं ।।८।।

दुहा

दान जुक्त हैं दोउ जांहां, गुंन हें जहां गंभीर ।
एसे राजत हे अमुज, दीपसिहे के वीर ।।९।।

जेसें वेद विरंचि को, अपरम दीयें उपाय ।
राजनित राजान को, ऐसें दीये वताय ।।१०।।

छप्पै

प्रथम अंग भुपाल, गजरांनी अंग दुजो ।
तीजें राजकुमार, मंत्री चोथैं गिन लीजै ।।
पंच मुसाहिब अंग, अंग षट रावत मांनो ।
साप्तमा रयत अंग, कवि अठ अंग वखांनो ।।
जुग रीत जीत जांनो जुगति, विवेध विवेक विचार वह ।
जप करत सदा समरत जसुं, आठ अंग वरने सु यह ।।११।।

यांको अबै उदाहरन, प्रगट करत परमांन ।
राज नीत गुन चातुरी, सुन सुन लेहु सुजांन ।।१२।।

अन्त :- छप्पै

सवा भार सोवरण करण, दिन पै दत दीनो ।
अजहू पै हरक हाय, कोउन कै है दत दीनौ ।

देखूं उनपै आय, दाढ काढन कूं लागै।
उनकी तुप रह गई सुनो, मंगन पत आगै।।
यौ कोउ बुरी न कीजियै, ज्यूं त्यू ही जस दीजियै।
जुग वीच कोऊ कविता जसू, दाता अंत न लीजियै।।१३।।

दुहा

राज नीत की रीत जसू, प्रथम अंग कियै आठ।
छन्द संख्या छपय दस छासठ कवित, बने दोहरे साठ।।१२।।

पुष्पिका :- इति श्रीं राजनीति विस्तार यदुकुल सिगार कवि अंग वरणन नांम अष्टम अंग समाप्तम्।

दुहा

लिपिकाल दिग्गज दुज निध महि लखो, जेठ कृष्ण पख जांन।
१९२८ रांमदवारै जोधपुर, विष्णुदास लिखतांन।।१।।

वाचै जिनकूं राम राम २ २ २ २ २ २ २ २ श्री र र।

१७१९. १२००९ रामचरणजी की वाणी
(जिग्यास बोध)

प्रारम्भ :-

सिख भिख्यूक दातार गुर, रांम नांम दे दांन।
ले आंतरि इक तार सैं, भजतां होइ कल्याण।।
भजतां होइ कल्यान, भरम का बंधन बिनांसै।
दया सील संतोष, ग्यांन हिरदै परकासै।।
रांमचरण सु रती कहै, कहै कोई संत सुजांन।
सिख भिख्यूक दातार गरू, राम नांम दे दांन।।३७।।*

रांम नांम वोषदि अमल, दे सतगुर बैद उदार।
रोगी रूची ले पचि रहै, तो रहै न रोग बिकार।।

* प्रारम्भ के ३६ छन्द अप्राप्त हैं।

तो रहै न रोग विकार, तास मैं संसै नांही।
कहै बैद अरू पुरांन, संत जन साखि भरांहीं ।।
रांमचरण सा धीर कहै, ऐ मन मंजन कूं सार।
रांम नांम वोषदि अमल, दे सतगुर वैद उदार ।।३८।।

अन्त :- ग्रन्थ वौपमा, छन्द पधरी

जग्यास बोधं जग तिरन काज, तजि जगत होइ हरि सुं समाज।
ऐह सुध जग्यास बोध, होइ जग्यासी करै सोध।
तन मंन प्रांन आंनंदकार, निस बास नांम करि हैं उचार।
रांम उचारै रांम लीन, ऐह सो भजांनैं प्रबीन।
म्हाराजि उचरे गिरा ग्यांन, मुख सरोज बाइक निधांन।
कहे सबद अणभौ अनूंप, निति धरम निरणें सरूप।
सब रीति रैसि भाखी निधांन, भिनि भिनि भेद दिसटांत जांनि।
ग्यांन भगति बैराग रीति, सुनें ताहि उपजै प्रतीति।
कीऐ खंडनां कांम क्रोध, कह्यौ बरनि जग्यास बोध ।।९३।।

कूंडल्या

रांमचरण म्हाराजि का, सबद सुधा मई सार।
संकलन कर्त्ता रांमजन ताहि सोधि कै, कीन्हौं ग्रन्थ विचार ।।
कीन्हौ ग्रन्थ बिचार, जोडि परकरण बणाया।
न्यारे न्यारे भेद, देस का देस मिलाया ।।
ग्रन्थ नांम जग्यास ऐ, सुध बोध सुख धांम।
याहि बिचारै दास होइ, सो पावै पद रांम ।।९४।।

दुहा

संकलन स्थान सहिपूरै सांनंदसूं, संता सरणि निवास।
सतगुर किरपा सूं बण्यूं, ग्रन्थ वोध जग्यास ।।९५।।

संकलन काल अठारा सै सैंताल के, संमत कातिग मास।
१८४७ बुदि दोजि सोमार दिन, पुरण ग्रन्थ जग्यास ।।९६।।

ग्रन्थ संख्या कही ऐ हैं—

छंद बेताल दुहा २९ साखी ३९८,
किवत ५५४ पद हैं ६ सवईया ६।

छंद मनहर २६ कूंडल्या १०३७ अर रेखता ८,
फुनि झूलणां ७ जाणूं खरा ।।
त्रीभंगी १४ अरेल ३७ पधरी २,
चौपई ५ झंपताल हैं १२ ।
भुजंगो १ भलि सोरठा १४,
छंद ऐ बेताल हैं ५ ।।
छंद संख्या जांनि यामै, सपत दस परमांण हैं । १७
अमोघ बाइक कहै सतगुर, सबद अणभै बांण हैं ।।
सबद संख्या जोड सारी, सोला सै अकतीस हैं । १६३१
रांम जन गुर सरणि, जोडे ऐ परकरण अकीस हैं ।।६८।।

दुहा

जग्यास बोध उर सोध करि, रांमगरू मम सीस ।
जोड़ बणाई रांमजन, ऐ परकरण अकीस ।।६९।।

पुष्पिका :- इती श्री जग्यास बोध आतम परमोध गुर सतूति ग्रंथ संख्या निरूपण नांम सबद १६३१ ऐकबीसमौ परकरण । २१ । इती ग्रंथ जग्यास बोध संपूरण । ग्रंथ १ । *

१७४१. १०६०२ रामचरित्र
(प्रति अत्यन्त अशुद्ध लिखी हुई हैं)

प्रारम्भ :- ।। अथ रामचरत लिखंते ।।

दूहा (चौपई)

निमो निमो निमेसाकार[1] गुसांई । घट घट व्यापक जल थाल मांही ।।
ब्रीमा पुत्र दुजो कोइ नही । तेरी काला साकल जुग मांही ।।
पार ब्रम पूरण पेदागर । नाराईण नरसिग नटनागर ।।
आलख पुरस आभनासी । संकल मांझ तेरी पैदासी ।।
सुर तेतीसा गोरख आठ्यासी । प्रक जौगेसर सिध चोरासी ।।
हुकमि बदार सब ठाढा । करजोडी करण करैह गाढा ।।

---

* इसके बाद ग्रन्थ 'विश्वास-बोध' प्रारम्भ किया गया है ।

१ लिपिकर्त्ता ने अधिकांशतः अकारान्त शब्दों को आकारान्त लिखा है ।

ब्रमा बीसन महादेव दांना । सबही रो रहन लगांना ।।
वडे वडे द्रगपाल कहावै । तेरो दीयो सब कोई पावै ।।
राम सीमर मन मोरा नाई । वारो वार कहू समजाई ।।
गुर उपदेस सुणें नही कांनां । रांम सुमर मन मुढ दीवानां ।।
रांम सदा साकडै साही । समरथ रांम सदा सुखदाई ।।
रांम सब दुख भांजण हारा । रांम ही सब सुख के दातारा ।।
रांम ही जीवन रांम आधारा । रांम ही पीतम रांम ही प्यारा ।।
रांम ही निरधार के आधारा । रांम ही करनी निसतारा ।।
रांम ही सीध उतारे पारा । रांम ही नरग निवारण हारा ।।
रांम ही जीवन साघाती । राम ही सजन राम ही साथी ।।
रांम ही पीता राम ही माई । राम ही वन्धु राम ही भाई ।।

अन्त :–

राम चिरत कहै दाहीयारा । जाकी प्रवु वात सुधारा ।।
राम रस पीवन पावै । सुदरदास रांम जस गावै ।।
रांम पुरी म (में) मेरा वासा । गुर कालु न(नें) सीष सुंदरदासा ।।
ऐते रामचिरत पडते गुणते । सो मोख पावते ।।

रामचिरत संपुरण ।

१७७२. १०६७६ **रामविनोद-भाषा**

प्रारम्भ :– ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ रामबिनोद ग्रंथ ।।

दोहा

सिधि बुद्धि दायक सकल हिय, गवरी पुत्र गणेश ।
बिघ्न बिडारण सुख करण, हरष धरी प्रणमेश ।।१।।
श्री धनुतर चरण युग, प्रणमु धरि आंनंद ।
रोग नशै जस नाम थी, सब जन कूं सुख कंद ।।२।।
बिबिध शास्त्र देखि करि, सुगम करूं अधिकार ।
रामबिनोद ग्रन्थ यहु, सकल जीव सुख कार ।।३।।

अथ पुरुष लख्यण

चतुर विचक्षण दक्ष नर, सुन्दर रूप सुजांन ।
बैद्य बुलांवण आवही, मिष्ट बचन प्रमांन ।।४।।

फल बस्त्रादिक लेह करि, धरै जु वैद्य हजूरि।
रिक्त पांणि नहि जाईये, दलगीरी तजि दूरि ।।५।।

दोय पुरुष संग वैद्य कै, तब ले जाय बुलाय।
एक पुरष संग होइ चलै, तब वैद बुलायो जाय ।।

अथ सुभ सुकन : चौपई

कन्या अष्ट वर्ष प्रमांन। वृषभ जोड हस्ती परधांन ।।
मीन जुगम दधि पक्का धांन। बिप्र तिलक मुख बोलई वांणि ।।७।।
धूम रहित अग्नि राजांन। आमिष बैश्या सुहगांन ।।
भरचौ कुंभ पदमणि फुलमाला। पुत्र सहित फुनि आवेहि बाला ।।८।।
इत्यादिक सकुनैं सुभ भलैं। वैद्य सनमुख जो आवई मिलैं ।।
तौ वैद्य जाइ तेहनैं घरबार। रोगी जीवै सहि निरधार ।।९।।

अथ नाडी शरीर चेष्टा लक्षण : दोहा

आदि नसांनैं देखिये, लक्षण अंग निहार।
मुख दंता लोचन नखा, घ्रांण श्रोत्र लघु धार ।।१०।।

जिह्वा अंबर हस्त फुनि, मंडित करो विचार।
प्रथम ए लक्षण देखिये, करि पीछैं उपचार ।।११।।

अन्त :- दोहा

संदर्भग्रंथ बैद ग्रंथ जे देखिए, किस ही न पायौ पार।
ओषधादि के गुण वर्णे, प्रगटे इण संसार ।।८८।।
आत्रे चर्क हारीत हू, जोग चिंतामणि बृंद।
बाग्भट्ट श्रुश्रुतात् भृगु, क्षार पांण आंनंद ।।८९।।
सन्निपात कलि कातही, राज मार्तंड बखांन।
रस चिंतामणि सतकहू, इत्यादिक मत आंण ।।९०।।
बिंदुसार मनौरमा, सारंग धरि सुजांणि।
कह्यौ निदान आतंक तैं, बहु बिधि रोग निदांन ।।९१।।
इति शास्त्र साखि।

गुण अनेक इनके अछैं, तिसका ले लवलेस।
प्रगट जु भाषा ए रची, बहु प्रकार सुबिसेस ।।९२।।

अदभुत ग्रंथ जु ऐ रच्यौ, रामबिनौद ऐ नांम ।
ब्याधि निकंदन सुख करन, कुसल सदा अभिरांम ।।६४।।

अथ फल इसका :

परोपकार कहां किण हुवैं, कहां किण धरम निमति ।
किहां किण फुनि धन मित्र ही, किहां किण सोभा मति ।।६४।।

करमभ्यास किण सही, किहां किण कांम सनेह ।
करौ चिकतसा चतुर नर, निफल न हुवै एह ।।६५।।

चौपाई

गच्छ श्री कोटिक गछ खरतर प्रधांन । श्री जिहिंसिंह सूरि राजांन ।।
एवम् गुरु नाम रंजे जिण अकबर साहि सलेम । करामाति दिखलाई जेम ।।६६।।
तासु सीस बहु गुण मणि धार । पद्मकीरति जस सयल संसार ।।
तसु पद पंकज विद्या पूर । प्रतियो जा लगि ध्रू ससि सूर ।।६७।।

पंडित पद्मरंग सु जगीस । नरनारी प्रणमैं निस दीस ।।
कवि नाम तासु शिष्य भाषा करि कही । रांमचंद्र मुनि जांणौं सही ।।६८।।

संबत दोहा

रचनाकाल १७२० गगन पांणि फुनि दीप ससि, हिमऋतु मगसिर मास ।
सुकल पक्षि तेरस दीने, बुधवार दिन जास ।।६६।।

मरदांनौ अरु महाबली, अबरंगसाहि नरिंद ।
तास राज मैं हरष सुं, रच्यौ शास्त्र आनंद ।।२००।।

सूरि गुणे साचौ सदा, जगत गुरु जिनचंद ।
प्रवल पडूरै परगटौ, दीपै ज्यूं रवि चंद ।।१।।

रचना-स्थान उतर दिसि खुरसांण मैं, बरनू दिसि प्रधान ।
सजल भूम है सरबदा, सकी सहर सुभ थांन ।।२।।

परदुख भंजण कै लिऐ, कीयौ ग्रंथ सुख कंद ।
चिंर लगि रहज्यौ सदा, जा लगि मेरू दिणंद ।।३।।

पुष्पिका :–

इति श्री पंडित पद्मरंग शिष्य रामचंद्र विरचते श्री रामबिनोदे मदन मोदक १, कांमेस्वर गुटिका २, कामकतूहल गुटिका ३, पुस्तपुरी थंभन गुटिका ४,

बंधेज बलबीर नाम गुटिका ५, सिंहबाहनी गुटिका ६, धातुखीण उपाय ७, नामर्द उपाय ८, गतबीरज सबीरज कूं गुटिका ९, हस्तकर्म उपाय १०, बीर्ज बंधेज लेप ११, सथंभ लेप १२, लिंग दृढ़ कर्ण लेप १३. योनि दुरगंध १४, लिंग स्थूल कर्ण उपाय १५, लिंग पीड कूं लेप १६, भग संकोचन उपाय १७, योनि पांणी करै तिसका उपाय १८, योनि दुरगंध उपाय १०, योनि सूल उपाय २०, कुच कठिन प्रफ्फूलित उपाय २१, कछ बिलाई थरोल्हा उपाय २२, स्त्री पुष्प आंवण का उपाय २३, ऋतु गर्भावण उपाय २४, स्त्री गरभ धरै छोडि बृध उपाय २५, मृत-बछा उपाय २६, नालि परावर उपाय २७, संतान उपाय २८, पुन शास्त्र साखि-धिकार नांम सप्तम समुदेस । सर्व गाथा ३०३ ।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | समुदेस | गाथा | २४६ | | | | |
| दुतीय | समुदेस | गाथा | १४२ | तृतीय | समुदेस | गाथा | २३२ |
| चतुर्थ | ,, | ,, | ३११ | पंचम | ,, | ,, | ३७६ |
| षष्टम | ,, | ,, | ३१० | सप्तम | ,, | ,, | ३०३ |

श्री रामविनोद समाप्तं । संमत् १८९५ का मीती भाद्रवा सुदि १२ । लिपीकृतं साधू गंगाराम जिला०

**१७७३. १२३६४ राम विवर-विजय गीत**

प्रारम्भ :– ।। श्रीमते रामानुजाय नमः ।।

श्लोक

सजलजलदगात्रं पंकजाकारनेत्रं । शिरसि धवल-छत्रं जानकी त्वं कलत्रं ।।
सुरपतिकृतमित्रं भूतले चैक पात्रं । दशरथनृपपुत्रं नौमि रांम पवित्रं ।।१।।

विवर-विजय गीतं रामचारित्रपुण्यं । रघुपति कृतमुग्रं पारमेष्ठ्यं पुनीतं ।।
प्रकृति-परम-रम्यं भाषया भाषयिष्ये । जनितजयमनन्यं राघवेशं पणम्य ।।२।।

भुवनविसदकीर्ति प्राणिनामाश्रयं च । असितासितस्वरूपमूर्विजाराममीशं ।।
सुमति-मति-प्रतापं अंतरंगे निधाय । विवर-विजय गीतं गीयते गाथयाद्य ।।३।।

प्रणम्यप्लवतां नाथं पावनं पावनात्मजं ।
शिवं सौख्यप्रदं वक्ष्ये महिरावणमर्द्दनं ।।४।।

उल्लंघ्य सिंधोः सलिलं सलीलं जनकात्मजायाः कृत शोक वह्निम् ।
आदाय तेनैव ददाह लंकां, नमोमितं प्रांजलिमांजनेयं ।।५।।

## सोरठा

गुरु पद पद्म पराग सन, निज मन मंजन कीन्ह ।
मम उर विमल विवेक जिय, हरषि कृपा करि दीन्ह ।।१।।

विवर कथा पावन परम, उमहि कहि वृषकेतु ।
सावधान हरि जान सुन, राम सुजस कर हेतु ।।२।।

## चो० (चौपाई)

श्री रघुवीर उदधि तट आयुउ । रावन समाचार सुनि पायउ ।।
सुकसारन अस कहा वहोरी । संग अनीक नांहि कछु थोरी ।।
तिनहि गोप्य अस पुछन लागा । वरनहु सेनप सहित विभागा ।।
सत्य कहहु चरपति सुभ वानी । चहौं सेन संख्या पहिचानी ।।
मृषा मोहि जिनि कहसि वढाई । भाल कीस प्रभुता अधिकाई ।।
तिन महि कौंन मुख्य वलवाना । का प्रभुता कहो प्रगट प्रमाना ।।
इहि विधि कहेउ दसानन जवहि । सुकसारन हंसि वोलेउ तवही ।।
नाथ दीख जस कपि समुदाई । भाव भेद तस कहों सुनाई ।।

## दो० (दोहा)

सुनहु तमीचरपति प्रवल, तुमहि कहत सद भाइ ।
संकर सपथ प्रमांनि पन, वरनन करत वनाइ ।।२।।

## चोपई

हम जव गये विभीषन साथा । देखेउ सेन सहित रघुनाथा ।।
मुख्य जूथपति जे हम देखे । वल प्रमान निज हृदय विसेखे ।।
पुनि कछु सुना सेन मह जाई । कहव सत्य कछु नाहि वडाई ।।
प्रथमहि दीख राम रघुनाथा । अनुज सहित कस वरनहि गाथा ।।
राज विभीषन कहु तिन सारा । पुरव तुम्ह सन कहे उदारा ।।
अनुपम वल अतुलित प्रभुताई । नाथ सुनेउ अस कपि कटकाई ।।
भानु विंव इव राजत नीके । देखत लघु प्रताप अति-हीके ।।
तापस वेस जुगल वलवीरा ! धन्वी गुन समुद्र अति धीरा ।।

अन्त :- दोहा

मारे इहं मारुति सुवन, दुख दायक सत्र सोधि ।
तुम निरभय विचरहु अवनि, कहहु न कछु प्रतिबोधि ।।१।।

सकुच न करिय उदार मति, होनहार सोई होय ।
पंची कृत सु प्रपंच वस, लखहि सुलच्छिनि (लोय) ।।२।।*

ग्रन्थाङ्क ३०२९४, पत्र संख्या ४५-४६ वें

अन्तिमांश :- चौपाई

[कथा माहात्म्य एवम् कथा स्रोत]

भूतल सप्त द्वीप नव खंडा । भएउ प्रगट प्रभु सुजस प्रचंडा ।।
तिहिँ अनुसार वहुत कवि गाँवहिँ । तदपि अपार थाह नहिँ पावहिँ ।।१।।

सकल सुनहिँ मारुति धरि भावा । लीन्ह जाचि रघुवर सन पावा ।।
जहँ जहँ राम कथा कलि गाँवहिं । स-पदि पवनसुत तहँ चलि आँवहिँ ।।२।।

सुनहि राम जस दिन अरु राती । कवहु न अघटत असुर अराती ।।
विवर विजय श्रीपति जो कीन्हीँ । वाँटत इंद्र सुरन्ह कहुँ दीन्हीँ ।।३।।

अमरापुर इह कथा अनूपा । गई तिनहिँ गाँवहिँ सुर भूपा ।।
तारपाँन कविवर इक भएउ । इंद्र तुष्ट मख तिहिँ निरमएउ ।।४।।

दोहा

कीन्हे प्रश्न सुरेस तिन्ह, तवते तहँ चलि आय ।
कहा लेहु इच्छित वरहि, संसय सोक वहाय ।।१।।

तारपाँन कर जोरि तव, कहा इंद्र सन एहु ।
जांन पाव भूतल भुवन, मोहि कृपा करि देहु ।।२।।

---

* अन्तिम पत्र अप्राप्त होने से इसी कृति की अन्य प्रति, जो प्रतिष्ठान में रामचरित-मानस के साथ उपलब्ध है, से ग्रन्थ का अन्तिमांश तथा पुष्पिका उद्धृत की जा रही है। ग्रन्थाङ्क ३०२९४, माप ४२X२० सें.मी.

चौपाई

इंद्र कहत सुनि कविवर भाई। भूतल सकल वस्तु भल छाई।।
विवर विजय रघुपति गुन गाहा। अहइ न अपर सकल चित चाहा।।१।।

अस कहि सकल कथा हरि गाई। सुनि सुभ वाँनी लिखेउ तिनि साई।।
तवतें प्रगट भएउ भुव माँही। गाँवहिं ताल प्रवंध लखाहीं।।२।।

सा वरनी कविवर कवि तुलसी। राँम प्रसाद सुमति हिय हुलसी।।
सज्जन सुनहिं राम गुन गाहा। करहिं न अचरिज लगि उतसाहा।।३।।

राँम अनंत अनंत कहाँनी। कलपाँतर जस अति सुख दानी।।
जिहि विधि जिहिं कवि जो सुनि पाएउ। तिहिँ विधि तस तिन वरनि सुनाएउ।।४।।

छंद

वरन्यौं सुजस तिहुँ लोक पावन स्याँम-घन श्रीराँम को।
कलि कलुप हारक जलधि तारक सरनप्रद सुख धाँमको।।
प्रभु जाँनि आपुन दास मो कहुँ भक्ति अविरल भाँवनी।
श्री रमन देहु दयाल स्वाँमिन सदा अविचल पाँवनी।।१।।

दोहा

सुन्दर श्रीपति सुजस सुभ, गाँवहि नर अरु नारि।
विजय विभूत विवेक वड, तिनहिं देहि त्रिपुरारि।।१।।

जिय चाहत जुग संपतिहि, तो श्री रघुवर गाय।
आँन भरोस विहाय भजि, दायक सुख समुदाय।।२।।

कोटि काँम अभिराम छवि, राम लखन सिय राँनि।
कविनाम मंगलीक मारुत सुवन, भजि तुलसी सुख साँनि।।३।।

संत कृपा रघुवीर पद, लगहि सु-मन ललचाय।
तिहिँ ते सत संगति सकल, करहु न आँन उपाय।।४।।

राँम कृपा हनुमत कृपा, कहेउँ सुजस अतिसार।
तुलसी जे अनुदिन रटहि, वढइ विवेक विचार।।५।।

क्षेपकस्थल सुन्दरकांड अनंतरै, जुद्ध करन की आदि।
विवरविजय गाँवहि सुनहिँ, ते सुख लहहिं अनादि।।६।।

जिनकै हरि गुन सौं न हित, नहि सतसंग विचार ।
तुलसी ते निज अंबकर, जोवन हरन कुठार ।।७।।

पुष्पिका :— इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कल्मष विध्वंसने विवर-विजय संपादनो नाम पंचमो सोपान समाप्ताः । मिति आश्विन सुक्ला नोवम्या ९ बार वृति बुधवारस्य श्री नृसिंग्रालय ग्रंथ समाप्तौ ।। ......................लिखि जगंन्नाथ श्री रामानुजदासोहं, स्व पठनार्थं । श्रीरस्तु । लेखकं मंगलानां च पाठकानां च मंगलं । मंगलं सर्वभूतानां भूपति भूपति मंगलं ।१। श्रीरस्तु ।

१७७८. १०९७० राम-सीता चरित्र

प्रारम्भ :— ।। दं० ।। ओ३म् नमः ।।

दूहा

सुखदायक सासण धणी, तारिक अरिहंत देव ।
कर जोडी तेहनै करु, नमस्कार नित मेव ।।१।।
निज गुर चरण कमल नमु, तीन तत्व दातार ।
कीडी थी कुंजर कीयौ, ए मुझने उपगार ।।२।।
दांन सील तप भावना, सीवपुर मारग च्यार ।
सरिखा छै तो पिण ईहा, सील तणो इधकार ।।३।।
पाप अठारें जीण कह्या, करो मति भव जीव ।
कीयां थी दुख पाडुवा, नरकां खावै रीव ।।४।।
हिंसा झूट चोरी अवन्त, ममता घणी विसेष ।
क्रोध मांन माया लोभ, वले राग ने द्वेष ।।५।।
कलौ वारमौ जांणीयै, तेरमै देवै आल ।
तिण थी कर्म बंधै घणा, ए मोटो चडाल ।।३।।
कलंक न दीजै केहनै, वलि साधनै विसेख ।
पाप करम सहु परिहरो, दुख सीता नौ देख ।।७।।
सील रत्न पालौ सहु, जिम पांमौ जसवास ।
सीतानी परैं सुख लहौ, पांमो लील विलास ।।८।।

सीताराम रावण तणी, लछमण वले सबंध ।
सावधांन थइ साभलौ, सील विना सहू धंध ।।६।।

ग्रन्त :-

संबंध सीता रांम नौ, चतुर हुवै ते सुण-ज्यौ रे ।
सुण ने हिया में धारजों, नित उत मांरा नांव धुण-ज्यौ रे ।
भावधरी सुण-ज्यौ सहू, सीता चरित थी में कह्यौ ए सगलौ विसतारो रे ।
ते साचौ करनै सरद-ज्यौ, पछे ग्यांनी वदें ते सारो रे ।।६।। भा०

सीता ए पाठ सूत्र तणौ, ग्रर्थ में घणो समासौ रे ।
लोक कह्यां थी जांण-ज्यो, पूंछ ज्यों पिंढत पासौ रे ।।१०।।भा०

ग्रंबिल नीवो एकासणौ, सुणउ वास करों छठ तेलो रे ।
सगत माफग थे धारजों, पाप करम नैं पैलो रे ।।११।।भा०

के इ साधनें श्रावक तणा, व्रत हिया में धर-ज्यौ रे ।
ज्युं सुख पामें जीव रा, पर भव सेती डर-ज्यौ रे ।।१२।।भा०

क्यूंही दीठों क्यूं इक वाचीयौ, क्यूं सुणीयौ वले सोइ रे ।
इण मै उछौ इध कौ हूवै, तो मिछामि दुक्कडं मोइ रे ।।१३।।भा०

विरूध हूवै ते टाल-ज्यौ, रांम चरित्र वले जोइ रे ।
कविनाम रिष चोथमलजी ईसरी कहें, संघ सुणिज्यौ सहू कोइ रे ।।१४।।भा०
रामायण मोटी घणीं, जांणै समुद्र ग्रगादो रे ।
र.स्थान जोडी जोधांणे जुगत सुं, देव गुरां प्रसादो रे ।।१५।।भा०
र.काल संवत् १८६२ सिद्ध, जोग ग्रायौ सारा रे ।
काती बद ग्राठम दिनै, मंगल मंगलीक वारो रे ।।१६।।भा०

पुष्पिका :- इति श्री रामसीता चरित्र संपूरण । संवत् ग्रठारै वरस ६७ रा चैत वद चोत लिखतु गुरा मधे माना ।

**१७८४. १०६६० रामाश्वमेध भाषा**

प्रारम्भ :- श्री रामाय नमः । श्री गणेशाय नमः ।

दुहा

बंदि प्रथम गुरपद सु-रज, निज सिर धरि सुख पाय ।
त्रिबिधि ताप तम दलन कहि, दिनकर सरिस सुभाय ।।१।।

निज देसिक गुर कञ्ज-पद, बंदहु करहु स-प्रीति ।
बिनु प्रियास जिनकी कृपा, माहा मोह दल जीति ।।२।।

प्रनवि सकल गुर पद कमल, पुनि जिति राज क्रिपाल ।
जिनके पद बंदन करत, मिटत सकल भव जाल ।।३।।

बांदि पारांक संचरन जुग, सुर तरू सरिस सुभाइ ।
सुमरिहु जामुन पद कमल, सरनांगत सुखदाय ।।४।।

राम मिश्र पद प्रनवि करि, कमल नयन पद-कञ्ज ।
नाथ मुनीस-हि बंदि पुनि, सठ गंजन भव भंज ।।५।।

अस रघुपति पद कञ्ज-गुन, परिहरि आंन उपाय ।
करहु ढिठाई ऐक अब, छिमहु सन्त समुदाइ ।।

चौपई

जिहि विधि जग्य कीन्ह रघुनाथा । बरनन करन चहौं सोई गाथा ।।
मसक चाहि जिमि नभ परकारा । मोर मनोरथ तिम संसारा ।।
जन विचार रघुबंस विभूषन । निज दिसि निरख प्रनत रूप पूषन ।।
करिहै पूरन आस निदांनां । भंजन करि मम दूखन नांना ।।
कवि प्रथम बुझाइ कहौं निज नांमा । संबन देस ग्याति पुनि ग्रांमां ।।
परिचय मधु-अरिदास नांम यह मोरा । माथुरि बंस जनम मति थोरा ।।
भानुसुता सुरसिरिति मझारा । पावन देस विदित संसारा ।।
नगर इष्टिका पुरी सुहावनि । निकट कलिंद सुता बह पावनि ।।

दोहा

रचनाकाल संबत बसु दस सत गुन हूँ, पुनि नवतीस मिलाइ ।
१८३९ बिसद मास आषाढ रितु, पावस सुखद बनाइ ।।

चौपाई

सुक्ल पक्ष तिथि द्वैज सुहाई । जीव चार मंगल सुखदाई ।।
हरष जोग पुनर्बस रक्ष्या । प्रकटी हरि जस बरनन इक्ष्या ।।
श्री रांमांनुज कुटम मंझारी । कीन्ह कथा आरम्भ बिचारी ।।
जिहि बिधि व्यास सूत सन गावा । श्रीं अनन्त मुनिवर-हि सुनावा ।।
तिमि में निज मति के अनुसारा । बरनहु रघुपति चरित उदारा ।।

कबित बिचार न जांनहू ऐकू। भेद पंगु गुंगादि अनेकूं ।।
पावन जीह करन हित भाई। बरनहु प्रभु कीरति सुखदाई ।।
ससि सुरसरि मराल पय फेनूं। अमल अनन्त गुनी छवि देनूं ।।

दोहा

सूत परासर तनयकर, जिहि बिधि भा संवाद।
प्रथमहि बरनहू सो कथा, सीताराम प्रसाद ।।४।।

अन्तः – चौपई

तुव प्राद मैं अहिकुल केतू। सुनी कथा बिस्तार समेतू ।।
करहुं बिनय प्रभु कवन प्रकारा। सकल भांति मैं दास तुम्हारा ।।
दुर्लभ रांम चरित मुहि दीन्हां। सकल प्रकार कितारथ कीन्हा ।।
इहि बिधि करि वहु बिनय मुनीसा। प्रेम प्रीति जुत नाऐउ सीसा ।।
सुनहु सूत यह चरित अनूपा। तुमही कहा मैं मति अनुरूपा ।।
श्री अनन्त मुनीवर संवादा। अति पावन पुनि समन विषादा ।।
अब तुम कहबूहहु हरखाई। तात कहौं सोई सकल बुझाई ।।
यह सुनि सूत चरन सिरु नावा। परमानन्द हृदय मह छावा ।।

छन्द

उर-छाव परमांनन्द पुनि कर जोरि पुनि बिनती करी।
प्रभु कीन्ह कृपा अपार मो-पर रांम कीरति बिस्तरी ।।
अब प्रनत पाल उदार करूनां सिन्धु मोहि जन जांनिये।
मैं भयो धंन्य बनाइ सकल प्रकार मन अनुमांनिये ।।

दोहा

पुलकि गात इहि भांति बंदि, कीन्हौं चरन प्रनांम।
हरखे व्यास उदार तब, पर्म कृपा के धांम ।।
मैं जड मनुज मलाय तन, संतत कुमति निधान।
बरन्यौ रांम प्रसाद यह, ग्रन्थ सुमति अनुमांन ।।१६।।

सोरठा

छिमहु सन्त समुदाइ, किन्ह ढिठाई बिपुल मैं।
कीजौ कृपा बनाइ, अबुध जानि निजु दिसि निरखि ।।१७।।

पुष्पिका :- इती श्री पद्मपुराणे पातालखण्डे सेस वात्सायन संवादे मधुसूदनदास कृते श्री रांमां अश्वमेधयौ नांम अष्टषष्ट्तिमोध्याय: ।।६६।।
।। इति श्री रांमा अश्वमेध संपूरण ।।

१७६७. १२८४२ (१६) रूपग दवावैत महाराजा अजीतसिंहजी री
( महाजनी लिपि में )

प्रारम्भ :- अथ रूपग दवावैत म्हाराजा अजीतसींगजी री द्वारकादासजी री कही।

दुहा (दोहा)

मन बुध मील कीधो मतो, सीमरां आद गणेस।
ज्यु राजा अजमाल नै, सवदां-डंबर कहेस ।।१।।
देवां अग वांणी जीतु, सेवां तो सुंडाल।
दवावैत अगीया दीयौ, वीद्या वयण त्रीसाल ।।२।।
प्रथम ही गणपत गुण नीधांन, पंगल नै ध्याया।
चोरासी बंध रूपग जात, जात का कहण जणाया ।।३।।

अैसा श्री गणेस सी-बुध का राजा।
उकत का अंबार, मुकत का अंबार, मुकत का दरवाजा।
तेतीस कोड देवतां का अगवांणी।
रुद्र-सा पीता, माता भी रुद्राणी।
मेक ही-सादंत हसती का-सा आंनन।
सीदुर-सा टीका, मुसा-सा वाहन।
भवर-सी नाभी, दरीयाव-सा उद्र।
रुद्र ही-सा रसाय आर मारुद्र।
अैसा श्री गणेस कुं प्रथम नमसकार कीजै।
म्हाराजा अजमाल कुं दवावैत कहीजै।
दुसरा नीमसकार सुरसुती कुं करणा।
सुमत की दाता, कुमत की हरणा।
हंस गमनी, हंस वाहनी देवी।
सुर नर नाग गण गंध्रव नै सेवी।
सुकल अंबर, सुकल भी वांणी।
ध्यांन धर ध्यायीयै अैसी धणीयांणी।

जगत की जणणी, जगत की माता।
अवीद्या की खंडणी, सुवीद्या की दाता।
जीन की कृपा कटाखि अवलोकण होवै।
तो सासत्र पुरान व्याकुरण कुं जोवै।
आगै भीं वेदव्यास बालमीक जैदेव-सां चीनी।
तीसकी कृपातैं रामायण भारत भागवत अस्टपदी सेसां कायब कीनी ।।*

अथ महाराजा वरनन :

ये तो म्हाराजांन के राजा, म्हाराज अजमाल।
खुरासांण कु खाग, हीदुसथांन की ढाल।।
मात लोक कायद, पचीसमां अवतार।
सैसार सीरोमण, सैसार साधार।
जीसका प्रवाडु का पार कुंण कव पावै।
अैसा कुंण है सो अगम कुं सुगम कह वतावै।
तीसका दींसटंत दरीयाव की लहर, गीगन के तारे।
रेण के दांणे, गीगन के फुहारे।
उतर चहो पंथ यीस्वर की माया।
खगेस का वेग, वाराह की काया।
गीता का अरथ नारद का न्वाला।
अजमाल का प्रवाडा, कुण कहणे भी वाळा।
पै जैसा जाणीयै, तैसा वखांणीयो।
ओर कवेसुर की उक्त देख ओर तान आंणीयौ।

अन्त :- दुहो

मेरै मेरा सायीयां, अजमल तु आधार।
जीउं ज्यां जपसु सुजस, हो संसार सधार।।
बाधा घर-घर बारणै, मैगल मारु राव।
कीसन सदामां ज्यु कीया, सेवग जसा सुजाव।।
जीनां-धीन कमायीया, जीनां धणी अजीत।
सोहड सुपाल स-भागीया, चारु वरण नचीत।।

---

* इसके आगे और स्तुति-परक अंश है, जिसे छोड़कर आगे का अंश उद्धृत किया गया है।

जुनां सांसण पाळीया, दीधा नवा अपार ।
अजमल सुं जोड नै-को, हींदु ही दुकार ।।
कर सीर ढोयी लकडी, सांझा आग संजोय ।
तप अजमल भेला तपे, जीके हजुरी जोय ।।
सवही कीधी बंदगी, अपणी पोहच प्रमांण ।
पायी जां डोढी अपः, लजे यघ के राजांण ।।
अजमल गजमल अभनोम, नीजर बीव्योक नीराट ।
जोयां सांमो जोवजे, अण जोयां ओचाट ।।
म्हाराजा अजमाल, मुख दीठां रोजी मीलै ।
पग परस्सां अछपाल, जीउ-जां जसवंतसीगउत ।।
खमा-खमा आखै पलक, देव खमा दाखंत ।
तवौ खमा हींदु तुरक, जतन अजीत जपंत ।।
ली अजमेंर दुझाल, सांभर कीधी खालसै ।
अ-वातां अजमाल, जायउ जसवंतसीघउत ।।
छतीसै ठकुरायीयां, अजमल परै न वाय ।
मैगल हंदा खोज मै, सब ही खोज समाय ।।
दवात्रैतडा दस दुहा, तीन कवत दोय गाहा ।
रचनाकाल १७७२ — सतरसै समत बहोतरैं, कव द्वारै कहीया देवैत ।।

पुष्पिका :— संपुरणं । समन १८१०० (१६००) रा वसाख वद ४ वार मंगल लीखतं खीडया हरसुख । वाचै जीणां सुं रांम रांम ।

**१८३०. १०६७५ वाक्य-वल्लरी**

प्रारम्भ :— वाक बिलरी लिख्यते ।*

अकंटक=निरभयः, बेखटक । अखारा=कुसती-जगह । अखिल=संपूर्ण, विल्कुल । अखंड=पूरण, एकरस । अग=स्थावर, अचल । अगम=कठिन । अगवान=आगे लेने वाला । अगाध=गंभीर, गहरा । अघ=पाप । अघात=

* अकारादिनुक्रम से चुनिंदा शब्दों के शब्दार्थ दिए गये हैं ।

चोट, धक्का । अचरी=मसकरी । अचंभा=अचरज । अछत=बरतमान रहते । अज=ब्रह्मा, बकरा, अजन्मा । अजा=माया । अजिर=अगन (आंगन) । अजिन=मृग चरम । अटपट=कठिन । अटारी=कोटा, छत । अनमासिध=आठ प्रकार की । अत(र)का=जो जानने योग नहीं । अतिथि=अभ्यागत,पाहुंनो । अतोवा=वेसुमरा । अथाईसभा=मजुलिश । अद्भुत=जो कभि हुवा नहीं । अदिन=बुरो दिन । अधम=पापी, नीच, चंडाल । अधरवोट=नीचे, अंतरिक्ष । अधर वृद्ध=अल्प बुद्धि, ओठम बुद्धि । अनुख=बुराई, द्वैस, वैर । अनिट=अनवट, थल, अचल । अनयास=सहज से, वे-मेहनत । अनल=आग । अनवद्य=निर्दोस, निरुपाय । अनामय=निरपुराध, आरोग । अनिल=वायु, हवा । अनीकसना=झूठ । अनीह=कर्मरहित, निचेष्ट । अनुचर=सेवक, दास । अनुज=छोटा भाई । अनुदिन=दिन-दिन, रोज-रोज । अनुराग=प्रीत, सनेह, मुवहन (मुहब्बत) । अनुसासन=सिक्षौ, उपदेस । अनुसार=पागलायक? । अनुहार=अनुरूप, मुआफिक । अनुप=उतिम, उपमारहित । अनेस=नकारा, बुरा । अन्यथा=झूठ, उलटा । अन्हाना=स्नान, गुलस(गुसल) । अपगति=दुर्गति, अपनी गति । अपडर=कुमारग, अपना डरि । अपवर्ग=मुक्ति, मोक्ष । अपवाद=निंदा, (च)धवाव, दोस । अपर=दूसरा, अन्य । अपार=वेसुमार, अगम, अपलोक । अपयस=निंदा ।

अन्त :-

सीससूर्ती=सुअन, पवित्र वेडा । सुआर=रसोईदार । सुकंठ=सुग्रीवदार । सुकेतु-सुता=ताड़का । सुगाना=सुवया करना । सुखमा=सोभा । सुठि=अति । सुनासीर=इंद्र । सुगम=सुविहितउ । सुभग=सुंदर । सुसेन=खूल । सुर=देवता । सुरतरु=कलपवृक्ष । सुरसरि=गंगाजी । सुरगुरु=वृहस्पति । सुरवीथि=न(म)हल मारग । सुकरखेट=वाराह क्षेत्र । सूतना=सोवना । सूरप=सूप । सूप-सासत्र=रसोई की विद्या । सूत्रपरकठ=पुतली नचाने वाला । सेतु=पुल । सेल=सांग । सैन=इसारा, सनकारना । सोपान=निसेनी, सिढी । सोहर=सुंदर । सोहागनि=अहिवाती । सोमित्रि=लक्ष्मण । सोरभ=गंध, आज(म्र) वृक्ष । सोह=संशय, कसम । स्यंदन=रथ । संजोउ=सामग्री । संदोह=संमूह । संपुट=डव्य । सपेला=साँप का बच्चा, मदारी । संसृति=संसार । साँधा=लगावो । साँइदोधो=खानद्रोही । हतना=मार डालना । हते थे=रहे, मारे गये । हर=महादेव । हरहाइ=हर हठ गो? । हरांस=लादगी । हरि=विष्णु, सूर्य वानर, सिंह । हरुआ=हलका । हाट=बजार । हाव(ट)क=सोना ।

हिम=पाला । हिमकर=चन्द्र । हिमाउपला=वनोरी? । हिय=हृदय । हीन=नीच । हुतर्वाद=तरफ से । हुनना=हाल करना । हुनकना=उछलना । हुलसी=हरखी, तुलसीदासजी की माता । हू ह हू ह=सबद । हेतु=कारण । हेठ=नीचे । हेरना=देखना, ढोंढना । हेला=ग्रनाज(द)र । होन=होनी, होनहार । क्षत=घाव । क्षमा=पृथिवी । क्षार=खारा, खाक । क्षुद्र=छोटा, नीचा । क्षेम=कल्याँण । क्षोप(भ)=मोह । संपूर्ण ।

**१८५४. १२३५२ विनय-पत्रिका-सटीक**

**प्रारम्भ :–** ।। श्री मद्रामचरणाय नमः । श्री गणेशाय नमः ।
अथ विनय-पत्रिका सटीक लिख्यते ।

कवित्त

तुलसी प्रसाद हिय हुलसी श्री राम कृपा,
सोई भव सागर के पुल-सी ह्वै लसी है ।
जाकी कविताई ग्रनरथ तरु-टंगा सम,
गंगा की-सी धार भक्तजन मन धसी है ।।
परम धरम मारतंड उर व्योम उव्यौ,
कांम क्रोध लोभ मौह तम निसि नसी है ।
वाही कै प्रकाश जम-गन मुह मसि लाई,
ग्रति सुख पाई जिय मेरै ग्राइ वसी है ।।१।।

दोहा

नाम माहात्म्य
द्वै तुलसी को गहि रहो, जो चाहत विश्राम ।
वाहर भीतर सहज ही, होत ग्रधिक ग्रभिराम ।।१।।
तुलसी माल धारन किए, वाहिर होत सुवेख ।
तुलसी कृत के गहत ही, ग्रचल भक्ति की रेख ।।२।।
कलि जीव कल्याण हित, भाषा ललित ललाम ।
किये प्रबन्ध बनाय जेहि, तेहि कौ करू प्रनाम ।।३।।

टीका (प्राक्कथन)

प्रथम श्री मद्रामायण ग्रन्थ को सन्दर्भ सत्संग विलास नाम कियौ, तहां श्री गोस्वामी तुलसीदास जू के ग्रनुग्रह-हुते उनके किये ग्रन्थन को ग्रर्थ

यथा बुधि यत्किञ्चित् बूझि परची । श्री विनय पत्रका श्री गोस्वामी को अन्त-ग्रन्थ है । सर्व सिद्धान्त को निरूपण, यह ग्रन्थ के बिचारे तें प्रतीत होत है. तहां यद्यपि ग्रन्थ अत्यन्त कठिन है, तथापि श्री गोस्वामी के कृपा को अवलंब करि यथा मति कछु अर्थ लिखे है ।

मूल-- चौपई

गाइये गणपति जगवन्दन । शंकर सुग्रन भवांनी नन्दन ।।
सिधि सदन गजवदन विनायक । कृपा सिन्धु सुन्दर सव लायक ।।
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता । विद्या वारिधि बुधि बिधाता ।।
मांगत तुलसीदास कर जोरे । बसहि राम सिय मानस मोरे ।।१।।

टीका—'गणपति' शब्द तैं ऐश्वरय सूचित किये, 'जग वंदन' पद करि जगत पूज्यत्व जनाए, 'सुग्रन ओ नन्दन' दौनों पद पुत्र वाचक है, तहा अर्थ की पुनरुक्ति देवे को आशय ऐसो है, कि कोऊ की माता श्रेष्ठ होई है, कोऊ को पिता, इहां माता-पिता दोऊ को श्रेष्टता जनायबे के निमत, पुनरुक्ति पद दिये । यदा, 'शिवजी के पुत्र, भवानी के नन्दन' नाम आनन्द करता यह हेतुते, कि श्री गणेशजू को गर्भ ते आविर्भाव नही है । 'सर्व सिद्धिन्ह को गृह' अर्थात् श्रीगणपति कृपा-वितरेक काहू कों कोऊ सिद्धि की प्राप्ति नही होती । 'गजवदन' पद, ध्यान के अर्थ जानना । 'विनायक' नाम, विघनन्ह के स्वामी, जो कोऊ जीव ध्यान पूजन वितरेक कार्य आरम्भ करे है, ताकौं विघन के हरता, एह भाव है । 'कृपा के समुद्र' अर्थात् शीघ्र दयालु होवे को सुभाव जाको, पूर्व 'गजवदन' पद दिये, ताते भयानक, कोऊ वूझे, यह निमित्त, सुन्दर कहे, 'सव लाइक' पद को एह भाव है कि केवल इह लोक को सुख ऐश्वर्यादि ही के दाता नही. किन्तु योगीन कों, परलोक सम्बन्धी सुख के भी दाता, एह भाव है । लड्डु है प्रिय जाकों अर्थात् थोडे पूजा मो प्रसन्न होवे को स्वभाव जाको । मुद नाम अन्तरंग आंनन्द, मंगलम् नाम वाह्य उत्सव विवाहादि के दाता । अत (अर्थात्) लेना थोरा, देना अनन्त । सुख विद्या के समुद्र, अर्थात् जो काहू को विद्या होइ है सो इन ही की कृपा कटाक्ष ते, 'बुद्धि के विधाता' नाम ब्रह्मा अर्थात् जाके अनुग्रह वितरेक बुद्धि को प्रकाश नही होत, ऐसे जो श्री गणपति तेहनें तुलसीदास अति नम्र होकरि जाचे है, कि श्री जानकी रघुनाथ जू मेरे अन्त:कर्ण मो वसे, याको यह भाव भयो कि भगवत् ...........कों भगवत वितरेक मौक्ष पर्य्यन्त वासना नही होति, यह भाव है ।।१।।

अन्त :-

मारुति मन रुचि भग्त की लखि लखन कही है ।
कलिकाल हूँ नाथ नाम सौं प्रतीति प्रीति एक कंकर की निबही है ।।
सकल सभा सूनि लै उठी जानि रीति रही है ।
कृपा गरीब निवाज को देखत गरीब को साहस बां गही है ।।
बिहंसि संम कह्यौ सत्य है सुधि मैं हूं लही है ।
मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ सही है ।।२७९।।

टीका

गोसांई की यह प्रतिज्ञा रही हे कि यावत स्वीकार मो-को न करेंगे तावंत विनय न छोड़ूगो, यह निश्चय को जानि, महावीर जू कृपा करि रघुबर के दरबार की बात गोसांई तें कहत हैं, कि मारुति जो मैं, अरु श्री भरत जू कि रुचि लखि, नाम देखि, श्री लक्ष्मण जू ने कही हैं कि हे स्वामी, कलिकाल कु ऐसे काल मां, आपके नाम सौं प्रीति-प्रतीति एक कोऊ आप के दास की निबहि गई हैं । श्री लक्ष्मण जू के कहवे मो यह हेतू है कि जो अति निकट रहत हैं, सो विशेष तै मुह लगा होत है, तहाँ श्री भरतादि सभा के अधिकारी है, अरु श्री लक्ष्मण जू महल अति एकान्त स्थान भी जुदा नहीं रहते, तेहतें स्वामी सों ढीठ हैं । सब की रुचि, अरु अपनी भी प्रसन्नता बूझि कहे, सकल, जो अयोध्या की सभा, सो श्री लक्ष्मण जू को बचन सुनि लै उठी, नाम बोलि उठी, कि जानी रीति रही हैं । नाम हम सब नी जानत हैं । अर्थात् श्री भरतादि मुख्य स्वामी के अंग, ताकी रुचि, अरु श्री लक्ष्मण जू सदृश प्राणप्रिय, सिपारस करने वाले, तेहि बात कौं, को प्रमाण न करे, तेहि समैंमो सबके बचन कों सुनि, तब श्री भरत जू बोले कि तुम सब सम्यक् नहीं बूझे, वह दीन जीव क्या निवाहेगो, गरीबनिवाज जो स्वामी, ताकी कृपा ने, हम सबके देखते, तेहि गरीब को, साहस नाम हठतें बांह पकड़ी हैं । अर्थात् स्वामी की कृपा तें, नाम-बिषें बाकी निष्ठा कौ निबांही हैं । सब की सुनि, तब स्वामी हंसि करि कह्यौ कि यह सत्य हैं, मैं हूं ने सुधि पाई हैं । तहां केहतें सुधि पाई हैं, यह नहीं कह्यौ । अरु हँसि बोले, याको यह अभिप्राय हैं कि पहले तो श्री जनक नन्दिनी महारानी को विनय करि गुसांई प्रसन्न किये हैं । समय पाइकै वाहि महारानी ने सई की है, तेहि हेतु तै नाम नहीं कहे, यह सब समाचार सभा की अरु स्वामी की प्रसन्नता, श्री महावीर कहि करि, गोसाईं तें कहत हैं कि हे तुलसी की अनाथ, जो तू, ताकी रघुनाथ के दरबार मो सहीं परी, नाम गुलामन्ह

मो लिख्यौ गयौ, अब आनन्द हो करि माथ नावत नाम-प्रणाम करत रहूं । विनय करवे को कछू प्रयोजन नहीं बनो, नाम सब प्रकार तें तेरी बनी । यह रीति तें गोसाईं कृतार्थ भये ।।२७०।।

इती श्री तुलसीदास कृता विनय पत्रिका समाप्ता ।

दोहा

टाकाकार भोज वंस अवतंस कहि, जै प्रकाश महाराज ।
रजधानी डुमराव मै, हैं तिन सुभग समाज ।।१।।

तिनके लघु भाई सुहृद, शिवप्रकाश जिहि नाम ।
तिन ने यह टीका करी, सकल शास्त्र को धाम ।।२।।

रचनाकाल समत उगणीसैं पैंतीस का, भाप्रव बिधी प्रमानि ।
१९३५ तिथि नमी गुरु वार कूँ, ग्रन्थ सम्पूरण जानि ।।३।।

**१८९३. १२०६७ (२) वेदान्त अद्वैत-अद्भुत नाटक**

प्रारम्भ :— ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ श्री ग्रंथ वेदांत अद्वैता-अद्भुत नाटक, दरजी देवकृष्ण कृत लिख्यते ।

सोरठा

श्री गनपत को नांम, त्रिघन विपन दाहक अनल ।
सब देवन सुख धांम, जगत ताप नासक प्रभो ।।१।।

दुहा

जा अग्यान सु भांन ह्वै, यह मिथ्या संसार ।
नस्यो सु ताकै बोधतें, सोहं सुध अपार ।।२।।

सुख सरुप निज आत्मा, चेतन स्वयं प्रकास ।
जा वृत्ति मै भांन ह्वै, जाग्रत कहिये जास ।।३।।

अन्य वृत्ति निंद्रा मई, जामैं जगत प्रतीत ।
तामै सुख दुख स्वप्न सो, यह अग्यांन की रीत ।।४।।

ता अग्यांन के नास हित, कहू वेदांत विचार ।
सुनै वचन जागै पुरुष, निंद्रा स्वप्न निवार ।।५।।

अन्त :-

सता व्योहारी ले कह्यौ, प्रतीभास को भांन ।
देवा अद्भुत ग्रंथ मैं, परमारथ पहिचांन ॥१३१॥

तातैं अद्भुत नाम दिय, है अद्वैतानंद ।
भाषा सुगम विचार किय, पढै सुनैं सुखकंद ॥१३२॥

छिनक काली व्यापी सुप्न, ह्वै अनाद को भाव ।
तैंसे ही जग को जनम, आतम मांहि लखाव ॥१३३॥

सो आत्म के ज्ञान हित, कह्यौ अर्थ संछेप ।
भूल चूक मति को धर्म, लखो सुज्ञान अलेप ॥१३४॥

चतुर भांत के पुरख जग, पांवर विषई जान ।
जज्ञासु अरु मुक्त पुन, सो ये कह्या वखांन ॥१३५॥

पांवर भोगा शक्त मैं, विषई भोग-रू दान ।
जज्ञासु समझ्यौ चहे, मुक्त अकृत निधांन ॥१३६॥

जीव व्रह्म ह्वै वसन सो, वाक्य सुधा गो जांन ।
कविनाम लक्ष अर्थ कर एकसी, दरजी देव प्रमांन ॥१३७॥

पढै पढावैं एकचित, सुनैं सुनावै ज्ञांन ।
व्रह्म लौक सुख भोगवै, अंतर मुक्ति निदांन ॥१३८॥

सोरठा

हृदैरांम महाराज, ता सिख मोतीरांमजी ।
सो गुर संग समाज, बाल बुद्ध सुध बुद्ध किय ॥१३९॥
अखैपुरी अखैराज, दियो अखै वित ज्ञान सो ।
जा सुख संग समाज, गह्यौ सुदृढ सिद्धांत मत ॥१४०॥
र. काल रिखी चंद पुन पेख, निधि धरा सँवत सवै ।
१९१७ आसु सुकल पख पेख, बीज सोम पूरण जवै ॥१४१॥

पुष्पिका :- इति सकल सिद्धांत-सार परमहंस मत दरजी देवकृष्ण कृत भाषा अद्वैत-अद्भुत नाटक ग्रन्थ समाप्तः । संवत् १९२६ रा वर्षे मिति पोष सुद ७, सप्तमी अर्क वासरे । लिख्यंत वोरा चंदलाल, श्री जोधनगरे [illegible]स्तु । शुभं भूयात् ।

२००८. १०६२४ (१) **संतदासजी की बाणी**

प्रारम्भ :- अथ स्वामीजी श्री संतदासजी की बांणी लिख्यते ।
अथ साखी : गुरदेव कौ अंग लिख्यते । सत्त ।

अणभै पद परकास को, दायक सत गुर रांम ।
अनंत कोट जिन साहि की, ताहि करूं परनांम ।।१।।

अंग [गुरुदेव को अंग]

सत गुर का ऐको सबद, मन कोई लेवै मांन ।
तो सहज होत है संतदास, मुसकल सूं आसांन ।।१।।
सतगुर कीन्ही संतदास, मुसकल सूं आसांन ।
रांम रांम की होइ रही, रोम रोम रज ध्यांन ।।२।।
संतदास हमकूं कीया, सतगुर बड़ ईसान ।
देह छूटा छूटे नहीं, पारब्रह्म सूं ध्यांन ।।३।।
संतदास तिहूं लोक मैं, एह सिरोमणि संत ।
पूरब जनम का बीछड़्या, सो ही मिलाया कंत ।।४।।
सतगुर मेल मिलाईया, सुरत सबद का संग ।
अब छूटत नांही संतदास, लगा करारी रंग ।।५।।
सतगुर बड परमारथी, ग्रैसी देह बणाय ।
धरीया मुलक छुडाय कर, अधर मुलक ले जाइ ।।६।।
चौरासी धरीया मुलक, जामै सुर नर रहे समाइ ।
अधर मुलक है रांम नाम, जाहां जन पहूच्या जाइ ।।७।।
तीन लोक सूं अलध सुख, लाधत नांही कोइ ।
सतगुर लाधा संतदास, सुख सूं मिलीया सोइ ।।८।।*

अन्त :- अथ आरती लिख्यते

ग्रैसी आरती करौ मेरे मनां, रांम न बिसरूं एक छिनां ।।टेक।।

देही देवल मुख दरवाजा, बणीया अगम त्रुकटी बाजा ।।१।।
सतगुरजी की मैं बलि जाई, निस दिन जिभ्या अखंड ल्यौ लाई ।।२।।

---

* 'अंगों' के बाद 'ब्रह्म-ध्यांन', 'भरमतोड' शीर्षक से दो ग्रन्थ और लिखे गये हैं । बाद में आसा राग के तीन पद हैं, अन्त में आरती है ।

दुतीए ध्यांन हिरदै भया बासा, प्रम-मुख जाहां होइ परकासा ।।३।।
त्रतीये ध्यांन नाभि मधि जांहीं, सुनमुखि भया सेवग जांहां साईं ।।४।।
अब जाइ पहुंता चौथी धांमां, सब साधन का सरीया कांमां ।।५।।
अनहद नाद झालर झुणकारा, प्रम-जोती जांहां होइ उजीयारा ।।६।।
कोई कोई सन्त जुगति एह जांणी, जन संतदास मुकति भए प्रांणी ।।७।।

पुष्पिका :- इति आरती संपूरणं । अथ बाणी का संख्या कौ ब्यौरो ।
स्तुति की साखी ५०, साखी १३७८, अंग ५५, रेखता ४, ग्रन्थ २,
पद ३, आरती १, सरब-सबद १३८८ संपूरणं ।

अथ स्वामीजी श्री संतदासजी धांम-प्रापति हुवा जी समैं को कुंडल्यौ

१८०६ अठारा सै षट ब्रष मैं, संत भए निरकार ।
बुदि फागुण तिथ सपतमी, बार सनीसर वार ।।
बार सनीसर वार डारि, कै अन्यंत सरीरा ।
प्रथ मही मिलि रहे जसैं. घट धरीयो नीरा ।।
परा परै पद लीन था, भिनि दिष्ट रूप आकार ।
अठारा सै षट ब्रष मैं, सन्त भए निरकार ।।१।।

दुहा

संकलन-कर्त्ता दया संत माराराज करि, मम उरि धरचौ हुलास ।
सतगुर अग्या पाईयौ, अंग जोडि प्रकास ।।१।।
नवलरांम बंदन करै, संत चरन सिर नाइ ।
भूलि चूकि सब बकसीयौ, मैं तुम्हरी सरणाइ ।।२।।
सं. स्थान साहिपुरै सतसंग मै, गुर अग्या उरि धारि ।
नवलरांम अंग बांधीया, बांणीं सोधि बिचारि ।।३।।
सं. काल अठारा सैं ब्रष तीस कै, बैसाख सुकल पख होइ ।
१८३० तिथ तेरसि बुधवार कूं, अंग भया संपूरण सोय ।।४।।

इति स्वामीजी श्री संतदासजी की बांणी अणभै संपूरणं ।

स्वांमीजी श्री कृपारामजी धांम प्रापति हुआ जी समै कौ किवत

१८३२ अठारा सैं बतीस ब्रष भादू सुदि होय ।
छठ सुक्र दिन पहर डोढ उदोत जसोई ।।

करत कूच क्रिपाल दरस सब ही कूं दीन्है ।
झूठी झूंगी डारि परम पद बास जु कीन्हां ।।
सरणैं सन्त दयाल कैं नगर दांतडै धांम ।
साध सिर्ष सवग मिलै कहत रांम ही रांम ।।१।।

रांम । रांम । रांम । रांम । रांम । रांम । रांम ।

२०३५. १२३६४ सत्यार्थ भास्कर वेद

प्रारम्भ :- ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ सत्यार्थ भास्कर वेद ।।

सन्यासी दयानंद सरस्वतीजी के वेद विसे धी-मतौं का खंडन ।

सन्यासी दयानंद सरस्वती जी के वनाए सत्यार्थप्रकासादि ग्रंथ पढ़कर प्रसंन होकर महाराज की वार-वार प्रसंसा करता हूँ । इन ग्रंथौं से जाना जाता है कि महाराज की द्रष्टि स्वदेसोन्नति पर विशेष थी, और सारे धर्म कर्म भी आपके यहीं तक थे । भला, देसोपकार ऐसा उद्योग करनां क्या साधारण मनुष्य का काम हैं । देखीए, स्वामीजी महाराज का लेख, पूर्ण प्रकास करता है । किस प्रकार आर्य देस वासी पुरूष देस वासियों की समता करें और आनंद भोगैं । वास्तव मैं इस वैभव के प्राप्त कराने वाले की अल्पायु मृत्यु हौना उक्त श्रेयाभिलाखियौं की प्रारब्ध का खोट हैं, और अत्यंत सौचनीय हैं । इस वात को सभी विद्वान जानते है कि कारण ही सैं कार्य होता है । विना कारण के कभी कोई कार्य नहीं होता । जैसा कारणभावात्कार्यभाव: वै० अ० ४, आ० १, सू० ३ । कारण के होने सें कार्य होता है ! इससे जानां जाता है कि मन्वादि महर्षियों सैं आरोपित सत्य सनातन वैदिक धर्म के मेटनें कौं अपंनी धांगा धींगी करने मैं सन्यासी दयानंद सरस्वतीजी का कारण निम्नलिखित कारणों में भी एक कोई निम्न होगा ।

अन्त :-

प्रति ग्रह्यंतु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातर: ।

इस्सें अनंतर द्वार पर आए हुवे अतिथियों को आदर सत्कार सें भोजन करावै, यह आर्य ग्रहस्थियौं का सत्य सनातन धर्म है । वैदिक नित्य कर्म संक्षेप सैं लिखे हैं सो अवभी सव धार्मिकौं कौं यथाशक्ति अवस्य ही नित्य-प्रति करि कैं पूर्ण कल्याण कौ हौना चाहियै ।

पुष्पिका :- इति श्री सत्यार्थ भास्कर वेद समाप्तं, उत्रार्द्ध । इदं लिखितं वैष्णव गोवर्द्धनदास आयुर्वेदी निरंजनी, नागोर मध्ये, कार्तिक कृष्णा दसम्यां दिने, संवत १९४७ । स्वयं पठनार्थम् इदं पुस्(त)कम् ।

२०३९. १०७०२ (१) सदैवच्छ सार्वलिगा री कथा
( सचित्र )

प्रारम्भ :- ।। ई० ।। अथ सदेवछ सावलिगा री कथा लिख्यते ।
प्रथम पुरब भव कहे छे ।

दूहा

नाय सुतारां नीर वहण, सुगणा करि सलांम ।
सावलिगा सुंदर सरस, तेण भवर इण नांम ।।१।।

श्लोक

लिखित्वा चित्रगुप्तेन ललाटेक्षर-मालिका ।
न सामार्जियतु संक्या पंडितात्रिदेशेरपि ।।१।।
[ न सम्मार्जयितुं शक्या पंडितैस्त्रिदशैरपि ]

दुहो

लिखत लेख सुंदर लिख्या, सावलिगा सु प्रसात ।
व्याह तणो जे अवर वार, वणि अचंभव वात ।।२।।

वारता

पहिले भव, सुगण मातमा रो नांम, सुजांणसिंह पंचोली सिकदार हुंतो । सदेवछ रो नांम, मनोहर सुत्रधारवी हुंतो । सावलिगा रो नांम, रुपमती अस्त्री हुंती, मनोहर सूत्रधारवी ने परणाई हुंती । एकदा प्रस्तावे मनोहर सूत्रवी परदेश हालीयो । घणा दिवस हुआ । तीवारे रुपमती–ये सुपन लाधी, तीवारे जांण्यो, मारो भर्त्तार कूसले नही, हुं तो नवी घर करिस्युं । ति-वरी माधव इसे नांम, उणहीज नगर मे सुत्रधारवी रहे छे । तिण सुं (त्र) धारे चारी(चँवरी) सजाई कीवी । तीण समे सुत्रधारवी मनोहर नांमे परदेश थी आयो । रुपमती मनोहर रा घर-मां-सु तयार होय ने जावे छे । ती-वारे मनोहर रुपमती नुं देख ने, माधव ने कह्यो, आ तो स्त्री मारी छे, तुं कां लेजावे छे । इयूं करतां माहो-माहे कलेस उपनो । झगडो करता बेहु जणा रुपमती स्त्री सहित जहां सुजांणसिंह हदफर हुतो, तहां गया ने कह्यो इण वात रो न्याव करो । ती वारे सुजांणसिंह बोल्यो, ए तो रुपमती मनोहर री छे । माधव ने कह्यो तु वड-वेडो ले ने घरे जा । इसो

न्याव कीयो ने वले कह्यो जे रुपमती ने मनोहर गमन करसी तो बीजे भव मनोहर रो नांम सदेवछ कुंवर होसी, ने रुपमती रो नांम शावलिगा कुवरी हुसी । ऐ वेहु सुख भोगवसी । तीवारे माधव वडवेलो ले ने घरे गयो । इसो न्याव कीयो । ती वारे माधव ने वेराग उपनो । तापस हुवो । कासी करवत ले ने कह्यो, रुपमती मारी स्त्री हुंजो । इसो नांम ले ने मरण पांम्यो । पूरब भव रो लेख इण भव मीलसी ।

अन्त :– वात

सदेवछ अमरावती नगरी आयने डेरा कीया । पछे माहे जाय राजाजी रे पगे लागा । राजाजी वहुत खुसी हुवा । सावलिंगा, राजा री कुवरी ने सासु रे पगे लागी । पछे तीनु ही रांणीयां सु सोख भोगवंता च्यार बेटा हुवा । तीनु ही स्त्रीयां सु सुख भोगवे छे । इम अनेक प्रस्तावि सदेवछ ने वेराग उपनो । संसार असार जाण पुत्र ने राज्य दे ने आप अतीत व्रत आदरचो । पछे भली गते गयो । शावलिंगा पीण शील पाल ने भली गत गई ।

दुहा

सारद प्रसादि करी, शील तणे अधीकार ।
भणे सांभले तेह नर, सुख पांमे संसार ।।१।।
वे-वे धक जे वांचे सुणे, वंछित पुजे हाम ।
जिम शावलिंगा सुख लह्यो, सदेवछ सुख ठांम ।।
मीठा मन का भावता, कीया सरस वखांण ।
अण-जांण्या मुरख हसे, रीजे चतुर सुजांण ।।३।।
रचनाकाल संवत १६ छाछठे, विजया दशमी रविवार ।
१६६६ चतुर चाह चोपी रची, मुनि केसव सु वीचार ।।४।।

इति श्री सदेवछ री वात संपूर्ण ।

सचित्र पत्रों का विवरण:—

| क्रमाङ्क | पत्राङ्क | क्रमाङ्क | पत्राङ्क | क्रमाङ्क | पत्राङ्क |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | १ बी | ५. | ४ ए | ९. | ६ बी |
| २. | २ बी | ६. | ४ बी | १०. | ७ बी |
| ३. | ३ ए | ७. | ५ बी | ११. | ८ ए |
| ४. | ३ बी | ८. | ६ ए | १२. | ८ बी |

| क्रमाङ्क | पत्राङ्क | क्रमाङ्क | पत्राङ्क | क्रमाङ्क | पत्राङ्क |
|---|---|---|---|---|---|
| १३. | ९ ए | १९. | १३ बी | २५. | २३ ए |
| १४. | ९ बी | २०. | १७ बी | २६. | २४ ए |
| १५. | १० ए | २१. | १८ बी | २७. | २५ ए |
| १६. | १० बी | २२. | २० ए | २८. | २६ बी |
| १७. | १२ ए | २३. | २१ ए | २९. | २७ बी |
| १८. | १२ बी | २४. | २२ ए | ३०. | २८ बी |

**२२२४. १०८४२ (२) स्फुट-कवित्त-संग्रह**
**( राठोड़ां रा )**

छाडो राव जालण तणो, जालण कांन सुतन ।
अै धर अतरी भोगवै, वेंखा न पुगै मन ।।१।।

सैना पंग राज वरदायीसेन सेतरांम सीहा,
आसथांन राव धुहड सुजांन है ।
छातराय पाल कंन जालण नरेस छाडा,
वीर तीडा राव सलख वीरम वखांन है ।।
चुडा रीणमा जोध सुजा वाघ गंग चावा,
मालदे उदैसी सुरगा जीसा अमांन है ।
जसवंत अजीत बखतेस पाट वीजैसीग,
जोधपुर राजं भुप जाहर जीहांन है ।।२।।

**२२२५. १०८४२ (१३) स्फुट-कवित्त-संग्रह**

**( छप्पय )**

अखौ लखौ अडबील, जगड गोयंद वैरागर ।
मंडलो कांधल मयंक, सक जत्त न भाखर सायर ।।
परबत डूंगर पतो, वाग उदौ हाफौ नर ।
रुपौ चांपौ जोध, सांड बलु अौ राजेसर ।।
चौवीस अभंग चूंडाहरा, खाग त्याग ग्रहीयां खरा ।
राठौड नांम राखण रिधू, रेण रूप रिडमल रा ।।१।।

रिडमल रायां राव, सतौ हरचंद सत अगल ।
रावत गुण रिणधीर, भीम भाराथ भुजां बल ।।

कानौ ग्ररडक माल, पहम पुंजौ ग्ररजण ।
सहं समल बल विजौ, लाख दल लूंभौ भंजण ।।
सिवरांम राम गोपे धरा, वाचीजै जस च्यारु वला ।
चवदै राव चूंडै तणा, ग्रेक ग्रेक सूं ग्रागला ।।२।।

दुहा

मलीनाथ वीरम मुदै, जैतमाल सोभत ।
सलखै रा च्यारुं सीरे, पथमी सीरै प्रभत ।।१।।

सलखो राव तीडा तणो, दुजो कांनड देव ।
दोनु तीडै रा दुझल, ग्र-समर खाग ग्रजेय ।।२।।

तीडो खोखर सीहमल, वांनर हसतो वेख ।
छत्रधारी छाडा तणा, पांचु बंधव पेख ।।३।।

२२२६. १०८४२ (१५) स्फुट-कवित्त-संग्रह
( जीवराज सोलंकी लारे सती हुई तिणरो ) *

प्रारम्भ :– ग्रथ कवत, जीवराज सोलीखी(सोलंकी)रं लारै सती हुयी जिण रा ।

छप्पय

सुद बारस भादवी, देह छाडीं राव चाळक ।
उण समीयै ग्रायनै, येक बोली ग्रह पाळक ।।
वीद्री जात कुल वीनां, वात कुलवंत उचारी ।
सुखरी सी रणक्षत्रीयां, बैठ रही सोक बीचारी ।।
पल घडी पोहर छेती पडे, सोच घणा दीन खाळसी ।
धण दोय धीरे जीण रो धणी, होय ग्रकेलो हालसी ।।१।।

घरीया पद पत धीया, खरै मन मतै सु साली ।
साथे चलवा सांम, वात हाथां तीण झाली ।।

---

* रूपनगर के राजा जीवराज सोलंकी के साथ राणी एजन के सती होने का प्रशस्ति-परक वर्णन है ।

दासी नै दोय जाव, दीयास घरी मत धारे ।
जनम पत्री सुण जाव, रही आगम परवारे ।।
कहां जांण त्रैण सैणी कहौ, खरी मती ह्वै खबर कै ।
येकला कदै न गया अगै, अंकुंत जासी अबरकै ।।२।।

येकला जाय अतीत, जती काय येकल जासी ।
घणवी वनी रो धणी, गरढ जासी ग्रह वासी ।।
त्रीय वीण जासी तुरक, नकुं कायी रहसी नाजर ।
लुटण वीधना लेख, वांरिह जाय वीनांवर ।।
पोसाख हींण मोसा खीमण, जीतव ध्रम वे काजवी ।
येकलो .नोज जावै अली, रुपनगर रो राजवी ।।३।।

जीण नीजरां देखीया, .पाय नुपर झमकंता ।
बाजुवंध री लुब, सहत चुरै चमकंता ।।
रंग सुरंगा कपड, हाथ महदी रंग-रता ।
चख अंजन कोरीयां, मंजन केसर का गता ।।
घण सुख वीलास चालक घरे, सोच अभावां भावसी ।
जीण नीजर सांग रांझा पणे, दयीव नोज देखावसी ।।४।।

मंजन अंजन करे, करे पोसाख सुरंगी ।
मेळा छेहा करे, दुनी मन करे दुरंगी ।।
भुखण धारण करे, करे त्यागन घर आंगण ।
करे अतर भर कपड अमरपुर करे उमंगण ।।
धकां छान लारै चलण, आवपुरी जीम आवली ।
जती रीत हुयी परणी जदी, अतरी हुई उतावली ।।५।।

हथलेवा रै हाथ, झळे नारेल हसंती ।
सुलज सदा मन समी, वलम घर तणी वसंती ।।
हथलेवा रै हाथ, कवो भोजन ले छोडे ।
काया होमण काज, कंथ मीलवा मन कोडे ।।
जीवराज तणी कांमण ज्युही, सरग उमाहो साथनै ।
वर भलां दीयो चवरी (वि)चै, हथलेवो जीण हाथनै ।।६।।

तोरण आयां तेम, पाळ सरवर दीस जावत ।
वनडा व्याव तणा हा, स्रवण कुंण आज सुणावत ।।
त्रय कुण चढ लीलेह, कवण सीणगार करंती ।
कुण झलती नारेल, धणी सीर हरख धरंती ।।
प(र)णी न हुती तोनै प्रीया, जीयो अकेलो जावतो ।
तो वीगर काठ चम्पा तणा, गीत कवण गवावतो ।।७।।

हीडां जांणो सहज, सांवण तीजां सीवरती ।
वागां जांणो सहल, छोल उपजै त्रय छती ।।
सेझां जांणो सहल, महल प्रीतम रंग मांणै ।
पीहर जांणो सहल, यधक झुगम कर आंणै ।।
सांम सुं रुस जांणो महल, मांण धरे उर मझरी ।
मंगल झल कठण धरणो मतो, राणी धीन जीवराज री ।।८।।

व्रह्मा आवण वीस्न, यीस मन सहती उमाजी ।
कलु रजु पण कीयौ, वीसव अंत कीयो वीरजी ।।
कीयो प्रजा हंकार, सैण मन हुवा उदासी ।
रांणावत सत कीयो, वलम प्रीतम सुख वासी ।।
धर धणी मीलण कीय मागध, कीया अगन झल संपडा ।
जीवराज मरण कीधा जदी, कीरत भगवा कपडा ।।९।।

क्रीत सुणी तुरकांन, सुणो कीरती सता रै ।
कव व्रत जांणी क्रीत, पांण पोतरै पता ।।
चोवीस साख चवांण, जांण जादम जाडेचां ।
कैलपुरां कुरमां, खाग जांणी खेडेचां ।।
पुजती क्रीत जांणी प्रथी, चेतन वीध-वीध चुंपसुं ।
रस जीयो जीतै कीरत रही, सारद जीसा सरुप सुं ।।१०।।

जग मै जीया जीसा, रया थोडा छत्र वारी ।
सां-धरम सु-दतार, तीख भारथ तरवारी ।।
अभ मन जेती आव, सु-जसवी लीध संसारा ।
तोसुं मीलीया तीकां, वीयां न होय बीसारा ।।

वीर वर सु तन चालक वीमल, नह नरवांण नोखमीयो।
अैराक फोट हीण अमल, जीवराज जोखमीयो ।।११।।*

२२२७. १०८४२ (११) स्फुट-कवित्त-संग्रह
( सरणै राखिया रा )

कवत

सरण रहो बुधसींग, पाट बूंदी बैसारे।
सरण रहो गोंपाल, धणी रांमपुर धारे ।।
सरण रहो जैसाह, आय राजा आंबेरो।
रावल सरणै रहो, अखौ पीण जेसलमेरो ।।
सरणै रहीया सैद, कैद असपत नैं कीधो।
जट चुडामीण जीसां, आय जद सरणो लीधो ।।
हेक हेक वार हींदु तुरक, सरण रहता जग साखीयो।
म्हाराज अजण मंडोवरे, कुण कुण सरण न राखीयो ।।१।।

२२२८. १०९५५ (४) स्फुट-कवित्त-संग्रह
( महाराजा मानसिंहजी के प्रशस्तिपरक )

कवित

कोप्यो आंन सुरपत परलै समाज साझ,
होतो नांह व्रीजेस गिर हात कोन धरतौ।
करन जो न होतो नीत कंचन को दांन देत,
विक्रम जो न होतो पर पीर कोन हरतौ ।।
आपस की फूट परी मारू सभा के वीच,
नाथ जो न होतो तौ सहाय कोंन करतौ।
तोसो जो न होतो मांन भुप हींदवान भान,
एते गुंन वांन आंन काको जस करतौ ।।१।।

---

* इसके आगे आढा पाहडखांन कृत रीयां ठाकुर शेरसिंहजी परक गीत है। कृपया जिज्ञासु पाठक सूचीपत्र के क्रमांक १९७४ पर शेर्षसिंहजी के स्थान पर शेरसिंहजी पढने का अनुग्रह करें। इस गुटके में और भी अनेक ऐतिहासिक गीत एवं स्फुट छंद हैं।

डिगेंगे गयंद दल मीलेंगे गीरंद,
खलभळेंगे समंद बळ चढ हैं जीहांन के।
दुर हैं दीनेस घर घर है फुनेस फेंन,
गीर हें उसेंस सुर सहत वीवांन के।।
कवि- केहत सीवनाथ नीबतो रहत,
नाम तरज गज मांनीये अरज मांन नंद गुमांन के।
धुजेंगी धराह धुख जेंहेंगी राह जीत,
पेंनीये सनाह पतसाह हिंदवांन कें।।२।।

चाकर चकीते ह्वै चढे मद-मते जंगी,
आए कलकते सेतीं घर केतां पांनकी।
हालाहल ज्वाला छल भाला की तयार जांनी,
जांनी अेक भाला वीच ज्वाला अजांन की।।
नाथ कें प्रताप सदा जाप आप ही को अेक,
गई ताप रही टेक कीरत जबांन की।
मयुख तेज भांन की उदोत हें भी पांन की,
सु-मान भूप राखी तेंनें मुछ हींदवांन की।।३।।

आइ हें लीखावट ईउं अकबर लाहोर वीच,
सब ही मीलाय सला सबे राज्सथांन की।
वाचत ही बोल उठें कहीयो हमारी अेसें,
राठवड कलस हुतें ये मुख जबांन की।।
सीख रणजीत कहें राज राव रांनन में,
मांन भूप राखी तेंनें मुछ हिंदवांन की।।४।।

तिरत है गहर निर फीरत हें उजारन्में,
बरत पर निरत करत नट वै नटांनी हें।
अबखे अरीले बाज हींडत हींडोरे मांझ,
चढते भेंभीत थांन चढती जवांनी हें।।
सबलन सों भेरभाव डाव वीन वाहे घाव,
गहत सरप ताप सो तो कबहुक ठगांनी हें।

राज नसा खास खेल करत अमेल मेल,
ऐती ठोर गाफल रहें मोत की नीसांनी हें ।।५।।*

### गीत पहला

प्रारम्भ :– चमकै वीजल पळापळ चहु दिस,
नीस सारी जीवन घंन सोर ।
चात्रक सोर पीव पीव चहकत,
गहकत मोर घटा घन घोर ।।१।।

अन्त :– दीनां वचंन साच सोह दाखां,
लाखां वातां वसंत लहां ।
हरगज न्ह चुकां होली पर,
कुस आखर वदनांम कहां ।।६।।

ईतरा वचंन साच ह्वै अबके,
आगा सुं करजो इतबार ।
जसरा वचंन हुवै सो हो झुठा,
नेह-नां वचंन मान जो नार ।।१०।।

### गीत दूसरा

प्रारम्भ :– उठे सेहर घटा घंण उंमडी,
सरसी लुंब रही वरसात ।
दांमण दीस च्यारुं हद चमकैं,
दादर मोर दहुं दुख दात ।।१।।

घंन गरजै लरजै अत गोरी,
पपीयो पोव पीव वांण पढै ।
ती–जांतीया पीया वीन तरसै,
चित उतरैं चीत फेर चढै ।।२।।

* उपर्युक्त पांच छन्दों के बाद कुछ शृङ्गारिक गीत लिपिबद्ध किये गये हैं। गीतों की वानगी स्वरूप उनके आद्यन्त भी आगे दिए जा रहे हैं।

अन्त :- दादां पर लुंण पपीया देछै,
कोयल केछै नाह कठै ।
अरजी मोय मानसी अबकैं,
के मुइज सुंणसी महल उठै ।।१२।।

**गीत पांचवां**

प्रारम्भ :- भर मोत्यां थाल अर कळस वंदासां,
गासां बोहो लग गीत घणा ।
उछव अनेक ओपसी आयां,
तींण मद वेरी छोल तणा ।।१।।

कमरां बांध चढे केकांणां,
मन सोनो कीधो मजबूत ।
तुररा गरट कीलंग्यां तीखी,
सीर पेचां फाबे हद सूत ।।२।।

अन्त :- रंग री रात सोहनीस वीती,
धण मद वौहद धापा ।
उमंग उछाह दीन उगां ओपे,
उगां अमला आया ।।९।।

धण युं वचन कह छै धुररा,
आछी ओलग आंणी ।
कागद च्यार दीया कुरसी बंद,
तीखी पीव हद तांणी ।।१०।।

नाहजी वचंन भलौ नीरवायौ,
अब ओलंभीया आखुं ।
रंग री रात कहण जुं नांही,
भल - हल उगां भाखुं ।।११

पुष्पिका :- संवत् १९०५ रा मृ० वद १ गुरवार दीन । (द०) कुंनणराज रा ।

२३५८. ७८६० अलंकार कलानिधि

प्रारम्भ :- श्री गणेशाय नमः । श्री राधावल्लभो जयति ।
अथ अलंकार कलानिधि भट्ट श्रीकृष्ण कृत लिख्यते ।

सवैया

कुंडल मंडि कपोल उमंड भुसुंड लियैं अलि मंडल मंडन ।
मंडत तंडव सुंड प्रचंडहि तुंड महा मद कुंड उमंडन ।।
कुंडली कौ उपवीत अखंड सुधाकर खंड धरै तम खंडन ।
ध्यावौ वितंड अखंडल घोर मंडिर रहे अघ भुंड विहंडन ।।

कवित्त

वाजत सदा ने विप्र गाजत सवद घोख,
साजत सकल जन मंगल विसाल कौं ।
गावत गुनी जे उमगावत उछाह त्यौं,
जगावत महल भांइ भनक रसाल कौं ।।
आरती उतारियत हीरा मोती वारियत,
दलि मलि डारियत दारिद के जाल कौं ।
राजा रांमचंद राज पाट अभिषेक,
सिंघासन वैठे सुभ देहु कवि लाल कौं ।।२।।

वांनी के रसिक गनपति के प्रसन्न भयें,
मूक हू कैं मुख मुलकति सुख भारती ।
फुरत तुरत छंद ग्यान मय भांन रुचि,
मूढता अपार अंधकार तैं उधारती ।।
सरसति सुधाकर सुधा सिंधु हू तैं,
वर वरन धरनि खल दूखन विदारती ।
मांन कवि राज कैं समाज सिर ताज,
ताहि कीरत कलानि कैं उतारियत आरती ।।३।।

सकल कलानि कैं निधांन जयसिंह भूप,
धरैं प्रभूताई मघवांन मद छीनो है ।
कविता के रस पर रीझत रसज्ञ वर,
सब कवि लोकनि प्रमोदि जिन दीनो है ।।

तिन कवि लाल कलानिधि सौं सनेह करि,
क्रियो जव कछुक हुकम रस भीनो है।
तव तिन भाषा मैं असेष काविरीति आंन,
अलंकार कलानिध नाम ग्रन्थ कीनौ है ।।४।।

दुहा

सुभ वसंत की पंचमी, करत अनेक विहार।
हुकम पाय नृप कों तहा, भयो ग्रंथ अवतार ।।५।।

अन्त :- दुहा

अलंकार के दोष एतें, सब दिए दिखाय।
मम्मट मति अनुसार सों, भाषा में निचाय ।।३४।।
यह विधि यह सब काव्य को, लच्छन कह्यो बनाय।
सव्द अरथ रस गुनि, ध्वनि रु अलंकार दरसाय ।।३५।।

कवित्त आसीर्बाद कों

मेष बृष सूरज प्रकास चंद्र भाल सुर,
मिथुन करक हर मंगल बुधि-नि घर।
लोक गुर गावें कवि कंठ सनि नील वाए,
सिंघ कटि सैल कन्या अंग हेम तुला धर ।।
राहु माली मेटै भव वृश्चिक पिनाक धनु,
जारत मकर केतु बरन को कुंभ कर।
नैंन मीन सुधा सिंधु देहु सुभ नंद लाल,
संभू तूमैं नवग्रह बारहउ रास खर ।।३७।।

पुष्पिका :- इती श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीं रामचन्द्रदेव विप्र बृत्त श्री भट्ट कवि-कलानिधि कृतौ अलंकार कलानिधो तृयोदसी कला ।।१३।। शुभं भवतु । श्री ।

आसीर्बादात्मक

जीतत चंपक कोयल मालहि, सुन्दर कंचन बेल तमालहि।
हेम जरी मनि नील लरी, कहि बीजुरी जोति जलधर जालहि।
पूरन प्रेम स्वभाव रहे रचि है, निधि माधुरी रूप रसालहि।
नायका राधिक नायक कान्ह, करो सुभ संप कलानिधि लालहि ।।१।।

दुहा

पहले रस सिंगार जो, कह्यो सकल रस राज ।
तिहि आलंबन नायका, अरु नायक व्रजराज ।।२।।

नायक लछन : कुंडलिया

रागी धनक कुलीन बर, त्यागी जोबन वंत ।
अरु सकृति सुन्दर चतुर, सुघर तेज निध कंत ।।२।।*

प्रारम्भ :- अथ प्रवंधाध्याय लिख्यते ।

(दोहा)

गीत कहै द्वै भांत के, प्रथम निवंधनि जांनि ।
दूजै कहि अनिबंध कों, मन मैं मोद न मांन ।।१।।

वागेपक कवि न कह्यौ, लक्षन ग्रंथ विचार ।
वंध गीत तासों कहैं, सु कवि सुमति निरधार ।।२।।

आ........न अनिवंध हैं, पहिलै कह्यो सुनाय ।
कहि प्रवंध के अंग कों, धात सु बेद सुभाय ।।३।।

प्रथम भेद उदग्राह हैं, मैलापक पुनि होय ।
ध्रुव तीजो आभोग है, चोथो जानत लोय ।।४।।

मध्य जु ध्रुव आभोग कों, अंतर कहत बिचार ।
सवै गुनी जन के मतै, यह जानो निरधार ।।५।।

सालग सूं उ स्वरुप है. अंतर मिलै जु आय ।
ओर ठोर रहै न कहुं, मैं यह कह्यो वनाय ।।६।।

तीन भांत सु प्रवंध है, कहत गुनी जन लोय ।
चतुर्धात त्रिधातु अरु, द्वि धातु सु वहु सों होय ।।७।।

होत नांहि कहु दोय मैं, आलापक आभोग ।
भेद दोय मैं है कहै, च्यार धातु संजोग ।।८।।

---

* आगे लिखना समाप्त कर दिया गया है ।

अलंकार-कलानिधि से पूर्व प्रारम्भ में गीत प्रवंधाध्याय नामक कृति के आठ पत्र हैं ।
उक्त कृति का आद्यन्त भी यहां दिया जा रहा है ।

अन्त :- दोहा

गज लीला वहुरचों कही, चक्रताल पुन होय ।
वहै क्रोंच पद कहत हैं, रास ताल मैं सोय ।।७७।।

कहैं वहुर धुनि कुंदनी, आर्या गाथा नाम ।
द्रुपद सकल हंस कहि, पुन तोटक र र धांम ।।७८।।

षट रु वृत्य कहि मातृका, राग केदवक मीत ।
कहत पंच ताले सुरहि, ताल समुद पुन गीत ।।७९।।

आलि नाम लै सवनि को, कहै सकल ........... ।

२३५९. १०६८५ अलंकार रत्नाकर

प्रारम्भ :- ।। ई० ।। श्री गणेशायनमः ।। अथ अलंकार रत्नाकर लिख्यते ।।

दोहा

नव तमु ए सुर मुकट महि, प्रतिबिंबत अलि माल ।
किये रतन सब नील मनि, सो गनेस रछपाल ।।१।।

अथ देशाधिप वर्णनन

दोहा

उदियापुर सुर पुर मनो, सुरपत श्री जगतेस ।
जिनकी छाया छत्र वसि, कीनो ग्रन्थ असेस ।।२।।

कवित्त

सकल महिपन कै राजै सिरताज राज,
पर उपगारी तारी भारी दुख दंद के ।
देव जगतेस धीर गुरुता गंभीर धरै,
भंजन विपछ पछ दछ फोज फंद कै ।।
प्रभुता प्रकास अति रूप को निवास सोहै,
प्रगट प्रताप ताप मेटै जन वृन्द के ।
मेघ से समुंदर से पारस पुरंदर सै,
रति पत सुन्दर समांन सूर चंद के ।।१।।

दोहा

जदपि नार सुन्दर सुघर, दिपति न भूखन हीन ।
त्यौं न अलंकृति अनु लसै, कविता सरस प्रवीन ।।३।।

कीनो रसमय रसक कवि, सरस वढाय विवेक ।
छाया लहि गिरवोन की, भाषा ग्रन्थ अनेक ।।४।।

तदपि अलंकृत ग्रन्थ को, काहू कवि नहि कीन ।
भाषा भूषन है जउ, कहूँ-इक लछन हीन ।।५।।

भाषा भूषन है जउ, सो जसवंत नृप कीन ।
वंसीधर अब करतु है, अछौ ग्रन्थ नवीन ।।६।।

यातै ताहि सुधारि कै, देखि कुवलियानंद ।
अलंकार रत्नाकर सु, किय कवि आनंद कंद ।।७।।

कहूं कहूं पलि धरै, उदाहरन सरसाइ ।
कहुं नये करिके धरे, लछन लछ जिनाई ।।८।।

कवि परिचय

अरथ कुवलियानंद को, वांध्यो दलपति राय ।
वंसीधर कवि पै लै धरें, कहुं कवित वनवाय ।।९।।

मेदपाट श्रीमाल कुल, विप्र महाजन काय ।
वासी ऐंमदावाद के, बंसी दलपतिराय ।।१०।।

कवि गुलावराय हि यहै, सोध्यो सुवुधी अपार ।
वासुदेव पंडित पढ्यौ, लहि अति मति विसतार ।।११।।

कर कविन सों वीनती, कविता जदपि अनूप ।
जऊ त्रिविक्रम हरि तउ, धरचो सुठावन रूप ।।१२।।

याहि सुधारहु बुधि वल, दोस हमै जिन देहु ।
धरै सुकवि जन कै कवित, तिनही को गुन लेहु ।।१३।।

कहुं सिंगार कहुं हास रस, कहुं बीर कहुं भीत ।
कहुं सांति करुना कहुं, वीर सु अद्‌भुत नीत ।।१४।।

इन्है आद(रे) रस सकल, वरनै कविता अंग ।
कहुं कहुं क्रम विनु धरै, सो सो पाय प्रसंग ।।१५।।

अलंकार रत्नाकर सु, दियो नांम यह हेत ।
च्यार तरंग नीको रचै, अलंकार संकेत ।।१६।।

प्रथम पीठका दूसरै, अलंकार सत जांन ।
रस प्रमान नीके धरे, चोथे संकर मान ।।१७।।

जेसें नग की जोत मिल, कुन्दन तै अधिकाइ ।
अलंकार कहि कवित की, क्यौं छवि दई वढाइ ।।१८।।

जेसे रीझ जवाहरी, लेत जवाहर पेखि ।
क्यौं कवि कोविदी रीझ है, अति अदभुत स्रम देखि ।।१९।।

गरभ लोभ जस कोन किय, नहि विचार उपगार ।
अपनैं चित विनोद कौं, कीनों इहै प्रकार ।।२०।।

रचनाकाल १७९८ सतरह सै अठांनवा, महापच्छ सिस सार ।
सुभ वसंत पांचै भयो, यहै ग्रन्थ अवतार ।।२१।।

अन्त :- सवया

केतकी धूर धरे सिर पूरन गुंजत मंजु सु कूंजन मे ।
वान जरे मद नीर समीर जंजीर सु आवत हे छिन मे ।।
वानयत छुरचौ नव पंक जथान ते दर्थ अखंड धरे मन मे ।
तोर के सोरंभ श्रृंखल कौ यह भ्रंग पतिंग फिरे वन मे ।।

यहां लाटानुप्रास अरु रूपक सौ शंकर हे जहां शब्दकरालंकार अरु अर्थालंकार जुदे-जुदे होय तहाँ संसृष्टि अरु जहाँ एक पद में दोय होय, ताहाँ एक वाचकानुप्रे(वे)श ।

संपूर्ण .... .... ....

इति अलंकार रत्नाकर संपूर्ण । *

पत्र सं. ५९— ।। दं० ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ भाषा भुषण ग्रन्थ प्रारम्भ ।

प्रारम्भ :- निज प्रभु को सुमरन किऐ, कहत पाप की रास ।
तिनके पद चित धर कहूं, अलंकार परकास ।।१।।

---

* इस कृति के बाद भाषा-भूषण नाम से पत्र संख्या ५९ से ६६ पर अलंकारों के लक्षण तथा उदाहरण दिए गए हैं । उक्त कृति का आद्यन्त भी यहाँ दिया जा रहा है ।

जाकी उपमा दीजिये, ताहि कहै उपमांन ।
जाको वरणन कीजीये, सो उपमैई वखांन ।।२।।

उपमेय रु उपमांन कौ, सो हे धरम समांन ।
उपमा वाचक पद मिले, उपमां हौहि प्रमांन ।।३।।

(उदाहरन)

भोहे कुटल कवांन सी, सर से पेने नेन ।
कविनाम वेधत व्रज-बाला तनहि, वंसीधर दिन रेन ।।३।।

अथ लुप्तोपमा

बाचक धरम रु वरननिय, अरु चौथे उपमांन ।
इक विनु ह्वै विनु तीन विनु, लुप्तोपमा प्रमांन ।।४।।

उदाहरन

गज गांमनि मुख चंद सम, कंज नयनि इक नार ।
छवि सो रति अजवति भयो, तरल एकंत निहार ।।५।।

वाकौ मिलन इकंत कौ, रति सुख लाभ अपार ।
भयौ काकताली यहै, विनु ही नेक विचार ।।६।।

अन्त :- अथ निरुक्ति अलंकार

सो निर्रुक्त जब जोग सौ, अर्थ कलपना आंन ।
उधव कुवज्या वस भयौ, निर्गुन वहे निधान ।।१६३।।

अथ प्रतिषेदालंकार

सो प्रतिखेद निखेद सौ, अर्थ निखेद्यो जाय ।
तिछन वांन विनोद है, नही सुचौ परचाय ।।१६४।।

अथ विधि अलंकार

अलंकार विधि सिधि जौ, अर्थ साधिये फेर ।
कोय कहे कोयल जवे, रितु मे करि हे टेर ।।१६५।।

अथ हेतु अलंकार – दूविध

हेतु अलंकृति दोय हे, कारज कारन संग ।
कारज कारन ए जवे, वस्तु अेक ही अंग ।।१६६।।

उदाहरण

उदित भयौ ससि मांननी, मांन मिटावन मांनि ।
मेरे सिधि समृधि यह, तेरी दीठ वखांनि ।।[१६७]

पुष्पिका :- इति श्री अलंकार रत्नाकर मूल लक्षन संपूर्णः ।।

२३६९. ८२३६ इतिहाससार समुच्चय भाषा

प्रारम्भ :- ।। श्री प्रमातम ने नमः ।। अथ इतिहास भाषा कृत्य लिखतं ।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवी सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत ।।१।।
जयति पराशरसूनुः सत्यवतीहृदयनंदनो व्यास ।
यस्यास्यकमलगलितं वाङ्मयमृतं जगत्पिवति ।।२।।

दोहा

बारंवार लंवोदराय, अति नैंन बिशाल ।
फलस पांनि सरब गुन भुवल ।।३।।

चौ० (चौपई)

गौरी नंद गनेस सिर नाऊं । निरभै कथा कहत सुख पाऊं ।।
नारद व्रह्मा बीन कर लयौ । आसन प्रगट हंस पर कीयौ ।।४।।
चारचौं बेद अरथ ता अंग । अष्टादस पुरांण सब संग ।।
शिव बिरंच गुरु करौं प्रनांम । पाऊं बिमल बुधि बिश्राम ।।५।।
तुम हौ सकल बुधि बर दाता । सबै रूप सब के पित माता ।।
र.काल संबत सोला सै तेताला । राज अकबर साहि भूवाला ।।६।।
१६४२ भई कृष्ण पक्षि अति बैशाखा । सातैं बुधिवार सुभ जाता ।।
तहं कथा कृत मंडल भयौ । प्रात जन्म कृष्ण सो लयौ ।।७।।

अन्त :- जो इतिहास कथा फल जास । सुनत होइ सव करम कौ नास ।।
सव भगतन की कृपा मंनाऊं । वार बार गुरु कौं सिर नाऊं ।।३२।।

कवि- लालादास कहै कर जोरि । सुनि कबि गुनी देहु जिनि खोरि ।।
परिचय अस्थल नगर आगरो गांव । उधोदास पिता कौ नांव ।।३३।।
जात वांनियौ लालादास । भाषा करि बरन्यौ इतिहास ।।

दोहा

लाला सरस इतिहास कौं, व्यास वचन धरि सीस ।
धर्म वढै अरु ग्यान जसु, सुनि ते कथा बतीस ।।३४।।

चौ०

माहात्म्य जो फल सुनैं अठारह पुरांन । जो फल गोदावरी गंगा स्नान ।।
जो फल होइ केदार पर संत । सो फल इतिहास कथा सुनंत ।।

अश्वमेध जग्य सकल तीर्थ स्नांन । सो फल सुनत इतिहास पुरांन ।।३५।।

पुष्पिका :- इति श्री महाभारथे इतिहाससार समुच्चय त्रयत्रिंसो-ध्यायः ।।३३।। इति श्री महाभारथ के इतिहास, कथा वतीस संपूर्ण समाप्तः । संवत १८५५ वरषे, भाद्रपद मासे कृष्न पक्षे तिथि नवमी भोमवारे । श्री मन्नागपुरे वखत तडाक-तीरे पश्चिम दिसे । श्री महादूपंथि उत्तराधा बावाजी श्री ठाकुरदासजी तिन सिष्य रांमजी-दास तिन पुस्तक लिख्यौ, सु पठनारथं । हरि भक्ति रसनु ।

२३६६. ६२६० (१) १२ कवित्त *

( जैस्यंघ जी को )

सतजुग हरिचंद त्रेता भयै रामचंद,
दु(द्वा)अापर प्रिछत सौह हराय हारोहु ।
अवकै समै भयो कुरमं कलपतर,
वैरैं मेरो चलौनै उपाइ करी चारुहु ।।
कलजुग करत फीरादि कर जुग जोरी,
सुनि हौ वीरंची तेरो सरन वीचारोहु ।
माहाराज्य जंस्यंघ जीग कुंड तोपै रोपी,
आवध के गोलन सो अनाथ करी मारोहु ।।[१]

लिखे थे अभागि ते सभागी करे दे दे दान,
दुरद दुजन दुवार गिलम सूधारि है ।

* ऐतिहासिक घटना एवं व्यक्ति संबंधी कवित्त उद्धृत किये जा रहे हैं ।

जल करे थल थल जल करे दलन सौ,
धरा धरी धुरी धरा खुरनै वीदारि है ।।
नौने कवि कहत विरंची सुनि सीताराम,
राम चरण सरण छत्र धारी है ।
माहाराज्य जैस्यंघ जिगन कीजो मनसौ,
ओर ही कि ओर मेरी सिसिटी करि डारि है ।।[२]

२४०१. ६२६० (१) १५ **कवित्त**

**( सूरजमल जी जाट को )**

कवित्त (सवैया)

जा दीन तै दल साजि चढो ओप आगै वढौ पग पीछै धरोना ।
मेर है सेर मडौ किरवान लै एक तै दुसीरों अंक करोना ।।
कवि केसो श्री वदनेस के नंदन तो-सम ओर वरग वरोना ।
घने हाथी टरे अर साथी टरो भान टरे पै सुजान टरोना ।।[१]

कवित्त

इत छपो भान उत भान सो सुजानस्यंघ
ऐक वार मंडल तमाम तमं छै गयो ।
भादो भयो देखिन को चाहो सुर लोकहु मै
आयो इंद्र आसन विमान धरि लै गयो ।।
केसो कवि आप जीव साचो सुर किरति चलै गयो ।
नरन को नाहा फेरि होइगो उदोत कोउ,
सीनसीनी साह तिलक चढै गयो ।।[२]

लाखन लराइ विचराइ फोजन वैरीन की,
परि सुरज कै पाछै सात्रेसार है समाहरैगो ।
जाहा रोपी हद रूरहद श्री सुजानस्यंघ,
दपट दिली के दल तेगन सो झारैगो ।।
केसो कवि भाइ व्रीजमंडल सवाइ पै जे पारैगो ।
दरघ की करद करेजा वाही गयो वली,
ताही की सिपति सो नजोवखानै मारैगो ।।[३]

कीने हे मुकाम धनी लाखन चढहि फोज,
मारी कै नजीवखां दिलि पै दावा धरतो ।
मान तोनै कैसहि जाहान पै सवायो जस,
दोखी दफै होते सुख सोखिन के भरतो ।।
केसो कवि सोख दरस दिखाइवे कौ,
दंतन तिनुका लेकै पहल पाइ परतौ ।
व्रिज के महीप मनसुवान मै सोधि देखो,
नीकौ हो मिलाप तो सुजान क्यो न करतो ।।[४]

देखीइत दीरग दतारे मतवारे भुप,
भारे भारे घोरन पै चवर ढरकाये है ।
घरहीते सेलन की अनि समराइ ली,
जग मै जुरे तै भुठे पाय मटकाये हैं ।।
केसो कवि ओरै कि मती काहा लो करु
सुरज कि लाज परि काज नहि आये है ।
वड़े वड़े मोती भोरि दीनै करन पेचन मै,
हाथन के करे खोली काछन दुराये है ।।[५]

कैयेक मुसाइव करोरी संग सुवेदार,
रहे सव चाहत अथाहास्यंघ थाइ गयो ।
करि गयो अनि कै अचानक अचंभो ऐक,
धरि गयो ओरै धाक विर रस छाय गयो ।।
केसो कवि जग मै जवाहर सो जोती धारि,
भान की किरनि मानु छल सो छीपाइ गयो ।
साचो सुर लोक कौ सीपाइ काहु भुपति कौ,
नरन के नाहा पै हजारन मै वाही गयो ।।[६]

२४०२. ९२९० (१) १६ कवित्त

(वरसाना की राड़ी कौ)

जीतै है तो सुजस प्रकास देम देसन मै,
मरे तै मुकति व्रीजमंडल सुवासना ।

जंग जुरि मुरे तंम जे जम जवुति घटि,
सवहि कै रटि या जग मै कुवासना ।।
केसो कवि वरसानो रज धानि प्रानि,
चुकी गये दाव पै करौरि करो आसना ।
काहा राजा काहा राव सा सीध उमराव,
काहु मै नै निकसी उपासना सा वासना ।।[७]

२४१६. ६२६० (१) १७ कवित्त

( सीखां की लड़ाइ फते करी, नवलस्यंघ जी जाट )

कोन से मुलक मनसुवे मै भरमं भुले,
काहेकु रै सीख व्रीज भोमं पर भटके ।
याहा रखवारो व्रीज दुलह मुकट वारो,
सुर असुरन के अनेक दल हटके ।।
केसो कवि ओर की मंति काहा लो करु,
काठ से कठौर कोस आठ लग पटके ।
चढौ नवलेस साहि सुरज को माहावलि,
ऐकहि चटक मै अटक लो न अटके ।।[१]

वदल से उमड़ि अह दलह कारे वीर,
थिर न धरत उर उमगे अमाने के ।
केहरि से किलकि किरवान वाहै,
काल के जजाल येहनि वाह व्रिद वाना के ।।
केसो कवि व्रिज की प्रतंग्य पर पुरि रही,
तिर तरवार न उडत सिर नावा के ।
मुसे म दंति विरचे ते किरचे कीये है सीख
जैसे करगर वै नवाव खान-खाना के ।।[२]

गरवै गोपालस्यंघ लाज सवराज की सी,
गाजी धरि करि जंग अंग उमदेस की ।
केसो कवि कांन संघरे गुमरि भुले,
खोइ गयै आपनि सिकल गरु भेख की ।।

व्रीज के महीपन कौ दीपन भयो है जस,
लोन की पनाहा राखी राजा नवलेस की ।।[६]

( सवैया )

कान सुनि कहु भारथ की कथा कै सुनी रामजी राम नरेखे ।
कै तो सुनी प्रीथीराज के रासे मे जंग करि सुलतान समेखे ।।
कवि केसो कौपी चढौ जदुवंस तत्र विर वाहादर ग्राखीन देखे ।
सुरजी के नवलेस वली तैनै उदल ग्राल प्रमाल विसेखे ।।[४]

मैमंत माते मतंग चढे निरप जंग जुरै रन सुर सुरझे ।
छुटत वान किरवान करा करि टुटत मुंड सु मुंड लुरझे ।।
कवि केसव घुमत घाइ घने ऐक लेत कुलाटन हुल उरझे ।
ऐक परे धर वश्र सो वथन ऐक परे गज सुंड लुरझे ।।[६]

जंग जूरे पर रंग रहे परी रंचक वात हुइ मति वोरि ।
फेरत नेक ग्रर वेकी चाहि न काइर सुर सत्रै लगि ढोरि ।।
कवि केसो होनि टरै न टरि जव दुरजन की महमा चढि दोरि ।
गंगाप्रसाद की लाज रही ग्रनेकन की रही पाघ पछौरी ।।[६]

२४२३. १००५६ (४) कलिजुग पच्चीसी

प्रारम्भ :- ।। ग्रथ नंदराम कृत कलिजुग पचीसी लिखतं ।।

दोहा

गनपति कूंज मनाय कै, रिधि सिधि कै हेत ।
वाक वदनी मात तू, सुभ ग्रंछिर वहु देत ।।

कछू करयौ हौं चहत हूं, तुम्हारे पुन्य प्रताप ।
ताहि सुन्या सुख उपजै, दया करो ग्रब ग्राप ।।२।।

कीयो इह उपगार ग्रव, ईंको हुकमज पाय ।
कलि व्योहार कह्यौ ग्रवै, सुनो चतुर चित लाय ।।३।।

गाथा

नीति राज की ग्रैसी हौती दौलित कौं सुख लीज्ये ।
गज सिका ग्रर तोल मोल की वढती दिन दिन कीज्ये ।।

अब पैसे की कमी भई है रुपया है नव मासां ।
नंदराम कछू दुनियां माही देख्या अजब तमासा ।।४।।

षट दरसन की पूजा करते दुखी देखि दुख हरते ।
विप्र गऊ कौं देखि सांकडै भूप वडे यूं लडते ।।
अब घेरै गऊ विप्र कौ लूटै परतिय भोग विलासा ।
नंदराम कछू दुनियां माही देख्या अजब तमासा ।।५।।

फोजदार उमराव आगिले स्वामि कांम कूं लरते ।
मैत्रासी को मार तोरते सुख वासी सुख करते ।।
अब जोर तलव सूं जोर न पूजै लूटै रैनि खलासा ।
नंदराम कछू दुनियां माही देख्या अजब तमासा ।।६।।

मुनसवदार मुलाजम होई ताकी वोलग जोवै ।
मानस ताके खरे त्रिरंगे वै मुहीम मै रोवै ।।
जमीदार जागीर भोगवै खेलै वहरी वासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।७।।

ताम हलाली के मुख लाली खाल खाल मै दीसै ।
निमक हरामी कै दरवाजै हाथी घोड़ा हीसै ।।
खांनतदार धका वहु पावै चौर जरकसी तासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।८।।

सैद सेख पठाण तुरमा छौडि चाकरी बैठे ।
जुलहां धुनिया वा धिक मारि कूं फिरै चोहटै अैंठे ।।
जंग दुन्या सू पीठि दिखावै हौत धनी का हासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।९।।

साचौ जाय चौत्रै झगडे साखि बुलावै साची ।
लिख्यो पढ्यौ मुह आगैं म्हेलै खरी खुव करि वाची ।।
झूठा कीस वरसौति पहुँचै साचै देहि धकासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।१०।।

रामसंनेहीं तो चलि आवै ताकूं थोडे ध्यावै ।
रामजनी कूं खरची भेजै आदर सूं वतलावै ।।

घर नारी कुं मारै गाली गनिका नै घर वासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।११।।

मात पूत कुं आगै हो करि नखरे सूज नचावै ।
वोली ठौलि और खिलकटी छैलन कुंज रीझावै ।।
ताका भरवा गिरवा हौकै बने फिरै दुल्हा-सा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।१२।।

पंडित भीतरि जांन न पावै भांड बौलि कै लीज्ये ।
दीन दुखी कुं चीन्हत नाही डुम कलावत दीज्ये ।।
धरम नेम की वात सुनै न्ही खौटै चीत हुलासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजव तमासा ।।१३।।

तरनी देखि छिनालि कुहावै दिना वडी कु डायन ।
साध अंग की पघडी खोसै पडै ढीठ कै पायन ।।
परमानी कु स्वाच न दीज्ये परपंच जू पचासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजव तमासा ।।१४।।

चरनोदिक अर तुलछी दल कौ लेत हेत सू थोडा ।
मदरा आमिष खान पांन कु खरचत है धन जोरा ।।
करि मितराई नारि ताकवै दे करि वाह विसासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।१५।।

विप्र भागि कु रुचि करि जीवै पीवै तिलक तमाखू ।
च्यारि नौतिया चौदा आवै साथि लीये करमांकुं ।।
संझ्या तरपन कु है थौडा विषता कु विकतासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।१६।।

गऊ कुराह चलन अव लागी अविला कडको डारयौ ।
दौडि धीग के घर मे पैसे पति परने कु मारयौ ।।
निरधन देखि सगाई तौडै धन सू करत नतासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।१७।।

निरधन दीसै साद जगत मै भेष माहि व्योपारी ।
जोगी नाव धराय जगत मै घरमै चंचल नारी ।।

सेली मुदरा छार लगावै धरै जूडंवर वासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।१८।।

खाय लुडखडी खत लिखावै अपनू जाम मंडावै ।
करज काढि वौहरा सेती गाढी सौगन खावै ।।
दाम लेत है ताही दिन सू ले रहने की आसा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।१९।।

दातार छीन तन अति ही दीसै कृपन पेट वधावै ।
वहन भानिजी कु जो कवहुं निति छिनालि पहरावै ।।
पतिवरता तन नागीं दीसै वैस्या पहरै खासां ।
नंदराम कछू दूनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।२०।।

ज्ञानी गुनी भुख अति खोंचै मुरख कै धन दीसै ।
वहु पालिकै सुख सु सोवै सास वापरी पीसैं ।।
तापरि वाकु भगरी खान कुं पतनी पान पतासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।२१।।

नाटिक चेटक जामै दीसै ताकी करै जू सेवा ।
भूत खेल कुं ख्याल दिखावै ताकुं मानै देवा ।।
अंतरजामी नाही भजियौ भजीयौ धुलि-धमासां ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।२२।।

भाई वंध पाहनै आवै घर की कलह जु भांडे ।
फोडै वासन तौडै सासन भावै जू पति माडै ।।
जरचो वद्यौ सो उन्है खुवावै निज भाई सुखदासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्यां अजब तमासा ।।२३।।

कवि परिचय नंदराम खंडेलवाल है अंबावति को वासी ।
सुत वलराम गोत है रावत मत है किसन उपासी ।।
र. काल १७४४ संवत सतरासै चौवारा कातिक चंद प्रकासा ।
नंदराम कछू दुनीयां माही देख्या अजब तमासा ।।२४।।

कलि व्यौहार पचीसी वरनी यथा जोग मति मेरो ।
कलिजुग की जवानी गाई ही है और रासि वहुंतेरी ।।

राखो राम माम या कलि मै नंद नंद सुख रासा ।
नंदराम तुम सरणै आयै गायौ अजब तमासा ।।२५।।

पुष्पिका :- ।। इति संपुरणं ।। मिती आसाढ वदि ८ संवत १८११ का दसकत वखतराम गोधा* चाटसू-का लिखी बुपौई मध्ये । देहरेजी ।

२४४२. ६५६४ (६) गङ्गा-शतक

प्रारम्भ :- अथ गङ्गा शतक लिख्यते ।

दोहा

जातैं जग जन्मादि जो, जगपति यह वपु बारि ।
वंदों अघ मल हर अमल, गंगा जग हितकारि ।।१।।
तुरत हरत त्रय ताप ज्वर, कण अणु परसत अंग ।
ज्वर हरिवो नहिँ कठिन, सुमरत गंग तरंग ।।२।।
अंड कटाह कटाह रवि, अनल अनिल नभ पूरि ।
ब्रह्म द्रव गंगा भयो, भुवि भव भेखज भूरि ।।३।।
जरे जिवाये तैं जननि, सगरज साठि हजार ।
जरत हृदय शिर उदधि हर, लिय झट तव आधार ।।४।।
गंग रंग हरि रस अवसि, परत करत इक संग ।
भुव-चर नभ-चर तरुन के, सुभग चतुर्भुज अंग ।।५।।
तव जल तन तजि शिव बनत, तुरत उचित यह चाल ।
ताही के विष दोष गल, ताप अनल लगि भाल ।।६।।
किते गंग परिहरि बनत, यह अचरिज सी बात ।
सलिल सुधा सम सित लगें, असित होत सब गात ।।७।।
पातक जन्म अनेक के, तू घातक जग मात ।
अंतकपुर ऊजर करत, हरि हर नगर बसात ।।८।।
हरि-पद बिधि-कर शंभु-शिर, बसिवो सो मिस हेतु ।
ब्रह्म रूप तू तीन मैं, प्रकट दिखाई देत ।।९।।

---

* लिपिकर्ता स्वयम् भी अच्छे विद्वान थे । इनका लिखा हुआ ग्रन्थ 'बुद्धिविलास' प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला में ग्रन्थाङ्क ७३ पर प्रकाशित किया जा चुका है ।

कलुष जटिल जट दहत पटु, रहत जटिल जट जाल ।
कुटिलन के काटत कुहक, गंग कुटिल चलि चाल ।।१०।।
मधुर ग्रमल सीतल सलिल, कलित कमल मकरंद ।
प्रबल ग्रनल लों गंग तउ, दहत ग्रचल ग्रघ बृंद ।।११।।

ग्रन्त :- दोहा

रुंड माल हर शिर ग्रमित, हरि पद बहु मन भृंग ।
तिन तारन तू बसत नित, हे करुणानिधि गंग ।।६१।।

शुभ्र स्वच्छ सीतल सुखद, सुन्दर सिंधु समान ।
उदर धपें मन नहिं धपत, करत गंग जल पान ।।६२।।

धपे ग्रनधपे ही रहत, सुर तटिनी तट पाय ।
मधुर सुधा तैं गंग जल, पियत न तृषा बुझाय ।।६३।।

पाप ताप तैं तपि हृदय, लगी गंग जल प्यास ।
पियत पियत दूनी बढत, कहाँ तृप्ति की ग्रास ।।६४।।

मधुर सुधा तैं गंग जल, मोहि प्यास दुख देतु ।
भलैं रहो तप ताप को, ह्वै जल पीवन हेतु । ६५।।

कारे तैं उजरे भये, वपु परसत जल गंग ।
तिन्ह फिरि कारे करत ते, होहि न उजरे ग्रंग ।।६६।।

सुरसुरि तव पय पान करि, ग्रंक तिहारैं सोय ।
फिरि तिनकौं जननी जठर, परि पय पिवन न होय ।।६७।।

पिता मुख्य सब बंधु तैं, तातैं ग्रधिकी मात ।
पै ह्वै सुरसुरि जल पियत, ग्रमित मात की घात ।।६८।।

जह्नु पिता पति शंतनों, भीष्म पुत्र रनजेतु ।
ह्वै कुटुंबिनी गंग क्यों, ग्रघ कुटुंब हरि लेतु ।।६९।।
चुबकी लै कढि कैं लख्यो, भो ग्रति हरखो ग्रंग ।

साथी पाप दैव के, तैं कित काढे गंग ।।१००।।
मैं गायो गंगा शतक, गावहि सुनि है कोय ।
तन्मन स्व ह्वै तो तुरत, गंग न्हान फल होय ।।१०१।।

कवि-परिचय

नागर जीवनलाल द्विज, बुन्दीधीश प्रधान ।
निज तिय तन ज्वर हरनहि, किय गंगा स्तुति गान ।।१०२।।

रचनाकाल नभ चख बर्ष मयंक मित, बिक्रम सम गय बीत ।
१९२० मधु सित नवमी भानु दिन, गायों गंगा गीत ।।१०३।।*

पुष्पिका :- इति गंगा शतक संपूर्णम् ।

२४८८. ६२७० छंद सुधाधर

प्रारम्भ :- ।। र्द० ।। श्री गणेशाय नमः । अथ छंद सुधाधर लिख्यते ।

दोहा

अखिल अनादि अनंत अज, अलख सकल सुखदाय ।
अनघ अजित अद्वैत प्रभु, प्रनवौ पंकज पाय ।।१।।

वारन वर भावर वदन, वंदन विंदु सुवेस ।
वाक नाथ विघु भाल भत्रि, विघन विहा विबुधेस ।।२।।

संकर संकर शुभ तन, शैल शैल जाईस ।
सुर सरि धर ससि सुल धर, मुखद सरन जगदीस ।।३।।

विघ्न विनाशनि विदु वदनि, विबुध विजय विस्तार ।
वीस भुजी विस्वंभरी, विस्व उपावन हार ।।४।।

x x x x x x x

वर वानी वोधव्य वृतं, वानी वृत वखांनि ।
हुयगे हुयहै है अवै, आश्रयता तिन आंनि ।।१२।।

वरनौं छंद सुधाधरहि, आभरनौ कवि चंद ।
मन हरनौं महि पाल मनि, लहि सरनौ रघुनंद ।।१३।।

नृप लछिमन बंस बर्ननं

महि पति मनि महि जस महा, कुल तिन कहौ वखांनि ।
गावत गुन गनपति गीरा, पारान केही प्रमानि ।।१४।।

---

* प्रस्तुत गुटके में बूंदी के महाराजा रामसिंहजी के मंत्री जीवनलाल नागर तथा उनके पुत्र शंभूराम की कृतियों का संग्रह है । संवत् १९१४-१९१५ 'अवतार माला नी गरबी' तथा 'रासदश्वाध्यायी' का रचनाकाल दिया गया है । लिपि भी २० वीं शताब्दी की ही है अतः गुटके में संकलित कृतियों का अपना विशेष महत्व है ।

मो मति के अनुमान तै, वरनौ वंस विसेस ।
सुनि रीझै सज्जन सरस, सादर समुझी कवेस ।।१५।।

आदि पुरुष व्यापक अलख, आदि वंस प्रभु आंनि ।
तिनतै प्रगट पिता महै, रचना जगत रचांनि ।।१६।।

अज सुत मुनि मारीच, अखि वक्ता वेद प्रवीन ।
हरि भक्ता रक्ता रहसि, कर्ता कुल कृत कीन ।।१७।।

कस्यप जिन नंदन कहौ, सृष्टि सजन के मूल ।
सुर असुर नर नाग खग, उद्भव उन अनकूल ।।१८।।

परम प्रकास प्रकास कर, आकर कर करतार ।
तम हर हिम हर रौर हर, हर रचना भय हार ।।१९।।

सविता कस्यप कौ तनय, फविता छविता तेज ।
कविता तिन कृत की कथी, तद विताइ वन मे जेज ।।२०।।

भांन वंस के भूप भय, इक तै इक अधिकाय ।
तिन वल प्राक्रम जस, कथित पार कौंन कवि पाय ।।२१।।

रघु इख्याकु हरिचंद नल, मांधाता महिपाल ।
प्रथु भागीरथ आदि दै, इक तै एक विसाल ।।२२।।

तिन कुल मै त्रयलोक पति, रामचंद्र अवतार ।
सुजस वखानत सेस श्रुत, भूमि उतारयौ भार ।।२३।।
अवनीपति आदित्य कुल, अगनित अजित अभंग ।
इक इक जस नहि कहि सकहि, सहस सेस ह्वै संग ।।२४।।
प्रथीराज अवतार प्रथु, रवि कुल कौ रवि जांनि ।
अरि गंजन रंजन सुजन, तिन जस कहौ वखानि ।।२५।।

छप्पय

प्रथु सरूप प्रथिराज थप्प मरजाद हिंदु थिर ।
दलि दिलीस दल दीह भंजि मुगलान जोस भरि ।।
पैमलिय पुहुमि पठान मेटि सैयद सु सेख मद ।
दष्यिन करि इह वाट हेम नग सिंधु पारि हद ।।
विचलाय सात पति साह वल, जिन समान नहि नृप वियो ।
द्वारिकाधीश जगदीस प्रभु, निज पुर तिन दरसाय दियो ।।२६।।

दौहा

प्रथु नृपाल सुत भाल, वड गंजन अरि गोपाल ।
सूमसाल कविपाल, करटाल चवद्दह चाल ।।२७।।

गोपालहि नर नाथ कै, हिंदुनाथ नृपा नाथ ।
किते अनाथ सनाथ करि, सजस गाथ निधि पाथ ।।२८।।

कवित

पुहुमि दरे पय निध मै पग्गरे होत,
संक लंक वारे जे वुलंद वाहु वर के ।
डारे डर साह सतनू का दंत धारे,
अरि कारे मतवारे गज ल्यावत निजर के ।।२९।।

दोहा

नाथ नरेसुर को सुवन, महिप मनोहरसीह ।
खाढा खल खगाकरण, अटाहरण अवीह ।।३०।।
सुवन भूप करणेस को, सुखसिंघ समर निसंक ।
रजधानी चौमू रची, वैंठि दूरग वड वंक ।।३२।।

कवित

चौमू च्यार पैठोर कौ दूरग अति राच्यो,
दी है रैनी की रहनता गहनता महादुरी ।
खाई जल पूरीति किलोलै हंस सारिसन,
विकट सघन वन डाल डाल तै जुरी ।।
देखि अरि संक मानै जानै जग अजइजो,
असरन सरन सु आनै अति आतुरी ।
पेखि सुखसिंघ की सुवेस रजधानि,
जगमै नवी लखांनी तापै वारौ अलकापुरी ।।३३।।

दोहा

सुखसिंघ नंद सुकंद, सुख पुहुमि इंद्रकुल चंद ।
रघुनाथ प रघुनाथ ज्यौं, सोभा सींल समंद ।।३४।।

श्री रघुनाथ नरेस सुत, मोहनसिंघ महिंद्र ।
नीति रीति राजस निरखि, समता लहै न इंद्र ।।३६।। *

जोधसिंह मोहन तनय, जोध महा जुध जीत ।
पारण मीत अभीत उर, धारण धरम सुनीत ।।३८।।

कुरम कुलयय निधि प्रसिध, रतन रतन सम जानि ।
मंडन माधव भूप को, हर तम अरि असुरान ।।४०।।

रतनसिंघ सुत नीति रत, श्रीपति हृदय प्रतिति ।
कीरति वटवण कूरिमा, रणजीतण रणजीत ।।४२।।
किसनसिंघ रणजीत सुत, किसन रूप नरनाह ।
ढावण देस ढुढाहडा, आडण कुल कछवाह ।।४४।।

कस्यप घर दिनकर कहै, वसुवर जेम व्रजेस ।
दसरथ घर रघुनंद वंस मनि, किसन धरा सु लछेस ।।४७।।

सोभित सभा लछेस की, वहु कोविद कवि चंद ।
श्रुति पुरांन इतिहास कथ, चरचा छंद प्रबंध ।।४८।।

आश्रयदाता कृपा सहित कवि चंद कही, लछमनसिंह नरेस ।
छंद प्रबंद विचित्र गति, भाषा रचित सुवेस ।।६६।।

लहित लछमन नर नाह को, हुकम चंद चित धारि ।
वानी नरवानी विमल, वृत्ति प्रवंद विस्तारि ।।६७।।

रचनाकाल संवत वसु निधि वसु ससि, माघ सुक्ल शसि लीन ।
१८६८ छंद सुधाधर वार बुध, प्रगट पहुमी कवि कीन ।।६८।।

**कवि वंस बर्नन**

कूरम कुल के सुजस कर, जातिज सोंधी जांन ।
वीरभांण जयसाह दिय, पदवो राव प्रमाण ।।६९।।
जयसिंघपुर जयपुर निकट, वाट उदिक मुजह दीन ।
वीरभान जयसाह की, सदा सेव मैं लीन ।।७०।।

* विस्तार भय से बीच-बीच के छन्द छोड़ दिए गये हैं ।

दयाराम तिनके सुवन, माधव मन रिझवार ।
वर वानी कविता विमल, पुहमी सुजस विसतार ।।७१।।

माधव नृप करिकै महरि, उदिक हिंगालो कीन ।
सहस एक तनखा समीप, सनमुख वैठीक दीन ।।७२।।

तिनके सुत जयदेव कवि, कविता समुझ विसेष ।
अलवर पति मंडन मही, सेवे वखत नरेस ।।७३।।

महाराव बखतेस नै, कीनी कृपा अपार ।
भायापुर दीनौ उदिक, सुख संपति को सार ।।७४।।

वहु आदर वहु प्यार करि, राख्ये निकट वसाय ।
मोदित कवि जयदेव तै, वखतावर गुन गाय ।।७५।।

तिनको नंद सु चंद कवि, भाषा काव्य प्रवंध ।
जापै अधिक कृपा करि, वैरीसाल महिंद्र ।।७६।।

गाँव दियो पहुलादपुर, उदिक अधिक अहलाद ।
राख्यौ निकट सु चंद को, सतसहि सुनन समाद ।।७७।।

तिनतै अधिक सुहेत करि, लछमनसिंघ नरेस ।
भूष घन वहुमोल पट, दीनै चंद कवेस ।।७८।।

कह्यौ चंद करिकै कृपा, लिछमन मुख कविराज ।
हुकम दियो बरनौ विमल, भाषा छंद समाज ।।७९।।

जय वनमाली वृज रमनि, नागर नंदकिसोर ।
जदुपति वृषभानजा, करो कृपा मम वोर ।।८०।।

ईति श्री कृष्ण विहारि चरन सरन श्री नृपति लछमनसिंघ देवाज्ञाया छंद सुधाधर देवस्तुति, नृपवंस, कविवंस, ग्रन्थारंभ, कवि चंद विरचिते नाम प्रथमो मयूख ।

अन्त :- कवित्त

गंग गनराज गिरराज गिरजा गंध्रव,
गोपि तिसु गंग धर गिरा गुन गाय गाय ।

श्रुत सेस नारद सनंत नंद सुक छंद,
श्रीपति श्री सिद्धि जुत सदा सुख सरसाय ।।
सूर ससि दिगाज दिसाधिप सरितपति,
जल थल पवन सुत तत तता वटाय ।
पुहुमि सुरिंद किसनेस नंद लछ भूप,
रावरो सुजस जग तौ लौ रहौ अधिकाय ।।३६।।

दोहा

छंद सुधाधर ग्रंथ किय, लछमनसिंघ सुहेत ।
छंद प्रवंधय वचन को, समजो सुद्ध सकेत ।।४०।।
श्री ब्रजराज उदार दिल, दीन बंधु सुख दाय ।
देहु मया कर मोहि वर, मन तुम चरन सहाय ।।४१।।

पुष्पिका :– इति श्री नृपति लछमनसिंघ देवाज्ञा कवि चंद विरचिते छंद सुधाधर उप छंद, वृते वरण गीत छंद, उप छंद वरण नाम षोडसो मयूख । मिती वैसाख सुदी २, समत १६११ । लिखीतं ब्राह्मण दाहिमा कुथालाल, लिखायतु, रावजी श्रीचंदजी श्री

२४६०. १०१८५ जगत विनोद

प्रारम्भ :– ।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ जगत वीनोद लिख्यते ।।

दुहा

सिधि सदन सुन्दर वदन, नंद नंद सुद मूल ।
रसिक सिरोमनि सामरे, सदा रहू अनुकूल ।।१।।
जय ज(य) सकति सिलामयी, जय जय गढ आमेर ।
जय जयपुर सुरपुर सइस, जो जाहिर चहु फेर ।।२।।

आश्रयदाता जय जग जाहिर जगतयति, जगतसिंह नर नाह ।
श्री प्रताप नंदन बली, रवि वंसी कछवाह ।।३।।
जगतसिंघ नर नाथ कौं, समुझि सबन की इस ।
कवि पदमाकर देत है, कवित बंध आसिस ।।४।।

### कवित्त

छत्रिन के छत्र छत्र धारिन के छत्रपति,
छज्जत छटानि छिति छेम के छतैया हौ ।
कहै पदमाकर प्रभा के प्रभाकर,
दया दरीयाउ हिंदु हद के रखैया हौ ।।
जागते जगतसिंघ साहिब सवाई,
श्री प्रताप नृनंद कुल चंद रघुरैया हौ ।
आछै रहौ राज राज-राजन के माहाराज,
कछ कुल कलस हमारे तो कन्हैया हौ ।।१।।

आप जगदीसर ह्वै जग मै विराजमांन,
हौं हू तो कविसुर ह्लै राजतै रहत हौं ।
कहै पदमाकर ज्यौं जोरत सु जसु,
आपु हौ हूंतो तिहारो जस जोरि उमहत हौं ।।
श्री जगतसिंघ माहाराज मांनसिंहावत्,
वात यह साची कछु काची ना कहत हौं ।
आपु ज्यौं चहत मेरी कविताद राज त्यौं में,
उमरदराज राज राऊरी चहत हौं ।।२।।

### दोहा

जगतसिंघ नृप जगत हित, हरखि हियै नधि लेहू ।
कवि पदमाकर सौं कह्यौं सुरस ग्रन्थ रचि देहू ।।५।।
जगतसिंघ नृप हुकम तैं, पाइ माहा मन मोद ।
पदमाकर जाहर करत, जग हित जनत विनोद ।।६।।
नव रस मैं जु सिंगार रस, सिरे कहत सव कोइ ।
सरस नायका नायकहि, आलंबत(न) हु होइ ।।७।।
तातें प्रथमहि नायका, नायक कहत वनाय ।
जुगति यथा मति आपनी, सु कविन को सिर नाय ।।८।।

### अथ नायका लक्षन

रस सिंगार को भाव उर, उपजत जाहि निहार ।
ताहि कौ कवि नायका, वरनत विवध विचार ।।९।।

अथ नायका कौ उदाहरन

सुंदर सुरंग नैन सोभित अनंग रंग,
अंग अंग फैलत तरंग परिमल के।
वारन के भार सु कुमारि कौ लचत लंक,
राजै परजंक पर भीत महल के।।
कहै पदमाकर विलोकि जन रीझै जाही,
अंबर अमल के सकल जल थल के।
कोमल कमल के गुलावन के दल के,
सु जात गडिया इन विछौंना मुखमल के ।।३।।

अन्त :- दोहा

घन बरसत नख पर धरचौ, गिरि गिरधर निसंक।
अजब गोप सुत चरीत लखि, सुरपति भयउ ससंक ।।१६।।

अथ सांत रस

सु रस सांत निरवेद है, जाकौ थाइ भाव।
सत संगति गुरु तपोवन, मृतकं समान विभाव ।।१७।।
प्रम रुमंचादिक तहां, भाखत कवि अनुभाव।
धृति हरषादिक कहै, सभु संचारी भाव ।।१८।।
सुद्ध सुकल रंग देवता, नारायन है जांन।
ताकौ कहत उदाहरन, स(सु)नहुं समति दे कांन ।।१९।।

सांत रस कौ उदाहरन

बैठो सदा सतसंग ही मैं विख मान विखे रस कीति सदाही।
त्यौं पदमाक(र)भूठि जितौ जग जानि सुज्ञान ही कै अवगाही ।।
नाक की नौक मै डीवि देयै नित चाहै न चीज कहू चित चाही।
संतत संत सिरोमनि हैं धन है धन वै जन वेपरवाही ।।२०।।

दोहा

नभ वितान रवि ससि दिया, फल भख सलिल प्रवाह।
अवनि सेज पंखा पवन, अवन कबू परवाह ।।२१।।

अविहित तै विरकत रहत, कछु न दोस कै त्रास ।
विहित करत सुन हित समुझी, सिसुवत जे हरि दास ।।२२।।
इति (अ) नरस निरूपनं ।

दोहा

जगतसिंघ नृप हुक्म तै, पदमाकर लहि मोद ।
रसिकन कै वस करन कौ, कीन्हौ जगत विनोद ।।२३।।

पुष्पिका :- सिद्धि श्री कूर्मवंसावतंस श्रीमन्माहाराजाधिराजगजेन्द्र श्री सवाई जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थ मोहनलालमदात्मज कवि पदमाकर विरचितं जगतविनोद नाम काव्य संपूर्णं । शुभं समत् १९०६ प्रवर्त्तमान्ये मासोत्तमे मासे मार्गसिरमासे शुक्लपक्षे तिथौ १२ भौमवासरे लिखितं रत्नावतीमध्ये, नागर भट कुबेर हस्ताक्षर । शुभं भवतु । कल्याणमस्तु । श्रीरस्तु । श्री । श्री ।

२४९६. ८७३६ जलवय शहनशाह इश्क *

प्रारम्भ :- ।। श्री नृत्य गोपालो जयति ।। अथ जलवय शहनशाह इस्क लिख्यते ।

राग सारंग : दोहा
मंगलाचरनं

हुवा हैं अमल इस्क का, दिल यार की जुदाई ।
हैरत हैं मुझको ए ज्यांन, यह क्या कहर हैं खुदाई ।।

---

* कृष्णगढ नरेश महाराजा सांवतसिंह जिन्होंने राज-पाट त्याग कर वैष्णव-भक्ति को अपनाया था, उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिसमें 'इश्क चमन रा दोहा' भी प्रसिद्ध है । महाराजा के ही वंशजों में कोई १००-१२५ साल बाद महाराजा जवानसिंह द्वारा 'जलवय शहनशाह इश्क' नामक लघु कृति की रचना की गई । इस कृति में भी कवि ने नागरीदास को 'इश्क-राजा' के भाट की उपमा दी है । ऐसा कर वस्तुतः भगवत्प्रेम में व्याकुल नागरीदास को बहुत ही उचित एवम् सुन्दर उपमा से अलंकृत किया गया है ।

इश्क हकीकी और इश्क मजाजी, दोनों ही अर्थों में इश्क की अभिव्यक्ति की जाती है । प्रस्तुत कृति में भी 'इश्क को खुदाई रूप' मान कर उसका शहंशाह के

इकताल सोरठा : सोरठा

व्रज जन जीवन प्रांन, हैं अधीन जिनके सदा ।
कृष्ण करैं जिहिं ध्यांन, हैं इलाइ महबुब नित ।।

दोहा

हरि राधा हित रीत मैं, विप्र योग रस सार ।
तहां प्रीत सोइ प्रेम हैं, सोई इस्क निर्धार ।।१।।

इस्क परमानंद वर्ननं

यामैं भेद न जानियैं, इस्क खुदाई रूप ।
विप्र योग मैं प्रगट हैं, परमानन्द स्वरूप ।।२।।
ताही कौं शिर नाय कैं, ताही को जस गांउं ।
ताही की रजधानि के, वरनन हित वर पांउं ।।३।।

इस्क शहनशाह वर्ननं

इश्क कौं राजा कहत हैं, या विन फीकी वात ।
लौकिक लोक अलौकिकी, याही सौं छवि पात ।।४।।

रानी वर्ननं

लगन सु रानी इस्क की, या विन प्रीत न होय ।
या विन प्रेम जु होय तो, अंग हीन जग जोय ।।५।।

मन्त्री वर्ननं

इस्क कि कौन सला कहैं, कहैं सु जानैं भेद ।
मजनूं मंत्री इस्क का, जहां न पहुंचे वेद ।।६।।

नगर वर्ननं

वृन्दावन यह नगर हैं, जहां इस्क को राज ।
घर घर डौंडी फिर रही, नागर प्रीत सु काज ।।७।।

---

सम्पूर्ण सरंजामों के साथ रूपक बाँधा गया है । लिपिकर्त्ता का नाम 'जयकवि' लिखा है, संभवतः यह जवानसिंह का ही लघु नाम हो, यदि ऐसा है तो कृति स्वलिखित होने से और भी अधिक महत्व की है । प्रारम्भ में एक दोहा और सोरठा हाशिए में ऊपर तथा बाँयी ओर लिखा गया हैं । संभवतः उक्त छन्दों को कवि द्वारा ही मूल पाठ में बाद में जोड़ा गया है । ग्रन्थाङ्क २२८९ पर इसी रचना की स्वोपज्ञ टीका की पाण्डुलिपि भी प्रतिष्ठान में उपलब्ध है ।

गढ वर्नंनं

आशिक का दिल दुर्ग हैं, इस्क पनाह कि ठोर ।
ढवकै धावा देत हैं, दिलदारौं की ओर ।।८।।

सिंहासन ओ अदालत, ओ अदालत का अध्यक्ष का वर्नंनं

आशिक शिर के तख्त प, बैठ इस्क सरताज ।
जुल्म अदालत का दिया, महबूबौं कौं राज ।।९।।

जल्लाद वर्नंनं

कहर नजर महबूब की, लियैं तेग जल्लाद ।
इस्क राह चलते जिन्हैं, मारैं करि आल्हाद ।।१०।।

छत्र वर्नंनं

रस सिंगार सो छत्र हैं, इस्क नृपति के सीस ।
ताकी छांह सु जगत पर, सबकों सुखद वरीस ।।११।।

चंवर वर्नंनं

चंवर हास्य रस सौं हुवैं, इस्क राज को बोध ।
प्रीत रंग उज्जल लसैं, चित सात्विक कौं शोध ।।१२।।

अगर धूम वर्नंनं

आशिक स्वास उसास यह, मनहु अगर की धूंम ।
रस्क राजदरबार मैं, खूब रगमगी घूंम ।।१३।।

धनुष वांन वर्नंनं

भौंह धनुष महबूब की, बरुनी नावक तीर ।
इस्क हाथ सौं चलत हैं, ह्वै आशिक चित पीर ।।१४।।

ध्वजा वर्नंनं

अलक ध्वजा महबूब की, इस्क द्वार फहरान ।
मानौं आशिक जीत हित, वैरख खुली निसांन ।।१५।।

सदियांने वर्नंनं

निंदा सदियाने घुरत, इस्क नृपति के द्वार ।
कितेक जन डर भजत हैं, सुंनि घूंमैं रिझवार ।।१६।।

मुसद्दी वर्नंनं

इस्क दिली हैं दिलरुबा, हैं जु मुसद्दी मैंन ।
यार जुदाई मेटता, सदा सुघर सुख दैंन ।।१७।।

कोतवाल वर्नंनं

दिल कौं जकड कैं बस किया, महबूबौं के वैंन ।
यह कुतवाली कर रहे, इस्क सैंन के ग्रैंन ।।१८।।

दूत वर्नंनं

चितवन टेढी बंक हैं, यह कुतवाली दूत ।
आशिक मन कौं गहत हैं, हुक्मरवां मजबूत ।।१९।।

भाट वर्नंनं

भाट नागरीदास नृप, इस्क शानशा हेत ।
सब जग मय जाहिर किया, इस्क चिमन रस केत ।।२०।।

हस्ती वर्नंनं

इस्क मदोन्नत मत्तता, सोई मत्त गयंद ।
लाज अगड सौं नहि रुकै, तौडैं संकुल फंद । २१।।

अश्व वर्नंनं

मन तुरंग हैं इस्क को, पहुंचैं जाय तुरंत ।
महबूबौं के नगर मैं, फिर-फिर जात फिरंत ।।२२।।

रथ वर्नंनं

करैं मनोरथ मिलन का, सोई आशिक रत्थ ।
शिर के पावौं सौं चलैं, जब वे पावैं पत्थ ।।२३।।

हरोल वर्नंनं

करैं हरोली इस्क की, नैंन सैंन मधि खूब ।
तीखी चितवनि झांकि कैं, फते करैं महबूब ।।२४।।

सेना वर्नंनं

राग रागिणी इस्क की, चतुरंगिनि सैनाह ।
घायल सुन मन हौत हैं, कर सायल वैनाह ।।२५।।

नकीव वर्नंनं

आशिक तड़फ के बोल यह, मानौं कौल नकीव ।
अहतमाम करि अनख सौं, इस्क अदब तरकीव ।।२६।।

कोश वर्नंनं

आशिक का सर्वस्व हैं, महबूवौं के चित्त ।
तन-मन कौं पोखैं सदा, यह ही याके वित्त ।।२७।।

मेघ वर्नंनं

इस्कराज के राज मैं, अंसुवनि जल को मेह ।
वासों सब बन हरित हैं, या सौं सूकत देह ।।२८।।

पवन वर्नंनं

बेपरवाई पवन हैं, आशिक दिल झकझोर ।
कहर खुदाई का चला, अजब हवाईतोर ।।२९।।

वाग वर्नंनं

हुस्न बगीचा इस्क का, छवि पर भंवर लुभाय ।
वही तजल्ली ज्यांन की, मेरे जिय अति भाय ।।३०।।

कैदी वर्नंनं

आशिक कैदी इस्क का, पड़ी जुल्फ जंजीर ।
सूता मिजगां तीर पर, ल्याता चित नहिं पीर ।।३१।।

खेमा वर्नंनं

महवूवौं की कीरति, खेमा तने उतंग ।
इस्कराज के रहन के, रंगे रंग सुरंग ।।३२।।

फल स्तुति वर्नंनं

इस्क शहनशा को जु यह, जलवा कियो वनाय ।
चहत मरातव इस्क सौं, तो पढइहिं चित लाय ।।३३।।

कवि मन-भाव वर्नंनं

नग धर लखि चित अटकि कैं, परचो गिरचो मधि फंद ।
ज्यौं वालक लड बावरो, चहत खिलौंना चंद ।।३४।।

र. काल पैंताली उगनीस सैं, प्रथम चैत्र कुजवार ।
१९४५ ऋतु वसंत पून्यौं सु तिथि, कीनौं ग्रन्थ उचार ।।३५।।

पुष्पिका :– इति श्री महाराज जवानसिंहजी कृत जलवय शहनशाह इस्क संपूर्ण । संवत १९४५, द्वितीय चैत्र शुक्ल ३, शनौ । लि० कवि जयेन, कृष्णगढ मध्ये । श्रीरस्तु । शुभं भूयात् । श्रीरस्तु ।

२५२४. ७९६८ तिल-शतक
( गाल और चिबुक पर लसित तिल के विषय में विविध मनोरम कल्पनाएं )

प्रारम्भ :– ।। दं० ।। अथ तिल सत लिख्यते । श्री जुगतराइ कृत ।

(दोहा)

गोरे मुख परि तिल लसै, ताहि करूं परनांम ।
जांनौ चंद बिछाय कै, वैठौ सालिगराम ।।१।।
छत्र तरौंना लट चमर, गाल सिंहासन साज ।
सोहत तिल महाराज ज्यौं, अंग सुदेस रसराज ।।२।।
ब(बो)यौ बीज सिंगार तिल, तिल कपोल छवि खेत ।
लचि रुमांच अंकुर उठे, पिय तन मैं किह हेत ।।३।।
मंद हसन दुति दसन की, तिय कपोल छवि लेत ।
मुख बांटै तिल चावरी, नैंन बधाई देत ।।४।।
पांनिप भरयो कपोल विधि, तह तिल धरयौ बनाइ ।
मुख लावन नहि पावई, मन चैंटी मडराइ ।।५।।
क्यों न होइ प्रभु जगत के, संपति सुखनि निधान ।
या मुख सै द्विजराज को, कीनौ है तिल दांन ।।६।।
तेरे तिल कौं तनक लखि, पैठि गयौ मन अंध ।
डारत बार सिंवार करि, परयौ नेह कै सिंधु ।।७।।
देखि रहत आधीन ह्वै, पलक न करत सलांम ।
कारे तिल कौं चाख कै, लोचन भये गुलांम ।।८।।
बरुनी तरकस दुह दसा, भुव धनु लोचन भाल ।
अलक सैल अति लसत है, तिल कपोल परि टाल ।।९।।

और जुबेझौ राखिए, बांन गडत है जाइ।
तिल वैझौ उलटौ गडै, नैंन बांन मैं आइ ॥१०॥

सुमन वसावत तिलन कौं, यह जानत सब कोइ।
तिल जु बसाउत सुमन कौं, नेह नवेलौ होइ ॥११॥

तिल चारौ पानिप सलिल, अलप फंद परजार।
मन पंखी गहि गहि किते, डारै श्रवन पिंडार ॥१२॥

चिबुक डिठौना विधि कीयौ, डीठि लागि जिन जाइ।
वह तिल जग मोहन भयौ, डीठिनि लेत लगाय ॥१३॥

क्यौं सकुचत हैं सुन्दरी, घूंघट सौं मुख काढि।
शशि सम तेरौ मुख तुल्यौ, भयौ एक तिल बाढि ॥१४॥

तिय कपोल परि तिल लसै, यह जानौ मति कोइ।
सोम अंक मैं शीत निशि, रही सकुचि कै सोइ ॥१५॥

ज्यौं निसि दिन शिव कै सदा, शिवा रहत है संग।
त्यौंही मुह परि तिल जु है, शशि कै निशि अरधंग ॥१६॥

मुख वनाइ विधि देखि कै, रीझि सु भयौ अचेत।
केस लिखत लेखनी छुटी, छींट चिबुक इह हेत ॥१७॥

द्रिग देखत अंगि चांदनौं, गयौ जगत अंधियार।
या तिल के उदये सुनत, भयौ सकल उजियार ॥१८॥

काम जारि किय भशम शिव, बिरही मानत नांहि।
जांनत है जीवत रह्यौ, मुख तिल क्वैला मांहि ॥१९॥

पून्यौ मुख शशि चांदनौ तम निशि अरु कहां जाइ।
सिमटि सकुचि तिल नां मिलै, सरन रह्यौ है आइ ॥२०॥

अलक खुली लै कांम कौं, भई खेल की चाड।
टारैं टरै न गेंद तिल, परी चिबुक की गाड ॥२१॥

तिय कपोल कंचन तुला, एक पला तिल डारि।
तोलन कौनहि पाईयै, रह्यौ विरंचि विचारि ॥२२॥

रूप सिंधु मैं वहत है, मत कोऊ तहां जाइ।
या तिल मल्लाह पथ रहै, गाल कहर दरियाव ॥२३॥

रसना रस अधरन परस, द्रिगन रूप मन शांति ।
सवन देत है सब कछू, तिल चिंतामनि कांति ।।२४।।

तिय कपोल परि तिल लसै, चमकत बदन अनूप ।
मानौं दामनि मैं लसै, महादेव कौ रूप ।।२५।।

इंद्र धनुषि सोइ आड है, हसनि दामिनी देह ।
लट धुरवा तिल गाल परि, मन मोरन कौं मेह ।।२६।।

मन जोगी आसन कीयौ, चिबुक गुफा मैं जाइ ।
रह्यो समाधि लगाइ कै, तिल सिल द्वारै लाइ ।।२७।।

मुख चंदहि निज जानि कै, तिल सिंगार रह्यौ आंनि ।
हसनि आपु ही हास रस, बस्यौ निकट हित जांनि ।।२८।।

वेसरि मोती मीत मन, कंपै दयौ लटकाइ ।
तिल वसी लट ताजनौं, गह्यौ अनंत क्यौं जाइ ।।२९।।

सोभित तिल जु कपोल परि, मोपैं कह्यौ न जाइ ।
जानत हौं मुख कमल परि, भंवर रह्यौ ठहराइ ।।३०।।

अन्य तिलक के खंडन कीयें, होइ चीकनी देह ।
अैसो तिल जु कपोल परि, देखें लगै सनेह ।।३१।।

चिबुक कूप रसरी अलिक, तिल सुचि रस दृग वेलि ।
बारी वार सिंगार की, सींचैं मनमथ वैल ।।३२।।

अलग डाभ तिल गाल परि, आंसुन कौ परवाह ।
नींदहि देत तिलांजुरी, नैनां तुम्ह बिन नाह ।।३३।।

नित तिल सालिगराम कों, अंसुवन न्हावत नैंन ।
मांगत पलक प्रनांम करि, पै पिय देखन चैन ।।३४।।

मुख शशि घूंघट मै दुरै, यों क्यौं मुहि अभिलाखु ।
तिल जु गांठि सिंगार की, चोरि ले रह्यो काख ।।३५।।

तिल कपोल परि सोहियै, यौं मति जांनैं जीय ।
तिय हिय लोचन तारिका, देखनि निकसी पीय ।।३६।।

पानिप भरचौ जु चिबुक यह, सुर सिरज्यौं जगदीस ।
तिल नहि तामैं देखीयै, बूडे मन को सीस ।।३७।।

तेरे मुख को देखि कै, कवल परचौ जुल जाइ ।
और जु तिल ही हौंस करि, अलि राख्यौ बैठाइ ।।३८।।

तेरे मुख तिल होड शशि, कालिम लई लगाइ ।
नाम कलंकी ह्वै गयौ, बढै घटै पछिताइ ।।३९।।

अलक डोरि बन सीस तिल, छवि जल चिबुक सु ताल ।
रूप चटोरा मींन दृग, आइ फसै ततकाल ।।४०।।

काजर दृग रंजक भरे, अलिक फिरंग बंदूक ।
तिल गोली मन लच्छि कौं, मारै मदन अचूक ।।४१।।

तिल बेंदी लट ए करी, विधि कीनी यह रीति ।
गाल पटा मैं लिखि दई, मुख कौं दस दिसि जीति ।।४२।।

मन मैं मन चितई जबै, करौं दसन खत गाल ।
तिल न होइ इह स्यांम जू, नील परचौ तिह काल ।।४३।।

वैनी तिरवेनी बनी, तिह मनमथ अन्हवाइ ।
इक तिल के आहार सौं, सब दिन रैंन बिहाइ ।।४४।।

तिलनहि मुहर बनाइकै, मुखहि दई विधि आप ।
तासौं सबके दृगन परि, करी तारिका छाप ।।४५।।

इह असौ वचनन करत, मुहि लाग्यौ वकवाद ।
तिल तरुनी के चिवुक मैं, कवि रसना रस स्वाद ।।४६।।

मृग मदनांहिन मगन मैं, ढूंढत है दिन राति ।
तिल तरुनी के चिवुक मैं, सोई मृगमद जाति ।।४७।।

मुख तिल लख्यो बनाइ बिधि, ताहि न जांनै कोइ ।
एकै अक्षर प्रेम को, पढै सु पंडित होइ ।।४८।।

काजर कजरोटिनि मैं, लीजैं दृगनि लगाइ ।
इह तिल काजरु चिवुक मैं, तह दृग लागै जाइ ।।४९।।

छई रोग मनमैं भयौ, करि देखी सव पूरि ।
मोती जरचौ मृगांकु तिल, तासौ ह्वै है दूरि ।।५०।।

होरी खेलै मैंन नित, अधर गुलाल सु धारि ।
तिल चोवा को चह वचा, देखत मन दयो डारि ।।५१।।

सनमुख नैंनां कवि सबै, लागन कौं ललचाहि ।
जित कित तै अंग लोह ज्यूं, तिल चुंबक तन जाहि ।।५२।।

तिल तारौ चिबुकहि जड्यौ, को नर सकै उघारि ।
मन की तारी जो लगै, तौ खुलै रूप भंडार ।।५३।।

मुख शशि कौं शोभा करै, उड मोतिन कहूं जोति ।
अंग दुति दामनि मेघ तुल, ज्योति परमपर होत ।।५४।।

तिल तरुनी के चिबुक मैं, सो आरसी अनूप ।
मन मुख देखैं आपनौ, रूकै कांम सरूप ।।५५।।

रती स्यांम तिल पाइकै, तुली कनक सम जाइ ।
देखौ रती कपोल की, अतुल भई तिल पाइ ।।५६।।

विधि कपोल टिकिया करी, तिहि तिल धरचौ बनाइ ।
तौ मन छुधित फकीर ज्यौं, दिकी रह्यौ है लाइ ।।५७।।

और कसोटी परि लगै, कंचन रेखा जागि ।
तिलक कसोटी रीझि कै, कनक चिबुकि रही लागि ।।५८।।

अंग ललाट नामिक तिलंग, करनांटक कहूं आंन ।
सहित देस मुख दुरत है, देखति हिम्मति खांन ।।५९।।

और अंग सब छाडि कै, कांन कुठारी ताइ ।
तिलक लंक परचौ चिबुक मैं, लखे गात विधि लाइ ।।६०।।

और अंग सब छांडि कै, तिल ही सौं करि प्यार ।
साधि कियौ विधि चिबुक मैं, ममता कौ अनुस्वार ।।६१।।

तिल गुटिका तिय चिबुक मैं, जित जांनै तित जाय ।
नैंन पैठि तिय पैठि कै, मन मैं पैठै आइ ।।६२।।

तिल सुनु कुंजन तिलक पर, जिन अँखियन मैं जाय ।
ते अंखीयां तहई बसैं, कोऊ न सकै बताइ ।।६३।।

तेरौ तिल तिरलोत्तमा, तिल तोले सं मिलाय ।
उह उठि कै सरगहि गया, उह भुवि रह्यौ थिराइ ।।६४।।

सिद्धि पीठ मुख शशि कीयौ, ओड्यौ तिल जगि जांम ।
कांम जपै जप कांमना, शिव सौं करै संग्राम ।।६५।।

तिय कौ मुख सुंदर बन्यौ, विधि फेरचौ परगार ।
तिल जु बीचि कोविद लहै, गाल गौलइ कढार ।।६६।।

तेरे मुख परि तिल लसै, सु मेटत है दुख हुंद ।
जानौ बेटा भांन कौं, गोद ले रह्यौ चंद ।।६७।।

जिय जु हुतौ सो तिल भयौ, तिल सु ह्वै गयो जीउ ।
पीय कौ तिल तिल जीय कौ, तोही लागै पीव ।।६८।।

वैनी नदी सिंगार की, लट विरहां दुहूं ऊर ।
चिवुक खेत तिल बीजवे, सींचै कांम किसोर ।।६९।।

जग मोहन कीजै सु तिल, दयौ विधाता तोहि ।
जब जब ग्रांखिन मै परे, मोहि लेत है मोहि ।।७०।।

चावर हैं गोहूं रहै, कबहूं उरद ह्वै ग्राइ ।
कबहूं मो द्रिग चिवुक तिल, सरसो देइ फुलाइ ।।७१।।

या मिसि पीय कपोल कौं, कहै ग्रांगुरी लाइ ।
ग्रधर मिठाई लेन कौं, चैंटी लागी ग्राइ ।।७२।।

तिलक डरी द्रिग पात है, नासा तिल कौ फूल ।
तिलक चिवुक सोई तिल फल्यौ, इहै नेह कौ मूल ।।७३।।

चिवुक सरूप समुद्र में, मन जान्यों तिल नाव ।
तरन गयौ बूड्यौ तहां, नेह कहर दरीयाव ।।७४।।

नांकु ढेकुरी डोल तिल, ग्रलिक ले जकरि मैंन ।
चिवुक रूप की गाड परि, पावत पंथी नैन ।।७५।।

तिल तरुनी के चिवुक पर, का पैं बरन्यौं जाइ ।
बचन सुननि कौं निकट मनो, कोइल वैठी ग्राइ ।।७६।।

तन कंचन हीरा दसन, विद्रुम ग्रधर वनाय ।
तिल मनि स्यांम जरी तहां, विधि जरीयाउ जराइ ।।७७।।

वदन चंद मंगल ग्रधर, बुधवांनी गुरु ग्रंग ।
शुक्र दसन शनि तिल लुकै, ग्रंबर पिय रवि संग ।।७८।।

च्छाडि च्छाडि कै लेत है, चैंटी तिल मुख मांहि ।
मुख तिल मन चैंटी गही, क्यौहूं छंडै नांहि ।।७९।।

नैनां उघरत देखीयै, मुख तिल नैंकु विथार।
मूंदेउ है तिल पूर के, होत सकल अंधीयार ॥८०॥

मो मन मरजी या भयौ, छिनकु दुखी छिनु चैंन।
मारति विस तिल चिबुक कौ, ज्यावत अमृत वैन ॥८१॥

विधि तिल कीनौं चिबुक पर, रमन दिठौंना दींन।
देखत तिल ज्यौं टरत नहि, सब कौं टोना कीन ॥८२॥

रोमावलि कीनी भृकुटि, अलिक सीम छवि राशि।
तब तैं तिल मीरी भयौ, चिबुक गाड बदि पासि ॥८३॥

सैंन वैन विभचार है, मुख है थाई भाव।
तिल आपन सिंगार रस, सकल रसनि कौ राव ॥८४॥

बैनी गज नैंनी तुरंग, लट वैरख फहराइ।
पोति छरा सैंनां लीयै, तिल सिंगार रस राइ ॥८५॥

धंधद एहैं छोडि कै, मुकट दये लटकाइ।
तिल कलियुग के राज इह, दई अनीति चलाइ ॥८६॥

टटीया अंगूर निपौरि भुव, लट छैं छरीया काम।
तिल जु चिबुक परि लसत है, सो सिंगार रस धाम ॥८७॥

हास सेत दुति पीत मुख, अधर लाल तिल स्यांम।
रंग परस्पर छवि बढै, शशि तैं मुख अभिराम ॥८८॥
हास सतोगुन रज अधर, तिल तम दुति चित रूप।

मेरे दृग जोगी भए, लाइ समाधि अनूप ॥८९॥
मंद हसन दुति दामिनी, मेघ तिलक तिल नित्त।
ज्यौ गरजै बरसै नही, तरसै चातक चित्त ॥९०॥
अधर विंब दारिम दसन, तिल जामनि सरसाइ।
रूप लावणि मा संग कछू, स्वाद न बरन्यौं जाइ ॥९१॥

बदन सरोवर रूप कौ, तिल मन तहां तराइ।
चिबुक गाड के भवर मैं, परचौ न निकस्यौ जाइ ॥९२॥
मोहन काज हकीम कौं,- कांम दयौ तिल तोहि।
एकै तिल के देखतैं, मोहि लेत है मोहि ॥९३॥

तिल निरख्यौ तिय बदन परि, इम लाग्यौ जिम सैल ।
अब औषध कौ चाहीए, बाही तिल कौ तेल ।।९४।।

मेरे तिल कौ ध्यांन धरि, गयौ गौर महियार ।
पूरिव है तिल ह्वै गयौ, जग्यौ आप अंधार ।।९५।।

बरनी तरकस भुव धनुष, तीछन बांन सु नैंन ।
अलक सैल ढाल ले, शिव सनमुख भयौ मैन ।।९६।।

कुंकम षोरस इंद्र धनु, हसति दामिनी देह ।
लट धुरवा तिल गाल पर, मनो मोरन कौं मेह ।।९७।।

छवि पांनिप सों मुख भरयौ, सरसि रच्यौ जगदीस ।
तिल नहि तामै देखियै, बूडे मन को सीस ।।९८।।

मुख तरुनी कै तिल लसै, मैं देख्यौ इहि भाय ।
मनों लुबध छवि वास सों, कमल भौंर विरमाइ ।।९९।।

तिलहि देखि बूडत कमल, तिल सों बहुत रिसाइ ।
जो ते मुख से हम करे, तिल काहे न बसाइ ।।१००।।

करनाटी लागी रहै, नासिक री भौ मित्त ।
सबकों छांडि तिलंग मै, करी छांवनी चित्त ।।१०१।।

चिवुक सीप समुद्र मैं, मन जानैं तिल थाह ।
गयौ आसरौ नैन कौ, लागि गयो उहां ग्राह ।।१०२।।

तिल सुनाल सो चितवु है, सोभा यह अभिराम ।
चिवुक गाड मै वैठि कैं, बन्यौ जुलाहे कांम ।।१०३।।

चिवुक गाड गड हाकियौ, तिलह धनी ठहराइ ।
मन कुंजर कों गाहतें, इह विधि मनमथ राइ ।।१०४।।

चिवुक गाड मै रूपनिधि, कांम क्रिपन रह्यौ धारि ।
तिल तह वच्चा व्याल कों, रह्यौ कौंडरी मारि ।।१०५।।

चिवुक देश मै काम ठग, चख तिल लाइ खारि ।
हांसी फांसी मेलि कै, देत गाड मै डारि ।।१०६।।

**पुष्पिका :–** इति चिवुक गाल तिल वर्नंनं, तिल सत संपूर्णं ।

२७७२. ९३३३ माधवानल कामकंदला कथा चौपई

प्रारम्भ :- श्री गणेशाय नमः । अथ माधवानल की कथा वार्ता लिख्यते ।

चौपई

प्रथम पारब्रह्म कु परणं । पुनि कछु जगत रीति रस वरनं ।।
पारब्रह्म पर पूरण स्वांमी । घट घट रहै सु अंतरजांमी ।।
घट घट रहै लखै नहिं कोई । जल थल मांहि सर्व मै सोही ।।
जाकौ आदि अंत नहि ग्यानी । पंडित कथा ग्यान सौं मांनी ।।
ग्यानी होय-स गुर मुख धावै । खोजी होय-स खोज वतावै ।।

दोहा

मन वच सोवत चलत क्रम, जगत चीतवत नीत ।
संग लग्यौ डोलत फिरत, सो कत धरै जु चित्त ।।१।।

x x x x x x

चौपई

र.का. सनै नवसैं ईक्यानवा आहि । करु कथा अव वोल ताही ।।
९९१ येही वात सुनै सव लोगा । करुं कथा शृंगार वियोगा ।।
(हिजरी) कछु आने कछु परके चोरै । जथा सकति करि अक्षर जोरे ।।
कछु करूं विरह की रीति । माधौ कामकंदला प्रीति ।।

दोहा

माधोनल सव विधि चतुर, कामकंदला जोग ।
कर्त्ता करुं कथा आलम सुकवि, उतपति विरह संजोग ।।४।।

अन्त :- चौपई

कथा चौपई आलम कीनी । पहिले कथा श्रवन सुनि लीनी ।।
कहुं कहुं वीच दोहरा पारे । कहुं कहुं आनि सोरठा धरे ।।
सुनत कथा यह सवै सुहाई । अति रसाल पंडित मन भाई ।।
प्रीतिवंत सुनै जो कोई । बढै प्रीति हियरे सुख होई ।।
कामी रसिक पुरुष जो सुनै । ते यह कथा रैनि दिन गुनै ।।

दोहा

पंडित बुधिवंता गुनी, कविजन अछिर टेक।
नाम निमत गुन उच्चरै, कहि कहि कथा अनेक ।।६२।।

पुष्पिका :- इति माधौनल की कथा संपूर्ण। लिखितं मिश्र पौहौकर, रोसी मध्ये। श्रुभ पठनार्थं। मासानांमासोत्तममास पौषमासे कृष्ण-पक्षै, तिथौ ५, रविवासरे। घटि वढि होय तो सोधियो। संवत् १८८१। श्री। श्री। श्री।

२७८७. ८०८२ रस प्रबोध

प्रारम्भ :- अथ मध्या धीराधीर लछन *

मध्या धीरा धीर वह, वचन कहै कछु रोय।
मांन करै कौ पीय सो, गए सजल द्रग होय ।।१६।।

अथ प्रोढा धीरा लछन

रति उदास प्रगटै न रिस, प्रोढा धीरा जान।
मान जनावत है यहै, मुख रूखी मुसकान ।।२०।।

अथ प्रौढा अधीरा लछन

डर दीखाय वर्जित करै, प्रोढ अधीरा धीर।
सखी सुखदाई पीपती है, देत सुमन की मार ।।२१।।

अन्त :- स्थाई संचारी सु औ, विभावादि सव गीत।
वरनै नहिं विस्तार सौ, ग्रंथ वढन के भीत ।।२११।।

आधारग्रन्थ कियो भांनु रसमंजरी, रसतरंगिनी लेख।
यह प्रबन्ध भाषा कीयो, ताही को मत देख ।।२१२।।

कवि-वंश वर्णन कवि कुल मंडन वृन्द जिहि, प्रपितामह अभिराम।
सुपितामह वल्लभ सु कवि, पीता सनेहीरांम ।।२१३।।

---

* ग्रन्थ का प्रारम्भिक अंश अप्राप्त है। अक्षरों पर स्याही फिर गई है, अतः प्रारम्भ के प्राप्त पत्र की लिपि सुवाच्य नहीं है।

तिहि सुत कवि दोलत कीयौ, लछन लछ समेत ।
रस प्रवोध दीपनांम, कवि सोध लेहु कर हेत ।।२१४।।

६ ६ ८ १

रचनाकाल १८६६ संवत षंठ रसि दिसि (स)सि[1], गुरु असाढ ऊचार ।
वद दसमी भो ग्रंथ यह, कृष्नदुर्ग अवतार ।।१२५।।

पुष्पिका :- इतिश्री कवि दोलत विरचित रस प्रवोधाख्यौयं प्रबंधः । श्रीः श्रीः । संवत १८६९ का जेठ सुद १२, सोमवार, लीखी कीसनगढ मै म्होणोत सोभागसींघजी परत सु । द० कीलाणदास कुंभटः । श्री सुभं भवतुमस्तु ।

२८०५. ९४३१ (३) रसिक-रत्नावली

प्रारम्भ :- श्री ब्रजमोंहन जयति । अथ महाराजकंवार श्री सांवतसिंघजी कृत रसिक-रत्नावली लिख्यते ।

दोहा

श्री मोंहन गुरु प्रेम बपु, बंदौं पंकज पाय ।
मोपें पूरन करि कृपा, दीने संत बताय ।।१।।

तेई हरिजन इष्ट मम, तिनही कौं सिर नांऊ ।
तिनही के जु प्रसाद तैं, तिनही कौ जस गांऊ ।।२।।

अथ वैश्नव सहज-स्वरूप बर्ननं

कवित्त (सवैया)

माल गरै तुलसी की लखैं हिय ते मुकतावलि जाल बिसारौं ।
गूदर पैं केई कंचन के पट टटी को पीन पें काहि उचारौं ।।
जीरन जूती घिसी फिरै पायनि तापै सिंघासन फेरि कैं डारौं ।
और बखांनौं कहा मूंड माधुरी स्वांमी की चांदि पें चंदा कौं वारौं ।।३।।

---

१ यहाँ दिशा का अर्थ ८ लिया गया है । लिपिकर्त्ता से 'ससि' का एक 'स' लिखने में छूट गया है ।

अथ अनुराग सहित स्वरूप वर्ननं
कवित्त

लोचन सजल लाल घूमत विसाल छके,
चलनि मराल की-सी ठाडे रोम तन मैं ।
उज्वल रस भीनैं ताकैं दीनैं गर बांही,
रहैं प्यारी पीउ दोउ हीये सुंदर सदन मैं ।।
पुलकित गात गिरा गदगद रहत,
नित धारैं छाप कंठ औ तिलकनि जपन मैं ।
कहा भयौ कीनैं जप तप व्रत दांन न्हांन,
जो पैं रूप माधुरी बसी न ऐसी मन मैं ।।४।।

अन्त :- दोहा

रसिक दसा बरनी इहै, अद्भुत प्रेम उमंग ।
सबनि दुहाई इष्ट की, मुनि कीज्यौ सतसंग ।।१७।।
जो बांचै श्रवननि सुनैं, रीझि होय अनुरक्त ।
ते मोकौं कहियै इन्हैं, उपजो अति हरि भक्त ।।१८।।
कही रसिक रतनावली, पूरन प्रेम प्रकास ।
सुरत हिये ब्रज वास की, धारि नागरिदास ।।१९।।
रचनाकाल सतरै सै बइयासीयै, भादौं सुदि भृगु बार ।
१७८२ तिथि परिवा कीनी इन्हैं, लीज्यौ संत सुधारि ।।२०।।

कवित्त

केऊ करौं विष्णु सेव केऊ पूजैं देवी देव,
केऊ चाहैं मुक्ति केऊ उदर नि वासनां ।
आठौं सिद्ध नव निध चाहत अनंत जन,
केऊ चाहै पुत्र केऊ निज घर नासनां ।।
मेरैं दईव तन उज्वल तिलक कीनैं,
भीनैं रस उज्वल औ जुगल उपासनां ।
ताकी पद रज सौं निहोरि कर जोरि मांगौं,
देह प्रेम भक्ति औ छुडाय विषै बासनां ।।२१।।

पुष्पिका :- इति श्री रसिक-रतनावली संपूर्ण ।

२९२२. ७८५९ संग्रामसार

प्रारम्भ :- ।। ई० ।। श्री गणेशाय नमः ।। श्री ···· नमः ।।
अथ ग्रंथ संग्रामसार लिख्यते ।

छप्पय छंद

दुरद वदन जय सदन बिघन बर ठंडन खंडन ।
शुंडा दंड प्रचंड दनुज हर सिव कुल मंडन ।।
अरुन बरन भय भीत हरन सुमिरन तुव जिज्जय ।
भाग्थ भाषा करन बिबधि वर भारति दिज्जय ।।
उद्दाँम रोति पद बर्न गुन, बंध छंद रचनाँ सुघट ।
हे रंब हुकम किज्जे कहौं, जुद्ध कुद्ध सैंनाँ सुभट ।।१।।

x x x x x x

शब्द योग नय शेष न्याय गौतम कणादि मुनि ।
साँख्य कपिल्ल रु व्यास ब्रह्म पथ कर्म नु जैमुनि ।।
बेद अंग जुत पढे सील तप रिषि वसिष्ट सम ।
अलंकार रस रूप अष्ट भाषा कवित्त छम ।।
तैलंग बेड नाटीय द्विज, जगंनाथ तिरशूल बर ।
साहिज्जिहाँन दिल्लीस किय, पंडितराय प्रसिद्ध धर ।।४।।

दोहा

उनके पग कौ ध्याँन धरि, इष्टदेव सम जाँनि ।
ऊकति जुकति बहु भेद भरि, ग्रंथहि कहौं बखांनि ।।५।।

अथ राज प्रसंसा

छप्पय

पुहमि मध्य ब्रह्मर्षि देस बिच मत्स्य देस तहँ ।
अमरावति आंबेरि बसैं रबि बंस भूप जहँ ।।
धर्म सकुचि कलि काल रह्यौ उहि ठौर विगति भय ।
जस प्रताप धन अधिक बसैं सब बरन हरख मय ।।
जप जग्य दाँन तप भोग बहु, जथा जोग सबही करत ।
भय पाप असुया ईरषा, मद चिंता झुक्कि न सकत ।।६।।

तहाँ भूप प्रथीराज भयउ कूरम कुल मंडन।
भक्ति जोर हरि रूप खग्ग दुज्जन दल खंडन।।
ताकौ सुत परचंड भूप भागमल भय धर।
जित्ति पुहमि सव पाय नाँभ किय सिर ढुँढाहर।।
तिहिं पुत्र भूप भगवंत जिन, करि वरवर गुजरात लिय।
नृप माँन जित्ति सतसठि समर, उदै ग्रस्त लग तेज किय।।७।।

ताकौ सुत जगतेस भयउ दूजौ ग्राखंडल।
हनि पठाँन दल प्रबल कित्ति किन्नी महि मंडल।।
ताकौ सुत महासिंघ जोर जित्ते ति दुग्ग गढ।
सुरपुर सम ग्ररि नगर ढाहि किन्नैं ति तुरत मढ।।
राधाधिराज जयसिंघ भूप, तास पुत्र ग्रंबा नगर।
जिन खग्ग जोर दिल्लीस घर, मेरु मलय किन्नैं बगर।।८।।

ग्रपि च :

जे मित मोरी पाँन बटनु बाजीगर फेरय।
इमि साहिन जयसाहि थपै उथ्थपै जु हेरय।।
जिहिँ सेवा की धाक कंपु सागर गिरवर धर।
बावन गढ कौ ईस गह्यौ जिन संग वाहु वर।।
सुजहि भजाय दारहि पकरि, किय ग्रवरँग दिल्लीस जिन।
जयसिंघ सिंघ परचंड भय, ढुँढाहर पति बंस इन।।६।।

तासु तनय ग्रब रामसिंघ नृप सव भूप नु मनि।
उत्तर पूरब जीति लई काबिल पठाँन हनि।।
तजति गब्भिनिय गब्भ सुनत जिहि हथ्थ खग्ग जुत।
सिवा सर्रणि रखि तहाँ जगत किन्नउ ग्रति ग्रद्भुत।।
तिहिँ तेज पुंज पर जरत पर, बिनु पर इक पर गति सगत।
राजाधिराज कूरम कलस, ढुँढाहर धर जग मगत।।१०।।

मत्त दुरद बर बाजि साजि कबिराजनु दिज्जहिँ।
नहिँ ग्रदेय जग बस्तु कछुक ग्रक्षर रस भिज्जहिँ।।
ग्रलंकार संगीत काबि नाटिक रु व्याकरण।
षट् दरसन नय धर्म कला चवसठि बचिक्षण।।

निज कुल सुभाइ इण अधिक रुचि, राँमसिंघ नृप कें सुचित ।
भारथ्थ जुद्ध भाषा करन, हुकम कियउ उन लोक हित ।।११।।

दोहा

हुते तहाँ पंडित बहुत, भाषा कव्यो अनेक ।
दुहूं ठौर परवीन नृप, देख्यो कुलपति एक ।।१२।।

तब नृप कुलपति मिश्र कौ, कियौ बहुत सनमाँन ।
कह्यौ जुद्ध भाषा करौ, दोण परब परमाँन ।।१३।।

राँम हुकम लहि सुधि किये, गुरु पंडित अवतंस ।
ग्रन्थ रीति प्राचीन लखि, कबि निज बरनत बंस ।।१४।।

अथ कबि-बंस बर्नन

छप्पै

माथुर बंस प्रसिद्ध मिश्र कुल अभैराज भय ।
सब बिद्या परवीन वेद अध्येन तपोमय ।।
तारापति तिहि पुत्र बिप्र कुल जिमि तारापति ।
तास तनय भय लाल ब्रह्म बिद्या बिचित्र गति ।।
हरिकृष्ण कृष्ण भजि कृष्ण भय तासु तनय भागवत मग ।
भय परसराँम ताकौ तनय सुर गुरु समं भजि राँम पग ।।१५।।

परसराँम को पुत्र प्रगट कबि पंडित कुलपति ।
अध्यापक व्याकरण न्याय पथ ब्रह्म कर्म तति ।।
रुचि भारत भागवत करत आचरण सु मृत मत ।
सुखमय लखि साहित्य मुख्य किन्नउ बहु संमत ।।
नर नाग देव बहु देस की भाषा करि कविता कुसल ।
संग्राँमसार तिन ग्रन्थ किय राँमसिंघ नृप हुकम बल ।।१६।।

दोहा

कबि कुलपति कौ आगरे, गुन आगरे निवास ।
जहँ दौलति दिल्लीस की, बिहरति चित्त हुलास ।।१७।।

अथ ग्रन्थ प्रसंसा

छप्प

द्रोण परब की बात रचिय निज जुगति उकति भरि ।
पिंगल मत के छंद नऊं रस अलंकार धरि ।।
धरम अरथ अरु काँम मोख साधन पोथी यह ।
कृष्ण कथा सब ठौर बहुत बिधि क्षत्र धरम जह ।।
जिहिँ पढत सुनत पातक नसैं, कातरता आवै न चित ।
संग्राँमसार तिनि ग्रंथ किय, कवि कुलपति नृप बंस हित ।।१८।।

दोहा

रचनाकाल सत्रह सै तेतीस सम, गुण जुत फागुण मास ।
१७३३ कृष्ण पक्ष तिथि सप्तमी, कियो ग्रन्थ परकास ।।१६।।

छप्पै

जय जय देवकी तनय जयति व्रज मंडल मंडन ।
जय गोवर्द्धन धरन जयति आखंडल खंडन ।।
जय काली अहि दवन जयति केसी हि पछारन ।
जय अघ अजगर हरन जयति बिधि गर्व बिदारन ।।
महि दुष्ट भूप दाँनव ति सब, मारि दूरि किय भार भुव ।
निज भगति देहु कुलपति कहतु, जय जय जय हरि सरण तुव ।।१३५।।

अन्त :- दोहा

बाद अस्त्र बिबि परिहरन, द्रौंणि जुद्ध सत रुद्र ।
परिछेद अंतिम कह्यौ, कुलपति ग्याँन समुद्र ।।१३६।।

पुष्पिका :- इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजा राँमसिंघ देवाज्ञया कुलपति-मिश्रेण विरचिते द्रोणपरव भाषा संग्रामसार ग्रन्थ नांम षोडसौ परिछेद ।१६। ग्रन्थ संपूरण समाप्तः ।

पोथी लिखी सुभ स्थाँन श्री सवाई जैपुर । महाराजाधिराज श्री सवाई जैसिंघजी कै पुस्तकखांनै । लिखतं कबि पूरण, जाति मागध । मिती जेठ मासे शुक्ल पक्षे ११, रविवासरे, संवत १७६४ का । शुभं भवेत् कल्याँणं ।

श्लोक

जादृसं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृसं लिखितं मया ।
यदि सुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ।।१।।
कल्यांणमस्तु । श्री । श्रीः । श्रीः । श्रीः । श्रीः ।

२९२४. ६८८६ (१) संभरि जुद्ध

प्रारम्भ :- ।। ई० ।। श्री गणेशाय नमः । अथ संभरि जुद्ध लिख्यते ।

दोहा

गुरु गुविंद गनपति गिरा, गवरि गिरीस मनाय ।
गावत गुन जयसाह कौ, सुकवि कलानिधिराय ।।१।।

हुकम बहादुरसाहि कौ, आयौ सैद हुसैंन ।
हुते भूप जयसाह जह, संभरि सर सजि सैंन ।।२।।

उत अरि सैद हुसैंन अरु, इतैं भूप जयसाहि ।
मच्यौ दुहुनि संग्राम जह, आये अमर उमाहि ।।३।।

छंद त्रिभंगी

सैदनि दल हंके समरनि बंके दुंदभि डंके जोर दियै ।
धर होत धमंके सुरगन संके परम अतंके लोक हियै ।।

हय टापन टुट्टे गिरि तट फुट्टे फनपति कुट्टे सहस फना ।
धूली भर जुट्टे अंबर घुट्टे पावस छुट्टे मनहु घना ।।

जयसाहि सवाई पर दल घाई अरनि अवाई देखि परें ।
चड्ढे दल साजै संगर काजैं रवि ज्यौं राजै तेज धरै ।।

संभरि सर तीरनि के सरि नीरमनि रंगे नीरनि चारु ठये ।
दै दुंदुभि धीरनि बंके बीरनि कूरम भीरनि होत भये ।।

सेखावत सच्चे पन के रच्चे समर बिरच्चे रोस लियै ।
बांकावत बांके दल बल हांके जिरह झनाना के जोर कियै ।।

कल्यांन पचायन के वहु भाइन कै चित चाइन भट आये ।
रन अहरन हीरा सैमुख नीरा धरत हमीरावत धाये ।।

सिव ब्रह्म तनैं के भट अमन के साथ घनै के दूल हसे ।
को है कुंभानी मन अभिमांनी लहि प्रभु वांनी रन बहसे ।।

वहु सिपहसिलारनि के सिरदारनि सजि कर वारनि रेर करी ।
पावस घन तूले दल अन कूले सबही फूले निरखि अरी ।।

नाथावत रूरे सगर सूरे पन के पूरे उमगि चढे ।
नर बीर नरूके नैंकु न चूके रोस भभूके लेत बढे ।।

खंगरावत खंगे खरे उमंगे चढि हय चंगे खमसि चले ।
कुंभावत करटे तच्छिन अररे दल बल दररे देत भले ।।

रजपूत अनेरे ओर घनेरे नृप बर नेरे ह्वै उमडे ।
कूरम कुल जाये मुख्य गनाये घन ज्यो आये ते घुमडे ।।

नवकोटि नाइक तहां सहायक भौ पर घायक अजित बली ।
राठोर समाजा ले रन ताजा किय महाराजा भीर भली ।।

उत घोरन डारै जोरन धारै सोरन पारै धुकि धाये ।
सैयद मुख नीके अली अलीकैं सद्दन जीकैं पिलि आये ।।

भारी तिहि बेला भौ मुख मेला दुहु दल ठेला ठेल मची ।
कीने भट सेला सेलन खेला भेलक भेला रारि रची ।।

तह तुररी बज्जे दुंदभि गज्जैं जंगनि सज्जें ढोल दये ।
सिंधू सुर छाये मारू गाये बीरनि भाये राग भये ।।

बंदी जन कित्तें कहत कवित्तैं सुनि भय वित्ते धीर बढैं ।
भट अंतर मोदें करत बिनोदें त्यौं चहु कोदें उकि कढैं ।।

तहं तोपें रढ्ढै गोला कढ्ढै धुंधरि बढ्ढै नभ मढ्ढै ।
हय हाथी फुट्टै पक्खर तुट्टैं वीरन फुट्टै रन चढ्ढैं ।।

पावक झर जग्गें बान उमग्गें आइ बिलग्गै तन दग्गें ।
इक प्रांननि मुक्कें इक्कें कुक्कै इक्क जुझुक्के रिस पग्गै ।।

इक लै लै बागें धावत आगें लागें लागें बैन कहैं ।
धरि मसकत पागें खोलत खागें खेलत फागें मन उमहै ।।

इक हथ्थ बरछी वाहत अछी धार तिरछी जोर जई।
सो पर उर गछी लखियन चछी ज्यौं जल मछी गरंक भई।।

तहं खग्गा खग्गी केलि उमग्गी अग्गा अग्गी वाह भई।
रिस ज्वाला लग्गी जाहर जग्गी मन हुद वग्गी वननि छई।।

हुव कट्टा कट्टी झट्टा झट्टी मुंडनि पट्टी पुहमि डटी।
रुंडावलि उठी डिठ्ठिय रुठ्ठी अन्तर टुठ्ठी अति ही नटी।।

छूटै घुर चड्डी ज्वाला वड्डी फौजें डट्टी गोलन सौं।
गरजैं हथनालैं अतिहि उतालै झंपति झालैं झोलन सौं।।

तकि लंबे पल्लै तुपक्कै चल्लै तडपति भल्लै तडित मनौं।
बारूद पसारी चहु दिसि भारी झुकति अंध्यारी धूम घनौं।।

भट पेलि अराबनि तुरी सिताबनी दाबि रकाबनि बाग लये।
कीने बगमेला केहिं बेला भेलक भेला आइ भये।।

कर खग्गनि पारैं मुंडनि झारै समर अखारैं खेल करैं।
बड डील विदारै करत दुबारैं मनु घन आरै चीरि धरैं।।

बंके कछवाहे परम उछाहे इत चित चाहै कांम करैं।
उत मैंद हुसैंना की बहु सैंना राते नैंना जोर लरै।।

तह सुभटनि साजी तीरनदाजी सनमुख बाजी पेलि खरैं।
भालन सौं फोरै बखतर कोरै धनु गुन घोरैं सरनि झरैं।।

पिलि इक हकारैं करि ललकारैं तेगनि डारैं तकि पर कै।
इक होत उतारै खंजर डारै वंजर फारै दरबर कै।।

इक गुप्ती वाहै अंत्रनि गाहै डीलनि ढाहैं घोरन सों।
इक संगर कोहै जमधर पोहै प्रान विपोहैं जोरन सों।।

इक लेत दपट्टै आंनि लपट्टैं करत झपट्टैं पट्टन सों।
लैं सांगि रपट्टैं इक अरि डट्टै इक्क सिमट्टै ठट्टन सौं।।

इक अंत गरट्टैं होतन हट्टैं धरत मरट्टैं मूंछन मै।
इक घाइ पलट्टै घतत अट्टैं दू छन मैं।।

इक तागत गौंकैं बुगदनि भौंकैं बंकी नौंकैं इक खुरसैं ।
फरसा झर झोंकैं इक्कध नौंकैं मनु द्रुम दौंकैं मधि फुरसैं ।।

वाहैं इक गाढैं गहि जम डाढैं सो ठिक ठाढै तन पैठी ।
इक सुभट सम्यांनी कोतह खांनी कर गहि तानी धर पैठी ।।

यो हथ्था हथ्थी बथ्था बथ्थी सथ्था सथ्थी सुभट भिरै ।
तह गजवर चढ्यौ सैयद बढ्यौ फिर तल बढ्यौ रोस निरैं ।।

तिहिं तकि किहुँ दग्यौ तेजनि जग्यौ गोला लग्यौ इक्क खरैं ।
तछिन खल घुक्किय हाहा कुक्किय प्रांनन मुक्किय खेत परैं ।।

तब सब कछवांहनि समर सिपाहनि किय अवगाहनि खेत खरी ।
हत अत्रनि लेतैं सैयद केते लाज समेते सहज अरी ।।

संभरि सर मांहि किते डुबांहीं कितअ गिरांहीं खाय हहा ।
जयसाहि सवाई जगमुख दाई इहि विधि पाई जित्ति महा ।।

तिहि भुव अरि मुंडनि अौ बहु रुंडनि सुंड भुसंडनि ढेर परैं ।
तैं छिपहिन उंडनि श्रोंनित कुंडनि कुंजर डुंडनि रंग भरै ।।

बिकराल कपालनि नाच मच्यौ ।
अंत्रनि जालनि गृह नव मालनि संकर ख्यालनि जोर रच्यौ ।।

छप्पै

तह नचत ख्याल लग्गे बिसाल पलचरनि जाल संग ।
रचत माल गल चंद्र भाल रंगि रुहिर ताल अंग ।।
पर कपाल बिकराल ताल दिय अति उताल गति ।
लसति लाल पट धरै हाल जुग्गिनि निहाल मति ।।
पिय महाकाल की बाल निजि, काली परम खुस्याल तर ।
बिसनेस लाल भुवपाल जह, फते लहिय कर बाल कर ।।१।।

पुष्पिका :- इति श्री कवि कलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचितं संभरि जुद्ध वर्णन संपूर्णम् ।

२९३४. ९७२० (९) सभाभूषण भाषा

प्रारम्भ :- ।। ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ।। अथ सभाभूषण लिख्यते ।

छप्पय छंद

चंद विराजत भाल शिखा निर्मल प्रकास धर ।
श्रेय दशा तिहि अग्र भाग सफुराय मान वर ।।
सहजहि मदन पतंगं अमित चंचल तिहि जारन ।
अंतहकरन अपार मोह तम भार निवारन ।।
योगेश्वर चित भुवन मैं, विजयवंत आभास धर ।
गंगाधर वंदत चरन, जय जय ग्यान प्रदाय हर ।।१।।

दोहा

श्री शिव वंदन करि प्रथम, चित प्रसन्न धरि ध्यान ।
ग्रन्थ सभाभूषण करौं, सुनि सज्जन सग्यान ।।१।।

अन्त :- कवित्त

चतुर गुनी प्रवीन ज्ञान रस लीन मित,
विनै करि कह्यो सभाभूषन वनाइये ।
नाटक संगीत की रहसि अति कठिन है,
समुझी न परै तातै अरथ पाइये ।।
कर्त्ता तातैं गंगाराम कवि कोमल कवित्त वंध,
भाषा राग रूप इह सब कौं सुहाइये ।
पढत सुनत अति चौंप चित चाव होत,
सीखियत सुघर सुबुधि हि बढाइये ।।५९।।

दोहा

कवित वंध भाषा करि, श्री संगीत मत देखि ।
नाम सभाभूषन इहै, वधि वल लीनो लेखि ।।६०।।

सवैया

नाटक संगीत नानाय मत रागिनी,
रुचि सौ सुनत निति सुधा रस पीजिये ।
हेत चित चौप सौंप सुनत निति सुधा रस खीजिये ।

हैत चित चौंप सौं कवित्त वंध भाषा करी,
नाम सभाभूषन गरंथ कहि लीजिये ।।
यामैं राग रागिनी की जाति मय रूप हेत,
तान ताल ग्राम सुर गुना सुनि रीझिये ।
गंगाराम विनय करत कविजन सुनि,
वरनत भूले तो सुधारि सुध कीजिये ।।६१।।

दोहा (कवित्त)

र. काल सत्रहसत संवत सरव सत्रतुर अधिक चालीस,
१७४० कातिग सुदि तिथि अष्टमी वार ग(श)नि प्रजरात है ।।
हिंदोल की अलाप तैं हिंदोला आय जो ढाले,
तदी यग के गाय गुनी दीपग जुगात है ।।
श्री मै इह गुन गुनी प्रगट वखानत है,
सूको रूंख हरचो होत फेरि उलहात है ।
गंगाराम कहै मेघराग को प्रभाव इहै मेघ वरखात,
घनमाला मंजु रस रस , रजनीस ।।६२।।

दोहा

सांगांनयरि सु नग्र मै, रामसिंह नृप राज ।
तह कवि जन सव चयन मै, राजति सभा समाज ।।६३।।
गंगाराम तह सरस कवि, कीनो वुद्धि प्रकास ।
श्री भगवंत प्रसाद तै, इह सुभ सभा विलास ।।६४।।

पुष्पिका :- इति श्री गंगाराम कृत सभाभूषन रागमाला समाप्त ।

२६३६. १०११६ सभाविनोद (रागमाला-भाषा)
( मुखपृष्ठ — पुस्तकमिदं भटजी श्री कुसालीरामजीक्स्य )

प्रारम्भ :- ।। श्रीं गणेशाय नमः ।। अथ सभाविनोद रागमाला पायंदावेग कृत भाषा लिख्यते ।

दोहा

गावत नांचत आपु, हींडोरू मैं सव अंग ।
नमो नाथ पैदा कहै, सीस गंग अरधंग ।।१।।

दृष्टि न आवै अगम अति, मनसा की गम नांहि ।
निपट निकट संगही रहै, बोलै घट घट मांहि ।।२।।

चौपई

साहिजहां साहिन मन साह । आदिल दाता दीन पनाह ।
दारिद जातु लेतहीं नांउ । धनि सु जनम जे परसैं पांउ ।।
गाइ-स्यंघ इक घाटैं पियैं । देखि चरन जन सिगरे जियैं ।।३।।

दोहा

साहिजिहां जू अदल बल, परजा करी निहाल ।
दुख भंजन गंजन अरिनु, मूरति महा रसाल ।।४।।

**अथ कवि जाति नाम**

मोदक छंद

जाति वंस कवि कौ सुनि लेहु ।
कौंन भूमि किहिं उपज्यौ गेहु ।।
ख्वाजा खिजरी जाति वखांनि ।
अहमदखैल सु गोतहि जांनि ।।
मेरवेग को संगीवेग ।
अकवर साह वधाई तेग ।।
ताको सुत कवि पैदा भयौ ।
जनम अकवरावाँद जु लयौ ।।
तिन यह पोथी करी रसाल ।
सब रागनी की गूथी माल ।।६।।

सोरठा छंद

सभाविनोदहि नाम, या पोथी कौ जांनियौ ।
पैदा सुख कौ धांम, जग मोहन दुख हरन यह ।।७।।

दोहा

राग ध्याय मैं कहत हौं, सहँसकृत तें लीन ।
कीनी भाषा जोरिकैं, समुझै नर परवीन ।।८।।

सुर विद्या बहु कठिन है, तामैं भेद अनेग।
हनुमत मत संगीत मथि, कहतु पायंदावेग ।।६।।

राग हिंदवी पारसी, पैदा इकठे कीन।
जो जो तामैं मिलत है, ते सब काढे वीन ।।१०।।

कहौं मिलापी पुत्र जे, कीन्यौ मनहिँ विचार।
नाद रूप सबतैं कठनि, अतिहि अगम अपार ।।११।।

अन्त :- अथ पांचौ रागिनी कौ सोरठा

रांमकलि दै साखि, ललित विरावर जांनियो।
पढ मंजरी सु भाखि, ए हिंडोल की रागिनी ।।३।।

देस कमोद विचारी, नट केदारो कांन्हरौ।
पांचु दीपक नारि, पैदा कही संगीत मथ ।।४।।

मालसीरी सुनाव, मारू और धनासरी।
बसंत आसावरी गाव, सीरी राग कें संग हैं ।।५।।

टंककु वोर मलार, गुजरी भुपाली कहौ।
पंच विदेस जुकार, रास रागिनी मेध की ।।६।।

पुष्पिका :- इति छउ राग कों सोरठा संपूरण समाप्ता। श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्रीरस्तु।

२६३७. ८३६३ सभासार नाटक

प्रारम्भ :- ।। दं० ।। श्री गणे(शाय नमः)

(श्रीमान्) सुंड प्रचंड रू(प) रुचिरो मदगंध गल्लस्थलं।
शुभ्र सोभित शोभि एक दशनं चंद्रं ललाटे (धरः) ।।
(सिन्दुरै) परिपूर कुंभ सुभंगो ऋद्धि सु सिद्धी धरं।
सोयं पातु गणेश इ(ई)सतनयो बानीवरदायकं ।।१।।

छंद मालवी (मालिनी)

कविवर वरदाता माद्रि से नित्य त्राता।
षट वदन सु भ्रात्रा सर्वं कार्या विधाता ।।
सकल गण सुरेशं मंगलानां महेशं।
विघन तम दिनेशं श्री गणेश नमामि ।।२।।

छप्पै

जय गंग सह चंद जटित नग मुकुट सु भारीय ।
बाघंबर अंबर सुप्रीति मुंड मूंतीय स्त्रगधारीय ।।
हलाहल हर कंठ ललित भृगु हरि ऊर सोहत ।
दहु सुं एक ह्वै रहत देखि मुनिजन मन मोहत ।।
करपूर गौर घनस्याँम तन, सकल भुवन वंदित चरण ।
जो रमानाथ ऊमयापति, श्री हरि हर मंगल करन ।।३।।

x x x x x

दोहरा

दिसि पश्चिम गुजर सधर, सहर अहमदावाद ।
भू पर के सब नगन सिर, ऊपर मंडित वाद ।।७।।

रचना-स्थान तां मधि सारंगपुर सुभग, सुख दायक सब धांम ।
नागर विप्र सुसंग मति, कवि पद रघु रज रांम ।।८।।

चोपी (चौपई)

सकल सभा पहिले सिर नाउं । कर वीनती कर जोरि सुनाउं ।।
मात पिता युं बालक वांनी । एसी विध सुनि हे सुख मांनि ।।
छमि हे मम औगन सब साधु । जिन के मति अति भरे अगाधू ।।
जिन ही सुहाय नही यह वाँनी । सो पुनि छमि हे सेवग जानी ।।९।।

दोहरा

कवि वासी ग्रह कूप को, सभा अपार समंद ।
तेसोहि कछु कहत हो, मति हे जेसी मंद ।।१०।।

जानित हुं हसि हे जगत, सुनि कविता को सूल ।
अपने मुख ते आपनी, हासी करत कबूल ।।११।।

भले बुरे सव प्रणमि के, बोहरि कहुं परि पाय ।
नीको बूरो निवाहीये, सो सेवग चहत सहाय ।।१२।।

रचनाकाल सतरे से सतावने, चैत्र तीज गुरु वार ।
१७५७ पक्षि ऊजल ऊजल सुमति, कवि किय ग्रन्थ विचार ।।१३।।

अन्त :- छप्पै

यह नाटिक जो सुनें ताहि हीय फाटिक खुलें ।
यह नाटिक जो सुनें बुद्धि बल कमल प्रफूलें ।।
यह नाटिक जो सुनें ग्यांन पूरन मन आवें ।
यह नाटिक जो सुनें ताहि मन बंछित पावे ।।३२८।।
विग्यांन जांन निरबांण कें, जोग्य ध्यांन धर धन लहै ।
पावत परम पुरुष गति, मति प्रमांण कवि रघु कहैं ।।३२९।।

पुष्पिका :- इति श्री नाटिक सभासार कवि रघुरांम विरचितं संपूर्णम्, संवत् १८४३, माह सुद ५ दिने, पं० छजमल लिपी कृतं ।

२९४५. १०८६४ समै सु-प्यार सतसई

प्रारम्भ :- ।। ६० ।। श्री गणेशायनमः । अथ समै सु-प्यार सतसई वसंतराय कृत लिख्यते ।

दूहा

श्री गनपत अमृत चर्न, कंठ भूमि परधार ।
बुध को वर-के बीज ज्यौं, होत बहुत विस्तार ।।१।।

सुमुख विनायक गज करन, भाल चंद्र इक दंत ।
हरंन विघंन सुख करन है, जुग जुग आद अनंत ।।२।।

लंबोदर हिये ध्यांन धर, होत [बुद्धि[ परकास ।
जैसें जग मिट जाय तंम, दिनकर करत उजास ।।३।।

रचें वृध भूपत मिलन, करियें गमन विदेस ।
पढीयें प्रगटें ग्रन्थ तब, भजीयें आद गंनेस ।।४।।

यह प्रास्ताविक दूहरा, कीना कवि विचार ।
समयें पर पढ हैं सुघर, सब कूं लगै सु-प्यार ।।५।।

नीत जथारथ ग्यांन रस, भुक्त जुक्त चित धार ।
सुगम अरथ कविता करी, कवि मत के अनुसार ।।६।।

निबुध पढै बुध वधत है, मूरख सुथरा होय ।
निस मंदर हु रहै तिमर, रखीये दीपक जोय ।।७।।

कीया सातसो दूहरा, उक्त जुक्त दृष्टंत।
कहुं सासतर मन उक्त, भाषा करी वसंत ।।८।।

चलै कहुं प्रस्ताव पर, कहीयै दुहो विचार।
सब ही कुं नीको लगै, यातें समैं सु-प्यार ।।९।।

अन्त :- दोहा

मुरधर मझ मुर मेदनी, कासीपुर सम जांन।
घर [धर कोविद] पढत है, गीता वेद पुरांन ।।६९४।।

तहाँ चतुरभुज राय को, [दरसन] अदभुत जोय।
मंन सुध कर भेटे चरंन, नरकं न जैहै कोय ।।६९५।।
[नर] रिध धारी नगर मैं, पंडत बहु बुधवंत।
सतवादी हरि भक्त रत, सिध जोगेसुर संत ।।६९६।।
निकट तिहां पुस्कर भरचो, वहै सरस्वती नीर।
नाग पहार जोगी जती, हरै दीन की पीर ।।६९७।।
विप्र ग्यात तिन नगर मैं, पुसकरणां रिषमंत।
प्रोहि[त कुल] नरसिंघ के, कीनो ग्रन्थ वसंत ।।६९८।।
कवि कोविद सौं जोड़ कर, इतनी अरज करंत।
चूक छिमा करीयो हमैं, सब सौं कहत वसंत ।।६९९।।
पढ्यौ नही कछु संसक्रत, भाषा मंत्र न जांप।
कछुक कविता करत हूं, गनपत के परताप ।।७००।।
र. काल आ[द चन्द वसु राम] गुण, कृष्ण जनम पक्ष मास।
१८३३ गनपति तिथ हनुमांन दिन, निपज्यो ग्रन्थ विलास ।।७०१।।

पुष्पिका :- इति श्री समै सु-प्यार सतसई संपूरणम्। संवत् १८४१ रा शाके १७००६, चैत्र दुतीक....पक्षे ९ नौम्यां तिथौ रववारे।
लिपीक्रतं वैष्णव जुग....[नगर] जोधपुर मध्ये लिखित्वां।
श्री किल्यांणमस्तु।

---

* इसको एक प्रति 'राजस्थानी शोध-संस्थान' चौपासनी, जोधपुर में भी ग्रन्थाङ्क ४८७१ पर उपलब्ध है। उक्त प्रति का लिपि समय संवत् १९३५ है। कोष्ठक में दीमकग्रस्त स्थल का पाठ उक्त प्रति से दिया गया है।

२६७७. ६२५२ (३) सुन्दर-शृङ्गार

प्रारम्भ :- ।। दं० ।। श्री गुरुभ्यौ नमः । श्री गणेशाय नमः । लिखतं पोथी सुन्दर-शृङ्गार की ।

दोहरा

देवी पूजौ सरसती, पूजौ हर कै पाय ।
नमसकार कर जोर कें, कहै माहाकविराय ।।१।।

आश्रयदाता वर्णन (शाहजहां)

नगर आगरौ वसत है, जमुनां तट सुभ थान ।
तहां पातसाही करै, बैठौ साहिजिहान ।।२।।

साह बडौ कवि मुख तनक, क्युं गुन बरणे जाय ।
ज्युं तारै सब गगन के, मूंठी मै न समाय ।।३।।

जिन पुरुषन कै वंस में, उपज्यौ साहजिहान ।
ताह साहन के नाम कौ, अब कवि करै बखान ।।४।।

छप्पय

नृप-वंश वर्णन

प्रथम मीर तिमूर लीयो साह किरान पद ।
ताकौ मीरांसाह बहुरि सुलतान महम्मद ।।
अबुसैद फुनि उमरसेख बबर जु हमाउ ।
साह अकबर जान साह जिहांगीर गिनाउं ।।
तिहां वंस अंस कविराज, भनि साहिजीहां बढिय बखत ।
धरि छत्र बैठो अटल भुवि, पातस्याह दिली तखत ।।५।।

छंद तृभंगो

नृप-प्रशस्ति

जब लगि भवांनी सिव सेनानी रवी समांणी पंथन में ।
जब लग सुरगै नग गन उडगन शशि वरन अठू गुन ग्रंथन में ।।
जब लग पुरंदर हिम गिर मंदिर सुन्दर वानिन भनै सुखदा ।
तब लगि रहौ चिर भू ध्रूव ज्युं साहिजिहां शिर छत्र सदा ।।६।।

दोहा

इक छिन कै गुनह के, वरनै सकल संसार ।
जीभ थकै बीतै वरष, तौउ नावै पार ।।७।।

तीन पेहर लों रवि चलै, जाकै देसनि माहिं ।
जीत लई जगती इत्ती, साहजिहां नरनाहि ।।८।।

कुल दरीया खां ऐं कीयो, कोट तीर कौ ठाम ।
आठों दिश यों वसि करी, ज्यों कीज्ये इक गाम ।।९।।

साहिजिहां सब गुनिन कूं, दीन्हे अगनित दान ।
कवि-परिचय तिन में सुन्दर सुकवि कौ, कीयौ बहुत सनमान ।।१०।।

नग भूषन मनि सब दए, हय हाथी सिरपाउ ।
प्रथम दीयौ कविराय पद, बहुरि महा कविराउ ।।११।।

तव कवि कौ मन यौं बढ्यौ, जब यह कीयौ विचार ।
वरनी नायक नायका, कीयौ ग्रन्थ विस्तार ।।१२।।

विप्र ग्वालिअर नगर कौ, वासी है कवि राज ।
तासौं साह मया करै, सदा गरीब निवाज ।।१३।।

ग्रन्थ- सुन्दर कृत शृंगार है, सकल रसन कौ सार ।
माहात्म्य नाम धरचौ या ग्रन्थ कौ, यह सुन्दर शृंगार ।।१४।।

ज्यौ सुन्दर शृंगार कौ, पढै गुनै रस ग्यान ।
मानों तिन संसार में, कीयौ सुधा रस पान ।।१४।।

र. काल संवत सोरह सें वरस, वीते अठ्यासीति ।
१६८८ कानी सुदि षष्टी गुरु, रच्यो ग्रन्थ करि प्रीति ।।१६।।

विषयारम्भ नौ रस में सींगार रस, सवतें नींको आहि ।
तामें नींकी नायका, वरणत है कवि ताहि ।।१७।।

सो फुनि सुन्दर कवि कहै, तीन भांति की नार ।
स्वकीया परकीया अवर, सामान्या सु विचार ।।१८।।

अन्त :- पुनः सवैया २३

रूपे की भोम के पारौ परचौ,
सिगरो जग चंदन सों लपटानौं ।
यों कहि तीन्ह महा कविराय,
कहै उपमा इक याहि तें आनौं ।।

चंद की अंसुनि को करि सूत,
बुन्यौ विधुना सित अंबर जानौं।
उजल कै फुनि ब्योंत बनाय,
दशों दिश ए मढि राखी है मानौं ।।४७।।

दोहरा

सुरवांनी यातें करीं, नरवांनी में लाय।
जैसें मग रसु रीत कौं, सब पें समझ्यो जाय ।।४८।।

यह सुन्दर सींगार की, पोथी रची विचारि।
चूक्यो होइ कह्यौ कछू, लीज्यौ सुकवि सुधारि ।।४९।। [३४९]

पुष्पिका :- इति चकत्ता चक्रवर्त्ति पातिसाह साहिजिहां आदेशात् महाकविराज कृत सुन्दर-शृङ्गार भाषामयौ ग्रन्थ संपूरणम्। सवत् १७७४ वर्षे, शाके १६४० प्रवर्त्तमाने, माह फाल्गुन विदि ११, भृगुवासरे। लिखितं राणा संग्रामसींह विजैराज्ये।

३०१७. ९४३२ (१) हमीर-रासो*

प्रारम्भ :- ।। श्री गणेशाय नमः ।। श्री सरस्वती नमः ।। श्री गुरुभ्यो नमः ।।
अथ हमीर-रासो लिक्षते।

दोहा

श्री गनेस गुरु सरस्वती, बुधि बांनी के दानि।
कविनाम कबि महेस वरनन करत, हठ हमीर को जांनि ।।१।।

पहिलै साहि(ब) सुमरियै, सब को सिरजनहार।
आदि भवानी अंबिका, वरदै सुरसति म्हार ।।२।।

सरनाई भयो सिवर न्रप, दयो मांस तन ताहि।
कै अब राव हमीर हूव, सरन राखि महिमाहि ।।३।।

---

* इस कृति की प्रतिष्ठान में और भी प्रतियाँ हैं। कुछ प्रतियों के प्रारम्भ में 'चौहान वंशवर्णन' दिया गया है, जो इस प्रति में कुछ छन्दों के बाद उपलब्ध है। प्रारम्भ में वंशवर्णन वाली प्रतियाँ पाठालोचन की दृष्टि से अन्य परम्परा की द्योतक हैं।

कित अलावदी कित हुरन, कित महिमां जु पठांन।
कितै मीर बहु गाभरू कित हमीर चौवांन ।।४।।

रासे के पासे परे, होनहार आरंभ।
साखो राव हमीर को, वांको गढ रनथंभ ।।५।।

छंद

अमरपुरी ब्रह्मलोक बचन सा पुरस कराये।
रिषि सूं छत्री भये सोम के बंस कहाये।।
जननि उदरन ओतरं संकट परे न च्यारि।
अनल कुंड उतपन भये च्यार भुजा पर च्यार ।।६।।

दोहा

च्यारि भूजा अयु सीरि, तेज पुंज परचंड।
सूर हरखि कंपे असुर, ईते हुवे नवखंड ।।७।।

छंद

मारि असुर सुरन के मान बढाये।
राछस कंटक दुष्ट अवनि पै रहन नि पाये।।
मंडलीक चार ईक चकवै इतै हूये चहुवान।
सूरन अति उद्योत लौ फिरै चहुं दिस आन ।।८।।

रथ मारन कौं चलै जहां लौं चक्र चलाये।
कर रावन प लीये जग्य तिनि केमु कराये।।
जिते न्रपति नवखंड के लगे पांय कर जोरि।
राज जोग दोऊ करै अजपाल अजमेर ।।९।।

बीसल बीस करोरि जोरि जल माझ धराये।
आनां तीस करोर बिलस खरचे अरु खाये।।
को को नयेन मंडली आय आपनी ठोर।
आना बीसल दे भये मंडलीक सिर मोर ।।१०।।

दोहा

जिती धरा सिर सेस कैं, खग बल लई पै जाये।
छुटी मानिक राव कौं, सकति संम्हरा माय ।।११।।

अन्त :- छंद

मिले राव रनधीर खांनु वालनसी भाई।
महमांसाहि हमीर मिले हजरति सिर नाई ।।
पाछा मिले हमीर कौं अलादीन पतिसाहि।
हजरत राव हमीर के गहे कदम दोउ जाई ।।३६१।।

धनि हमीर चोहांनु आदि ए चलि आई।
यह साहिव की राह राव हम तुम सौं पाई ।।
भरतखण्ड चहु देस मै देखो सब जग जो(य)।
तुम बन राव हमीर सिख मिलाव कोई ।।३६२।।

दोहा

बंदा खुदा काल जुर, झंपै जहां न कोई।
पहुचे राव हमीर जहां, बहुरि न आंनां होई ।।३६३।।

आसा देवल ओर सब, महमांसाहि हमीर।
मिले सबै सुर लोक मै, हजरत हूरम समीर ।।३६४।।

छंद

मिल्लै राव पतिसाहि छीर ज्यौं नीर बहाये।
जो पारस कौं मिलत लोहो कंचन हो आये ।।
अलादीन हमीर से हूये न अब कोई होय।
कवि महेस ईम ऊचरे वे बसे सुरग सब कोय ।।३६५।।

दोहा

कवि महेस बरनैन कीयो, रासो राव हमीर।
भूल चूक ज्यौं होय तो, माफ करो तकसीर ।।३६६।।

पुष्पिका :- इती श्री राव हमीर को रासो संपूर्ण। लीखीतं नाजर नैणसुख, न(नै) वांच(चै) ब(वि)च्यार(रै) ज्यां सु ं रांम रांम बंचज्यो जी ।। श्री ।।

❖

# परिशिष्ट २

## ग्रन्थ-कर्त्तानुक्रमणिका

* नामसाम्य वाले विभिन्न कवि भिन्न भी हो सकते हैं ।

## राजस्थान–सरकार

# राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

## हिन्दी-राजस्थानी ग्रन्थों की प्रकाशन-सूची

| ग्रन्थाङ्क | ग्रन्थ-नाम | सम्पादक | मूल्य |
|---|---|---|---|
| १. | कान्हड़दे प्रबन्ध | कान्तिलाल बलदेवराम व्यास | १२.२५ |
| २. | क्यामखां रासा | डॉ. दशरथ शर्मा, अगरचन्द भँवरलाल नाहटा | ४.७५ |
| ३. | बांकीदास री ख्यात | नरोत्तमदास स्वामी | ५.५० |
| ४. | राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १ | नरोत्तमदास स्वामी | २.२५ |
| ५. | ,, ,, भाग २ | पुरुषोत्तमलाल मेनारिया | २.७५ |
| ६. | ,, ,, भाग ३ | लक्ष्मीनारायण गोस्वामी | ५.५० |
| ७. | राजस्थान में संस्कृत-साहित्य की खोज | पं० ब्रह्मदत्त त्रिवेदी | ३.०० |
| ८. | जुगलविलास | रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत | १.७५ |
| ९. | वीरवांण | ,, | ४.५० |
| १०. | गोरा-बादल-पद्मिणी चउपई | डॉ० उदयसिंह भटनागर | ५.०० |
| ११. | गोरा-बादिल-चरित्र | मुनि जिनविजय | ४.०० |
| १२. | हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १ | गोपालनारायण बहुरा | ७.५० |
| १३. | ,, ,, भाग २ | ,, | १२.०० |
| १४. | राजस्थानी-हिन्दी ह.लि. ग्रन्थ-सूची, भाग १ | पुरुषोत्तमलाल मेनारिया | ४.५० |
| १५. | ,, ,, भाग २ | ,, | २.७५ |
| १६. | विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह-सूची (जयपुर शाखा) | गोपालनारायण बहुरा एवं लक्ष्मीनारायण गोस्वामी | ६.२५ |
| १७. | भगतमाल | उदयराज उज्जवल | १.७५ |
| १८. | भक्तमाल | अगरचन्द नाहटा | ६.७५ |
| १९. | मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग १ | बद्रीप्रसाद साकरिया | ८.५० |
| २०. | ,, ,, भाग २ | ,, | ९.५० |
| २१. | ,, ,, भाग ३ | ,, | ८.०० |
| २२. | ,, ,, भाग ४ | ,, | ८.७५ |

| क्रमाङ्क | ग्रन्थ-नाम | सम्पादक | मूल्य |
|---|---|---|---|
| २३. | रघुवरजस प्रकाश | सीताराम लालस | ८.२५ |
| २४. | सूरजप्रकाश, भाग १ | सीताराम लालस | ८.०० |
| २५. | सूरजप्रकाश, भाग २ | ,, | ९.५० |
| २६. | सूरजप्रकाश, भाग ३ | ,, | ९.७५ |
| २७. | नेहतरंग | रामप्रसाद दाधीच | ४.०० |
| २८. | मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन | डॉ० मोतीलाल गुप्त | ७.०० |
| २९. | समदर्शी आचार्य हरिभद्र | अनु. शान्तिलाल जैन | ३.०० |
| ३०. | बुद्धिविलास | पद्मधर पाठक | ३.७५ |
| ३१. | रुखमणीहरण | डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया | ३.५० |
| ३२. | प्रतापरासो | डॉ० मोतीलाल गुप्त | ६.७५ |
| ३३. | संत कवि रज्जब | डॉ० व्रजलाल वर्मा | ७.२५ |
| ३४. | पश्चिमी भारत की यात्रा | अनु० गोपालनारायण बहुरा | २१.०० |
| ३५. | विन्हैरासो | सौभाग्यसिंह शेखावत | ६.७५ |
| ३६. | सोढायण | शक्तिदान कविया | ७.०० |
| ३७. | राठौड़ाँ री वंशावली एवं राठौड़-वंश री विगत | डॉ० फतहसिंह | २.१५ |
| ३८. | मीरां बृहत्पदावली, प्रथम भाग | हरिनारायण पुरोहित | ७.५० |
| ३९. | स्थूलिभद्रकाकादि | डॉ० आत्माराम जाजोदिया | १.७५ |
| ४०. | राजस्थानी वीर-गीत-संग्रह, भाग १ | सौभाग्यसिंह शेखावत | ६.५० |
| ४१. | ,, ,, भाग २ | ,, | ६.२५ |
| ४२. | ,, ,, भाग ३ | ,, | ९.२५ |
| ४३. | गजगुण-रूपक बन्ध | सीताराम लालस | ९.०० |
| ४४. | वैताल-पच्चीसो | डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया | ३.५० |
| ४५. | मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग १ | डॉ० नारायणसिंह भाटी | १५.५० |
| ४६. | ,, ,, भाग २ | ,, | १२.५० |
| ४७. | देवीचरित, प्रथम भाग | हुकमचन्द चतुर्वेदी | १३.२५ |
| ४८. | ,, द्वितीय भाग | ,, | २१.०० |
| ४९. | राजनीति रा कवित्त | डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली | ५.०० |
| ५०. | नरसीजी रो मायरो | प्रो० जेठालाल नारायण त्रिवेदी | ७.२५ |
| ५१. | मधुमालती सचित्र कथा | डॉ० फतहसिंह | १८.७५ |